थू – ब्राह्मणवाद

विषय–सूचि

अध्याय : 1 ब्राह्मणवाद क्या है ?

1.1 ब्राह्मणवाद :

मानसिकता कि ब्राह्मण सर्वोच्च है

1.1.1 ब्राह्मणवाद : सदैव असत्यमेव जयते

1.1.2 ब्राह्मणधर्म बनाम हिन्दुधर्म

1.1.3 "ब्राह्मणिक आर्य" नस्ल नहीं : भक्षण संस्कृति

1.2 ब्राह्मण का अर्थ

1.2.1 कर्म सें ब्राह्मण

1.2.2 जन्म सें ब्राह्मण

1.2.3 शुद्धिकरण सें ब्राह्मण

1.3 भारतीय इतिहास का अहम मोड़ **(Turning Point of History of India)**

1.4 ब्राह्मण की सर्वोच्चता

1.4.1 ब्राह्मण सर्वोच्च कैसे बना

1.4.2 सर्वोच्चता के लिए खून की नदियां बहाईं

1.4.2.1 क्षत्रियों का बीजनाश किया

1.4.2.2 बौद्धों जैनों का कत्लेआम किया

1.4.2.3 मूल भारतीयों का कत्लेआम किया (असुर दैत्य रक्षक आदि)

1.4.3 सर्वोच्चता के लिए शास्त्र प्रयोग

1.5 ब्राह्मणवाद का वास्तविक चेहरा

1.6 धूर्त चालें : सर्वोच्च बने रहने के हत्थकण्डे

1.6.1 धार्मिक गुलगण्डी खाई

1.6.2 ब्राह्मण को पण्डित घोषित किया

1.6.3 ब्राह्मण को ''पाप प्रूफ'' घोषित किया

1.6.4 इतिहास में जोड़ तोड़

1.6.5 भारत देश का नाम बदचलन लोगों के नाम किया

1.6.6 विजेता हमलावरों को क्षत्रिय घोषित किया

1.6.7 नित्य नए हत्थकण्डे

अध्याय : 2

साम, दाम, दण्ड, भेद

(अर्थात ब्राह्मणवाद की सनातन नीति : फूट डालो और राज करो)

2.1 साम

2.2 दाम

2.3 दण्ड

2.4 भेद

अध्याय 3

ब्राह्मणवाद के चार सतम्भ : धर्म अर्थ काम मोक्ष

3.1 धर्म : वास्तविक अर्थ
3.1.1 ब्राह्मणिक धर्म का अर्थ
3.1.2 ब्राह्मण धर्म के गूढ़ रहस्य
3.1.3 दयानन्दी आर्य धर्म
3.1.4 पाप हटाने के ब्राह्मणवादी रास्ते

3.2 अर्थ
3.2.1 पैसा बनाने के हत्थकण्डे
- देवताओं की फौज खड़ी की
- मृत्यु : कमाई का मुख्य साधन
- सती होने में भी कमाई
- "उपाय" कोई बच नहीं पाये
- पुरोहिताई

3.2.2 ब्राह्मण को दान देने के नियम
3.2.2.1 दक्षिणा दो कुछ भी करवाओ

.

3.3 काम
3.4 मोक्ष
मोक्ष और निर्वाण में कोई समानता नहीं

अध्याय 4
गोधर्म
ब्राह्मणवाद यानि गोधर्म

4.1 गोधर्म का आरम्भ
4.2 गोधर्म : ब्राह्मणों का सनातन धर्म
4.3 नियोग ही धर्म है
4.4 विवाह–प्रथा भी गोधर्म की सूचक
4.5 गोधर्म सें उत्पन पुत्रों की किस्में
4.6 वेश्यावृति भी धर्म / वेश्यावृति भी ब्राह्मण धर्म का अंग
4.6.1 वेश्याओं की किस्में
4.6.2 सनातन धर्म में वेश्या की स्थिति
4.6.3 अनंगव्रत का उपाय
4.6.4 ब्राह्मणधर्म की आध्यात्मिक वेश्याएं
4.6.5 देवदासी : धर्म की आड़ में ऐयाशी
– देवदासियों की सात किस्में

4.7 भगवन बुद्ध द्वारा गणिका उद्धार

अध्याय 5

ब्राह्मणवाद के ध्वजवाहक

5.1 हरामी व नपुंसक ऋषि

5.2 हरामी व नपुंसक देवता
5.3 हरामी व नपुंसक नायक
5.4 ब्राह्मण–धर्म की देवियां भी कम नहीं
5.5 महानायक : राम
5.5.1 राम जन्म वृतांत
– यजुर्वेद की विधि
– यह पयस क्या है ?
5.5.2 राम .... और मर्यादा
– जन्म सें अंत तक
– भरत जैसे भाई सें भी धोखा
– यह थी रघुकुल रीत
– भगवन वाल्मिकी की नजर में राम
5.5.3 राम कथा की सत्यता
5.6 महानायक : कृष्ण
5.6.1 बचपन सें मरने तक
5.6.2 राधा और गोपियों के साथ ऐयाशी
5.6.3 कृष्ण और कुब्जा
5.6.4 बाकी उम्र की जालसाजियां
– कृष्ण की गांधीगिरी
– कर्ण को घिनौनी ऑफर
5.6.5 महाभारत : भारत के वीर मरवाए
5.6.6 गोहत्या में भागीदार

अध्याय 6
यज्ञ

6.1 यज्ञ का अर्थ
6.2 यज्ञ में खूनखराबा अनिवार्य
6.3 यज्ञ में व्यभिचार अनिवार्य
6.4 यज्ञ में शराब अनिवार्य
6.5 यज्ञ में माँस भक्षण अनिवार्य
6.5.1 नरमेध यज्ञ
6.5.1.1 ऋग्वेद में नरमेध
6.5.1.2 पुराणों में नरमेध
– पुराणों की नरभक्षी देवियां
6.5.1.3 यजुर्वेद में नरमेध
6.5.1.4 राम राज्य में नर माँस
6.5.1.5 नर भक्षण के अन्य प्रसंग

6.5.2 गोमेध यज्ञ
– गाय काटने व गोमांस बांटने के नियम
– गोमेध के ब्राह्मणिक लाभ
6.5.3 अश्वमेध यज्ञ
– लीद यज्ञ
– अश्व मिलाप
6.6 यज्ञ में दक्षिणा : धन कमाने का साधन

अध्याय 7
गाय भक्षण सें गाय पूजा का पैंतरा

7.1 गोमांस प्रिय भोजन
7.2 श्राद्ध में गोमांस
7.3 मधुपर्क में गोमांस
7.4 गाय भक्षक : ब्राह्मण ऋषि
7.5 गाय भक्षक : देवता
7.6 गाय हन्ता : अवतार

अध्याय 8
ब्राह्मणवाद यानि स्त्रियों की दल्लागिरी

8.1 नारी शोषण : सतीत्व की परिभाषा
8.2 नारी शोषण : देवों का धर्म कार्य
——देवों की धाक
8.3 नारी शोषण : ऋषियों का धर्म कार्य
8.4 ब्राह्मणधर्म के अमानवीय नियम
8.5 आर्य नारी : मात्र जूए का दांव
8.6 सती प्रथा : पतिव्रता होने की सजा
8.7 नारी को गर्क करने वाल : तुलसी
8.8 देवों, ऋषियों तथा ब्राह्मणों द्वारा औरतों की दल्लागिरी
—— दासी प्रथा
8.9
8.10

अध्याय 9

सुधारकों का क्रूर दमन

9.1 प्रथम सुधारक : महात्मा रावण
9.1.1 क्या महात्मा रावण बौद्ध थे?
9.1.2 क्या उनकी लंका सिन्धु साम्राज्य है? (तबाह की इन्द्र ने. कहानी गढी राम की)
लंका में सभी के भवन एक समान थे. महाराजा रावण का महल भी दूसरे भवनों सें भिन्न नहीं था. सिन्धु साम्राज्य के मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों में कहीं भी राजा का महल नहीं मिला है. सभी भवन एक जैसे मिले हैं.
9.1.3 महात्मा रावण की देन

9.2 असुर आंदोलन
9.2.1 जालन्धर दैत्यराज का यूटोपिया नष्ट किया विष्णु ने
9.2.2 प्रहलाद : इन्द्र को मारने वाला
9.2.3 भैरव
9.2.4
9.3 क्षत्रियों का विद्रोह यानि शूद्रों की उत्पत्ति
9.4 बौद्ध व जैनों का नर संहार
9.5 आंतरिक संघर्ष

अध्याय 10

दिमागी गुलामी के सिद्धांत

10.1 गीता : दिमागी दिवालियेपन की पुस्तक
10.1.1 अवतार का सिद्धांत

भगवन बुद्ध और अवतार : कभी नहीं!
10.1.2 आत्मा का सिद्धांत
10.1.3 कर्म का सिद्धांत
10.2 वेद : ऐसे ज्ञान के भण्डार
10.3 उपनिषदों का धूर्त ज्ञान
10.4 सत्ययुग बनाम कलियुग
10.5 गायत्री मन्त्र
10.6 श्राद्ध
10.7 पुराण महाभारत : महागप्पें
10.8 जातिवाद

अध्याय 11

सत्य का दमन

11.1 ऋषि आश्रम अर्थात ऐयाशी के अड्डे
11.2 ब्राह्मणों की रक्त शुद्धता?
11.3 ब्राह्मणों की रक्त पिपासा
11.4

अध्याय 12

ब्राह्मण-पूजक महान घोषित किये गये चाहे.......

12.1 गांधी : मक्कार
12.2 शिवाजी :
12.3 अकबर : जंवाई
12.4 पेशवा : अग्रजों के पिठू

अध्याय 13

अगर उन्होने आज ऐसा किया होता तो • • • •
1.2.4 शब्दावली : असुर, राक्षस, दैत्य, देव, किन्नर, गंधर्व, यक्ष, दानव, अप्सरा, इन्द्र,गणिका, नियोग, गोधर्म, साम–दाम, यज्ञ, मेध, गौमेध, अश्वमेध, नरमेध, हवि, यज्ञशेष, आश्रम, अवतार, चार आश्रम, चार युग, चार लक्ष्य, श्राद्ध, उपनिषद, गायत्री

अध्याय 14

तो हल क्या है • • • •

प्रस्तावना

"..that the real method of breaking up the Caste System was not to bring about inter-caste dinners and inter-caste marriages but to destroy the religious notions on which Caste was founded."

"...that only the Shudras can destroy the systems of caste and varna".

Dr. Babab Sahib Ambedkar (Vol. 7.18)

अर्थात "जातिवाद को समाप्त करने का सही व कारगर ढंग मात्र सह–भोज तथा अन्तरजातीय शादियां नहीं हैं. जातिवाद को समाप्त करने का एक मात्र रास्ता है कि *उन धार्मिक सिद्धांतों को नष्ट किया जाए जिन पर जातिवाद की नींव रखी गई है."*

"मात्र शूद्र ही जातिवाद को नष्ट करेंगे!" बाबा साहिब अम्बेडकर

यह शब्द बाबा साहिब ने आधी सदी पहले कहे थे, जो आज भी उतने ही सत्य हैं जितने उस समय थे. पिछले 60 सालों में दुनिया बदल गई मगर जातिवाद और छूआछात वहीं की वहीं है. आज भी वे बातें वैसे की वैसे सच हैं. आदमी चांद तक हो आया मगर ब्राह्मण आज भी पुरोहित है तथा भंगी आज भी वैसे ही सिर पर पाखाना ढो रहा है. मरे हुए पशु की खाल आज भी वही "चमार" उतार रहा है. व्यापार पर पहले भी बनिये का कब्जा था आज भी वही कब्जा किए बैठा है. जमीन पर पहले भी ठाकुरों और ब्राह्मणों का कब्जा था. आज भी वही जमींदार है.

दूसरी महत्वपूर्ण बात जो बाबा साहिब ने कही वह यह है कि दलितों को अपनी आजादी स्वयं अपने दम पर हासिल करनी पड़ेगी. किसी ब्राह्मण बनिये सें यह उम्मीद करना कि वह हमें इस नर्क सें मुक्ति दिलाएगा, सरासर बेवकूफी है. हमें अपनी गुलामी की जंजीरें स्वयं काटनी पड़ेंगी.

प्रश्न उठता है कि हम इस सिस्टम को बदल क्यों नहीं पाए. इसका उत्तर है कि जब तक शंकाएं नहीं उपजतीं, तब तक प्रगति अथवा बदलाव असंभव है. ब्राह्मणिक अध्यात्मवाद में सवाल करने या शंका उठाने की मनाही है. वेद का वचन ही अंतिम सत्य है. किसी धूर्त ने उस में जातिवाद धुसेड़ दिया तो आज जातिवाद भगवान का आदेश बन गया है. किसी को भी जातिवाद या छूआछात की वैधता पर सवाल उठाने का अधिकार नहीं है. हम जी जान सें कोशिश करके भी इस वेद वचन को लोगों के मन सें निकाल नहीं पाए हैं.

अतः बाबा साहिब ने सत्य कहा है कि यदि जातिवाद की ऊँच नीच को समाप्त करना है तथा भारत को प्रगति करनी है तो ब्राह्मणवाद का ढ़कोसला जड़ मूल सें खत्म करना होगा. वेद और दूसरे धर्म ग्रन्थ बेकार की रचनायें हैं. अब समय आ गया है कि हिन्दू इस अंधे कूंए सें बाहर आयें. उन सड़ियल विचारों को त्यागें जो ब्राह्मणों ने फैला रखे हैं. ब्राह्मणवाद सें मुक्ति पाये बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है. (खण्ड 8.16)

ब्राह्मणिक सिस्टम सड़ चुका है. उनकी सभ्यता और संस्कृति एक सड़े हुए बदबूदार पोखर जैसी हो गई है. जब तक भारतीय इस बदबूदार पोखर सें बाहर नहीं आएंगे, वे जान ही नहीं पाएंगे कि बिना ऊँचनीच के समाज में कैसी बयार बहती है.

लेकिन ब्राह्मणवाद के सड़ियलपन के सत्य को उजागर करना हर एक के बस की बात नहीं है. कबीर साहेब ने छः सदी पहले कहा था :

साधो देखो जग बौराना !
सांच कहै तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना!!

अर्थात देखो हे लोगो, यह जगत पगला गया है. जब कोई सच्ची बात कहता है तो लोग उसे मारने को दौड़ते हैं लेकिन जो उन्हें झूठ बोल कर गुमराह करता है वे उसके पांव पूजते हैं.

महात्मा रावण सें लेकर गुरू रैदास तक को ब्राह्मणवाद के विरुद्ध सच बोलने पर सरेआम कत्ल किया गया. लेकिन सच्चा व्यक्ति मार के डर सें सच कहने सें नहीं डरता. अगर सच्चा आदमी ऐसे ही डरता तो इस दुनिया सें सत्य तो कभी का मर लिया होता! इसीलिए बाबा बुल्ले शाह बोले :

मूंह आई गल्ल ना रैहंदी ए,
झूठ आखां ते कुझ बचदा ए, सच्च आख्यिां भांभड़ मचदा ए!
अेह लाजम बात अदब दी ए, सानू बात मलूम सब दी ए!!

अर्थात सच्चे आदमी की जुबान पर आया सच्च कभी नहीं रुकता है. अगर मैं सच बोलता हूँ तो आग के शोले भड़क उठते हैं. अगर झूठ बोलूं तो कुछ बचाव हो जाता है. यह बात पक्के तौर पर सामाजिक व धार्मिक कायदे यानि नियमों की बात है. मुझे सब की पोल पता है.

कबीर साहेब ने सत्य कहने के अपने इरादे को बयान करते हुए कहा :

> सूरा सोई सहारिये, लड़ै दीन के हेत!
> पुरजा पुरजा होय रहै तोउ ना छाडै खेत!!

अर्थात वीर पुरुष वही है जो दबे कुचले हुए लोगों के लिए संघर्ष करता है तथा तब तक अपना संघर्ष जारी रखता है जब तक उसके शरीर की आखिरी बोटी तक जमीन पर नहीं गिर पड़ती.

उन्हीं के आदेशों का पालन करते हुए बाद बाबा साहेब अम्बेडकर आखिरी सांस तक दलितों की आजादी के लिए संघर्षरत रहे. लोगों के मन सें ब्राह्मणवाद के भूत को भगाने के लिए उन्होंने सैंकड़ों ग्रन्थों की रचना की. इन्हीं ग्रन्थों पर जब हो–हल्ला मचा मगर वे शेर की तरह ललकार कर बोले : मैंने हर तरह की जोखिम जान कर यह रचना की है. मैं इसके परिणामों सें नहीं डरता. (खण्ड 8.16)

सच्चा आदमी सच क्यों बोलता है, इसके उत्तर में गुरू कबीर बोले :

> क्या किया हम आयके, क्या करैंगे जाय!
> इतके भए न उत के चाले मूल गंवाए!!
>
> सबे सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय!
> पवन जगावत अनल को, दीपहिं देव बुझाय!!

अर्थात हमने आदमी की तरह जन्म लेकर क्या किया और मरने के बाद तो कुछ कर नहीं पाएंगे. मानव की तरह जन्म लेकर अगर हम मानवता वाले काम नहीं कर पाए तो हमारा तो जन्म लेना ही बेकार गया. अगर हमने मानवता के साथ जीवन नहीं बिताना है तो मानव होने का अर्थ ही क्या रह जाता है. निर्बल तथा दबे कुचले लोगों का सहारा बनना ही मानव की पहचान है. अन्यथा आंधी की तरह बड़ा होने में क्या धरा है जो मामूली दीपक तो बुझा देती है मगर जंगल की बड़ी आग को बढ़ा देती है.

नैतिकता धर्म के प्राण होते हैं. ब्राह्मणधर्म में नैतिकता कभी की मर चुकी. धर्म के नाम पर उनके पास केवल कर्मकांडों की गली सड़ी लाश है. आर एस एस तथा महासभा वाले इसे संभाले रखने के लिए बहुत जोर शोर सें हाथ पांव मार रहे हैं लेकिन लाश को वे कितने दिन तक और संभाले रखेंगे. एक न एक दिन इसका अंतिम संस्कार तो उन्हें करना ही होगा!! यह तो सिर्फ बौद्ध भिक्षुओं की नाकामी है कि ब्राह्मणवाद आज तक सांस ले रहा है. अगर उन्होंने हिम्मत की होती तो आज ब्राह्मणवाद इतिहास की वस्तु बन गया होता!!

आज भारत के करोड़ों दलित इसीलिए पीड़ित हैं क्योंकि वे कबीर, रैदास आदि सन्तों के साथ ब्राह्मणवाद के दलाल राम कृष्ण को भी ग्रहण करते हैं. धम्मपद की शिक्षाओं पर चलते हैं मगर भागवत की पूजा करते हैं. ब्राह्मणवाद का नाश तभी होगा जब लोगों को ब्राह्मणिक कर्मकाण्डों सें मुक्ति दिलाई जाएगी. लोगों को बताना होगा कि सन्तों का अमृत और ब्राह्मणवाद का जहर एक साथ ग्रहण नहीं किए जा सकते. अगर ब्राह्मणवाद का जहर सेवन किया जाएगा तो वह अमृत का नाश तो करेगा ही जीवन का नाश भी करेगा.

महान चीन के महान कॉमरेड माओ–त्से–तुंग ने कहा “Know the enemy and know yourself and you can fight hundred battles with no danger of defeat” अर्थात ”अपने दुश्मन को पहचानो तथा अपने आप को पहचानो, फिर चाहे आप सैंकड़ों लाड़ाइयां लड़ो, हारने का डर ही नहीं रहेगा.” सारी दुनिया जानती है कि उन्होंने चीन को ”अफीमचियों के देश” सें विश्व की एक नम्बर ताकत बना दिया. उनका सामना दुनिया के क्रूरतम शासकों सें हुआ. कॉमरेड विजयी हुए. उन्होंने अपने देश में जनता का शासन स्थापित किया.

भारत और भारतीय दुनिया में किसी सें कम नहीं हैं. इस पुस्तक का उद्देश्य लोगों को ब्राह्मणवादी कर्मकांड के चंगुल सें मुक्त करके शुद्ध मानव बनाना है. अगर भारतीयों के दिमाग सें ब्राह्मणवाद का भूत उतर जाए तो हम भारतीयों जैसा दुनिया में कोई नहीं है. ब्राह्मणधर्म की वजह सें आज पूरा भारत अलगाववाद और आतंकवाद की आग में जल रहा है. आदमी जब अपनी अक्ल सें काम लेता है तो प्रेम भाईचारे की बातें करता है, देवताओं के बीच में आते ही खूनखराबा करने पर उतारू हो जाता है. (उपनिषदों की कहानियां 7)

क्या यह सत्य नहीं है कि जहां भी झगड़े फसाद होते हैं वहां एक पार्टी ब्राह्मणधर्म के लोग होते हैं? पंजाब में हिन्दु–सिख की लड़ाई हो, उड़ीसा, नागालैंड में हिन्दु–ईसाई की लड़ाई हो, यूपी बिहार गुजरात में हिन्दु–मुस्लिम की लड़ाई हो, हर जगह झगड़ा करने वाले ब्राह्मणधर्मी ही होते हैं. ऐसा कभी नहीं हुआ कि मुस्लिम, सिख, बौद्ध, ईसाई आदि कभी आपस में लड़े हों.

लगभग 4000 सालों तक हम भारतीय इस अंदाज सें यहां मस्ती सें जीते रहे. खून जलता है यह सोच कर कि उस समय जिन लोगों के यहां पर टॉयलैट होते थे आज उन्हीं के वारिस सिर पर पाखाना ढोने के लिए मजबूर हैं. 5000 साल पहले जो लोग आलीशान भवनों में रहते थे आज उनके वारिसों को गंदी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर किया हुआ है.

जिस धर्म के देवी देवता अपने आठ आठ हाथों में फरसे, भाले, तलवारें लिये घूमते हों और जिनकी मातायें गले में आदमी की खोपड़ियों की माला पहनती हों, खून खराबा करना उन्हीं का काम है. भारतीयों को अगर शांति चाहिए तो गुण्डों की तरह हथियार लहराने वाले इन भगवानों और माताओं को दफन करना होगा. जाति, वंश अथवा नस्ल के आधार पर कत्ल करने वाले भगवानों को गुण्डा करार देना होगा.

धर्म के नाम पर मानव सें मानव के बीच खड़ी की गई जाति पाति और छुआछूत की दीवारों को गिराने के लिए उन धर्म ग्रन्थों को दफन करना पड़ेगा जो जाति के आधार पर मानव को ऊँचा नीचा बताते हैं.

अध्याय 1

ब्राह्मणवाद क्या है

ब्राह्मणवाद वह सिस्टम है जो आज पूरे भारत को अपनी जकड़ में कसे हुए है. हम कोई भी काम ब्राह्मण को पूछे बिना नहीं करना चाहते या चाह कर भी उसके बिना कर नहीं पाते. हमें हर काम में कर्मकांड करने ही पड़ते हैं. नैतिकता परे चली गई है मात्र ढकोसले ही धर्म का स्थान ले चुके हैं. रात रात भर ढोल नगाड़े पीट पीट कर चिल्लाने को हम सत्संग कहने लग गए हैं. श्राद्धों में गाय और ब्राह्मण को ढूंढ ढूंढ कर लाते हैं तथा उन्हें खीर पूरी खिलाते हैं ताकि हमारे मृत पूर्वजों को खाना मिल जाए. चाँद पर राकेट भेजना हो तो भी पहले मुहूर्त निकलवाते हैं, नारियल चढ़ाते हैं कि राकेट सही दिशा में जाए! विज्ञान में एम एस सी करने वाला विद्यार्थी भी परीक्षा देने जाते समय मंदिर में प्रसाद चढ़ा कर जाता है कि उसके अच्छे अंक आएं. यही ब्राह्मणवाद है.

एक ओर वसुदैव कुटुम्बम अर्थात 'सारी दुनिया एक परिवार है' का नारा लगाते हैं मगर अपने ही धर्म का भंगी अगर छू जाए तो ब्राह्मण जब तक गंगाजल सें स्नान न करले, अशुद्ध ही रहता है. एक ओर विश्व शांति की बातें की जाती हैं तो दूसरी ओर जूए में हारी गई सम्पत्ति को वापिस पाने के लिए की गई मारकाट को धर्मयुध का नाम दिया जाता है. यही ब्राह्मणवाद है.

1.1 मानसिकता कि ब्राह्मण सर्वोच्च है

सदियों सें भारत ब्राह्मणवाद सें ग्रस्त और त्रस्त है. उसकी जड़ें कैंसर की तरह भारत के हर काम, हर क्रियाकलाप में मौजूद हैं. सदियों सें ब्राह्मणधर्मी यह प्रचार करते आ रहे हैं कि ब्राह्मण सें बढ़ कर कोई नहीं है. आज आलम यह है कि बहुत सें काम ब्राह्मण के बिना किए ही नहीं जा सकते. उदाहरणतः शादी की रस्में ब्राह्मण के बिना कोई अन्य आदमी करवा ही नहीं सकता. किसी भी घाट पर ब्राह्मण के सिवाय कोई अन्य जाति वाला अपना डेरा नहीं लगा सकता! किसी भी मन्दिर का पुरोहित ब्राह्मण के सिवाय अन्य जाति वाला नहीं मिलेगा. इन बातों को जायज मानना ही ब्राह्मणवाद है.

किसी के दिमाग में यह विचार तक नहीं आता कि मन्दिर का पुरोहित कोई अब्राह्मण व्यक्ति भी हो सकता है. एक बनिया, एक ठाकुर, एक चमार कभी यह सोचने की हिम्मत ही नहीं कर पाता कि वह भी अपने मन्दिर का पुरोहित बन जाए. अतः सभी ब्राह्मणधर्मी इस मानसिकता सें ग्रस्त हैं कि मात्र ब्राह्मण ही ऐसे काम करने का हकदार है. यह मानसिकता ही ब्राह्मणवाद है.

यह मानसिकता उस प्राणी को ब्राह्मण को ही श्रेष्ठ मानने के लिए मजबूर करती है जिसने ब्राह्मण बाप के घर जन्म लिया हो. ब्राह्मण को श्रेष्ठ मानने की मानसिकता सें ग्रस्त लोग अन्य जातियों को उससें हीन मानते है तथा "श्रेष्ठ" ब्राह्मण द्वारा निर्धारित कायदे कानून मानने के लिए भी तैयार रहते हैं. इसी कारण ब्राह्मण द्वारा पूजनीय बताए गए 'बेटी भोगी' ब्रह्मा को भी वह भगवान मान लेता है. कृष्ण जैसे लम्पट व ऐयाश को भी भगवान मान लेता है तथा परशु जैसे हत्यारे को भी अवतार मान लेता है.

ब्राह्मण को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार करने का अर्थ है यह मानना कि :

1. **जाति जन्म सें निर्धारित** होती है, कर्म सें नहीं होती. ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण और भंगी का बेटा भंगी ही बनेगा चाहे उनें कैसे भी गुण क्यों न हों. गुण अथवा कामों की बजाए जन्म के आधार पर ही मनुष्य ऊँचे या नीचे हैं.
2. **ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ** है तथा शेष सभी जाति वाले उससें निम्नतर हैं.
3. **हर व्यक्ति केवल अपनी जाति का काम** ही करेगा. मनु स्मृति (1.88) का आदेश है कि विभिन्न जाति के लोग निम्नलिखित काम **ही** करेंगे:

   ब्राह्मण : 1. वेद पढ़ना 2. वेद पढ़ाना 3. यज्ञ करना. 4. यज्ञ कराना 5. दान लेना 6. दान देना

क्षत्रिय : 1. ब्राह्मण की रक्षा करना 2. ब्राह्मण को दान देना 3. यज्ञ करना 4. ब्राह्मण सें पढ़ना

वैश्य : 1. ब्राह्मण की रक्षा करना 2. ब्राह्मण को दान देना 3. यज्ञ करना 4. ब्राह्मण सें वेद पढ़ना 5. व्यापार करना 6. खेती करना 7. ब्याज लेना.

शूद्र : एक ही काम है कि उपरोक्त तीनों जाति के लोगों की चुपचाप सेवा करना.

मनु ने आगे आदेश किया कि जो क्रमशः नीची जाति वाला ऊपरी जाति का काम अपनाए तो राजा उसका सारा धन लेकर (ब्राह्मणों को दे दे) और उस आदमी को देश सें बाहर निकाल दे (10.96) यह मात्र कागजी आदेश नहीं थे. इन्हें सख्ती सें लागू भी किया गया.

इस आदेश का परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण की पुरोहिताइ को कोई चैलेंज नहीं कर पाया. ब्राह्मणों ने अपने काम के साथ दूसरों के काम भी कर लिये मगर दूसरी जाति वाले पुरोहिताइ की ओर झांक भी नहीं सके. ब्राह्मण द्रोण ने क्षत्रियों तक को हथियार चलाने तक की शिक्षा दे दी मगर क्षत्रिय विश्वामित्र पुरोहित नहीं बन पाया. पशु पालना वैश्यों का काम था मगर ब्राह्मण ऋषियों ने दुनिया भर के पशु पाले और खाए भी लेकिन कोई वैश्य ऋषि बन कर आश्रम नहीं खोल पाया. यही है ब्राह्मणवाद!! आज भी भारत के समस्त मन्दिरों में ब्राह्मण ही पुरोहित हैं. यहां तक कि भारत के गैर ब्राह्मणिक धर्मों : ईसाई, बौद्ध, मुस्लिम आदि में भी धर्म परवर्तित किए ब्राह्मणों का ही बोलबाला है.

4. **मात्र ब्राह्मण ही पठन पाठन करेगा** : ब्राह्मणों ने पढ़ने पढ़ाने का काम अपने तक सीमित रखा. आम तौर पर लोग कह देते हैं कि अगर ब्राह्मणों ने पढ़ाई अपने तक ही सीमित तो किसी का क्या नुक्सान हो गया. लेकिन विदेश सें आए ब्राह्मणों की पूरे भारतीय समाज के विरूद्ध यह बहुत गहरी साजिश थी. उनका यह ठण्डे और शैतानी दिमाग सें रचा गया षडयन्त्र था कि समस्त भारतीय समाज को अपने चंगुल में किस प्रकार सें फंसा कर रखा जाए. इस विषय पर माननीय ज्योतिबा की कविता एकदम सटीक हैः

विद्या बिन गई मति,
मति बिन गई नीति,
नीति बिन गई गति,
गति बिन गया वित्त,
वित्त बिना चरमराये शूद्र,
एक अविद्या ने किए
इतने अनर्थ!!

5. **केवल ब्राह्मण ही उपनयन संस्कार करेगा.** उपनयन का आज की भाषा में अर्थ है स्कूल में दाखिला देना यानि ब्राह्मण ही यह तय करेगा कि किस को पढ़ाना है और किस जाति को नहीं पढ़ाना. शेष पुरोहताई का अधिकार भी उसी का रहेगा. इस अधिकार के तहत ही ब्राह्मणों ने चारों वर्णों के स्त्री समाज को अनपढ़ रहने को मजबूर किया. **माननीय बुद्ध शरण हंस ने सही कहा है कि इसी कारण सरस्वती के ही देश में हिन्दू सबसें बड़ी अनपढ़ जमात बन गए.** (कमेरी दुनिया अक्तू. 08)
6. **ब्राह्मण हर हाल में पूजनीय** है चाहे वह बेअक्ल हो, चरित्रहीन हो. दस साल का ब्राह्मण सौ साल के क्षत्रिय सें भी वरिष्ठ कहा गया. जब सौ साल का क्षत्रिय बुजुर्ग भी दस साल के ब्राह्मण बालक को साष्टांग प्रणाम करने को मजबूर है तो वैश्य और शूद्र की तो औकात ही कुछ नहीं बचती.
7. **ब्राह्मण को पाप नहीं लगता** चाहे वह कुछ भी करे और वह **दूसरों के पाप उतार सकता है**. जैसे अग्नि सब कुछ जला कर भी अपवित्र नहीं होती वैसे ही ब्राह्मण कुछ भी करके अपवित्र नहीं होता.
8. **ब्राह्मण भू—देव है** वह किसी की भी सम्पत्ति मांग कर अथवा छीन कर ले सकता है.
9. **ब्राह्मण किसी भी जाति की स्त्री सें शारीरिक सम्बन्ध बना सकता है. स्त्री की सहमति होना आवश्यक नहीं थी.**
10. **शूद्र तथा अछूत ब्राह्मण के जन्मजात गुलाम हैं.**

ब्राह्मणों ने जैसे अन्य वर्ण वालों को जातियो उपजातियों में बांटा है स्वयं को भी असंख्य उपजातियों में बांट रखा है. उनमें असंख्य उपजातियां हैं. एक गोत्र में आगे अनेक उपगोत्र हैं. एक कथा है कि एक मुस्लिम व्यक्ति कहीं दूसरे गांव जा रहा था. रास्ते में एक पंडाल में बैठे कुछ लोग दावत खा रहे थे. उन्हे देख उसे भी भूख लग आई. वह भी पंडाल में जा बैठा.

भोजन परोसने वाले ने उससें पूछा ''आप कौन हो?''

वह व्यक्ति हिन्दुओं की जाति प्रथा सें कुछ परिचित था. बोला ''भाई द्विज हूँ''

'' कौन से द्विज हो ?''

'' ब्राह्मण हूँ ''

'' कौन से ब्राह्मण हो ?''

'' भई गौड़ ब्राह्मण हूँ '' उसने साहस बटोर कर कहा.

'' कौन से गौड़ ब्राह्मण हो ?''

उसका साहस जवाब दे गया. बोला '' हे अल्लाह! गौड़ में भी जोड़''

ब्राह्मणों के हर गोत्र वाला व्यक्ति यह घोषित करता है कि उसके गोत्र वाले ब्राह्मण शेष सभी ब्राह्मणों सें श्रेष्ठ हैं. चाहे वह गोस्वामी हो, चाहे गौड़ हो, चाहे चितपावन हो या कोई अन्य. लेकिन उनमें एक बात खास है कि चाहे प्रत्येक गोत्र का ब्राह्मण दूसरे शेष सभी ब्राह्मणों सें श्रेष्ठ होने का तो दावा करता है मगर कोई भी ब्राह्मण किसी अन्य ब्राह्मण को दूसरी जाति वालों सें निम्नतर नहीं बताता. सब के सब ब्राह्मण एक बात पर एकमत हैं कि ब्राह्मण होने के कारण वे शेष सभी जाति वालों सें श्रेष्ठ हैं तथा बाकी सारी जातियों वाले उनसें हीन हैं!

इस व्यवस्था के विरूद्ध किसी भी ब्राह्मण ने कभी भी आवाज नहीं उठाई. बाबा साहिब ने सत्य कहा है कि ब्राह्मणों नें कभी कोई वाल्टेयर पैदा नहीं किया जो पुरोहित होते हुए भी अन्यायी प्रथा के विरूद्ध आवाज उठा सका हो. दयानन्द जैसा ढकोसले बाज "क्रांतिकारी" भी ब्राह्मणों को ही श्रेष्ठ घोषित करने में लगा रहा. उसने यह नहीं कहा कि जो ज्ञान प्राप्त कर ले वही श्रेष्ठ है बल्कि वह तो अब्राह्मणों को ब्राह्मण बनाने में उनकी श्रेष्ठता ढूंढता रहा. **उसने कभी किसी ब्राह्मण को अब्राह्मण घोषित नहीं किया चाहे वह कितना भी नीच, जाहिल अथवा असंस्कृत क्यों न हो. बल्कि वह तो अब्राह्मणों को वेद पढा कर ब्राह्मण बनाने में लगा रहा**. और इस तरह उसने ब्राह्मणों की संख्या बढ़ा दी. दयानन्द ने बौद्ध, सिख, मुस्लिम आदि धर्मों के विरूद्ध जी भर के लिखा लेकिन जब उसके जाति भाईयों के कुकर्म बताने की बारी आई तो उनके कुकर्त्यों को ''पोपलीला" यानि पोप के काम बता कर बात टाल गया.

इसी ब्राह्मणवादी व्यवस्था का परिणाम है कि जब ब्राह्मण पार्टी की सरकार गिरा कर एक दलित को मुख्य मन्त्री बनाया जाता है तो हाई कोर्ट का जज घर बैठे ही आर्डर कर देता है कि सूरज डूबने सें पहले ही विधान सभा का सत्र बुलाओ और शक्ति परीक्षण करो. लेकिन जब दलित पार्टी के विधायक दल बदली करके दूसरी पार्टी की सरकार बनवा देते हैं तो वही हाई कोर्ट सालों तक उस केस की सुनवाई ही नहीं करती.

इसी नियम के तहत जब अडवानी, कल्याण जैसे लोग बाबरी मस्जिद गिरवा कर पूरे भारत में दंगों के जरिये सैंकड़ों लोगों को मरवा देते हैं तो सुप्रीम कोर्ट द्वारा उसको दण्ड के नाम पर एक दिन की कैद की सजा सुनाई जाती है. दलित महिला सें बलात्कार हो जाए तो जॅज यह कह कर अपनी जाति के बलात्कारियों को बरी कर देता है कि ऊँची जाति का पुरूष तो दलित महिला को छूता भी नहीं है उससें शारीरिक सम्बंध बना ही नहीं सकता. लेकिन वह जॅज भूल जाता है कि उसी के प्रदेश में ज्यादा नहीं तो आधी आबादी गोलों की है जो कि दलित वर्ग की दासियों की कोख सें तथाकथित ऊँची जाति के ठाकुरों द्वारा पैदा किए गए हैं.

1.1.1 असत्यमेव जयते

ब्राह्मणवाद : सदैव असत्य की प्रतिष्ठा

ब्राह्मणवादी बड़े जोर शोर सें नारा लगाते हैं **"सत्यमेव जयते सत्यं जयति नानतृं"** अर्थात सच्चाई की सदा जीत होती है, सत्य ही जीतता है झूठ नहीं जीतता! सम्राट अशोक के चार शेरों वाली मूर्ति जो कि आजकल भारत देश का राष्ट्रीय चिन्ह है, उसके नीचे भी "सत्यमेव जयते" लिखा गया है. दावा तथा प्रचार किया जाता है कि यह नारा मण्डूक नामक उपनिषद सें लिया गया है. अतः ब्राह्मणवादी यह दावा करते हैं कि उनका धर्म सत्य की जीत होने की बातें करता है. लेकिन यह नारा ब्राह्मण धर्म पर **हमेशा** झूठा साबित हुआ है क्योंकि **ब्राह्मण धर्म में सत्य की कभी जीत हुई ही नहीं.** ब्राह्मण धर्म का पूरा इतिहास इस बात का गवाह है कि उन्होंने हमेशा सच्चाई, इमानदारी और नैतिकता की हत्या करके "सत्यमेव जयते" का नारा लगाया है. उदाहरणतः

☞ अपनी बेटी सें बलात्कार तथा अपनी पोतियों सें कुकर्म करने वाला उनका सृष्टिकर्ता है सबसें बड़ा भगवान! सती साध्वी नारियों सें बलात्कार करने वाले को सृष्टि पालक बताया जाता है. अपने लिंग को पुजवाने वाला, दिन के चौबीसों घंटे वासना में लिप्त रहने वाला कामदेव को नष्ट करने वाला बताया जाता है! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ मातृतुल्य (माँ के बराबर) नारियों सें व्यभिचार करने वाला, भाई के हाथों भाई को मरवाने वाला, सगी बहन को शादीशुदा पुरुष के हाथों अगवा करवाने वाला, सगी मामी सें नित्य मैथुन करने वाला, "धर्म की रक्षा" के लिये अवतरित "भगवान" बताया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ अपनी पूरे दिनों की गर्भवती पत्नि को धोखे सें घर सें निकालने वाला, लोगों को छिप कर धोखे सें मारने वाला, लोगों की बहन बेटियों के नाक कान काटने वाला, पूजा करते सन्तों की हत्या करने वाला, तन और मन सें नपुंसक आज "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ जिन लोगों ने यज्ञ की आग में बैल, घोड़े, बकरे और गायें भून भून कर खाईं, सरेआम शराब पीकर सबके सामने पराई औरतों के साथ व्यभिचार किया, वेश्याएं देखते ही जिनके वीर्य सख्लित हुए वे ऋषि मुनि यानि मन को वश में करने वाले साधु-सन्त कहे जाते है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ वेद, पुराण, स्मृति, उपनिषद, महाभारत, रामायण, गीता में एक घटना तो क्या एक लाइन भी नहीं है जो सच्चाई पर, नैतिकता पर चलने की शिक्षा देती हो. नाईट क्लबों सें भी अधिक अश्लीलता सें भरे पड़े है इनके ग्रन्थ. तब भी इन्हें धार्मिक बताया जाता है! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ कसाई भी शर्मिंदा हो जाए ऐसी वीभत्स, खौफनाक बलियों सें भरे पड़े हैं उनके यज्ञ. दो हजार गायें रोजाना यज्ञ में काट कर ब्राह्मणों को खिलाने वाला रन्तिदेव को ये ब्राह्मण महादानी बताते हैं. बीस बैल एक बार के यज्ञ में भून कर खा जाने वाले इन्द्र को देवताओं का राजा बताया जाता है. अपनी शादी में सैंकड़ों गायें कटवाने वाले कृष्ण को गोपाल यानि गाय पालने वाला कहा जाता है. ऐसे लोगों को गो–रक्षक बताया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ विवेकानन्द जैसे ब्राह्मणवादी जब पश्चिमी जगत को ''लेडीज एण्ड जैंटलमॅन'' की जगह 'भाईओ और बहनों" कह कर सम्बोधन करते हैं तो बरबस मनोज कुमार का वह गाना याद आ जाता है ''कपड़ा है देसी और मुहर लगी जापान की, जय बोलो बेइमान की" विवेकानन्द को पक्का पता था कि ब्राह्मणों के किसी भी ऋषि, किसी भी भगवान, किसी भी नायक ने कभी किसी पराई औरत को बहन, बेटी या माँ का दर्जा नहीं दिया. ब्रह्मा सें लेकर गांधी तक सभी ब्राह्मणवादियों ने नारी का शारीरिक, मानसिक व नैतिक शोषण किया है. अगर नारी को इज्जत दी तो गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने दी या उन्हीं की श्रमण संस्कृति के मशालची सन्तों कबीर, रैदास, नानक ने दी. फिर भी विवेकानन्द की यह घृष्टता ही थी कि उसने बुद्ध महावीर की शिक्षाओं को ब्राह्मणिक बता कर लोगों के सामने परोसा! ब्राह्मणों का कोई देव पराई तो क्या अपनी बहन को भी बहन कहने वाला नहीं हुआ. लेकिन विवेकानन्द जैसे लोग हिन्दुओं को ऐसे देवों पर गर्व करने की बात कहते है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक "धर्म और समाज" में लिखा कि हिन्दू वह है जो चारों वेदों को धर्म का मूल माने, चारों आश्रमों तथा चारों प्रयोजनों को अपनाए. अपनी अन्य पुस्तक "भारतीय दर्शन" में उसने लिखा कि भगवन बुद्ध हिन्दू जन्मे थे, हिन्दू जीए तथा हिन्दू ही मृत्यु को प्राप्त हुए. वह बिल्कुल अच्छी तरह जानता था कि भगवन बुद्ध ने हमेशा वेदों की निन्दा की है. उनके चारों आश्रमों और चारों प्रयोजनों का खण्डन किया है. उन्हें किसी भी आधार पर हिन्दू नहीं कहा जा सकता. लेकिन राधाकृष्णन ने लोगों को गुमराह करने के लिए धूर्ततापूर्ण झूठ बोला. ऐसे झूठे और धूर्त आदमी के जन्मदिन पर "अध्यापक दिवस" मनाया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ भगवन बुद्ध, महावीर के होने सें पहले सनातनी ब्राह्मण जानते ही नहीं थे कि सुसंस्कृत होना किसे कहते हैं. माँ, बहन और पत्नि में कौन भोग्या है कौन नहीं, वेद पुराण महाभारत के नायक जानते ही नहीं थे. ऋषि विश्वामित्र का बाप का नाम गाधि था. उसकी बेटी का नाम सत्यवती था जिसको ब्राह्मण ऋचीक को सोंपा गया था. एक दिन ऋचीक और गाधि में पत्नियों की अदला बदली हो गई और उनके बच्चे भी हो गए तब उन्हें अपनी गलती का पता लगा और तब वे फिर सें अपनी अपनी असली पत्नियों के पास गए!! कृष्ण का बेटा सांब अपने बाप की रखैल को ही ले उड़ा था. दयानन्द का आर्य समाज आज भी कहता है वेद काल में लौट चलो. जहां हर स्त्री को मादा पशु की तरह ग्यारह पुत्र पैदा करने अनिवार्य हैं. अगर किसी स्त्री का पति मर जाए तो भी उसे ग्यारह अन्य मर्दों सें नियोग (व्यभिचार) करवा कर ग्यारह पुत्र तो पैदा करने ही होंगे. कोई भी आर्य समाजी अपनी विधवा बहन बेटी सें दयानन्दी "धर्म" यानि कुकर्म करवाने की हिम्मत नहीं कर पाता परन्तु दयानन्द के गुणगान जरूर गाएगा. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ आर्य अपनी बेटियों को दांव पर लगा देते थे. शर्त जीतो और लड़की ले जाओ. सीता को उसके बाप ने दांव पर लगाया : कोई भी धनुष उठाओ सीता को ले जाओ. जिस समय सीता को दांव पर लगाया गया वह मात्र छः बरस की थी. उस बेचारी बालिका को तो पता भी नहीं था कि कोई उसे जीत कर ले जा रहा

है. द्रोपदी के साथ भी ऐसा ही हुआ. ऐसी घटनाओं को स्वयंवर अर्थात वधु द्वारा मन मर्जी का वर स्वयं चुनना कहा जाता है! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ आर्य पांडव इतने पक्के और नीच जुआरी थे कि धन सम्पति तो हारे ही, अपनी पत्नि तक को जूए में हार गये. फिर वे जूए में हारी सम्पति के लिए अपने भाईयों सें लड़ मरे. जूए की सम्पति के लिए की गई मार काट को **धर्म–युद्ध** का नाम दिया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ ब्राह्मणों का कोई देव, कोई देवी बिना हथियारों के नहीं है. उनमें कोई ऐसा नहीं जिसने कत्ल न किये हों. लेकिन दावा किया जाता है कि ब्राह्मणवाद "धर्म" है! अहिंसा प्रिय धर्म!!. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ महाभारत में महावीर एकलव्य को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बताया गया है. लेकिन अर्जुन को सबसें बड़ा धनुर्धर साबित करने के लिए ब्राह्मण द्रोण ने महावीर एकलव्य का दाहिना अंगूठा काट लिया. इस तरह सर्वश्रेष्ठ "शिष्य" को अपंग करने वाले द्रोण के नाम पर आजकल सर्वश्रेष्ठ अध्यापक का पुरस्कार दिया जाता है और जो "खिलाड़ी" इस तरह सें धोखा करके प्रथम आया उसके नाम पर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार दिया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ ब्राह्मण धर्मी नारा देते हैं "वसुधैव कुटुम्बम" अर्थात सारी दुनिया एक ही परिवार है. जबकि सच्चाई यह है कि बाह्मणवादियों ने पूरे समाज को हजारों जातियों उपजातियों में बांट रखा है. एक का छूआ दूसरा नहीं खाता. भंगी राह चलता हुआ चकरा कर गिर जाये कोई द्विज उसे देखने तक नहीं आयेगा, उसे उठा कर हस्पताल ले जाने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती और दावा दिया जाता है वसुधैव कुटुम्बम. ब्रह्मो समाज का संस्थापक ब्राह्मण मोहन राय अपनी बीवी के हाथ का बना खाना नहीं खाता था. वह मानता था स्त्री तो अछूत होती है उसके हाथ का छूआ नहीं खाया जा सकता. राम अपने ही भाई की गद्दी हथियाने कर साजिश करता है. ब्राह्मण ऋषि अजीगर्त अपने बेटे को न केवल पैसे के लिये बेच देता है बल्कि पैसों की खातिर उसे यज्ञ में काटने को भी तैयार हो जाता है. ब्राह्मणों के ग्रन्थ ऋग्वेद सें गीता तक ऐसी घटनाओं सें भरे पड़े हैं जहां उनके देवों और भगवानों ने उन लागों की हत्या की जो उनकी जाति, धर्म, अथवा सिद्धांतों को नहीं मानते थे.! उनकी गर्भवती स्त्रियों के पेट फाड़ डाले ताकि उनका बीजनाश ही हो जाए. चाहे वे सारी दुनिया को एक परिवार होने की बात कहें लेकिन उनके हीरो वह लोग हैं जो धन के लिए भाई सें लड़ मरे. धन के लिए दादा नाना मामा गुरू चाचा ताया सभी मार गिराये. ब्राह्मणिक संस्कृति वाले राम ने अनार्य रक्ष संस्कृति वाले बेकसूर लोगों को मार गिराया. कृष्ण ने नाग जाति के मनुष्यों सें भरा पूरा जंगल जला कर खाक कर दिया. पुराण रामायण महाभारत सभी आपसी लड़ाइयों की दास्तानों से भरे पड़े है. गीता में तो धन के लिये लड़ने मरने को धर्म बताया गया है. मगर नारा दिया जाता है "वसुधैव कुटुम्बम"! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को सत्य मान लिया जाये तो ब्राह्मणों ने लाखों करोड़ों जीव यज्ञ वेदी पर काट कर यज्ञ अग्नि में भून कर खा लिये. फिर भी वे दावा करते हैं कि उनका धर्म अहिंसावादी हैं. **वे कहते हैं यज्ञ में पशु मार कर खाना तो अहिंसा ही है क्योंकि जब पशु को यज्ञवेदी पर काटा जाता है खड़ग सें प्रार्थना की जाती है, "हे खड़ग, इस पशु को मत मारना." अर्थात इसे बगैर मारे ही काट देना.** लाखों करोड़ों गाय घोड़े बकरे काटकर खा लेने के बाद भी अहिंसामयी हैं ब्राह्मण. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ "सत्य" की खोज में तर्क और बुद्धि सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं. और उधर ब्राह्मणों के संविधान मनु स्मृति (2.11) का आदेश है कि जो व्यक्ति तर्क अथवा बुद्धि के आधार पर वेदों स्मृतियों का खंडन/अपमान करे वह सज्जनों द्वारा बहिष्कृत करने योग्य है. बुद्धि और तर्क यानि सत्य सें काम लेने वाले लोगों को या तो मार दिया जाता था या फिर जाति सें बाहर करके व्रात्या बना दिया जाता था. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ जब सरदार भगत सिंह सरीखे नौजवान अंग्रेजों को भारत सें खदेड़ने के लिए अपना खून बहा रहे थे, गांधी गांव गांव घूम कर भारतीय नौजवानों को अंग्रेजी सेना में भर्ती करवा रहा था. आज अंग्रेजों के तलवे चाटने वाले उस ब्राह्मणवादी को आजादी का योद्धा बताया जाता है. उसे "राष्ट्रपिता" कहा जाता है, दलितों की पीठ में हमेशा छुरा घोंपने वाला गांधी दलितों का सबसें बड़ा हितरक्षक बताया जाता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को सत्य मान लें तो आज गाय को माता कहने वाले ब्राह्मणों के पूर्वजों ने करोड़ों गायें मार कर खा लीं. (गोमाँस 73) कहावत है नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली. ब्राह्मणों ने तो करोड़ों गायें खाकर डकार भी नहीं ली. ऐसे करोड़ों गाय खाने वाले आज गाय पूजक बने फिरते हैं. देवी भागवत, महाभारत, विष्णु पुराण जैसे ग्रन्थ आज भी गोहत्या और गोमाँस खाने को धार्मिक कार्य बताते हैं. दयानन्द भी सत्यार्थ प्रकाश मे बूढ़ी गाय मार कर खाने की बात करता है. फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ राम को अपने भाई की गद्दी हड़पने के जुर्म में चैत्र मास (मार्च अप्रैल) में अयोध्या सें बनवास जानेकी सजा हुई थी. वह चौदह साल बाद चैत्र मास (मार्च अप्रैल) को ही वापिस आया था. कार्तिक मास (अक्तूबर नवंबर) की दीपावली सें उसका कहीं कोई सम्बंध नहीं है लेकिन पूरा ब्राह्मण वर्ग इसे राम के साथ जोड़े हुए है. सभी पढ़े लिखे 'विद्वान' ब्राह्मण (सर्वपल्ली राधाकृष्णन समेत) इस महाझूठ, महासाजिश में शामिल हैं. पूरे समाज को महाझूठ में गुमराह करके भी नारा दिया जाता है सत्यमेव जयते!!

☞ जब 1911 में अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम भारत आया तो टैगोर ने उसकी स्तुति में गीत लिखा "जन, गण, मन अधिनायक जय हे! भारत भाग्य विधाता . . . . जय हे!" यह गीत लिखने के एवज में टैगोर को 'सर' की उपाधि यानि सिपेसलारी मिली तथा नोबल पुरस्कार दिया गया. सारे भारत में जहां जहां सम्राट गया गांधी भक्तों ने उसके चरणों में बैठ कर यह स्तुति गान गाया. आज अंग्रेज सम्राट की शान में गाया गया वही स्तुति गीत हमारा राष्ट्रगान है! गांधी और उनके वंशज आज तक सम्राट की स्तुति गा कर तथा पूरे भारत सें गवा कर देशभक्त कहलवाते हैं! फिर भी सत्यमेव जयते!

☞ **समस्त ब्राह्मण ग्रन्थ जहां जहां ब्राह्मणिक आर्य रहते थे उस स्थान को आर्यवर्त कहते थे या ब्रह्मावर्त कहते थे. इस आर्यवर्त या ब्रह्मावर्त के बाहर के क्षेत्र को वे "भारत" कहते थे. अब वे दावा करते हैं कि हमारे भारत देश का नाम एक वेश्या (मेनका) की बदचलन बेटी शकुन्तला की नाजायज सन्तान के नाम पर रखा गया है. इस तरह वे समस्त भारतीयों को ही नहीं पूरे भारतवर्ष को बदचलन/हरामी होने की गाली देते हैं. साथ में नारा लगाते हैं सत्यमेव जयते सत्यं जयति नानतृं!!**

☞ अगर हिन्दू संस्कृति में सें बौद्ध, सिख, जैन धर्म के सिद्धांतों को अलग कर दें तो जो शेष रहेगा वह होगा ब्राह्मणों का सनातन धर्म : धर्म के नाम पर बदनुमा दाग. आदमी को आदमी न समझने वाला. बलात्कारियों व्यभिचारियों को भगवान बताने वाला मजहब. एक गली सड़ी परम्पराओं का गन्दा नाला!! बदबूदार अनैतिकता के कीड़ों सें भरा छप्पड़! फिर भी सत्यमेव जयते का नारा लगा कर फलने फूलने वाला मजहब!!

☞ सत्य की परिभाषा देते हुए ब्राह्मणधर्म ग्रन्थ कहते हैं कि ब्राह्मण के शब्द झूठ नहीं होते (विष्णु स्मृति 19.20. 22). इसका अर्थ यह हुआ कि सत्य वह है जो ब्राह्मण कहे. इसलिए वह "सत्य" होगा जो ब्राह्मण के मुख सें निकलेगा और उसके कहे की ही जय होगी. ब्राह्मणधर्म में यही सत्य है.

☞ शतपथ ब्राह्मण (9.5.1.18) के अनुसार तद्यत्सत्यंत्रयी सा विद्या अर्थात वेदों में केवल सत्य है. जो सत्य है वही वेद हैं. सभी ब्राह्मण दर्शन वेद को भगवान की कृति बताते हैं. उसमें कही हर बात को सत्य की कसौटी बताते हैं. अतः ब्राह्मणों का "सत्य" वही है जो वेद बताते हैं. इसलिए बाप द्वारा बेटी सें कुकर्म करना, बहन द्वारा भाई को कुकर्म के लिए उकसाना, बीस बैल एक बार में पका कर खाना, सब उनके लिए सत्य है. इन कुकर्मों का विरोध करने वाले झूठे हैं. यही उनका सत्य जयते और झूठ की हार है.

ब्राह्मण धर्म में जब सत्यमेव जयते का नारा लगाया जाता है तो अग्रेजी की एक कहानी याद ताजा हो जाती है जिसमें कुछ लोग एक राजा का कत्ल कर देते हैं और फिर वही कातिल नारा लगाते हैं, "राजा चिरायु हो". **ऐसा ही कुछ ब्राह्मणधर्मी करते हैं. वे सत्य का कत्ल करके नारा लगाते हैं सत्यमेव जयते!!**

1.1.2 ब्राह्मणवाद बनाम हिन्दूधर्म

कौन हिन्दू है?

इस प्रश्न का कोई सीधा उत्तर नहीं है. संविधान में हिन्दू धर्म की जो परिभाषा दी गई है वह विचारनीय है. भारतीय संविधान के अनुसार निम्नलिखित मत्त **हिन्दू-धर्म** हैं :

1. **हिन्दुमत्त**
2. **जैनमत्त**
3. **बौद्धमत्त**
4. **सिखमत्त.**

हमारे विचार में उपरोक्त परिभाषा में प्रथम स्थान पर जो "हिन्दूमत्त" शब्द आया है उसकी जगह **"ब्राह्मणमत्त"** शब्द आना चाहिए क्योंकि संविधान के अनुसार "हिन्दू" में तो जैन, बौद्ध और सिख धर्म भी शामिल हैं. अतः जब कोई हिन्दुओं की बात करे तो स्पष्ट रहना चाहिए कि कौन से "हिन्दू" की बात हो रही है. इस बात को स्पष्ट करने के लिए ही हमने अपनी पुस्तक में हिन्दूमत्त के लिए ब्राह्मणवाद या ब्राह्मणधर्म शब्दों का प्रयोग किया

है. ऐसा इसलिए भी किया गया हैं क्योंकि **ब्राह्मणमत के सिवाय हिन्दू की परिभाषा में आने वाले शेष तीनों धर्मों में ब्राह्मण के लिए कोई स्थान नहीं है.** केवल और केवल ब्राह्मणवाद में ब्राह्मण की पूछ है उसकी सर्वोच्चता है. अतः जहां भी "ब्राह्मणवाद" शब्द का प्रयोग किया गया है उसका अर्थ उस सिस्टम सें है जो ब्राह्मण को सर्वोच्च मानता है, वेदों में आस्था रखता है, जातिवाद को धर्म मानता है, राम अथवा ऐसे ही किसी देव को भगवान मानता है आदि.

"हिन्दू बनाम हिन्दूधर्मी" : बाबा साहिब के अनुसार सब धर्मों में सें यह बताना सबसें कठिन है कि हिन्दूधर्मी किसे कहा जा सकता है. दुनिया भर के धर्मों में "हिन्दू धर्म" को छोड़ कर शेष सभी धर्मों की सीधी परिभाषा है. बौद्ध वह है जो भगवन बुद्ध को अपना आदर्श माने और धम्मपद के अनुसार जीवन बिताए. जैन वह है जो महावीर स्वामी को अपना आदर्श माने और अहिंसा के सिद्धांत अनुसार अपना जीवन बिताए. सिख वह है जो दस गुरूओं में आस्था रखे तथा गुरू ग्रन्थ साहिब के अनुसार अपना जीवन बिताए. मुस्लिम वह है जो पैगम्बर साहिब पर विश्वास करे और कुरान में आस्था रखे.

हिन्दूधर्मी के बारे में ऐसी कोई सीधी परिभाषा नहीं है. यहां वेदों को पूजने वाला भी हिन्दूधर्मी है तथा वेदों को कुत्तों की भों भों कहने वाला भी हिन्दूधर्मी है. राधा को परकीया (वेश्या) कहने वाला भी हिन्दूधर्मी है तथा रोज सुबह शाम राधे राधे जपने वाला भी हिन्दूधर्मी है. ब्रह्मा को बेटीचोद कहने वाला भी हिन्दूधर्मी है तथा उसे सृष्टिकर्ता कहने वाला भी हिन्दूधर्मी है. सवाल उठता है कि हिन्दुधर्मी ऐसा क्यों है?

इस सवाल का उत्तर है कि **"हिन्दू होना" और "हिन्दूधर्मी होना" दो अलग अलग चीजें हैं. हिन्दू होना किसी धर्म की निशानी नहीं है.** किसी का **हिन्दू होना या न होना धार्मिक होने की बजाए "सामाजिक" तथा भौगोलिक अधिक है.** हिन्दू सोमवार को व्रत कर लेता है, वीरवार को पीर की मजार पर माथा टेक लेता है और रविवार को चर्च में जाकर मोमबती भी जला लेता है. गुरू ग्रन्थ साहिब की सवारी जाती हो तो वहां भी श्रद्धा सें सिर नवा लेता है. विपति आ जाये तो बिना कोई विचार किये किसी के लिए भी खून दान कर देगा. उसमें कट्टरता नहीं होती. अ-कट्टर होना, दयावान होना उसका "हिन्दूपन" है. यह उसका जिन्दगी जीने का ढंग है.

लेकिन वही आदमी भंगी के हाथ का छूआ खाना नहीं खाना चाहेगा. अपनी जाति सें बाहर विवाह सम्बंध नहीं बनाना चाहेगा. ब्राह्मण को पूछे बिना कोई भी बड़ा काम नहीं करना चाहेगा. दयाभाव इतना कि पांव भी देख कर रखता है कि कहीं नीचे कोई चींटी दब कर न मर जाये!! लेकिन वही आदमी ब्राह्मणों के कहने पर कामख्या और काली के मंदिरों में बलि देने के लिए हर प्रकार के पशु कटवाने के लिए तैयार हो जाता है. **यह उसका हिन्दुधर्म या ब्राह्मणवाद है.**

यही ब्राह्मणवाद लगभग 2500 साल पहले अधिकतर भारत को ग्रस्त किए हुए था. तब भगवन बुद्ध ने लोगों को सही धर्म की राह दिखाई. उन्होंने तथा उनके अनुयायी सन्तों ने 1500 सालों तक लगातार ब्राह्मणवाद को टक्कर दी है. लेकिन **आठवीं सदी में संकर ने आकर बहुत गहरी शाजिश के तहत बुद्ध धर्म का सफाया कर दिया. उसने तलवार के दम पर बौद्ध भिक्षुओं का कत्ल किया और साथ के साथ बुद्ध धर्म के नियमों को अपने धर्म में मिला लिया. नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मणधर्म एक सुपर बाजार की तरह बन गया. वहां बलि देने सें लेकर जीवों पर दया करने तक के सभी सिद्धांज उपलब्ध हो गए. उसके ही चेलों ने अपने नए धर्म का नाम हिन्दू धर्म रख लिया. नतीजा यह हुआ कि गाय की बलि देने वाला इन्द्र भी हिन्दूधर्मी हो गया तथा गाय को पूजने वाला कृष्ण भी हिन्दू हो गया.**

ब्राह्मणधर्मियों ने नियम तो बुद्ध धर्म वाले अपना लिए मगर अपनी जालसाजियां नहीं छोड़ी. ब्राह्मण को भगवान सें ऊपर बताना तथा भंगी को अछूत बताना नहीं छोड़ा.

हम भारतीयों में जो नैतिकता या अकट्टरपन दिखता है वह सब भारत माँ के सबसें महान सपूत भगवन बुद्ध की देन है. उनके जैसा न कोई हुआ, न है और न कोई होगा. भारत और विश्व में आज जो भी नैतिकता दिखती है वह भगवन बुद्ध की ही देन है. ब्राह्मणवाद में कभी कोई देवता, कोई ऋषि, कोई भगवान कभी भी नैतिक, सदाचारी नहीं हुआ बल्कि उन्होंने एक सें बढ़ कर एक अनैतिक काम किये. उन्होंने पशुओं की तरह अपनी माँ बहन बेटी सें यौन सम्बंध बनाये. भेड़ियों की तरह पशुओं का मांस खाया. पानी की तरह सोम (शराब) पी. स्त्री विशेषकर पत्नि को पांव की जूती समझा. उनके किसी भी धार्मिक कहे जाने वाले ग्रन्थ में सदाचार को अपनाने की बात नहीं की गई है. पाप करो और बस गंगा में डुबकी लगाओ ब्राह्मणों को दान दो सब पाप साफ. ऐसा उन ग्रन्थों का कहना है.

अगर आज हिन्दू कहे जाने वाले लोग नैतिक, सदाचारी तथा सहिष्णु हैं तो मात्र इसलिए कि हम सब के पूर्वज बौद्ध थे. मौर्य काल में पूरा भारत बौद्ध धर्मी बन गया था. गुप्तकाल में भी मात्र राजा ही बलि यज्ञ करते थे जनता तो बौद्ध आचरण करती थी. संकर जैसे हत्यारों ने बौद्धों का कत्लेआम किया मगर वह भी भारतीयों के मन सें बुद्ध की शिक्षाओं को नहीं निकाल पाया. भारतीय समाज सदा बौद्धमय रहा है उसका एक सबूत यह है कि ब्राह्मणों के किसी ग्रन्थ में पीपल की महिमा नहीं की गई है तो भी पूरे भारत के लोग पीपल की पूजा करते हैं

क्योंकि भगवन बुद्ध को पीपल के नीचे ही ज्ञान मिला था. पीपल काटना गाय काटने के समान पाप समझा जाता है लेकिन सदियों तक ब्राह्मणों ने बौद्धों पर जुल्म किए, इसलिए पीपल का पेड़ अपने घर में उगाना 'अभिशाप' बन गया.

हत्यारे ब्राह्मण पुष्यमित्र और संकर द्वारा किए गए नरसंहार का असर यह हुआ कि भिक्षुओं को भारत छोड़ना पड़ा. भिक्षुओं की अनुपस्थिति में उन्होंने लोगों में ब्राह्मणिक कर्मकांड भर दिये लेकिन वे लोगों को भगवन बुद्ध के सदाचार के मार्ग सें नहीं हटा पाये. नतीजा यह हुआ कि लोग सदाचारी और खुले दिमाग (**open mind)** वाला जीवन तो "बौद्ध" वाला जीते हैं लेकिन कर्मकांड ब्राह्मणधर्म वाले कर लेते हैं. यही कर्मकांड छूआछूत, जातिवाद, दिमागी अन्धापन उसका "ब्राह्मणवाद" है.

हमारा संघर्ष इसी ब्राह्मणवाद के विरुद्ध है तथा इसी ब्राह्मणवाद के ध्वजवाहकों के विरुद्ध है. यह ध्वजवाहक उनके ग्रन्थ हैं जो यह कहते हैं 'पूजिये विप्र गुण सील हीना, सूद्र न गुण ज्ञान प्रवीणा'. वे हत्यारे हैं जिन्होंने सन्त शम्बूक, गुरू रैदास का कत्ल किया, वे ऋषि हैं जिन्होंने धर्म की आड़ में वासना और वीभत्सता का नंगा नाच किया. और वे लोग हैं जिन्होंने धर्म के नाम पर लोगों का खून बहाया और बहा रहे हैं. ऐसे लोग उनके धर्मगुरू कहलाने वाले हो सकते हैं देवता हो सकते हैं या आज के लीडर हो सकते हैं.

हिन्दू शब्द का इतिहास : "हिन्दू" शब्द वास्तव में धार्मिक शब्द है ही नहीं. यह तो विदेशियों द्वारा समस्त भारतीयों के लिए प्रयोग किया गया शब्द है. वह भारतीय चाहे हिन्दूधर्मी हो, सिख हो, बौद्ध हो, जैन हो या अन्य धर्मी हो. उन्होंने पूरे भारत को हिन्दोस्तान कहा तथा भारतीयों को हिन्दू कहा. यह तो ब्राह्मणों की चालबाजी और जालसाजी है कि उन्होंने अपने सनातन अथवा वैदिक धर्म का नाम हिन्दूधर्म रख लिया **जबकि उनके किसी भी धर्म ग्रन्थ में हिन्दू शब्द नहीं है!!**

इस तरह हिन्दूधर्म दुनिया का एक मात्र धर्म है जिसके ग्रन्थों में अपने धर्म का नाम ही नहीं है. ब्राह्मणिक धर्म के वेदों पुराणों गीता में "हिन्दू" शब्द का न होना इस बात को साबित करता है कि "हिन्दू" एक विदेशी नाम है. आज भी भारत सें बाहर भारतीयों को हिन्दू ही कहा जाता है चाहे वह मुस्लिम हो बौद्ध हो या हिन्दूधर्मी हो.

हिन्दू शब्द का फारसी में अर्थ ठग चोर डाकू है. अतः जब फारसी हमलावरों ने भारत पर अपनी हकूमत कायम की तो यहां की ठगी, चोरबाजारी देख कर यहां रहने वालों को हिन्दू कहना शुरू का दिया. आज के समय में जैसे पंजाब हरियाणा में यूपी बिहार सें काम करने आने वाले सभी मजदूर किस्म के लोगों को "भईया" कहा जाता है चाहे वह किसी भी जाति या धर्म सें सम्बंध रखता हो. पंजाबी में "भईया" का अर्थ ही मजदूर बन गया है, बिल्कुल वैसे ही विदेशियों ने भारतीयों को "हिन्दू" यानि चोर कहना शुरू किया. हो सकता है उन्होंने पण्डों पुरोहितों द्वारा की जा रही लूटखसोट के कारण केवल ब्राह्मणों को हिन्दू कहा हो लेकिन बाद में उन्होंने पूरे भारत को यही नाम दे दिया.

प्राचीन कथा कहानियां तथा इतिहास इस बात का सबूत हैं कि भारत में जगह जगह लूटमार, राहजनी व ठगी आम बात थी. ऋग्वेद में तो असंख्य श्लोक हैं जहां देवों सें प्रार्थना की गई है वे दूसरों का धन लूट कर उन्हें दे दिया जाए. अतः लूटमार ब्राह्मणधर्म के जन्म सें ही उसके साथ है. आज के दिन भी उनका हर तीर्थ स्थान लूट मार का केन्द्र बना हुआ है. हर तीर्थ यात्री वहां सें लुटा पिटा परेशान वापिस आता है.

इस गाली में भी ब्राह्मणों को छुपा हुआ वरदान मिल गया. उनके धर्म के चार स्तम्भों में सें एक "अर्थ" यानि धन कमाना भी है. जब विदेशियों ने सारे भारतीयों को हिन्दू कह कर गाली दी तो पूरे भारत के लोगों को अपने चंगुल में करने के लिए ब्राह्मणों ने अपने धर्म का नाम ही हिन्दूधर्म रख लिया. शिक्षा पर केवल उनका ही अधिकार था. अतः जैसा उन्होंने लोगों का पढ़ाया, वैसा लोगों ने मान लिया. इस तरह सें हिन्दू नाम सारे भारतीयों के लिए प्रयोग किया जाने लगा. चाहे वह भारतीय किसी भी जाति नस्ल अथवा धर्म का हो. इससें यह हुआ कि वेद को पूजने वाला और वेद को कुत्ते की भौं भौं बताने दानों धर्मों के लोग "हिन्दू" कहे जाने लगे.

पिछले कुछेक सदियों सें हिन्दू नाम केवल ब्राह्मणधर्म तक सीमित हो कर रह गया है. अतः आज हिन्दू और हिन्दूधर्मी का अर्थ एक समान हो गया है. **लेकिन अब फिर सें इनको अलग करने की जरूरत है क्योंकि जब सें बीजेपी यानि ब्राह्मण जाति पार्टी को सत्ता मिली है उन्होंने हिन्दू को हिन्दूधर्मी में बदलने का काम किया है.** इसका सबूत गुजरात व अन्य जगहों पर हुए दंगे हैं. **इन दंगों में नित्य दरगाह पर माथा रगड़ने वाले हिन्दूओं ने भी हिन्दूधर्मी बन कर आगजनी लूटमार और हत्याएं की हैं.**

हमारे विचार में किसी भी धर्म को अपने लिए "हिन्दू" शब्द प्रयोग करने की मनाही होनी चाहिए. कानून द्वारा यह पाबंदी लगनी चाहिए कि ब्राह्मण अपने धर्म को "हिन्दू" नहीं कहेंगे. **वैसे भी किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ में हिन्दू शब्द नहीं है. वहां धर्म के लिए सनातन या वैदिक धर्म का प्रयोग हुआ है.** अतः ब्राह्मणों को चाहिए कि वे अपने धर्म का नाम ब्राह्मण धर्म या वैदिक धर्म या सनातन धर्म रखें. **उनका धर्म "हिन्दू" नहीं है. आर एस एस, शिव सेना तथा विश्व हिन्दू परिषद वाले लोग जो बाबरी मस्जिद तोड़ कर राम मंदिर बनाने की बात करते हैं वे वास्तव में वे "हिन्दू" नहीं हैं बल्कि वे वास्तव में ब्राह्मण धर्मी हैं.**

ब्राह्मणवाद के नए अवतार राधाकृष्णन (भूतपूर्व राष्ट्रपति) के अनुसार (ब्राह्मणधर्मी) हिन्दू वह है जो चारों वर्णों को माने, चारों आश्रमों को माने और चार प्रयोजन (धर्म, अर्थ काम मोक्ष) पूरे करे. वेदों को धर्म का मूल आधार माने. (धर्म और समाज पृ 109–111) मनु का भी कहना है कि वेद **ही** धर्म का आधार हैं. (मनु 2.6)

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर ब्राह्मणिक हिन्दू वह है :

1. **जो चारों वर्णों यानि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के विभाजन और उनकी ऊँच नीच को वैध माने तथा भगवान का आदेश माने.**
2. **जो चार आश्रमों यानि ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास को पालन करे.**
3. **जो चार प्रयोजन यानि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का यत्न करे.**
4. **वेदों को सर्वोच्च माने. उन्हें धर्म का आधार माने.**

आज भारत के **99 प्रतिशत सें ज्यादा "हिन्दूधर्मी" उपरोक्त परिभाषा के अनुसार हिन्दू नहीं हैं** क्योंकि उनमें सें कोई भी जातिवाद के अलावा अन्य तीन आधारों पर खरा नहीं उतरता. आज के समय कोई भी हिन्दू "चार आश्रमों" के ढकोसलों को नहीं मानता, अधिकतर हिन्दू वेदों को मानना तो दूर उनका नाम तक नहीं जानते. यज्ञ, बलि, तीर्थ स्नान आदि सब ढकोसलों को युवा पीढ़ी भुला चुकी है. न ही कोई बाप अपनी बेटी को दांव पर लगाने का धर्म कर सकता है कि कोई भी मछली की आँख में तीर मारो और बेटी को ले जाओ या धनुष उठाओ और बेटी को ले जाओ! वेदों का "धर्म" यानि दयानन्दी आर्य धर्म आज कोई नहीं मान सकता क्योंकि कोई भी स्त्री आज ग्यारह आदमियों सें ग्यारह पुत्र पैदा नहीं करवा सकती.

अतः समय आ गया है कि "हिन्दुओं" सें "हिन्दुधर्मियों" को अलग किया जाए. किसी भी धर्म को अपना नाम हिन्दू रखने पर पाबंदी होनी चाहिए. हिन्दुधर्मियों का नाम ब्राह्मणधर्म रखा जाना चाहिए ताकि उनकी असलीयत बताते समय असली हिन्दू अलग रहें.

1.1.3 ब्राह्मणधर्म : आर्य संस्कृति

भारतीय आर्य बनाम ब्राह्मणिक आर्य

भारत का इतिहास नष्ट करने के इरादे सें संकर तथा राधाकृष्णन जैसे पढ़े लिखे बाह्मणों ने हर चीज में गड़बड़ी की है. सबसें बड़ी गड़बड़ उन्होंने इतिहास के साथ की है. ऐतिहासिक घटनाओं को उन्होंने किस्से कहानियों में बदल दिया और किस्से कहानियों को इतिहास का रूप दे दिया. बहुत सी वस्तुओं का नाम बदले बगैर उनके काम बदल दिए. इसी गड़बड़ घोटाले में एक शब्द "आर्य" भी है. जितना घालमेल आर्य शब्द को लेकर हुआ है उतना शायद किसी अन्य शब्द के साथ नहीं हुआ है.

आर्य शब्द का इतिहास : वास्तव में "आर्य" शब्द सिन्धु साम्राज्य की भाषा का शब्द है. सिन्धु साम्राज्य में दो प्रकार के लोग रहते थे. एक सिपाही अर्थात कुलीन वर्ग दूसरा कारीगर एवं व्यापारी वर्ग. इनमें कोई जातिगत बंधन नहीं था. कोई भी आदमी कोई भी काम कर सकता था. सिपाही वर्ग में केवल शारीरिक तौर पर तगड़े लोग ही शामिल होते थे तथा उनके पास राजकीय शक्ति भी होती थी. अतः यह स्वाभाविक ही था कि ऐसे लोगों को इज्जत की नजर सें देखा जाता था. **इसी कारण सिन्धु साम्राज्य के सिपाही वर्ग को आदर सें "आर्य" बुलाया जाता था.** प्राचीन ग्रन्थों में आर्य शब्द केवल सिपाही वर्ग यानि क्षत्रियों को सम्बोधन के लिए प्रयोग किया जाता था. उनको आर्य बुलाना ऐसा ही था जैसे आज हम अध्यापकों और अधिकारियों को 'सर' कह कर बुलाते हैं.

लगभग 3500 साल पहले भारत के इतिहास में एक घिनौनी घटना हुई. अब्राहम की संतान 'ब्राह्मण' ने भारत में अपने गंदे पांव रखे. **मात्र ब्राह्मण बाहर सें आए थे. शेष तीन वर्ण और जातियां यहीं के लोगों सें बने हैं.** ब्राह्मणों के आने के बहुत समय बाद तक भारत में तीन ही वर्ण थे. कर्मकांड करने वाले ब्राह्मण, राज करने वाले सिपाही या क्षत्रिय तथा खेती व व्यापार करने वाले वैश्य. मजदूरी करने वाले दास भी होते थे. इस तथ्य का बाबा साहिब ने अपने ग्रन्थ "शूद्र कौन थे?" में उल्लेख किया है. भगवन बुद्ध के समय तक आर्य शब्द किसी जाति या वर्ण का सूचक न होकर 'क्षत्रिय' अर्थात सिपाही वर्ग को सम्मान देने का सूचक था.

सम्राट वृहदर्थ की हत्या के बाद जब पढ़े लिखे धूर्त ब्राह्मणों ने भारत के इतिहास के साथ घालमेल किया तो उस समय उन्होंने "आर्य" शब्द का अर्थ भी बदल दिया. उन्होंने आर्य शब्द का प्रयोग मात्र सिपाही वर्ग की बजाए पूरे उस समाज के लिए करना शुरू कर दिया जिसने ब्राह्मणिक विचारधारा को अपना लिया था. पढ़ने लिखने के साधन क्योंकि ब्राह्मणों के कब्जे में थे इसलिए उन्होंने जो पढ़ा दिया लोगों ने उसे सही मान लिया.

आज के समय में कुछेक शब्द इसी तरह सें अर्थ बदल रहे हैं. एक शब्द है 'महाशय' दूसरा शब्द है 'जैन' तथा तीसरा शब्द है 'हरिजन'. पचास साठ के दशकों तक आर्य समाजी लोग एक दूसरे को सम्बोधन में 'महाशय'

शब्द का प्रयोग करते थे. अतः महाशय का अर्थ होता था आर्य समाजी! पंजाब में जब तक आर्य समाज का जोर रहा यह शब्द अपने सही रूप में प्रयोग किया जाता रहा. अब पंजाब में आर्य समाज तो मर चुका है लेकिन महाशय शब्द अब भी पुराने **आर्य समाजी बनियों** के परिवारों के साथ चिपका हुआ है. दलित आर्य समाजियों के वंशजों को महाशय नहीं कहा जाता. आज वहां महाशय का अर्थ 'बनिया' के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है.

किसी समय "जैन" होने का अर्थ थाः नास्तिक होना, ब्राह्मणधर्म का दुश्मन होना. आज जैन का अर्थ है ब्राह्मणधर्म का वह भाग जो अन्य ब्राह्मणिक भगवानों के साथ महावीर स्वामी की पूजा भी करता है. दक्षिण भारत के ब्राह्मण मंदिरों की नींवों में जिंदा चिन दिये गए जैनों के वंशज आज पूरे ब्राह्मणधर्मी बन चुके हैं.

सबसें अधिक परिवर्तन जिस शब्द में आ रहा है वह है "हरिजन". इसका शाब्दिक अर्थ है 'भगवान की संतान'. दलित सन्तों ने हरिजन का अर्थ किया थाः **नैतिक मनुष्य.** गांधी ने इसका प्रयोग किया उन दबे कुचले लोगों (Depressed Classes) के लिए जिनको आजादी दिलवाने के लिए बाबा साहिब ने संघर्ष किया था लेकिन इसका प्रयोग सीमित रहा मात्र अछूतों तक! हरिजन का अर्थ था अछूत! लेकिन पिछले कुछ सालों सें अछूत वर्ग के वे लोग जो आर्थिक तौर पर सम्पन्न हो गए हैं अथवा अच्छे ओहदों पर लग गए हैं, वे 'हरिजन' के दायरे सें बाहर आ रहे हैं.

पिछले कुछ बरसों सें हरिजन शब्द मात्र सफाई कर्ता भंगी जाति तक सीमित किया जा रहा है. यहां तक कि बड़े शहरों में रहने वाले शड्यूल्ड कास्ट अधिकारी भी मात्र गली में झाड़ू लगाने वाले के लिए 'हरिजन' शब्द का प्रयोग करते हैं. अक्तूबर 2008 के अंत में मद्रास हाई कोर्ट में वाल्मिकी वर्ग की ओर सें एक याचिका दायर की गई कि अनुसूचित जाति को मिलने वाले आरक्षण में सें "हरिजनों" के लिए अलग सें आरक्षण की सीमा होनी चाहिए. याचिका में कहा गया था कि अनुसूचित जातियों को मिलने वाले आरक्षण में सें चर्मकार वर्ग बहुत अधिक हिस्सा ले जाता है. अतः आरक्षण कोटे में सें कुछ प्रतिशत 'हरिजनों' यानि भंगियों के लिए निश्चित किया जाए. इस प्रकार उन लोगों ने स्वयं को हरिजन कहा और अन्य अछूत जातियों को अनुसूचित जाति कहा.

अगर ऐसा ही दौर चलता रहा तो आने वाले कुछेक सालों में हरिजन का अर्थ मात्र सफाई करने वाले जमादारों तक सीमित हो जाएगा.

ऐसा ही कुछ आर्य शब्द के साथ हुआ. मात्र सिन्धु साम्राज्य के सिपाही वर्ग के लिए प्रयोग किए जाने वाला यह शब्द पूरे ब्राह्मणिक समुदाय के लिए प्रयोग किया जाने लगा. आजकल आर्य का अर्थ मात्र ब्राह्मणिक आर्य है. आज के समय में ब्राह्मणवाद एवम् आर्य संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू बन चुके हैं. आर्य किसी जाति, नस्ल का नाम नहीं बल्कि उस समूह/संस्कृति का नाम है जिसका एक ही मन्त्र था कि खाओ, पीओ और ऐश करो. उन्होंने समाज को चार वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बांट रखा था.

बाबा साहिब डा. अम्बेडकर के अनुसार आर्य और अनार्य लोगों के बीच भिन्नता जाति या नस्ल के आधार पर नहीं थी बल्कि संस्कृति के आधार पर थी, यह भेद दो बिन्दुओं पर था. पहला यह कि आर्य वर्ण व्यवस्था को मानते थे जबकि अनार्य वर्ण भेद को नहीं मानते थे. दूसरा भेद यज्ञ करने के ढंग को लेकर था. आर्य बलि पूर्ण यज्ञ करते थे, लिंग की पूजा करते थे. पहले आर्य विष्णु के लिंग की पूजा करते थे मगर समय के साथ यह पूजा शिव के लिंग के साथ जुड़ गई. (बाबा साहिब 8.171) अनार्य लोग हवन किया करते थे. रक्ष संस्कृति के संस्थापक महात्मा रावण ने अपने राज्य में यज्ञ बन्द करवा दिए थे तथा उन्होंने ही हवन करने की प्रथा की शुरुआत की थी. ब्राह्मणिक आर्योंके उलट "अनार्य" वे लोग होते थे जो सदाचारी थे और जो चार वर्णों के सिस्टम को स्वीकार नहीं करते थे.

ब्राह्मणिक आर्य संस्कृति में सभी वर्णों के लोग शामिल किए गए थे. इन्द्र, वरुण, अग्नि सोम आदि इस संस्कृति या धर्म के मुखिया होते थे. इन्द्र, वरुण, अग्नि सोम आदि नाम भी व्यक्तियों के न होकर पदवियों के नाम हैं. इन पदों पर बैठे देव आर्यों की बहन बेटियों को कुंआरी अवस्था सें ही भोगते थे. आज चाहे आर्य अपने आप को कितना भी महान क्यों न कहें असलीयत यही है कि उनमें सें कोई भी शुद्ध रक्त का नहीं है. सभी आर्यों में देव जाति के ऐयाशों का रक्त भी दौड़ रहा है. ब्राह्मण इन देवों के गुर्गे होते थे वे उनके तलवे चाटते थे और उनके लिए धर्म के नाम पर सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति का प्रबंध करते थे. बदले में अपना हिस्सा भी पाते थे. तभी तो वह गाते हैं जो हनुमान की आरती गावे ......

जैसे गांधी ने कांग्रेसियों को धोखधड़ी करना सिखाया और बदले में उन्होंने गांधी को बापू बना दिया. वैसे ही देवों ने ब्राह्मण ऋषियों को ऐयाशी करना सिखाया. सो उन्होंने भी आम लोगों मे यह प्रचार कर दिया कि देव बहुत महान हैं. वे कुछ भी करें वह कभी गलत हो ही नहीं सकता. तुलसी ने कहा भी है "समरथ को नहीं दोस गोसाई" अर्थात जिस के पास ताकत है उसे कोई दोशी करार नहीं दे सकता. देव इतने लम्पट और दबंग होते थे कि मौका मिलने पर ब्राह्मण ऋषियों तक की स्त्रियों पर हाथ साफ कर जाते थे. अहिल्या, अनुसुइया, अंजनि आदि की उदाहरण सबके सामने हैं. अतः जैसे लम्पट और शराबी अकबर को अपनी बेटियां देने वाले उसे अकबर महान

कह कर याद करते हैं वैसे ही ब्राह्मण की बहन बेटी भोगने वाले देव भी महान कहलाए गए. अपने जंवाई को कौन बुरा कहे!!

भारतीय राजनीति की मिसाल लें तो अभी कुछ समय पहले तक गुंडे बदमाश चुनावों में नेताओं की मदद करते थे और उनके चुने जाने पर अपना काम निकलवाते थे. आजकल वही गुंडे स्वयं चुनाव लड़ते हैं और जीत कर मन्त्री तक बन जाते हैं. फिर जो काम नेता लोग चोरी छुपे करते थे यह लोग सरेआम करते हैं. ऐसा ही कुछ ब्राह्मण ऋषियों ने किया. पहले ऋषि लोग देवों को सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति की सप्लाई करते थे. बाद में स्वयं भी इसी काम में जुट गये. उन जैसों ने पूरे भारत को वेश्यालय बना दिया. आम्रपाली जैसी बालिकाएं वेश्या बनने पर मजबूर कर दी गई. राम की अयोध्या में जहां सोने जैसी वेश्याओं ने सम्मान पाया तो मथुरा में कृष्ण के राजतिलक में वेश्याओं को ब्राह्मणों के बराबर सोना दान किया गया. (हरिवंश 55)

ब्राह्मण कौटिल्य ने वेश्याओं के लिए एक पूरा विभाग ही खोल दिया था. उसका अर्थशास्त्र पढ़ कर ऐसा लगता है कि उस समय पूरे भारत की नारियां वेश्यावृति में झोंक दी गईं थीं. इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि आज भारत में जितने भी लोग हैं उनकी रगों में वेश्या का रक्त जरूर है!!

इन ब्राह्मणिक आर्यो ने व्यभिचार का वह तांडव रचा कि कोई अहिल्या, कोई सत्यवती कोई अंबा कोई वृंदा सुरक्षित नहीं रही. औरों की तो क्या उन्होंने अपनी बहन बेटी तक भी नहीं बख्शी. दीर्घतमा जैसे ब्राह्मण आर्य ऋषि तो सरेआम सबके सामने बलात्कार या संभोग करता था. लेकिन आज के पण्डे इन्हीं ऋषियों के गुनगाण करते हैं क्योंकि वे इन्हीं के वंशज हैं. इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए तुलसी बोला :पूजिए विप्र गुण शील हीना... .....

ब्राह्मणिक आर्य संस्कृति के मुख्य नियम/कार्यकलाप

1. **वर्ण व्यवस्था** : ब्राह्मणिक आर्य संस्कृति अथवा ब्राह्मणधर्म में चार वर्णों तथा जातियों व उप–जातियों का नियम अटल है. चार वर्ण नहीं तो आर्य नहीं. आर्य कभी भी मात्र "मानव" बनकर नहीं जी सकता. उसके लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र होना अनिवार्य है. मनु के अनुसार चार वर्णों का समाज होना ही आर्य समाज का सार है. (बाबा साहिब 8.217)
2. **ऊंच नीच** : ब्राह्मणिक आर्य वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण सबसें ऊपर तथा शूद्र सबसें नीचे होंगे, ऐसा उनका नियम बनाया गया है. क्षत्रिय ब्राह्मणों की रक्षा करने के लिए बने हैं तथा वैश्य कमाई करके उन्हें दान देने के लिए बने है और शूद्र सभी की सेवा करने के लिए बने हैं. ऐसा आर्यों का मानना है. यह ऊंच नीच अटल है तथा अचल है. ऐसा हो ही नहीं सकता कि आर्य समाज में ऊंच नीच न हों और न ही कभी ऐसा हो सकता है कि शूद्र या वैश्य ब्राह्मण सें ऊंचे हो जाएं चाहे वे कितने भी गुणवान क्यों न हों. सदा ब्राह्मण ही ऊंचा रहेगा चाहे उसमें धेले की भी अक्ल न हो. ब्राह्मणवाद का यह **सबसें घिनौना** नियम है क्योंकि जो सिद्धांत आदमी को आदमी नहीं समझता वह धर्म कहलाने के लायक ही नहीं है. **गुणदोष की कसौटी के बिना ऊंचनीच का बंटवारा तो केवल गुण्डों के गिरोहों में ही होता है!** ब्राह्मणधर्म के शिकंजे में रहने के कारण ही आज भारत दुनिया का सबसें भ्रष्ट देश है. यहां गुण की जगह जाति का मोल है.
3. **यज्ञ अटल हैं** : यज्ञ नहीं करोगे तो अनिष्ट हो जाएगा, देव नाराज हो जाएंगे और वे लोगों को सताएंगे. ऐसा ब्राह्मण ग्रन्थों का कहना है. यज्ञों में मीट, शराब और सुन्दरी का खुल कर प्रयोग अनिवार्य है. ऐसा ब्रह्मण ग्रन्थों का मानना है. यज्ञ में बलि के लिए सबसें उत्तम मांस आदमी का माना जाता था. लेकिन आदमी की बलि देनी बहुत मंहगी थी क्योंकि बलि के लिए आदमी खरीदना पड़ता था जो कि बहुत मंहगा (कई सैंकड़ों गायों के बदले में) मिलता था. अजीगर्त की कथा इसका सबूत है. दूसरे स्थान पर घोड़े का मांस था तीसरे स्थान पर गाय बैल का मांस आता था. ऋषि न केवल इनकी बलि देते थे बल्कि उनके मांस को यज्ञ की आग में भून कर खाते भी थे. राधाकृष्णन के अनुसार ब्राह्मण यज्ञ में बकरी, भेड़, गाय, सांड और घोड़े को काटते थे. (धर्म और समाज 137)
4. **शराब और मांस भक्षण :** आर्यों के लिए यज्ञ में ही नहीं, आम जीवन में भी मीट, शराब और खुले सैक्स का प्रयोग अनिवार्य था. ऋषियों की देखादेखी आम आर्य भी दारू मीट का खुल कर सेवन करता था. पुरुष ही नहीं बल्कि औरतें भी शराब पीने में मर्दों सें पीछे नहीं थीं. ब्राह्मण स्त्रियां तक भी शराब पीतीं थीं. यज्ञ तो बिना शराब के होते ही न थे. सीता तक ने गंगा में मीट शराब की मन्नत मानी. आर्य पियक्कड़ जाति थी और दारू पीना उनका धर्म था. (बाबा साहिब 8.297) कट्टर ब्राह्मणवादी लेखक राधाकृष्णन को भी यह सत्य स्वीकार करना पड़ा कि प्राचीन काल में ब्राह्मण भी मॉस खाते थे. उसके अनुसार बंगाल और कश्मीर में ब्राह्मण अब भी मांस खाते हैं. (धर्म और समाज 137)

5. **नियोग :** आर्यों की एक प्रथा जो उन्हें दुनिया के सब लोगों सें अलग खड़ा करती है. वह है नियोग प्रथा. सीधे साफ शब्दों में जैसे आज के समय में पशुपालक अपनी मादा गाय भैसों को गर्भवती कराने के लिए दूसरों के सांड को किराये पर लेकर आते हैं वैसे ही सत्ययुग सें लेकर द्वापर तक आर्य अपनी बहन, बेटी या पत्नि को गर्भवती कराने के लिए ब्राह्मण ऋषियों को भाड़े पर लेकर आते थे. यह **सनातन वैदिक प्रथा** है. वैदिक प्रथा के आधार पर आर्य समाज की स्थापना करने वाला **दयानन्द भी कहता है कि नियोग रोकना अधर्म है**. उसके अनुसार वेद की आज्ञा है कि हर स्त्री दस पुत्र पैदा करे. विधवा हो जाए या उसका पति नपुंसक हो जाए तो भी उसे ब्राह्मणों को भाड़े पर बुला कर गर्भ धारण करना चाहिए तथा दस पुत्रों का आंकड़ा हर हाल में पार करना चाहिए! (स.प्र.–4)

6. **जूआ खेलना अनिवार्य है :** हर आर्य राजा के पास सेनापति हो या न हो, वह अपने दरबार में जूए के एक्सपर्ट यानि निपुण जुआरी जरूर भर्ती करता था. लोग धन तो दांव पर लगाते ही थे अपनी बीवियां भी दांव पर लगा देते थे. ऐसे लोग **धर्मपुत्र** कहे जाते थे. **जूए में बीवियां हारने का जिक्र ब्राह्मणाधर्म की सबसें पवित्र पुस्तक ऋग्वेद में भी आया है.** सो यह प्रथा आर्यों का सनातन धर्म है. यज्ञ में जूआ खेलने का अटल नियम था. राजसूय यज्ञ (क्षत्रियों द्वारा किये जाने वाला यज्ञ) में यज्ञ की आग जलाने के समय जूआ खेलना अनिवार्य था. (बाबा साहिब 8.292)

7. **स्वयंवर भी जूआ :** ब्राह्मणवादी आर्य में जूए की इतनी बुरी लत थी कि वे अपनी बेटियों को भी दांव पर लगा कर ही किसी अन्य को सौंपते थे. इस जूए की प्रथा को वे नाम देते थे स्वयंवर का! अर्थात अपनी मर्जी सें स्वयं अपना वर चुनना. आजकल ब्राह्मणवादी विद्वान बड़े जोरशोर सें प्रचार करते हैं कि उनके पूर्वजों में स्त्री को अपना वर चुनने की स्वतन्त्रता थी. लेकिन वास्तव में ऐसा कभी नहीं हुआ. अगर राम की बजाए महाराज रावण धनुष उठा देते तो क्या सीता उनके साथ जाने सें मना कर सकती थी. यह तो जनक ने दशरथ को आमन्त्रित नहीं किया था. अगर जनक दशरथ को बुला लेता और दशरथ धनुष उठा देता तो क्या सीता राम की "माँ" बनने सें इन्कार कर सकती थी!!

   द्रोपदी के साथ भी ऐसा ही हुआ था. **अगर एकलव्य का अँगूठा धूर्त द्रोण नहीं काटता और उन्हें द्रोपदी पर दांव खेलने का मौका मिलता तो अर्जुन सात जन्मों तक भी द्रोपदी को नहीं जीत सकता था**. अगर ऐसा हो जाता तो सारा किस्सा ही समाप्त हो जाता. महाभारत होती ही नहीं!

   राम सीता के बारे में तो शंकाएं हैं कि वे आपस में भाई बहन थे. लेकिन सूर्य और अश्विनी कुमारों की कथा में तो शंका की कोई गुंजायश ही नहीं है. विश्वकर्मा को सभी जानते हैं. उसकी बेटी संज्ञा थी. संज्ञा और सूर्य के मिलन सें तीन सन्तानें हुई – दो जुड़वां बेटे अश्विनी कुमार और एक बेटी सूर्या. सूर्या का विवाह चन्द्रमा सें होना तय हुआ लेकिन देवता बोले यह तो सनातन धर्म के विरुद्ध है कि किसी कन्या की शादी बिना उसे दांव पर लगाए हो जाए. अतः सूर्य ने स्वयंवर का आयोजन किया : घोड़ों की रेस जीतो और सूर्या को ले जाओ. सूर्या के सगे भाईयों अश्विनी कुमारों ने भी अपनी बहन के स्वयंवर में भाग लिया और विजेता रहे! अतः उन्होंने अपनी बहन को जीता और भोगा!!

   यह कथा ऋग्वेद के मण्डल 10 सूक्त 85 में दर्ज है जिसके अनेकों श्लोक आज भी ब्राह्मण शादी करवाते समय दोहराते हैं.

8. **स्त्रियों और बच्चों का क्रय–विक्रय :** महाभारत के अनुसार अंग (बंगाल) प्रदेश में बच्चे, बच्चियां और स्त्रियां बेची जाती थीं. (कर्णपर्व 45) ऋग्वेद तक में धन के लिए बच्चे बेचने की कथाएं हैं और बच्चे बेचने वालों में ब्राह्मण ऋषि तक शामिल हैं.

   . आर्यो में अपने बच्चे और औरतों को बेचना आम बात थी. जैसे हम आजकल पशुओं की खरीद बेच करते हैं वैसे ही आर्य अपने बीवी बच्चों के साथ करते थे. उदाहरणतः सूर्यवंशी हरिश्चन्द्र ने अपने बेटे और बीवी दोनों को बेच दिया था. उसने क्षत्रिय होते हुए भी अपनी बीवी चंडाल को बेच दी थी.

   . ब्राह्मण अजीगर्त ने अपना बेटा शुनःशेप यज्ञ में काटने और भून कर खाने के लिये बेच दिया था.

   . विश्वामित्र की पत्नि ने अपने बेटे के गले में रस्सी बांधी और बेचने के लिये भेज दिया. (हरिवंश 12 पृ. 131) उसके गले में रस्सी डली थी इसलिये वह गालव कहलाया.

9. **यौन अनैतिकता :** यौन सम्बंध बनाने के मामले में ब्राह्मणिक आर्यों और पशुओं में कोई विशेष अन्तर नहीं था. जैसे कुत्ते का पिल्ला बड़ा होकर अपनी ही जन्मदायी माँ या बहन या अपनी ही बेटी को गर्भवती कर देता है वैसे ही आर्य होते थे. **उनका इतिहास इतना घिनौना है कि जब हम भारतीयों को कोई आर्यों की सन्तान बताता है तो उसकी बातें गाली देने जैसी लगती हैं.**

   . **कौन बहन बेटी :** ब्राह्मणवादी आर्यों में स्त्री मात्र भोग की वस्तु थी. अधिकतर आर्य बेटी को बेटी मानते ही न थे. ब्राह्मण ऋषियों और देवों में तो यह नियम सर्वमान्य था. ब्राह्मणों के आदिपुरुष ब्रह्मा सें लेकर

वशिष्ठ, मनु, राम, कृष्ण तक ने अपनी बहन बेटियों का लिहाज नहीं किया. ब्रह्मा ने अपनी बेटियां ही नहीं बल्कि पोतियां तक भोगीं. उसके बेटे धर्म ने अपनी भतीजियों सें अनैतिक यौन सम्बंध बनाये. राम के कुलगुरू वशिष्ठ ने अपनी बेटी शतरूपा सें, मनु ने अपनी बेटी इला सें, जन्हू ने अपनी बेटी जाहन्वी (गंगा) सें, सूर्य ने अपनी बेटी ऊषा सें अनैतिक यौन सम्बंध बनाये. सूर्य के बेटे अश्विनी कुमारों ने भी अपनी बहन सूर्या को भोगा. चन्द्रमा और उसके बेटे ने मरीशा (चन्द्रमा की बेटी) सें अनैतिक यौन सम्बंध बनाये. यह सूचि अंतहीन न हो तो भी बहुत लम्बी है.

. सीता और राम सगे बहन भाई थे (दशरथ जातक). राधा यशोधा के सगे भाई रायण की पत्नि थी. अतः यशोधा की सगी भाभी और कृष्ण की मामी थी.

. यह प्रथा ब्राह्मणों के देवों और भगवानों में ही व्याप्त नहीं थी बल्कि आम आर्य भी अपने महापुरुषों के नक्शेकदम पर चलने में पीछे नहीं रहते थे. ऋग्वेद में यम और यमी का किस्सा इस बात का सबूत है.

. **खुले आम संभोग** : ब्राह्मणिक आर्य विशेषकर ब्राह्मण ऋषि सरेआम दिन–दिहाड़े सबके सामने औरतों सें सहवास करते थे. ब्राह्मण ऋषि दीर्घतमा के किस्से मशहूर हैं. सत्यवती के साथ ब्राह्मण ऋषि पराशर ने सबके सामने बलात्कार करके पांडवों का आदि पुरुष पैदा किया था. आर्यों की पवित्रतम पुस्तक ऋवेद की आज्ञा है कि हर स्त्री दस पुत्र पैदा करे. इस आज्ञा को पूरा करने के लिए यज्ञों में एक वामदेव व्रत नामक कांड होता था. जो भी स्त्री पुत्र की कामना सें वहां जाती थी, ब्राह्मण ऋषि वहीं यज्ञ मण्डप पर सबके सामने उन स्त्रियों सें यौन सम्बंध बनाते थे. उनसें पैदा संतान अयोनिज संतान कहलवाती थी. ऐसे मे पैदा हुई लड़कियों को आम तौर पर बेकार की वस्तु की तरह ही फैंक दिया जाता था. सीता, शकुन्तला, आम्रपाली इसकी मुख्य उदाहरण हैं. शिव इतना अधिक खुले काम में व्यस्त रहता था कि उसका लिंग आज भी हर ब्राह्मण मंदिर की शोभा है.

. **भाड़े पर या मेहमान-नवाजी में स्त्रियां** : आर्य अपनी बेटियों को भाड़े पर भी उठा देते थे. ब्राह्मण ऋषि रैकव द्वारा माध्वी को भाड़े पर उठाये जाने का किस्सा सभी जानते हैं. आर्यों में अपनी पत्नि घर आये मेहमान को रात भर तोहफे के रूप में सौंपने की प्रथा भी थी. (अनुशासन पर्व 38) ब्राह्मण अगर मेहमान बन कर आ जाता था तो किसी की हिम्मत ही नहीं होती थी कि उसको स्त्री न पेश करे. ब्राह्मण वेश में मेहमान बन कर आये महाराज रावण को तो सीता भी अपने स्तनों, जांघों व अन्य अंगों की तारीफ करने सें मना नहीं कर पाई थी. स्त्रियां भाड़े पर देने की कथाएं इतने सहज ढंग सें लिखी गईं हैं जैसे यह उनके लिए कोई अनहोनी बात नहीं थी.

. **स्त्रियों के तोहफे** : हमें ब्राह्मणों का कोई देव कोई भगवान कोई ऋषि ऐसा नहीं मिला जिसने किसी को स्त्रियां तोहफे में न दी हो या तोहफे में न लीं हों अर्थात जिसने औरतों की दल्लागिरी न की हो. यति, ब्रह्मचारी कहे जाने वाला हनुमान भी इस दल्लागिरी सें अछूता नहीं रह सका. आर्यों में दूसरे की स्त्री सें शारीरिक सम्बंध या सम्पर्क कतई अनहोनी बात नहीं थी. एक बार कृष्ण अर्जुन और उनकी पत्नियां बैठे दारू पी रहे थे. कृष्ण ने अपनी टांगे अर्जुन की गोद में रखी हुईं थीं. अर्जुन ने अपनी टांगें द्रोपदी और सत्यभामा की गोद में रखी हुईं थीं. सत्यभामा कृष्ण की स्त्री थी. इस तरह अर्जुन ने अपनी टांगे अपने भगवान की पत्नि की गोद में रखी हुई थीं. अर्जुन रिश्ते में कृष्ण का जीजा भी लगता था. इस तरह अर्जुन ने अपने सालेहज की गोद में अपनी टांगे रखी हुई थीं. आज के समय कोई भी चरित्रवान नारी गैर मर्द की टांगें अपनी गोद में रखना गवारा नहीं करेगी लेकिन आर्यों में ऐसे लोग भगवान कहे जाते हैं.

. **कौमार्य ?** : ब्राह्मणधर्म के ग्रन्थ पढ़ कर ऐसा लगता है कि आर्य लडकियां और स्त्रियां भी आवारगी में किसी सें कम नहीं थीं. शादी तक कुंआरी रहना कतई जरूरी नहीं था. शायद ऐसा कहना अधिक सही होगा कि शादी होने तक कोई लड़की कुंआरी बचती ही नहीं थी. लगभग हर लड़की देवों के हत्थे चढ़ जाती थी. वैसे भी आर्य समाज में विवाह सें पहले माँ बनने वाली कुंती,, शकुंतला, मत्स्यगंधा जैसियों की कमी नहीं थी. शादी के बाद गैरों सें व्यभिचार करने वाली अंजनियों, अहिल्याओं की सूचि तो अंतहीन है. पुरुषों के बारे में भी नियम था कि ऋतुकाल में स्त्री सें यौन सम्बंध बनाने वाला भी ब्रह्मचारी ही रहता है. (वन पर्व 208.11) (आर्य नीति 27)

. **पशुओं के साथ अनाचार** : आर्य विशेषकर ब्राह्मण ऋषि पशुओं सें मैथुन करने के भी शौकीन थे. हिरणी उन्हें खास तौर पर पसन्द थी. राम को पैदा करने वाला ऋष्यश्रृंग तो पैदा ही हिरणी सें हुआ बताया जाता है. उसके बाप विभांडक ने हिरणी सें यौन सम्बंध बना कर ऋष्यश्रंग को पैदा किया था. महाभारत के किस्से की जड़ भी हिरणी सें मैथुन करते हुए ब्राह्मण ऋषि दम को मारना ही है. अगर पांडू हिरणी सें काम में जुटे ब्राह्मण ऋषि दम को नहीं मारता तो महाभारत में नियोग की शुरुआत नहीं होती और

नियोग नहीं होता तो महाभारत के 99 प्रतिशत कलाकार पैदा ही नहीं होते. न वे पैदा होते न महाभारत होती!! बिना कलाकारों के महाभारत कहां सें होती!!

इन्हीं बातों के कारण बाबा साहिब ने सत्य और सटीक कहा है कि ब्राह्मणिक आर्यों का धर्म बर्बर और अश्लील था. (8.296) ब्राह्मण धर्म का सरोकार कभी भी ऐसे जीवन सें नहीं रहा जिसे सदाचारी जीवन कहा जाता है. (7.42)

1.2 ब्राह्मण का अर्थ

ब्राह्मणधर्म की जड़ ब्राह्मण हैं. अतः ब्राह्मणवाद को जानने के लिए उसकी जड़ को जानना अत्यंत जरूरी है. सबसें मुख्य प्रश्न हैं कि ब्राह्मण कौन है! उसका उद्‌गम यानि पैदायश क्या है! **और सबसें महत्वपूर्ण प्रश्न यह कि भारत का *सबसें छोटा अल्पसंख्यक वर्ग* होते हुए भी वह पूरे भारतीय तन्त्र पर काबिज कैसे है! ऐसा उसमें क्या है कि भारत के राष्ट्रपति पद सें लेकर दफतर के बड़े बाबू तक हर जगह 'ब्राह्मण' ही विद्यमान है!**

ब्राह्मण कौन है : इस प्रश्न के दो भाग हैं : पहला यह कि ब्राह्मण का इतिहास क्या है तथा दूसरा यह कि कौन लोग ब्राह्मण में शामिल हैं.

ब्राह्मण का इतिहास : यह बड़ी अजीब सी बात है कि हमने कभी ऐसी पुस्तक नहीं देखी जिसमें ब्राह्मण जाति का इतिहास लिखा गया हो. अन्य जातियों के इतिहास पर अनेकों पुस्तके बाजार में उपलब्ध हैं. जैसे चमार का इतिहास, बणियों का इतिहास, क्षत्रियों, जाटों, कायस्थों, रैगरों का इतिहास आदि किताबें बाजार में उपलब्ध हैं लेकिन ब्राह्मण जाति का इतिहास उपलब्ध नहीं है. यह बड़ी असमंजस की बात है कि भारत की एक मात्र "शिक्षित" जाति ने अपना इतिहास क्यों नहीं लिखा.

ऐसा लगता है इसका कारण वही है जो मान्यवर मुद्राराक्षस ने अपने खोजग्रन्थ (धर्मग्रन्थों का पुनर्पाठ) में दिया है. **ब्राह्मण जाति के बारे में उन्होंने एक दिलचस्प तथा चौंका देने वाली खोज की है कि ब्राह्मण मूल रूप सें भारतीय नहीं हैं. वे निस्संतान अब्राहम की मिश्र देशीय दासी सें पैदा हुए सबसें बड़े बेटे की संतान हैं.** (धर्मग्रन्थों का पुनर्पाठ 13) सिनाई रेगिस्तान सें वे भारत आए. अपने साथ वे अपनी संस्कृति और यादें भी लेकर आए. इसीलिए उनके अधिकतर ग्रन्थों के हीरो निस्संतान हैं तथा अपने घर सें बेघर होते हैं. उनके किस्सों तथा इतिहास में दासियों की भूमिका भी कम नहीं है.

मुद्राराक्षस ने अनेकों उद्धरण देकर सिद्ध किया है कि **केवल ब्राह्मण बाहर सें आए थे. इसका अर्थ यह हुआ कि ब्राह्मण को छोड़ कर शेष तीनों वार्णों तथा अन्य सभी जाति के लोग भारत के मूल निवासी हैं. यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि भारत में जितने भी आंदोलन हुए सब के सब ब्राह्मण और उसके ब्राह्मणधर्म के विरुद्ध हुए है.** भगवन बुद्ध का आंदोलन ब्राह्मणवाद के विरुद्ध था, गुरू रैदास गुरू कबीर ने ब्राह्मण की सत्ता को ललकारा तथा ब्राह्मणधर्म के विरुद्ध लोगों को जागृत किया. पैरियर रामास्वामी नायकर तथा महात्मा ज्योतिबा फूले ने भी ब्राह्मण तथा ब्राह्मणधर्म को चुनौती दी. बाबा साहिब ने भी ऐसा ही कुछ किया.

सोचने की बात है कि हम भारतीयों ने केवल ब्राह्मण के विरुद्ध ही आवाज क्यों उठाई. किसी सन्त ने कभी बनिये या क्षत्रिय के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल क्यों नहीं बजाया. इस प्रश्न का उत्तर वही है जो मुद्रराक्षस ने दिया है. **ब्राह्मण विदेशी हमलावर अर्थात आक्रमणकारी हैं. शेष सभी जाति वाले भारतीय हैं.**

सिन्धु साम्राज्य में पुरोहित नहीं थे. सिन्धु साम्राज्य के खण्डहरों में हजारों प्रकार की मुहरें मिली हैं. उनमें भगवन बुद्ध की मुहरें हैं, धर्म चक्र की मुहरें हैं, पीपल की मुहरें हैं, भिक्षु की मुहरे हैं, नर्तकी की मुहरें हैं **मगर किसी पुरोहित की कोई मुहर नहीं मिली है.** इससें दो बातें साफ होती हैं पहली यह कि हम भारतीयों ने आखिरी दम तक ब्राह्मणों की पुरोहिताई स्वीकार नहीं की थी तथा दूसरी यह कि हमारे सिन्धु साम्राज्य को भगवन बुद्ध के बहुत बाद नष्ट किया गया जब पूरा भारत बौद्धमय हो चुका था यानि सम्राट अशोक के बाद सिन्धु साम्राज्य को नष्ट किया गया.

जब ब्राह्मण भारत आए उस समय हमारे दलित साम्राज्य यानि सिन्धु सभ्यता में दो प्रकार के लोग रहते थे : एक वर्ग में वे लोग थे जो राज्य का कार्यभार संभालते थे जिनका काम समाज में अमन शांति बनाए रखना होता था. दूसरे समूह में वे लोग होते थे जो कारीगर थे तथा व्यापार करते थे. राजा और प्रजा में कोई अधिक अंतर नहीं होता था. गांव के सरपंच की तरह यहां के राजा होते थे. राजा और उसके सिपाहियों को लोग आदर सें आर्य बुलाते थे. **क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नाम सें कोई वर्ण या जाति नहीं होती थी.**

विदेश सें आए ब्राह्मण यहां अजनबियों की तरह रहते रहे. उनका खानपान रहन सहन हम भारतीयों सें बिल्कुल अलग था. वे जंगलों में रहते थे, दारू मीट उनका मुख्य खाना था, यज्ञ और बलि उनका धर्म था. घोड़ा उनका प्रमुख पशु था, सांड हमारा प्रमुख पशु था. भारतीय श्रमणधर्म को मानने वाले थे.

उस समय आज की तरह देश की सीमाएं नहीं होती थीं. ब्राह्मण बेरोकटोक आकर जंगलों व सिन्धु शहरों के बाहर बसते रहे. झगड़ा तब हुआ जब ब्राह्मणों ने भारतीयों के पशु चुराना शुरू कर दिया तथा उनके सिंचाई के लिए बनाए गए बांधों को तोड़ना शुरू किया. इन अपराधों के कारण सिन्धु के सिपाही वर्ग ने विदेशी ब्राह्मणों के विरुद्ध अभियान छेड़ा. इस प्रकार ब्राह्मणों और सिपाही वर्ग (क्षत्रियों) के बीच दुश्मनी पनपी.

छिटपुट लड़ाइयां तो रोजाना ही होती थीं. एक बार बड़े युद्ध का वर्णन भी है जिसमें दस राजाओं ने भाग लिया था. ऋग्वेद के अनुसार इसमें लगभग एक लाख भारतीय मारे गए. यह युद्ध कब हुआ इसकी निश्चित तारीख बताना संभव नहीं है. मात्र इस बात सें अनुमान लगाया जा सकता है कि भगवन बुद्ध ने कभी इस घटना का जिक्र नहीं किया और न ही त्रिपिटक में इसका उल्लेख है. दूसरे यह कि बुद्धकाल तक ब्राह्मण स्वयं को क्षत्रिय सें ऊँचा सिद्ध करने में लगा हुआ था. अतः यह युद्ध बुद्धकाल के बाद की घटना है.

जैसा कि होता आया है हर समाज में विभीषण (गद्दार) मिल जाते हैं तथा "भेद" (अर्थात बांटो और राज करो) ब्राह्मणों की सनातन नीति है. ब्राह्मणों ने भी भारतीय समाज में गद्दार ढूंढे. कुछ सिपाही वर्ग के परिवार ब्राह्मणों के चंगुल में फंस गए. गीता के अनुरूप उन्हें भी लड़ाई में अपने ही भाईयों को मारने पर धरती का राज्य तथा मरने पर स्वर्ग मिलने की बातें की गईं. जो उनके खेमे में आ गया उसे सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, रघुवंशी आदि क्षत्रिय की उपाधि दे दी गई. घर में फूट पड़ी और ब्राह्मण भारत पर काबिज हो गए.

यह परिक्रिया किसी एक दिन में घटित नहीं हुई बल्कि सदियों तक ऐसा चलता रहा. भारतीय आपस में लड़ते रहे. बाबा साहिब ने लिखा है कि वेदों में उल्लेख है कि आर्य ही आर्य के विरुद्ध लड़े. वे ऐसे ही लड़े थे. शूद्र चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मण को अपना मंत्री बनाया तो उन्हें क्षत्रिय करार दे दिया गया. उनके पौत्र अशोक ने बुद्ध धर्म अपना लिया तो उनके वंशजों को अछूत बना दिया गया. उन्हीं का मौर्य गोत्र आज चमार की अनेक उपजातियों में पाया जाता है.

उधर "किताबी विद्वान इतिहासकार" इस बहस में उलझ रहे हैं कि चन्द्रगुप्त क्षत्रिय थे या शूद्र थे. वे यह जानने की कोशिश नहीं करते कि त्रिशंकु को क्षत्रिय सें शूद्र कैसे और क्यों बनाया गया, क्षत्रिय कार्तीवीर्य अर्जुन और उसका वंशजों को क्यों गाजर मूली की तरह काट दिया गया. क्यों ब्राह्मणों ने क्षत्रियों का समूल नाश किया. और फिर क्यों हमलावर हुणों को क्षत्रिय बना दिया गया! क्यों बाबरी मस्जिद तोड़ी गई! क्यों अकाल तख्त नष्ट किया गया!

यही ब्राह्मण का इतिहास है. जिस किसी ने भी उसकी सत्ता को चुनौती दी है, उसने उसे भेड़िये जैसी क्रूरता सें समाप्त कर दिया है. सबसें हैरानी की बात यह होती है कि ब्राह्मण कभी भी सामने आकर वार नहीं करता. अकाल तख्त पर धावा बोलने वाली फौज का नेतृत्व सिख जनरल कर रहा होता है, दलित मुस्लिम पर दलित हिन्दुओं का हमला हो रहा होता है.

सभी जातियों वाले दलितों को दिए जाने वाले तुच्छ से आरक्षण के विरुद्ध आवाजें उठाते रहते हैं मगर कोई भी जाति वाला पुरोहिताई में ब्राह्मणों को मिले 100 प्रतिशत आरक्षण की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखता. **यह बात उसके दिमाग में ही नहीं आती कि एक बनिया, एक राजपूत, एक अरोड़ा भी उतना ही हिन्दू है जितना कि ब्राह्मण है. फिर कोई बनिया, कोई राजपूत, कोई अरोड़ा किसी मन्दिर का पुरोहित क्यों नहीं बन पाता!!** जितनी तनखाह सारे सरकारी दलित कर्मचारियों को मिलती है उससें कहीं ज्यादा चढ़ावा ब्राह्मणों के एक ढंग के मंदिर में आ जाता है. उस चढ़ावे पर कभी कोई आरक्षण क्यों नहीं मांगता! पूरे भारतीय समाज को अपने पांव तले रखना, उसे दिमागी तौर पर पंगु बना देना ही ब्राह्मण इतिहास है.

कौन कौन ब्राह्मण हैं : अगर मनु स्मृति व अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों को सही मान लें तो ब्राह्मणवाद में ब्राह्मण बनने के तीन सिद्धांत अथवा विधियां हैं.

1. **गुण अथवा कर्म विधि :** बाबा साहिब के अनुसार प्राचीन काल में ब्राह्मणिक समाज में बालक के वर्ण निर्धारण का काम सप्त ऋषि किया करते थे. आचार्य सुरेन्द्र कुमार (मनु स्मृति) के अनुसार मनु स्मृति का असली नियम यही था कि गुणों के आधार पर ही किसी को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र वर्ण बनाया जाए. ब्राह्मण जन्म सें पैदा नहीं होता था. अर्थात ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण ही होगा ऐसा नियम नहीं था. बालक के गुण देख कर उसका वर्ण निधारण किया जाता था.

   यह विधि राजा सुदास के समय तक चलती रही जब विश्वामित्र और वशिष्ठ में तनातनी हो गई तथा ब्राह्मणों ने क्षत्रिय राजा सुदास को शूद्र घोषित कर दिया तथा विश्वामित्र को ब्राह्मण नहीं बनने दिया. ज्ञात इतिहास में विश्वामित्र का पहला केस है जब किसी को ब्राह्मण बनने सें रोका गया.

कुछेक उदाहरणें ऐसी भी मिलती हैं कि जहां वेश्याओं के बालक ब्राह्मण वर्ण प्राप्त कर पाए अथवा कुछेक क्षत्रिय तप करके ब्राह्मण बन गए. **लेकिन सत्य यह भी है कि ऐसी एक भी उदाहरण नहीं मिली कि किसी ब्राह्मण के बेटे को शूद्र का वर्ण मिला हो.**

अतः इन बातों सें तर्कपूर्ण निर्णय यही किया जा सकता है कि ब्राह्मण जैसे आए वैसे ही भारतीय समाज सें अलग रहे. उनके जब बच्चे पैदा होते थे तो उन्हें क्या काम दिया जाए अर्थात उससे पुरोहिताई करवाई जाए या सिपाही बनाया जाए या खेती करवाई जाए या फिर मजदूरी करवाई जाए, इसका निर्णय उनके बड़े बुर्जुग यानि सप्तऋषि करते थे. जब भारतीय समाज के गद्दार सिपाही उनके खेमे में जाकर क्षत्रिय बनने लग गए तो उनका वर्ण निर्धारण का काम सप्तऋषियों की बजाए आचार्य ब्राह्मण को सौंप दिया गया. जब सुदास और विश्वामित्र जैसे क्षत्रियों ने अपना विरोध जताया तो उन्हें शूद्र बना दिया गया.

यह ध्यान देने योग्य बात है कि बुद्धकाल तक बच्चे को बाप का ही वर्ण मिलता था. किसी आचार्य अथवा किसी सप्तऋषि की इसमें कोई पूछ नहीं होती थी. दूसरी बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि उस समय तक ब्राह्मण को क्षत्रिय सें ऊँचा नहीं मान लिया गया था. अतः गुण कर्म के आधार पर वर्ण तय करने की बात कुछेक परिवारों तक सीमित थी जो कि बुद्धकाल तक पूर्णतया समाप्त हो चुकी थी.

2. **जन्म विधि** : ब्राह्मण बनने का दूसरा ढंग है कि ब्राह्मण माँ बाप के द्वारा जन्म लिया जाए. आज के समय में यही नियम लागू है कि ब्राह्मण का बेटा ही ब्राह्मण बनता है. उसके गुण अवगुण उसका वर्ण निर्धारण नहीं करते. बस वही ब्राह्मण कहलाता है जिसने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया है. कोई समय था जब माँ के गोत्र सें ही बेटे का गोत्र बनता था. बाप चाहे किसी कुल, जाति का हो बेटे को माँ के गोत्र सें ही जाना जाता था. इतिहास में ऐसी अनेकों उदाहरण हैं जब शूद्र बाप का बेटा भी ब्राह्मणी माँ की कोख सें पैदा होकर ब्राह्मण कहलाया. कर्णपर्व (44..45) के अनुसार लगभग पूरे भारत में शूद्रों द्वारा ब्राह्मणियों की कोख सें पैदा किए ब्राह्मण विचर रहे हैं. आज के समय में ब्राह्मण समाज में माँ की बजाए बाप का ब्राह्मण होना आवश्यक है. माँ चाहे किसी जाति की हो बच्चे को बाप की ही जाति का माना जाता है.
3. **शुद्धिकरण विधि :** दयानन्द ने गैर ब्राह्मणों को "शुद्ध" करके ब्राह्मण बनाने का आडम्बर रचा. अतः वे लोग भी ब्राह्मण कहलाते हैं जिनके पूर्वजों को शुद्ध करके "ब्राह्मण" बना दिया गया था. इसलिए आज अनेकों ऐसी जातियां मिलती हैं जो स्वयं को ब्राह्मण करार देती हैं मगर प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार वे शूद्र हैं. ब्राह्मणों के अन्दर भी ऊँच नीच होने का प्रमुख कारण भी यही है कि बहुत सी अब्राह्मण जातियां भी ब्राह्मण बना दी गईं. उदाहरणतः डाकोत स्वयं को ब्राह्मण मानते हैं लेकिन वे स्वयं यह भी स्वीकार करते हैं कि उच्च कुल ब्राह्मण नहीं हैं. उनका ब्राह्मणों सें रोटी बेटी का रिश्ता नहीं होता. वे केवल अपने ही जाति के गोत्रों में रिश्ते कर पाते हैं.

1.3 भारतीय इतिहास का अहम समय (Turning Point of Indian History)

शायद दुनिया का सबसें कठिनतम विषय "भारत का इतिहास" ही है. बाबा साहिब ने सही कहा है कि भारत का इतिहास वास्तव में ब्राह्मण और श्रमण संस्कृतियों के टकराव का इतिहास मात्र है. इस टकराव में पिछली जीत ब्राह्मण की हुई है. अंतिम और निर्णायक टकराव होना अभी बाकी है. लगभग 2200 साल पहले अर्थात 185 ईसापूर्व में ब्राह्मणों ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या करके श्रमणधर्मियों को हराया था. तब सें लेकर आज तक भारत पर ब्राह्मण का वर्चस्व कायम है. अब उनका सिंहासन डोलने लगा है. अंतिम और निर्णायक विजय निश्चित रूप सें श्रमण धर्मियों की ही होगी!

इस घिनौनी जीत के बाद पढ़े लिखे शातिर ब्राह्मणों ने वह किया जिसकी दुनिया में कहीं और मिसाल नहीं मिलती. उन्होंने भारत का इतिहास को नष्ट भी किया और भ्रष्ट भी कर दिया. इतिहास की कोई तारीख, कोई घटना उन्होंने अछूती नहीं छोड़ी. जितने भारतीय नायक थे उनके जैसे अनेकों काल्पनिक पात्र बना कर उनके किस्से घढ़ दिए गए. आज दसियों प्रकार के शंबर, सैंकड़ों प्रकार के रावण उनकी किताबों में मिल जाते हैं. किसने क्या किया, कब किया कुछ पता नहीं चल पाता. हनुमान का बाप पवन सत्ययुग सें लेकर कलियुग तक बच्चे पैदा करने के काम में जुटा पाया गया. हर आदमी की ऊलजलूल पीढियों का वर्णन किया गया. राम और सीता के बीच 30–35 पीढ़ियों का अंतर बना दिया गया.

धन्यवाद के पात्र हैं बौद्ध भिक्षु विशेषकर विदेशी भिक्षु और दूसरे विदेशी विद्वान जिन्होंने भारत का इतिहास कुछ टुकड़ों में बचा कर रख लिया. भारत के इतिहास पर बाबा साहिब के उपरोक्त बयान के आधार पर भारत के इतिहास को चार कालों में बांटा जा सकता है :

1. **जम्बूद्वीप भारत : ब्राह्मणों के भारत आने सें पहले का भारत. (आदि काल सें लेकर 1500 ईसापूर्व तक)** वह भारत जहां मात्र श्रमण धर्म का बोलबाला था. जहां कोई पुरोहिताई नहीं करता था. कोई ऊँच नीच नहीं थी. यहां तक कि आर्थिक रूप सें भी सब बराबर थे. **कितनी आश्चर्य की बात है कि अफगानिस्तान सें लेकर गुजरात तक पूरे सिन्धु साम्रज्य के खण्डहरों में एक जगह भी महल नहीं मिला है! हर शहर में हर जगह एक जैसे घर मिले हैं. आज दलित कहे जाने वाले हम उस साम्राज्य के और उस संस्कृति के वारिस हैं.**

   हजारों साल तक हम भारतीय बड़े प्यार, भाईचारे और मस्ती के साथ इस देश में रहते रहे. प्रजातंत्र हमारी शासन पद्धति थी. बुद्धकाल के बाद तक यही पद्धति जम्बूदीप में लागू थी. सिन्धु साम्राज्य के नगरों में राजा जनता द्वारा ही चुना जाता था.

2. **मिला जुला भारत** : (1500 सें 500 ईसापूर्व का समय) भगवन बुद्ध और महावीर जैन सें पहले का समय जब ब्राह्मणों ने अपना जाल सिन्धु साम्राज्य सें आगे फैलाना शुरू कर दिया था. उन्होंने सिन्धु साम्राज्य के कुछेक नगरों में तोड़ फोड़ की थी लेकिन शेष नगर सुरक्षित थे. गंगा के मैदानों में उन्होंने अपनी बस्तियां बसाईं. यहां रहने वाले आर्यों के मुख्य कबीले थे : त्रिस्तु, भरत, तुर्वसु, द्रुह्य, यदु, पुरु और अनु.

   राजा सुदास जो कि क्षत्रिय सें शूद्र बनने वाला प्रथम पुरुष था भरत वंशी था तथा त्रिस्तुओं का राजा था. उन्हीं के पूर्वज भरत के नाम पर इस देश को **भरतभूमि** कहा जाता था. **सिन्धु साम्राज्य के इलाके को भारतभूमि कहा जाता था. गंगा के मैदान जहां ब्राह्मण रहते थे उस इलाके को आर्यवर्त कहा जाता था. आचार्य चतुरसेन के अनुसार भी ब्राह्मणिक आर्य अपने रहने के इलाके यानि अपने देश को "आर्यवर्त" या "ब्रह्मावर्त" कहते थे और उसके बाहर के इलाके को "भारत" कहते थे. (दृग स्पर्श 40)**

   गंगा के मैदानों के क्षत्रिय राजा ब्राह्मणों के जाल में फंसे. राम व जनक के कबीले इसमें खास हैं. विदेश सें आए ब्राह्मणों के लिए यज्ञ (सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति) सबसें ऊपर की चीज होती थी. नैतिकता, सदाचार, बहन बेटी जैसे रिश्तों का कहीं नामो निशान ही नहीं होता था. ऋषियों और ब्राह्मणों का अनैतिक, अनाचारी आचरण ही धर्म कहा जाता था. उन के साथ मिलने वाले कबीले भी लगभग उन जैसे ही थे.

   समय के साथ अनेक कबीले उनके सुरा सुन्दरी के जाल में फंसते गए. ब्राह्मण स्वयं ऋषि या पुरोहित बने रहे. यहां के आर्यों को क्षत्रिय बना दिया गया. खेती और व्यापार करने वाले वैश्य वर्ण में रख दिए गए. **बुद्ध काल तक भी शूद्र वर्ण पूरी तरह नहीं बना था. उस समय दास प्रथा तो पूरे जोरों पर थी मगर शूद्र बहुत अधिक नहीं थे तथा जो थे उनको हेय नहीं समझा जाता था.** भन्ते उपालि शूद्र होते हुए भी बिना रोक टोक या भेदभाव के भिक्षु बने तथा विनय पिटक का संकलन किया.

   भगवन बुद्ध ने दासों को भिक्षु बनाने पर कुछ शर्तें लगाईं मगर शूद्र और ब्राह्मण समान रूप सें उनके धर्म और संघ में शामिल हुए. दास और शूद्र अलग होते थे. कुछ शूद्रों के पास तो दास भी होते थे. दासों का बुरा हाल था. उन्हें बेगारी करनी पड़ती थी. उनकी स्त्रियां हर घर में बेआबरू होती थीं. आम तौर पर उन्हें पता ही नहीं होता था कि उनके बच्चे का बाप कौन है. ऋषि जाबालि की कथा इसका सबूत है. राम, जनक आदि द्वारा दासियों की लेन देन करना, यह दर्शाता है कि ब्राह्मणिक आर्यवर्त में स्त्रियों की खरीद बेच आम ही बात थी.

   इसी काल में **आर्य शब्द का प्रयोग सार्वजनिक हुआ. ब्राह्मणों ने स्वयं तथा अपने साथ मिलने वाले सभी लोगों को आर्य कहना शुरू किया.** मात्र देशी सिपाही वर्ग के लिए प्रयोग किए जाने वाला यह शब्द पूरे ब्राह्मणवादी समाज के लिए प्रयोग किया जाने लगा.

   पूरा उत्तर भारत उनकी चपेट में आ गया था. यज्ञ होने लग गए थे जहां मीट शराब और स्त्री का भोग बेराकटोक होता था. रन्तिदेव जैसे लोग रोजाना हजारों गाएं काट कर ब्राह्मणों को खिलाते थे. इस दौरान चार्वाक जैसे लोग हुए जिन्होंने लोगों को इस अधर्म के विरुद्ध जागृत किया. राजा वेण जैसे लोगों ने ब्राह्मणिक अनाचार के विरुद्ध आवाज उठाई. ऐसे लोग निर्दयता सें कत्ल कर दिए गए.

3. **बौद्ध भारत** : **(600 ईसापूर्व सें 600 ईसवी तक)** इस अनाचार के विरुद्ध भारतीय आर्य यानि क्षत्रियों ने मोर्चा संभाला. **ब्राह्मणों के वेदों का अन्त करने के लिए क्षत्रियों ने अपने उनिषद बनाए. इसलिए उपनिषदों को वेदान्त कहा गया.** भारतीय आर्यों यानि क्षत्रियों और ब्राह्मणों में श्रेष्ठता के प्रश्न पर तनातनी हुई. जहां एक ओर ब्राह्मणों ने विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि बनने सें रोका तो दूसरी ओर उपनिषदों के रचियता क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को उपनिषदों के ज्ञान सें दूर रखा. तनातनी कुछ ज्यादा बढ़ी तो क्षत्रिय राजा को शूद्र बना दिया गया. क्षत्रियों यानि शूद्रों की शिक्षा बन्द कर दी गई.

इसी अंधकारमय समय में भगवन बुद्ध और महावीर स्वामी जैसे सन्तों ने आम जनता को ब्राह्मणों के चंगुल सें आजाद करवाया. ब्राह्मणधर्म राज दरबारों तक सीमित हो कर रह गया. लगभग 300 सालों तक श्रमण सन्तों और ब्राह्मण ऋषियों में संघर्ष चलता रहा. **261 ईसापूर्व में सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म अपनाया और इसे राजधर्म घोषित कर दिया. ब्राह्मण और ब्राह्मणधर्म को जनता तथा राजा दोनों सें मदद मिलना बन्द हो गई.**

ब्राह्मणधर्म मृतप्रायः हो गया था. बौद्ध धर्म का बोलबाला भारत समेत पूरे एशिया में भी हो गया था. नैतिकता, सच्चाई सदाचार का आचरण धर्म कहलाया. लोगों को अनाचारी ऋषियों के गिरोह सें छुटकारा मिला. पूरे भारत में बौद्ध विहार बनाए गए. उनके खण्डहर आज पूरे भारत देश में मिलते हैं मगर कहीं भी ऋषि और उनके फार्म हाऊस (आश्रम) के निशान भी नहीं मिले हैं.

185 ईसा पूर्व में ब्राह्मणों के एक गिरोह ने सम्राट अशोक के वंशज सम्राट वृहदर्थ का धोखे सें कत्ल कर दिया और **भारत के सिंहासन पर पहली बार एक गैर–दलित बैठा. आदिकाल सें लेकर ज्ञात इतिहास में 185 ईसा पूर्व तक मात्र उन लागों को शासन रहा है जिन्हें आज दलित शूद्र अछूत के नाम सें जाना जाता है.**

चौथी सदी में गुप्त वंश के राजाओं ने फिर सें ब्राह्मणिक यज्ञ बलि देना शुरू किया. **गुप्त वंश किस जाति सें थे किसी को पता नहीं, इसलिए उनके वंश को गुप्त यानि छुपा हुआ वंश बताया जाता है. अतः यह निश्चित है कि वे ब्राह्मण और क्षत्रिय तो नहीं थे.**

गुप्तवंशी राजा सब धर्मों के प्रति सहिष्णु थे. अतः वे निश्चित रूप सें श्रमण संस्कृति के ही वंशज थे. वैसे भी 'मौर्य' की तरह 'गुप्त' गोत्र भी चर्मकार जातियों में ही पाया जाता है. सम्राट बालादित्य (463. 473 ईसवी) ने तो बुद्ध धर्म अपना ही लिया था.

4. **हिन्दू भारत** : (संकराचारय सें लेकर आज तक का भारत) 185 ईसा पूर्व में सम्राट वृहदर्थ का कत्ल करके चाहे ब्राह्मणों ने सत्ता हथिया ली थी लेकिन फिर भी आम जनता और बौद्ध भिक्षुओं ने सदाचार का दामन नहीं छोड़ा था. यज्ञ केवल राजाओं तक सीमित हो गये थे. संकर ने सातवीं सदी में वैदिक धर्म की जगह वर्तमान हिन्दु धर्म का शिलान्यास किया. उसने और उसके साथियों ने कर्मकांड तो ब्राह्मण धर्म वाले रखे लेकिन नैतिकता का आवरण बौद्ध जैन धर्मों वाला ओढ़ लिया. आज के हिन्दुओं में सदाचार तो जैन व बौद्ध धर्म वाला पाया जाता है लेकिन कर्मकांड ब्राह्मणों वाले हैं.

जो ब्राह्मण यज्ञ करना, उसमें बलि देना, वहां पर व्यभिचार करना आदि को सनातन धर्म कहते थे इससें परे हट गए. बड़े यज्ञों की जगह उन्होंने **महात्मा रावण वाले हवन** करना शुरू कर दिए.

अहम मोड़ (Turning Point) : भारत के इतिहास में 4 अहम मोड़ हैं. दो सुखद दो दुखद.

1. **पहला दुखद मोड़ : लगभग 3500 साल पहले यानि 1500 ईसा पूर्व में ब्राह्मण भारत आए.**
2. **दूसरा सुखद मोड़ : ईसा पूर्व 261 में सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म अ**
3. **तीसरा दुखद मोड़ : ईसा पूर्व 185 में समाट वृहदर्थ की हत्या की गई.**
4. **चौथा सुखद मोड़ : सन 1956 में बाबा सहिब ने हिन्दुधर्म त्याग कर बुद्ध धर्म अपनाया.**

1. पहला अहम मोड़ (Turning Point): लगभग 3500 साल पहले ब्राह्मण भारत आए. भारतभूमि पर पहली बार किसी विदेशी ने अपने पांव जमाए थे. ब्राह्मण यहूदियों के आदिपुरुष अब्राहम के वंशज हैं जिन्हें उनकी उदण्डता के कारण उनके देश सें निकाल दिया गया था. वे आधुनिक इराक के उर नामक स्थान के रहने वाले थे. कई बरसों तक मिश्र, मध्य एशिया आदि इलाकों में भटकने के बाद वे भारत पहुंचे. वे अपने साथ न केवल अपने देश के कर्मकांड लेकर आए बल्कि रास्ते में जिन लोागें के संपर्क में आए उनके भी कर्मकांड साथ लेते आए.

उदाहरणतः बड़े बड़े यज्ञ करना तथा उनमें पशु भून कर खाना उनका सबसें मुख्य काम था. अनियंत्रित यौन सम्बंध भी उनके कर्मकांडों में शामिल था. जब ब्राह्मण भारत आए तो उस समय यहां दो ही प्रकार के लोग रहते थे : सिपाही और कारीगर. सिन्धु साम्राज्य के नगरों की खुदाई सें एक बात साफ जाहिर होती है कि वहां सभी के घर एक समान थे. **राजा का महल जैसी कोई इमारत नहीं मिली है.** इसका अर्थ यह हुआ कि सिपाही और कारीगर वर्ग में कोई ऊँच नीच नहीं थी.

सिन्धु साम्राज्य की जितनी भी मुहरें मिली हैं उनमें कोई भी ऐसी मुहर नहीं है जिसमें यज्ञ किया जा रहा हो. इसका अर्थ हुआ कि हजार साल एक साथ रहने के बावजूद भारतीयों ने ब्राह्मणों को नहीं अपनाया था. या फिर ऐसा रहा होगा कि ब्राह्मणों ने हम भारतीयों को अपने साथ नहीं मिलाया होगा. ऐसा संभव प्रतीत नहीं होता कि पहले सिन्धुवासी यज्ञ करते हों तथा बाद में बुद्ध की शरण में आकर छोड़ दिए हों. अगर सिन्धु वासियों यानि भारतीयों ने कभी यज्ञ किए होते तो एकाध सील तो अवश्य मिलती.

सिन्धु साम्राज्य में लोग बड़े बड़े शहरों में रहते थे जबकि ब्राह्मणों ने जंगलों में आकर अपना डेरा जमाया. उनकी प्राचीन पुस्तकों अर्थात वेद आदि में किसी शहर में रहने का जिक्र नहीं है. **शहर में रहना तो दूर उनकी संस्कृत भाषा में "ईंट" के लिए कोई शब्द नहीं है. अतः उन्हें पता ही नहीं था कि भवन कैसे बनाया जाता है.** वे जंगलों में घास फूस के झोंपड़ों में रहते थे. आज की तरह उस समय देश की निश्चित सीमाएं नहीं होती थीं. अतः ब्राह्मणों को अपनी बस्तियां बनाने में कोई अड़चन नहीं आई.

उनका झगड़ा तब शुरू हुआ जब वे यज्ञों में काटने के लिए भारतीयों के पशु चुराने अथवा लूटने के लिए शहरों की तरफ आने लगे. मवेशियों के मालिक उन्हें खदेड़ देते थे. **ऐसे मालिकों को उस समय की संस्कृत भाषा में दस्यु कहा जाता था.** (Decipherment of Indus Script)

सैंकड़ों सालों तक यह लूटमार चलती रही. ब्राह्मण सिन्धु साम्राज्य सें आगे निकल कर गंगा के मैदानों में बस गए. वहां के अनेक कबीले उनके साथ मिल गए. सिन्धु साम्राज्य की तरह शेष भारत में भी पुरोहित वर्ग नहीं होता था. ब्राह्मणों ने पुरोहिताई करना शुरू किया. कुछ भारतीय मूल के लोग भी पुरोहिताई के धन्धे में उतरे और ब्रह्मर्षि तक ऋषि बने लेकिन जब ब्राह्मणों को आभास हुआ कि इससें उनकी कुर्सी खतरे में पड़ सकती है तो उन्होंने विश्वामित्र जैसे क्षत्रिय को ब्रह्मर्षि बनने सें रोक दिया. तब क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र ने अपना ही अलग निकाय या प्रणाली बना ली.

कुछ क्षत्रियों राजाओं ने उसका साथ दिया. क्षत्रिय राजा सुदास ने यह घोषणा कर दी कि पुरोहित होने के लिए ब्राह्मण होना अनिवार्य नहीं है. तब उसने ब्राह्मण ऋषि वशिष्ठ को अपने पुरोहित पद सें हटा कर क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र को अपना पुरोहित बना लिया. इस बात सें नाराज होकर ब्राह्मणों ने सुदास और उसके कुल के क्षत्रियों का उपनयन संस्कार बन्द कर दिया तथा उन्हें शूद्र घोषित कर दिया. **भारत के इतिहास में तब शूद्र वर्ण का जन्म हुआ.**

श्रद्धेय राहुल सांकृत्यायन के अनुसार सुदास 1150 ईसा पूर्व यानि अब सें लगभग 3150 साल पहले भारत का राजा था. अतः लगभग 3200 साल पहले शूद्र वर्ण का जन्म हुआ. आज भारत की 85 प्रतिशत आबादी ऐसी है जो जनेऊ धारण नहीं करती है अर्थात जिनका उपनयन संस्कार नहीं होता है. इतनी बड़ी आबादी के साथ अन्याय होने के बावजूद इतिहास की पुस्तकों में कहीं इस दुर्घटना का उल्लेख नहीं किया जाता!!

इस घटना के बाद न केवल चौथा वर्ण शूद्र बनाया गया बल्कि यह भी निश्चित किया गया कि बेटे को बाप का गोत्र ही मिले. प्राचीन आर्य समाज के नियम अनुसार बेटे को बाप का गोत्र मिलना अनिवार्य नहीं होता था. केवल उपनयन होने पर ही बेटे को गोत्र मिलता था. और जिस बच्चे को गोत्र मिल जाता था उसे कोई अन्य गोद नहीं ले सकता था. एक समय ऐसा भी था जब मात्र ब्राह्मण ही जनेऊ धारण कर सकते थे. जनेऊ का धागा बेटे को बाप के गोत्र सें बांधता था. (Vol. 7.160) समय के साथ इसी नियम ने, कि बेटे को बाप का ही गोत्र मिले, वर्ण को जाति में बदल दिया.

ब्राह्मणों की इस विजय के बाद यज्ञों में पशुओं की मारकाट बहुत ज्यादा होने लग गई. यौन अनाचार भी बढ़ गया. तब ईसा सें लगभग 600 साल पहले महात्मा चार्वाक जैसे लोगों ने ब्राह्मणों द्वारा धर्म के नाम पर किए जा रहे अनाचार के विरुद्ध आवाज उठाई. वे बोले अगर यज्ञ में काटे जाने वाला पशु स्वर्ग जाता है तो ब्राह्मण अपनी तथा अपने परिवार वालों की बलि क्यों नहीं देते! लेकिन ऐसे अनेकों लोग बेरहमी सें पीट पीट कर कत्ल कर दिए गए.

2. दूसरा अहम मोड़ (Turning Point) : भारत के इतिहास में दूसरा अहम मोड़ (Turning Point) तब आया जब सम्राट अशोक कलिंग विजय का जश्न मना रहे थे कि कुछेक बौद्ध भिक्षु उनके समारोह में आये. उन भिक्षुओं ने सम्राट अशोक द्वारा मानव हत्यायें करके राज्य जीतने के कार्य को तुच्छ बताया. सम्राट को अपने किये पर ग्लानि का आभास हुआ. अशोक ने बौद्ध धर्म अंगीकार कर लिया. वह समय भारत तथा बौद्ध धर्म के लिए एक टर्निंग प्वायंट था. उन्होंने अपने राज्य में यज्ञों मे जीव हिंसा करने पर पाबंदी लगा दी. वर्ण भेद के नाम पर किये जा रहे भेदभाव को समाप्त किया. केवल उत्तरी भारत तक सीमित बौद्ध धर्म को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचा दिया. आज दुनिया में जो नैतिकता का अंश मिलता है वह मात्र बुद्ध धर्म के कारण ही है.

3. तीसरा अहम मोड़ (Turning Point) : भारत के इतिहास में तीसरा अहम मोड़ (Turning Point) तब आया जब ब्राह्मणों ने इतिहास में पहली बार वह किया जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था. ब्राह्मणों के गिरोह ने पुष्यमित्र शुंग नामक हत्यारे ब्राह्मण की अगुवाई में सम्राट अशोक के पौत्र सम्राट वृहदर्थ की हत्या करके भारत की राजसत्ता पर कब्जा कर लिया. जब सें धरती बनी है तब सें यह पहली बार ऐसा हुआ कि ब्राह्मणों ने हत्या करके राजगद्दी हथियाई थी. तब सें सत्ता हथियाये हुए ब्राह्मण आज तक सत्ता पर काबिज हैं. भारत के इतिहास में यह पहली बार हुआ था कि भारत देश की सत्ता किसी गैर–शूद्र राजा के हाथ में आई थी.

भारत का इतिहास सिन्धु साम्राज्य सें शुरू होता है. सिन्धु साम्राज्य के सृजक शूद्र और पणिक थे. भारत का राजनीतिक इतिहास 642 ईसा पूर्व सें आरम्भ होता है जब भारतीय नाग वंश के शिशुनाग ने मगध साम्राज्य

की नींव रखी. **उनसें पहले भारत का कभी कोई सम्राट नहीं हुआ.** 230 सालों तक नाग राजाओं का भारत पर शासन रहा. अंतिम नाग राजा महानंद हुए. नाई जाति के नन्द ने तब 413 ईसा पूर्व में नन्द वंश की स्थापना की. अंतिम नन्द राजा महापदम द्वारा एक दासी सें पैदा पुत्र चन्द्रगुप्त थे. उन्होंने अपनी माँ का मौर्य गोत्र अपनाया और 322 ईसा पूर्व में मौर्य वंश की स्थापना की. आज भी लाखों की संख्या में मौर्य गोत्री दलित दिल्ली यूपी और राजस्थान में बसते हैं. चन्द्रगुप्त के पुत्र बिन्दुसार हुए. **भारत में बिन्दुसार पहले राजा थे जिन्होंने भारत में सड़कों का निर्माण करवाया. उन्होंने अफगानिस्तान सें लेकर बंगाल तक सड़कें बनवाईं.** उनके पुत्र अशोक थे. उनका पूरा नाम था **देवनामप्रिय प्रियदर्शी अशोक मौर्य.** दलित सम्राट अशोक मौर्य का नाम दुनिया भर के राजाओं के नामों में वैसे ही चमकता है जैसे तारों के बीच पूर्णिमा का चन्द्रमा!!

अब सें लगभग 2200 साल पहले हत्यारे ब्राह्मणों ने सम्राट अशोक के पौत्र सम्राट वृहदर्थ की हत्या की थी. उनकी हत्या करने के बाद ब्राह्मणों ने जो कदम उठाए उन्होंने भारत के भविष्य का नक्शा ही बदल दिया. ब्राह्मणों ने उस समय दिल को झझकोर देने वाले कार्य किये. वे कार्य निम्न प्रकार सें हैं. (खण्ड 7.157)

* **ब्राह्मणों ने स्वयं को क्षत्रिय सें ऊँचा घोषित किया :** भगवन बुद्ध के समय तक भारतीय मूल के क्षत्रिय वंशज ब्राह्मण सें ऊपर गिने जाते थे. स्वयं भगवन बुद्ध ने क्षत्रियों को ब्राह्मणों सें श्रेष्ठतर होने की बात कही थी. जब वे वर्ण अथवा जाति की बात करते थे तो श्रेष्ठता के आधार पर वे इस प्रकार सें बोलते थे : **क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र.** (भगवान बुद्ध और उनका धम्म पृ. 295) अर्थात क्षत्रियों का नम्बर ब्राह्मणों सें ऊपर आता था. ब्राह्मणों के गिरोह ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या करके इस क्रम को बदल दिया. उन्होंने ब्राह्मण को प्रथम स्थान पर ला दिया. इस क्रम को कोई बदले नहीं इसलिए उन्होंने वेदों में पुरुषसूक्त नामक अध्याय घुसेड़ दिया जिस में यह घोषणा की गई कि ब्रह्मा के मूंह सें ब्राह्मण, भुजाओं सें क्षत्रिय, जांघ सें वैश्य और पैरों सें शूद्र पैदा हुए है. **बाबा साहिब के अनुसार यह हैरानी की बात है कि पूरे ऋग्वेद में शूद्र शब्द केवल एक बार ही आया है.** (तदभव 9)
* **उन्होंने ब्राह्मणों को राजा सें भी ऊंचा घोषित कर दिया.** ब्राह्मण को कानून सें ऊपर का दर्जा दे दिया गया. उन्हें न केवल यह अधिकार दिया गया कि वह बिना राज्य के हस्तक्षेप के किसी को भी सजा दे दे बल्कि उसे राजा की हत्या करने तक का अधिकार भी दे दिया गया. जो राजा ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध काम करे या ब्राह्मण धर्म नहीं अपनाये तो ब्राह्मणों को ऐसे राजा को कत्ल करने का अधिकार दिया गया. यह मात्र कागजी कानून नहीं था ब्राह्मण ग्रन्थ ऐसी घटनाओं सें भरे पड़े हैं जहां ब्राह्मणों ने यज्ञ न करने वाले राजाओं को कत्ल किया.
* **ब्राह्मणों को राजा बनने का अधिकार दिया गया.** जब सें धरती बनी है तब सें लेकर सम्राट वृहदर्थ की हत्या तक एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि भारत का राजा कोई ब्राह्मण रहा हो. आम ब्राह्मण तो केवल भिक्षा पर गुजारा करता था. बड़े ब्राह्मण ऋषिओं को अपने आश्रमों में ऐय्याशी करने सें ही फुर्सत नहीं मिलती थी. ब्राह्मण की तो बात ही छोड़ो, **भारत देश का राजा कभी कोई ब्राह्मणिक क्षत्रिय भी नहीं रहा.** अयोध्या, कोसल, हस्तिनापुर जैसे छोटे मोटे गांव कस्बों में जरूर क्षत्रिय रजवाड़े होते थे. वेद, पुराण लिखने वाले ब्राह्मण इन रजवाड़ों सें दासियां और गायें उपहार में पाते थे और उन्हें सारी पृथ्वी का चक्रवर्ती राजा लिख देते थे. इतिहास में सन् 185 ईसा पूर्व (लगभग 2200 साल पहले) पहली बार एक हत्यारा ब्राह्मण भारत का राजा बना था. उस हत्यारे द्वारा स्थापित ब्राह्मण राज आज तक जारी है. जो भी इनके विरुद्ध बोला उसे मार दिया गया चाहे वह चावार्क हो, राजा वेण हो, महाराज रावण हों, गुरू रैदास हों या फिर इनका अपना भाई दयानन्द हो. आज भी अनेकों ब्राह्मणों (पुरोहितों) पर हत्या करने के केस चल रहे हैं.
* **ब्राह्मण को भगवान सें भी ऊपर का दर्जा दिया गया.** उसे जीवित भगवान घोषित कर दिया गया. सभी देवता मन्त्रों के अधीन करार दिए गए तथा मन्त्र ब्राह्मणों के अधीन करार दिए गए. नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मण सबसें ऊपर की चीज बना दिए गए.
* **आर्य** शब्द को ब्राह्मणधर्मियों के साथ जोड़ दिया गया. भारतीय सिपाही वर्ग के लिए प्रयोग होने वाला आर्य शब्द ब्राह्मणों ने अपनी भड–चौकड़ी के लिए प्रयोग करना शुरू कर दिया. नतीजा यह हुआ कि वेदों में आर्य को मारने और आर्य को विजय दिलाने, दोनों प्रकार की प्रार्थनाएं पाई जाती हैं. **बाबा साहिब के अनुसार ऋग्वेद (10.49.3) में का गया है कि दस्युजनों को आर्य कहना बंद कर दिया है.** (तदभव 3)
* **हत्यारे ब्राह्मण पुष्यमित्र के राज्यकाल में ही ऋग्वेद में पुरुषसूक्त घुसेड़ा गया जिसमें यह घोषणा की गई कि ब्राह्मण भगवान के मूंह सें पैदा हुए हैं इसलिए वे सबसें श्रेष्ठ हैं. शूद्र पैरों सें पैदा होने के कारण सबसें नीचे हैं. क्षत्रिय बाजू सें पैदा होने के कारण ब्राह्मण की रक्षा करने के लिए बने हैं तथा वैश्य जांघों सें पैदा होने के कारण ब्राह्मण को कमाई करके देने के लिए बने हैं. जैसे पैर पूरे शरीर का बोझ ढोते हैं वैसे ही शूद्रों को ऊपरी तीनों वर्णों की सेवा करने का आदेश दिया गया.** इस तरह उन्होंने समाज में

व्याप्त ऊंच नीच को भगवान का आदेश बना दिया ताकि कोई भी आदमी इसके विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत न कर सके.

* **ऋग्वेद के दसवें मण्डल के अनुसार ऋग्वेद में कुल 15000 श्लोक हैं मगर आज के समय में ऋग्वेद में मात्र 10517 श्लोक हैं. प्रश्न उठता है कि बाकी 4483 श्लोक किसने, क्यों और कब ऋग्वेद सें हटाए. दयानंद भी इस प्रश्न का उत्तर देने सें कन्नी काट गया. स्पष्ट है कि ब्राह्मणों ने क्षत्रियों को रौंद कर जातिवाद वाला पुरुष–सूक्त तो घुसेड़ दिया और साथ ही ब्राह्मण विरोधी सभी मंत्र मिटा दिए. मान्यवर मुद्राराक्षस ने सही कहा है कि अपने सुख की खातिर ब्राह्मणों ने उस ग्रन्थ में भी गड़बड़ कर दी जिसे वे ईश्वर द्वारा रचित होने का दावा करते हैं. ऐसा हेरफेर न बाइबल में हुआ, न कुरान में हुआ न ही त्रिपिटक में हुआ. केवल ब्राह्मणों ने अपने वेदों में ऐसा हेरफेर किया.** (पुनर्पाठ 22)

* ऋग्वेद ही नहीं ब्राह्मणों अपने सभी ग्रन्थों में हेरफेर किया. यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा में मात्र 654 श्लोक हैं मगर तैतरीय शाखा में 18000 श्लोक हैं. शेष 17346 श्लोक किसने कब और क्यों घुसेड़े, दयानंद भी नहीं बता पाता. अथर्ववेद में भी मंत्रों के साथ हेरफेर की गई. (पुनर्पाठ 24) वेदों में यह फेरबदल तथा घालमेल इसलिए किया गया ताकि ब्राह्मण सारे समाज को अपनी मर्जी सें चला सके.

* **विधवा विवाह बंद किए.** राधाकृष्ण के अनुसार 300 ईसापूर्व सें लेकर 200 ईसवी तक विधवा विवाह अलोकप्रिय हो गए. वह नियोग की प्रथा को पुनर्विवाह बतलाता है और नियोग करने वाले देवर का अर्थ पति का छोटा भाई करता है. (धर्म और समाज 185) राधाकृष्णन द्वारा, जिसके नाम पर अध्यापक दिवस मनाया जाता है, इस प्रकार की ओछी बात करना, उसके ब्राह्मणपने को दर्शाता है. सभी को पता है कि जैसे गुण्डों की भाषा में "भाई" का अर्थ गुण्डा है वैसे ही नियोग की भाषा में देवर का अर्थ "गैर मर्द" है. **यह देवर भाभी वाला देवर नहीं है.** उपरोक्त तारीखों में भी वह जानबूझ कर हेराफेरी करता है. असल में यह सारे काम सम्राट वृहदर्थ की हत्या करने के बाद लगभग 150 ईसापूर्व में हत्यारे ब्राह्मण पुष्यमित के राज्यकाल में हुए थे. यह वही समय था जब भारत के इतिहास में घातकतम टरनिंग पॉयंट आया था.

* **वर्ण को जाति बना दिया गया.** हत्यारे ब्राह्मण पुष्यमित्र के सत्ता हथियाने सें पहले तक बालक का वर्ण निर्धारण का काम अध्यापक यानि आचार्य किया करते थे. प्राचीन काल में बालक का वर्ण तय करने के लिए सप्तऋषि अर्थात सात बुर्जुग लोगों का ग्रुप होता था. वे सात बुर्जुग सभी बातों को ध्यान में रख कर बालक को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र का वर्ण देते थे. बालक के बड़े होने पर उसकी योग्यता के अनुरूप उसका वर्ण बदल भी दिया जाता था. जैसे जैसे आबादी बढ़ी यह काम आचार्यों यानि अध्यापकों के पास आ गया.
  मनुस्मृति में बालक का वर्ण निर्धारण का यही नियम दिया गया था लेकिन हत्यारे ब्राह्मण पुष्यमित्र के राज्यकाल में मनु स्मृति में भारी फेरबदल किया गया. इसी हत्यारे वंश के शासनकाल में यह नियम बना दिया गया कि बालक को वही वर्ण मिलेगा जो उसके माता पिता का होगा. केवल नियोग सें पैदा सन्तानों को माँ का वर्ण देने का नियम बनाया गया. इसीलिए पांडव कुंती-पुत्र, हनुमान अंजनि-पुत्र और राम कौसल्या-पुत्र कहलाया. आर्ष साहित्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित मनु स्मृति के लेखक श्री सुरेन्द्र कुमार ने ऐसे सैंकड़ों श्लोकों का उल्लेख किया है जो मनु स्मृति में बाद में घुसेड़े गये हैं. मनु स्मृति मौर्य काल में लिखी गई थी लेकिन हत्यारे ब्राह्मण राजा पुष्यमित्र ने **सुमति भागर्व नामक ब्राह्मण के द्वारा इसमें सैंकड़ों ब्राह्मण–पक्षीय और शूद्र विरोधी अमानवीय नियम जुड़वा दिये.**

* **उस समय ब्राह्मणों ने न केवल स्वयं को सर्वोच्च घोषित किया बल्कि उन्होंने अन्य वर्णों में भी ऊंच नीच का नियम बना दिया.** क्षत्रिय वर्ण ब्राह्मणों सें नीचे लेकिन वैश्य और शूद्र सें ऊपर बना दिया गया. वैश्य वर्ण ब्राह्मण और क्षत्रियों सें नीचे लेकिन शूद्रों सें ऊपर बना दिया गया. **इतिहास गवाह है कि सम्राट वृहदर्थ की हत्या होने तक भारत पर केवल और केवल शूद्र ही राजा हुए थे. और किसी भी वैश्य, क्षत्रिय या ब्राह्मण ने कभी उनके राजा होने पर ऐतराज नहीं किया था. यहां तक कि जब कौटिल्य नामक ब्राह्मण ने शूद्र नन्द वंश का पतन किया तो भी वह स्वयं राजा न बन कर शूद्र सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन एक मंत्री बन कर रहा.**
  कहीं ऐसा उल्लेख नहीं मिलता कि ब्राह्मण कौटिल्य को शूद्र राजा के अधीन काम करने में कभी कोई आपत्ति रही हो. न ही कहीं कोई ऐसा उल्लेख है कि कभी किसी क्षत्रिय ने यह दावा किया हो कि क्षत्रिय होने के कारण वह राजा बनेगा लेकिन इस तरह क्रमबद्ध ऊंच नीच का दर्जा मिलने पर सभी वर्णों में संघर्ष शुरू हो गया. विशेषकर वे जातियां जो किसी वर्ण में नहीं आती थीं स्वयं को क्षत्रिय कहलाने के लिए ब्राह्मणों के तलवे चाटने लगीं तथा अपनी उच्चता दिखाने के लिए वैश्यों और शूद्रों पर अत्याचार करने लगीं. विदेशी हमलावरों सें क्षत्रिय बने राजपूत इसकी मुख्य उदाहरण है. शूद्र शिवा ने स्वयं को क्षत्रिय घोषित करवाने के लिए ब्राह्मणों को लाखों रूपयों को दान दिया था. इस तरह पहले जहां केवल चार वर्ण थे हत्यारे ब्राह्मण काल में सैंकड़ों जातियां बना दी गईं.

* **इसी काल में अछूतपन का नियम लागू किया गया. मनु स्मृति में शूद्रों के विरुद्ध अमानवीय नियम बना कर घुसेड़े गये.** बौद्ध समाज का बहुसंख्यक वर्ग अछूत घोषित कर दिया गया जिनके छूने मात्र सें ही नहीं देखने मात्र सें ऊंची जाति वाले अपवित्र होने लगे. सबसें बुरा हाल उनका हुआ जो भिन्न भिन्न जातियों के माता पिता सें पैदा हुए थे. खासकर जो बालक ब्राह्मण स्त्रियों सें शूद्र पुरुषों द्वारा पैदा किये गये थे वे तो अछूत ही बना दिये गये. शूद्र अथवा अछूत बन जाने के डर सें समाज में अन्तर-जातीय विवाह समाप्त हो गये. इतना ही नहीं शूद्र तथा अछूतों के साथ खाने पीने वालों को भी समाज सें बाहर करने के नियम बना दिये गये. ब्राह्मणों ने धूर्तता की हदें पार करते हुए इन नियमों को ईश्वरीय बताया. नतीजा यह हुआ कि आज तक कोई भी इस जाति पाति छूआछात के विरुद्ध संघर्ष करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया. जिसने हिम्मत जुटाई वह गुरू रैदास की तरह कत्ल कर दिया गया!!
* **वेदों को भगवान द्वारा रचित बता कर इन्हें शूद्रों आदि द्वारा पढ़ने पर पाबंदी लगाई. लेकिन साथ में ही वैदिक देवों को निरस्त करके उनकी जगह नये नये भगवान घढ़े गये. अवतार का नया शोशा खोजा गया.** ऐसे अवतारों की कहानियां घढ़ी गईं जो केवल ब्राह्मणों का हित करने ही पैदा हुए थे. जहां राम ने ब्राह्मणों की खातिर निरपराध असुर स्त्री पुरुष और बच्चे कत्ल किये वहीं कृष्ण ने वह पानी पीया जो ब्राह्मण सुदामा के पैर धोकर मैला हो गया था. शेष सभी अवतारों ने भी ऐसा ही किया. परशु ने तो ब्राह्मणों का विरोध करने वाले क्षत्रिय समूल नाश कर दिये.

  ब्राह्मणों ने पुराने भगवानों : इन्द्र वरुण सूर्य अग्नि पूषाण उषा आदि को दफन करने के लिए उनकी असलीयत बयान की अर्थात इनकी करतूतें बताईं गईं. साथ में नये भगवानों सें ऐसे काम करवाये गये जो आज के समय में अनैतिक या पाप समझे जाते हैं. जिस समय इन पुराणों की रचना की गई ब्राह्मणों को लगता था कि उनका सूर्य कभी अस्त नहीं होगा. अतः उन्होंने जो मन में आया अपने ग्रन्थों में लिख लिया. उस काल में ही नहीं कुछ साल पहले ही तुलसी ने भी यही कहा थाः "ढोल गंवार सूद्र पसु नारी; सब ताड़न के अधिकारी" उसने कभी सपने में भी कल्पना नहीं की होगी कि उसके ऐसा लिखने के मात्र तीन सदियां बाद ही उसकी ऐसी थू थू होगी कि गीता प्रेस भी उसका यह फरमान छापने की हिम्मत नहीं जुटा पायेगी.
* **एक ओर बलि में गाय बकरे घोड़े मार कर खाने को धर्म घोषित किया तो दूसरी ओर महात्मा रावण द्वारा शुरू किये गए हवन को भी अपना लिया गया.** यज्ञ ब्राह्मणधर्म का मूल पेशा होते थे जिसमें कम सें कम सोलह ब्राह्मण द्वारा कर्मकांड किया जाता था. लोग इन यज्ञों सें बेहद परेशान थे. महाराज रावण ने सोलह ब्राह्मणों वाले यज्ञों की जगह स्वयं हवन करने की प्रथा चलाई. सम्राट वृहदर्थ की हत्या करने के बाद ब्राह्मणों ने राजा और सेठों के यहां तो पशु बलि वाले खर्चीले यज्ञ करने शुरू किये वहीं आम जनता घर पर ही हवन कर करने शुरू कर दिये. इससें पहले उन्होंने हमेशा 16 ऋत्विकों वाले मंहगे यज्ञ ही किये थे.
* **इतिहास भ्रष्ट किया : सम्राट वृहदर्थ की हत्या के बाद ब्राह्मणों ने जो सबसें घिनौना काम किया वह यह कि भारत का इतिहास नष्ट कर दिया.** उस समय पुराण केवल एक होता था जिसे सूत (दास या शूद्र) जुबानी याद करते थे, गाते थे और समय समय पर संशोधन करते थे. लिखने की प्रथा उस समय तक विकसित नहीं हुई थी. हत्यारे पुष्यमित्र के काल में सबसें पहले तो ब्राह्मणों ने प्राचीन पुराण को नष्ट कर दिया. उसकी सच्ची घटनाओं के साथ असंख्य झूठे किस्से जोड़ दिये गये. सूतों सें पुराण ब्राह्मणों ने अपने कब्जे में ले लिया. सूतों के पढ़ने लिखने और धार्मिक प्रचार पर पाबंदी लगा दी गई थी. इसलिए कुछेक पीढ़ियों बाद उनके द्वारा याद किया गया इतिहास समाप्त हो गया. ब्राह्मणों ने एक की जगह 18 पुराण बना दिये. पुराने पुराण के अध्यायों के नाम वही रखे गये परन्तु उनमें ऊल जलूल किस्से घुसेड़ दिये. रामायण में भी दो अध्याय और जोड़ दिये गये. महाभारत में हजारों नये श्लोक घुसेड़ दिये गये. कृष्ण जैसे लम्पट और चरित्रहीन, परशु जैसे दरिंदे को अपने भगवान का अवतार बताया गया. पशुओं और अर्धपशुओं को भी अवतार बना दिया गया. मनु स्मृति को बिल्कुल ही बिगाड़ दिया गया. भांग पीकर जैसी शक्लें उन्हें दिखी ब्राह्मणों ने वैसे ही राक्षसों और असुरों की कल्पना कर डाली.
* **साम दाम दण्ड भेद की नीति बनाई गई और उसके अनुसार काम किये गये.** नैतिकता के मामले में वे महावीर बुद्ध की शिक्षाओं के सामने टिक नहीं पाये. अतः साम नीति का सहारा लेते हुए अनेकों ब्राह्मण बौद्ध धर्म में शामिल हो गये. वहां जाकर उन्होंने धर्म विरोधी आचरण किया और बौद्ध धर्म को बदनाम किया. नागार्जुन जैसा प्रसिद्ध ब्राह्मण जानबूझ कर बौद्ध बन गया. कुछ समय वहां रहा. जब उसकी पहचान बौद्ध के रूप सब ओर फैल गई तो उसने वहां ब्राह्मणिक कर्मकांडों का जहर घोलना शुरू कर दिया. इसी नीति तहत ब्राह्मणों ने धम्मपद की तर्ज पर गीता तैयार की. जहां धम्मपद में नैतिकता की शिक्षा है गीता में अवतार आत्मा और कर्म के ढकोसले भरे पड़े हैं.

* **इसी समय स्त्रियों के विरुद्ध नियम बनाये गये.** शादी करके एक ही पति के साथ जीवन बिताने वाली पतिव्रता नारियों के विरुद्ध फतवे जारी किये गये. ऐसी नारियों के विधवा होने पर उन्हें पति के साथ ही जल मरने के लिये मजबूर किया गया. चरित्रहीन स्त्रियां आजादी सें घूमती रहीं. अनेक पुरुषों के साथ यौन सम्बंध बनाने वाली राधाएं "देवी" बना दी गईं और पतिव्रता रुक्मणियां कृष्ण के साथ जला कर सती कर दी गईं.

  विधवा के दूसरे विवाह पर तो सख्ती सें पाबंदी लगाई गई लेकिन कुंआरी, विधवा और सधवा सभी को नियोग करके पुत्र पैदा करने की छूट दी गई. जवान लेकिन अविवाहित कुन्ती और मत्स्यगंधाएं ब्राह्मण ऋषिओं के बच्चों की मांएं बनने के बावजूद "कौमार्यशील" बताई गईं, माद्रीयां विधवा होकर भी ब्राह्मणों द्वारा कई कई बच्चों की माँ बन कर "सौभाग्यवती" कहलाईं. एक पतिव्रता रुक्मणियां कृष्ण के साथ सती की गईं तो कृष्ण की रखैलें अनंगव्रत के नाम पर ब्राह्मणों की हवस का शिकार हुईं.

* **स्त्रियों** के पढ़ने पर पाबंदी लगाई गई. पुरुष वर्ग में तो केवल क्षत्रियों की पढ़ाई बंद की गई. उनका उपनयन संस्कार बंद कर दिया गया मगर स्त्रियों के विषय में किसी भी वर्ण या जाति की स्त्री को नहीं बख्शा गया. हर वर्ण की स्त्री का उपनयन संस्कार बंद कर दिया गया. केवल शादी की रस्म को ही स्त्री का उपनयन माना गया. ससुराल उसका आश्रम तथा घर में चूल्हा जलाना उसका अग्निहोत्र निष्चित किया गया. (मनु 2.67) (धर्म और समाज 146)

* **स्त्री निन्दा धर्म का अंग बनी.** छटी सदी में जहां संकर ने स्त्री को मात्र भोग की वस्तु बताया तथा उसके द्वारा किसी भी पुरुष सें यौन सम्बंध बनाने सें इन्कार करने पर उसे मारने पीटने तथा बांझ बनाने के मन्त्र बनाए गए वहीं ब्राह्मण तुलसी ने उसें वासना की पिटारी बताया तथा यहां तक कह दिया कि सुन्दर पुरुष देखते ही स्त्री विचलित हो जाती है चाहे वह उसके अपने गर्भ सें जाया पुत्र ही क्यों न हो. ऐसा ही ऋग्वेद (7.33.17) में कहा गया है. (धर्म और समाज 147)

* **बौद्ध भिक्षु संघ** को समाप्त करने के लिए पत्नि सें अलग रहने तथा तलाक प्रथा को बन्द कर दिया गया. एक बार शादी हो जाने पर उसे अटूट करार दे दिया गया. ऐसा इसलिए किया गया ताकि लोग घर बार छोड़ कर भिक्षु न बन सकें. (धर्म और समाज 189)

4. चौथा एवं अंतिम अहम मोड़ : भारतीय इतिहास में चौथा और आखिरी मोड़ तब आया जब **विजयदशमी के दिन 14 अक्तूबर 1956 को बाबा साहिब अम्बेडकर अपने लाखों अनुयाइयों को उनके असली धर्म में वापिस ले गए.** बाबा साहिब के बिगुल बजाने के बाद सें अब तक लाखों भारतीय और विदेशी बुद्ध धर्म की शरण में आए है. **आज के दिन बुद्ध धर्म दुनिया में सबसें तेज गति सें बढ़ता हुआ धर्म है.**

बाबा साहिब की तरह श्रमण संस्कृति के सन्तों व नायकों ने ब्राह्मणधर्म के अमानवीय और नीच नियमों के विरुद्ध संघर्ष किया है. **बाबा साहिब ने बिल्कुल सही कहा है कि भारत का इतिहास और कुछ नहीं यह बौद्ध (श्रमण) संस्कृति और ब्राह्मणवाद के बीच जातीय संघर्ष का इतिहास मात्र है.** यह दुर्भाग्य की बात है कि भारत में केवल ब्राह्मण ही पढ़े लिखे होते थे. अतः इन्हीं लोगों ने भारत का इतिहास लिखा और जो बात उनके विरुद्ध जाती थी उन्होंने इतिहास लिखते समय उसे बदल दिया. पश्चिमी इतिहासकार केवल इस बात को इतिहास कहते हैं कि कौन से सन में कौन राजा बना, उसने कौन सी लड़ाई जीती कौन सी हारी और वह कब मर गया. उस समय जनता का क्या हाल था; यह उनके लिए इतिहास का विषय वस्तु नहीं है.

समय समय पर श्रमण संस्कृति के ध्वजवाहकों ने ब्राह्मणवाद को टक्कर दी है लेकिन हर बार ब्राह्मण साम दाम की नीति अपना कर बच निकले हैं. महात्मा रावण सें लेकर बाबा साहिब अम्बेडकर तक सभी ने ब्राह्मणवाद को टक्कर दी है. जैसे दीपक बुझने सें पहले पूरी जोर सें जलता है ब्राह्मणवाद भी आज पूरी जोर सें जल रहा है. इसका अन्त बहुत शीघ्र आने वाला है. आर एस एस तथा महासभा वाले इसे संभाले रखने के लिए बहुत जोर शोर सें हाथ पांव मार रहे हैं लेकिन लाश को वे कितने दिन तक और संभाले रखेंगे. एक न एक दिन इसका अंतिम संस्कार तो उन्हें करना ही होगा!! यह तो सिर्फ बौद्ध भिक्षुओं की कमी है कि ब्राह्मणवाद आज तक सांस ले रहा है. अगर उन्होंने यथोचित हिम्मत दिखाई होती तो आज ब्राह्मणवाद इतिहास की वस्तु बन गया होता!!

1.4 ब्राह्मण की सर्वोच्चता

भारत में दो "गांधी" मारे गए. 1. करम चन्द गांधी, 2. इन्दिरा गांधी. पहले गांधी को उसके लोग "बापू" भी कहते हैं. जब उसका वध हुआ तब देश का बंटवारा अभी हुआ ही था और लाखों लोग इस बंटवारे की भेंट चढ गए थे. आज भी पंजाब के लोग 1947 को "आजादी का साल" कहने की बजाए "कटा–वडी दा साल" अर्थात मार

काट का साल कह कर याद करते हैं. जब गांधी मारा गया तब तक मार काट का खून अभी सूखा भी न था. इन्दिरा गांधी जब मारी गई तब भी पंजाब में खून बह रहा था. अतः दोनों का वध तब हुआ जब पंजाब में खून बह रहा था और पंजाब में बहते खून के लिए दोनों ही जिम्मेवार थे.

लेकिन इन दो गांधियों के वध के बाद एक बात बहुत अलग हुई कि उनके बापू के वध पर तो कोई बोला भी नहीं लेकिन इन्दिरा गांधी के वध पर हजारों बेगुनाह कत्ल कर दिये गए.

इसका एक ही कारण है : वह है ब्राह्मणवाद. करम चन्द गांधी वैश्य था जिसको एक ब्राह्मण गोडसे ने मारा था यानि एक बनिये को एक ब्राह्मण ने मारा था. इन्दिरा गांधी ब्राह्मण थी जिसको एक दलित सरदार बेअंत सिंह ने मारा था यानि एक ब्राह्मण को दलित ने मारा था. ब्राह्मणधर्म के धर्म ग्रन्थों के अनुसार ब्राह्मण किसी को भी मार सकता है लेकिन दलित किसी ब्राह्मण को मार दे तो कयामत आ जाती है. **यह तो शुक्र है कि बाबा साहिब ने सब दलितों को ब्राह्मण के बराबर वोट का अधिकार दे रखा है. इसलिए बात यहीं समाप्त हो गई. कहीं यह घटना आजादी सें पहले हो जाती तो भागवत में एक कथा और जुड़ जाती कि किस प्रकार इंदिरा के वध के बाद भगवान ने हत्यारों के रूप में अवतार लिया और हजारों सिख दो दिन में ही मार गिराए!**

यह विडम्बना ही है कि चाहे भारत में कहने को तो कानून सर्वोपरि है लेकिन असलीयत में आज भी ब्राह्मण द्वारा बनाए नियम ही सर्वोपरि हैं. ब्राह्मण किसी को भी मार दे कुछ अन्तर नहीं पड़ता लेकिन अगर कोई गैर–ब्राह्मण उसकी तरफ आँख उठा कर भी देख ले तो कयामत आ जाती है.

इतिहास में ऐसा कोई प्रसंग अथवा उदाहरण नहीं मिलता जब वैश्यों ने कभी ब्राह्मण–सत्ता अथवा ब्राह्मण वर्ग को चुनौती दी हो. ब्राह्मणों को चुनौती दी तो मात्र क्षत्रिय अथवा शूद्रों ने. बनिये तो हमेशा सें ही ब्राह्मण भक्त रहे हैं. बाबा साहिब अम्बेडकर के अनुसार शुरू में तीन ही वर्ण थे – ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. समयावधि में सर्वोच्चता के लिए ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्गों में संघर्ष हुआ जिस में क्षत्रिय हार गए और उनका चौथा वर्ण शूद्र बना दिया गया. शूद्र बनने के बावजूद उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा. गुरू रैदास तथा सन्त कबीर ने संघर्ष का झण्डा बुलन्द रखा. जहां एक ओर गुरू रैदास ने कहा :

रैदास जनम के कारणे होत ना कोय नीच,
नर को नीच कर डाले है ओछे करमों की कीच!!

तो सन्त कबीर ने साफ शब्दों में कहा : **जो तू बामण बामणी जाया तो आण बाट क्यों नहीं आया!!**

आजादी सें पहले तक ब्राह्मण की सत्ता लगभग अक्षुण थी. वेद काल में वे देवों सें मिल कर शेष समाज पर हावी रहते थे. ऋषि उद्दालक की पत्नि को आम ब्राह्मण पकड़ ले जाता है. उसका बेटा आपत्ति करता है लेकिन बाप उसे रोक देता है कि यह तो ब्राह्मण का अधिकार है. महाभारत काल में द्रोण जैसा ब्राह्मण महावीर एकलव्य का अंगूठा काटने सें न झिझकता था. ब्राह्मण ऋषि पराशर सबके सामने गंगा के बीच में सत्यवती सें बलात्कार करने को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता था.

रामायण काल में महाराज रावण जब सीता के स्तनों, जांघों की तारीफ करते हैं तो सीता बुरा भला कहने की बजाए उन्हें फल मेवे भेंट करती है क्योंकि तब वे ब्राह्मण वेश में होते हैं. तुलसी बेझिझक कहता है पूजिए विप्र सील गुण ज्ञान हीना. पराशर भी कहता है ब्राह्मण चरित्रहीन भी पूजनीय है शूद्र जितेन्द्रीय भी पूजनीय नहीं. (पराशर स्मृति 8.33) दयानन्द ब्राह्मणों को सुधारने की बजाए शुद्धिकरण करके लोगों को ब्राह्मण बनाता है. बनिए ‘‘बापू’’ गांधी का वध होता है तो कोई नहीं बोलता लेकिन ब्राह्मण गांधी का वध होता है तो हजारों बेगुनाह कत्ल कर दिए जाते हैं.

ऐसी है ब्राह्मण की सर्वोच्चता!!

1.4.1 ब्राह्मण सर्वोच्च कैसे बना

आज भारत में ब्राह्मण जाति सर्वोच्च मानी जाती है. चाहे वह किसी भी धर्म में हो. चाहे वह सिख बने, ईसाई बने या मुस्लमान बने या बौद्ध बने उसकी सर्वोच्चता अखण्ड रहती है. ऐसा नहीं है कि ब्राह्मण सदा सें ही सर्वोच्च माना जाता रहा है. अगर उनके धर्म ग्रन्थों को ही प्रमाण मान लें तो अपनी सर्वोच्चता हासिल करने के लिए उसने इतना खून बहाया है जितना गंगा में पानी नहीं होगा! आज शांतिप्रियता और मासूमियत का लबादा ओढने वाला ब्राह्मण कभी भेड़िये सें भी ज्यादा निर्दयी और खूंखार होता था.

आज भारत में वर्ण नाम की चीज लगभग लुप्त हो गई है. आज केवल जातियां ही जातियां हैं. साथ में यह नियम भी बन गया है कि जिस जाति का बाप होगा उसी जाति का बेटा होगा. बेटे में चाहे कैसे भी गुण हों उसे जाति अपने पिता वाली ही मिलती है. कभी समय था जब बच्चे का वर्ण सप्त ऋषि निर्धारित किया करते थे. फिर वर्ण निर्धारण का कार्य गुरू करने लगे और अन्त में समय ऐसा आया जब बाप का वर्ण ही बच्चे का वर्ण

माना जाने लगा. तब वर्ण ने जाति का रूप ले लिया. बाप ब्राह्मण तो बेटा भी ब्राह्मण, बाप चमार तो बेटा भी चमार.

जब वर्ण निर्धारण की प्रथा में अंतर आ रहा था तो उस समय दो ऋषियों में भयंकर संघर्ष हुआ. एक ब्राह्मण ऋषि वशिष्ठ तथा दूसरा क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र. विश्वामित्र ने पूरा जोर लगाया कि वह भी ब्राह्मण वर्ण प्राप्त कर ले परन्तु वह असफल रहा. जब अन्य ब्राह्मण ऋषियों ने उसे ब्राह्मण बनाने सें इन्कार कर दिया तो उसने अपना अलग सें यज्ञ आदि का सिस्टम बना लिया. इस बात पर नतीजा यह हुआ कि बाह्मणों और क्षत्रियों में संघर्ष शुरु हो गया जिसमें क्षत्रिय हार गये. सजा के तौर पर ब्राह्मणों ने क्षत्रियों का उपनयन संस्कार करना बन्द कर दिया. उनकी विद्या के द्वार बन्द कर दिये गए. समाज में सें उनका स्तर दूसरे स्थान सें हटा का चौथे स्थान पर शूद्र वर्ण बना दिया गया. (बाबा साहिब : शूद्रों की खोज़) वैश्यों ने तो कभी ब्राह्मणों को चुनौती देने का साहस किया ही नहीं. क्षत्रिय ''धर्म'' की लड़ाई हार ही चुके थे कि रही सही कसर परशु ने निकाल दी. उसने तो क्षत्रियों का बच्चा बच्चा कत्ल करके उनका समूल नाश कर दिया.

अतः ब्राह्मण को चुनौती देने वाला कोई बचा ही नहीं. समाज में ब्राह्मण सर्वोच्च बन गया. चुनौती देने वाले क्षत्रियों को शूद्र बना देने के बाद उन पर जो जुल्म उन्होंने किए, उससें किसी भी जाति ने उसके विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत नहीं की. ब्राह्मण हर क्षेत्र में हावी हो गए. विशेषकर सत्ता के हर अंग पर उन्होंने अपनी पकड़ बना ली. शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मण मात्र दान पर जिन्दा रहना वाला प्राणी था मगर क्षत्रियों का नाश करने के बाद वह राजा भी बनने लग गए, सेनापति, मुख्य न्यायधीश, प्रधान मन्त्री तक के पद ब्राह्मण ने अपने कब्जे में कर लिए.

भारत के आजाद हो जाने के बाद भी 50 सालों तक राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मुख्य न्यायधीश, सेनाध्यक्ष आदि के पदों पर ब्राह्मण ही काबिज रहा. यहां तक कि समस्त राजनीतिक पार्टियों के प्रधान भी ब्राह्मण बन गए. नतीजा यह हुआ कि राम द्वारा सन्त शम्बूक की निर्मम हत्या को आस्था का प्रश्न माना गया. मनु की शूद्रों के विरुद्ध जहर उगलने की बातों को धार्मिक आस्था माना गया. तथाकथित ऊँची जाति के बलात्कारियों को इस आधार पर बरी कर दिया गया कि उनके लिए तो शूद्र नारी को छूना भी पाप है. (राजस्थान में हुआ 'भंवरी देवी केस')

1.4.2 सर्वोच्चता के लिए खून की नदियां बहाईं

ब्राह्मण धर्म में शुरू में तीन भाग होते थे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. बाद में चौथा भाग बनाया गया शूद्र. उसके बाद पांचवां भाग बनाया गया अछूत. अतः ब्राह्मणधर्म में कुल पाँच भाग होते थे पहले चार भाग वर्ण कहे जाते थे तथा पांचवां भाग अवर्ण कहा जाता था. समय के साथ यह पांचों भाग "जातियां" बन चुकी हैं. सीधे साफ शब्दों में वर्ण गुणों पर आधारित होता था. जैसा बच्चे का गुण वैसा उसका वर्ण. जाति पैतृक होती है. जो बाप की जाति वही बेटे की जाति, बच्चे में गुण चाहे जैसे भी हों. **इस वर्ण की पद्धति को जाति में बदलने के लिए ब्राह्मणों ने कड़ा संघर्ष किया है. लाखों करोड़ों लोग इसमें बेमौत मारे गए हैं तथा मारे जा रहे हैं.**

आज इतिहास को इस ढंग सें पेश किया जाता है जैसे कि ब्राह्मण सृष्टि के निर्माण सें ही सर्वोच्च पैदा हुआ था. उसके पास पढ़ने पढ़ाने के सिवाय अन्य कोई काम नहीं था. दान पर ही उसका गुजारा होता था. लेकिन सच्चाई इसके विपरीत है. ऋग्वेद सें लेकर भागवत तक में दर्ज इतिहास के अनुसार ब्राह्मणों ने समाज की अन्य जातियों पर वर्चस्व हासिल करने के लिए लाखों करोड़ों लोगों का खून बहाया है तथा यह खून बहाना बन्द नहीं हुआ है. यह खून बहाना अब भी जारी है. पहले जहां वे भेड़ियों और लकड़बग्घों की तरह खून बहाते थे अब वे शातिर ठग की तरह शूद्रों को आपस में लड़वाते हैं तथा जोंक की तरह मरने और मारने वाले दोनों का खून चूसते हैं. पहले जहां ब्राह्मण सीधे सीधे क्षत्रियों यानि शूद्रों सें लड़ते थे अब उन के वंशज यादव, कुर्मी, अहीर, चमार भंगी को आपस में ही लड़वाते मरवाते हैं. नतीजा यह है कि 85 प्रतिशत होने पर भी गैर–द्विज समाज मात्र 3 प्रतिशत ब्राह्मणों की गुलामी करने पर मजबूर हैं.

1.4.2.1 क्षत्रियों का बीजनाश किया

इतिहास की ओर नजर दौड़ाएं तो हम पाते हैं कि बुद्ध काल तक क्षत्रियों को सर्वोच्चता हासिल थी. वर्ण तो चार बन चुके थे मगर अछूतपन अभी पैदा नहीं हुआ था. केवल चांडाल ही नीच या बुरे समझे जाते थे मगर वे भी बाजार सें हरीश्चंद्र जैसे दास खरीद सकते थे. उनके समय में राजसत्ता तथा धर्म प्रचार पर क्षत्रियों का लगभग वर्चस्व था. बुद्ध महावीर आदि सभी क्षत्रिय थे.

उपनिषद भी उस समय क्षत्रियों द्वारा बनाये जा रहे थे जिनमें ब्रह्मज्ञान व आत्मा सम्बंधी बेतुकी बातें की जा रहीं थी. बृहदारण्यक उपनिषद (6.2.8) के अनुसार उपनिषदों के रचियता क्षत्रिय अपने उपनिषदिक ब्रह्मज्ञान को ब्राह्मणों व अन्य आर्य लोगों सें छुपा कर रखते थे. उनके मांगने पर भी क्षत्रिय उन्हें यह ज्ञान नहीं देते थे. छांदोग्य उपनिषद (4.3.7) के अनुसार क्षत्रिय पूरे लोक पर अपना प्रशासन मानते थे. (वैदिक संस्कृति 47). बौद्ध और ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसे अनेक किस्से मिलते हैं कि ब्राह्मण और क्षत्रियों में श्रेष्ठता का संघर्ष जारी था.

उस समय के आसपास निम्नलिखित क्षत्रिय राजाओं ने सरेआम ब्राह्मणों के कर्मकांड बन्द किये थे. उन्होंने ब्राह्मणों की तथाकथित श्रेष्ठता को अपने राज्य में मानने सें इंकार कर दिया था. उन्होंने वर्ण व्यवस्था तथा वैदिक यज्ञों आदि का बहिष्कार किया या उन पर पाबंदी लगाई. नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मणों के हाथों अपनी जान गंवानी पड़ी. वे क्षत्रिय जिन्होंने ब्राह्मणिक कर्मकांड करने छोड़ दिए थे, उन्हें शूद्र बना दिया गया. (खण्ड 8.218)

1. **वेणः** वेण मनु का वंशज बताया जाता है. उसकी और ब्राह्मणों में इस बात को लेकर तनातनी हो गई कि राजा बड़ा है या ब्राह्मण बड़े हैं. उसने फतवा दिया कि राज्य में राजा सबसें बड़ा अधिकारी होता है. सभी पुरोहित आम जनता की तरह उसके अधीन होते हैं. राजा उनके अधीन नहीं होता. राजा उन्हें वैसे ही दण्ड दे सकता है जैसे वह अन्य अपराधियों को दण्ड दे सकता है. ब्राह्मण इस बात सें भड़क उठे और उन्होंने मिल कर राजा की डण्डों सें पीट पीट कर हत्या कर दी. उसकी हत्या के बाद उसके शरीर को क्षत विक्षत कर दिया. उसके बेटे पृथु को राजा बना दिया. (आप्टे :पृथु एवं वेण) (खण्ड 7.35)
2. **पृथु :** बाप के कत्ल के बाद राजा बनने पर पृथु ने कुछ समय तो ब्राह्मणों का साथ दिया मगर जल्दी ही वह भी उनके हिंसामयी व अश्लील कर्मकांडों सें तंग आ गया और उसने भी ब्राह्मणवाद का त्याग करके जैन धर्म अपना लिया. जैन धर्म स्वीकार कर लेने के बाद उसने ब्राह्मणिक जाति व्यवस्था को समाप्त कर दिया जिससें लोग बिना जाति का विचार करके आपस में रिश्ते बनाने लग गए. इससें वर्ण संकर औलाद पैदा होने लग गई और वर्ण व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई. (आप्टे : पृथु) अतः आज कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र अपना खून शुद्ध होने का दावा नहीं कर सकता. हम सब भारतियों में सांझा खून है.
3. **पुरुरवा :** वह क्षत्रियों के चन्द्रवंश का प्रवर्तक था. पुरुरवा ने ब्राह्मणिक व्यवस्था के विरुद्ध फतवा दिया कि राजा को अधिकार है कि आवश्यकता पड़ने पर वह अन्य लागों की तरह ब्राह्मणों की सम्पत्ति भी जब्त कर सकता है. उस समय ऐसा करना अत्यंत साहसिक कदम था. (आप्टे)
4. **नहुष :** उसने आज्ञा जारी की कि जैसे अन्य लोगों सें राजा दासों वाले काम ले सकता है वैसा ही काम ब्राह्मणों सें ले सकता है. उसने इन्द्र को हरा कर उसके राज्य पर कब्जा कर लिया. तब इन्द्र की पत्नि शची ने इस शर्त पर उससें सम्बंध बनाने की बात स्वीकार की कि नहुष की पालकी ब्राह्मण उठा कर लाएं. उसने ब्राह्मणों सें पालकी उठवाई. इससें ब्राह्मणों ने उसका विरोध किया और उसे पतित बना दिया. उसके साथ वही व्यवहार किया गया जो दास या शूद्र के साथ किया जाता था.
5. **निमिः** वह जनक के राजवंश सें था. उसने नियम बनाया कि राजा ब्राह्मणों सें ही यज्ञ करवाने के लिए बाध्य नहीं है. राजा अपनी इच्छा सें किसी भी वर्ण के मनुष्य सें यज्ञ आदि करवा सकता है. ब्राह्मण सें यज्ञ न करवाने का अर्थ था ब्राह्मणों सें सीधी टक्कर लेना. मारा गया बेचारा.
6. **सुदास :** उसने फतवा जारी किया कि पुरोहित बनने के लिए ब्राह्मण होना जरूरी नहीं है. किसी भी जाति का मनुष्य पुरोहताई कर सकता है. आज इक्कीसवीं सदी में भी ब्राह्मण के सिवाय कोई पुरोहित नहीं मिलता. वेद काल में जब ब्राह्मण भगवान सें भी बढ़ कर था उस समय किसी राजा द्वारा ऐसा कहना सचमुच साहस की बात थी. ब्राह्मण वशिष्ठ को हटा कर क्षत्रिय विश्वामित्र को अपना पुरोहित बनाया. ब्राह्मणों ने पूरे क्षत्रिय वंश का उपनयन संस्कार बंद कर दिया. क्षत्रिय दूसरे स्थान सें चौथे पर आ गए.
7. **असुर, राक्षस व दैत्य क्षत्रिय राजा :** ब्राह्मण ग्रन्थ पढ़ कर ऐसा लगता है कि उपरोक्त राजा उस क्षत्रिय वंश सें थे जिन के पूर्वजों ब्राह्मणधर्म

आम क्षत्रियों का दमन व दलन : ऋग्वेद के समय क्षत्रियों को समाज में वर्चस्व हासिल था. वेदकाल में ही ब्राह्मणों और क्षत्रियों में श्रेष्ठता के लिए संघर्ष आरंभ हो गया था. प्राचीन ब्राह्मण ऋषि भृगु ने भी चन्द्रवंशी क्षत्रिय राजाओं के विरुद्ध विद्रोह किया था. पुरुषसूक्त बनाने सें पहले तक उन में संघर्ष जारी था. वेद पढ़ने पढ़ाने का काम मात्र ब्राह्मणों के हाथ में था. **अतः उस समय क्षत्रियों ने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए वेदों का अन्त करने वाले उपनिषदों की रचना की.** जहां वेदों में मात्र बलि चढ़ाने के कर्मकांड भरे पड़े थे, क्षत्रियों ने उपनिषदों में गूढ़ ज्ञान की बातें कीं जैसे कि मरने के बाद आदमी का क्या होता है, आदमी और भगवान एक ही हैं या भिन्न भिन्न हैं, आत्मा क्या और कैसी होती है. चाहे ऐसे प्रश्नों का उत्तर बिल्कुल बचकाना या फूहड़ ढंग सें बताया गया है तो भी वेदों की तुलना में उनमें कुछ तो ज्ञान की बात की गई है. ऐसी व्यर्थ की बातों और उनके फूहड़ उत्तरों

को "ब्रह्मज्ञान" कहा गया. इस ब्रह्मज्ञान को क्षत्रियों ने ब्राह्मणों सें दूर रखा. क्षत्रिय ब्राह्मणों को अपना "ब्रह्मज्ञान" नहीं देते थे. (दृग स्पर्श 64)

भगवन बुद्ध ने भी कई बार इस बात पर व्याख्यान दिए हैं कि कई मामलों में क्षत्रिय ब्राह्मणों सें श्रेष्ठ हैं. कई ब्राह्मणों ने उनके सामने अपनी जाति को श्रेष्ठ सिद्ध करने की कोशिश की मगर हर बार उन्हें यह मानना पड़ा कि क्षत्रिय ब्राह्मणों सें श्रेष्ठ हैं. उन्होंने ब्राह्मणों द्वारा रचित वेदों के बारे में कहा कि वे बिन पानी का तालाब हैं अथवा ऐसे जंगल के समान हैं जिसमें सें रास्ता नहीं सूझता है. उन्होंने क्षत्रियों द्वारा दिए गये आत्मा के सिद्वांत को तो नकार दिया मगर उन पर इस तरह सें टिप्पणी नहीं की.

आरम्भ के उपनिषद क्षत्रियों द्वारा बनाए गए थे लेकिन क्षत्रियों का दमन व दलन करने के बाद ब्राह्मणों ने समय के साथ अपनी साम दाम की नीति का सहारा लेते हुए उपनिषदों को ज्ञान हासिल किया. प्रथम सदी में सम्राट वृहदर्थ की हत्या करने के बाद तो उन्होंने पूरे इतिहास को मटियामेट कर दिया. आज पता ही नहीं चलता कि कौन ग्रन्थ कब और किसने रचा है.

परशुराम पहला ब्राह्मण था जिसने हथियार उठाया. उसने ब्राह्मण–क्षत्रिय विवाद को चरम सीमा पर पहुंचाया तथा क्षत्रियों को निर्णायक हार दी. परशु ने हथियार प्रयोग करके ब्राह्मणों को शस्त्र के महत्व सें परिचित करवाया. जब ब्राह्मण–क्षत्रिय संघर्ष में परशु का शस्त्र प्रयोग सफल रहा तो लगभग सभी ब्राह्मण ऋषियों ने हथियार जमा करने शुरू कर दिये. उनके आश्रम हथियारों के अड्डे बन गए. पहले केवल पठन–पाठन और यज्ञ तक सीमित रहने वाले ब्राह्मण अब हथियारों के सौदागर भी बन गए. और तो और हथियार चलाने की शिक्षा भी ब्राह्मणों के हाथ आ गई. ब्राह्मण द्रोण सबसें बड़ा शस्त्र परीक्षिक बन गया.

अगर परशु की कथा को सत्य मान लें तो भारत में कोई भी क्षत्रिय उसके हाथों जिन्दा नहीं बच पाया था. उसने क्षत्राणियों के गर्भ में पल रहे अजन्मे बच्चे तक काट डाले थे. अतः आज जो भी क्षत्रिय होने का दावा करते हैं वह वे विदेशी हैं जिन्हें दक्षिणा आदि के लालच में ब्राह्मणों ने क्षत्रिय घोषित किया हुआ है. अगर परशु को कल्पना की उडान मान लें तो भी यह तथ्य है कि ब्राह्मणों ने क्षत्रियों का उपनयन संस्कार बन्द करके उन्हें शूद्र बना दिया था. उन्हें शूद्र घोषित करने के बाद उनके विरूद्ध अमानवीय नियम बनाए ताकि वे फिर सें कभी सिर उठाने की सोच भी न सकें. लेकिन आपसी वैर होने के बावजूद जहां अनार्य लोगों को दबाने का सवाल आया तो ब्राह्मण ऋषि आपसी वैर भुला कर क्षत्रिय देवों को हथियार सप्लाई कर देते थे. रक्ष संस्कृति के वीरों को मारने के लिए अकेले राम को कई ब्राह्मण ऋषियों ने हथियार सप्लाई किये.

परशु के शस्त्र प्रयोग सें पहले ब्राह्मण मात्र क्षत्रिय देवों (इन्द्र आदि) सें प्रार्थना करते थे कि वह उनकी रक्षा करे. ऋग्वेद ऐसी प्रार्थनाओं सें भरा पड़ा है. वेद काल में इन्द्र उनका सबसें बड़ा भगवान होता था. अतः अधिकतर प्रार्थनाएं उसी सें की गईं हैं. लेकिन परशुराम की कथा के बाद उन्होंने यह कहना आरंभ कर दिया कि जो क्षत्रिय ब्राह्मण को मारता है वह अपना ही मूल नाश करता है.

-

1.4.2.2 बौद्ध जैनों का कत्लेआम किया :

भारत में ब्राह्मणधर्म के ठेकेदारों यानि ब्राह्मणों के काले कामों के विरुद्ध बुद्ध धर्म तथा जैन धर्म ने आवाज उठाई. इससें उनकी रोजी रोटी और ऐयाशी पर आंच आई. नतीजा यह हुआ कि जैसे ही ब्राह्मणधर्मियों को सत्ता का सहारा मिला उन्होंने अपने विरुद्ध आवाज उठाने वाले दोनों धर्मों के अनुयाइयों को कुचल दिया. सम्राट वृहदर्थ के कत्ल के बौद्धों का कत्लेआम सभी जानते हैं. बौद्धों को अपना घरबार छोड़ कर भागना पड़ा. बाबा साहिब के अनुसार यह छितराये हुए बौद्ध अछूत बना दिए गए. ब्राह्मणों की करतूतों का विरोध करने की सजा वे आज भी भुगत रहे हैं.

विदेशी बौद्ध समर्थक राजाओं के शासन में बौद्ध धर्म फिर सें कुछ जीवित हुआ तो आठवीं सदी में ब्राह्मण गिरोह के मुखिया संकर ने शशांक और सुन्धवा की सेना को साथ लेकर फिर सें बौद्धों का दमन किया. उसका नतीजा यह हुआ कि आज भी दलित जाति के बहुत सें लोग बौद्ध अनुष्ठान करते हैं मगर उनमें "डर" समाहित होता है. उदाहरतः जब दलित जाति के रैगर समुदाय में किसी के घर पुत्र पैदा होता है तो उस बच्चे को बुद्ध की शरण में ले जाने के लिए "सात्या" की रस्म की जाती है. इसके लिए घर के अन्दर गोबर सें ही धर्मचक्र तथा सात्या के निशान बनाए जाते हैं तथा रस्म पूरी होते ही उसे खुरच कर उतार दिया जाता है तथा सारे सामान को कूएं में डाल दिया जाता है कि कहीं किसी ब्राह्मणधर्मी को इसका पता न चल जाए. समय के साथ आज यह प्रथा उनमें रिवाज बन गई है.

अरकाट के राजा ने जैनियों के साथ जो मारकाट हुई उसके प्रमाण आज भी वहां के मंदिरों में मिल जाते हैं.

1.4.2.3 मूल भारतीयों का कत्लेआम : ब्राह्मणों ने हर उस को नष्ट किया जो उनके रास्ते में आए. ब्राह्मण ऋषियों के कहने पर उनके राजा इन्द्र ने लाखों लोगों का कत्ल किया. अकेले ऋग्वेद में ही उसकी अनेकों करतूतों का वर्णन है:

- हे इन्द्र, तू यज्ञ का अभिलाषी है. जो तेरी निंदा करे तू उसका धन छीन कर राजी होता है. हे धनवान इन्द्र, तू हमें अपनी जांघों में छुपा ले. शत्रु को मार दो. (ऋ.व. 8.59.10)
- इन्द्र ने शराब नहीं पीने वालों (असुरों) के धन पर वैसे ही कब्जा लिया जैसे सोये हुए आदमी के धन पर कब्जा किया जाता है. (ऋ.व. 1.53.1)
- इन्द्र और अग्नि ने एक ही वार में दासों के 90 पुर नष्ट कर दिये. (ऋ.व. 1.130.7)
- इन्द्र बोला मैने शराब में धुत होकर राजा शंबर के 99 पुरों को तबाह कर दिया. (ऋ.व. 4.26.3) सत्ययुग
- इन्द्र बोला इन्द्राणी के कहने पर लोग मेरे लिए 15/20 सांड या बैल पकाते हैं और मेरे दोनों कांधों पर लोग शराब लाद देते हैं. (ऋव 10.86.14)
- हे इन्द्र, हमारे चारों ओर दस्यु (जमीन के मालिक) बसते हैं. वे दस्यु हैं क्यों कि वे यज्ञ नहीं करते. हमारे रीति रिवाज नहीं मानते. दूसरे धर्म को मानते हैं. तू उनको भेद दे, मार दे! (ऋ.व. 10.22.8)
- हे इन्द्र, तू उन सारे लोगों को मार दे जो हमारे धर्म या रीति रिवाज को नहीं मानते. (ऋ.व. 1.113.5)
- हे इन्द्र तूने पचास हजार काले लोगों को मारा. (ऋ.व. 4.16.13)
- तूने दास को मार कर जमीन पर पटक दिया. (ऋ.व. 1.174.7)
- जैसे सुनसान जगह में चोर लोगों को मार देता है वैसे ही इन्द्र ने हजारों सेनाओं को मारा (ऋ.व. 4.28.3)

1.4.3 सर्वोच्चता के लिए शास्त्रों का प्रयोग :

1.4.3.1 शिक्षा पर एकाधिकार : अपने एकमात्र शत्रु क्षत्रियों को रौंद देने के बाद ब्राह्मणों का धर्म तथा समाज पर हर प्रकार सें वर्चस्व हो गया. लेकिन क्षत्रियों को दबा कर रखना आसान नहीं था. क्षत्रियों को सदा के लिए अपने पैरों तले दबा कर रखने के लिए ब्राह्मणों ने गहरी साजिश रची. उन्होंने ठण्डे दिमाग सें लेकिन कठोरतम निर्दयता के साथ क्षत्रियों के लिए शिक्षा के दरवाजे बन्द कर दिए.

इस काम को अन्जाम देने के लिए ब्राह्मणों ने **तीन दुस्साहस पूर्ण कदम** उठाए :

I. **ऋग्वेद में पुरुषसूक्त घुसेड़ा** जिसमें यह बताया गया कि ब्राह्मण भगवान के मुख सें पैदा हुए हैं तथा क्षत्रिय भुजाओं सें पैदा हुए हैं. अतः जैसे बाहें मुख की रक्षा करती हैं वैसे ही क्षत्रिय ब्राह्मणों की रक्षा करने के लिए पैदा हुए हैं. उसी समय कृष्ण सुदामा जैसे किस्से भी घढ़े गए जहां "भगवान" को भी साधारण से ब्राह्मण के पैर धोकर गंदा हुआ पानी पीकर धन्य होता हुआ बताया गया. रामायण में ऐसे किस्से घुसेड़े गए कि ब्राह्मण के बयान देने मात्र सें राजा का यह फर्ज बनता है कि सामने वाले को दोषी मान कर दण्ड दे दे. सन्त शम्बूक की हत्या इसी आधार पर की गई.

II. **क्षत्रिय देवों को दरवाजा दिखाया :** क्षत्रियों के हार जाते ही ब्राह्मणों ने क्षत्रिय देवों को भी उठा कर बाहर फैंक दिया तथा ब्राह्मण भक्त उपेन्द्र विष्णु को सबसें बड़ा भगवान बना दिया. इन्द्र, वरुण, सोम, रूद्र, मेघ, यम, मृत्यु, ईशान आदि सभी बड़े देव **क्षत्रिय** थे. (शतपथ ब्राह्मण 14.4.2.23 Vol.7.39) राजसूय यज्ञ जो उस समय प्रमुख यज्ञ होता था उसमें क्षत्रिय आसन पर बैठते थे और ब्राह्मण नीचे जमीन पर बैठ कर उनकी पूजा करते थे. ब्रह्मा को भी क्षत्रिस योनि माना जाता था. **स एष क्षत्रस्य योनिः यत् ब्रह्म.** (उपनिषद कहानियां 29) ब्रह्मा की पोल खोली गई कि उसने अपनी बेटी पोतियों सें यौन सम्बंध बनाए हैं. इन्द्र जो कि स्वर्ग और सारे देवताओं का राजा होता था उसे मात्र बरसात करने वाला देव बना दिया गया जबकि इन्द्र ने ब्राह्मणों के लिए लाखों लोगों की हत्याएं की थीं.

III. **उपनयन संस्कार का घातकतम प्रयोग :** ब्राह्मण धर्म का सबसें महत्वपूर्ण संस्कार जनेऊ धारण करना यानि उपनयन संस्कार करना है. बाबा साहिब ने तथ्यों के आधार पर अकाट्य खोज की है कि ब्राह्मणों और क्षत्रियों की लड़ाई में जब क्षत्रिय हार गए तो ब्राह्मणों ने उनका **उपनयन संस्कार बन्द करके उन्हें शूद्र बना दिया.** साधारण भाषा में जो जातियां जनेऊ धारण नहीं करती वे अद्विज हैं अर्थात शूद्र हैं. अलबरूनी दसवीं शताब्दी में भारत आया. उसने उस समय का हाल अपनी पुस्तक (अलबरनी का भारत) में लिखा है. उसके अनुसार शूद्रों और वैश्यों में कोई विशेष अंतर नहीं है. वे गांवों के बाहर सभी इक्कठे रहते हैं तथा उनमें रोटी बेटी का रिश्ता भी है. उसने यह भी लिखा है कि कृष्ण यादव था जो कि शूद्र होते हैं तथा जाट भी निम्न जाति के शूद्र होते हैं. आज भी इन जातियों में जनेऊ धारण नहीं किया जाता. मनु स्मृति में भी नियम है कि नाभि सें ऊपर पवित्र अंग हैं तथा नाभि सें नीचे वाले अंग अपवित्र हैं. (5.132) अतः मुख और बाहू सें पैदा ब्राह्मण और क्षत्रिय पवित्र माने गए तथा जंघा तथा पैरों सें पैदा शूद्र नीच माने गए.

मनु ने कुल सोलह संस्कार गिनाए हैं. यह इस प्रकार सें हैं.

1. **गर्भाधान** : सन्तान प्राप्ति के लिए गर्भ धारण करना.
2. **पुंसवन** : गर्भ धारण करने के तीसरे माह में "पुत्र ही पैदा हो" इसके लिए यज्ञ आदि करना. आर्यों में दस पुत्र पैदा करने की वेदाज्ञा थी. (सम1.16)अतः यह संस्कार कर्मकांड किया ही इसलिए जाता था कि पुत्र ही पैदा हों! वेद पुराण लड़ाई मार काट की घटनाओं सें भरे पड़े हैं. अतः आर्यो को लड़ने मरने के लिए पुत्रों की आवश्यकता तो रहती ही थी. वैसे भी वेद की आज्ञा थी कि स्त्री (बेटी) सें मैत्री नहीं हो सकती क्योंकि उनके दिल लकड़बग्घों जैसे होते हैं. (ऋग. 10.95.15) अतः ऐसे दिल वाली बेटी कौन चाहेगा!!
3. **सीमन्तोन्नयन** : गर्भ धारण करने के चौथे माह में जच्चा बच्चा के आरोग्य रहने का कार्य.
4. **जातकर्म** : बच्चा पैदा होने पर उसे घी शहद चटाना.
5. **नामकरण** : दसवें बाहरवें दिन बच्चे का नाम रखने का कार्य.
6. **निष्क्रमण** : चौथे महीने बच्चे को घर सें बाहर निकालना.
7. **अन्नप्राशन** : छठे महीने बच्चे को अन्न खिलाना.
8. **मुण्डन (चूड़ाकर्म)** : तीसरे साल में बच्चे का मुण्डन करना.
9. **उपनयन** : **बालक को यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण कराना** तथा शिक्षा के लिए गुरू के पास छोड़ना. जनेऊ धारण करने के बाद ही बालक द्विज बनता था.
10. **वेदाराम्भ** : गुरू के पास वेद पढ़ना. शिक्षा लेना.
11. **केशान्त** : ब्राह्मण 16 साल, क्षत्रिय 22 साल तथा वैश्य 24 साल का होने पर बाल कटवाना.
12. **समावर्तन** : विद्या प्राप्ति के बाद गुरूकुल छोड़ना.
13. **गृहाश्रम** : विवाह करना तथा सन्तान पैदा करना.
14. **वानप्रस्थ** : 50 साल की आयु होने पर घर त्याग का वन में रहने की दीक्षा लेना.
15. **सन्यास** : सभी को त्याग कर मोक्ष प्राप्ति का यत्न करना.
16. **अन्त्येष्टि** : मृत्यु होने पर शव को अग्नि देना.

इन सभी संस्कारों में सें सबसें अधिक महत्वपूर्ण **उपनयन संस्कार** है क्योंकि यही संस्कार कभी आर्यो में वर्ण निर्धारित किया करता था. बाबा साहिब ने अपने खोजपूर्ण ग्रन्थ Who were Shudras? (हिन्दी अनुवाद "शूद्रों की खोज") में ब्राह्मणवाद के अन्धे इतिहास सें एक महान खोज की है कि प्राचीन काल में आर्य समाज में वर्ण मात्र तीन ही होते थे : ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. चौथा वर्ण शूद्र बहुत बाद में बनाया गया. चौथा वर्ण शूद्र क्यों बनाया गया, इस बात का उन्होंने विस्तृत विवेचन किया है. नीचे हम उनकी खोज को संक्षिप्त रूप में दे रहे हैं.

शूद्र कौन : मनु के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को छोड़ कर शेष सभी शूद्र हैं. उसके अनुसार विद्या अध्ययन रूपी दूसरा जन्म लेने के कारण प्रथम तीन वर्णो अथवा जातियों को द्विज कहा जाता है. विद्या अध्यापन रूपी दूसरा जन्म नहीं होने के कारण एक जन्म वाला शूद्र है. (मनु 10.4) द्विज का अर्थ है दो बार जन्मा हुआ. स्मृति नियमों के अनुसार मनुष्य का पहला जन्म माँ के गर्भ सें होता है तथा दूसरा जन्म उपनयन संस्कार सें होता है. ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ही उपनयन संस्कार के अधिकारी माने जाते हैं. **अतः जिनका उपनयन संस्कार नहीं होता वे सभी शूद्र हैं अर्थात हिन्दुओं की वे समस्त जातियां शूद्र है जो जनेऊ धारण नहीं करतीं.**

बुद्ध सें पांच सदी पहले भारत में भरत नामक समुदाय का वर्चस्व था. भरत क्षत्रिय थे. इसी कुल में सें 1150 ईसा पूर्व में सुदास नामक राजा हुआ. ऋग्वेद में सुदास को महानतम राजा बताया गया है. उस समय एक भयंकर युद्ध हुआ था जिसे दशराज्ञ युद्ध के नाम सें भी जाना जाता है. सुदास ने अपने कुल का नेतृत्व किया और युद्ध में विजयी रह कर हीरो बना. उसे सम्राट बनाया गया. ब्राह्मण वशिष्ठ ने उसका राजतिलक किया. उस समय भी ब्राह्मणों और क्षत्रियों में श्रेष्ठता का संघर्ष जारी था. क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र का मत्त था कि कोई भी ब्राह्मण बन सकता है. सुदास ने उसका समर्थन किया और यहां तक फतवा दे दिया कि पुरोहित बनने के लिए ब्राह्मण होना अनिवार्य नहीं है. उसने अपने पुरोहित पद पर ब्राह्मण ऋषि वशिष्ठ को हटा कर क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र को आसीन कर दिया.

ब्राह्मणों के लिए राजा सुदास का यह कदम सीधे सीधे उनकी रोजी रोटी पर ही नहीं बल्कि उनकी इज्जत पर भी हमला था. ब्राह्मणों ने कुपित होकर सुदास कुल के क्षत्रियों का उपनयन संस्कार बन्द कर दिया और उन्हें शूद्र भी घोषित कर दिया. तब भारतीय आर्य समाज में चौथे वर्ण शूद्र का जन्म हुआ. राजा सुदास और

उसके कुल को शूद्र बना देने के बाद जो भी व्यक्ति या कबीला ब्राह्मणों के विरुद्ध बोलता था वे उसे शूद्र घोषित कर देते थे. इसके साथ ही ब्राह्मणों ने चारों वर्णों को एक दूसरे सें ऊंचा नीचा भी घोषित कर दिया.

आर्य इतिहास की यह सबसें बड़ी घटना है. ब्राह्मणवादी इतिहासकारों ने इस घटना का कहीं कोई जिक्र नहीं किया है. इसी घटना की वजह सें करोड़ों लोगों को आज शूद्र बन कर रहना पड़ रहा है.

बाबा साहिब अम्बेडकर ने उपनयन संस्कार बन्द किए जाने का समाज पर जो प्रभाव हुआ उसकों निम्न रूप में परिभाषित किया हैः (Vol. 7.172)

1. जहां पहले जनेऊ का मात्र धार्मिक महत्व था अब उसका सामाजिक महत्व भी बन गया. जनेऊ धारण करना बड़पन की निशानी बन गया था. जनेऊ धारण करने वाले द्विज स्वयं को ऊंचा समझने लगे थे और उपनयन न होने के कारण शूद्र बने क्षत्रिय स्वयं को हेय समझने लगे थे. इसी हेयपन के कारण शूद्र को निम्नतर वर्ण दिया गया.
2. मात्र उपनयन करवा चुके आर्य ही यज्ञ के अधिकारी होते थे. अतः शूद्रों को यज्ञ करवाने का अधिकार नहीं रहा. यज्ञ न करवा पाने के कारण उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा समाप्त हो गई.
3. ब्राह्मणिक पूर्व मींमांसा के नियम अनुसार व्यक्ति को विरासत में सम्पत्ति इसलिए मिलती है ताकि वह यज्ञ कर सके. उपनयन नहीं होने के कारण शूद्र क्योंकि यज्ञ करने के अधिकारी नहीं थे अतः उन्हें अपने बाप दादा की सम्पत्ति के उत्तराधिकार सें भी हाथ धोना पड़ा. मनु ने तो साफ ही घोषणा कर दी थी कि कोई भी ब्राह्मण किसी भी शूद्र की सम्पत्ति छीन सकता है.
4. उपनयन नहीं होने के कारण शूद्र को पढ़ने सें वंचित कर दिए गया. विद्या नहीं मिल पाने के कारण उनके साथ जो हुआ, उसे महात्मा ज्योतिबा सें अधिक सटीक कोई शायद कह ही नहीं सकता. उनके अनुसार एक अविद्या के कारण ही शूद्र धार्मिक आर्थिक व सामाजिक तौर पर पिछड़ गए.
5. आर्यों में हर राजा के लिए यज्ञ करना विशेषतः अश्वमेध यज्ञ करना अनिवार्यता की हद तक परिपाटी बन चुका था. उपनयन नहीं होने के कारण शूद्र क्योंकि यज्ञ करने सें वंचित किए गए, अतः वे राजसत्ता की कल्पना सपने में भी नहीं कर सकते थे.

यहां एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह बदलाव एक दिन में नहीं आ गया था बल्कि धीरे धीरे हुआ था. अतः हम पाते हैं कि मौर्य वंश तक भारत में शूद्रों का राज रहा. शूद्र क्योंकि पहले क्षत्रिय ही थे अतः उनके बारे में यह भी गलतफहमी बनी रही कि भारत पर क्षत्रियों का ही राज रहा. मात्र सम्राट वृहदर्थ के कत्ल के बाद ही भारत सें शूद्रों का शासन समाप्त हुआ. **तथा उसके बाद ही शूद्रों का छूना, देखना अधर्म या पाप बना दिया गया.**

ब्राह्मण शास्त्रों (मनु 2.36-39) के अनुसार अगर द्विज माँ-बाप चाहें कि उनका बेटा ब्राह्मण बने तो उसका आठवें साल में उपनयन संस्कार करवा दें. अगर माँ-बाप चाहें कि उनका बेटा क्षत्रिय बने तो उसका ग्याहरवें साल में उपनयन संस्कार करवा दें और अगर वे चाहें कि उनका बेटा वैश्य बने तो उसका बाहरवें साल में उपनयन संस्कार करवा दें. अगर वे जल्दी करना चाहें तो यह संस्कार क्रमशः पाँचवें, छठे तथा आठवें साल में भी किया जा सकता है. जो यह संस्कार क्रमशः अधिकतम सोलह, बाईस तथा चौबीस साल की उम्र तक नहीं करते वह यज्ञोपवीत व्रत सें गिर जाने के कारण **व्रात्या** कहलाते हैं. उनके साथ किसी भी यज्ञोपवीत धारी द्वारा रोटी बेटी का रिश्ता नहीं बनाया जा सकता. उपनयन संस्कार हो जाने के बाद शिक्षा पूरी होने पर गुरू फिर सें योग्यतानुसार वर्ण निर्धारण करता था.

ब्राह्मण शासत्रों का यह भी मत है : **जन्मना जायते शूद्रः, संस्कार द्विज उच्यते! अर्थात जन्म सें तो सभी शूद्र होते हैं केवल संस्कार (उपनयन) सें ही आदमी द्विज बनता है.**

आचार्य सुरेन्द्र कुमार (मनुस्मृति का पुनर्मूल्याकंन) के अनुसार कुछ लोग उपरोक्त श्लोकों का अर्थ इस प्रकार सें करते हैं कि ब्राह्मण अपने बालक का उपनयन संस्कार आठवें साल में, क्षत्रिय ग्यारहवें साल में तथा वैश्य बाहरवें साल में करवा दे. उनके अनुसार यह अर्थ सही नहीं हैं तथा मनु स्मृति की भावना के विरूद्ध हैं क्योंकि उपनयन सस्कार होने पर ही बालक का वर्ण निर्धारण होता है.

उपरोक्त तथ्यों सें निम्न बातें स्पष्ट होती हैं:

1. यह कि मनु के समय (प्रथम शताब्दी) तक बालक का वर्ण निर्धारण उपनयन के समय माँ-बाप करते थे लेकिन अंतिम वर्ण निर्धारण बालक की योग्यतानुसार गुरू करता था.
2. यह कि मात्र द्विज ही अपने बालकों का उपनयन संस्कार करवा सकते हैं. शूद्र चाह कर भी अपने बालकों का उपनयन संस्कार नहीं करवा सकते उनमें चाहे कितनी भी योग्यता क्यों न हो.

3. यह कि उपनयन संस्कार (दूसरा जन्म) होने पर ही बालक "शूद्रपन'' सें बाहर निकलता था क्योंकि जन्म सें सभी (एक बार जन्मे) शूद्र माने जाते थे. जिनका यज्ञोपवीत नहीं होता वे शूद्र ही रह जाते थे. यज्ञोपवीत होने पर ही वे द्विज (दो बार जन्में) बन पाते हैं.
4. जो द्विज भी समय निर्धारित समय सीमा तक अपने बालक का उपनयन नहीं करवाते थे वे **व्रात्य** बन जाते थे तथा कोई भी द्विज उनसें रोटी बेटी का रिश्ता नहीं रख सकता था.
5. यह कि अधिकतर ब्राह्मण इन निर्देशों का अर्थ इस प्रकार सें करते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य अपने बालक का उपनयन संस्कार आठवें, ग्यारहवें तथा बाहरवें साल में करवाएं. अर्थात उनके लिए उपनयन संस्कार का उद्देश्य वर्ण निर्धारण की बजाए मात्र शिक्षा प्राप्ति तक ही सीमित रह गया है. मनु के विचार कुछ भी रहे हों आज के दिन ही नहीं बल्कि सदियें सें ब्राह्मण इस श्लोक का अर्थ बिल्कुल इसी रूप में करते और मानते आ रहे हैं.
6. यह कि यज्ञोपवीत अर्थात जनेऊ उयनयन होने के बाद ही धारण किया जा सकता है. जो जनेऊ पहने वह द्विज जो नहीं पहने वह शूद्र.

1.4.3.2 शूद्र विरोधी अमानवीय नियम बनाए : क्षत्रियों का उपनयन संस्कार बन्द करने के साथ ही ब्राह्मणों ने यह भी कुनिश्चित किया कि शूद्र बनने के बाद वे किसी भी प्रकार सें फिर सें सिर न उठा सकें. अपने शास्त्रों में उन्होंने ऐसे नियम बनाए जिन्हें पढ़ कर आत्मा कांप उठती है. इन नियमों को पढ़ कर कट्टर ब्राह्मणवादी लेखक तथा भूतपूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन को भी मानना पड़ा कि क्योंकि बुद्ध धर्म शूद्रों को ब्राह्मणों के बराबर अधिकार देता था इसलिए मनु ने यह अमानवीय नियम इसलिए बनाए. (धर्म और समाज 136)

- अगर शूद्र उच्च जातियों वाला काम करके धन कमाये तो राजा को चाहिए कि उसका धन छीन ले और उसे देश सें बाहर निकाल दे. (मनु 10.96)
- ब्राह्मण बिना सोचे, बिना कारण जब चाहे शूद्र का धन छीन ले क्योंकि शूद्र का कुछ भी अपना नहीं है. (मनु 8.417) अगर उसके पास धन रहेगा तो वह ब्राह्मण को ही कष्ट देगा. (मनु10.129)
- शूद्र को मारने पर उतना ही पाप लगता है जितना उल्लू या कौवे को मारने पर लगता है. (मनु11. 131)
- शूद्र खरीदा हुआ हो अथवा वैसे हो, वह ब्राह्मण की दासता में ही रहे. (मनु 8.413)
- जो शूद्र वेद सुने उसके कानों में पिघला शीशा भर दो. जो वेद पढ़े तो जीभ काट दो और अगर वेद समझ ले तो उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दो. (गौतम धर्म सूत्र 12.4) (समु 5.141)
- अगर शूद्र ब्राह्मण के बराबर आसन पर बैठ जाए तो उसके नितम्ब गर्म सलाखों सें दाग दिए जाएं. (मनु 8.281)
- द्विज शूद्र के राज में न रहें. (मनु 4.61) अर्थात शूद्र का राज समाप्त कर दें.
- कांई द्विज या ब्राह्मण शूद्र को शिक्षा न दे. हवन का प्रसाद न दे. धर्म का उपदेश न दे. जो उल्लंघना करे वह शूद्र सहित असंवृत नामक नरक में जाए. (मनु 4.61)
- अगर शूद्र द्विज स्त्री सें मैथुन करे तो उसका समस्त धन छीन कर मौत तक की सजा दी जाए. ब्राह्मण चाहे कितना भी पापाचारी क्यों न हो वह अगर बलात्कार भी करे तो उसका मुण्डन कर दिया जाए. या देश निकाला दे दिया जाए. (मनु 8.374–380)
- स्वामी ब्राह्मण शूद्र को कुछ भी गाली दे सकता है. अन्य ब्राह्मण अगर गाली दे तो उसे 12 पण दण्ड दिया जाए. लेकिन अगर शूद्र सामने सें कठोर शब्द भी निकाल दे तो उसकी जीभ काट दी जाए. (मनु 8.267) शूद्र अगर चोट कर दे तो जिस अंग सें चोट करे उसे ही कटवा दो. (मनु 8.271)
- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सें क्रमशः 2,3,4,5 रू सैंकड़ा का ब्याज लिया जाए. (याज्ञ. 2.37)(मनु 8. 142)
- ब्राह्मण के मर जाने पर उसकी सम्पत्ति के दस भाग कर लें. उसकी ब्राह्मणी सें जो सन्तान हो उसे चार भाग, क्षत्राणी सें सन्तान को तीन भाग, वैश्या सें सन्तान को दो भाग तथा शूद्रा सें सन्तान को एक भाग दिया जाए. (मनु 9.153) (याज्ञ. 2.125)
- चांडाल को छूना, देखना तथा बोलना पाप है. (आपस्तम्ब 2.1.2.8)

- जो राजा शूद्र को जॅज बनाता है वह दलदल में फंसी गाय की तरह फंस जाता है. (मनु 8.21)
- जो शूद्र ब्राह्मण को कड़वे शब्द बोले उसके मूँह में दस अँगुल की कील ठोंक दी जाए. अगर वह ब्राह्मण के बाल आदि पकड़े तो उसके हाथ कटवा दिए जाएं. (8.270,282)
- अगर चांडाल (अछूत) मंदिर अथवा मेले में प्रवेश कर जाएगा तो देवता की शक्ति क्षीण हो जाएगी, राजा मर जाएगा, फसलें बर्बाद हो जाएंगी तथा उस गांव का नाश हो जाएगा. (पराशर 6.25) (समु 6. 152)

1.4.3.3 ब्राह्मण–पक्षीय शास्त्र बनाए : धन आरम्भ सें लेकर आज तक हर समाज के अस्तित्व का मुख्य आधार रहा है. जो लोग धन सम्पत्ति नहीं उपजा सके वे अधिक दिन तक जिन्दा नहीं रह सके. गौतम बुद्ध जैसा धर्म कोई नहीं चला सका लेकिन वह धर्म भी तब फैला जब सम्राट अशोक ने उसे आश्रय दिया. मौर्य राजाओं का संरक्षण समाप्त होते ही ब्राह्मणों ने भारत सें बौद्ध धर्म का नाश कर दिया. दुनिया में ब्राह्मणवाद ही ऐसा मजहब है जो पैसा बनाने को धर्म का मुख्य आधार मानता है. और यही कारण है कि ब्राह्मणवाद ने हर प्रकार सें पैसा बनाया है. इसके तीर्थ आज भी लूट का केन्द्र हैं लेकिन धनवान होने के कारण बिलकुल निकृष्ट मजहब होने पर भी यह जिन्दा है तथा फल फूल रहा है.

ब्राह्मणवाद के चार सतम्भों : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में **अर्थ** का सबसें अधिक महत्व है. ब्राह्मणों ने अपने धर्म को अर्थ यानि पैसा बनाने का जरिया बना रखा है. उन्होंने ऐसे शास्त्रों की रचना की जिससें उन्हें धन की प्राप्ति हो सके. शुरू सें लेकर आज तक ब्राह्मणों के मन्दिर और वह स्वयं धन कमाने में ही लगे हुए हैं. जहां पहले वे सुरा और सुन्दरी का उपभोग भी करते थे अब प्रत्यक्ष में सिर्फ सम्पत्ति का ग्रहण ही करते हैं. उनके शास्त्र इन उपदेशों सें भरे पड़े हैं कि ब्राह्मणों को क्या क्या कब और कैसे दान देना चाहिए. अब तो लोगों में कुछ जारूकता आ गई है वर्ना पहले ऐसा मानना था कि अगर किसी के खोए हुए सोने के जेवर मिल जाएं तो कुछ धन साथ लगा कर ब्राह्मण को दे देना चाहिए वर्ना जिसे गहने मिले हैं उसका अनिष्ट हो जाएगा. मुन्शी प्रेम चन्द की कहानी है जिस में बहू के हाथ सें बिल्ली मर जाती है तो ब्राह्मण बताता है कि प्रायश्चित के लिए बिल्ली के वजन के बराबर सोना दान करना पड़ेगा.

वैसे चाहे उनके ग्रन्थ मुस्लमानों को मलेच्छ बताते हों, उनके हाथ का छूआ पानी भी अपवित्र बताते हों लेकिन जब धन लेने की बात आती हो तो अकबर के चढ़ाए छत्र की महिमा आज भी हर मन्दिर में गाई जाती है. नियम बनाए गए कि जो ब्राह्मण को दान नहीं देता वह सात जन्मों तक पक्षी बनता है. जो उसका धन छीने वह बींठ का कीड़ा बनता है. उससें सोना छीनने वाला तीन जन्मों तक अन्धा पैदा होता है.

जैसे दुकानदार कमाई करने के लिए नित्य नए ब्रांड अथवा मॉडल का सामान लाता है वैसे ही ब्राह्मणों ने भी धन प्राप्ति के लिए नित्य नए ब्रांड के देवता घढ़े. वेद काल में इन्द्र सबसें महान देवता था. आज कोई उसका नाम तक नहीं लेता. दसवीं सदी सें पहले राम को कोई नहीं जानता था आज वह सबसें बड़ा देवता है. 1947 सें पहले वैष्णों को कोई नहीं जानता था. उसके बीहड़ मन्दिर में जाने की किसी की हिम्मत न होती थी. आज वह कमाई करने में सबसें बड़ी देवी है. इसी कमाई के बलबूते पर मन्दिरों के पण्डे पुजारी शराब पीते हैं, व्यभिचार करते हैं, औरतों को बरगलाते हैं और ऐश की जिन्दगी बिताते हैं. (समु 9.257)

ब्राह्मणों ने अपने शास्त्रों के माध्यम सें अपने लिए सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति का विधान बनाया. अपने इस विधान का इस हद तक प्रचार किया कि लोग सचमुच यह मानने लगे कि ब्राह्मण का सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति पर अधिकार है. उदाहरणतः सीता हरण के समय सम्राट रावण ब्राह्मण का वेश धारण करके गए थे. वहां जाकर उन्होंने सीता के सभी अंगों की वैसे ही तारीफ की जैसे एक पति अपनी पत्नि की कर सकता है मगर सीता नाराज होने की बजाए उनके लिए फल और मेवे लेकर आई. और तो और उसने अपनी उम्र भी 18 साल बताई जबकि उस समय वह 32 साल की थी. लेकिन जैसे ही उसे पता चला कि वह ब्राह्मण नहीं हैं तो उसने उन्हें फटकारना शुरू कर दिया. ब्राह्मण ऋषि गालव कोढ़ और खुजली का मरीज था तब भी एक राजा ने, देवी भागवत जैसे ग्रन्थों के अनुरूप, अपनी बेटी उसे भेंट कर दी ताकि वह मोक्ष प्राप्त कर सके. दशरथ के भाई रोमपाद ने अकाल दूर कराने के लिए ब्राह्मण ऋश्यश्रृंग को अपनी कन्या पेश कर दी.

युधिष्ठर ने जब जूआ खेला तो उसने अपनी व प्रजा की सम्पत्ति के साथ साथ अपने भाईयों और अपनी रखैल द्रोपदी तक को दांव पर लगा दिया. लेकिन उसने स्पष्ट कहा कि वह ब्राह्मणों और उनकी सम्पत्ति को दांव पर नहीं लगा रहा है. (भारत एक खोज 05.05.2001) वह भगवान कहे जाने वाले कृष्ण की बहन तक को जूए में हार गया लेकिन ब्राह्मणों की सम्पत्ति की ओर देखने की हिम्मत भी न जुटा पाया. ब्राह्मण की स्थिति राजा और कानून सें सें भी ऊपर होती थी.

जैन तथा बौद्ध धर्म बढ़ने सें ब्राह्मणों को गहरा आघात लगा और ब्राह्मणवाद क्षतविक्षत हो गया था. उसकी जाति, यज्ञ व कर्मकांड सम्बंधी अनैतिक व्यवस्थाएं चरमरा गईं. इन व्यवस्थाओं को पुनः जमाने के लिए

ब्राह्मणों ने शास्त्रों की रचना की. ऋग्वेद में पुरूष सूक्त जोड़ा जिसमें ब्राह्मण मुख सें तो शूद्र पैरों सें जन्मा बताया गया. जाति पाति को पक्का करने के लिए स्मृतियों की रचना की गई. रामायण में "जो चोर की सजा वही बौद्ध की सजा" जैसे प्रावधान बनाए गए. कृष्ण जैसे अवतारों की आड़ में गोधर्म को उचित ठहराया गया.

इन के धर्म–शास्त्रों में कोई सदाचार की बात नहीं है. इनका उद्देश्य शर्मनाक वर्ण व्यवस्था और पुरोहिताई सामंती शोषण की घिनौनी व्यवस्था को कायम रखना था. इनके धर्म–शास्त्रों की बदौलत ब्राह्मण वर्ग की पीढ़ी दर पीढ़ी रोजी रोटी ही नहीं बल्कि ऐयाशी का प्रबंध भी हो गया. (समु 5.141)

- राजा ब्राह्मणों को किसी भी हालत में कभी तंग न करे क्यों कि ब्राह्मण नाराज होकर राजा को सेना तथा वाहन सहित तुरंत नष्ट कर देते हैं. (मनु समृति 9.314)
- यज्ञ करने तथा कराने वाले ब्राह्मणों के आसरे ही धरती तथा देवता टिके हुए हैं. जो मरने की इच्छा करता हो वही ब्राह्मण को मारेगा. (मनु समृति 9.316)
- गैंडे का माँस केवल ब्राह्मण ही खा सकता था. यह उसका विशेष अधिकार था. (अल. भारत 104)
- ब्राह्मण सब वर्णों का प्रजापति है. (शांति पर्व 60) अतः वह किसी भी वर्ण की स्त्री सें बच्चे पैदा कर सकता है.
- ब्राह्मण सबसें ज्येष्ठ (बड़ा) और श्रेष्ठ है. (शांति पर्व 72) मुख सें पैदा होने के कारण ब्राह्मण सबसें बड़े हैं क्यों कि वह जन्म सें ही श्रेष्ठ हैं. (मनु 1.93) देवता भी ब्राह्मण के मुख सें भोजन करते हैं. (1.95) अतः ब्राह्मणों को बढ़िया माल पूअे खिलाना चाहिए. एक ब्राह्मण को खिलाने सें ही एक लाख गाय दान देने जितना पुण्य मिलता है. (ग. पु. 5.48) (समु 1.28)
- राजा अगर मरता हो तो भी ब्राह्मण सें टैक्स न ले बल्कि सुनिश्चित करे कि ब्राह्मण की रोजी रोटी चलती रहे. अगर ब्राह्मण भूख सें मर गया तो तो राजा और उसका राज्य अकाल सें मर जाएंगे. (मनु. 7.133–135)
- संसार में जो कुछ है वह सब ब्राह्मणों का है क्यों कि वे जन्म सें ही श्रेष्ठ हैं. (मनु. 1.100)
- जैसे आग महान है चाहे संस्कार युक्त हो या संस्कार हीन हो, वैसे ही ब्राह्मण महान है चाहे वह विद्वान हो या मूर्ख हो! (मनु. 1.101) आग सब कुछ भक्ष करके भी पवित्र रहती है वैसे ही ब्राह्मण नीच कर्म करे तो भी उसे पूज्य मानना चाहिए क्यों कि ब्राह्मण परम देवता है. (मनु. 9.318)
- तुलसी ने तो यहां तक कहा ''पूजिए बामण गुण ज्ञान सील हीना, शूद्र न गुण ज्ञान परवीणा"
- जो ब्राह्मणों का विरोध करेगा उसे ब्राह्मण वैसे ही नष्ट कर देंगे जैसे उन्होंने गुस्से में आकर आग को सर्व भक्षी बनाया तथा चाँद को दाग लगाया. (मनु. 9.314). तुलसी के अनुसार ब्राह्मण के शाप के कारण तो भगवान को भी सूअर और अर्धपशु बन कर सम्राट हरिण्यकशिपु को मारना पड़ा. (समु 1.18)
- ब्राह्मण सें द्वेश करके लोग वैसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे सर्दी में डांस और मच्छर. (वही)
- गरूड़ पुराण (5.38) के अनुसार आदमी लोहा, पत्थर, जहर तो खाकर पचा सकता है परन्तु ब्राह्मण का धन कोई नहीं पचा सकता. जो कोई ब्राह्मण का धन खाएगा उसकी सात पीढ़ियां तक जलेंगी.
- ब्राह्मण की जीविका छीनने पर बन्दर की योनि मिलती है. (गरूड़ पुराण 5.48) हनुमान ने भी ऐसा ही कुछ किया होगा तभी तो वह भी बन्दर योनि में जन्मा!!
- जो राजा ब्राह्मण को भूमि दान नहीं करता उसे अगले जन्म में एक कुटिया की जगह भी नहीं मिलती. (3.35)
- ब्राह्मण को मारने वाला टी बी रोग सें ग्रस्त हो जाता है, लात मारने वाला लंगड़ा, विवाद में उसे हराने वाला ब्रह्मराक्षस बनता है. (13.55)
- तुलसी ने फरमाया : सापत, ताड़त परूश कहंता! विप्र पूजिए अस गवाहि सन्ता!! अर्थात ब्राह्मण चाहे श्राप दे, मारे पीटे, गाली दे तो भी उसकी पूजा करनी चाहिए क्यों कि ऐसा सन्तों का कहना है. (समु 2.51)
- जिस राजा का पुरोहित ब्राह्मण जाति का नहीं होता, देवता भी उस राजा का अन्न या हवि स्वीकार नहीं करते. (ऐतरेय 8.24) (समु 9.243)
- यजमान प्रतिदिन श्राद्ध करे और ब्राह्मणों को दूध फल मेवे आदि देवे. (मनु 3.170) श्राद्ध की सम्पत्ति के अधिकारी केवल ब्राह्मण हैं. बाप के श्राद्ध में तीन, दादी के श्राद्ध में अनेकों ब्राह्मणों को भोजन करवाए.

श्राद्ध में पाँच प्रकार के भोज बनाए. मछली, हिरण, तीतर, बकरा, सूअर तथा खरगोश का माँस अवश्य खिलाए (याज्ञ स्मृति 221–258)

- देवता तो छिपे हुए देव हैं परन्तु ब्राह्मण तो प्रत्यक्ष देव हैं. उन्हीं की कृपा सें ही देवता स्वर्ग में टिके हुए हैं. ब्राह्मण के शब्द झूठ नहीं होते (विष्णु स्मृति 19.20.22).
- जिसके मुख सें देवता हव्य (यज्ञ की भेंट) और पित्तर कव्य (श्राद्ध का माल) खाते हैं उस ब्राह्मण सें श्रेष्ठ कौन प्राणी हो सकता है. (मनु 1.95) तुलसी ने फरमाया : 'जो विप्रन्ह बस करहु ! तौ तुअ बस ब्रह्मा, विष्णु महेसा" अर्थात जो ब्राह्मणों को खुश कर लेगा तो देव तो अपने आप तेरे वश में रहेंगे. (समु 5.142)
- पदार्थों में प्राणी श्रेष्ठ हैं, प्राणियों में समझ वाले प्राणी श्रेष्ठ हैं उनमें सें मनुष्य श्रेष्ठ हैं मनुष्यों में से ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं. ब्राह्मण जीता जागता धर्म है. सारी पृथ्वी ब्राह्मणों की है. वे सारे धन के स्वामी हैं शेष सभी लोग ब्राह्मण की दया पर निर्भर हैं. (मनु 1.96–101)
- अगर कोई ब्राह्मण पर लाठी सें हमला करे तो हमलावर को मार दिया जाए. उसे मृत्युदंड दिया जाए. ब्राह्मण को बचाने के लिए अगर कोई किसी को मार दे तो उसे निर्दोष माना जाए (मनु 8.349)
- अगर कोई क्रोध सें ब्राह्मण के तिनका भी मार दे तो वह 21 जन्मों तक कुत्ता या बिल्ली बनता है. (4. 65)
- ब्राह्मण का नाम कल्याण, शुभ, प्रसन्नता वाचक रखा जाए. शूद्र का नाम दासता भाव वाला होना चाहिए. (2.6)
- वेद विरोधी तथा वेद धर्म (यज्ञ बलि आदि) न मानने वाला अगर अतिथि बन कर आ जाए तो उसका वचन सें भी आदर नहीं करना चाहिए. (मनु 2.29) लेकिन अगर ब्राह्मण आ जाए तो उसे तन तक सौंप दो. (शांति 266)
- राजा ब्राह्मण को छोड़ कर सबका स्वामी है. (गौतम धर्मसूत्र 11.1) क्योंकि पूरी धरती के मालिक तो ब्राह्मण ही हैं (मनु 1.100)
- समृद्ध क्षत्रिय भी ब्राह्मण को तंग न करे क्योंकि वह बांह सें पैदा हुआ है जिसका काम मूँह की रक्षा करना है जहां सें ब्राह्मण पैदा हुआ है. (मनु 9.320) (ब्राह्मण पुष्यमित्र के समय क्षत्रियों के विरूद्ध ऐसे नियम बनाए गए)
- घर में ब्राह्मण और क्षत्रिय मेहमान आएं तो पहले ब्राह्मण को फिर क्षत्रिय को भोजन करवाए. एक साथ नहीं. (मनु 9.311) क्योंकि दस साल का ब्राह्मण भी सौ साल के क्षत्रिय सें बड़ा होता है. (मनु 2.135)
- इसी श्रृंखला में ब्राह्मणवाद का एक अन्य गुण्डा फरमाता है:

  वादहिं सूद्र द्विजन्ह संग हम तुम ते कत घाट!
  जानहि ब्रह्मा सो विप्रवर, आँख दिखावहि डांट!!

तुलसी कहता है कि हम ब्राह्मणों के साथ दलित बहस करते हैं कि वे लोग हम सें कम नहीं हैं. वे शूद्र कहते हैं कि जो ब्रह्म को जानता है वही ब्राह्मण है और ऐसा कह कर हम जन्मजात ब्राह्मणों को आँख दिखाते हैं.

इसका इलाज बताते हुए तुलसी कहता है:

पूजिए बामण गुण ज्ञान सील हीना, शूद्र न गुण ज्ञान परवीणा
सापत, ताड़त परूश कहंता! विप्र पूजिए अस गवाहि सन्ता!!

अर्थात महापुरुषों का कहना है कि ब्राह्मण चाहे गुणहीन हो, चरित्रहीन हो, ज्ञानहीन हो, गालियां बकता हो, मारता पीटता हो फिर भी उसकी पूजा करनी चाहिए क्योंकि ऐसी गवाही सन्त देते हैं.

तुलसी जिन महापुरुषों और सन्तों की गवाही दे रहा है वे परशु, वशिष्ठ, पराशर जैसे लोग हैं जिन्होंने किसी की बहन बेटी की आबरू सलामत नहीं रहने दी. चोर का गवाह गिरहकट.

- शूद्रों पर ही तर्क करने की पाबंदी नहीं लगाई गई बल्कि यह भी नियम बनाया गया कि अगर कोई द्विज भी तर्क का सहारा लेकर वेद और स्मृतियों को गलत बताये तो उसे जाति सें बाहर कर दिया जाये. (मनु 2.11)

इस प्रकार के नियम बना कर ब्राह्मणों ने अपनी सर्वोच्चता पक्की कर ली.

1.5 ब्राह्मणधर्म का वास्तविक चेहरा

1. **ब्राह्मणवाद ने भरी अकर्मण्यता** : ब्राह्मणों ने लोगों को सभी कुछ भाग्य के सहारे छोड़ने का मार्ग सिखाया. उन्होंने तैंतीस करोड़ देवताओं के मन्दिर बनाए और यह प्रचार किया कि मुसीबत के समय यह देवता उनकी रक्षा करेंगे. ब्राह्मणों ने अकर्मण्यता का जो बीज बोया है वह आज भी हर हिन्दू के मन में वट वृक्ष की तरह लहरा रहा है. हम आज भी हर छोटे बड़े काम के लिए मन्दिरों में मन्नतें मानने जाते हैं. कहीं कोई मुसीबत आ जाए ब्राह्मण अपनी अध्यक्षता में यज्ञ कराने बैठ जाते हैं. ब्राह्मणों के आदि गुरू मनु ने समुद्र यात्रा को पाप घोषित कर दिया. याज्ञवलक्य ने समुद्र यात्रा को धन और प्राण नाशक बताया. इस तरह इन्होंने सिन्धु साम्राज्य काल सें लेकर मौर्य काल तक फले फूले व्यापार को नष्ट कर दिया.

यह अकर्मण्यता हम पर इस कदर हावी हुई कि जब विदेशियों ने सोमनाथ जैसे मन्दिरों पर हमला किया, तो लोग विरोध करने के बजाए "तमाशा" देखने के लिए मन्दिरों के बाहर जमा हो गए. उन्हें यकीन दिलाया गया था कि अभी उनके 33 करोड़ भगवान आएंगे और आक्रमणकारियों को मार भगाएंगे. लोग तमाशा देखते रहे और हमलावर मन्दिरों की सम्पत्ति के साथ साथ उनकी बहन बेटियों को भी उठा ले गये. उन्हे अपने भाग्य और 33 करोड़ भगवानों पर भरोसा था कि जैसे कृष्ण द्रोपदी को बचाने आया था वैसे ही वह उनकी बहू बेटियों को बचाने भी आएगा. उन्होंने स्वयं मुकाबला तो क्या करना था किसी ने कोई प्रयत्न भी नहीं किया. नतीजा यह हुआ कि शिव मोहनी के पीछे भागता रहा, कृष्ण राधाओं सें रमण करता रहा, विष्णु वृन्दाओं सें बलात्कार करता रहा और विदेशी हमलावार आर्य बहन बेटियों को अपने वेश्यालयों में नचवाते रहे!

ब्राह्मणों ने 4, 8, 16 अथवा हजारों हाथों वाले भगवान घढ़े. उनके हाथों में एटम बम सें भी भयंकर हथियार थमाए लेकिन इतिहास साक्षी है उन में सें कोई भी हम भारतीयों की बहन बेटियों को बचाने नहीं आया. वे लीडरों की तरह आपस में ही लड़ते मरते रहे. जनता को बचाने तो क्या आना था यह देवता तो तब भी नहीं आए जब हमलावरों ने उन हजारों मन्दिरों को मिटटी में मिला दिया जिनके बारे में यह प्रचार किया गया था कि यह उन भगवानों के घर हैं. उन्हें तो सोमरस पीकर कामांध कर देने वाली उर्वशी, रम्भा मेनका जैसी वेश्याओं के नाच देखने सें ही फुर्सत नहीं मिली.

2. **भारत को गुलाम किया** : ब्राह्मणों ने अपनी चौधर को बनाए रखने के लिए समाज को असंख्य जातियों में बांट कर इसे बेजान बना दिया. हर जाति को दूसरी सें ऊंची या नीची बनाया. परिणाम यह हुआ कि हर जाति सिर्फ और सिर्फ अपने काम तक ही सीमित हो गई. जब विदेशी हमलावरों ने हमारे देश पर हमला किया ब्राह्मण अपने मंदिरों में घण्टी बजाता रहा, वैश्य व्यापार में मस्त रहा, शूद्र का तो हथियार छूना ही गुनाह था. लड़ाई लड़ने के लिए क्षत्रिय बचे, सो उनका कागजी शेरपना जग जाहिर हो गया. दान दक्षिणा लेकर लिखे गए उनके बहादुरी के किस्से किसी भी क्षत्रिय को शेर नहीं बना पाए. नतीजा भारत 2000 साल तक लुटेरों का गुलाम रहा.

जब सोमनाथ मथुरा आदि पर हमला हो रहा था तो लोग लड़े नहीं. उन्हें विश्वास था कि भगवान आकर अपने मन्दिर तो बचाएगा ही, साथ में उन्हें भी बचा लेगा. लोग मूर्तियों के आगे लेट कर प्रार्थना करने लगे. गजनवी के सिपाहियों ने उन्हें एक एक करके मार दिया और मन्दिर तोड़ कर सोना लूट ले गये. मुलतान के विदेशी आक्रमणकारी एक हिन्दू मूर्ति को आगे रख कर लड़ते थे. हिन्दू मूर्ति की ओर तीर न चलाते थे और हार जाते थे. (समु. 7.184) अगर भारत में ब्राह्मणवाद नहीं होता तो भारत कभी भी गुलाम नहीं होता.

यह गुलामी आज तक बरकरार रहती अगर सन 1933 में बाबा साहिब अम्बेडकर ने पूर्ण आजादी की माँग न की होती. बाबा साहिब पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजों सें भारत छोड़ने की माँग की थी. वर्ना गांधी जैसे अंग्रेज भक्त तो मात्र डोमिनियन स्टेट की मांग कर रहे थे. डोमिनियन स्टेट वह तन्त्र होता जहां भारत का राजा, राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री तो अंग्रेज होते लेकिन मन्त्री भारतीय होते. बाबा साहिब ने 1933 की गोलमेज सम्मेलन में पहली बार पूर्ण आजादी की मांग की थी. तब कांग्रेसियों को भी अपनी इज्जत बचाने के लिए ऐसी मांग करनी पड़ी. अब वे दावा करते हैं कि उन्होंने तो 1926 में ही ऐसा प्रस्ताव पास कर दिया था.

भारत को आजादी तभी मिली जब सेना में भर्ती हुए दलित जवानों ने बगावत का झण्डा बुलन्द किया. बाबा साहिब के पूर्ण आजादी के आहवान पर ही विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद दलित जवानों में बगावत के स्वर उभरने लगे थे. आज चाहे जाट स्वयं को ऊँची जाति का मानते हैं मगर आजादी सें पहले वे शूद्र ही माने जाते

थे. अतः जब करतार सिंघ सराभा, भगत सिंघ, ऊधम सिंघ, राजगुरु सुखदेव जैसे शूद्र जवानों ने अपना खून बहाया तो उनके साथी दलितों ने फौज में बगावत करने का मनसूबा बनाया. उस बगावत को दबाने के लिए अंग्रेजों के पास एक ही रास्ता था कि वे मात्र अंग्रेजों को भारतीय सेना में भर्ती करें. लेकिन उन हालातों में अंग्रेज भारतीय सेना में भर्ती होना उचित नहीं समझते थे. अतः अंग्रेजों के लिए भारत छोड़ना ही एकमात्र विकल्प रह गया था. गांधीओं और मंगल पांडों को सारी उम्र अपने अंग्रेज आकाओं के पैर धो कर चरणामृत पीने सें ही फुर्सत नहीं थी. उनके भरोसे रहते तो आज तक देश '1911' में ही रह रहा होता जब सभी कांग्रेसी हाथ जोड़कर रोजाना अंग्रेज सम्राट की स्तुति में 'जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता जय हे' का राग अलापते थे.

3. **धोखाधड़ी : धर्म का आधार –** ब्राह्मणधर्म के सभी देवी–देवता, नायक–नायिकाएं, ऋषि–मुनि और अवतार अनाचारी थे. उनकी करतूतों का विवरण अध्याय 5 में दिया गया है. शायद अन्य धर्मो में भी ऐसे अनाचारी लोग हुए होंगे. अगर उन्होंने ऐसे काम किए भी हैं तो लुकछिप कर किए होंगे अथवा ऐसे काम करके उन्होंने पश्चाताप अवश्य हुआ होगा परन्तु यह तो ब्राह्मणिक देवों ऋषियों की दिलेरी ही है कि उन्होंने ऐसे काम सबके सामने किए हैं, धड़ल्ले सें किए हैं. किसी ने भी अपने अनाचार को छुपाया नहीं. ब्राह्मण ग्रन्थों ने सरेआम घोषणा कर दी कि ब्राह्मण कुछ भी करें उसे पाप नहीं लगता.

जब लोगों ने कथावाचकों सें पूछा कि इन लोगों ने ऐसा अनाचार क्यों किया तो वे बोले कि प्राचीन काल में इसी को धर्म कहा जाता था. तुलसी सें पूछा गया तो उसने सच्चाई उगल दी. बोलाः समरथ को नहीं दोष गोसाईं अर्थात ताकतवर को दोषी करार देने की किसी में हिम्मत नहीं होती. इसलिए ब्राह्मणवादी भगवान अनाचारी होते हुए भी अनाचारी नहीं कहे जा सकते!!

शायद संकराचारय पहला ऐसा व्यक्ति था जिसने धर्म में दोगली बातें करना शुरू कीं. उसने एक तरफ तो कहा कि हर आदमी ब्रह्म है. अर्थात हर आदमी भगवान का रूप है मगर साथ ही उसने यह बकवास भी की कि ब्राह्मण और शूद्र में समानता नहीं हैं. बाबा साहिब के अनुसार कोई पागल ही ऐसी दोगली बातें कर सकता है. (8. 289)

4. **चापलूसी : धर्म का आधार** : ऐसा कहना शायद अनुपयुक्त नहीं होगा कि ब्राह्मण इस धरती के सबसें बड़े चापलूस हैं. उन्होंने अपना काम साधने के लिए इस हद तक चापलूसी का सहारा लिया कि उनके भगवान भी मात्र चापलूसी करने पर ही खुश होते हैं. उनके बनाए भजन भगवान की चापलूसी मात्र सें ओत प्रोत हैं. उनके भजनों में कहीं भी नैतिकता की बात नहीं होती.

उनके धर्म के चार स्तम्भों में सें एक स्तम्भ "अर्थ" भी है यानि पैसा कमाना भी है. सो ब्राह्मणों ने धन प्राप्त करने के लिए चापलूसी का पूरा सहारा लिया. दशरथ ने उन्हें अच्छा दान दे दिया तो उस टुच्चे से जमींदार को चक्रवर्ती राजा बना कर पेश कर दिया. आचार्य चतुरसेन ने सही कहा है कि जनता के सुखदुख सें न तो ऐसे राजाओं का और न ही ब्राह्मणों का कोई वास्ता होता था. (वैदिक संस्कृति 49) फिर भी चापलूसी करके ऐसे राजाओं को महान बताया जाता है.

5. **धार्मिक क्रूरता** : दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत में भी अनेकों धर्म उपजे हैं. अन्य देशों की तरह यहां भी धर्मों में आपसी झड़पें भी हुई हैं. एक ही धर्म के दो सम्प्रदायों में खूनी टकराव भी हुए हैं. मुस्लमानों के शिया–सुन्नी, ईसाइयों के कैथेलिक–प्रौस्टैंट, हिन्दुओं के शैव–वैष्णवों में खूनी टकराव जग जाहिर हैं. लेकिन किसी भी धर्म में ऐसा नहीं हुआ कि अपने ही सम्प्रदाय के लोगों को जन्म के आधार पर लताड़ा गया हो. हिन्दू ब्राह्मणों ने दलित हिन्दुओं को कुचला है. ऐसा एकाध पीढ़ी के साथ नहीं हुआ बल्कि सदियों तक हुआ और हो रहा है तथा **जब तक ब्राह्मणवाद जिन्दा है ऐसा होता ही रहेगा. अतः ब्राह्मणवाद के मरने पर ही दलितों की आजादी संभव है.**

भंगी, चमार, यादव, कोरी, धोबी उतने ही हिन्दू हैं जितने ब्राह्मण हैं लेकिन कोई कसूर, कोई कमी न होने पर भी लालू यादव को बाल संवारने की इजाजत नहीं थी, पासवान को मन्दिर में घुसने की मनाही थी.. आज भी भंगी चमार धनवान होते हुए भी गुजरात राजस्थान में अपने दूल्हे बेटे को घोड़ी पर नहीं बैठा सकता. कारण : यह लोग ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार नीच हैं. हिन्दुओं की 85% आबादी को 15% तथाकथित ऊंची जाति के लोग सदियों सें लूटते, दबाते आ रहे हैं.

अपने ही धर्म को मानने वालों के विरुद्ध पुरोहितों का अन्याय दुनिया में और कहीं देखने सुनने को नहीं मिलता है. ब्राह्मणों ने मात्र 8–10 % लोगों को छोड़ कर पूरे भारत को शूद्र बना दिया और उनमें सें भी आधों को अछूत बना दिया जिनका छूना तो क्या देखना भी पाप करार दे दिया गया.

ब्राह्मणों ने जैनों और बौद्धों का जो कत्लेआम किया उसके आगे हिटलर के कारनामे तो पहाड़ के आगे राई के समान हैं. हिटलर ने तो एकाध हजार बेगुनाह लोग कत्ल किये होंगे लेकिन ब्राह्मणों ने तो करोड़ों

भारतियों को मारा है. शैव गुरू तमंद के कहने पर सुन्दरपाण्य ने हजारों जैनों को तेल की घाणी में पिसवा दिया. आज भी इन अत्याचारों के चित्र अर्काट के तिरवूर मंदिर की दीवारों पर मौजूद हैं. (खण्ड 8.49) मंदिर की नींव खोदी जाए तो हो सकता है वहां जैन बच्चों बुढ़ों जवानों स्त्रियों के कंकाल मिलें और अगर दीवारों के गारे की जांच की जाए तो शायद उसमें मानव रक्त के कण मिलें! उनकी प्यास अभी बुझी नहीं है. **यह कत्लेआम आज भी जारी है.**

6. **धर्म को सुपर बाजार बनाया** : दुनिया में किस भी अन्य धर्म के ठेकेदार इतने शातिर अथवा तेज नहीं रहे जैसे ब्राह्मणवादी रहे हैं. ब्राह्मण सदा सें ही इस जोड़ तोड़ में लगे रहे है कि किसी तरह सें उनकी धर्म के नाम वाली दुकानदारी फलती फूलती रहे. इसके लिए उन्होंने वह सब कुछ किया जो एक दुकानदार करता है. जैसे दुकानदार नित्य नए ब्रांड का सामान अपनी दुकान में लाकर सजाता है तथा पुराने सामान को निकाल देता है ऐसा ही कुछ ब्राह्मणवादियों ने अपने धर्म के साथ किया है. ब्राह्मणवादियों ने अपने धर्म को सुपर बाजार का व्यपार बना दिया है. उदाहरणतः

हिन्दू शब्द के प्रयोग को ही लें. ''हिन्दू'' शब्द ब्राह्मणों के किसी भी धर्म ग्रन्थ में नहीं है. किसी वेद किसी पुराण किसी महाकाव्य में हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है परन्तु फिर भी उन्होंने अपने धर्म को यह नाम दिया हुआ है. क्यों ? क्योंकि ऐसा करने में उनका धन्धा फल फूल रहा है.

राजवाड़े के अनुसार हिन्दू नाम किसी भी शास्त्र ग्रन्थ में नहीं है और उसकी परिभाषा भी नहीं है. (पृ.19) वैद्य माता प्रसाद 'सागर' के अनुसार **हिन्दू शब्द वैदिक भाषा का है ही नहीं और न संस्कृत का है.** हिन्दू शब्द फारसी भाषा का है जिसका अर्थ है काफिर, चोर, डाकू, राहजन, गुलाम और अविश्वासी. (गोमाँस 23) डा. योगेश्वर के अनुसार कबीर काल तक हिन्दू नाम को प्रतिश्ठा नहीं मिली थी. भारतीयों को हिन्दू नाम मुसलमानों ने दिया. उन्होंने भारत आकर हर गैर–मुस्लिम को हिन्दू कहना शुरू कर दिया. (धर्मग्रन्थों का पुनर्पाठ 10)

ब्राह्मणों ने विदेशी हमलावरों द्वारा दिया गया यह नाम अपना लिया क्यों कि जहां पहले उनके धर्म वालों की संख्या गिनी चुनी थी ऐसे में पूरा भारतीय समाज उनके चंगुल में आ गया क्यों कि विदेशी लोग भारतीयों को हिन्दू नाम सें ही बुलाते थे. इस तरह इन विदेशियों की कृपा सें ब्राह्मणों ने पूरे भारत को अपने कब्जे में कर लिया. ब्राह्मणों के सिवाय दुनिया में और कहीं भी ऐसा नहीं हुआ कि विजेताओं द्वारा दिया गया अपमानजनक नाम उन्होंने आदर के साथ अपनाया हो. (पुनर्पाठ 11)

ऐसे ही **एक अन्य नाम "लाला" है**. आज भारत भर में बनिये अथवा किसी भी बड़े दुकानदार को लाला कहने पर वह गौरावित महसूस करता है. लेकिन जैसे हमें हिन्दू नाम विदेशी हमलावरों द्वारा दिया गया वैसे ही लाला नाम उन्होंने उन व्यापारियों को दिया जिन्हें उन्होंने जीत कर अपना गुलाम बना लिया था. "लाला" का अर्थ है गुलाम. (ई टी वी पर प्रवचन 26.05.2006 8 बजे शाम)

ब्राह्मणों का एक ही उददेश्य था और है कि किसी भी तरह सें उन्हें सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहे. अतः उन्होंने धर्म की आड़ में ऐसे नियम बनाए जिससें उनके इस उददेश्य की पूर्ति हो सके. उन्होंने 33 करोड़ देवी देवताओं की रचना कर डाली. हर गली चौराहे पर उन के मंदिर बना डाले. लोग उन पर चढ़ावा चढ़ाते हैं और वह उस चढ़ावे पर ऐश करते हैं. ब्राह्मणों ने कभी स्कूल खोलने का उपदेश नहीं दिया और न कभी हस्पताल खोलने को कहा.

गौतम बुद्ध ने भिक्षु संघ की संरचना की थी ताकि लोग घर परिवार के मोह सें मुक्त होकर समाज सुधार में अपना पूरा समय लगा सकें. बुद्ध के भिक्षु–संघ के समान इन ब्राह्मवादियों ने साधुओं की रचना कर डाली. आज भारत में करोड़ों भगवा भेष धारी साधुओं की फौज खड़ी है जो समाज की गाढ़ी खून पसीने की कमाई उड़ाने में लगे हुए हैं. इन साधुओं ने भारत में भ्रष्टाचार, अनैतिकता का जाल फैला रखा है.

सरिता के अनुसार ब्राह्मणवाद के कारण भारत इतना भ्रष्ट व बेईमान लोगों का देश बना हुआ है. बड़े बड़े पूंजिपति जनता को लूटते हैं. फिर धार्मिक कथाएं करवा कर, मंदिर बनवा कर ब्राह्मणों को दान देकर पुण्यात्मा बने रहते है. ब्राह्मण ग्रन्थ इस बात का प्रमाण हैं कि सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति का दान लेकर ब्राह्मण कुछ भी कर देते थे. आज भी कुछ नहीं बदला है. आज भी उनके ग्रन्थ (देवी भागवत) इस बात का दम भरते हैं कि किसी को स्वर्ग या नरक में भेजना ब्राह्मणों के हाथ है. किसी ने कितने भी पाप किए हों, बस ब्राह्मण को ''कन्या'' भेंट करो स्वर्ग में सीट पक्की हो जाती है. फिर सारी उम्र वहां अप्सराओं (वेश्याओं) के साथ ऐश करो. ब्राह्मण भेंट की गई कन्या सें ऐश करते हैं. धर्मराज का यह उपदेश सावित्री को दिया गया है जो ब्राह्मण को अपनी कन्या देता है वह चन्द्रलोक जाता है. अगर वही कन्या सजा संवर कर देता है तो 1000 जन्म तो उसे साध्वी पत्नि मिलती है.

कन्या देने और लेने वाले दोनों स्वर्ग जाते हैं. दुःख झोलती है तो सिर्फ कन्या.

7. **अनैतिकता तथा भ्रष्टाचार की जड़** : अनैतिकता और ब्राह्मणवाद एक ही वस्तु के दो नाम हैं. ब्राह्मणधर्म आरम्भ में अनैतिक है, मध्य में अनैतिक है और अंत में अनैतिक है. ब्राह्मणधर्म की शुरुआत अनैतिक

कर्मी ब्रह्मा सें हुई है. उसका पालक विष्णु अनैतिकता के कीचड़ में गले तक डूबा हुआ है और हर मंदिर में शिव पार्वती के गुप्त अंगों की पूजा अनैतिकता का खुला प्रदर्शन है. ब्राह्मणों ने गली मौहल्ले में मन्दिर खोले. वहां सें यह प्रचार दिन रात होता रहा कि ब्राह्मणों को दान दो और पापों की सजा सें मुक्ति पाओ. ब्राह्मणों ने यह भ्रम फैला रखा है कि पाप की कमाई में सें भगवान को हिस्सा दे दिया जाए तो पाप मिट जाते हैं. इसलिए हर रिश्वतखोर हर टैक्स चोर ''भगवान'' के हिस्से की कमाई मन्दिर में चढ़ा आता है. इस चढ़ावे पर ब्राह्मण पुजारी ऐश करते हैं कारों में घूमते हैं. उधर जनता का खून चूस कर चढ़ावा चढ़ाने वाले भी बेखौफ घूमते हैं कि भगवान उनके साथ है फिर किसी सें क्या डरना. आज हम उनके पाप छुड़ाने के रास्तों की वजह सें भ्रष्टाचार की दलदल में फंसे हुए हैं. देवी देवताओं को घढ़ने में ब्राह्मणों की व्यापारिक बुद्धि काम करती है.

कृष्ण ने शिक्षा दी है : (समु 9.265)

- **जो व्यक्ति सफलता चाहता है वह बड़ी बड़ी कसमें खाकर, प्रेम व दोस्ती का दावा करके, मीठा बोलकर, आँसू बहाने का दिखवा करके वक्त आने पर सब भूल जाए.**
- **शक्ति अधिकार सें भी बढ़ कर है. शक्ति सें ही अधिकार मिलता है सिर्फ अधिकार सें कुछ नहीं मिलता.**
- **जैसे बड़ी मछली छोटी को मारती है वैसे अगर तुम दूसरों की हत्या नहीं कर सकते तो सफल होने की आशा छोड़ दो.** इसी शिक्षा पर अमल करते हुए पाँडवों ने तमाम कौरवों की हत्या कर डाली.

8. **तांत्रिक वाद का गठन** : बाबा साहिब के अनुसार तांत्रिक धर्म पौराणिक धर्म का विस्तार है. (खण्ड 8.184) राधाकृष्णन जैसे ब्राह्मणिक लेखक तंत्रवाद को बिगड़े हुए बौद्ध धर्म का रूप बताने की कुचेष्टा करते हैं जबकि तथ्य और सच्चाई यही है कि तंत्रवाद के झाड़ फूंक, बलि, दारू, मॉंस के लिए बौद्ध धर्म में कोई जगह ही नहीं है. ऐसा काम सिर्फ और सिर्फ ब्राह्मणवाद में ही होता है जिसके भगवान एक बार में 15–20 बैल खा जाते हैं और घड़े के घड़े सोम पी जाते हैं और जिनके उपनिषद (गूढ़ ज्ञान) यह शिक्षा देते हैं कि कौन से मन्त्र बोल कर स्त्री समागम करने सें स्त्री को गर्भवती किये बिना काम का आनन्द लिया जा सकता है. मान्यवर मुद्रराक्षस का भी मानना है कि झाड़फूंक, जादू आदि ब्राह्मण संस्कृति में ही विकसित हुए. (पुनर्पाठ 13)

आचार्य चतुरसेन के अनुसार तांत्रिकों अथवा वाम मार्गियों की मुख्य निशानियां हैं : (वैदिक संस्कृति 48)

5. जटा रखना
6. भस्म लगाना
7. नंगा रहना या चमड़ा लपेटना
8. नग्न स्त्री अथवा लिंग की पूजा करना
9. दारू मांस का भरपूर सेवन करना.

राधाकृष्णन जैसे ब्राह्मणिक लेखक जो यह बकवास करते हैं कि तंत्रवाद बौद्ध धर्म सें निकला है उनसें यह पूछा जा सकता है कि उपरोक्त में सें कौन सी निशानी बौद्ध भिक्षुओं में बीते समय में उनमें पाई जातीं थीं अथवा अब कब पाई जाती है. इसके विपरीत तथ्य यह है कि उपरोक्त सभी पाखण्ड आदि काल सें लेकर आज तक ब्राह्मण धर्मियों की निशानियां हैं. आचार्य चतुरसेन ने भी कहा है कि गुप्तकाल (चौथी पांचवीं सदी) में राधा को परकीया (वेश्या) के रूप में खुलमखुला आगे लाकर उसके आधार पर वामतत्व ज्ञान स्थापित किया गया. (वैदिक संस्कृति 50)

तंत्र मंत्र के नाम पर उन्होंने पंच मकार के सिद्धांत की स्थापना की. पंच मकार यानि वे पाँच कार्य जो "म" सें शुरू होते हैं. यह पाँच काम हैं :1. मद्य (शराब पीना), 2. मीन (मछली खाना) 3. मैथुन (पराई स्त्रियों सें यौन सम्बंध बनाना) 4. मांस (देवों को आदमी व पशु की बलि देकर उसका मांस खाना) 5. मुद्रा (गले हाथों पैरों में गहने डालना).

मैथुन, मद्य और मांस को धर्म का अंश बनाये जाने पर बाबा साहिब ने सटीक सवाल किया है "हिन्दू धर्म में नैतिकता का क्या स्थान है." और "ब्राह्मणों ने हिन्दू धर्म को इस प्रकार नंगा क्यों किया? उसे नैतिकता विहीन क्यों किया?" आज हिन्दूमत इससें अधिक कुछ नहीं है कि अनगिनत देवी देवता पूजे जाते हैं, तीर्थ यात्राएं की जाती हैं और ब्राह्मणों को दान दिया जाता है. (8.188)

9. **भारत का बंटवारा** : भारत को दो भागों में बांटने का काम भी ब्राह्मणवाद ने ही किया. अगर ब्राह्मण शूद्रों अछूतों पर अत्याचार न करते तो वे लाखों की संख्या में मुस्लमान न बनते और इस तरह मुस्लमानों की संख्या इतनी अधिक न होती कि वे पाकिस्तान की मांग करते. पाकिस्तान का बीज ब्राह्मणवाद ने ही बोया. दलितों के मन में जो कुंठा पनप रही थी उसी के कारण उन्होंने न केवल ब्राह्मणवाद छोड़ा बल्कि ब्राह्मणवाद की धरती सें ही अलग रहने की मांग कर डाली. कश्मीर में भी बहुसंख्या में होने के बावजूद उन्हें कश्मीरी पंडितों की चाकरी करनी पड़ती है.

ब्राह्मणवाद ने भारत का सबसें बड़ा नुक्सान यह किया कि इसने हम भारतियों में देश प्रेम की भावना को पनपने ही नहीं दिया. हमें कभी इस बात का अंतर ही नहीं पड़ा कि राजा विदेशी है अथवा भारतीय है. जो भी राजा आया उसने एकाध ब्राह्मण को अपना मन्त्री बना लिया, उसे प्रचुर मात्रा में दक्षिणा दे दी. उसने बदले में स्तुति में एकाध ग्रन्थ की रचना कर डाली. शेष जनता भी ब्राह्मण राजा की बजाए विदेशी राजा सें ज्यादा सुखी रहती थी.

मौर्य काल में पूरा भारत बौद्ध धर्मी हो गया था. भारत पर शूद्रों का राज था. ब्राह्मणवाद को कोई पूछता ही न था. नतीजा यह रहा कि अफगानिस्तान सें लेकर बर्मा तक कश्मीर सें लेकर कन्याकुमारी तक एक भारत एक राष्ट्र था. किसी विदेशी हमलावर की हिम्मत ही न हुई कि भारत की ओर बुरी नजर सें भी देख सके. लेकिन जैसे ही पुश्यमित्र सुंग नामक हत्यारे ब्राह्मण ने वृहदृथ की हत्या करके सत्ता हथियाई फिर सें देश खंडित होना शुरू हो गया. जब भी भारत पर ब्राह्मणों का दबदबा रहा भारत विदेशियों के चंगुल में फंसता रहा.

- 327 ई पूर्व में जब सिकन्दर ने भारत पर हमला किया तो आर्य राजा आंभी ने न केवल आत्मसमर्पण किया बल्कि अपनी सेना भी सिकन्दर के साथ कर दी ताकि वह भारत के अन्य राजाओं को हरा सके.
- मध्य ऐशिया सें प्रर्थियनों ने शकों को मार भगाया. शक लुटे पिटे भारत आए और सौराष्ट्र गुजरात पर अपना राज्य स्थापित कर लिया. वीर मराठाओं की भूमि पर हारे हुए लोगों का राज हो गया.
- चीन में सें हुणों ने कुशाणों को मार भगाया. उन्होंने भी भारत पर कश्मीर सें बिहार तक 100 साल तक राज किया. उनके राजा कनिष्क के नाम पर हम आज भी अपने जहाजों का नाम रखते हैं.
- हुण अकाल के मारे भारत आए और तथाकथित स्वर्ण काल कहे जाने वाले गुप्त साम्राज्य के टुकड़े टुकड़े कर दिये क्यों कि उस समय ब्राह्मणवाद का वर्चस्व था. मोक्ष प्राप्त करने के लिए नित्य घोड़ों को अश्वमेध यज्ञों में मारा जा रहा था.
- 712 सन् में 17 वर्शीय मुहम्मद बिन कासिम ने हमला किया और ब्राह्मणवाद की शिक्षाओं के अनुरूप भारतीयों ने अधिक ताकतवर राजा का आगे बढ़ कर स्वागत कर दिया. उसने सालों तक सिन्ध सें लेकर कन्नौज तक के इलाके पर हकूमत की.
- 1018 में महमूद लूट पाट करता हुआ मथुरा वृंदावन जा पहुंचा तो वहां के वासी घर छोड़कर भाग खड़े हुए. उसने बिना रोकटोक के खूब मन्दिर लूटे. गीता में यदा यदा हि का वचन थोथा साबित हुआ.
- 1197 में मुहम्मद बिन कासिम ने जब हमला किया तो कुल 18 घुड़सवार उसके साथ थे. उसने सिन्ध सें लेकर बंगाल तक पूरे भारत को रौंद डाला. उसे पूरे भारत में एक भी ''क्षत्रिय'' नहीं मिला जो उसके सामने आने की हिम्मत जुटा पाया हो. यह तो दलितों पर अत्याचार करने मात्र में ही अपनी बहादुरी समझते हैं. कागजी शेर!!
- 1398 में तैमूर लंग ने जब भारत पर हमला किया तो उसके पास कुछ मुट्ठी भर सैनिक थे. जितने क्षत्रिय उसके डर के मारे घर सें भागे उतने अगर बिना लड़े उसकी सेना पर गिर ही पड़ते तो उसकी सेना की चटनी बन जाती!
- अशोक के उतराधिकारी शालीशूक मौर्य कट्टर जैन थे. उन्होंने ब्राह्मणवाद के अन्यायपूर्ण कार्यों के विरूद्ध नियम बनाए. जब युनानी राजा देमित्रियस ने भारत पर आक्रमण किया तो ब्राह्मणों ने उसे धर्ममित्र की उपाधि देकर उसका स्वागत किया. अपनी चौधर के लिए देशद्रोह किया.
- आठवीं सदी में इबिने कासिम ने जब भारत पर हमला किया तो भारत के प्रवेशद्वार सिन्ध का राजा दाहिर था. ब्राह्मणों ने धन (उनके धर्म के चार सतम्भों में सें एक 'अर्थ') के लालच में गद्दारी की. दाहिर का झण्डा कटवा दिया. दाहिर ने समझा देवता नाराज हो गए हैं वह युद्ध के मैदान सें भाग गया. तब सें शुरू हुई गुलामी 1947 में देश के बंटवारे के बाद ही समाप्त हो पाई.

10. **मित्रघात व देशद्रोह ब्राह्मणवाद की देन** : कृष्ण ने गीता में अपने गुण बताते हुए कहा कि धोखेबाज का कपट मैं ही हूँ. सच पूछा जाए तो ब्राह्मणवाद की यही देन है. (समु 9–265) ब्राह्मणवाद के धार्मिक ग्रन्थ उन लोगों की स्तुति सें भरे पड़े हैं जिन्होंने ब्राह्मणों को सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति का दान दिया. रन्तिदेव ने चाहे 2000 गायें रोज काटीं परन्तु उसने ब्राह्मणों को भोज करवाया इसलिए उसे महादानी कहा गया. राम ने दलितों और बनियों को लूट कर ब्राह्मणों को धन दिया वह भगवान बना दिया गया. कृष्ण ने किसी की बहन बेटी नहीं छोड़ी परन्तु उसने ब्राह्मण सुदामा को धन दे दिया तो वह भी भगवान बना दिया गया. अकबर ने राजपूतों की बेटियों सें अपने हरम भर लिए परन्तु उसने मन्दिर में सोने का छत्र चढ़ा दिया तो उसे भी "अकबर महान" बना दिया गया.

1. झांसी की रानी लक्ष्मी ने अंग्रेजों का साथ दिया. जब विद्राहियों ने अंग्रेजों को झांसी के पास हरा कर उनके हथियार छीन लिए तो रानी लक्ष्मी ने अंग्रेजों को अपने किले में शरण दी, उन्हें हथियार और खाना दिया. रानी झांसी ने अंग्रेज गर्वनर जनरल के दूत सें विनति की 'मेरे पति ने **हमेशा** अंग्रेजों का साथ दिया है. इसलिए विनति है कि मेरे बेटे को झांसी का उतराधिकारी स्वीकार किया जाए.' (नेहरू की पुस्तक – भारत की खोज पर आधारित धारावाहिक 10.02.2002). अगर रानी झांसी भारत के विरूद्ध गद्दारी करके अंग्रेजों का साथ न देती तो अंग्रेज कभी के भारत सें भाग गए होते! राणी झांसी की गद्दारी की वजह सें महान वीरांगना झलकारी बाई को अपनी तथा अपने दूधमूंहे बेटे की कुर्बानी देनी पड़ी ताकि उनकी रानी बच सके. लक्ष्मी ने ब्राह्मणवाद को आश्रय दिया इसलिये ब्राह्मणवादी इतिहासकारों ने उसे महान देशभक्त घोषित कर दिया.

2. दयानंद ने ब्राह्मणवाद का विरोध किया तो उसके ब्राह्मण रसोइये घोड़ मिश्र ने उसके साथ विश्वासघात किया. उसने नन्ही जान नामक वेश्या सें मिलकर दयानंद को जहर देकर मार डाला.

3. राणा सांगा के गुणगान किए जाते हैं लेकिन उसी ने 1525 ईस्वी में बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया था. इस महान ब्राह्मणवादी देश भक्त के कारण भारत 331 साल मुगलों का गुलाम रहा.

4. वसुदेव नामक ब्राह्मण ने धनवानों के यहां डाके डाले. कहा जाता है कि उसने आजादी की लड़ाई के लिए धन एकत्र करने के लिए ऐसा किया. आजादी की लड़ाई तो सरदार भक्त सिंह ने भी लड़ी थी. उन्होंने तो कभी डाका नहीं डाला. एक ब्राह्मण को ही देशभक्ति के लिए डाका क्यों डालना पड़ा. इसी ब्राह्मण देशभक्त ने द्विज लोगों सें अंग्रेजों का विरोध करने को कहा तो कोई अपनी स्वामी भक्ति छोड़ने को तैयार नहीं हुआ. अंततः वह दलितों के पास गया और वे लोग देश के लिए मरने को तैयार हो गये. (धरती है बलिदान की पृ. 22)

5. मोहन दास कर्मचन्द गांधी ब्राह्मणवादी देश भक्ति (गद्दारी) का नवीनतम उदाहरण मोहन दास कर्मचन्द गांधी है. जिसे कांग्रेसी बापू कहते हैं. असल में गांधी सचमुच आज के लीडरों का बाप ही है. उसी ने राजनीति में धोखाधड़ी की शुरूआत की. कथनी और करनी में अंतर करने की बात सिखाई. उसका सबसें "महान कार्य" था एक ब्राह्मण को भारत का प्रधान मन्त्री बनवाना. बदले में उस ब्राह्मण जवाहर लाल ने गांधी को भारत का बापू घोषित कर दिया. भारत की आजादी गांधी के नाम कर दी. गांधी ने जो भूख हड़ताल और अहिंसा का दिखावा किया उससें कोई मकान मालिक किसी किरायेदार सें अपना मकान भी खाली नहीं करवा सकता. विदेशियों सें देश खाली करवाना तो बहुत दूर की बात है. जिस समय सरदार भगत सिंह, करतार सिंह, उधम सिंह सरीखे देशभक्त भारत को आजाद कराने के लिए अपना खून बहा रहे थे, गांधी अँग्रेजों के लिए भारतीय नौजवानों को सेना में भर्ती करके इंग्लैंड भेज रहा था. **चौरा चोरी में तो दो चार अँग्रेजों के मारे जाने पर तो गांधी को हिंसा नजर आई और उसने अँग्रेजों के विरूद्ध असहयोग करने का ढोंगात्मक आंदोलन वापिस ले लिया लेकिन जब उसने भारत के हजारों सपूतों को अँग्रेजी सेना में भर्ती करके विदेशों में मरवा दिया तब उसे कहीं हिंसा नजर नहीं आई. उसकी आत्मा एक बार भी भारतीय बेटों के मरने पर नहीं कांपी.**

6. मरहठा शिवा : वह शूद्र कुल सें था. डाकुओं की तरह लड़ाका था. जांबाज था. छुप कर धोखे सें वार करने में माहिर था. औरंगजेब के दरबार में सिपहेसलार था. उसने महाराष्ट्र के कुछ इलाके पर कब्जा कर लिया. राजगद्दी पर बैठना चाहता था लेकिन वहां के ब्राह्मणों ने उसे शूद्र बता कर उसका राजतिलक करने सें इंकार कर दिया. तब उसने बनारस के एक लालची ब्राह्मण गंगू को बुलाया. उसें मूंह मांगा सोना दिया. धन देकर ब्राह्मण सें कुछ भी करवाया जा सकता है. अतः उस गंगू ब्राह्मण ने उसकी "शुद्धि" करके उसे क्षत्रिय घोषित किया लेकिन पैर के अंगूठे सें उसके माथे पर तिलक किया. शिवा ने ब्राह्मण को सोने का छत्र भेंट किया. उसने शिवा का गुणगान कर दिया. तभी सें वह छत्रपति कहलाने लग गया.

अपनी सारी उम्र में उसने कोई जन कल्याण का काम नहीं किया. कोई सड़क, कोई धर्मशाला, कोई स्कूल उसने नहीं बनवाया. उसने तो बस लूटपाट की यहां तक कि नाथद्वारा का मन्दिर भी उसकी लूट सें बच नहीं पाया लेकिन तब भी उसे छत्रपति कहा जाता है. उसका एक ही कारण है कि उसने ब्राह्मणों को लूट के माल में सें खूब दान दिया था. इतिहास लिखने वाले ब्राह्मण ही होते थे. अतः उसे महान देशभक्त करार दे दिया गया वर्ना इतिहास गवाह है कि वह औरंगजेब के दरबार में मामूली सा सिपहेसालार था.

शेरशाह सूरी ने पेशावर सें लेकर कलकता तक सड़क बनवाई. पूरे भारत को एकसूत्र कर दिया. परन्तु किसी मन्दिर में छत्र नहीं चढ़ाया. अतः उसका कोई नाम नहीं लेता. अलाउदीन खिलजी ने सस्ते दामों पर अनाज बांटने के डिपू बनवाए. इन डिपुओं पर किसी सेठ अथवा किसी सरकारी कर्मचारी को अनाज नहीं दिया जाता था. उसने तोल माप के कण्डे बाट निर्धारित किये. उसने तन्त्र मन्त्र करने वालों को कूंए में फिकवा कर ऊपर सें मिट्टी डलवा दी. हर वस्तु का मूल्य निर्धारित किया लेकिन आज उसे एक जालिम राजा की तरह पेश किया जाता है क्योंकि उसने किसी मन्दिर में दान नहीं दिया. लेकिन शिवा ने क्योंकि ब्राह्मण को सोने का छत्र दे दिया तो इतिहास में वह महानता पा गया.

7. सन् 1965 में पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड के स्कूलों में जो किताबें पढ़ाई जाती थीं उसमें एक सच्ची कथा होती थी कि 712 ई. में सिन्ध पर हिन्दू राजा दाहिर का राज्य होता था. इबने कासिम नामक मुस्लिम हमलावर ने उसके राज्य पर हमला किया. दाहिर के सैनिक बहादुरी सें लड़ रहे थे. तभी एक ब्राह्मण उस हमलावर राजा के पास आया और बोला कि अगर राजा उसे धन दे तो वह अपने राजा के हारने का रास्ता बता देगा. धन के लिए ब्राह्मण कुछ भी कर सकते हैं. हमलावर राजा ने उसे धन देने का वायदा किया. उस ब्राह्मण ने बताया कि राजा दाहिर अन्धविश्वासी है. अगर कोई मन्दिर के ऊपर लगा झण्डा गिरा देगा तो राजा हथियार डाल देगा. हमलावर ने ऐसा ही किया. दाहिर मैदान छोड़ कर भाग गया. ब्राह्मण अपना इनाम मांगने गया. हमलावर ने उसे गाय की खाल में सिलवा दिया. इनका यही सही इनाम है.

8. सिखों के दस गुरू हुए हैं. उनके नौवें गुरू थे गुरू तेग बहादुर. एक दिन कश्मीर के ब्राह्मण उनके पास आए और बोले कि मुगल बादशाह औरंगजेब उन्हें तंग कर रहा है तथा इस्लाम कबूल करने के लिए दबाव डाल रहा है. उसे रोकने के लिए किसी के बलिदान की आवश्यकता है. गुरू तेग बहादुर ने ब्राह्मणों को बचाने के लिए अपने जीवन का बलिदान दे दिया. उनके सपुत्र थे गुरू गोबिंद सिंह. उनके चार बेटे थे. दो बेटे मुगलों के साथ युद्ध में शहीद हो गए. दो बेटों को उनकी माता ने अपने पुरोहित गंगू नामक ब्राह्मण के साथ रवाना कर दिया ताकि वह उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाए. उस ब्राह्मण ने अपने पूर्वजों की परिपाटी अपनाते हुए, धन की खातिर, उन मासूम बच्चों को सरहिंद के नवाब के हवाले कर दिया. नवाब ने उन मासूमों को जिन्दा दीवार में चिनवा दिया. गुरू तेग बहादुर का सारा परिवार जिस ब्राह्मण वर्ण को बचाने में शहीद हो गया और उसी वर्ण ने ऐसी गद्दारी की जिसकी दुनिया में कहीं और मिसाल नहीं मिलती.

9. रविन्द्र नाथ टैगोर : एक और ब्राह्मणवादी कवि. वह गांधी की तरह अंग्रेजों का जन्मजात चमचा था. कभी भी उसे भारत की गुलामी नहीं अखरी. उसने सैंकड़ों कविताएं लिखीं मगर कभी भी भारत को आजाद करने के बारे में कविता नहीं लिखी. इंगलैंड का सम्राट जार्ज पंजम 1911 में भारत आया. उसकी स्तुति/चरण वंदना में टैगोर ने एक कविता लिखी जिसे 27 दिसम्बर 1911 को कांग्रेसियों ने अपने कलकत्ता अधिवेशन में गाया. अपनी स्तुति सुनकर सम्राट खुश हो गया. और एक साल के बाद ही टैगोर को साहित्य में नोबल पुरस्कार सें नवाजा गया तथा उसके एक साल बाद 1915 में टैगोर को "knight" अर्थात " अंग्रेजों का सिपहेसालार" बना दिया गया.

रविन्द्रनाथ टैगोर ने जो कविता लिखी वह इस प्रकार सें हैः

जन, गण, मन अधिनायक, जय, हे भारत भाग्य विधाता!
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमांचल, यमुना, गंगा उच्छल जलधि तरंग!
तव शुभ नामें जागे, तव शुभ आशीष मांगें
गायें तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक, जय हे, भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय जय जय हे.

उपरोक्त कविता में प्रयोग किये गए शब्दों का सरल भाषा में अर्थ इस प्रकार सें हैं :

जन = जनता, गण = कबीले, रियासतें अर्थात छोटे राज्य, मन = दिलो दिमाग, अधिनायक = बेरोक टोक के अधिकारी, उत्कल = वर्तमान उड़ीसा, बंग = बंगाल, हिमांचल = हिमालय के साथ लगते प्रदेश, उच्छल जलधि तरंग = पानी की लहरें, तव शुभ नामें = तेरा शुभ नाम

अतः उपरोक्त गीत का अर्थ हुआ हम भारतियों के तन मन धन के अधिनायक तेरी जय हो. तू भारत की किस्मत का मालिक है, भाग्य विधाता है. भारत के सभी प्रांत यानि पश्चिम में सिन्ध सें लेकर पूर्व में बंगाल तक, उत्तर में हिमालय सें लेकर दक्षिण के द्रविड़ तक तेरी जय जय कार कर रहे हैं. भारत के सारे पर्वत, विन्ध्यांचल सें लेकर हिमालय तक तेरी जय जय कार कर रहे हैं. भारत की समस्त नदियों, गंगा यमुना आदि का पानी हिलारें खा खा कर तेरे गुण गा रहा है. हमारा मुख तेरा ही शुभ-नाम रटे, तेरा ही शुभ आर्शीवाद मांगे और तेरी ही जयगाथा गाये. हे, जन और गण का शुभ करने वाले तेरी जय हो. हे, भारत के भाग्य विधाता, तेरी जय हो, जय हो, जय हो!!

इस गान के संदर्भ में कुछेक तथ्य ध्यान देने योग्य हैं :

1. यह गान टैगोर ने दिसम्बर 1911 में लिखा. और तब लिखा जब उसके एक दोस्त ने उससें कहा कि अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम भारत भ्रमण पर आया हुआ है. उसकी स्तुति में कांग्रेसियों ने एक गीत गाना है. अतः वह उनके लिए एक स्तुतिगान लिख दे.
2. कहते हैं कि टैगोर ने अपने एक अन्य दोस्त को पत्र लिखा कि अपने दोस्त सें यह सुन कर उसे आश्चर्य (amazement) हुआ कि उसे सम्राट की स्तुति में गीत लिखने के लिए कहा गया है. तब उसने

उपरोक्त स्तुतिगान उसे लिख कर दे दिया और कहा कि वह गान कांग्रेसियों को दे दे ताकि वे उसे सम्राट की शान में किए जा रहे अधिवेशन में गा सकें. आजकल यह भी कहा जाने लगा है कि टैगोर ने अपने "दोस्त" को यह भी कहा कि उसने यह गान "भगवान" के लिए लिखा है. अतः टैगोर को यह पता था कि उसने जो गीत "भगवान" के लिए लिखा वह **उस भगवान** की शान में गाया जाएगा जिसे लोग जार्ज पंजम कहते हैं.

3. 22 जून 1911 को सम्राट की ताजपोशी हुई थी तथा वह अपनी महारानी के साथ अपनी सबसें बड़ी बस्ती (Colony) भारत में आया था. 11 दिसम्बर 1911 को सम्राट का दिल्ली आगमन हुआ. कांग्रेसियों ने जार्ज पंजम के चित्र को हर गांव में घुमाया तथा हर जगह उसकी पूजा अर्चना करवाई.

4. 27 दिसम्बर 1911 को कांग्रेसियों ने कलकता में एक विशेष अधिवेशन का आयोजन किया जिसका मात्र और मात्र एक ही उद्देश्य था कि भारत आगमन पर अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम की नई नई हुई ताजपोशी का गुणगान किया जाए. यह गीत भी **सर्वप्रथम** उस कलकता अधिवेशन में गाया गया जिस की प्रधानगी सम्राट ने की थी.

5. उपरोक्त बातों सें एक बात तो तय है कि टैगोर को पता था कि उसके द्वारा लिखा गया स्तुति गान सबसें पहले सम्राट की शान में ही गाये जाना वाला था. टैगोर ने जानते बूझते हुए अपने तथाकथित "भगवान" की शान में लिखा स्तुति गान कांग्रेसियों को उनके "भगवान" की स्तुति में गाने को दे दिया. ऐसा कहीं कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां भगवान के लिए लिखा गया स्तुति गान सबसें पहले आदमी के लिए गा दिया गया हो. और भारत भूमि में भगवान के लिए भजन लिखे जाते हैं वंदनाऐं लिखी जाती हैं जिसमें उसे ब्राह्मण्ड का विधाता बताया जाता है. हमने आज तक एक भी ऐसा भजन नहीं सुना जिसमें भगवान का कार्यक्षेत्र मात्र भारत तक ही सीमित कर दिया गया हो!! उसे मात्र सिन्ध सें लेकर बंगाल तक का भाग्य विधाता बना दिया गया हो!!

6. सन् 1911 के अंत में टैगोर ने यह स्तुति गान लिखा. एक साल के बाद ही उसे (1913 में) नोबल पुरस्कार दे दिया गया. तथा उसके दूसरे साल ही उसे **"knight"** अर्थात "अंग्रेजों का सिपहेसालार" बना दिया गया. टैगोर ने सभी इनाम खुशी खुशी स्वीकार किए. 1919 के जलियांवाला बाग के हत्याकांड के विरोध में टैगोर ने सिपेहसलारी तो वापिस लौटा दी मगर अपने अंग्रेज आकाओं के विरुद्ध कभी एक शब्द भी नहीं लिखा.

7. एक तथ्य चौंकाने वाला है कि टैगोर को जिस कविता संग्रह (गीतांजलि) के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया, वह गीतांजलि किसी स्कूल किसी कॉलेज के सलेबस में शामिल नहीं की गई है. उसने गीतांजलि में ऐसा क्या लिखा कि उसे भारतीयों सें छिपाया जा रहा है.

8. यह भी एक तथ्य है कि आज तक कभी किसी मजदूर/कम्युनिस्ट लेखक को नोबल पुरस्कार नहीं दिया गया है जो गरीबों मजदूरों के हित के लिए लिखते हैं

9. भारत के किसी भी प्राचीन या नवीन ग्रन्थ में भगवान को या किसी भी देवता को "भारत भाग्य विधाता" कह कर सम्बोधन नहीं किया गया है. अतः सन् 1911 में टैगोर का भारत भाग्य विधाता "अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम" के सिवाय कौन सा देवता या कौन सा भगवान था, इसका खुलासा कोई नहीं कर पा रहा है.

10. अंग्रेजों ने "वंदे मातृम" गाने पर पाबंदी लगाई लेकिन जन, गण, मन पर कभी पाबंदी नहीं लगाई. इसका कारण यह है कि कांग्रेसियों ने "जन गण मन" का गीत अकेले ही नहीं गाया बल्कि वे अपने आका जार्ज पंजम की फोटो गांव गांव लेकर घूमे तथा हर गांव गली मौहल्ले में उस फोटों के आगे लोगों को नतमस्तक करके यह गीत गवाया. (वे दिन वे लोग)

11. ऐसा कहीं भी सुनने अथवा पढ़ने में नहीं आया कि भारत के क्रांतिकारियों ने कभी भी जन, गण, मन गाया हो!!

12. तत्कालीन कांग्रेसियों की अंग्रेज-स्वामीभक्ति की एक अन्य उदाहरण भारत का राष्ट्रमण्डल (कॉमनवैल्थ) संघ में शामिल होना भी है. इस संघ में केवल वही देश शामिल हो सकते हैं जो कभी इंगलैंड के गुलाम रहे हैं. इस संघ का प्रमुख हमेशा ही इंगलैंड का राजा होता है. भारत कितना भी महान बन लें लेकिन वह कभी भी इस संघ का प्रमुख नहीं बन सकता. फिर भी अपनी गुलामी की यादों को तरोताजा रखने के लिए नेहरु ने भारत को इस संघ का सदस्य बनाया जो आज तक जारी है.

13. संविधान सभा में काम करने के लिहाज सें बाबा साहिब अम्बेडकर का सर्वोच्च स्थान है. उन्होंने भारतीय संविधान बनाने और राष्ट्रीय ध्वज अपनाने में सबसें अधिक योगदान दिया. लेकिन जब राष्ट्रीय गान अपनाने की बात आई तो उनकी अनुपस्थिति में ही जन, गण, मन को राष्ट्रीय गान घोषित कर दिया

गया. इस मुद्दे पर बहस भी नहीं की गई बल्कि तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने फतवा दे दिया कि इस गान को कांग्रेसी बरसों सें गाते आ रहे हैं अतः यही राष्ट्रीय गान है. मौलाना इकबाल का गीत "सारे जहां सें अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" पर तो बहस ही नहीं की गई.

वैसे यह अत्यंत खुशी की बात है कि इतना भेदभाव होने के बावजूद करोड़ों भारतियों के मोबाइल पर इसी गान की धुन बजती है – सारे जहां सें अच्छा हिन्दोस्तां हमारा!!

14. कांग्रेस की स्थापना विशेष तौर पर इसलिए की गई थी भारतीय कहे जाने वाले "बड़े लोग" इसमें शामिल हो कर आम भारतियों में अंग्रेजों का गुणगान करते रहें ताकि लोग अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज न उठाएं. जैसे कार में शॉकर लाए जाते हैं ताकि गढे आने पर चालक को झटके कम लगें वैसे ही एक अंग्रेज महिला ने कांग्रेस की स्थापना की थी ताकि अंग्रेजी सरकार की गाड़ी बिना झटकों के चलती रहे.

15. अपनी स्थापना के सन् 1883 सें लेकर सन् 1942 तक कांगेस ने कभी भी अंग्रेजों को भारत छोड़ने को नहीं कहा. आज चाहे यह ढोल पीटे जाते हैं कि 1930 के अधिवेशन में नेहरू ने पूर्ण आजादी की मांग की थी मगर सच्चाई यही है कि कांग्रेसी अंग्रेजों सें हमेशा (dominion state) अर्थात ऐसे राज्य की मांग करते रहे जहां भारत का सर्वोच्च शासक तो अंग्रेज सम्राट हो और शेष मन्त्री भारतीय हों. आज अगर भारत डोमिनियन स्टेट होता तो इंगलैंड का राजा भारत का राष्ट्रपति होता. प्रधान मन्त्री चाहे भारतीय होता मगर उसे हर काम के लिए अंग्रेज संसद सें मंजूरी लेनी पड़ती. सुप्रीम कोर्ट की जगह इंगलैंड के हाउस ऑफ लॉर्डस द्वारा पारित कानून सर्वोच्च होते. लंदन में 1930 सें 1932 तक तीन गोलमेज अधिवेशन हुए जिसमें भारत के सभी नेता शामिल हुए. कांग्रेस की तरफ सें गांधी गया मगर उसने वहां भी डोमिनियन स्टेट की मांग की. **बाबा साहिब पहले भारतीय थे जिन्होंने गोल मेज अधिवेशन में पूर्ण आजादी की मांग की थी. उनसें पहले किसी भी भारतीय किसी भी कांगेसी ने पूण आजादी की मांग नहीं की थी!**

यहां बस एक बात पर टिप्पणी बकाया है वह है कि जब टैगोर को उसके दोस्त ने स्तुति गान लिखने को कहा तो उसे (amazement) आश्चर्य हुआ. अतः उसने "भगवान" की अराधना में यह गान लिख कर अपने दोस्त को दे दिया ताकि उसे कांग्रेसी अपने स्तुति अधिवेशन में गा सकें!

अंग्रेजी भाषा में आश्चर्य के लिए अनेकों शब्द हैं. वहां दुख सें हुई हैरानी, खुशी सें हुई हैरानी, डर सें हुई हैरानी, अप्रत्याशित घटना सें हुई हैरानी आदि के लिए अलग अलग शब्द हैं. जैसे हिन्दी में प्यार के लिए अनेकों शब्द हैं जैसे कि स्नेह, वात्सल्य, प्रेम, चाह, मोह, लग्न आदि. हिन्दी भाषी बाप बेटी में स्नेह का प्रयोग करते हैं, वात्सल्य तो माँ का अपने बच्चों के प्रति ही होता है, पति पत्नि के सम्बंधों के लिए अक्सर प्रेम का प्रयोग होता है, भगवान सें लग्न या चाह होती है, धन सम्पत्ति के लिए मोह होता है आदि. जैसे वात्सल्य या स्नेह पति पत्नि के सम्बंधों के लिए प्रयोग नहीं किया जाता वैसे ही अंग्रेजी भाषा में (amazement) डर सें, गमी सें हुई हैरानी के लिए प्रयोग नहीं किया जाता. यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि टैगोर को अंग्रेजी लिखने में निपुणता हासिल थी. उसने उसी शब्द का प्रयोग किया जो उस स्थिति में प्रयोग किया जाना चाहिए था.

हिन्दी भाषा में दो मुहावरे हैं : एक है "जमीन पर पैर न लगना" और दूसरा है "पैरों तले सें जमीन निकलना". दोनों ही मुहावरों में व्यक्ति का जमीन सें सम्बंध टूट जाता है. लेकिन जहां पहले में अपार खुशी मिलती है वहीं दूसरे में अत्याधिक दुख मिलता है. अतः जब टैगोर सें यह कहा गया कि वह सम्राट की शान में कविता लिखे तो उसके पैरों तले सें जमीन नहीं खिसकी बल्कि उसके पांव जमीन पर नहीं लगे. और उसने सम्राट को भगवान मान कर पूरे भारत को उसके चरणों में समर्पित कर दिया!! सन 47 में ब्राह्मणों का राजनीति पर वर्चस्व था. अतः एक ब्राह्मणवादी द्वारा रचित 'सम्राट चरण वंदना' दूसरे ब्राह्मणों द्वारा भारत का राष्ट्रीय गान बना दिया गया. और आज पूरा भारत उस चरण वंदना को गाने के लिए मजबूर है. इससें बड़ा धोखाधड़ी और क्या हो सकती है!!

इस स्तुति गान को आज भारत का राष्ट्रीय गान कहा जाता है!!
यह समस्त भारतियों के लिए शर्म की बात है कि हम आज भी अंग्रेज सम्राट की स्तुति को अपने राष्ट्रीय गान के तौर पर गाने को मजबूर हैं.

10. औरों की तो छोड़ो. ब्राह्मणों ने तो अपने कृष्ण नामक भगवान के बीवी बच्चों की भी सुध नहीं ली जिसने स्पैशल तौर पर उनके **धर्म की रक्षा करने के लिये अवतार** लिया था. कृष्ण जब मरा तो अपने पीछे जायज नाजायज बीवियों की पूरी फौज छोड़ गया. किसी ब्राह्मण ने उनकी कोई सुध नहीं ली. अंततः उन अबलाओं को अपना पेट भरने के लिये वेश्या बन कर गुजारा करना पड़ा. (अप्सरा 551) ब्राह्मणों ने अनंगव्रत के नाम पर बिना दाम दिये पचास साल की उम्र होने तक उन अबलाओं का यौन शोषण किया. यह उनका धर्म था. वैसे भी जब ब्राह्मण ऋष्यश्रृंग साधारण सी वेश्याओं के नाच गाने पर मोहित होकर तपस्या छोड़ कर उनके साथ आ सकता है तो यह तो उनके रंगीले भगवान की रंगीली वेश्याएं थीं. ब्राह्मण उनका रस्वादन करने सें भला क्यों चूकते. **अतः जो आदमी अपने बचाने वाले "भगवान" का नहीं हो सका वह किसी और का क्या होगा!!**

11. ऐसे ही उनका "भगवान का सेवक" हनुमान है. वह वानर कुल/गोत्र सें था. उसने जी जान सें राम का काम किया. राम ने तो खुश होकर उसे सोलह कमसिन लड़कियों का तोहफा दिया मगर संकराचारय दयानंद सरीखे ब्राह्मणिक विद्वानों ने उसे वानर सें बन्दर बना दिया. ब्राह्मणिक विद्वानों ने उसे अपने भगवान की सेवाओं का फल यह दिया कि उसे आदमी सें "बन्दर" बना दिया. उन्होंने इस बात का भी लिहाज नहीं किया कि यह "बन्दर" उनके पवन देवता की औलाद है चाहे नाजायज ही सही! जानवरों के नाम पर आज भी भारत में अनेकों कुल/गोत्र के लोग रहते हैं. उदाहरणतः पंजाबियों में कुक्कड़ (मुर्गा), गिदड़ (गीदड़) तथा जाटों में मोर गोत्र के लोग पाये जाते हैं. इसका अर्थ यह नहीं है कि ये जानवर हैं.

12. ऐसा ही कुछ गांधी के साथ हुआ. गांधी ने दुनिया भर में नैतिकता का ढकोसला किया लेकिन उसे भी एक ब्राह्मण यानि नेहरू को प्रधान मन्त्री बनवाना पड़ा जो अपनी ऐशपरस्ती के लिए बदनाम था. नेहरू उन चीजों के बिल्कुल विपरीत था जिनका गांधी ने प्रचार किया. (गोडसे ने गांधी क्यों मारा 23) गांधी ने रघुपति राजा राम का राग अलाप कर ब्राह्मणधर्म का उद्धार किया लेकिन अंत में एक ब्राह्मणवादी संस्था के एक ब्राह्मण की गोली का शिकार हुआ.

13. ब्राह्मणवादियों के अनुसार नदी पर्वत के दूसरी ओर परदेस है. जहां भाषा बदल जाए अथवा जहां की खबर एक दिन में पता न चले वह भी विदेश है. इसी कारण जब विदेशी हमलावरों ने नदी के इस ओर आक्रमण किया तो नदी के दूसरी ओर रहने वालों ने कोई परवाह नहीं की. नतीजा यह हुआ कि हमलावर एक के बाद एक गांव लूटते गए और इस तरह उन्होंने पूरे भारत को गुलाम बना लिया.

सुरेन्द्र अज्ञात (समु. 7.184) ने सही कहा है कि यह बहुत हैरानी की बात है कि जिन ब्राह्मण ग्रन्थों में टट्टी जाकर गुदा धोने तक के विस्तृत नियम लिखे गए हैं उनमें कहीं भी देश सें गदारी करने की निन्दा नहीं की गई है और न ही कहीं देश पर मर मिटने की प्रेरणा दी गई है. **इसी कारण हमारे यहां शहीद के समकक्ष कोई शब्द ही नहीं है.**

इसके विपरीत उनके धर्म ग्रन्थ यह शिक्षा तो देते हैं कि यदि कोई बलवान राजा हमारे कमजोर राजा पर हमला करे तो सब का कर्तव्य है कि आगे बढ़ कर उसका स्वागत करें क्यों कि यह सुविचारित मत है कि बिना परेशान किए दूध देने वाली गाय को मारा पीटा नहीं जाता. (शांति पर्व 67)

तुलसी ने भी तो कहा है 'कोय भी नृप होई, हम को का हानि' अर्थात राजा कोई भी हो हमें का लेना देना! (दैनिक ट्रिब्यून 13.02.2000) ब्राह्मणवाद की इन्हीं बातों के कारण हमने पिछले 2000 सालों सें गुलामी दासता पतन व लूटमार ही सहन की है. युनानी, शक, तुर्क मंगोल, फारसी, अग्रेजों के हम गुलाम रहे. गिने चुने मुठी भर असबीनियों, गुलामों, हबशियों के भी हम गुलाम रहे.

ब्राह्मण साहित्य का सारा दृष्टिकोण और वर्णन शैली आज हमारी राष्ट्रीय एकता के लिये जहर के समान है. अतः केवल राष्ट्रीय एकता के लिये ही इस साहित्य का अंत हो जाना चाहिये. (समु 10.286)

1.6 धूर्त चालें : सर्वोच्चता कायम रखने के हत्थकण्डे

ब्राह्मणों ने क्षत्रियों पर विजय प्राप्त करने के बाद इस बात को पक्का किया कि भविष्य में कोई भी जाति उनकी सत्ता को चुनौती देने लायक न रहे. अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए उन्होंने साम दाम दण्ड भेद हर प्रकार की नीति अपनाई. नैतिकता तो उनके धर्म और कर्म में पहले सें ही नहीं थी. अतः अब उन्हें कुछ भी करने सें संकोच नहीं रहा.

1.6.1 धार्मिक गुलगण्डी खाई

क्षत्रियों का नाश करने के बाद ब्राह्मणों ने कमाल की गुलगण्डी खाई. उन्होंने अपने धर्म में आमूल परिवर्तन कर दिया. उन्होंने वर्णों की जगह जातियां बना दीं. गाय, घोड़े की बलि देने वाले यज्ञों की जगह घी वाले यज्ञ करना शुरू कर दिए. तमाम क्षत्रिय देवों का अलविदा कहा तथा उनके स्थान पर नए नए भगवान व देवता घढ़ दिए जिन्हें ब्राह्मणों की पूजा करता दिखाया गया. वेदों की महिमा कम कर दी गई तथा उपनिषदों के आत्मा और मोक्ष के सिद्धांतों को अपने धर्म में शामिल कर लिया.

चाहे मनु स्मृति कितना भी ढोल पीटे या दयानंद गला फाड़ कर चिल्लाए कि वेद ब्राह्मणधर्म का मूल हैं लेकिन वास्तविकता यही है कि वेद कभी भी किसी भी काल में ब्राह्मणों के लिए पवित्र ग्रन्थ नहीं रहे. (पुनर्पाठ 24) उन्होंने मनचाहे ढंग सें उनमें घालमेल किया है जिन देवी देवताओं और कर्मकाण्डों का वेदों में जिक्र ही नहीं

है, उन्हें ब्राह्मण बढ़ चढ़ कर मानते करते है. (पुनर्पाठ 25) अपने लाभ के लिए ब्राह्मणों ने वेदों तक सें गद्दारी की है!

1.6.2 पण्डित यानि ब्राह्मण! ब्राह्मण यानि पण्डित

विद्या प्रप्ति का अधिकार क्योंकि ब्राह्मणों तक सीमित हो गया था इसलिए यह प्रचार भी करना शुरू कर दिया कि ब्राह्मण ही ज्ञानी हैं. ब्राह्मणवादियों ने यह बात इस कदर फैलाई कि जितने भी विद्वान हुए हैं सब के सब ब्राह्मण थे. यह उनकी सोची समझी साम दाम की रणनीति है. चाहे गुरू रैदास ने सीना ठोक कर कहा कि वे चमार है तो भी उन्हें पिछले जन्म का ब्राह्मण घोषित कर दिया. चाहे सन्त कबीर ने स्वयं को जुलाहा कहा तो भी उन को ब्राह्मणी की नाजायज औलाद बता दिया गया. ऐसे ही अन्य विद्वानों के साथ किया गया. लेकिन **वास्तविकता यही है कि भारत के इतिहास में कभी कोई विद्वान जन्म सें ब्राह्मण हुआ ही नहीं.** अन्य शब्दों में कहें तो ऐसा कभी हुआ ही नहीं कि कोई ब्राह्मण विद्वान भी हुआ हो. संकराचारय जैसे लोग बेकार की चिल्लपों मचा कर चले गए. उनकी बात में विद्ववता नहीं थी. गौतम बुद्ध ऐसी थोथी बातों सें बच कर रहने की शिक्षा देते थे.

प्राचीन भारत में जितने भी वैज्ञानिक, वैद्य, खगोलशास्त्री, दार्शनिक हुए वे सब शूद्र थे अथवा अब्राह्मण थे. आर्यभट्ट, वराह मिहिर जैसे खगोल शास्त्री हुए जिन्होंने तारों की सही सही गणना की. ग्रहों की चाल सेकंड के हजारवें भाग तक की सटीक गणना की. उसी आधार पर सूर्य–ग्रहण, चन्द्र–ग्रहण आदि की भविश्यवाणियां कीं. वर्षा, सूखे आदि का अनुमान लगाया.

उनके खानदान का कोई पता ही नहीं है. जिस समय इन्होंने अपने सिद्धांत, अपनी खोजें दुनिया के सामने रखे ब्राह्मणवादियों ने पूरे जोर सें उनका विरोध किया. अगर वे ब्राह्मण होते तो उनका विरोध नहीं किया जाता. उन्हें भगवान का अवतार बना दिया जाता. दूसरे अगर वे ब्राह्मण होते तो तुलसी की तरह अपने सारे खनदान का इतिहास बताते. ब्राह्मण पूजने की बातें करते! परन्तु उन्होंने ब्राह्मणवाद के सभी ढकोसलों की धज्जियां उड़ा दी. लेकिन ब्राह्मणों ने साम की नीति का सहारा लिया. उन्हें ब्राह्मण घोषित कर दिया. उन्होंने सूर्य, चन्द्रमा ग्रह बताए थे. ब्राह्मणों ने उन्हें अपने देवता घोषित कर दिया. उनके बताए ज्योतिष को अपने भविष्य बताने के धंधे में बदल लिया. ग्रहण लगने की गणना तो उन्होंने बताई उसके आधार पर रोजी रोटी का धंधा इन्होंने चला लिया.

1.6.3 ब्राह्मण को ''पाप प्रूफ'' घोषित किया

ब्राह्मणों ने न केवल अपने आप को सर्वोच्च घोषित किया बल्कि उन्होंने स्वयं को पाप–प्रूफ भी घोषित कर दिया. उन्होंने यह घोषणा कर दी कि जैसे आग सब कुछ जला कर भी मैली नहीं होती वैसे ही ब्राह्मण कुछ भी करके पाप का भागीदार नहीं बनता.(मनु 9.318) इसी नियम के तहत उन्होंने सरेआम वह कार्य किये जिसे आज के सभ्य समाज में जुर्म या पाप कहा जाता है. उनके द्वारा किए गए ठगी और बलात्कार के कारनामों सें ग्रन्थ भरे पड़े हैं. अध्याय 5 में इनका विस्तृत वर्णन किया गया है.

दुख की बात है कि न केवल ब्राह्मणों ने ऐसा प्रचार और आचरण किया बल्कि समाज ने उनके इस पापपूर्ण नियम को मान्यता भी दी. उन्होंने इस नियम का इस कदर प्रचार प्रसार किया कि हम यह बात मान बैठे कि ब्राह्मण भगवान सें भी ऊपर की चीज है. और उससें भी ज्यादा दुख की बात है कि **आज भी** उनके कुकर्त्यों को धर्म माना जाता है. आज भी ब्राह्मण वेश धारण किए ब्रह्मा विष्णु महेश द्वारा अनुसुइया को नग्न देखने की जिद्द को धार्मिक कहा जाता है. ब्राह्मण वेश में महाराज रावण द्वारा सीता के अंगों की तारीफ आज भी रामायण में मौजूद हैं. ब्राह्मण ऋषि दीर्घतमा द्वारा सरेआम स्त्री समागम को आज भी धार्मिक माना जाता है. (आदि पर्व 104 राज 44)

आज भी ब्राह्मण हर प्रकार के पापी अनाचारी भ्रष्टाचारी के यहां पाप छुड़ाने के कर्मकांड करके धन प्राप्ति में संकोच नहीं करते. वे खोखला तर्क देते हैं उनकी करणी उनके साथ हमारी करणी हमारे साथ. (समु 10.277) अगर उनकी करणी का फल ही उन्हें मिलना है तो ब्राह्मण वहां क्या करने जाते हैं. वे तो वहां कर्मकांड करते हैं कि ऐसे पापियों को उनके पाप की सजा न मिले. मदिरों तीर्थों में ब्राह्मण चन्दा इसीलिए लेते हैं ताकि दानियों को उनके पापों सें मुक्ति मिल जाए.

इसी "पाप छुड़ाऊ" मान्यता के तहत ब्राह्मणों ने लोगों सें धन के साथ माल खाने का भी प्रबन्ध किया. उन्होंने यज्ञों में इतने पशु (विशेषकर गाय और घोड़े) काट कर खाए कि उनके यज्ञों का वर्णन पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे किसी कटघर बुचड़खाने का वर्णन हो. इन पापपूर्ण हत्याओं सें आहत होकर सन्त कबीर ने कहाः

साधो पण्डे निपुण कसाई,

बकरी मार भेड़ को धाये, दिल में दरद न आई!
करे अस्नान तिलक लगाए, विधि सों देव पुजाई,
आतम मार पलक में बिनसे, रूधिर की नदी बहाई!
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिए, सभा में अधिकाई,
इनसै दीक्षा हर कोई मांगै, हंसी मोहे आवै भाई!
पाप कटन की कथा सुनावै, करम करावै नीचा,
डूबत दोऊ परस्पर दीखा, गहे बांहि जम खींचा!
भैंसा बधे सो शतरी कहावै, वे क्या इनसे छोटे,
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चार जुग ब्राह्मण खोटे!!!

1.6.4 इतिहास में जोड़ तोड़

यह एक तथ्य है कि **जो कौमें अपना इतिहास भूल जाती हैं भविष्य उन्हें भुला देता है.** इसी नीति के तहत ब्राह्मणों ने दलितों सें उनका इतिहास भुला दिया. उनके पास गर्व करने लायक कुछ भी नहीं छोड़ा है. सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी दलित अपनी जाति बताने में संकोच करते हैं. उन्हें इस बात का कभी गर्व ही नहीं होता कि वे विश्व के प्रथम कवि वाल्मिकी, विश्व के प्रथम सन्त सिपाही रैदास, विश्व के प्रथम सम्राट अशोक और विश्व में सबसें अधिक पढ़े लिखे विद्वान बाबा साहिब अम्बेडकर के वंशज हैं. चाहे भारत का निर्माण उन्होंने किया, इसे सोने की चिड़िया उन्होंने ही बनाया लेकिन वे आज यह भी नहीं जानते कि वे असल में हैं कौन!! ब्राह्मणों ने इस कदर उनके इतिहास का नाश किया हैं कि वे यह माननें को ही तैयार नहीं होते कि भारत पर उनका और मात्र उनका राज होता था. महात्मा रावण उनके नायक थे. महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट, वैद्य जीवक, गौतम बुद्ध, उपालि, बाल्मिकी, शम्बूक, एकलव्य सब उनके पूर्वज हैं. गुरू रैदास का कथन हैः

नरपति एक सिंहासन सोया, सुपने भया भिखारी !
अछूत राज बिछरत दुख पाया, सोई दसा भई हमारी!!

अर्थात जैसे एक राजा सिंहासन पर बैठा सो जाए और सपने में देखे कि वह भिखारी बन गया है वैसे ही हम दलितों की दशा हो रही है. अपना राज गंवा कर हम भी दुखी हो रहे हैं लेकिन जैसे सपने की उम्र ज्यादा लम्बी नहीं होती वैसे ही हमारा अछूत राज भी ज्यादा समय तक हम सें दूर नहीं रहेगा.

ब्राह्मणों ने एक सोची समझी रणनीति के अनुरूप भारत का इतिहास बिगाड़ा है ताकि बहुसंख्या में होते हुए भी दलित उनकी गुलामी करते रहें. बाबा साहिब ने अपनी सारी उम्र दलितों को इस ब्राह्मणवादी गुलामी सें छुटकारा दिलाने में लगा दी लेकिन प्रचार तन्त्र ब्राह्मणवादियों के हाथ में होने के कारण स्थिति में बहुत अधिक अन्तर नहीं आ पाया.

भारत का इतिहास **महाराजा रावण** सें आरम्भ होता है. उनकी लंका वास्तव में सिन्धु घाटी के नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो हैं जिन्हें इन्द्र ने तबाह किया था. समय के साथ ब्राह्मणों ने क्योंकि यज्ञ और यज्ञ के देवता इन्द्र दोनों को अपने धर्म–स्टोर सें उठा कर बाहर फैंक दिया था. अतः इन्द्र की जगह राम की कल्पना की गई. महात्मा रावण पता नहीं हारे भी थे या नहीं लेकिन वृहदर्थ की हत्या कर सत्ता पर काबिज हुए ब्राह्मणों ने मन चाहा इतिहास रच डाला. लेकिन लोग इतिहास चाहे भूल गए मगर अपने रिवाज नहीं भूले हैं. वे महात्मा रावण की तो हर वर्ष अंत्येष्टि करते हैं लेकिन सरयू में डूब मरने वाले राम को तो आज तक मुखाग्नि ही नहीं मिली. लोग दशहरे सें एक दिन पहले महात्मा रावण की पूजा करते हैं तथा दशहरे वाले दिन उनका संस्कार किया जाता है. आज भी लोग उनकी अस्थियां घरों में रखते हैं ताकि बला दूर रहे.

दलित वीरांगना झलकारी बाई : रानी लक्ष्मी और उसके सारे खानदान यानि बाप दादा सें लेकर पति ससुर तक सभी ने हमेशा अंग्रेजों के तलवे चाटे. लक्ष्मी ने अपने बेटे को झांसी नगर का सिपेहसलार बनाने के लिए अंग्रेजों की बहुत मिन्नतें कीं. उसके बाप व पति ने दूसरे भारतीय राजाओं के विरूद्ध लड़ाई में भी अंग्रेजों का साथ दिया. लेकिन अंग्रेजों ने रानी लक्ष्मी की मिन्नतें ठुकरा कर झांसी नगर पर हमला कर दिया. अंग्रेजों ने झांसी का किला घेर लिया. जैसे अक्सर तथाकथित योद्धा वर्ण क्षत्रियों का हाल होता था, दुश्मन का हमला होते ही क्षत्राणी लक्ष्मी की हवा सरक गई. उसने अपनी पोशाक व घोड़ा **दलित वीरांगना झलकारी बाई को सौंप दिया.** तब अंग्रेजों का ध्यान बंटाने के लिए उस दलित वीर बाला ने अपने दूध पीते बच्चे को कमर के पीछे बांधा और अंग्रेजी सेना के सामने आ डटीं. अंग्रेजों ने समझा लक्ष्मी घोड़ा लेकर आई है. वे सेना लेकर उनकी तरफ भाग लिये. पीछे सें लक्ष्मी अपने बेटे सहित किला छोड़ कर नेपाल भाग गई. (आदिवासी शौर्य और बलिदान) उधर झालकारी बाई ने अंग्रेजी सेना सें अंतिम सांस तक लोहा लिया और अन्त में अपनी तथा अपने बेटे का बलिदान देकर झांसी के नमक का बदला चुकाया.

ब्राह्मणिक भारत में वीरांगना झलकारी बाई का कहीं जिक्र ही नहीं किया जाता. और हर गली चौराहे पर मूर्ति लगती है अंग्रेजों के तलवे चाटने वाली, झांसी के लोगों सें गद्दारी करने वाली लक्ष्मी की. क्यों? क्योंकि वह ब्राह्मण थी और इतिहास लिखने वाले उसी के कुनबे के लोग हैं.

प्रथम महिला सेनापति सरूपनखा : कोई भी ब्राह्मणिक इतिहासकार इस बात का जिक्र नहीं करता कि महाराज रावण की बहन शूपर्णखा (सरूपनखा) विश्व की पहली महिला सेनापति थीं जिन्होंने विश्व विजेता सम्राट रावण के एक पूरे प्रदेश की सेना का नेतृत्व किया था. उनका चरित्र हनन करने के लिए कथा बनाई गई कि उन्होंने राम सें शादी की पेशकश की. जो आदमी साढ़े पच्चीस साल अपनी पत्नि के साथ रह कर भी बांझ रहा हो उससें शरूपनखा जैसी वीरांगना शादी की पेशकश करे, यह अकल्पनीय है.

मीरा राजपूत घराने सें थी. राजपूतों को ब्राह्मणों ने क्षत्रिय घोषित किया हुआ है जबकि इतिहासकार यह मानते हैं कि राजपूत वास्तव में हुणों के वंशज हैं. यह एक तथ्य है कि मीरा गुरू रैदास की शिष्या बनी और उसने ब्राह्मणवाद के सभी ढकोसलों को तिलांजलि दे दी. गुरू रैदास सें दीक्षा लेकर उसने घर घर में श्रमण संस्कृति के ज्ञान, शील, करूणा के दीप जलाये. ताजा ताजा क्षत्रिय बने राजपूतों और ब्राह्मणों को यह सहन नहीं हुआ कि एक दलित उनकी बहू बेटी का गुरू बन कर मार्ग दर्शन करे. उन्हें डर था कि अगर मीरा गुरू रैदास के ज्ञान का प्रकाश ऐसे ही फैलाती रही तो राजपूतों की तथाकथित क्षत्रियता और ब्राह्मणों के दक्षिणा मार्ग का भंडा फोड़ हो जाएगा. अतः उन्होंने गुरू रैदास तथा उनकी शिश्या मीरा की हत्या कर दी. प्रचार के साधन तो ब्राह्मणों के पास थे ही सो उन्हें यह बात फैलाने में कोई कठिनाई नहीं आई कि मीरा कृष्ण की चेली थी और एक दिन वह उसकी मूर्ति में ही समा गई. मूर्ति के बाहर सिर्फ उनकी चुनरी मिली है.

अगर मीरा सचमुच कृष्ण की भक्त होती तो उसे मारने की आवश्यकता नहीं पड़ती. कृष्ण की भक्त तो अन्य राजपूतानियां भी थी लेकिन उनमें सें तो किसी को नहीं कत्ल किया गया! मात्र मीरा को ही क्यों मौत के घाट उतारा गया. क्योंकि मात्र मीरा ने ही कहा थाः

म्हारो मन लाग्यो सतगुरु में, अब न रहूंगी अटकी!
गुरू मिल्या रैदास म्हानै, दीनी ज्ञान की गुटकी!!

बौद्ध सम्राट बिम्बसार भारत का पहला ऐसा राजा था जिसने सड़कों का महत्व समझा और जिसने सड़के बनवाईं. (रोमिला थापर : भारत का इतिहास पृ.55). उसने जनता सें आमदनी का सोहलवां भाग बतौर टैक्स लिया जबकि मरहठा शिवा ने जनता सें चौथ वसूली और बदले में एक नाली तक नहीं बनवाई. उसने मात्र ब्राह्मणों को दान दिया जिन्होंने बदले में उसके गुणगान में पोथियां रच डालीं. बिम्बसार का कहीं नाम भी नहीं लिया जाता.

नन्द शूद्र थे और नाई जाति के थे. उन्होंने नहरें बनवाई और सिंचाई की व्यवस्था की. (पृ.57) वे जैन धर्मी थे. अतः ब्राह्मणों के पुराण और इतिहासकार उन्हें बुरा बताते हैं क्योंकि उन्होंने पशु मारने वाले यज्ञ नहीं किये.

सन्त कबीर तथा रैदास : ब्राह्मणवाद का सनातन नियम है कि स्वयं धर्म के नाम पर अनाचार फैलाओ और अगर कोई विरोध करे तो उसे साम दाम दण्ड भेद की रणनीति के माध्यम सें मिटा दो. इस नीति के तहत विरोधी को मात्र शारीरिक तौर पर ही समाप्त नहीं किया जाता बल्कि उसका मानसिक बौद्धिक हर स्तर पर सफाया कर दिया जाता है. उदाहरण के लिए चितौढ़ के ब्राह्मणों ने न केवल सन्त रैदास की हत्या की बल्कि उनकी वाणी को भी उनके साथ ही अग्नि के भेंट कर दिया गया. साथ में यह भी प्रचार कर दिया कि वे तो ब्राह्मण ही थे चाहे पिछले जन्म में ही सही! कबीर साहिब को जान सें तो नहीं मार पाए लेकिन उनके बारे में भी यह बात फैला दी कि वे तो ब्राह्मणी की नाजायज औलाद हैं. और तो और उनकी धर्मपत्नि माता लोई को भी चरित्रहीन होने की कहानी गढ़ दी कि शादी सें पहले उनका किसी अन्य पुरुष सें सम्बंध था. जब शादी करके वे सन्त कबीर के घर आईं तो उन्होंने यह बात अपने पति को बताई और उस आदमी के पास जाने जिद्द की. सन्त कबीर उन्हें उस आदमी के पास छोड़ने के लिए ले जाने लगे तो माता लोई को बहुत ग्लानि हुई. उन्होंने अपनी गलती मान ली और सन्त कबीर ने उनको माफ कर दिया.

वैसे तो यह कथा निरी बकवाद् है. कबीर साहिब और माता लोई का आपसी प्यार व सत्कार सभी जानते हैं. एक पल के लिए अगर मान भी लें कि ऐसा हुआ भी था तो भी यह ब्राह्मणों के भगवानों द्वारा किए गए कुकर्मों की तुलना में कुछ भी नहीं है. कृष्ण ने तो अपनी मामी तक को भोग डाला. राम साढ़े सताइस साल सीता के साथ रह कर भी बांझ ही रहा लेकिन महाराज रावण की कैद में मात्र छः महीने रह कर आने के बाद उसने दो बेटे जण दिए. तब कोई क्यों नहीं कहता कि यह बेटे राम के नहीं हैं!! ब्रह्मा को कोई बेटी—भोग क्यों नहीं बताता!! एक दलित सन्त के बारे तें ही अर्नगल बातें क्यों बनाई जाती हैं? कारण एक ही है ब्राह्मणों की रणनीति कि दुश्मन को मारना है हर हाल में, हर प्रकार सें.

इसी कड़ी के अंतर्गत ब्राह्मणवादियों ने यह बात भी फैला रखी है कि सन्त रैदास और सन्त कबीर एक ब्राह्मण रामानन्द के चेले थे. लेकिन अगर इन तीनों की तुलना की जाए रामानन्द इन सन्तों की पैरों की धूल के समान भी नहीं था. सूरज और दीपक की तुलना तो हो सकती है लेकिन इन दो सन्तों और रामानन्द की किसी

भी लिहाज सें तुलना की ही नहीं जा सकती. अगर इन सन्तों का चरित्र और आचरण समुद्र के समान है तो रामानन्द का चरित्र और आचरण सूखी रेत है. जो व्यक्ति आदमी को आदमी न समझे वह सन्त तो हो ही नहीं सकता. जो व्यक्ति अन्य को जाति के आधार पर घृणा करे वह आदमी कहलाने के लायक भी नहीं है. ऐसे नीच को सन्तों का गुरू बताना धूर्तता ही तो है.

ब्राह्मणिक लेखक, उदाहरणतः हिन्दी प्रचारक संस्था के युगेश्वर (कबीर समग्र) तथा राधास्वामी डेरे के वीरेन्द्र और शांति सेठी (सन्त कबीर) यह सिद्ध करने का भरसक प्रयास करने में लगे हुए हैं कि रामानन्द कट्टर ब्राह्मणवादी होते हुए भी सन्त कबीर के गुरू हैं. सभी लेखक पूरी तरह मानते हैं कि दोनों के नजरिये और आचरण में जमीन आसमान का अंतर है फिर भी पता नहीं उनकी क्या मजबूरी है कि वे सन्त कबीर को रामानन्द का चेला बनाने पर तुले हुए हैं.

यह ब्राह्मणिक लेखक अलग अलग कथाओं के माध्यम सें उपरोक्त बात को सिद्ध करने की कोशिश करते हैं. एक कथा दी गई है कि एक बार कबीर घाट पर लेटे हुए थे कि सुबह सवेरे रामानन्द का पांव उनके शरीर सें छू गया और इस तरह वे रामानन्द के चेले बन गए.

कितनी बेतुकी सी बात है कि सन्त कबीर गंगा घाट पर लेटे हुए थे. सतगुरु कबीर ने शुरू सें लेकर आखिर तक गंगा के पवित्र होने, उसमें स्नान करने सें पुण्य मिलने जैसे पाखण्डों का खण्डन किया है. एक बार वे गंगा में अपना लौटा धोने बैठ गए तो ब्राह्मण नाराज हो गए कि अछूत के लौटे सें गंगा अपवित्र हो गई है. वे बोले अगर गंगा मेरे लौटे की मैल नहीं धो सकती तो आप ब्राह्मणों का पाप कैसे धो देगी?

अतः यह सोचना भी बेवकूफी है कि वे गंगा घाट पर लेटे हुए थे. फिर रामानन्द तो दलितों सें बात भी नहीं करता था. मात्र पैर टकरा जाने सें उसमें ऐसा क्या परिवर्तन आ गया कि वह धूर्त ब्राह्मण सें आदमी बन गया. हाँ, यह अवश्य सत्य है कि कबीर पारस थे. लोहे के साथ लगें तो उसे भी सोना बना दें. लेकिन रामानन्द तो लोहा भी न था. वह तो गन्दी मिट्टी का ढेला मात्र था पारस सें टकराने पर भी मिट्टी ही रहने वाला! ऐसे क्रांतिकारी सन्त किसी धूर्त ब्राह्मण के चेले बन जाएं, ऐसा सपने में भी सम्भव नहीं है.

सत्तगुरु कबीर गुरू का अर्थ करते हुए कहते हैं :

सबद गुरू को कीजिए, बहुतक गुरू लबार ।
अपने अपने लोभ को, ठौर ठौर बैठे बटमार।।

वे आगे कहते हैं :

देवल देवल फेरी देहिं, नांव निरंजन कबहुं न लेहीं।
चरन बिरद कासी कू न दैहूं, कह कबीर भल नरकहि जैहूं।

अर्थात सच्ची शिक्षाओं को ही अपना गुरू मानो. अधिकतर जीवित व्यक्ति जो गुरू होने का दावा करते हैं लबार (झूठी बेकार बातें करने वाले) हैं. ऐसे लोग अपने लालच के कारण जगह जगह बटमारों (ठग जो लागों को लूट कर उन्हें मार देते थे) की तरह अपने ठिकाने (आश्रम, मन्दिर) बना कर बैठे हैं. लोग मंदिरों के चक्कर लगाते हैं लेकिन बुद्ध का नाम नहीं लेते. ऐसे लोगों को शांति नहीं मिल सकती. मैं काशी जाने की बजाए नरक में जाना ज्यादा अच्छा समझता हूँ.

सेठी दम्पति आगे लिखते हैं (पृ.14) कि सन्त कबीर के सम्पर्क में आकर रामानन्द भी शब्द मार्गी (आडम्बर छोड़ कर सही काम करने वाला) हो गया जैसा कि आदि ग्रन्थ (सिख धर्म का प्राचीन ग्रन्थ जिसे गुरू माना जाता है) में प्राप्त उसके एक पद सें पता चलता है. राधा स्वामी सेठी दम्पति ने निम्नलिखित पद का हवाला दिया है.

एक दिवस मन भई उमंग, घिस चन्दन चोआ बहुत सुगन्ध!
पूजन चाली ब्रह्म ठाई, सो ब्रह्म बतायो गुरू मन ही माहिं !
वेद पुराण सभ देखे जोई, उहां तब जाइये जो इहां न होई !
सतगुरू मैं बलिहार तोर, जिन सकल बिकल भ्रम काटे मोर !
रामानन्द, स्वामी रमत ब्रह्म, गुरू का सबद काटै कोटि करम!!

इस पद का सरल भाषा में अर्थ इस प्रकार सें हैः एक दिन मन में भगवान को पाने की लहर उठी. तब सुगंधित चन्दन घिस कर माथे पर लगाया और ब्रह्मा को पूजने चल पड़ा लेकिन गुरू कबीर ने राह बताई कि भगवान तो मन के भीतर ही है. गुरू बोले सभी व्यर्थ में वेद पुराणों में भगवान को ढूढने की कोशिश करते हैं लेकिन भगवान तो आदमी के अन्दर ही विद्यमान है. जो अपने अन्दर परमात्मा नहीं ढूंढ सकते वे लोग ही वेद पुराणों की ओर जाते हैं. हे, सत्तगुरू (कबीर) मैं आपका आभारी हँ कि आपने मेरे सब तरह के भ्रम मिटा दिये हैं. आपने मुझे परमात्मा सें मिलवा दिया है आपके द्वारा दिए गए ज्ञान सें मेरे करोड़ों करोड़ काम सुधर गए हैं.

इस पद में रामानन्द स्वयं यह मान रहा है कि सत्तगुरू कबीर सें शिक्षा प्राप्त करके उसने जीवन की सही राह प्राप्त कर ली है. वह सत्तगुरू की शिक्षा मान कर वेद पुराण को भी छोड़ने को तैयार हो रहा है लेकिन इसके

बावजूद भी युगेश्वर, सेठी जैसे लेखकों की गली सड़ी मानसिकता एक शूद्र को ब्राह्मण का गुरू मानने को तैयार नहीं हैं. ऐसा वे लोग बदनीयति सें करते हैं या बेवकूफी सें, वे ही जाने!!

ब्राह्मण ऋषियों, गुरूओं (शकराचार्य) जैसे लोगों की तुलना सन्त सें करते हुए वे बोलेः

- साधु सिद्ध बड़ा अंतरा जैसे आम बबूल, वा की डारी आम फल या की डारी सूल!!
- माला तिलक लगाइ कै भगती न आई हाथ, दाढ़ी मूँछ मुंडाय कै चलै दुनिया कै साथ !!
- मूँड मुंडाय हरि मिलै सब लें मुंडाय, बार बार मूंडते भेड़ न बैकुंठ जाए!!
- बाना पहने सिंह का, चले भेड़ की चाल, बोली बोलै सियार की, कुत्ता खाय फाड़!!
- काम क्रोध मद लोभ की जब लगि घट में खान, क्या मूरख क्या पंडिता दोनो एक समान !!
  (यह बात तमाम ब्राह्मण ऋषियों पर सटीक बैठती है)
- **अजामेध, गोमेध यज्ञ अश्मेध नरमेध, कहै कबीर अधर्म को धर्म बतावैं वेद!!**
- **जीव हनै हिंसा करै प्रगट पाप सिर होय, निगम सुन ऐसे पाप की, सुरग गया ना कोय!!**

(अर्थात यज्ञ में बकरा काटना, गाय काटना, घोड़ा काटना और आदमी को काटना **अधर्म** है लेकिन वेद इनको धर्म बताते हैं. जो जीव की हत्या का पाप करता है उसे ऐसे पापपूर्ण कार्यों की कथा सुनने सें स्वर्ग नहीं मिल जाता.)

भगवान वाल्मिकी को निर्दयी चिड़ीमार घोषित किया : ब्राह्मणों ने अपनी सोची समझी रणनीति के तहत तमाम दलित विद्वानों, नायकों को चरित्रहनन किया है. दलितों में जो जितना बड़ा नायक हुआ उस पर उतना बड़ा लांछन लगाया गया. कबीर साहेब को नाजायज संतान बताया गया तो राम के वंश को चलाने व बचाने वाले भगवान वाल्मिकी को बहेलिया घोषित कर दिया ताकि लोगों में उनकी महानता को नकारा जा सके.

यहां हमें राजा मिलिन्द और भिक्षु नागसेन में हुए वार्तालाप की याद आती है जहां भिक्षु नागसेन ने समस्त प्राणियों के सद्गुण बताए थे और उन सद्गुणों को अपनाने की बात कही थी. उदाहरणतः जैसे गिद्ध की नजर बहुत तेज होती है. वह आकाश में उड़ते हुए भी अपने काम की वस्तु ढूंढ लेता है. अतः मनुष्य को भी तेज नजर रखनी चाहिए ताकि वह अच्छे बुरे में सें अच्छा ढूंढ ले तथा बुरे सें बच सके. इसके विपरीत ब्राह्मणों ने हर प्राणी सें अवगुण प्राप्त किए हैं. उनके पास गिद्ध की तरह मुर्दा खाने की शक्ति है, भेड़िये की तरह बेरहमी है, लोमड़ी की तरह चालाकी है, अपने सें ताकतवर के आगे कुत्ते की तरह दुम हिलाने की आदत भी है, सांप की तरह दूध पिलाने वाले को ही डसने की विश्वासघात का गुण भी है.

इन्हीं गुणों के कारण ब्राह्मण लेखकों ने पुराणों आदि में भगवान वाल्मिकी को चिड़िमार बना दिया. उनसें विश्वासघात करते हुए उनका मन एक बार भी नहीं कांपा कि इसी महात्मा ने उनके भगवान की बेसहारा बीवी को बचाया था तथा उसके बच्चों को पाला था. इसी तरह गुरू गोबिन्द सिंह के नौकर गंगू ब्राह्मण की अन्तरात्मा भी एक बार भी नहीं रोई जब उसने उनके बेटों को जिन्दा दीवार में चिनवा दिया था.

अतः ब्राह्मणिक लेखकों सें यह उम्मीद करना कि वे बिना धूर्तता के इतिहास लिखेंगे तो यह तो मूर्खता ही है. उन में सें कोई भी इतिहास को सच्चाई के साथ बयान कर ही नहीं सकता. इसलिए हर ब्राह्मणवादी लेखक इतिहास को तोड़ मरोड़ कर पेश करता है. पूरी दुनिया के साथ धोखा करता है. **यही ब्राह्मणवाद है!!**

1.6.5 भारत का नाम

ब्राह्मणवादी विद्वान जोर शोर सें प्रचार करते हैं कि हमारे भारत देश का नाम महाभारत के एक पात्र दुष्यंत के नाजायज बेटे के नाम पर पड़ा है. कथा है कि विश्वामित्र इन्द्र की कुर्सी हथियाने की कोशिश कर रहा था. ब्राह्मणों के देवताओं के राजा इन्द्र ने अपनी एक वेश्या मेनका को उसके पास भेज दिया. वेश्या का रंग रूप देखकर उसका ऋषिपण जाग उठा. उसने मेनका के साथ अनैतिक यौन सम्बंध बनाये. यह वही विश्वामित्र है जिसके बलि वाले यज्ञों को बचाने दशरथ ने राम को भेजा था. उस ऋषि और वेश्या के अनैतिक सम्बंधों सें एक लड़की का जन्म हुआ. दोनों उसे फैंक कर चलते बने. एक अन्य ऋषि ने उसे पाल लिया. नाम रखा गया शकुन्तला. बड़ी होकर वह माँ की तरह बदचलन निकली. एक दिन दुष्यंत सें उसकी भेंट हो गई. पहली मुलाकात में ही उसने वही किया जो उसकी वेश्या माँ ने किया था. उसने भी एक नाजायज सन्तान को जन्म दिया. उसके बेटे का नाम रखा गया भरत. वह अपने बाप के बाद राजा बन गया. जैसे अन्य टुच्चे से गांवों के राजाओं को ब्राह्मण चक्रवर्ती सम्राट कहते हैं वैसा ही वह भी राजा था.

कहानी बनाई गई है कि हमारे देश का नाम उसी भरत के नाम पर पड़ा है. कितनी लज्जा की बात है कि हमारे देश का नाम ऐसे अवैध लोगों के नाम पर रखा गया बताया जाता है. जबकि **हकीकत यह है कि आर्य अपने रहने के इलाके यानि अपने देश को "आर्यवर्त" या "ब्रह्मावर्त" कहते थे और उसके बाहर के इलाके को**

"भारत" कहते थे. (दृग स्पर्श 40) अतः आज उन आर्यों की सन्तान जब इस बाहरी भारत को अपने नाजायज पूर्वज के नाम पर रखा बताते हैं तो वे सीधे सीधे अपनी धूर्तता दिखलाते हैं. महाभारत और गीता में भारत का अर्थ है "क्षत्रिय". वहां पांडव और कौरवों सभी को भारत कह कर सम्बोधित किया गया है. वहां यह भी स्पष्ट किया गया है कि महाभारत के भारत वंशी और पुराने भारत वंशी अलग अलग लोग हैं.

1.6.6 विजेता हमलावरों को क्षत्रिय घोषित किया

विदेशी आक्रमणकारी जातियों – शक, हुण, कुशाण, आभीर, यवन आदि के साथ हर संभव समझौता करके ब्राह्मणवादियों ने अपनी सत्ता बनाए रखी. इन हमलावरों में सें जो ज्यादा खतरनाक हो सकते थे उन्हें क्षत्रित्व प्रदान करके ब्राह्मण वर्ग ने उनकी पुरोहिताई कबूल कर ली. गौड़ो और हुणों को क्षत्रिय घोषित करने में ब्राह्मणों की यही चाल थी. (समु 2.51) यह तो अंग्रेज तथा मुगल कुछ ज्यादा ही धर्म भक्त निकल गए वर्ना वे भी किसी न किसी क्षत्रिय जाति में जरूर फिट कर दिए जाते.

हर अंग्रेज वायसराय भारत की धरती पर कदम रखने सें पहले ही ब्राह्मणों द्वारा तिलक लगवाना जरूरी समझता था. इससें ब्राह्मणों को मोटी दक्षिणा मिल जाती थी और अंग्रेजों को पढ़े लिखे वफादार गुलाम मिल जाते थे. जनता दोनों के बीच पिसती रहती थी. **क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अपने दो सौ साल के शासन में अंग्रेजों ने एक भी ब्राह्मण को फांसी पर नहीं लटकाया.** अकबर को तो राजपूतानियां नजर कर ही दी गईं थीं. वह तो आधा हिन्दू बन ही गया था. उसका वारिस राजपूतानी के गर्भ सें ही जन्मा था.

जो राजा अकबर की तरह ब्राह्मण भक्त बन गया उसे महान लिख दिया गया. जो राजा औरंगजेब की तरह जनता का भक्त बन गया उसे जालिम का दर्जा दे दिया गया.

1.6.7 नित्य नए हत्थकण्डे :

1. गंगा के पानी को पवित्र गंगाजल घोषित किया

ब्राह्मणों के प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ कर आभास होता है कि ब्राह्मण ऋषियों के लिए गंगा नदी का स्थान बिल्कुल वही था जो कि आजकल के ऐयाशों के लिए स्वीमिंग पूल का है. जैसे आज के नए नए अमीर बने लोग स्वीमिंग पूल में रंगरलियां मनाते हैं वैसे ही प्राचीन काल में ब्राह्मण ऋषि गंगा में वेश्याओं के साथ रंगरलियां मनाते थे. शायद ही कोई ब्राह्मण ऋषि ऐसा होगा जिसने गंगा में नहाती वेश्याओं (अप्सराओं) को देख कर अपना वीर्य स्खलित न किया हो. ऐसे कुछेक ऋषियों के कारनामे अध्याय 5 में दिए गए हैं. ऋषियों की ऐसी करतूतों पर लोग उंगली न उठाएं इसके लिए ब्राह्मणों ने गंगा को माँ और गंगाजल को पवित्र घोषित कर दिया.

अगर गंगा के पानी में ही शक्ति होती तो यह उन ऋषियों के मन साफ कर देता जो गंगा में स्नान करते हुए वेश्याओं को देख कर अपना वीर्य स्खलित कर लेते थे. गंगाजल शिव के माथे में सें निकला बताते हैं. अतः उसे कम सें कम इतना तो करना ही चाहिए था कि उसके मन सें काम वासना मिटा देता ताकि वह कामांध होकर गैरस्त्री (मोहिनी) के पीछे नहीं भागता. गंगा विष्णु के पैरों के नीचे सें बहती हुई बताते हैं. अतः उसके पानी में दम होता तो कम सें कम उसके मन सें धूर्तता को तो धो देता ताकि वह वृंदा जैसी पवित्र नारियों सें बलात्कार करके वहीं गंगा में ही डूब मरता.

वैसे यह बात भी गौरतलब है कि अगर गंगा का पानी पवित्र है भी तो भी उसमें ब्राह्मणों का क्या रोल है? उन्हें क्या हक है कि वे गंगा के नाम पर दुकानदारी करें! उन्हीं के ग्रन्थ इस बात को सबूत हैं कि ब्राह्मणों ने तो गंगा को सदा अपवित्र ही किया है. वीर्य त्यागने सें लेकर मांस का चढ़ावा तक उन्होंने गंगा में चढ़ाया है. मुर्दों की हड्डियां तो वे अब भी गंगा में डलवा रहे हैं.

2. नत्य नई माताएं घढ़ीं

वैष्णो : जैसे दुकानदार नित्य नए ब्रांड की वस्तुएं लेकर आता है वैसे ही ब्राह्मणधर्मी नित्य नए भगवान और देवियां लेकर आते हैं. उनकी मार्किट का नया मॉडल वैष्णों नामक देवी है. उत्तर भारत में वैष्णों आज के समय सबसें अधिक कमाई करने वाली देवी है. राम कृष्ण पुराने पड़ते जा रहे हैं. कुछ उनकी करतूतों पर भी आवाज उठने लगी है. सो ब्राह्मणों ने अपना धन्धा निर्विघ्न चलाए रखने के लिए उनके स्थान नया मॉडल वैष्णों लांच किया है. वैसे भी मथुरा अयोध्या गर्मी में घूमने लायक नहीं रहते. वैष्णों का मन्दिर पहाड़ों पर है तो लोगों का हिल स्टेशन पर घूमना भी हो जाता है तथा दर्शन का काम भी हो जाता है.

यह वैष्णो कौन है किस की बेटी है कहां सें आई है. वह कब माँ बनी कैसे माँ बनी किसकी माँ बनी उसको माँ बनाने वाला कौन था किसी को मालूम नहीं. किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ में वैष्णों का उल्लेख नहीं है. (समु 7.204) हां, फिल्म में वह गणेश की बेटी बताई गई है लेकिन गणेश की पत्नि कौन है कोई नहीं जानता. उसके मन्दिर में खूब चढ़ावा आता है. ब्राह्मणों को खूब दक्षिणा मिलती है. जो जाता है ब्राह्मणों की लूट खसोट सें परेशान होकर लौटता है मगर वैष्णों का प्रचार इतना किया जाता है कि लोगों की भीड़ बढ़ती जाती है.

उसके बारे में प्रचार किया हुआ है कि वैष्णों भक्तों का उद्धार करती है. वैष्णों के मंदिर पर जाने सें किसी का कोई भला हुआ हो आज तक ऐसा कोई नहीं मिला. हाँ, वहां के पुजारियों, (बारीदारों) की खूब कमाई होती है. उनका जरूर भला होता है. उनको बारीदार इसलिए कहा जाता है क्योंकि मन्दिर के चढ़ावे की बन्दरबांट में इन पुजारियों का बारी बारी सें नम्बर आता हैं. इस नए मॉडल माता का सबसें अधिक प्रचार किया टी–सारिज के मालिक गुलशन कुमार ने. उसने अपनी कैसेटों के जरिये वैष्णों को घर घर पहुंचा दिया. उसकी मनोकामना थी अपने भाई को हीरो बनाने की. उसने करोड़ों रूपया लाकर फिल्में बनाई पर उसकी माता देखने नहीं आई. और अन्त में जो उसका उद्धार' हुआ सारी दुनिया जानती है. बेचारा हमलावरों की गोलियों सें भागता फिरा मगर उसकी माता न कभी पहले आई थी न तब उसे बचाने आई.

आजादी सें पहले वैष्णों को कोई जानता तक नहीं था. एक बार कुछ सन्यासियों ने यहां ठीक सी जगह देख कर डेरा डाल लिया. धीरे धीरे अन्य और साधु आने लगे. जैसा कि हिन्दुओं की आम मानसिकता है लोग अपने दुख दूर कराने उन बाबाओं के पास आने लगे. उन्होंने चढ़ावा चढ़वाने के लिए छोटा मोटा सा मन्दिर बना लिया ताकि लोग मुफत में सेवा करा कर न जाएं. आजादी तक आसपास के गांवों के दलितों को मन्दिर में घुसने नहीं दिया जाता था. लेकिन माता कभी नहीं बोली कि ये भी तो मनुष्य हैं, इनके साथ दुराचार मत करो.

सत्तर के दशक में जब "जय संतोशी माँ" नामक फिल्म हिट हुई तो वैष्णों भी हिट हो गई. वैष्णों को संतोशी की बहन बना दिया गया. लोगों की आवक बढ़ी तो पुजारियों की आमदन भी बढ़ने लगी. पैसा आया तो बारीदार भी आने लगे. रातपूत बोले चढ़ावा हमारा है ब्राह्मण बोले पुजारी हम हैं सो चढ़ावा हमारा है. मेहनत करके कमाई की जाएं तो सब को पता होता है कि किसने कितनी कमाई की है लेकिन हराम की कमाई पर तो झगड़ा होता ही है. सो यहां भी चढ़ावे के लिए खून खराबा होने लग गया. लोगों को सुख शांति बांटने वाली माता अपने पुजारियों में शांति नहीं करवा सकी.

ब्राह्मणवाद में ही ऐसा सिस्टम क्यों है कि भगवान की पूजा करने के लिए भी ब्राह्मण के माध्यम की आवश्यकता है. साधक सीधे जाकर पूजा क्यों नहीं सकता! जब लोग भगवान को पिता मानते हैं वैष्णों जैसियों को माता कहते हैं तो इन "पिता" और ''माता" सें अपने मन की बात कहने के लिए ब्राह्मण बीच में क्यों आता है? क्यों अपने माता पिता सें मिलने के लिए बिचोलिए पुजारी की जरूरत है जो हमारे गाढ़े खून पसीने की कमाई पर ऐश करते हैं. इसका एक ही कारण है कि सुबह सें लेकर रात तक हर अखबार हर टीवी हर रेड़ियो पर ब्राह्मणवादी ऐसा ही प्रचार करने में लगे हुए हैं. जब मात्र तीन ठग भेड़ को कुत्ता बना सकते हैं तो यह तो तीन करोड़ हैं

3. संस्कृत को पवित्र घोषित किया

इस बात का बहुत अधिक प्रचार किया गया कि संस्कृत देवी देवताओं की भाषा है. यह पवित्र भाषा सभी भाषाओं की जननी है. सत्तर के दशक तक हर सरकारी स्कूल की दीवार पर यह जरूर लिखा होता था कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है. लेकिन समय के साथ साथ सच्चाई लोगों के सामने आने लगी तो नारे भी नदारद होने लग गए. अब संस्कृत को केवल देव भाषा होने तक सीमित कर दिया गया है क्योंकि ब्राह्मणों के सारे ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे गए है. चाहे बोलने वाले और सुनने वाले किसी के भी पल्ले न पड़े तो भी हर कर्मकांड के मन्त्र संस्कृत में बोले जाते हैं. संस्कृत को पवित्र घोषित करने का कारण यही था कि ब्राह्मणों के सिवाय कोई अन्य जाति वाला इसे सीख कर उनके धन्धे पर चोट न कर सके.

लेकिन संस्कृत के बारे में निम्नलिखित बातें शत प्रति शत सही हैं:

1. संस्कृत कभी भी भारत की जनता की बोल चाल की भाषा नहीं रही. रामायण में हनुमान के मुख सें कहलवाया गया है कि संस्कृत आम बोल चाल की भाषा नहीं है.
2. संस्कृत केवल कोड–वर्ड अर्थात गुप्त रूप में बात करने की भाषा थी जिसका प्रयोग तथाकथित विद्वान ब्राह्मण करते थे ताकि अन्य लोगों पर उनकी बात चीत का भेद न खुल जाए. इसी कारण संस्कृत में लिखे गए श्लोक का अर्थ दो द्विान एक जैसा नहीं करते. यहां तक कि दयानन्द और संकर भी एक ही श्लोक के दो प्रकार के अर्थ करते हैं.
3. संस्कृत किसी भी भारतीय अथवा विदेशी भाषा की जननी नहीं है क्योंकि संस्कृत और भारतीय भाषाओं में मौलिक अन्तर हैं. जैसे अन्य भाषाओं में वचन दो ही प्रकार के हैं : एक वचन और बहुवचन. संस्कृत में तीन वचन हैं एक वचन, दो वचन और बहुवचन. भारतीय भाषाओं में लिंग के अनुसार क्रिया के रूप बदलते हैं लेकिन संस्कृत में ऐसा नहीं होता.

भाषा कभी पवित्र या अपवित्र नहीं होती. पवित्र या अपवित्र उसे बोलने वालों के काम होते हैं. संस्कृत या किसी भी भाषा को पवित्र मानना बेवकूफी की निशानी है.

अध्याय : 2

साम, दाम, दण्ड, भेद

ब्राह्मणवाद की सनातन नीति : फूट डालो और राज करो

आज चाहे फूट डालो और राज करो की नीति अंग्रेजों के गले मढ़ी जाती है लेकिन ब्राह्मणों ने साम दाम दण्ड भेद की नीति तब आरम्भ की थी जब अंग्रेज पैदा भी नहीं हुए थे. अपनी फूट डलो और राज करो की नीति के तहत ब्राह्मणों ने अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए भारतीय समाज को इतनी अधिक जातियों और उपजातियों में बांट दिया और उन में ऊँच नीच तथा आपसी नफरत की ऐसी दीवारें खड़ी कर दी कि मात्र तीन प्रतिशत सें कम होते हुए भी ब्राह्मण पूरे भारतीय समाज पर राज कर रहे हैं. पूरे भारतीय समाज की जातियां स्वयं को दूसरे सें ऊँचा साबित करने के लिए बिल्लियों की तरह में ही झगड़ रही हैं और ब्राह्मण चालाक बन्दर की तरह सब के हिस्से की रोटियां खाने में व्यस्त है.

ब्राह्मणधर्म के अधिकतर ब्राह्मण ग्रन्थों में इस बात का जिक्र आता है कि दुश्मन को हराने के लिए साम, दाम, दण्ड भेद की नीति को अपनाया जाए. ब्रह्मा सें लेकर गांधी तक सभी ने अपने विरोधियों को परास्त करने के लिए इस नीति का सहारा लिया है.

2.1 साम

साम का अर्थ है विरोधी के जैसा आचरण करना या दिखावा करना. उसे खुश करना, उससें सुलह करना, शांति वार्ता समझौता करना आदि. अर्थ शास्त्र में साम नीति के पाँच प्रकार बताए गए हैं :

1. **गुणसंकीतर्ण** : अपने सें ज्यादा ताकतवर विरोधी के वंश, शरीर, गुणों तथा स्वभाव की प्रंशसा करना, गुण संकीर्तन कहलाता है. गांधी और उसके चेलों ने अंग्रेजों के साथ यही नीति अपनाई. इसी नीति के कारण वे सत्ता में अपनी भागीदारी कायम रख सके.

2. **सम्बन्धोपाख्यान** : विरोधी के कुल को अपने कुल के बराबर बताना, उससें विवाह सम्बन्ध जोड़ना, उससें गुरू शिष्य का सम्बन्ध बनाना इस नीति के तहत आते हैं. अपने सें ताकतवर लम्पट राजा अकबर का अपनी बेटियां सौंप कर सत्ता में हिस्सेदारी प्राप्त करना इसी नीति के तहत किया गया. ब्राह्मणों ने किसी भारतीय को संस्कृत भाषा भी नहीं सिखाई मगर अपने अंग्रेज आकाओं को इसी नीति के तहत वेद तक पढ़ा दिए.

3. **परस्परोपकार** : अपने सें ताकतवर के उपकार का गुणगान करना इस नीति के तहत आता है. अंग्रेजों ने भारत पर अपने पैर जमाने के लिए मुगल राजाओं के गुणगान किए. इसी नीति के तहत पेशवाओं और लक्ष्मी ने अपने अपने कस्बों पर जागीरदारी बनाए रखने के लिए अंग्रेजों के तलवे चाटे .

4. **आयतिप्रदर्शन** : एक विरोधी के साथ "हम दोनों" का रिश्ता बना कर दूसरे विरोधी को नष्ट करना इसी नीति के तहत आता है. बंगाली ब्राह्मण का "वंदे मातृम" के गीत वाला उपन्यास इसी नीति के तहत रचा गया कि ब्राह्मण अपने आका अंग्रेजों के साथ मिल कर मुस्लमानों को भारत सें निकाल दें.

5. **आत्मोपनिधान** : विरोधी के सामने आत्मसमर्पण करके उसके साथ मिल जाना, इस नीति के तहत आता है. अधिकतर राजपूतों ने अपनी बेटियां अकबर को सौंप कर समर्पण किया. बदले में खुश होकर लम्पट राजा ने उन्हें जागीरदारियों सें नवाजा.

ब्राह्मणवाद का सर्वाधिक घातक व कारगर हथियार उनकी यही साम नीति है जिसका प्रयोग विरोधी को नष्ट करने में सबसें सफल रहा है. इस नीति के तहत ब्राह्मणें ने दूसरे धर्मों की उन सब बातों को "अपना" लिया जो उसके रास्ते का रोड़ा बन सकतीं थी. उदाहरणतः उन्होंने अपने सबसें बड़े विरोधी भगवन बुद्ध को विष्णु का

अवतार घोषित कर दिया, महावीर स्वामी का "अहिंसा परम धर्म" को अपने ग्रन्थों का मन्त्र बना लिया. उन्होंने लोगों को समझाया कि उनका धर्म, बुद्ध और जैन धर्म के समान है. अतः वे ब्राह्मण धर्म को छोड़े बिना इन धर्मों का पालन भी कर सकते हैं.

इस का नतीजा यह हुआ कि लोगों ने सन्तों की बात तो सुनी पर उन्होंने ब्राह्मणवाद के कर्मकांड भी नहीं छोड़े. ब्राह्मणवाद के विरूद्ध जितने भी आंदोलन हुए वे लोगों को ब्राह्मणवाद के चंगुल सें दूर नहीं कर पाए. नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मणवाद के विरूद्ध जितने भी आंदालन हुए उसको छूए बिना उसकी बगल में स्थापित हो गए. ब्राह्मणवाद अपनी जगह फलता फूलता रहा और जब मौका मिला ब्राह्मणवाद उस आंदोलन को निगल गया जैसे बड़ी मछली छोटी को निगल जाती है.

उदाहरणतः आज कबीर पंथी मन्दिर में पत्थर की मूर्ति के आगे भी माथा रगड़ लेता है और घर आकर "पाथर पूजै हरि मिलै. . . .का जाप भी कर लेता है. राम कृष्ण को कल्पना बताने वाले दयानन्द के आर्य समाजी चेले अपने घर में दयानन्द के साथ साथ राम और कृष्ण की तस्वीरें भी टांगे रखते हैं. ब्राह्मणवाद ने हर हिन्दू को दिमागी तौर पर इतना असहाय और नाकारा बना दिया है कि वह तर्क करने की इच्छा तक खो बैठा है. आर्य समाजी तक इतनी हिम्मत/मनोबल नहीं है कि वह अपने घर सें राम अथवा दयानन्द में सें एक की तस्वीर बाहर फेंक दे! उसके दिमाग को ब्राह्मणों ने इस कदर पंगु कर दिया है कि उसे लगता है कि दोनों को रखने में कोई हानि नहीं है पता नहीं मौके पर कौन सा काम आ जाए. इन में सें उसके तो कोई काम नहीं आता परन्तु ब्राह्मणों का धन्धा बेरोक टोक चलता रहता है.

बुद्ध ने ब्राह्मणवाद के सबसें बड़े शत्रु थे. उन्होंने ब्राह्मणवाद का लगभग सफाया ही कर दिया था लेकिन अपने धन्धे नुमा धर्म को फिर सें स्थापित करने के लिए, अपनी साम नीति का सहारा लेते हुए, उन्होंने अपने सब सें बड़े दुश्मन गौतम बुद्ध को ही अपने व्यभिचारी भगवान का अवतार घोषित कर दिया. ब्राह्मण बड़ी संख्या में बुद्ध धर्म में शामिल हो गए और उन्होंने बुद्ध धर्म के नाम पर तन्त्रवाद शुरू कर दिया. कुमारिल भट्ट ऐसा ही एक ब्राह्मण था. वह अपने गिरोह के साथ दिखावे के लिये बौद्ध भिक्षु बन गया. जब लोग उसे मानने लग गये तो वह अपने असली रूप में आ गया. उसने बौद्ध भिक्षु का चोला पहने पहने ही ब्राह्मणवाद का प्रचार करना आरंभ कर दिया. उससें लोगों को लगने लगा कि जब बौद्ध भिक्षु ही ब्राह्मणवाद का प्रचार कर रहे हैं तो ब्राह्मणवाद अवश्य बौद्ध धर्म सें अच्छा होगा. लोगों को यह भी लगा कि जरूर कोई कारण रहा होगा जिसकी वजह सें इतने भिक्षु बौद्ध संघ को छोड़ कर उसके विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं.

ब्राह्मण नागार्जुन भी ऐसा ही धोखेबाज था. उसने जानबूझ कर बौद्ध भिक्षु का भेश बनाया और बुद्ध धर्म का प्रचार करने लग गया. कुछ दिनों के बाद उसने बुद्ध के साथ ब्राह्मणिक देवों और ग्रन्थों का प्रचार करना भी शुरू कर दिया. उसने दोनों को एक समान बता कर प्रचार करना शुरू कर दिया. लोगों को लगने लग गया कि दोनों धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. इस तरह हत्यारे पुष्यमित्र ने बौद्धों को शारीरिक रूप सें समाप्त किया और नागार्जुन और कुमारिल जैसे धोखेबाजों ने भीतर घुस कर बुद्ध धर्म का स्वरूप बिगाड़ दिया. नतीजा यह रहा कि ब्राह्मणों ने विश्व के सर्वश्रेष्ठ धर्म यानि अपने सबसें सक्षम दुश्मन बुद्ध धर्म को तहस नहस कर दिया.

ऐसी ही प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्ट के साथ किया गया. उन्होंने चौथी सदी में ही बता दिया था कि धरती सूर्य के इर्द गिर्द घूमती है. उन्होंने धरती के चलने की सही सही गति बताई कि धरती पल के छटे भाग में एक कला चलती है. ब्राह्मण उनकी इस बात को सहन नहीं कर पाये क्यों कि :

1. आर्यभट्ट शूद्र थे और ब्राह्मण सदा सें ही शूद्रों के दुश्मन रहे हैं.
2. ब्राह्मणों के वेद यह प्रचार करते थे कि सूर्य देवता है जो सात घोड़ों के रथ पर सवार होकर चलता है. जो समय असमय कुंतीयों के पास बच्चे पैदा करने भी चला जाता है.
3. उन्होंने हर प्राकृतिक घटना जैसे सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, आंधी तूफान आदि की वैज्ञानिक व्याख्या की. कब कहां ग्रहण होगा, कब कैसे बारिश होगी आदि का सही अनुमान बताया. इसकी वजह सें ब्राह्मणों का धन्धा चौपट होने के आसार हो गए. तब उन्होंने अपने चिर परिचित साम दाम दण्ड भेद की नीति के हथकण्डे अपनाने शुरू कर दिये. सबसें पहले उन्होंने यह नियम बनाया कि जो लोग नक्षत्र विज्ञान पढ़ते हैं उनका सामाजिक वहिष्कार कर दिया जाए. अगर कोई ब्राह्मण नक्षत्र विद्या ग्रहण करे तो उसे यज्ञ तथा श्राद्ध आदि में न बुलाया जाए. उन्हें दान न दिया जाए. ऐसा ब्राह्मण चाहे कितनी भी उम्र का हो अथवा वृहस्पति जैसा विद्वान भी क्यों न हो (अत्रि सं 385)

महाभारत में भी आदेश है कि नक्षत्रों का अध्यन करने वाले ब्राह्मण को अन्य ब्राह्मणों के बराबर पंक्ति में भोजन नहीं परोसना चाहिए. ऐसे ब्राह्मण द्वारा खाया गया श्राद्ध पितरों के पास नहीं जाता बल्कि शैतानों के पेट में जाता है. (अनु पर्व 90) मनु स्मृति में भी ऐसे ही निर्देश दिए गए हैं.

इसके साथ साथ ब्राह्मणों ने यह दुष्प्रचार भी करना शुरू कर दिया कि जब नक्षत्र वैज्ञानिक ग्रहों की चाल देख रहे होते हैं तो उन्हें अपनी पत्नि की चालों का पता नहीं होता कि वह किस के साथ समागम कर रही होती है.

सबसें घातक चाल जो उन्होंने चली वह थी कि वराह मिहिर नामक ब्राह्मण को आर्यभट्ट खेमे में पहुंचा दिया. उसने कुछ समय तक नक्षत्र विद्या पढ़ने का ड्रामा किया. फिर लोगों को ग्रहों की चाल के आधार पर भूत भविष्य बताने का धन्धा शुरू कर दिया. उसने आर्यभट्ट की महान पुस्तक आर्यभट्टीम् में अनेको श्लोक अपने घुसेड़ दिये. नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मण एक शूद्र विद्वान को मारने में सफल हो गए तथा साथ में ज्योतिष का धन्धा भी चलाने में कामयाब हो गए. ब्राह्मण आज हर गली मौहल्ले हर टीवी चैनल हर अखबार में यही धन्धा करते नजर आ रहे हैं. जन्मपत्री टेवा और पता नहीं क्या कुछ बनाने लग गए हैं. रिक्शा चालक सें लेकर प्रधान मन्त्री तक को ग्रह चाल में फंसा कर धन ऐंठने में लगे हुए हैं. इन्दिरा गांधी ने कितने ही तांत्रिक पाल रखे थे लेकिन जब गोलियां चली कोई बचाने नहीं आया. राजीव गांधी की जब हत्या हुई तो उसकी लाश तक नहीं मिली. इतना कुछ होने के बावजूद भी लोग इनके चंगुल सें निकल नहीं पा रहे हैं.

गौतम बुद्ध ने भिक्षु संघ की संरचना की थी ताकि लोग घर परिवार के मोह सें मुक्त होकर समाज सुधार में अपना पूरा समय लगा सकें. बुद्ध के भिक्षु–संघ के बराबर इन ब्राह्मवादियों ने आज भारत में करोड़ों भगवा भेश धारी साधुओं की फौज खड़ी कर दी है जो समाज की गाढ़ी खून पसीने की कमाई उड़ाने में लगे हुए हैं. जहां बौद्ध भिक्षु दो जोड़ी सें अधिक वस्त्र नहीं रख सकते या अपनी जमीन नहीं खरीद सकते ब्राह्मणधर्म के ये महाराज विदेशी वस्त्र पीनते हैं महलों सें भी बड़े आश्रमों में ऐश करते हैं. साम नीति के तहत उन्होंने चोला तो भिक्षु का धारण कर लिया मगर कर्मकांड अपने ही किये.

ऐसे में भगवन बुद्ध बोले "पहले तीन ही रोग होते थे इच्छा, भूख और बुढापा किन्तु ब्राह्मणों के पशु हत्या के कारण 98 रोग पैदा हो गये हैं." (गोमाँस 85) साम नीति के तहत ब्राह्मणों ने भगवन बुद्ध की इस बात को अपनाने का ढकोसला किया और गौमांस सहित सभी मांस खाने छोड़ दिए लेकिन बुद्ध को पूजने की बजाए गाय चराने वाला मगर लम्पट भगवान घढ़ दिया.

ब्राह्मण परशु राम सें लेकर नेहरू तक भारत की सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था पर ब्राह्मणों का अधिकार तथा श्रेष्ठता बेरोकटोक कायम है. यहां तक कि गरीबों की पार्टी कही जाने वाली कम्युनिस्ट पार्टी की केरल और बंगाल की सरकारें भी ब्राह्मणवाद के चंगुल सें मुक्त नहीं हैं. वहां भी पार्टी के कर्ता धर्ता तथा मुख्यमंत्री तक सभी ब्राह्मण हैं.

इसी साम नीति के तहत ब्राह्मणों ने दूसरों के देवी देवताओं को अपने नाम दिए. मुरूगन को सुब्रह्मण्य, अव्वे को दुर्गा/पार्वती बना दिया गया. मेयन को सूर्य, माल को विष्णु, कावेरी को दक्षिण गंगा, पांड्य वंश को पांडव तथा अगतियन को अगस्त्य बना दिया. मीनाक्षी का विवाह शिव सें कराने की कथा रच दी. (समु 1.11)

अपने सबसें बड़े दुश्मन बुद्ध धर्म को नष्ट करने के लिए साम और दण्ड की नीतियां अपनाई. प्रथम सदी ईसा पूर्व में ब्राह्मणों ने दण्ड नीति के तहत सम्राट वृहदर्थ की हत्या करने के बाद बौद्धों का कत्लेआम किया मगर पूरे भारत को दण्ड नहीं दिया जा सकता था. अतः साम नीति के तहत उन्होंने बुद्ध को विष्णु का अवतार घोषित कर दिया तथा साथ ही बुद्ध धर्म के सारे निशान अपना लिए. उदाहरणतः

1. तब ब्राह्मणों ने बलि वाले बड़े बड़े यज्ञ करने की जगह भगवन बुद्ध द्वारा बताई तथा महात्मा रावण द्वारा स्थापित होम यानि हवन करने की प्रथा को अपनाया. यज्ञों में सें स्त्री भोग की प्रथा को तिलांजलि दी.
2. बलि वाले बड़े बड़े यज्ञ छोड़े तो साथ में यज्ञ के सुप्रीम देवता इन्द्र को भी उठा कर बाहर फैंक दिया.
3. गौतम बुद्ध तथा महात्मा रावण ने यज्ञों में गाय मारने का विरोध किया था. तब ब्राह्मणों ने एक हाथ और आगे जाकर गाय को पवित्र ही घोषित कर दिया.
4. ''बेटी चोद" ब्रह्मा को तिरस्कृत कर दिया. उसकी जगह अन्य अवतारों की रचना कर डाली.
5. बुद्ध के सदाचार के नियमों को तोड़ मरोड़ कर अपने ग्रन्थों में घुसेड़ दिया.
6. बुद्ध को अपना अवतार घोषित कर दिया लेकिन आज तक किसी मन्दिर में बुद्ध की मूर्ति नहीं लगाई. गांधी ने उन्हीं की तर्ज पर अगले जन्म में हरिजन बनने की बातें की.
7. ब्राह्मण ऋषि पतंजलि के उकसाने पर जातिय अपमान का बदला लेने के लिए ब्राह्मण पुश्यमित्र ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या की. (समु 5.142) अतः ब्राह्मण जाति के अपमान का बदला लेने के एवज में पुश्यमित्र शुंग सरीखे हत्यारे, जिसने सम्राट वृहदर्थ का कत्ल किया, को अवतार घोषित कर दिया. पुश्यमित्र को "परशु" तथा उसके कत्लेआम को क्षत्रियों का कत्लेआम बना दिया गया.
8. प्राचीन काल में ब्राह्मणों में मूर्तिपूजा नहीं होती थी. किसी भी वेद उननिषद आदि में किसी देव की मूर्ति बनाने का कोई जिक्र नहीं है. वे केवल यज्ञ के कर्मकांडों को ही धर्म मानते थे. भारत में सबसें पहले

भगवन बुद्ध की मूर्ति बनाई गई थी. जब ब्राह्मणों ने बौद्धों का कत्लेआम किया तो अपनी धूर्त रणनीति के तहत उन्होंने मूर्तिपूजा को तो जारी रखा मगर बुद्ध की जगह विष्णु आदि की मुर्तियां बना लीं. आचार्य चतुरसेन भी मानते हैं कि ब्राह्मणों ने मूर्तिपूजा बुद्ध धर्म सें अपनाई. (दृग स्पर्श 34)

इस प्रकार साम नीति का सहारा लेकर ब्राह्मणों ने दुनिया के सबसें सुन्दर धर्म को भारत भूमि सें खदेड़ दिया.

2.1 दाम

अपने शत्रु को समाप्त करने के लिए ब्राह्मणधर्म की दूसरी नीति है **दाम**. अर्थ शास्त्र के अनुसार दाम का अर्थ है : धन आदि के द्वारा उपकार करना. सीधे सपाट शब्दों में इसका अर्थ है रिश्वत खोरी. पैसा देकर या पैसा लेकर अपना काम सिद्ध करना.

इसी नीति के तहत राम ने गद्दार विभीषण को लंका युद्ध सें पहले ही वहां का राजा घोषित कर दिया. राम ने उसे उसकी गद्दारी का एडवांस में दाम दे दिया ताकि कहीं ऐन मौके पर वह उससें भी धोखा न कर जाए. जब ब्राह्मण प्रधान मन्त्री नरसिम्हाराव ने अपनी गद्दी बचाने के लिए विरोधी दल के नेताओं को दाम देकर वोट खरीदे तो उसने भी इसी ब्राह्मणवादी नुस्खे को आजमाया था. दाम की नीति के तहत ही तो बहुतेरे दलित एम पी, एम एल ए को ब्राह्मणवादी दलों ने बिकाउ माल बना दिया है.

ब्राह्मणधर्मियों ने दाम की खातिर देश को गुलाम करवा दिया था, इस तथ्य को सारी दुनिया जानती है. राजा दाहिर को एक ब्राह्मण ने ही हरवाया था जिसके बाद ही भारत में विदेशी लुटेरे राज कर पाए. दाम की खातिर तो गंगू ब्राह्मण ने गुरू गोबिंद सिंह के दो साहिबजादों को जिन्दा दीवार में चिनवा दिया था. दाम की खातिर ही ब्राह्मण ऋषि अजीगर्त स्वयं अपने हाथों सें अपने ही बेटे को यज्ञ में काटने को तैयार हो गया था. दाम लेकर ही तो शूद्र शिवाजी को ब्राह्मणों ने उसे छत्रपति क्षत्रिय घोषित कर दिया था. शेष ब्राह्मणधर्म में तो ब्राह्मण को दाम देकर किसी भी देवता को खुश कराया जा सकता है, किसी भी ग्रह को शांत करवाया जा सकता है. दाम ऐसी चीज है ब्राह्मणों के लिए!!

2.2 दण्ड

विरोधी को जान सें मार देना, उसे पीड़ा पहुंचाना या उसके धन का अपहरण करना आदि कार्य "दण्ड" कहलाता है. आज के समय में शांति प्रेम और भाईचारे का राग अलापने वाले ब्राह्मणों ने अपना वर्चस्व कायम करने के लिए इतना खून बहाया है जिसका दुनिया में कहीं कोई सानी नहीं है. अगर ब्राह्मण गन्थों पर विश्वास कर लें तो अकेले परशु नामक ब्राह्मण ने ऐसे लाखों लोगों की हत्या की है जिन्होंने ब्राह्मण सत्ता को चुनौती देने की हिम्मत की. ब्राह्मणों का कोई देवता या भगवान या देवी ऐसी नहीं है जिसने अपने मत को न मानने वालों की हत्याएं न की हों. वेद सें लेकर पुराण तक ऐसी हत्याओं के किस्सों सें भरे पड़े हैं. काली नामक देवी तो मानव खून पीने तक सें नहीं कतराती थी.

बुद्ध धर्म को भारत सें नष्ट करने में ब्राह्मणों ने सबसें पहले इसी नीति का प्रयोग किया था. आधुनिक नामधारी बद्रिकाश्रम के संकराचारय ने भंडाफोड़ किया है कि आदि संकर ने भारत सें बौद्ध धर्म ज्ञान अथवा तर्क के बल पर नहीं बल्कि राजा सुन्धवा की सेना की मार काट की वजह सें मिटा पाया था. (समु 9.250)

ब्राह्मणों द्वारा दण्ड के बल पर दुश्मन को कुचलने का इससें बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि आज भारत की आधी सें ज्यादा आबादी शूद्र और अछूत बना दी गई है. बाबा साहिब के अनुसार ये लोग वे क्षत्रिय और बौद्ध हैं जिन्होंने ब्राह्मणवाद के काले कारनामों के विरुद्ध संघर्ष किया था. ब्राह्मणधर्मियों ने अपने दुश्मनों को कुचलने के लिए दण्ड नीति का खुल कर प्रयोग किया है.

1. चार्वाक ने ब्राह्मणवाद के धोखधड़ी के कामों के विरूद्ध आवाज उठाई अतः उन्हें पीट पीट कर मार डाला.
2. भगवन बुद्ध के सर्वप्रिय शिष्य मोगदलायन तिस्स को भी ब्राह्मणों ने मार डाला.
3. गुरू रैदास ने वेदों पुराणों राम कृष्ण की पोल खोली तो उन्हें लाठियों सें पीट पीट कर मार डाला.
4. मीरा ने राजपूत होने के बावजूद ब्राह्मण को छोड़ कर एक अछूत को गुरू बनाया. ब्राह्मणों के धन्धे पर यह सीधी चोट थी. अगर दलित ही गुरू बनने लग गए तो ब्राह्मणों को कौन पूछेगा उनकी तो रोजी रोटी ही मारी जएगी सो ब्राह्मणों ने उनकी हत्या कर दी. कहानी बना दी कि वह मूर्ति में समा गई जबकि उसने कभी कृष्ण का नाम ही नहीं लिया.
5. आर्यभट्ट की हत्या की गई.

6. मौर्य सम्राट वृहदर्थ की हत्या ब्राह्मणों द्वारा की गई. यह पहली राज हत्या थी जो भारत के इतिहास में हुई और यह हत्या ब्राह्मणों द्वारा की गई. तब सें गुलाम हुए शूद्र आज तक आजाद नहीं हो पाये हैं!!
7. हर रोज ही उन दलितों पर हमले होते ही रहते हैं जो ब्राह्मणधर्म के काले कानूनों के विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत करते हैं. किसी भी अखबार का कोई दिन खाली नहीं जाता जिसमें दलितों को मारने पीटने या बलात्कार की खबरें नहीं होती. हजारों सालों सें दलितों को दण्ड नीति के तहत ही कुचला जा रहा है.
8. पिछले दिनों गुजरात में मुस्लमानों का कत्लेआम इसी नीति के तहत किया गया. भारत के अधिकतर मुस्लमान दलित जातियों सें बने हैं. अतः ब्राह्मणधर्मी अब भी यही मानते हैं कि उन्हें दण्ड के जोर पर ही अपने अधीन रखा जा सकता है.

2.3 भेद

ब्राह्मणों की भेद नीति का सीधा सा अर्थ है फूट डालो और राज करो. भारतीय समाज में जितना भेद ब्राह्मणों ने पैदा किया है उतना बाकी धर्म वाले सौ जन्म में भी नहीं कर सकते. सारा समाज चार वर्णों में बंटा है. हर वर्ण जातियों में बंटा है. हर जाति उपजातियों में बंटी है. हरेक उपजाति में भी कई भेद हैं. उदाहरणतः अछूतों में रैगर जाति है. इस जाति में भी आगे सिन्धी रैगर, जैपरी रैगर, बागड़ी रैगर और मारवाड़ी रैगर हैं. सिन्धी रैगर अन्य रैगरों को अपने सें हेय समझता है. जैपरी और बागड़ी दोनों मारवाड़ी को हेय समझते हैं. अपने बस पड़े कोई भी आगे वाला रैगर पीछे वाले सें रिश्ता नहीं करता है. अथवा लड़की ले लेता है देता नहीं. स्वयं ब्राह्मणों के गौड़ में जोड़ है. नागर गोत्री ब्राह्मण अपने ही नागरी गोत्र में भेद के कारण दूसरे नागर को हेय मानता है तथा उससें रिश्ता नहीं जोड़ता. (अप्सरा में देखें.)

बाबा साहिब ने सटीक कहा है कि जातिवाद का भेद ब्राह्मणधर्म की आत्मा है और जिस व्यक्ति का किसी मान्यता प्राप्त जाति सें सम्बंध नहीं है वह हिन्दू हो ही नहीं सकता. (खण्ड 8.21) इस जाति भेद का सबसें अधिक लाभ या कहें तो एक मात्र लाभार्थी ब्राह्मण ही रहा है. आज आबादी का मात्र 3 प्रतिशत सें भी कम होने पर भी ब्राह्मण 70 प्रतिशत ए कलास पदों पर ब्राह्मणों का कब्जा है. सेना में चाहे सिख, राजपूत और दलित भरे पड़े हैं लेकिन आम तौर पर कमान ब्राह्मण अधिकारी के पास ही होती है. राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री के पद लगभग ब्राह्मण के कब्जे में ही रहे हैं. बीच में एकाध मनमोहन सिंह या जैल सिंह जैसे रबड़ सटैम्प भी आ जाते है.

सबसें अहम बात यह है कि मन्दिरों पर मात्र और मात्र ब्राह्मणों का कब्जा है. ब्राह्मणों द्वारा समाज में फैलाए जाति भेद के कारण कोई अन्य जाति वाले के दिलो दिमाग में यह बात आती ही नहीं है कि वह भी अपने धर्म के पूजा स्थल का पुजारी बने. बिरला जैसा बनिया पूरे पैसे लगा कर मन्दिर बना लेता है मगर वह कभी सपने में भी यह सोच ही नहीं पाता कि अपने द्वारा बनाए मन्दिर में स्वयं पुरोहिताई कर ले. जहां भी हो, पुरोहित ब्राह्मण ही बनेगा!

भेद नीति यानि "फूट डालो और राज करो" को अंग्रेजों के गले मढ़ा जाता है. यह एक मान्य बात है कि हर राजा नीचे वालों को बांट कर रखता है ताकि वे इक्कठे होकर उसकी कुर्सी के लिए खतरा न बन जाएं. बेशक अंग्रेजों ने भी ऐसा ही किया. मगर यह कहना सरासर गलत है कि भेद यानि फूट डालो और राज करो की नीति के जन्मदाता अंग्रेज हैं. उनके जन्म सें पहले ही वेद में यह लिखा जा चुका था कि ब्राह्मण महान हैं तथा शूद्र नीच हैं. उनके भारत आने सें पहले ही ब्राह्मणों और मुस्लमानों में दुश्मनी हो चुकी थी. अंग्रेजों के भारत आने सें सदियों पहले **सतगुरु कबीर साहिब** इस सच्चाई को उजागर कर चुके थेः

हिन्दु कहत हैं राम हमारा, मुसलिम कहें रहमाना,
आपस में दोउ लड़त मरत हैं, मर्म न कोउ जाना!!

अतः फूट डालो और राज करो की राजनीति ब्राह्मणधर्म की उपज है जिसके कारण वे पिछले दो हजार साल सें भारतीय समाज पर अपना कंट्रोल बनाए हुए है. **यह भी एक तथ्य है कि भारत की सत्ता प्रधान मन्त्री कार्यलय या राष्ट्रपति भवन सें नहीं बहती बल्कि सत्ता मठों, मंदिरों तथा आर एस एस के मुख्यालय सें कन्ट्रोल होती है.** यही कारण है कि आजादी के साठ साल बाद भी ब्राह्मणधर्म की दण्ड भेद की नीति जिन्दा है. आज भी दलित जाति के आधार पर मारे कुचले जा रहे हैं. आज भी अदालतें जाति के आधार पर ब्राह्मणधर्मी बलात्कारियों को इस आधार बरी कर रही हैं कि एक उच्च जाति का पुरुष तो अछूत महिला को छू भी नहीं सकता.

इस ब्राह्मणिक भेद नीति को मात्र बाबा साहिब तोड़ने में सफल रहे हैं जिन्होंने सदियों सें कुचले जा रहे दलितों को समानता का अधिकार दिलवाया. अतः दलितों को बाबा साहिब के इस कथन को हमेशा याद रखना चाहिए कि **केवल दलित ही जाति भेद को समाप्त करेंगे. भविष्य के भारत के वे ही सत्ताधीश होंगे!**

अध्याय 3

ब्राह्मणवाद के चार सतम्भ

धर्म
अर्थ
काम
मोक्ष

बाह्मणधर्म के कट्टर प्रचारक राधाकृष्णन का कहना है कि ब्राह्मणधर्म के चार प्रयोजन हैं : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष. वह ब्राह्मणधर्मियों को हिन्दू भी कहता है. दूसरे शब्दों में हर हिन्दू के यह चार प्रयोजन हैं. जो आदमी इन चार प्रयोजनों के लिए काम नहीं करता वह हिन्दू यानि ब्राह्मणधर्मी नहीं हो सकता. अतः ब्राह्मणवाद को समझने के लिए इन चार का अर्थ समझना अत्यावश्क है.

3.1 धर्म

सम्राट अशोक ने अपने एक शिलालेख में धर्म का अर्थ साधारण भाषा में इस प्रकार सें लिखा हैः

धम्म साधु, कियम चु धम्मे ति?
अपसिनवे, बहु कयणे, दया, दाने, सच्चे शोचये!!

अर्थात धर्म को सभी अच्छा बताते हैं लेकिन "धर्म" होता क्या है?
उत्तर है बहुल करूणा, दया, उदारता, सच्चाई और शुद्धता धर्म का निर्माण करते हैं.

दूसरे शब्दों में अगर आपके कामों में **करूणा, दया, उदारता, सच्चाई और शुद्धता** है तो इन्हें **धर्म** के काम कहा जायेगा, उसे **धर्म** कहा जायेगा!!

प्रश्न उठता है कि क्या ब्राह्मणधर्म में भी धर्म का यही अर्थ है. ब्राह्मणवाद का संविधान कहे जाने वाली मनु स्मृति में धर्म का अर्थ इस प्रकार सें किया गया है : वेद, स्मृति, बड़े लोगों का आचरण और अपने आत्म ज्ञान सें किये गये काम धर्म के लक्षण हैं. (1.131) तथा चार वर्णों और चार आश्रमों का पालित जो आचार है वह सदाचार कहलाता है. (1.137)

दयानन्द का कहना है कि भगवान ने वेदों के द्वारा जो काम करने की आज्ञा दी है वही धर्म है. जिसे करने की प्रेरणा नहीं की है वह अधर्म है. इस बात को सीधे शब्दों में कहें तो धर्म वह आचरण अर्थात काम है जो वेदों के अनुसार किया जाये, स्मृति के अनुसार किया जाये, जैसे बड़े लोगों (ऋषियों, देवों व ब्राह्मणिक नायकों आदि) ने किया वैसा काम किया जाये और अपने निजि ज्ञान सें किया जाये.

"सदाचार" वह जीवनचर्या अथवा काम है जो अपनी जाति या वर्ण के अनुसार किया जाये और चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास) के अनुसार किया जाये.

इन सभी बातों सें एक बात साफ है कि धर्म वह है जो वेदों स्मृतियों में कहा गया है. उससें बाहर की वस्तु अधर्म है. वर्ण व्यवस्था के अनुसार तथा चार आश्रमों के अनुसार जिंदगी गुजारना सदाचार है. दयानन्द ने तो वेद को ही धर्म माना है. मनु ने भी ऐसा ही कहा है. बस उसने बीच में एक शब्द और जोड़ दिया "सत्पुरुषों का आचरण".

ब्राह्मणवाद में सत्पुरुष कौन हुए हैं कि उनका आचरण अपनाया जाये. उनके धर्म में ब्राह्मण ऋषि तथा नायक ही सत्पुरुष हुए हैं. अतः युद्धिश्ठर, वशिष्ठ, दम, ऋश्यश्रृंग जैसे "सत्पुरुषों" द्वारा किया गया आचरण करना ही ब्राह्मणों के लिये धर्म है. सन्त सम्बूक जैसे दलितों को तो तपस्या करने का अधिकार ही न था. अतः उन्हें तो दण्ड स्वरूप तपस्या पर बैठे को ही राम जैसे ब्राह्मणिक नायक कत्ल कर देते थे.

ब्राह्मणधर्म के इन "सत्पुरुषों" या बड़े लोगों ने क्या क्या आचरण किया वह अध्याय 5 में वर्णित है. वेदों और स्मृतियों में जो कुछ वर्णित है वह भी इसी अध्याय तथा पुस्तक में आवश्यकता अनुसार अन्य स्थानों पर भी दिया गया है. **वेदों और स्मृतियों में बनाई गई जाति व्यवस्था ने भारत की जो दुर्दशा की है वह किसी को बताने की जरूरत नहीं. जो सिस्टम आदमी को आदमी नहीं समझता उसे धर्म कहा ही नहीं जा सकता. चार आश्रमों को**

मानने वाला भारत में न कभी कोई था और न अब है. पूरे ब्राह्मणवाद के इतिहास में एक भी आदमी ऐसा नहीं हुआ जिसने 25 साल ब्रह्मचार्य में काटे हों! या जो पचास साल का होकर (वानप्रस्थ) जंगल में चला गया हो! औरों की तो छोड़ें स्वयं दयानन्द ने भी चार आश्रम नहीं अपनाये.

3.1.1 ब्राह्मणिक धर्म का अर्थ

ब्राह्मणवाद में धर्म का अर्थ नैतिकता, पवित्रता, सदाचार अथवा परोपकार नहीं हैं. गीता में जिस यदा यदा हि "धर्मस्य" की बात की गई है यह वह धर्म नहीं है जिसे आम आदमी धर्म (मानवता, प्रेम करूणा आदि) मानता है. ब्राह्मणों का ''धर्म'' क्या है जिसे उनके भगवान समय समय पर बचाने आता है, उसका विवरण उनके धर्म ग्रन्थों में इस प्रकार सें दर्ज हैः

1. युद्धिष्ठर ब्राह्मणवाद का धर्मराज (धर्म का चीफ) कहा गया है. उसका वचन धर्म का वचन है ऐसा भी माना गया है. उसी युद्धिष्ठर के वचन अनुसार जब बड़े भाई का मन छोटे भाई की पत्नि पर डोल जाए तो उस स्त्री को सभी भाईयों द्वारा मिल कर भोगना ''धर्म'' है. पाँचों पांडवों ने सारी उम्र अकेली द्रोपदी को धर्मानुसार भोगा.
2. अगर पति अपनी पत्नि को किसी अन्य सें सहवास करने को कहे तो यह ब्राह्मणों का प्राचीन धर्म है. **सनातन धर्म.** (म भा 121.3)
3. पूर्वकाल (महाभारत सें पहले का समय) सत्ययुग में स्त्रियां कौमार्यावस्था में (शादी सें पहले) ही अनेकों पुरुषों सें मैथुन करती थी क्यों कि उस समय सत्ययुग का यही धर्म था. (म भा 121.122)
4. बालक श्वेतकेतु की माँ को एक ब्राह्मण पकड़ कर बलात्कार करता है तो वह अपने बाप ऋषि उद्दालक सें विनती करता है कि उसकी माँ को बचाया जाए तो ऋषि कहता है यह हमारा **''सनातन धर्म''** है कि ब्राह्मण किसी की भी माँ, बहन, बेटी सें कभी भी, कहीं भी अपनी वासना मिटा सकता है. (आदिपर्व.122)
5. बड़ा होने पर इसी ऋषि श्वेतकेतु ने नियम बनाया कि जो स्त्री अपने पति के कहने पर नियोग (गैर मर्द सें संभोग /बलात्कार) करने सें इन्कार करेगी तो यह ''अधर्म'' होगा तथा उसे भ्रूण हत्या का पाप लगेगा. (आदि.122) (समु 1.19)
6. छोटे भाई की युवा, सुन्दर विधवा (पत्नि) सें समागम क्षत्रियों का **"सनातन धर्म"** है. (आदि 103.25)
7. अश्वमेध यज्ञ में घोड़े के साथ पटरानी का समागम **"धर्म"** की कामना सें होता है. (बाल कांड 14.33) इस बात की पुष्टि दयानन्द भी करता है (स.प्र. 286 समुल्लास 11)
8. गैर पुरूष सें सम्बन्ध (नियोग) बना कर सन्तान पैदा करना धर्म है. (स.प्र. 112 समुल्लास 4) पति चाहे जीवित हो पांडू की तरह, अथवा मर गया हो विचित्रवीर्य की तरह अथवा स्त्री अभी कुंआरी हो विदुर की माँ की तरह! सभी धर्म है!!
9. मैथुन करते समय पति अगर मर जाए तो पत्नि को उसके साथ जल कर सती हो जाना चाहिए ताकि वह अगले जन्म में उसकी अतृप्त कामवासना पूरी करने का धर्म निभा सके. यह प्राचीन सनातन धर्म है. (आदिपर्व 124)
10. अगर बायीं जांघ पर कामासक्त स्त्री आकर बैठे तो उससें समागम **धर्म** है. उसकी वासना अतृप्त छोड़ना अधर्म है. अगर वह दायीं जांघ पर बैठे तो उसे बेटे को काम पूरा करने के लिए सौंप दिया जाना चाहिए. (आदि 97) गंगा जब शांतनु की बायीं जांघ पर आकर बैठी तो उसने ऐसा ही धर्म किया था.
11. कृष्ण अर्जुन को जूए में हारी सम्पत्ति व राज्य पुनः प्राप्त करने के लिए लड़ने मरने के लिए कहता है कि अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो इससें धर्म ओर नीति की हानि होगी. अतः जूए में हारी सम्पत्ति के लिए लड़ना मरना आर्यो का धर्म था, सनातन धर्म!! (गीता 2.33)
12. काली को भेंट देते समय बलि को रस्सें सें बांध कर उसका सिर काट कर खून कमल के पत्ते में रख कर देना धर्म है. (खण्ड 4.123)
13. कीमत लेकर कन्या किसी को देना **धर्म** है ऐसा स्वयं ब्रह्मा का माननो है. (आदि 112.9)
14. उत्तर रामचरित के चौथे अंक के अनुसार वेद के ज्ञानी अतिथि अर्थात ब्राह्मण के लिए दो साल तक की बछिया या बड़े बैल को पका कर खिलाना **धर्म** कार्य है. (समु 6.154)
15. कामातुर स्त्री को मांगने पर भोग नहीं दे तो अधर्म होता है. (आदि 83.32) उसके साथ एक रात बिताना धर्म है (आदि 214)

16. स्त्रियां स्वछंद अनियंत्रित हैं वे कुंआरी होते हुए भी किसी सें भी भोग करें यही **सनातन धर्म** है. (आदि 122) पांडू ने बताया कि यह धाार्मिक सिद्धांत सनातन है. कुरू में अब भी ऐसा ही है तथा यही **प्राचीन सनातन धर्म कुन्ती को सूर्य ने बताया था.** (आदि 1112) (राज 84)

17. अपनी पत्नि अथवा दासी को मित्र को उधार देना धर्म है. (उद्योग पर्व 45) (अनुशासन 2) घर आए अतिथि (ब्राह्मण) सें अपनी पत्नि का समागम करवाना धर्म है. भीष्म कहता है ऐसा करवाने वाले पुरूष को स्वर्ग का सुख मिलता है. (अनुशासन 2) यानि पत्नि की दल्लागिरी करने वाले को स्वर्ग!

18. एक पुरुष द्वारा अनेकों स्त्रियों सें यौन सम्बंध बनाना धर्म है. (आदि 158)

19. दक्ष ने अपनी कन्या अपने बाप को ब्रह्मा को भेंट कर दी. ब्रह्मा ने उसके साथ भोग करके नारद पैदा किया. दस प्रचेताओं और सोम ने अपनी बेटी सें कुकर्म किया ओर दक्ष प्रजापति पैदा किया. प्रजापति के जब सन्तान पैदा हुई तो उसने 27 कन्याएं अपने बाप को बच्चे पैदा करने के लिए दे दीं!! (हरिवंश 2).(राज 75)

महाभारत में वैशम्पायन ने यह कहानी जनमेजय को सुनाई तो वह बोला कि **ब्रह्मा और उसके बेटों द्वारा यह अधर्म क्यों किया गया तो वैशम्पायन बोला उस समय (सत्तयुग में) आर्यों का यही धर्म था. ब्राह्मण इसी को धर्म बताते हैं.**(हरिवंश 3).(राज 75)

20. मृत पति के साथ जल मरना प्राचीन सनातन धर्म है. (अथर्व 18.3.1) (समु3.72)

21. ब्राह्मण सें नियोग करवाने पर धर्म होता है. अन्य सें करवाने पर धर्म का नाश होता है. (मनु 9.64)

22. वशिष्ठ जब भगवान वाल्मिकी के आश्रम में गया तो उनकी बछिया पका कर खा गया. धर्म सूत्र लिखने वाले इसे धार्मिक कर्म बताते हैं. (समु 6.154)

23. अबोध बालिका सें बीच नदी के बलात्कार करने वाले को धर्मज्ञ अर्थात **धर्म** का ज्ञाता कहा गया है. (आदि 97)

24. असली ब्राह्मण धर्म की परिभाषा आर्यों के पितामह (बाप के बाप) भीष्म ने दी है. उसका कहना है कि **बलवान मनुष्य जिस चीज को धर्म बतलाता है वही धर्म है क्यों कि लोग उसे धर्म मान लेते हैं. कमजोर जो धर्म बतलाता है वह ताकतवर के बताए धर्म के नीचे दब जाता है. (सभापर्व 69.15)** यही कारण है कि राम कृष्ण बलवान थे इसलिए उनके कुकर्म भी धर्म कहलाते हैं. सन्त बलहीन थे उनका धर्म ब्राह्मणों के अधर्म के नीचे दब गया. ब्राह्मणों ने अपने अधर्म को बनाए रखने के लिए हमेशा ताकत का साथ लिया. **इसलिए पहले उनका गाय खाना भी धर्म था और अब गाय पूजना भी धर्म है!!**

अजामेध, गोमेध यज्ञ अश्मेध नरमेध, कहै कबीर अधर्म को धर्म बतावैं वेद!!
जीव हनै हिंसा करै प्रगट पाप सिर होय, निगम सुन ऐसे पाप की, सुरग गया ना कोय!!

(अर्थात यज्ञ में बकरा काटना, गाय काटना, घोड़ा काटना और आदमी को काटना **अधर्म** है लेकिन वेद इसे धर्म बताते हैं.

25. मनु (5.44) भी कहता है कि वेद ही धर्म है. दयानन्द भी कहता है कि जो कुछ वेद में हे वह सब धर्म है. चाहे इस में नर बलि पशु बलि गाय घोड़े मार कर खाने की बात हो वासना का नंगा नाच हो श्राब पीना हो सब धर्म है ब्राह्मणों का सनातन धर्म!!

26. कृष्ण का कहना है (गीता 1.40) कि जब धर्म नष्ट हो जाता है तो वर्णसंकर बच्चे तब पैदा होते है. अतः एक जाति वाली स्त्री को अपनी जाति के पुरुष सें ही सम्बंध बनाने चाहिए. जहां दो जातियों के स्त्री पुरुष ने बच्चे पैदा किये नहीं कि धर्म नष्ट हुआ समझो. ऐसी सन्तान कुलघाती और कुल को नरक में ले जाने वाली होती है. अगर गीता सही है तब तो इन्दिरा गांधी ने फिरोज सें बच्चे पैदा करके धर्म का नाश किया है. कृष्ण की गीता के अनुसार तो राजीव गांधी और संजय गांधी दोनों कुलघाती हैं और राजीव गांधी के दोनों बच्चे कुलघाती हैं.

27. महाभारत में राजा नल की कथा है कि वह महाधर्मी राजा था. नित्य जूआ खेलता था. नित्य यज्ञों में पशु काट कर ब्राह्मणों को परोसता था. ब्राह्मणों के अनुसार उसने कोई काम भी धर्म के विरुद्ध नहीं किया लेकिन एक दिन बिना मूते संध्या करने बैठ गया. बस धर्म का नाश हो गया. धर्म का नाश हुआ तो उसका भी नाश हो गया. वह जूए में सब कुछ हार गया. बस बीवी बची उसे लेकर वह जंगल में चला गया. सो मूत कर संध्या करना धर्म है बिना मूते संध्या करना अधर्म है.

28. भरत गद्दी का असली हकदार था. उसके बाप ने गद्दी राम को देने की साजिश की लेकिन नाकाम रहा. राम लक्ष्मण सीता वन में चले गए. भरत गद्दी पर नहीं बैठा बल्कि राम को मनाने वन में गया. उसे देख कर लक्ष्मण ने राम सें कहा इसकी वजह सें तुझे गद्दी नहीं मिल पाई है इसलिए इसे मारने में अधर्म नहीं होगा.

अतः जिस आदमी सें कोई हानि होती हो उसे मारना धर्म है. चाहे इसमें उसकी कोई गलती न हो. (अयोध्या 96)

29. माँ चाहे भीख को बांटने के लिए कहे लेकिन अगर सभी भाई अपने एक भाई की पत्नि सें व्यभिचार दुराचार करें तो वह **सनातन धर्म** है. जो धूर्त अपनी वासना मिटाने के लिए माँ की सीधी बात का अपनी मर्जी सें अर्थ निकाले वह ब्राह्मणवाद में धर्म राज कहा जाता है : धर्म पर राज करने वाला!! अगर स्त्री भी अपने पति के अतिरिक्त दूसरों की सहवासनी बने तो यह धर्म–सम्मत है.

30. धर्मज्ञों (धर्म के एक्सपर्ट विद्वानों) का कहना है कि क्षत्रियों द्वारा शादी के मण्डप में सें वधु का बलपूर्वक हरण अच्छा काम है धर्म है. (म भा 121.221) अतः शादी के लिए किसी की बहन बेटी को अगवा कर लेना अधर्म नहीं है. तभी तो तथाकथ्ति ब्रह्मचारी भीष्म ने अंबा और उसकी दो बहनों का शादी के मंडप सें जबरन उठा लिया. ऐसा आदमी आर्यों का पितामह (बाप का बाप) कहलाया. कृष्ण ने शादी के समय अपनी बहन सुभद्रा शादीसुदा अर्जुन के हाथों अगवा करा दी. वह भगवान कहलाया. विष्णु ने साध्वी वृंदा सें जबरन बलात्कार किया तो वह प्रजापालक भगवान कहलाया. हनुमान नें राम सें सोलह कुआंरी कमसिन लड़कियां ली तो वह यति, ब्रह्मचारी कहलाया. पवन ने हनुमान की माँ अंजनि सें व्यभिचार करके हनुमान को पैदा किया तो वह देवता कहलाया. शिव सदा वासना में डूबा रहने के कारण लिंग बना दिया गया. वह सर्वनाशक भगवान कहलाया. यही ब्राह्मणों का धर्म है! सनातन धर्म!!

3.1.2 ब्राह्मण धर्म के गूढ़ रहस्य

ब्राह्मणों ने धर्म को प्राचीन काल सें ही गूढ़ रहस्य बना रखा था और आज भी बना रखा है. भगवन बुद्ध के अनुसार धर्म का मुख्य काम लोगों को नित्य जीवन में शुद्ध और नैतिक आचरण सिखाना है और ऐसे मार्ग पर चलाना है. इसमें रहस्य नाम की कोई चीज नहीं है. भगवन बुद्ध ने जब अपना धर्म चलाया तो वे बोले **एहि पस्सको अर्थात आओ देखो.** उन्होंने धर्म का कोई रहस्य नहीं बनाया. उन्होंने जो कहा, जो किया सबके सामने कहा सबके सामने किया. सब लोगों ने उसको समझा. वे बोले **अत्त दीपो भवः अर्थात अपना दीपक स्वयं बनो.** अपना भला बुरा स्वयं जांचो.

लेकिन ब्राह्मणों ने शुरू सें लेकर आज तक धर्म के नाम पर धन्धा किया है. ब्राह्मणवादियों ने घोषणा की **"धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायम" अर्थात धर्म के तत्व अत्यंत गुप्त हैं.** ब्राह्मणों जब भी अधर्म करके लोगों के सीधे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाये तो उन्होंने अपनी गलती मानने की बजाये यह लाईन दोहरा दी.

1. जब युद्धिश्ठर अपने छोटे भाई की पत्नि को जूए में हार गया तो प्रश्न उठा कि क्या "धर्म का राजा" कहे जाने वाले युधिष्ठर ने अधर्म किया है तो युद्धिश्ठर बोला **"धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायम" अर्थात धर्म के तत्व अत्यंत गुप्त हैं.** मैने जो पाप किया वह अधर्म है या धर्म बताना सम्भव नहीं है. जबकि बच्चा भी जानता है कि उस ब्राह्मणिक "सत्पुरुष" ने घोर पाप किया था. अगर आज के समय में उसने यह हरकत की होती तो पुलिस वालों ने और अदालत ने उसे सब कुछ समझा दिया होता!!
2. जब ब्रह्मा ने अपनी बेटी भोगी तो लोगों ने कहा कि उसने ऐसा पाप क्यों किया तो ब्राह्मणों ने यह बात दोहरा दी कि ब्रह्मा तो जगत का बाप है. उसके ऐसे काम पाप हैं या नहीं, बताया नहीं जा सकता!
3. कृष्ण ने अपनी कुंआरी बहन शादीशुदा अर्जुन के हाथों अगवा करा दी तो ब्राह्मणों ने यह बात दोहरा दी.
4. राम ने पूरे दिनों की गर्भवती सीता को जंगल में मरने के लिये छोड़ दिया तो ब्राह्मणों ने यह बात दोहरा दी.
5. पूजा पर बैठे इन्द्रजीत मेघनाद का गला लक्ष्मण ने काट दिया तो ब्राह्मणों ने यह बात दोहरा दी.
6. इसी नीति के तहत ब्राह्मणों ने सारे कर्मकांड गुप्त रखे हुए हैं. उन्होंने अपने सारे कर्मकांड संस्कृत भाषा में बनाए तथा संस्कृत को गुप्त भाषा बना कर रखा. किसी अन्य जाति वाले को संस्कृत नहीं सिखाई. नतीजा यह हुआ कि आज कोई भी कर्मकांड ब्राह्मण के सिवाय कोई नहीं कर सकता.

3.1.3 दयानन्दी आर्य समाज का नया शोशा

पिछली सदी में दयानन्द नामक ब्राह्मण ने एक बार फिर सें वेदों के पक्ष में आवाज उठाई. उसने "आर्य समाज" नामक विचार धारा की शुरुआत की. एक कहावत है सावन में अन्धे को हरा ही हरा दिखाई देता है. कुछ ऐसा ही हाल दयानन्द का वेदों को लेकर हुआ. उसे सब ओर वेद ही वेद दिखाई देते थे. वे वेद जिन्हें ब्राह्मण भी कभी का दफन कर चुके थे उसने फिर सें ब्राह्मणवाद पर लादने की कोशिश की. उसने राम कृष्ण आदि को

नकली बताया और वेद को सत्य बताया. यह सीधे सीधे ब्राह्मणों कर रोजी रोटी पर हमला था. नतीजा उसके साथ भी वही हुआ जो ब्राह्मणों ने राजा वेण, निमि और सुदास के साथ किया था.

उसके आर्य समाज के मुख्य नियम थे :

1. वेद ईश्वर के बनाए हुए हैं. उनमें दर्ज ज्ञान सर्वश्रेष्ठ, सर्वोच्च तथा सर्वकालिक है.
2. जो कुछ आदर्श अथवा नियम वेदों में दिए गए है उन पर आधारित समाज अगर बने तो वह सर्वश्रेष्ठ समाज होगा. जो वेदों में नहीं है उसे अपनाना अधर्म है.
3. वेद आज्ञा है कि हर स्त्री के लिए दस पुत्र पैदा करना अनिवार्य हैं. अगर उसका पति दस पुत्र पैदा करने सें पहले मर जाए तो भी उसे अपने सगे सम्बंधी या ब्राह्मण सें नियोग करवा कर दस पुत्रों का आंकड़ा अवश्य प्राप्त करना चाहिए. नियोग को रोकने में पाप है. (सत्यार्थ प्रकाश 4)
4. यज्ञ अनिवार्य हैं. यज्ञ की धूंआ सें वातावरण साफ होता है. जहां यज्ञ में पशु मारना लिखा है वह गलत है. वेद में "मांस" का अर्थ फल का गूदा और "चमड़े" का अर्थ फल का छिलका है. यजुर्वेद में जो अश्लील मन्त्र हैं उनका अर्थ भी गलत है. वहां "स्त्री अंग" का अर्थ "प्रजा" है और पुरुष अंग का अर्थ राजा है आदि.
5. वैसे तो यज्ञ में मांस का अर्थ फल का गूदा है लेकिन जहां यज्ञ में गाय की बलि देने की बात कही गई है वहां बूढ़ी और बांझ गाय मारने की बात कही गई है. (सत्यार्थ प्रकाश 4)
6. वेद उसी दिन बनाए गए जिस दिन भगवान ने दुनिया बनाई थी. दयानन्द कहता है कि वेद 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 52 हजार 976 साल पहले रचे गये. जिस दिन दुनिया पैदा हुई थी और उसी दिन वेद रच दिये गये. (ऋग्वेद भा. भू. 23) लेकिन दयानन्द यह नहीं बताता कि अगर जिस दिन दुनिया बनी उसी दिन वेद बने तो वेदों में जो लाखों लोगों को मार दिये जाने का उल्लेख है तो उन्हें दुनिया बनने सें पहले ही कैसे मार दिये गया. इस बात का उत्तर देते हुए दयानन्द कहता है कि जो लोग तर्क द्वारा ऐसी बातें करें उन्हें देश निकाला दे दिया जाये. (स.प्र. 53)
7. ब्राह्मण की सर्वोच्चता : वेद ने ब्राह्मण को जन्म सें उच्च माना है लेकिन दयानन्द वेद के विरूद्ध जाकर शुद्धिकरण की नई तकनीक निकाल कर लाया है. उसने वेद मन्त्र पढ़ कर कईयों को शुद्ध करके ब्राह्मण बना दिया. वे बेचारे आज न घर के हैं न घाट के!!

दयानन्द की ऐसी बकवास के प्रति बाबा साहिब अम्बेडकर ने सही कहा है कि जब तक आर्य समाज का पूरी तरह सें नाश नहीं होता हिन्दू समाज में सुधार नहीं हो सकता. (Vol. 7.14) आज भारत में आर्य समाज के कुछेक संस्थान विशेषतः डी ए वी स्कूल आदि बचे हैं. दयानन्द को आर्य समाजी कभी का दफन कर चुके हैं. किसी भी आर्य समाजी ने कभी भी नियोग न किया और न करवाया है. गायत्री मन्त्र के जाप करने तथा डी ए वी संस्थाओं का चन्दा खाने के सिवाय आज आर्य समाजियों में दयानन्द का कुछ भी शेष नहीं रह गया है.

3.1.4 पाप छुटाने के ब्राह्मणधर्मी रास्ते

पाप क्या है : ब्राह्मणवाद के लगभग सभी कर्मकांड मनुष्य के पाप छुड़ाने का वचन देते हैं. प्रश्न उठता है कि पाप क्या होता है. पाप क्या है यह बताना लगभग उतना ही मुश्किल है जितना यह बता पाना कि हिन्दू कौन होता है. लेकिन इतना निश्चित है कि जुर्म अथवा अपराध सें पाप कहीं अधिक बड़ा, अधिक घातक और अधिक नीच काम होता है. यातायात नियमों का उल्लंघन अपराध है, पाप नहीं. बड़े सेठ की कार चोरी भी शायद पाप न हो लेकिन गरीब मजदूर की साइकल चोरी भी पाप हो सकता है. अतः पाप वह है जो शिकार हुए प्राणी का तन मन सब कुछ आहत कर देता है. माँ बाप की हत्या, धोखा, बलात्कार जैसे कर्म सदैव पाप ही होते हैं लेकिन ब्राह्मण ग्रन्थ ऐसे पाप भी छुड़वाने के आसान उपाय बताते हैं. जैसे ब्राह्मण को धन, स्त्री, पशु आदि का दान दो और सभी पापों सें मुक्ति पाओ. उदाहरणतः

1. ब्राह्मणों का भगवान मनु आदेश देता है कि जो पुरुष श्राद्ध करने आए ब्राह्मण का शूद्र स्त्री सें मैथुन करवाता है तो उसके सारे पाप उतर जाते हैं क्योंकि उस के सारे पाप वह ब्राह्मण ले लेता है. (मनु 3. 191)
2. कथा है कि एक बार एक सूअर भागता हुआ एक मुस्लमान सें टकरा गया. वह मरते हुए बोला हराम ने टक्कर मार दी. राम ने समझा मुझे बुलाया है. वह भागा आया और उस मुस्लमान को सद्गति दे दी. इसका अर्थ यह हुआ कि अगर लोग मरते समय राम की बजाए हराम बोलेंगे तो भी **मोक्ष** मिल जाएगा,

ऐसा ब्राह्मणवाद का प्रचार है. सारी उम्र पाप करो, बस मरते समय हराम कहो पाप तो माफ हो ही जाएंगे मोक्ष भी मिल जाएगा. वैसे यह तथ्य है कि राम और हराम में कोई खास अन्तर भी नहीं है.

3. कृष्ण का कहना है कि अगर तू सब पापियों सें भी ज्यादा पाप करने वाला है तो भी गीता के ज्ञानरूपी नौका सें सारे पापों सें पार हो जाएगा. (गीता 4.36,37) यह तो आसान सा काम है पाप किये जाओ और गीता पढ़ लो, पाप खत्म हो जाएंगे. तभी तो कृष्ण ने अपनी मामी राधा और बहन सुभद्रा को भी नहीं छोड़ा. बाद में अपनी बहन को गैर मर्द के हाथों अगवा करवा दिया. जब उसकी बताई गीता पढ़ने सें ही पाप मिट जाते हैं तो उसे स्वयं तो कोई पाप लग ही नहीं सकता!

4. अगर कोई गीता पढ़ने की जहमत अथवा हिम्मत न कर पाये तो उसके लिये आसान उपाय यह है कि वह कृष्ण की शरण में चला जाये तो वह उसके सारे पाप छुड़ा देगा. (गीता 18.66) ऐसे वचनों के कारण ही तो हिन्दुओं में इतना अनाचार फैला हुआ है. लोग दिन भर चोरी रिश्वत बेइमानी करते हैं शाम को मंदिर में प्रसाद चढ़ा देते हैं. उन्हें "समझा" दिया जाता है कि "भगवान" के नाम पर दान देने सें उनके पाप धुल गये हैं. इसी कारण आजकल हर गली में नित्य नये पाप छुड़ाउ मंदिर उभरते आ रहे हैं.

5. जो अपनी प्रिय पत्नियां ब्राह्मण को "अर्पण" करता है उसे स्वर्ग मिलता है. युवनाश्व ने अर्पण कीं वह स्वर्ग गया. मित्रसह ने ब्राह्मण वशिष्ठ को अपनी प्रिय रानी मदयंती अर्पण की वह भी सीधा स्वर्ग गया. (शांति पर्व 234) (राज.55)

6. गायत्री मंत्र का हजार बार जाप कर लेने सें भारी सें भारी पाप भी वैसे ही छूट जाते हैं जैसे केंचुली सें सांप छूट जाता है. (मनु 2.54) इसीलिये तो मंत्र जाप करने वाले ब्राह्मण इतने पापी होते हैं.

7. महावंश पुराण के अनुसार सिंहलद्वीप के राजा जय सिंह ने अपने बाप की हत्या करके राजगद्दी हथिया ली. बाद में उसे ग्लानि हुई कि उसने गद्दी की खातिर अपने बाप को मार दिया. वह बौद्ध भिक्षुओं के पास गया कि वे धन लेकर कोई "उपाय" करें जिससें उसे इस पाप सें मुक्ति मिल जाये. बौद्ध भिक्षुओं ने ऐसा करने सें असमर्थता जताई. तब वह राजा शैव ब्राह्मणें के पास गया. ब्राह्मणों ने राजा सें खूब धन लिया और यज्ञ आदि कर्मकांड करके उस राजा को जता दिया कि उनके भगवान ने उसके पाप माफ कर दिए है. ब्राह्मणों द्वारा बाप की हत्या करने का पाप "उतार" दिए जाने पर राजा ने अपने राज्य में रह रहे सभी बौद्धों (बच्चे बूढ़े स्त्रियां और जवानों) को कत्ल कर दिया. ब्राह्मणों को पाप उतारने अर्थात धन कमाने का फिर सें अवसर मिल गया.

8. सत्यनारायण की कथा सुनने तथा व्रत करने सें धन मिलता है और पाप व अपराध की सजा सें मुक्ति मिलती है. (समु 1.22) अगर ऐसा है तब तो किसी को कोई काम करना ही नहीं चाहिए. किसी को दुकान करने की जरूरत नहीं किसी को फैक्टरी चलाने की आवश्यकता नहीं किसी को दफतर जाने की आवश्यकता नहीं. बस सत्यानारायण की कथा करते जाओ धन तो मिल ही जाएगा. सरकार को भी चाहिए कि वह लोगों पर टैक्स लगाने की बजाए सत्यानारायण की कथा करवाती रहे. उसे धन मिलता रहेगा. दो नम्बर का धंधा ही बन्द हो जाएगा. जिसको जरूरत हो कथा करो धन बनाओ!!

9. गरुड़ पुराण (17.1) के अनुसार जो मनुष्य ब्राह्मणों को दान देता है उसे मोक्ष प्राप्त होता है. (समु 1.28) यह तो और भी आसान रास्ता है. सारी उम्र पाप करो और ब्राह्मण को दान दो. पाप तो मिटेंगे ही, मोक्ष भी मिल जाएगा. मोक्ष प्राप्ति का इससें सस्ता रास्ता और कोई बता ही नहीं सकता.

10. तुलसी कहता है "आकर चारि जीव जग अहहिं, कासी मरत परम पद लहहिं" तुलसी इस पद द्वारा एक तीर सें दो शिकार करता है. वह कहता है कि सारे संसार में चार वर्ण विद्यमान हैं और काशी में मरने सें मोक्ष प्राप्त हो जाता है. चाहे आदमी ने कितने ही पाप क्यों न कर रखे हों.

11. तुलसी का कहना है कि रामेश्वर के दर्शन होने सें ही व्यक्ति की स्वर्ग में सीट पक्की हो जाती है. वहां गंगाजल चढ़ाने सें तो मोक्ष ही मिल जाता है. प्रयाग के बारे में तुलसी ने राम सें कहलवाया है कि हे सीता, प्रयाग को देखो. इसके दर्शन सें ही करोड़ों जन्मों के पाप भाग जाते हैं. त्रिवेणी स्वर्ग की सीढ़ी है. अब तो लोगों में कुछ समझ आ गई है वर्ना कुछेक साल पहले तक अनेकों लोग यहां आकर आत्महत्या करते थे ताकि त्रिवेणी में डूब कर मरने सें उन्हें स्वर्ग की सीढ़ी मिल जाये और वे स्वर्ग पहुंच जायें!!!

12. ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार ब्राह्मण की हत्या करना सबसें बड़ा पाप है. अयोध्या के दर्शन करने मात्र सें ब्राह्मण हत्या का पाप भी छूट जाता है. साथ में सात जन्मों के पाप भी दूर हो जाते हैं. साथ में सभी प्रकार के ऋणों सें मुक्ति मिल जाती है. और सबसें बढ़ कर पुनः गर्भ में आना नहीं पड़ता. (समु 9.251) शायद सरदार बेअंत सिंह को यह पता नहीं होगा वर्ना वह भी अयोध्या आ जाता. ब्राह्मण इंदिरा गांधी की हत्या का पाप उतर जाता, मोक्ष भी मिल जाता. बेकार में ही फांसी चढ़ा. सरकार को चाहिए इस नियम के पोस्टर छपवा कर हर गली मौहल्ले में लगवा दे ताकि जो भी ब्राह्मण की हत्या का दोषी हो, सीधा अयोध्या आये और अपने पापों और सजा सें मुक्ति पाये!!

13. **ब्राह्मण को अलंकृत (सजा धजा कर) कन्या देने पर परमधाम में जगह पक्की हो जाती है. (समु 9.252) इसे ब्राह्मणों की निर्ल्लजता/बेशर्माई कहें या दादागिरी कि वे सरेआम लोगों सें कन्याएं मांग रहे हैं. शादी के लिये नहीं बल्कि ऐयाशी के लिए. यही उनके धर्म का असली रूप है.**
14. देवी भागवत पुराण में यमराज सावित्री सें कहता है कि जो आदमी ब्राह्मण को घी दूध पिलाता है, सोना चांदी देता है उसे एक मन्वंतर तक स्वर्ग मिलता है. जमीन और बहुत अधिक धन देने पर लम्बे समय तक स्वर्ग मिलता है. घर दान देने सें जितनी घर में ईंटें हैं उतने दिन तक स्वर्ग मिलता है. राजभवन में घर दान देने सें एक ईंट के बदले चार दिन स्वर्ग मिलता है. तीर्थ पर घर दान करने सें एक ईंट के बदले में सौ दिन स्वर्ग मिलता है. जो दूध देने वाली गाय दान करता है उसे जितने गाय के बाल हैं उतने साल स्वर्ग मिलता है. जितने अन्न के दाने दान करोगे उतने साल स्वर्ग मिलेगा. (देवी भागवत अंक कल्याण पत्रिका जनवरी 1960)
15. मरते समय "ह" बोलने मात्र सें भगवान भागा हुआ आता है और मनुष्य चाहे कितना भी महापापी क्यों न हो उसे भी स्वर्ग ले जाता है. आदमी को ले जाने के लिये साथ में वेश्याएं (अप्सराएं) भी लाता है. (भागवत पुराण)
16. ब्राह्मण के पैरों की धूल या चरणामृत की एक बूंद भी पापी के शरीर पर पड़ जाये तो भी सारे पाप उड़ जाते हैं और आदमी स्वर्ग जाता है. (पदम पुराण) (समु 4.113) अगर कोई समझदार हो तो उसे यही धन्धा कर लेना चाहिये. वह सभी भाई लोगों, भ्रष्ट लीडरों, चोरों कातिलों घूसखोरों आदि को ब्राह्मण के पैरों की धूल या चरणामृत स्पलाई करे. उनके पाप मिट जाएंगे और धन्धा करने वाले की चांदी हो जायेगी!!!
17. दुर्गा का कहना है कि जो लोग सप्तमी के दिन मधु कैटम और महिशासुर की हत्या के बारे में मेरा गुणगान करेंगे उन्हें पाप लगेंगे ही नहीं. (समु 5.59) यह तो और भी बढ़िया है. अंग्रेजी में कहावत है परिवेन्शन इज बैटर दैन क्योर. अर्थात इलाज सें रोकथाम अच्छी है. ऊपर वाले सारे तो पाप लग जाने के बाद उसे उतारने का उपाय बता रहे हैं. दुर्गा तो ऐसा उपाय बता रही है कि उससें तो पाप लगेंगे ही नहीं. सरकार को चाहिए कि सप्तमी के दिन हर गली चौराहे पर इस कथा के कैसेट बजवा दे. किसी को कभी पाप लगेगा ही नहीं!
18. गाय का स्पर्श करने, ब्राह्मण के पैर छूने और गुरू (ब्राह्मण) की पूजा करने सें गृहस्थ सारे पापों सें छूट जाता है. (स्कंध पुराण 278.10) (गोमाँस 13)
19. गाय मार कर ब्राह्मणों को भरपेट भोजन खिलाने और दान दक्षिणा देने सें गोहत्या का पाप भी नहीं लगता. (मनु 8.49)

3.2 अर्थ

ब्राह्मणधर्म का दूसरा सतम्भ "अर्थ" है. अर्थ यानि पैसा, सम्पत्ति, धन. ब्राह्मणधर्म के मुख्य चार उद्देश्यों में सें एक काम पैसा या धन कमाना भी है. किसी जमाने में ''काम'' अथवा सैक्स उनका सबसें मुख्य कार्य था और दक्षिणा लेना दूसरे स्थान पर आता था. लेकिन समय के साथ साथ लोगों ने उनके उन्मुक्त सैक्स का विरोध करना शुरू कर दिया तो उस काम सें ब्राह्मण पीछे हट गए.

आज के समय में उनका सबसें मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना रह गया है. भारत में **जितने भी संकराचारय या मठाधीश हैं सभी अरबपति करोड़पति हैं.** कहने को तो वे लोग साधु सन्यासी हैं लेकिन वे लग्जरी कारों में घूमते हैं. ऐसे आलीशान आश्रमों में रहते हैं कि राजाओं के महल भी उनके सामने फीके पड़ जाएं. सोने चांदी के बर्तनों में माल पूऐ उड़ाते हैं. सरकार भी इन्हीं ब्राह्मणवादियों की है. साधारण सी तनखाह लेने वाले कर्मचारी को हर साल इनकम टैक्स देना पड़ता है लेकिन करोड़ों अरबों रुपया चढ़ावे या दक्षिणा पाने वाले "साधु" "महाराज" को एक पाई भी टैक्स नहीं लगता. **आज भारत सरकार की भी शुद्ध वार्शिक आमदन इतनी नहीं कर पाती है जितनी आमदन यह तथाकथित ब्राह्मण साधु सन्त कर लेते हैं.**

वास्तव में इन ब्राह्मणों ने ऐसा गोरखधंधा बना रखा है कि गर्भ में बच्चा आने सें पहले ही ब्राह्मण की दक्षिणा शुरू हो जाती है और मरने के पचास साल बाद तक भी इनसें पीछा नहीं छूटता. पुत्र प्राप्ति की चाह में पुत्रेष्टि यज्ञ करने के विधान सें ब्राह्मण की दक्षिणा शुरू होती हैं तो गर्भ के तीसरे महीने में पुंसवन कर्म और मरने के कई साल बाद तक भी श्राद्ध के रूप में जारी रहती है.

दुनिया में शायद ब्राह्मणवाद ही एक मात्र धर्म है जहां धन कमाना उसका मुख्य उद्देश्य है. ऋग्वेद सें लेकर गीता पुराण तक सभी ग्रन्थ ब्राह्मणों को धन देने के नियमों सें भरे पड़े हैं. जगन्नाथ व इसके जैसे अन्य मन्दिरों के पंडे पुजारी इस धरती की ही नहीं स्वर्ग की भी हर चीज को बेचने की क्षमता रखते हैं. पैसे के बदले में कोई भी पंडा पुजारी सन्तान सम्पत्ति सुख मोक्ष सब कुछ बेच सकता है. बाबा साहिब ने सही कहा है कि ब्राह्मणों ने धर्म को व्यापार बना रखा है. उनके लिये धर्म कमाई का धन्धा है. चढ़ावा अगर मिलता है तो धर्म जाये भाड़ में. ब्राह्मण को सिर्फ दक्षिणा सें गरज है. (खण्ड 8.14)

3.2.1 अर्थ यानि पैसे कमाने के हत्थकण्डे

ब्राह्मण न केवल सदियों सें चली आ रही रीतियों सें धन कमाते हैं बल्कि नित्य नये उपाय भी घढ़ते हैं. उदाहरणतः अब उन्होंने अश्वमेध जैसे बड़े बड़े यज्ञ करने की जगह घरों में हवन करने का धन्धा चालू कर दिया है चाहे उनकी मनुस्मृति बड़े बड़े यज्ञ करने का आदेश देती है. लेकिन ब्राह्मण धन के लिये कुछ भी कर सकते हैं. मनु स्मृति को त्यागना तो कोई बड़ी बात ही नहीं है. आजकल धन कमाने के लिए कथा करने का नया हत्थकंडा खोज निकाला है. टुचे से कथावाचक भी आज करोड़ों रुपया कमा कर "परमसन्त" बन बैठे हैं.

3.2.1.1 देवताओं की फौज : देवताओं की जितनी बड़ी संख्या ब्राह्मणवाद में हैं उतनी संख्या में देवता बाकी दुनिया के समस्त धर्मों के मिला कर भी नहीं हैं. जैसे दुकानदार नित्य नए ब्रांड का सामान अपनी दुकान में सजाता है वैसे ही ब्राह्मण अपनी धर्म की दुकानदारी में नित्य नए ब्रांड के देवता बनाकर सजाते रहे हैं. बाबा साहिब को अपनी पुस्तक "हिन्दुमत की पहेलियां" लिखे मात्र पचास साल हुए हैं. तब सें आज तक में ही ब्राह्मणों ने अपनी दुकानदारी में बदलाव कर लिया है. बाबा साहिब लिखते हैं कि "**आजकल** इनके **चार देवता** हैं : शिव विष्णु राम और कृष्ण." (पहेली 11) लेकिन मात्र पचास साल के बाद आज यह स्थिति है कि विष्णु को लगभग लुप्त किया जा चुका है. उसके नाम का कोई त्योहार कोई छुट्टी आदि नहीं मनाई जाती. वह तो ब्रह्मा की तरह कभी कभार रैफरंस के तौर पर याद कर लिया जाता है.

बाबा साहिब ने इनके मुख्य देवियों की जो सूचि दी है उसमें वैष्णों का कहीं नाम भी नहीं है जबकि वह आज इनकी कमाई करने वाली **देवी नम्बर वन** है. ऋग्वेद या सत्ययुग में पूजे जाने वाले देव उषा पूषा अग्नि सोम वरुण जैसों का आज कोई नाम भी नहीं जानता. वरुण को कभी स्वर्ग और धरती का भगवान बता कर पूजा जाता था. उस समय विष्णु शिव और राम को "पैदा" ही नहीं किया गया था. कृष्ण और ब्रह्मा की पूजा नई नई शुरू की गई थी. (पहेली 11) लेकिन आज कोई वरुण को जानता तक नहीं.

बाबा साहिब लिखते हैं कि ब्रह्मा की पूजा बंद करने के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि उसके माथे पर लगा यह कलंक है कि उसने अपनी बेटी सें बलात्कार किया था. इस कलंक में कितनी भी सच्चाई रही हो परन्तु दो कारणों सें ब्रह्मा पूजा बंद करने तर्क सही नहीं है :

1. **पहला यह कि ब्रह्मा ने जो आचरण (कुकर्म) अपनी बेटी के साथ किया वह आर्यों देवों के लिए कोई अनहोनी बात नहीं थी. उनके अधिकतर भगवानों ने अपनी बहन बेटियों आदि के साथ इसी प्रकार के कुकर्म किए हैं.**
2. **दूसरे यह कि कृष्ण ने ब्रह्मा सें कहीं अधिक अनैतिकतायें (बहन सुभद्रा को उधालना और मामी राधा सें नित्य व्यभिचार) की हैं लेकिन उसकी पूजा की जा रही है. अर्थात ब्रह्मा ने तो मात्र अपनी बेटी को भोगा था, कृष्ण ने तो किसी को नहीं बख्शा.**

बाबा सहिब पूछते हैं कि ब्रह्मा की पूजा बंद करने का कारण तो दिया गया है बाकी देवताओं को क्यों देवत्व सें हटा दिया गया. इसका कारण कहीं नहीं बताया गया. यह भी हैरानी की बात है कि ब्राह्मण पहले वेदों को सर्वोच्च मानते थे लेकिन अब उन्होंने जो नये देवता घढ़े हैं वे वेद–द्रोही है. शिव द्वारा अपने ससुर के वैदिक यज्ञ को ध्वंस करने, उसके आदमियों द्वारा यज्ञ वेदी में मूतने और वेद भूमि पर ही उसको मारने की घटना सभी जानते हैं. कृष्ण द्वारा वेदों को बाढ़ में कूएं के समान बताना और वेदों के सर्वोच्च देव इन्द्र को हराना भी उसके वेद द्रोह को दर्शाता है. अतः असलीयत यही है कि ब्राह्मणों को तो अपनी दक्षिणा बनाए रखने सें मतलब है देवता, वेद चाहे रहे या न रहे!

3.2.1.2 "मृत्यु" कमाई का मुख्य साधन

सत्तगुरू कबीर सें सम्बंधित एक कथा है कि एक बार एक कोई व्यक्ति उनसें मिलने के लिये आया. उस समय वे किसी की शवयात्रा के साथ शमशान घाट गये हुए थे. उस व्यक्ति ने पहले उनकी शक्ल नहीं देखी हुई थी. अतः घर वालों सें उनकी पहचान पूछी तो उन्होंने बताया कि कबीर साहेब मस्त फकीर हैं. धन दौलत का

लालच नहीं करते हैं आदि. वह व्यक्ति शमशान घाट पहुंच गया. वहां जाकर उसने देखा सभी लोग धन दौलत को व्यर्थ बताने में लगे हुए थे सभी वैसी ही बातें कर रहे हैं जैसा घर वालों ने कबीर साहेब के बारे में बताया था. उसे हर किसी में "कबीर" दिखाई दिया. जब कबीर साहेब अन्य लोगों के साथ वापिस घर आये तो बाकी सारे फिर सें अपने धन्धों में उलझ गए. गुरू कबीर शमशान घाट सें बाहर आकर भी वैसे ही रहे.

यह स्वभाविक बात है कि घर में किसी की भी मृत्यु हो जाने पर बाकी परिवार वालों को उसकी तरफ सहानुभूति हो जाती है. उन्हें यह भास भी होता है कि कभी न कभी उनकी मृत्यु भी होनी है. उस समय आदमी को धन दौलत बेकार का सामान लगने लगता है. ब्राह्मण शातिर लोमड़ी की तरह इस परिस्थिति का फायदा उठाते हैं. उनकी कमाई का मुख्य साधन ही "मृत्यु" है. मृत्यु के समय यजमान ज्यादा मोल भाव भी नहीं कर पाते. घर का हर सदस्य यह चाहता है कि मृत व्यक्ति सीधा स्वर्ग जाये. अतः ब्राह्मणों की झोली भरने सें नही कतराता.

इसीलिये पण्डों ने यह बात फैला रखी है कि काशी में मरने सें आदमी सीधा स्वर्ग जाता है उसने चाहे कितने भी पाप क्यों न कर रखे हो. अतः उत्तर भारत के लाखों लोग अंत समय में काशी चले जाते हैं. वहां कई लोगों ने तो इसी काम के लिए दुकानें खोल रखी हैं. मरने वाले को तो मोक्ष मिले न मिले लेकिन काशी के पण्डों को आमदन जरूर हो जाती है. ऐसे ही उन्होंने हरिद्वार अथवा प्रयाग के बारे में प्रचार कर रखा है कि जिसकी अस्थियां वहां विसर्जन की जाएंगी उसे मुक्ति मिल जाएगी.

और यह भी एक अकाट्य सच है कि लोगों की खून पसीने की कमाई जो दान के रूप में इन पंडों महंतों को मिलती है अधिकतर ऐश परस्ती के साधनों पर लुटाई जाती है. सरिता मुक्ता में पण्डों की करस्तानियों का भण्डा फोड़ होता ही रहता है.

गरूड़ पुराण (2.6) आदमी के मरने पर ब्राह्मण को निम्न दान देने का आदेश देता हैः सबसें पहले ब्राह्मण के पैर धोकर पूजा की जाए. पूजा में उसे वस्त्र दिए जाएं. उसे लड्डू, मालपूआ दूध सें तृप्त किया जाए. फिर पलंग पर सोने का आदमी लिटाया जाए और पूजा करके ब्राह्मण को दान में दे दिया जाए. पलंग बढ़िया लकड़ी का बना हो, रेशमी सूत सें बुना गया हो, सफेद रूई की गद्दियां हों जिन पर सोने की पत्तियां लगी हों. सैंट लगे चादर तकिया हों तथा साथ में सोने की बनी गदा चक्र समेत लक्ष्मी विष्णु की मूर्तियां हों. साथ में ब्राह्मण के कानों के लिए कुंडल, गले के लिए चेन, तथा पगड़ी भी दी जाए. पितरों को तारने के लिए उसे गाय दान की जाए, मृतक के उपयोग वाले वस्त्र, गहने, वाहन,(कार स्कूटर) कांसे का बर्तन घी सें भरा, सात प्रकार के अनाज तथा मृतक की अन्य प्यारी वस्तुएं भी ब्राह्मण को दान कर दी जाएं. साधारण मरने पर गाय, सांप के काटे सें मरने पर गाय के साथ सोने का सांप भी दान किया जाए.

(ऐसी सूचि तो माँ बाप अपनी बेटी की शादी में दहेज के लिए भी नहीं बनाते होंगे!!)

अगर सामर्थ्य हो तो पलंग पर सुख सें सोने के लिए ब्राह्मण को एक मकान भी दान किया जाए. आगे लालच दिया गया है कि जो ऐसा दान करता है वह तथा उसके मरे हुए रिश्तेदार इन्द्र भवन (वेश्याओं का कोठा) में महाप्रलय तक अप्सराओं (वेश्याओं) के साथ ऐश करते हैं. (13.75)

और जो लोग पलंग दान नहीं कर पाते उनका सारा किया धरा निष्फल हो जाता है. पुराण आगे कहता है कि जो कथावाचक की पूजा करता है उसे खुश करता है उससें मैं (भगवान) खुश हो जाता हूँ. (13.110) (समु 1.28)

पुराण (45.1) आगे कहता है कि जिन लोगों का पिण्डदान नहीं होता वे कल्प भर (43 करोड़ 20 लाख साल तक) प्रेत योनि में रहते हुए निर्जन वन में भटकते हैं. वे रक्त माँस और पीव सें भरे गढों में पड़े रहते हैं. विषैले सांप और तलवार सें तीखे पत्ते उन्हें काट देते हैं. आदि (समु 1.28) **चाहे उस आदमी ने कितने भी अच्छे काम किये हों. बस ब्राह्मण को दान नहीं दिया तो वह प्रेत योनि में चला जाएगा.** लेकिन दस दिन लगातार ब्राह्मणों को पिण्डदान करने सें उसकी आत्मा को पुनः शरीर मिल जाता है.

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि गीता और पुराण में सें कौन झूठा है. इन दोनों में सें कौन बकवास कर रहा है. कृष्ण कहता है कि आत्मा पर किसी भी चीज का असर नहीं है और जैसे आदमी पुराने कपड़े उतार कर नये पहन लेता है वैसे ही आत्मा पुराना शरीर त्याग कर नया धारण कर लेती है. पुराण कहता है कि बिना पिण्डदान के आत्मा जंगल में भटकती रहती है. सांप और तीखे पत्ते उसे काट देते हैं.

मरने पर शरीर तो हम जला ही देते हैं. कृष्ण के अनुसार आत्मा पर किसी चीज का असर नहीं होता. तो पिण्डदान किस लिए किया जाये!!! अतः अगर आत्मा पर असर होता है तो कृष्ण ने जो कुछ गीता में कहा वह बकवास है. अगर नहीं होता तो पुराण की बातें बकवास हैं. कुल मिला कर ब्राह्मणों का मोक्ष का सारा धन्धा ही बकवास है.

पिण्डदान करने के बारे में ब्राह्मणों ने बहुत सी कहानियां बना रखीं हैं. एक कहानी है कि राम लक्ष्मण और सीता अपने बाप का पिण्डदान करने गया पहुंचे. पिण्डदान में गैंडे का मांस भेंट करने के लिए राम और

लक्ष्मण तो गैंडा मारने चले गए. पिण्डदान का समय आ गया. सीता ने सात मुट्ठी रेत पूर्वजों को अर्पित कर दी. दक्षिणा देने के लिए सीता को अपने सारे के सारे कपड़े ब्राह्मणों को देने पड़े और उसने अपना तन कमल के पत्तों सें ढका. (चाभी 51) **ऐसे हैं ब्राह्मण! अपने भगवान तक की बीवी के कपड़े भी उतरवा लेने वाले!!**

खैर पिण्डदान सें आत्मा की तो गति हो न हो ब्राह्मणों पण्डों की तो पौ बारह हो रही है. काशी इलाहबाद गया और हरिद्वार में उनकी बड़ी बड़ी हवेलियां और बैंक बैलेंस बन रहे है.

इसी पुराण में (8.118) में कहा गया है कि अंतिम समय में मरते हुए आदमी के जो भाई, पुत्र, पौत्र, सगोत्री और मित्र हैं अगर वे ब्राह्मण को दान नहीं देते वे ब्रह्म हत्यारे हैं. (समु 1.28) इस धार्मिक आदेश पर टिप्पणी करते हुए सरिता मुक्ता के सम्पादक ने सही कहा है कि ऐसा लगता है यह शब्द भगवान के मूंह सें नहीं बल्कि किसी धूर्त व्यक्ति के मूंह सें निकले हैं जो मात्र दान लेना चाह रहा है.

वैतरणी की कथा : चाहे कृष्ण गीता में कितना भी चिल्लाता रहे कि आत्मा पर किसी आग पानी हथियार का असर नहीं होता लेकिन ब्राह्मणों ने मरने के बाद आत्मा को वैतरणी पार करने की इच्छा सभी में जगा रखी है. उन्होंने विधान बना रखा है कि वैतरणी पार किये बिना स्वर्ग अथवा मोक्ष नहीं मिल सकता और गाय के बिना कोई अन्य पशु वैतरणी पार नहीं करा सकता. इसलिए वैतरणी पार करनी हो तो ब्राह्मण को गाय दान करनी ही पड़ेगी! गोदान करने में कोई कंजूसी न करे इसलिए कथा घढ़ रखी है कि एक बार एक कंजूस सेठ ने मरते समय असली की बजाए माटी की गाय ब्राह्मण को दान कर दी. मरने के बाद जब सेठ गाय की पूंछ पकड़ कर वैतरणी पार करने लगा तो उसे डर सताने लगा कि माटी की गाय अब डूबी कि डूबी. लेकिन गाय बोली डरो मत सेठानी ने मेरे पेट में पचास सोने की अशर्फियां डाल दी हैं सो मैं तुम्हें पार ले जाऊंगी. (समु 10.275)

अतः वैतरणी पार करनी हो तो ब्राह्मण को गाय चाहे मिट्टी की मिल जाए परन्तु नकद रोकड़ा अवश्य मिलना चाहिए.

3.2.1.3 सती होने पर भी ब्राह्मण की कमाई : अगर पति मर जाए तो ब्राह्मण को दान करना पड़ता है. उसके साथ अगर पत्नि भी जल कर सती होना चाहे तो वह ऐसा मुफत में नहीं कर सकती. उसके लिए भी ब्राह्मणों को दान देना जरूरी है. औरत को जिन्दा जलाने के लिए भी ब्राह्मणों ने कमाई के रास्ते बना रखे हैं. गरुड़ पुराण (10.35–55) में विधि दी गई है कि जो स्त्री जल कर सती होना चाहे वह नहा धोकर श्रंगार करे, मन्दिर जाये, ब्राह्मणों को दान दे. फिर पति की चिता में बैठ जाए.

यह स्वभाविक बात है कि जब आदमी (पुरुष तथा स्त्री दोनों ही) आत्महत्या करने पर मजबूर होता है उस समय वह संसार के सभी बन्धनों सें स्वयं को अलग कर लेता है. उसके मन में धन माल की कोई परवाह नहीं रहती. ब्राह्मण इस स्थिति का पूरा लाभ उठाना जानते थे और जानते हैं. इसीलिये सती होने वाली स्त्री के लिये विधान बनाया कि वह श्रृंगार करके मंदिर में आये और दान करे. श्रृंगार करने का अर्थ हुआ कि वह वे सब गहने पहन कर आये जो वधु पहनती है क्योंकि अब उसका अपने पति सें पक्का मिलन हो रहा है. स्त्री को पता होता है कि उसने जल कर मर तो जाना ही है अतः वह अपने सब गहने ब्राह्मणों को दे जाती थी.

थू हे ब्राह्मण तेरे! तेरा जैसा नीच न कभी पैदा हुआ न कभी पैदा होगा!!!

3.2.1.4 "उपाय" यानि दिमागी गुलामी

किसी को कुछ भी मुसीबत आ जाए ब्राह्मण के पास हर बात का "उपाय" है. वह चोर को अच्छा माल पाने का उपाय बता सकता है और साहूकार को धन सुरक्षित रखने का "उपाय" भी बता सकता है. बस उसे दक्षिणा मिलनी चाहिए.

मुकद्दमा लड़ने वाली दोनों पार्टियां सें ब्राह्मण जीत का उपाय बताता है. कोई भी जीते उसकी दक्षिणा पक्की है. राजस्थानी भाषा में कहावत है "घोड़ी मरै कै छोरो, बामण को टक्को खरो". एक बार दूल्हा घोड़ी पर सवार होकर जा रहा था. घोड़ी चकरा कर गिर पड़ी. वहां अफरा तफरी मच गई लेकिन फेरे करवाने आया ब्राह्मण शांत भाव सें बैठा रहा. किसी ने उससें मजाक किया कि अगर दूल्हा घोड़ी सें गिर कर मर जाता तो उसकी तो दक्षिणा मारी जाती. ब्राह्मण बोला अगर मर जाता तो फुरों की बजाए दाह संस्कार कराके दक्षिणा ले लेता.

3.2.1.5 पुरोहताई

दुनिया में केवल ब्राह्मणवाद ही ऐसा सिस्टम है जहां केवल एक जाति विशेष (ब्राह्मण) ही पुरोहित बन सकते हैं. शेष सभी कामों में सभी वर्गों के लिए आरक्षण है. मात्र **पुरोहताई है जहां ब्राह्मणों का शत प्रतिशत आरक्षण है. स्कूलों कॉलेजों में कमजोर वर्ग का 15–20 प्रतिशत आरक्षण होते ही बवाल मचा दिया जाता है लेकिन पुरोहिताई में ब्राह्मणों का पूरा आरक्षण होने पर भी कोई चूं तक नहीं करता! यही ब्राह्मणवाद है. इन्होंने**

हमारी सोच ही ऐसी बना रखी है कि हम पुरोहित की सीट पर किसी अन्य जाति के व्यक्ति की कल्पना भी नहीं कर सकते.

दुनिया में केवल ब्राह्मण ही एक ऐसा जीव है जो धन कमाने के लिए किसी को भी पूज सकता है. दक्षिणा न आती हो तो अपना मंदिर भी त्यागने में संकोच नहीं करता और धन मिलता हो तो मलेच्छ कहे जाने वाले पीर की कब्र पूजने सें भी नहीं हिचकता. भारत में ऐसे सैंकड़ों मन्दिर मिल जाएंगे जो देखभाल के अभाव सें बर्बाद हो रहे हैं लेकिन सैंकड़ों ब्राह्मण मिल जाएंगे जो मुस्लिम कब्रों के पुरोहित बने बैठे हैं.

आज भी भंगी को देखते ही ब्राह्मण अपवित्र हो जाने की बातें करता है उसके हाथ का छूआ कोई ब्राह्मण खाने की कल्पना भी नहीं कर सकता लेकिन भगवान वाल्मिकी की तपोभूमि वाल्मिकी तीरथ अमृतसर पर इन्हीं ब्राह्मणों ने कब्जा किया हुआ है. कारण वहां दुनिया भर सें दलित श्रद्धालु आते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं. भंगियों द्वारा अर्पित उस धन को उठाने में उनको कोई अपवित्रता नहीं लगती.

शिरड़ी का सांई बाबा मरने तक नमाज अदा करने वाला सच्चा मुस्लमान था. लेकिन उसकी कब्र पर भी पुरोहताई करने वाला ब्राह्मण ही है. कोई ब्राह्मण कभी भी किसी मुस्लिम को मंदिर का पुजारी होना सहन नहीं करेगा. मुस्लिम की तो छोड़ो ब्राह्मण तो मन्दिर में किसी बनिये या दलित को भी पुजारी होना स्वीकार नहीं करेगा. अगर गैर ब्राह्मण पुजारी बन गया तब तो उनके भगवान को अवतार लेना पड़ जाएगा. तुलसी ने फरमाया है : "विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतारा" अर्थात ब्राह्मण और गाय का भला करने के लिए ही भगवान मानव रूप में अवतार लेता है. अगर ब्राह्मण की दुकानदारी चली गई तो उसके भगवान को चैन सें कैसे बैठा रह सकेगा. उसे तो अवतार लेना ही पड़ेगा.

सन् 1980 में तिरुपति, वेकटेश्वर आदि मन्दिरों के पास 100 अरब रुपए सें ज्यादा की सम्पत्ति थी. (समु 3.71) पिछले पच्चीस साल में यह 100 अरब बढ़ कर 1000 अरब सें ज्यादा हो गए होंगे. तिरूपति जैसे मन्दिरों में चढ़ावे के आधार पर दर्शनार्थियों की लाईनें लगती हैं. कई लाख रुपए चन्दा देने वाले को मूर्ति के पास बैठा कर पूजा करवाई जाती है. हजारों रुपए दान देने वाले को मूर्ति के पास सें गुजरने दिया जाता है और सैंकड़ों में दान देने वाले को दूर सें ही मूर्ति दिखलाई जाती है.

इन बाह्मणवादियों ने लोगों को इस कदर दिमागी तौर पर पंगु बना दिया है कि वहां लाईन में खड़ा होने वाला यह सोच ही नहीं पाता कि **भगवान तो पिता होता है अतः पिता को देखने के लिए पैसे क्यों दिये जाएं, और पैसे किसी गैर को क्यों दिये जाएं! यह कैसा पिता है जो पैसे के आधार पर दर्शन देता है. वहां चन्दा देने वाला सोच ही नहीं पाता कि उसके द्वारा दिये गए चन्दे के पैसों का भगवान ने कभी उपयोग नहीं करना है. उस चन्दे की रकम पर पंडे ब्राह्मण ही ऐश करते हैं!! एक संकराचारय पर तो यह मुकद्दमा चल रहा हैं कि उसने चन्दे की रकम में सें दूसरे पुजारी को कत्ल करने की सुपारी दी**. हम सोच ही नहीं पाते कि यह कैसा भगवान है जो अपने चन्दे के पैसों की निगरानी भी नहीं कर पाता और न ही उसका दुरुपयोग करने वालों को सजा दे पाता है.

रामास्वामी आयोग की रिर्पोट के अनुसार तंजौर के मन्दिर के पास साठ हजार एकड़ जमीन है जिसमें सें चालीस हजार एकड़ पर हुई फसल कहीं दर्ज ही नहीं की गई. इस फसल को पंडे पुजारी ही डकार गये. (समु 3. 71) पत्थर का भगवान कुछ नहीं कर पाया.

तांत्रिकों ने कहा वेद बाजारू औरत के समान हैं जो चाहे भोगे. ब्राह्मणों ने कभी तन्त्र का खण्डन नहीं किया बल्कि तंत्र को पाँचवां वेद माना. (पहेली 14) ब्राह्मणों ने वेदों को वेश्या सें तुलना करने वालों को भी वेद समान माना क्योंकि इससें उन्हें कमाई होती थी और होती है.

3.2.2 ब्राह्मण को धन देने के नियम

ब्राह्मणों ने धन कमाने के लिए हर प्रकार के हत्थकण्डे अपनाए तथा इजाद किए. उन्होंने अपने धर्मग्रन्थों में नियम बनाये कि ब्राह्मण को दान दिया जाए. ब्राह्मण को दान देने के लिए कुछ नियम इस प्रकार सें हैं:

- कलियुग में दान प्रधान है. दान केवल ब्राह्मण ही ले सकते हैं. (मनु 1.86)
- संसार में जो कुछ है सब ब्राह्मणों का ही है. (मनु 1.100) अतः वह किसी का भी धन ले सकता है.
- अगर राजा को लावारिस धन मिल जाए तो आधा स्वयं रखे आधा ब्राह्मण को दे दे. अगर ब्राह्मण को लावारिस धन मिल जाए तो वह सारा ही रख ले. (मनु 8.37–38)
- जो अपने कमाये गए धन में सें ब्राह्मण को दान नहीं करता वह पुरुष चोर तथा पापी है. उसे ब्रह्महत्यारे के समान माना जाना चाहिए. (पारा 12.16)
- ब्राह्मण पर कोई जुर्माना अथवा टैक्स नहीं लगाया जा सकता. (मनु 7.133,8.380) सदियों सें चले आ रहे इसी नियम के तहत आज भी उन पर आयकर, बिक्री कर आदि नहीं लगता.

- ब्राह्मण का मूंह लैटर बॉक्स की तरह है. जैसे उसमें डाली गई चिट्ठी नामित व्यक्ति को मिल जाती है वैसे ही ब्राह्मण के मूंह में हव्य (यज्ञ का अन्न माँस घी आदि) डालने पर देवताओं को मिल जाता है तो कव्य (श्राद्ध में तैयार भोजन) डालने सें पितरों को मिल जाता है. (मनु 1.95)
- राजा जो धन ब्राह्मण को दान में देता है उसे राजा के पास सें कोई चोर चुरा नहीं सकता, शत्रु छीन नहीं सकता. इसलिए राजा को चाहिए कि वह ब्राह्मणों को खूब दान दे. (मनु 7.83) दयानंद ने अपने ढंग सें इस श्लोक में दिए गए "निधि" शब्द का अर्थ "शिक्षा" किया है.
- अग्नि में दी गई आहूति सें तो अच्छा है कि ब्राह्मण को ही दान कर दिया जाए क्योंकि उसे दिया गया दान न तो नीचे गिरता है न सूखता है और न ही नष्ट होता है.(मनु 7.84)
- ब्राह्मण के सिवाय दूसरे को दान देने का बराबर फल मिलता है अर्थात अगर यहां अब्राह्मण को एक रुपया दान करोगे तो आगे परलोक में एक रुपया ही वापिस मिलेगा. लेकिन अनपढ़ ब्राह्मण को दान देने पर दुगना तथा पढ़े लिखे ब्राह्मण को दान देने पर लाख गुणा तथा वेद पढ़े ब्राह्मण को दान देने पर बेहिसाब धन वापिस मिलेगा. (मनु 7.85) ऐसे में तो सरकार को चाहिए कि वह परवासी भारतीयों की बजाए परलोकवासी भारतीयों सें संपर्क बनाए. लगभग हर मरने वाला यहां ब्राह्मणों को दान देकर जाता है. वहां ऊपर हरेक के पास धन की बोरियां भरी पड़ी होंगी. भारत तो सोने की चिड़िया क्या मोर बन जाएगा.

आज का समय विज्ञान का समय कहा जाता है जिसमें लोग अन्धविश्वासों को त्याग कर अक्ल सें काम लेते बताए गए हैं. लेकिन ब्राह्मणों को विज्ञान सें कोई अन्तर नहीं पड़ा है. पहले भी ब्राह्मण ऋषि अपार धन तथा हथियारों के मालिक होते थे. अब भी ब्राह्मण पण्डे, संकराचारय तथा कथावाचक करोड़पति अरबपति होते हैं. मनु स्मृति के दान देने के नियम आज भी वैसे ही लागू हैं जैसे हजार साल पहले थे. जिस किसी ने भी ब्राह्मणों की इस जालसाजी के विरुद्ध आवाज उठाई उसे बेरहमी सें कत्ल कर दिया गया.

महान दार्शनिक चार्वाक ने जब ब्राह्मणों के इस काले धन्धे के विरुद्ध आवाज उठाई उनका कत्ल कर दिया गया. जब गुरू रैदास ने आवाज उठाई तो उन्हें भी कत्ल कर दिया गया तथा उनके ग्रन्थ जला दिये गए. चावार्क तथा गुरू रैदास ने ऐलान किया :

1. ‘‘ न स्वर्ग है न नरक है. न मोक्ष है न आत्मा परलोक जाती है. जो है सब यहीं है.
2. आदमी चार तत्वों – पृथ्वी जल अग्नि वायु का बना है. मृत्यु होने पर आदमी के यह चारों तत्व इन चारों महातत्वों में मिल जाते हैं.
3. जाति भेद, आश्रम की क्रियाएं कोई फल देने वाली नहीं हैं.
4. यज्ञ करना, वेद पढ़ना, तीन प्रकार के दण्ड, भस्म लगाना ये सब बुद्धिहीन तथा पौरूषहीन लोगों के कमाई धन्धे हैं जिसे इनके पूर्वजों ने बनाया है.
5. अगर यज्ञ में बलि दिया गया पशु स्वर्ग जाता है तो ब्राह्मणों को अपने माँ बाप की भी यज्ञ में बलि दे देनी चाहिए ताकि वे निश्चित रूप सें स्वर्ग जाएं.

3.2.2.1 दक्षिणा दो कुछ भी करवाओ

दुनिया में शायद ही कोई मजहब ऐसा होगा जहां के पुरोहित पैसा लेकर कुछ भी करने को तैयार हो जाते हों लेकिन दक्षिणा लेने के लिए ब्राह्मण कुछ भी कर सकते हैं. किसी भी अशांत ग्रह को शांत कर सकते हैं, किसी भी अशुभ मुहूर्त को शुभ बना सकते हैं. ब्राह्मणवाद के सभी ग्रन्थ इस बात की दुहाई देते हैं कि ब्राह्मणों को दान देने सें सभी पाप नष्ट हो जाते हैं.

दक्षिणा लेकर ब्राह्मणों ने शिवाजी मरहठा को शूद्र सें क्षत्रिय बना दिया. उसे छत्रपति भी घोषित कर दिया.

एक टुचे से गांव के टुचे से राजा दशरथ ने ब्राह्मणों को न केवल धन का दान दिया बल्कि अपनी रानियां भी सौंप दी. बदले में उन्होंने उसे चक्रवर्ती राजा घोषित कर दिया जबकि अयोध्या कोसल राज्य के अधीन एक कस्बा मात्र था. अयोध्या और दसरथ इतने टुचे थे कि जब उसके पड़ोसी राजा जनक ने अपनी बेटी सीता दांव पर लगाई तो दसरथ को टोका तक नहीं. अगर दसरथ कोई दम वाला राजा होता तो जनक उसे जरूर बुलाता.

ब्राह्मण जवाहर लाल को गांधी ने तिकड़मबाजी करके प्रधान मन्त्री पद की दक्षिणा दिला दी, बदले में उस ब्राह्मण ने गांधी को पूरे देश का बाप घोषित कर दिया चाहे गांधी का अपना बेटा उसे पूछता तक न था. आज सारे ब्राह्मणवादी कांग्रेसी दिन रात गला फाड़ कर उसे भारत का बाप बनाने पर तुले हुए हैं मगर कोई भारतीय अपनी मर्जी सें कभी उसकी समाधि पर नहीं जाता.

सोने की अशर्फियों की दक्षिणा मिलते ही ब्राह्मण गंगू ने गुरू गोबिंद सिंह के दो साहिबजादों को जिन्दा दीवारों में चिनवा दिया. धन के लालच में उसने यह भी नहीं सोचा कि जिन बच्चों को वह दीवार में चिनवा रहा है उनके दादा गुरू तेग बहादुर ने ब्राह्मणों को बचाने के लिए ही चांदनी चौक में अपना बलिदान दे दिया था और उन मासूमों के पिता ब्राह्मण धर्म बचाने की खातिर ही मुगलों सें युद्ध कर रहे थे. वर्ना सिख धर्म और इस्लाम की शिक्षाओं में कोई विशेष अंतर नहीं है. यहां तक कि सिखों द्वारा गुरू माने जाने वाले ग्रन्थ साहिब में अनेकों मुस्लिम संतों की बाणी शामिल है.

रामायण कथा में महाज्ञानी जाबालि सें जब राम तत्व ज्ञान लेने गया तो उन्होंने जो कुछ राम को उस समय ब्राह्मणों के बारे में कहा वह आज भी शत प्रतिशत सही है. उन्होंने कहा : हे राम, यह सारे के सारे धर्म और आदेश उन चालाक लोगों ने बनाए हैं जो भोले भाले लोगों को ठगने में निपुण हैं. इस तरह दान दक्षिणा के लिए उकसा कर वे अपने लिए धन कमाने के सीधे सरल रास्ते खोजते बनाते हैं. दूसरों सें कहते हैं कि यज्ञ करो, बलि दो, दान करो, व्रत करो और हमें माल दो. हे मानव, बुद्धि सें काम लो और इन सें बचो!!

3.3 काम यानि सैक्स

ब्राह्मणवाद का आदि पुरुष ब्रह्मा है. ब्राह्मण उसी ब्रह्मा का अंश हैं अथवा उस ब्रह्मा का अंश ब्राह्मणों में है. इसीलिए जहां ब्रह्मा ने काम वासना को अपना मुख्य कार्य बनाया वैसे ही उसके अंशों ने भी काम वासना को अपना मुख्य धन्धा बना लिया. ब्रह्मा ने अपनी बेटी पोतियां भोगीं. ब्राह्मणों ने यज्ञ में व्यभिचार का खुला खेल खेलकर सारी कसर पूरी कर दी. कुछ कसर बाकी रह गई तो मंदिरों में शिव का लिंग समेत योनि पुजवा दिया. बनाया खजुराहो का मैथुन गृह ; नाम दिया गया मन्दिर का. राधा कृष्ण अनैतिक व्यभिचारी हुए, नाम दिया गया भागवान का!

बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं को अपना कर लोगों ने ऐसे अनाचार पूर्ण धर्म को छोड़ दिया था. बड़े बड़े यज्ञों के स्थान पर लोग घर में ही होम अथवा हवन करने लग गये थे. ब्राह्मणों की ऐय्याशी बन्द हो गई थी. लेकिन समय के साथ ब्राह्मणों ने साम दाम दंड भेद की कुत्सित चाल चलते हुए भारत सें बौद्ध और जैन भिक्षुओं को निकाल दिया. लेकिन लोग बुद्ध और महावीर की शिक्षाएं न भूले थे. अतः अपनी पर–स्त्रीगमन की लालसा पूरी करने के लिए उन्होंने नये नये ढोंग रचाए. ऐसे ही एक ढोंग के अंतर्गत काम अथवा सैक्स को धर्म का रूप दिया गया. मंदिरों में स्त्री–पुरुष की मैथुन करती मूर्तियां लगवाईं गईं.

जगन्नाथ मन्दिर के हर भाग में अनेक नग्न नारी मूर्तियां और मैथुन में लीन स्त्री पुरुषों की मूर्तियां लगाई गई हैं. अगर कोई इन नग्न मैथुनरत मूर्तियों की अश्लीलता पर एतराज करे तो मंन्दिर का पण्डा बहुत भद्दे ढंग सें मुस्करा कर कहता है 'भगति में कैसा परदा' (समु 10.273) तब तो उस पण्डे को चाहिए कि अपनी माँ, बहन, बेटी को भी नंगा करके मंदिर में बैठा दे. 'भगति में कैसा परदा' की बात सही हो या न हो उसका चढ़ावा जरूर बढ़ जाएगा. ऐसी मूर्तियां अगर किसी चौराहे पर लगी हो तो हाय तौबा मच जाए, मंदिर में लगी हो तो ब्राह्मण उसे साक्षात भगवान बना देते हैं. बस यही ब्राह्मणवाद है!!

काम के बारे में उनके धार्मिक ग्रन्थ तान्त्रिक साधना (पृ.52) में शिव का आदेश है : **"मैथुनेनं महायोगी ममतुल्यो न संशय"** अर्थात मैथुन करने सें महायोगी मेरे समान हो जाता है. इसमें कोई शक नहीं है. (गोमाँस 15) काम अर्थात यौन सम्बंधों को लेकर ब्राह्मण इतने अधिक चिन्तित रहते थे कि उनके वैद्य भी यौन शक्ति बढ़ाने के नित्य नये ढंग ढूंढते रहते थे. ऐसे में उन्होंने यह नुस्खा भी दिया कि गोमाँस खाने सें मैथुन शक्ति बढ़ती है. (गोमाँस 79) पता नहीं किस वैद्य ने किस आधार पर यह नुस्खा दिया लेकिन उस बेवकूफ की वजह सें हजारों गायें ब्राह्मण का ग्रास बन गईं.

काम का भूत ब्राह्मणों के दिमाग पर इस कदर छाया हुआ था कि उनकी आम भाषा में भी ऐसे उदाहरण दिये जाते थे जो बेहद अश्लील होते थे. आचार्य चतुरसेन ने सही कहा है कि किसी भी किताब में कितनी भी अश्लील सामग्री लिख दो बस हीरो हिरोइन को कृष्ण और राधा का नाम दे दो वह पुस्तक धार्मिक बन जाती है. वैसे ही ब्राह्मणों ने वेदों में अपनी अश्लील मानसिकता की अनेकों उदाहरणें छोड़ी हैं.

काम ब्राह्मण धर्म में इस कदर हावी है कि स्त्री विशेषकर पराई औरत सें मैथुन को तीर्थ बताया गया. निम्न सूचि इस बात की द्योतक है: (रुद्रायामल तन्त्र) (आर्य नीति 15)

स्त्री की किस्म	**तीर्थ के समान**
रजस्वला	पुष्कर
चांडाली	काशी
चमारिन	प्रयाग

धोबिन	मथुरा
नाईन	हरिद्वार
वेश्या	अयोध्या

राधा और कृष्ण के किस्से इसी ब्राह्मणिक नीति के अन्तर्गत घढ़े गए. भागवत में जिस ढंग सें इन दोनों मामी भांजे के यौन सम्बंधों का आँखों देखा वर्णन है, वह ब्राह्मणों की काम कला या कामुकता का ही प्रमाण है. ब्राह्मणों के ऋषियों, देवों भगवानों तथा नायकों ने उनके धार्मिक "काम" के लिए जो गुल खिलाए हैं उनका वर्णन अध्याय 4 तथा 5 में विस्तार सें किया गया है.

3.4 मोक्ष

मोक्ष का धन्धा कभी न मन्दा

जब तक संसार कायम है दो चीजें कभी रुक नहीं सकती एक लोगों का जन्मना दूसरा मरना. और ब्राह्मणों ने ऐसा गोरखधंधा फैला रखा है कि जब तक लोग मरेंगे उनकी मौज बनी रहेगी. उन्होंने उत्तर भारत के बनारस नगर को मोक्ष प्राप्ति का गढ़ घोषित किया हुआ है. हजारों लोग हर साल मरने के लिए बनारस आ जाते हैं ताकि वहां मर कर उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जाए. मोक्ष प्राप्ति का इससें सस्ता और आसान रास्ता न कभी हुआ और शायद न कभी हो पाएगा. सारी उम्र कितने भी पाप किये जाओ. बस मरते समय बनारस आकर मर जाओ. मोक्ष मिल जाएगा.

मोक्ष का आम भाषा में सीधा सा अर्थ है कि आत्मा का जन्म मरण सें मुक्ति पाना. ब्राह्मणधर्म का सारा ढांचा आत्मा के इर्द गिर्द बना हुआ है. उनके अनुसार हर प्राणी अर्थात जिन्दा आदमी, पशु, कीट, पक्षी, मछली आदि सभी में एक आत्मा होती है. हर आत्मा परमात्मा का अंश होती है. प्राणी जैसे कर्म करता है उसे उसी अनुसार अगला जन्म मिलता है. उदाहरणतः ब्राह्मण की जीविका छीनने पर आदमी को अगले जन्म में बन्दर की योनि मिलती है. (गरूड़ पुराण 5.48) हनुमान ने भी ऐसा ही कुछ किया होगा तभी तो वह भी बन्दर योनि में जन्मा!!

कृष्ण ने गीता में बहुत हाय तौबा मचाई है कि आत्मा का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता. आग पानी हवा तीर तोप तलवार आत्मा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते. लेकिन इसके बावजूद लोग मोक्ष के चक्र में फंसे हुए हैं. **यह ब्राह्मणों की सुपर मार्किटिंग का एक उदाहरण है. वे गीता को भी बेच रहे हैं तथा साथ में मोक्ष को भी बेच रहे हैं. दुनिया की कोई अन्य जात ऐसा नहीं कर सकी और शायद न हीं भविष्य में कर सकेगी.**

ब्राह्मणों का काशी में मोक्ष दिलाने का धन्धा सदियों सें चला आ रहा है. तभी सत्तगुरु कबीर ने ब्राह्मणों द्वारा चलाये जा रहे मोक्ष के धन्धे पर सटीक टिप्पणी की है :

वे क्यों कासी तजें मुरारीं
तेरी सेवा चोर भये बनवारीं।
जोगी जती तपी सन्यासी, मठ देवल बसि परसै कासीं
तीन बार जे नित प्रति न्हावैं, काया भीतरि खबर न पावैं।
देवल देवल फेरी देहिं, नांव निरंजन कबहुं न लेहीं।
चरन बिरद कासी कू न दैहूं, कह कबीर भल नरकहि जैहूं।

पुर्नजन्म और मोक्ष के गोरखधंधे सें ब्राह्मणों ने खूब कमाई की है लेकिन इससें आम भारतीय परलोकवादी, अकर्मण्य, भाग्य के आसरे जीने वाला हद दर्जे का स्वार्थी व व्यक्तिवादी बन गया है. देश और समाज के साथ कुछ भी होता रहा हो, वह केवल अपने और अपने मोक्ष की चिंता में पड़ा रहा. नतीजा विदेशी हजारों सालों तक हम पर राज कर गये. मोक्ष के लिए काम (सैक्स) आवश्यक बन गया. काम के लिए अर्थ (धन) आवश्यक बन गया. इस तरह धन जुटा कर काम वासना की निर्द्वंद तृप्ति को मोक्ष की परिभाषा बताया गया. (समु 10.288)

मोक्ष प्राप्ति के ब्राह्मणिक रास्ते :

- मातृका भेद तंत्र में शिव अपनी बीवी सें कहता है कि मदिरा पीने सें ब्राह्मणों को मोक्ष मिलता है. मैं तुझे एक महान सत्य बताता हूँ कि जो ब्राह्मण शराब और मैथुन में लगा रहता है वह शिव बन जाता है. जैसे पानी में पानी मिल जाता है वैसे ही शराब पीने वाला ब्राह्मण ब्रह्मा में मिल जाता है. चावल सें बनी शराब (सुरा) पीने सें आदमी सुरत्व (देवत्व) प्राप्त करता है. इसीलिए यह सुरा कहलाती है. (पहेली 14)
- प्रयाग में आत्महत्या करने सें मोक्ष मिलता है.
- काशी में मरने सें मोक्ष मिलता है.

- ऐसे ही नियोग मार्गी तांत्रिक ब्राह्मणों का मोक्ष प्राप्ति के बारे में कहना है कि पंचमकार यानि पाँच 'म' के सेवन सें मोक्ष मिलता है : मदिरा, माँस, मैथुन, मछली और मुद्रा. जगदंबा की पूजा इन पंचमकारों सें होती है. (संस्कृति कोश 506) पंचमकार का सेवन का अर्थ है :
  - ✓ आदमी शराब पीए, इतनी पीए कि उसके पग डोलने लगें और वह चकरा कर गिर जाए. घर के हर कोने में आलिया अर्थात अलमारी बनाए जिस में दारू रखे. घर में घूमते हुए शराब पीए. ब्राह्मण यज्ञों में डट कर सोम नामक सुरा पीते थे.
  - ✓ हर प्रकार का माँस खाए. धरती, आकाश तथा जल में रहने वाले हर प्राणी का माँस खाया जा सकता है. नर का माँस ब्राह्मणों की माता काली को ज्यादा पसंद है.
  - ✓ शराब के नशे में धुत होकर माँस खाकर परस्त्री सें गमन करे. वैसे तो दावा किया जाता है कि शिव ने काम को जला दिया था मगर जब उसकी बीवी मर गई तो वह उसकी लाश को उठाए पागलों की तरह भटकता रहा. तब विष्णु ने उसे लाश सें छुटकारा दिलाने के लिए अपने चक्र सें उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए तथा उन टुकड़ों को पूरी धरती पर फैंक दिया. जहां उस लाश का योनि वाला भाग गिरा वहां पर कामख्या का मंदिर है जो कि तांत्रिकों का गढ़ है. यहां अब भी पशुबलि दी जाती है. (संस्कृति कोश) योनि वाले भाग पर बने तांत्रिक मंदिर में मोक्ष प्राप्ति के लिए क्या किया जाता होगा इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है.
  - ✓ पानी में रहने वाला हर जीव उनके लिए मछली है. फिर भी उन्हें रोहू और पाठीन किस्में ज्यादा पसंद थीं.
-

मोक्ष और निर्वाण में कोई समानता नहीं

अध्याय 4

ब्राह्मणवाद यानि गोधर्म

प्राचीन काल में ब्राह्मणों का एक ही धर्म और एक ही कर्म था और वह था **गोधर्म.** गोधर्म की परिभाषा महाभारत में इस तरह सें दी गई है, "प्राचीन काल यानि सत्ययुग में स्त्रियां अपनी इच्छा सें कहीं भी घूमा करती थीं और मनमाना देहोपभोग करतीं थीं. उस समय स्त्रियां विवाह सें पहले भी मनमाना संभोग–सुख प्राप्त करतीं थीं और विवाह के बाद भी पति के प्रति वफादार रहने का नियम भी उस समय नहीं था. अनेक पुरुषों सें यौन सम्बंध बनाना उस समय धर्म सम्मत माना जाता था. राधाकृष्णन के अनुसार बड़े बड़े ऋषियों ने इसकी प्रशंसा की थी. पुरुष स्त्रियों के साथ वैसा ही करते हैं जैसे सांड गायों के साथ करते हैं. (धर्म और समाज 149) **वेदों में इसे गोधर्म कहा गया है.** (अप्सरा 531)

गोधर्म का प्रर्वतक दीर्घतमा नामक ब्राह्मण ऋषि था जिसने "ईश्वरीय" ऋग्वेद में 24 सूक्तों (लगभग 200–300 मन्त्र) की रचना की. (संस्कृति कोष)

4.1 गोधर्म कैसे आरम्भ हुआ

गोधर्म शुरू होने की घटना भी कुछ कम धार्मिक नहीं है. देवों का गुरू था वृहस्पति. उसके बड़े भाई उशिज की पत्नि थी ममता. ममता गर्भवती थी. एक दिन वह वृहस्पति के साथ अकेली थी. अकेलेपन में भाभी की सुन्दरता पर उसका ऋषित्व जाग उठा. उसने अपनी भाभी के सामने कामयाचना की. भाभी बोली कि उसके गर्भ में जो बालक है वह अंदर बैठा वेद पढ़ रहा है. अगर वह उससें यौन सम्बंध बनाएगी तो उसे बाधा पहुंचेगी. पर ब्राह्मण ऋषि नहीं माना. बलात्कार किया. इससें गर्भ में पल रहे बच्चे की पढ़ाई में विघ्न पड़ा तो उसने एतराज किया. देवों के गुरू के "काम" पर कोई एतराज करने की हिम्मत करे और देव उसे श्राप न दे ऐसा तो हो ही नहीं सकता था. अतः वृहस्पति ने उस गर्भ को श्राप दिया कि उसने उसके "काम" में बाधा डाली है इसलिये वह अन्धा हो जाये. सो वह गर्भ में पल रहा बच्चा अन्धा पैदा हुआ. उसका नाम रखा गया दीर्घतमा. (उपनिषदों की कहानियां)

दीर्घतमा अन्धा था परन्तु पहलवानों की तरह ताकतवर था. एक दिन एक सांड आया और उसकी यज्ञ सामग्री खाने लगा. उसने सांड को सींगों सें पकड़ लिया. सांड ने छूटने का बहुत जोर लगाया मगर उसके हाथों सें अपने सींग छुड़वा नहीं पाया. तब हार मान कर उस सांड ने ऋषि को ज्ञान दिया. उसे समझाया कि सांडों को

चोरी का पाप नहीं लगता. "इच्छानुसार खाना और मनचाही मादा सें संभोग करना गो जाति का स्वाभाविक धर्म है. पहले मनुष्य जाति भी इसी धर्म का पालन करती थी. अतः आप भी इसी धर्म का पालन करने लगो तो अधिक सुखी रहोगे". (अप्सरा 535)

दीर्घतमा ब्राह्मण ऋषि था, ताकतवर था सो कोई भी यह हिम्मत नहीं कर पाया कि उसे सांडों वाला गोधर्म अपनाने सें रोक दे. जहां कहीं भी स्त्री उसके हाथ लगी वहीं सबके सामने उसने उसके साथ बलात्कार या व्यभिचार किया. पहले केवल देव ही खुलमखुला व्यभिचार करते थे अब ऋषि भी शुरू हो गये. इस कथा में एक बड़ी अजीब बात है कि ममता और उसके बेटे को वृहस्पति के बलात्कार में कोई पाप नजर नहीं आया. दोनों ने एतराज जताया तो सिर्फ इतना कि उसके बलात्कार करने सें गर्भ की पढ़ाई में विघ्न पड़ेगा. **यह बहुत ही शर्म की बात है कि ब्राह्मणों के धर्म में बलात्कारी के श्राप सें निरपराध बालक भी अंधा हो सकता है!!**

ऐसा ऋषि जब ऋग्वेद के मन्त्र लिखेगा तो सहज कल्पना की जा सकती है कि उसने क्या गुल खिलाये होंगे. जब दीर्घतमा ने हर औरत पर नीयत खराब करना शुरू कर दी तो परिवार वालों ने उसे पेड़ के साथ बांध कर गंगा में फैंक दिया लेकिन वह बहता हुआ बलिराजा के पास पहुंच गया. उसके कोई पुत्र नहीं था. सो दीर्घतमा ने उसकी पत्नि के पांच और उसकी दासी के ग्यारह पुत्र पैदा कर दिये.

4.2 गोधर्म : ब्राह्मणिक सनातन धर्म

ब्राह्मणों का पवित्रतम ग्रन्थ ऋग्वेद इस परम्परा को अपनाने के आदेश जारी करता है. ऋग्वेद में गोधर्म का आदेश करती ऋचाएं हैं : **हे, इन्द्र जैसे तीखे सींगों वाला सांड गायों के झुण्ड सें रमण करता है वैसे ही तुम मुझ सें रमण करो.** (10.86.15) अग्नि सब विवाहित स्त्रियों का पति है तथा सभी कुंआरियों का जार (यार) है.

ब्राह्मण ऋषि उद्दालक का कहना है ,"इस धरती पर सभी वर्णों की स्त्रियां बिना बंधन की हैं. सभी लोग अपने अपने वर्ण की स्त्रियों सें वैसा ही वर्ताव करते हैं जैसे सांड गायों के साथ करते हैं. **यही अपना सनातन धर्म है.**" (म.भा. 122.8) (धर्म और समाज 149) वेद रचने वालों के दिमाग पर गोधर्म इतना अधिक हावी था कि उन्होंने वेदों में मनचाहे स्त्री अथवा पुरुष को अपने वश में करने के मन्त्र रच डाले.

ब्राह्मणों ने अपने गोधर्म के इस मूल मन्त्र का जो अर्थ किया वह इस प्रकार सें थाः

i. जैसे गायों के झुण्ड में सांड खुले में सबके सामने मैथुन करता है वैसे ही मनुष्य को भी सबके सामने स्त्री सें मैथुन करने सें नहीं झिझकना चाहिए. ब्राह्मणों के सभी देवों भगवानों ऋषियों नें इस मूलमन्त्र का पूर्ण पालन किया जिसका वर्णन अध्याय 5 में किया गया है. इस प्रथा की शुरूआत दीर्घतमा नामक ब्राह्मण ऋषि ने की तथा इसका पालन कृष्ण ने यमुना किनारे राधा और उसकी सहेलियों सें रमण करके निभाई.

ii. जैसे सांड बिना रिश्ते नाते के किसी भी गाय सें मैथुन करता है वैसे ही मनुष्य को चाहिए कि वह स्त्रियों के साथ बिना किसी रिश्ते नाते का लिहाज किए उनके साथ मैथुन करे. इसी नियम के तहत ब्रह्मा ने अपनी बेटी पोतियां, कृष्ण ने अपनी मामी राधा और बहन तथा राम ने अपनी बहन सीता का लिहाज नहीं किया. पुरूरवा कौरवों और पांडवों का आदि पुरुष था. उसने उर्वशी के सात पुत्र पैदा किये. वे बड़े होने पर जब इन्द्रलोक जाते थे तो उर्वशी सें रति यानि यौन सम्बंध बनाया करते थे. एक बार अर्जुन ने मना कर दिया तो उर्वशी ने उसे श्राप दे दिया और उसे साल भर हिजड़ा बन कर रहना पड़ा. (वनपर्व 46) ऋग्वेद के समय महान देवता माने जाने वाला पुषान अपनी बहन का जार (यार) था. (ऋग 6.55.4)

iii. जैसे सांड गाय सें मैथुन करने के लिए उसकी सहमति नहीं लेता वैसे ही पुरूष के लिए भी स्त्री की सहमति लेना जरूरी नहीं है. अतः अगर स्त्री न माने तो उसके साथ बलात्कार करे. उदाहरणतः जैसे सूर्य ने कुन्ती के साथ, पराशर ने सत्यवती के साथ, पवन ने हनुमान की माँ अँजनि के साथ किया था. संकर ने अपने भाष्य में मन्त्र बताए हैं कि जो स्त्री संभोग के लिए राजी न हो तो उसके साथ मार पीट करके बलात्कार किया जाए तथा उसे बांझ बना दिया जाए!

iv. जैसे सांड को गाय के पीछे दौड़ने में कोई झिझक नहीं होती वैसे ही पुरूष को भी किसी भी मनचाही स्त्री का पीछा करने में झिझक नहीं करनी चाहिए. इसी नियम का पालन करते हुए शिव मोहिनी बने विष्णु के पीछे दौड़ लिया था. कृष्ण और गोपियों में तो यह दौड़ सारी उम्र चलती रही थी.

v. जैसे गायें प्रजनन काल के बाद फिर सें रमण करने के लिए तैयार हो जाती हैं वैसे ही, ब्राह्मण यह मानते थे कि स्त्रियों में रजोदर्शन होने पर स्त्री शुद्ध हो जाती है अर्थात यौन सम्बंध बनाने यानि गर्भ धारण करने के लिए तैयार हो जाती है. (शांति. 35) इसी नियम के तहत ब्राह्मण महाऋर्षि अत्रि का कथन है कि जारों (यारों, आशिकों) के मैथुन सें स्त्रियां दूषित नहीं होती. अन्य स्त्रियां भी मासिक धर्म होने पर पुनः शुद्ध हो जाती हैं. (अत्रि. स्मृति 190) अर्थात पुराने यार सें शारीरिक सम्बन्ध बनायें तो कुछ अन्तर नहीं पड़ता. अन्य सें सम्बन्ध बनाने पर मासिक धर्म होते ही शुद्ध हो जाती हैं. पुनः गोधर्म के लिए स्त्रियां तैयार

मानी जाती थीं. **यह नियम वास्तव में राधा, कुब्जा जैसी नारियों (सही शब्द रंडियों) के लिए बनाया गया था ताकि कोई उन्हें बुरा न कह सके क्योंकि मासिक धर्म होते ही वे शुद्ध मान ली जाती थीं!!**

vi. **प्रसिद्ध ब्राह्मण लेखक तथा पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन के अनुसार वशिष्ठ (राम का कुलगुरू) का कथन है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य स्त्रियां शूद्रों के साथ अगर व्यभिचार (गोधर्म) करती हैं तो वे प्रायश्चित द्वारा शुद्ध हो जाती हैं लेकिन शर्त यह है कि इस गोधर्म सें उनके गर्भ नहीं रहा हो. व्यास के आदेश है कि ऐसी स्त्रियों को घर के अंदर बंद करके रखा जाए तथा उनके धार्मिक, पारिवारिक तथा सम्पति के अधिकार सें वंचित कर दिया जाए. (धर्म और समाज 150)**

vii. अत्रि जैसे ब्राह्मणों के बनाये नियम ही थे कि शादी हो जाने के बाद भी आर्य स्त्रियां अपने पुराने यारों को नहीं छोड़ती थीं. उनके घर आने पर पति की बजाए जार के साथ सोती थीं. इसी प्रथा सें आगे चल कर अतिथि को अपनी पत्नि संभोगार्थ देने की प्रथा चल पड़ी. (वोल्गा सें गंगा)

viii. जैसे सांड के लिए किसी एक गाय सें शादी करने का बंधन नहीं होता और न ही किसी गाय के लिए किसी एक सांड सें बंध कर रहने का नियम है वैसे ही पुरूष और स्त्री पर भी कोई बंधन नहीं हैं. (अत्रि. 190) यह ध्यान देने योग्य बात है कि ब्राह्मण ऋषियों ने जो उपमा दी है वह सांड की दी है सारस की नहीं दी क्योंकि नर और मादा सारस केवल एक सें ही जोड़ा बनाते हैं और सारी उम्र उसे निभाते हैं. एक के मरने पर भी दूसरा किसी दूसरे सारस सें जोड़ा नहीं बनाता बल्कि कुछ ही दिनों में अपनी जान दे देता है. दूसरे यह कि मात्र सांड ही ऐसा नर प्राणी है जो गुर्रा कर, सींग मार कर गाय पर हावी होता है.

ix. जैसे गर्भ धारण करने की इच्छा सें गाय रंभाती है और सांड उसके पास आ जाता है, वैसे ही आर्य स्त्रियों का आचरण होता था. उतंक नामक ऋषि था. वह आश्रम सें बाहर गया हुआ था. पीछे सें उसकी पत्नि को वासना का भूत सवार हो गया. वह भी रंभाई. जैसे आर्यो का गोधर्म का नियम था उसने अपने पति के एक शिष्य सें वासना शांति की भिक्षा मांगी. वैसे तो गुरू पत्नि को माँ समान कहा गया है लेकिन जब उनके भगवान ने ही माँ समान नारियों को नहीं बख्शा तो उस शिष्य ने भी गोधर्म का पालन कर दिया. वैसे भी आर्यो का यह धर्म था कि अगर कोई कामासक्त स्त्री मैथुन की इच्छा करे तो उसे इन्कार करना पाप है. (आदि. 83.32) सीता के रजोदर्शन होने पर राम की वासना मिटाने देवों की पत्नियां भी आ गई थीं जिनका काम राम ने अगले जन्म में कृष्ण बन कर पूरा किया.

x. जैसे एक झुण्ड की सारी गायें और सांड इक्ठे रहते हैं तथा बाहरी सांड को झुण्ड में प्रवेश नहीं करने दिया जाता तथा उस झुण्ड की सारी गायों पर सबसें बड़े अथवा तगड़े सांड का अधिकार होता है वैसी ही प्रथा आर्य और देवों में थी. राम का कुल इक्ष्वाकु था. उस कुल के लोग बाहरी लोगों सें सम्बन्ध बनाने सें परहेज करते थे. इसलिए वे लोग अपनी बहनों सें स्वयं शादी कर लेते थे या शारीरिक रिश्ते बना लेते थे. राम ने भी अपनी बहन सीता सें इसीलिए शादी की. इसी तरह ब्रह्मा के बेटे दक्ष ने अपनी पचास लड़कियां अपने बाप और भाईयों में बांट दीं. ब्रह्मा क्यों कि बड़ा था इसलिए उसे हिस्सा भी बड़ा मिला. (देखिए अध्याय 5 ब्रह्मा)

xi. जैसे गाय और सांड की पहले सें कोई आपसी जान पहचान नहीं होती फिर भी वे मैथुन करते हैं वैसे ही आर्यो में कोई भी दो निपट अन्जान स्त्री पुरुष मैथुन कर लेते थे. शर्मिठा और ययाति में ऐसा ही हुआ. कृष्ण और कुब्जा में ऐसा ही हुआ. शकुन्तला और दुश्यंत राजा के बीच ऐसा ही हुआ और उससें भारत पैदा हुआ. ब्राह्मण लेखक प्रचार करते हैं कि हमारे भारत का नाम उस हरामी के नाम पर पड़ा है.

xii. **कन्या :** कन्या शब्द आर्यो के गोधर्म का एक और जवल्लंत उदाहरण है. कुन्ती की कथा सभी जानते हैं कि उसने सूर्य को बुलाया था और कुंआरेपन में ही उसने कर्ण को जन्म दिया था. कुन्ती ने जब उससें अपने कुंआरेपन की वजह सें संभोग सें एतराज किया तो ब्राह्मणों के भगवान सूर्य ने गोधर्म का सुनहरी नियम उसे बताया. उसने कहा कन्या का अर्थ है कि वह चाहे जिस सें संभोग करे. विवाह तो बनावटी रिवाज है. व्यभिचार करते रहने पर भी विवाह सें पहले कन्या "कुमारी" ही रहती है. (वन 306)

xiii. देवों के राजा इन्द्र का दरबार आर्यों ब्राह्मणों की सबसें बड़ी गोधर्म की मण्डी होती थी. जहां चौबीसों घण्टे रंडियों का नंगा नाच, शराब और माँस की महफिल लगी रहती थी. हर कोई ब्राह्मण ऋषि इन्द्र पद पाने की होड़ में लगा रहता था और हर बार इन्द्र गोधर्म का सहारा लेकर यानि अप्सराएं सप्लाई करके, अपना पद बचा जाता था. इन्द्र की तरह दूसरे देव भी स्त्री का सहारा लेकर अपना काम निकाल लेते थे. विष्णु ने मोहिनी बन कर असुरों का अमृत चुरा लिया था.

xiv. जैसे गाय का बछड़ा बड़ा होकर अपनी माँ और अन्य गायों में कोई अन्तर नहीं करता वैसे ही ब्राह्मणवादी लोग थे. **स्वयं भीष्म ने यह माना कि अनेकों पुत्र अपनी माताओं के साथ रतिक्रीड़ा में मग्न रहते हैं.** (भीष्म पर्व 3) और आर्य स्त्रियां मैथुन काल में अपने और पराये मर्द में अन्तर नहीं करती हैं. (कर्ण. 44) पाँडवों की माता माद्री के देश में पिता पुत्र माँ बेटी सास ससुर जँवाई भाई बहन दास दासियां एक जगह ही

'मिलते' हैं. स्त्रियां किसी सें भी संभोगरत होती हैं, शराब पीती हैं अगर पैसे मांगो तो कूल्हे खुजला कर कहती हैं दाम नहीं है चाहो तो पुत्र पैदा कर लो. (कर्ण 40) **ऐसी औरतों के पैदा हुए पांडव तभी तो जूए में अपनी पत्नि तक को हार गये.** और तो और गंगा ने भी समय आने पर अपने बाप जन्हू सें मैथुन किया.

xv. **ब्राह्मण गोधर्म की एक सटीक घटना महा ऋषि विश्वामित्र के बाप महा ऋषि गाधिराज के नाम है. गाधि वर्ण सें क्षत्रिय था. उसने अपनी बेटी सत्यवती ब्राह्मण महा ऋषि ऋचीक को दे दी. (शादी का आर्यों में रिवाज ही नहीं था) ऋचीक ने सत्यवती और उसकी माँ को यज्ञ में आहूति के लिए चरू दिये. उनके चरू बदल गये अतः ससुर जंवाई में पत्नियां भी बदल गईं. उनको पता तब चला जब उनके पुत्र पैदा हुए. सत्यवती का पुत्र क्षत्रिय स्वभाव का हुआ और उसके माँ के पुत्र ब्राह्मण स्वभाव का हुआ. तब उन्हें अदला बदली का एहसास हुआ. तब ससुर जंवाई ने अपनी अपनी स्त्रियां वापिस बदल लीं. (राज. 57)**

जहां तक चरू का प्रश्न है कौशिक सूत्र 3.5 (राज. 61) के अनुसार चरू तैयार करने के लिए चावलों को वीर्य मिला कर उबाला जाता है.

xvi. जैसे गायों पर अपना वर्चस्व सिद्ध करने के लिए सांड आपस में भिड़ जाते हैं वैसे ही आर्य ब्राह्मण और देव आपस में लड़ मरते थे. ऋग्वेद (10.85) में वर्णन है कि सूर्य के पुत्र अश्विनी कुमारों ने सूर्य की ही पुत्री सूर्या को घोड़ें की दौड़ में जीत लिया. राम द्वारा सीता को जीतना, अर्जुन द्वारा द्रोपदी को जीतना इसी की उदाहरण हैं. इस जीत हार में स्त्री की कहीं कोई सहमति नहीं ली गई थी चाहे इस कार्यवाही को स्वयंवर का नाम दिया गया था.

xvii. त्रिमूर्ति यानि ब्राह्मणों के तीन भगवानों में सें शिव की मान्यता सर्वाधिक है. शिव का लिंग योनि सहित हर मंदिर में विद्यमान है. मंदिरों में शिव के लिंग की पूजा करना, खुजराहो व पुरी के मंदिरों में संभोग करते स्त्री पुरुषों की मूर्तियां होना तथा दक्षिण के मंदिरों में वेश्याओं यानि देवदासियों का नाच गाना होना, यह सब ब्राह्मणधर्म के सरेआम गोधर्म पालन के सूचक हैं.

xviii. सांडों के गोधर्म और ब्राह्मणों के गोधर्म में एक अन्तर है कि जहां आज तक किसी सांड ने अपना काम निकलवाने के लिए दूसरे सांड के पास अपनी गायें नहीं भेजी ब्राह्मणवादियों ने इस प्रथा का खूब प्रयोग किया. अपना काम निकलवाने के लिए ब्राह्मणों और देवों ने औरतों की रज कर दल्लागिरी की है. हर देव ने दूसरे को स्त्रियां सप्लाई की हैं. यहां तक कि यति कहे जाने वाले हनुमान को भी राम ने सोलह कमसिन लड़कियां भेंट की जिनके अंगों पर अभी बाल आने शुरू हुए थे.

xix. इसके अतिरिक्त एक अंतर और भी है कि जहां सांड गाय के सिवाय किसी अन्य पशु के पास नहीं जाता है ब्राह्मणवादी विशेषतः ऋषि मुनि और देव अन्य पशुओं को भी नहीं बख्शते थे. राम को पैदा करने वाले ऋश्यश्रृंग का बाप विभांडक हिरणी सें मैथुन करता था. (वन 110), ब्राह्मण ऋषि दम भी हिरणी का शौकीन था और कर्ण का बाप सूर्य घोड़ी सें मैथुन किया करता था. (आदि 66) **पशुओं सें मैथुन का अकाट्य सबूत अश्वमेध यज्ञ में घोड़े के साथ यजमान की पत्नियों द्वारा किये जाने वाला समागम है. स्वयं दयानन्द ने इस तथ्य को माना है.**

xx. ब्राह्मणों का गोधर्म सांडों के गोधर्म सें एक अन्य बात सें भी भिन्न था. जहां गायें जन्म देने के बाद अपने बच्चों को अपने साथ रखती है आर्य स्त्रियां ऐसा नहीं करती थीं. विशेषतः जब उसके लड़की पैदा हो जाती थी तो वे उसे यूं ही फैंक जाती थीं. सीता और शकुन्तला इसकी मुक्ष्य उदाहरण हैं. ऐसी वेद की भी आज्ञा है. (यजुर्वेद तैतरिय संहिता 6.5.10.3) कि लड़की पैदा हो तो उसे आर्य ठुकरा देते हैं.

xxi. ब्राह्मणों और सांडों के गोधर्म में एक अन्य अन्तर भी था कि जहां किसी भी गाय के बछड़े ने अपनी माँ अथवा अन्य गाय को किसी अन्य सांड सें मैथुन करने के लिए विवश नहीं किया वहीं आर्य ब्राह्मण ऋषियों ने न केवल स्वयं व्यभिचार किया बल्कि अपनी माँ को अन्य ऋषियों की हवस का शिकार बनाया. ब्राह्मण ऋषि उद्दालक की पत्नि को कोई ब्राह्मण पकड़ लेता है. उसके अपने पुत्र श्वेतकेतु ने कहा अगर स्त्री गैर मर्द सें संभोग सें मना करे तो उसे भ्रूण हत्या का पाप लगेगा. (समु 1.19)

xxii. ब्राह्मणों का गोधर्म पशुओं की तरह इस धरती तक ही सीमित नहीं था. उनके गोधर्म की तो स्वर्ग तक में सीटें रिजर्व थीं. अथर्व वेद (4.34.2) के अनुसार विष्टारी यज्ञ करने वाले लोग हड्डी रहित होकर हवा द्वारा स्वर्ग में जाते हैं जहां अग्नि उनकी जननेंद्रियों को नहीं जलाती. वहां अनेकों स्त्रियां सुलभ हैं. (समु 3.73)

xxiii. **श्राद्ध** में भी ब्राह्मणों ने गोधर्म का पक्का प्रबन्ध कर रखा था. ब्राह्मणों का भगवान मनु आदेश देता है कि जो पुरुष श्राद्ध करने आए ब्राह्मण का शूद्र स्त्री सें मैथुन करवाता है तो उसके सारे पाप ब्राह्मण ले लेता है. (मनु 3.191)

xxiv. **यज्ञ** तो खास तौर पर गोधर्म का पालन करने के अड्डे होते थे जहां पुत्र की इच्छा रखने वाली स्त्रियां तथा आवारा स्त्रियां अपना मनोरथ पूरा करती थीं. ब्राह्मणों ने नियम बना रखे थे कि स्त्री के रति मांगने पर कोई भी पुरुष मना नहीं करेगा तथा स्त्री की तो मजाल ही नहीं होती थी कि वह किसी भी पुरुष को यौन सम्बंध बनाने सें इंकार कर दे.

xxv. **तप** ब्राह्मणधर्म की आत्मा हैं. ब्राह्मणग्रन्थों में एक बात बार बार आई है कि ऋषियों ने इन्द्र पद पाने के लिए तप किया तथा हर बार इन्द्र ने वेश्याएं भेज कर अपनी गद्दी बचा ली. सभी जानते हैं कि इन्द्र दरबार वेश्याओं के नाच गाने, शराब तथा मॉस की महफिल होती थी. कितनी शर्म की बात है कि ऐसे अड्डे पर कब्जा करने के प्रयत्नों को तप (सर्वोच्च भक्ति) कहा जाता था तथा उससें भी अधिक शर्मनाक बात यह है कि जो लोग वेश्याओं की मण्डी के प्रधान के पद पर कब्जा करना चाहते थे उन्हें ऋषि यानि सन्त कहा जाता है. यह तथ्य इस सच्चाई को दर्शाते हैं कि ब्राह्मणधर्म पर गोधर्म कितना हावी था.

xxvi. **अक्षतयोनि** : अपने गोधर्म को बेरोकटोक जारी रखने के लिए ब्राह्मणधर्म ग्रन्थों में एक बात बार बार दोहराई गई है कि ऋषियों तथा देवों सें समागम करने पर स्त्री अक्षतयोनि ही रहती है. यह बहुत अश्लील बात है मगर बार बार ब्राह्मण ग्रन्थों में दोहराई गई है कि कुआंरी लड़की अगर किसी देव या ब्राह्मण ऋषि सें अवैध यौन सम्बंध बनाएगी तो शादी के समय उसके पति को उसके शरीर सें ऐसा महसूस नहीं होगा कि वह पहले किसी अन्य सें यौन सम्बंध बना चुकी है. कुंती, सत्यवती, माधवी, अन्जनी आदि न जाने कितनी ही आर्य स्त्रियां थीं जिनके साथ देवों और उनके गुर्गे ब्राह्मण ऋषियों ने इस आश्वासन के साथ व्यभिचार किया कि उनके पतियों को वे "अक्षतयोनि" ही लगेंगी. किसी स्त्री के गैर मर्द सें बच्चा पैदा हो जाए और फिर भी वह "कुंआरी" ही रहे, यही आर्य ब्राह्मण धर्म है यानि गोधर्म है.

अयोनिज : ब्राह्मण ग्रन्थों में अयोनिज शब्द कई बार आया है. बहुत से ब्राह्मणवादी लेखक इसका अर्थ करते हैं 'बिना माता के गर्भ सें पैदा हुआ बालक'. वास्तव में अयोनिज का अर्थ है घर सें बाहर पैदा हुआ बालक. बिना माँ के गर्भ के बालक पैदा होना न पहले संभव था और न अब है. जो लोग अयोनिज का अर्थ "बिना माँ के गर्भ सें पैदा" करते हैं वे लोग ऐसा केवल एक ही कारण सें करते हैं कि या तो वह दयानन्द की तरह धूर्त हैं और लागों को गुमराह करना चाहते हैं अथवा वह तुलसी की तरह पोंगे अज्ञानी हैं उन्हें वास्तविक अर्थ का पता ही नहीं है.

"अयोनिज" शब्द अ+योनि+ज शब्दों के मेल सें बना है. योनि का असली अर्थ है घर, ज का अर्थ जन्मा और 'अ' आगे लगने सें पूरे शब्द को नकारात्मक बन जाता है. अतः पूरे "अयोनिज" शब्द का अर्थ हुआ जो घर में न जन्मा हो. अगर इसका अर्थ दयानन्द के ढंग सें लें तो "अयोनिज" का अर्थ बनता है ऐसा बालक जो बिना योनि के पैदा हुआ हो अर्थात जो हिजड़ा पैदा हुआ हो.

वास्तव में आज तक विज्ञान ने भी चाहे कितनी तरक्की कर ली हो लेकिन यह संभव नहीं हो पाया है कि कोई बच्चा माँ के गर्भ बिना पैदा हो सका हो अथवा हो सकता हो. ब्राह्मणों के अति पवित्र वेद तक इस बात को स्वीकार करते हैं कि उनके भगवान ब्रह्म ने प्रजा पैदा करने के लिए भी अपनी बेटी के गर्भ में अपना वीर्य डाला था. अगर कोई बालक बिना माँ के गर्भ सें पैदा हो सकता होता तो ब्रह्मा को तो अपनी बेटी पोतियों सें समागम करने की कतई आवश्यकता ही नहीं थी. वह तो सृष्टि कर्ता बताया जाता है उसे तो ऐसा कुकर्म करने की आवश्यकता ही न पड़ती!! फिर राम जो कि ब्राह्मणों के भगवान का अवतार बताया जाता है वह भी तो ऐसे ही पैदा हो सकता था. उसे अपनी माँ को ऋष्यश्रृंग के साथ क्यों सुलवाना पडता!!

वास्तव में सच्चाई यही है कि आर्य लोग बेहद असभ्य, अनैतिक औश्र अपवित्र होते थे. पशुओं की तरह उनके जीवन का बस एक ही काम होता था खाना, पीना और ऐश करना. जिसके पास दस बीस गाएं हो जाती थीं वह राजा बन बैठता था. सीता के पिता जनक को राजा कहा गया है जबकि उसे स्वयं को खेतों में हल चलाना पड़ता था. शेष लोग लूट मार में लगे रहते थे. अतः उन्हें अधिक सें अधिक लड़कों की जरूरत हमेशा रहती थी. जिन स्त्रियों के केवल पुत्रियां पैदा होती थी उन्हें त्याग देने का आदेश था. (मनु)ब्राह्मण ऋषियों ने यह नियम भी घोषित कर रखा था कि केवल वही स्त्री मोक्ष पा सकती है जिसके ग्यारह पुत्र हों. इसीलिए वे "यज्ञों" का आयोजन करते थे जहां पूरे कबीले वाले मिल कर शराब पीते थे मॉस भून कर खाते थे और फिर बिना रिश्ते का ख्याल लिहाज किये खुले में समागम करते थे और बच्चे पैदा करते थे. (विवाह संस्कृति)

समय के साथ लोगों ने ऐसे आयोजनों का विरोध करना शुरू कर दिया. तब ब्राह्मणों ने इस प्रथा को धार्मिक रूप देने के लिए **"वामदेव्य व्रत"** का प्रचलन शुरू कर दिया. इस प्रथा के तहत जो स्त्री यज्ञ में सन्तान की कामना सें आती थी उसके साथ ऋत्विक वहीं यज्ञ मंडप पर संभोग करते थे. (ऋग्वेद) यह यज्ञ लंबे समय तक चलते थे. अतः अक्सर ऐसी स्त्रियों के वहीं सन्तान पैदा हो जाती थीं. द्रोपदी और द्रुपद ऐसे ही जन्मे थे. कौशल्या सुमित्रा और कैकेयी यज्ञ में ही गर्भवती हुई थीं.

देव और ब्राह्मण समाज में गोधर्म घर घर में प्रचलित था. आर्यों में सप्तऋषि बहुत आदर के पात्र माने जाते थे. आर्यों के हर काम में उनका फैसला अंतिम माना जाता था. देव अग्नि ने उन सातों की स्त्रियों को भी नहीं बख्शा. (वन 255)

इन नियमों कथाओं सें ऐसा लगता है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव राम कृष्ण व अन्य ब्राह्मण ऋषियों के समय नारी की हैसीयत उतनी ही थी जितनी आज के समय में हुक्के या बीड़ी की है. जैसे आज के समय में कई लोग एक ही जगह बैठ कर एक ही हुक्के के कश लगा लेते हैं या एक ही बीड़ी को दो तीन लोग मिल कर पी लेते हैं वैसे ही उस समय में एक ही स्त्री को कई कई ब्राह्मण एक साथ ओर सबके सामने भोग लेते थे. अगर राम को पैदा करने के लिए रामायण में किये गए अश्वमेध यज्ञ को सच मान लें तो कौशल्या भी सब के सामने एक साथ कई ब्राह्मण ऋषियों की वासना का शिकार हुई थी. आम आदमी तो फिर भी कुछ लज्जा संकोच करता था मगर ब्राह्मण और उनके देव और उनकी स्त्रियां ऐसे ही भोग विलास के लिए पशुओं की तरह घूमा करते थे.

कितने शर्म की बात है कि दयानन्द ऐसे वेदों को भगवान का अदेश बता कर फिर सें लागू करने के लिए कहता है. और उसके चेले आर्यसमाजी नित्य ऐसी चिल्लपों मचाते हैं. क्या उनमें सें कोई भी अपनी बहन बेटी सें ऐसे आचरण की आशा कर सकता है?

गोधर्म ही आर्यों ब्राह्मणों के धर्म का मूल मन्त्र था और है जो सत्तयुग सें लेकर आज तक उनके धर्म में अनवरत जारी है. ऋग्वेद के इसी मूल मन्त्र का पालन करते हुए ब्राह्मणवाद के समस्त देवों, देवियों, भगवानों, ऋषियों मुनियों ने गोधर्म का खुल कर पालन किया. उन्होंने भारत भूमि को व्यभिचार का अखाड़ा बना दिया.

ऋग्वेद : ब्राह्मणों के सभी ग्रन्थ गोधर्म के कारनामों सें भरे पड़े हैं. ब्राह्मणों का आदि गन्थ ऋग्वेद इसका सूत्रपात करता है. उस समय इन्द्र ब्राह्मणों का सर्वोच्च देव होता था. वेदों के अनुसार उसी ने गोधर्म की शुरूआत की. ऋग्वेद (10.86) में इन्द्र और एक अन्य स्त्री इन्द्राणी के संवाद हैं कि गोधर्म के लिए पुरुष लिंग कैसा होना चाहिए.

इन्द्र, "वह पुरूष मैथुन के समर्थ है जिसका लिंग बैठने पर दोनों जांघों के बीच लटकता है."

इन्द्राणी, "वह पुरुष मैथुन के योग्य नहीं है जिसका लिंग दोनों जांघों के बीच लटकता रहे. वही पुरुष मैथुन के समर्थ है जिसके बैठने पर बालों वाला लिंग फैलता है और प्रकाश करता है."

इस संवाद को कई बार दोहराया गया है और इसका पाठ हर यज्ञ में किया जाता था ताकि बार बार दोहराने सें वासना जाग जाए और ब्राह्मण ऋषियों का काम आसान हो जाए.

ऋग्वेद (10.10.1) में इस संदर्भ में जुड़वां बहन भाई के कुछ संवाद भी हैं ताकि गोधर्म का पालन करने में कोई रिश्ता आड़े न आने पाए. उनका नाम यम (ब्राह्मणों का मृत्यु का देवता) और यमी रखा गया है.

यमी : "इस फैल हुए समुद्र के बीच इस द्वीप में आकर इस निर्जन जगह पर मैं तेरा सहवास चाहती हूँ क्योंकि गर्भावस्था सें ही तू मेरा साथी है. तेरे द्वारा मेरे गर्भ सें जो पुत्र पैदा होगा वह हमारे पिता का श्रेष्ठ नाती होगा."

यम : "यह निर्जन प्रदेश नहीं है. देवों के दूत यहां घूम रहे हैं. मैं तुझ सें सहवास नहीं कर सकता"

यमी : "चाहे तेरे जैसे मनुष्य ऐसे मैथुन सें इंकार करते हैं लेकिन देव लोग जानबूझ कर ऐसा संसर्ग करते हैं. **इसलिए** मेरी भी इच्छा हो रही है कि तू भी मेरे साथ मैथुन कर."

यम : "मैं तेरा भाई हूँ और तेरा संभोग नहीं चाहता. तू किसी अन्य के साथ संसर्ग कर तथा उसके साथ ऐसे लिपट जैसे लता पेड़ सें लिपटती है."

यमी : "धिक्कार है तेरे सहोदर (एक ही गर्भ सें जन्मे) होने पर जो अपने बहन की कामतृप्ति नहीं कर सकता"

अतः इस तरह सें ऋग्वेद ने एक बहन द्वारा अपने भाई सें वासना मिटाने की बात को बुरा नहीं कहा है बल्कि उस पुरुष को ही धिक्कारा है जो ऐसा नहीं करता. उसे इसलिए नहीं धिक्कारा गया कि उसने अपनी बहन सें यह कहा कि वह किसी और सें सम्बंध बनाए बल्कि इसलिए धिक्कारा गया कि मर्द होते हुए भी उसने स्वयं सम्बन्ध क्यों नहीं बनाये. जैसे यम और यमी भाई बहन हैं वैसे ही हो सकता है कि इन्द्र और इन्द्राणी भी भाई बहन, माँ बेटा आदि का रिश्ता रखते हों.

ऋग्वेद (10.162.5) में ही गोधर्म की एक अन्य उदाहरण है जहां एक गर्भवती स्त्री सें वायदा किया गया है कि अगर उसका भाई, मालिक अथवा कोई उससें बलात्कार करना चाहेगा तो उसका दमन किया जाएगा. ऐसा वायदा केवल गर्भवती स्त्री सें ही किया गया है. कुंआरी कन्या अथवा विवाहित स्त्री जो गर्भवती नहीं है उसको कोई सुरक्षा नही दी गई है. उसके साथ गोधर्म करने का सभी को अधिकार है चाहे वह उसका भाई ही क्यों न हो.

महाकाव्य : इसी गोधर्म की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए पांडू कुन्ती सें कहता है कि बीते समय में आर्य स्त्रियों को कोई रोकटोक नहीं थी. वे वासना की आग पूरी करने के लिए खुले में घूमा करती थीं. वे कुंआरी होते हुए भी अनेक मर्दों सें मैथुन करती थीं. अतः तू भी ऐसा ही कर और बच्चे पैदा कर. (आदि 122)

पाण्डू ने अपनी पत्नि सें ऐसा क्यों कहा कि वह गैर मर्द सें बच्चे पैदा कर ले इसका जो कारण बताया गया है वह गोधर्म की एक सुनहरी उदाहरण है. कथा है कि एक बार पाण्डू जंगल में हिरण व खरगोश मारने गया. (शेर का सामना करने की हिम्मत किसी आर्य किसी क्षत्रिय में आज तक नहीं हुई) उसने एक हिरणी देखी और उस पर तीर चला दिया. हिरणी मर गई. जब राजा उसकी लाश उठाने के लिए वहां गया तो उसने पाया कि उस हिरणी के साथ एक दम नामक ब्राह्मण ऋषि अपनी काम वासना मिटा रहा था. ऋषि बहुत गुस्सा हुआ कि किसी ने उसके "काम" में बाधा डाल दी है. अतः उसने पाण्डू को श्राप दे दिया कि जैसे उसने उसे तड़पाया है वैसे ही वह तड़पेगा. अगर उसने किसी सें भी मैथुन किया तो मारा जाएगा. अतः उसे मौत का डर था कि अगर वह कुन्ती के पास गया तो मर जाएगा. अतः वह कुन्ती सें किसी और सें नियोग करके सन्तान पैदा करने के लिए कह रहा था. आगे कथा है कि एक दिन पाण्डू अपने पर काबू नहीं रख सका और श्राप के अनुसार मारा गया.

कितने दुःख की बात है कि ऐसे लोग जो निरीह पशुओं सें अपनी वासना मिटाते थे उन्हें ऋषि मुनि कहा गया है! और उससें भी ज्यादा दुःख की बात है कि ऐसे अनाचारी श्राप देते है जो पूरे भी होते हैं!! इस कथा सें एक बात तो सिद्ध होती है कि ऋषि बनने के लिए नैतिकता की कतई आवश्यकता नहीं होती थी.

महाभारत में ऐसी ही एक अन्य कथा आर्य राजा कीचक की है. उसने अपनी सगी बहन सें मिल कर द्रोपदी सें बलात्कार करने की योजना बनाई. ऐसी अश्लील योजना बनाते किसी को शर्म नहीं आई; न भाई को, न बहन को और न ही कथाकार ब्राह्मण व्यास को!! जैसे पशुओं में कोई रिश्ता नहीं होता वैसे ही ब्राह्मण लेखक गोधर्म के लिए किसी रिश्ते को नहीं मानते थे.

महाभारत के नायकों की माँ कुन्ती गोधर्म की खरी उदाहरण है. उसने न केवल स्वयं गोधर्म का पालन किया बल्कि अपनी देवरानी माद्री को भी गोधर्म का रास्ता दिखाया. न केवल माद्री को बल्कि उसने अपनी बहू द्रोपदी को भी ब्राह्मणवाद के इस मुख्य मार्ग पर डाल दिया.

कहीं लोग ब्राह्मणिक गोधर्म पर कोई ऐतराज न करें तो ब्राह्मण व्यास ने कुन्ती की कहानी की तरह द्रोपदी की कहानी में भी टविस्ट दे दिया. जैसे उसने कुन्ती के बारे में लिखा कि वह सूर्य सें कर्ण पैदा करके भी कुंआरी ही रही वैसे ही द्रोपदी भी हर भाई सें सुहागरात मना कर अगले दिन कुंआरी बन जाती थी. (आदि 197. 13)

स्वभाविक प्रश्न है कि ऐसी कहानियां घढ़ने की क्या आवश्यकता थी. इसका कारण एक ही है कि ब्राह्मण ऋषि लेखक अपने धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम सें यह बताना चाहते थे कि उनके "भगवानों" और उनके अवतारों द्वारा किसी भी स्त्री सें भोग करने पर भी वह स्त्री कुंआरी ही रहती है. लेकिन अगर कोई साधारण मनुष्य चाहे वह राजा (कीचक) ही क्यों न हो ऐसा यत्न भी करे तो उसे मार दिया जाना चाहिए. **अतः इन कथाओं के माध्यम सें ब्राह्मणों और उनके देवों ने गोधर्म पर भी अपना एकाधिकार जमा लिया. और तो और ब्राह्मणों ने अपने सभी अवतार गोधर्म सें पैदा हुए बताये या फिर उन अवतारों को गोधर्म का ध्वज वाहक बना दिया ताकि कोई उनके व्यभिचार पर उंगली न उठा सके.**

अभी तक नम्बूदरी ब्राह्मण नायर स्त्रियों को "सम्बंधम्" प्रथा के तहत अपनी रखैल बना कर रखना अपना अधिकार समझता है. इस प्रथा के तहत ब्राह्मण रात को लड़की के पास रहता है. सुबह माँ बाप खुश हो जाते हैं कि उनकी बेटी को पवित्र कर दिया गया है. ऐसे ही मालाबार की उन्निवरी जाति की लड़की के साथ जब तक ब्राह्मण भोग नहीं कर लेता उसकी शादी नहीं हो सकती. (समु 1.4)

इसी लिए जब उच्च (ब्राह्मण क्षत्रिय) वर्ण की महिलाएं निम्न वर्ण के पुरुषों सें गर्भवती होती थीं तो उनकी सन्तानों को अंत्यज कहा जाता था. (आदि 83)

सरिता के सम्पादक महोदय ने बिल्कुल सत्य लिखा है कि व्यभिचार और विलासता दुनिया में सब कहीं है लेकिन सब जगह इन्हें शर्म के साथ बीमारी या कमजोरी की तरह माना गया है लेकिन व्यभिचार और विलासता को धर्म बताना और उन्हें भगवान के कारनामों के रूप में चित्रित करना केवल ब्राह्मणों के धर्म में ही मिलता है. केवल ब्राह्मणवाद में ही स्त्री पुरुष के गुप्त अंगों (शिव लिंग व उसके चारों ओर बनी पार्वती योनि) को परमात्मा के रूप पूजा जाता है. स्त्री पुरुष की मैथुन करते चौंसठ अथवा चौरासी आसनों वाली मूर्तियां बड़े बड़े मन्दिरों के मुख्य द्वारों पर विराजमान हैं.

मन्दिरों में धूर्तता और व्यभिचार का धन्धा आज भी चलता है. अयोध्या के मन्दिरों में नित्य ऐसी स्त्रियां आती हैं जो केवल तुलसी के पत्ते चढ़ाती हैं और लौटती हैं सेर दो सेर लड्डूओं के साथ. अयोध्या के आसपास के

गांवों की लापता स्त्रियां ढूंढने पर इन्हीं मन्दिरों में मिल जाती हैं. मन्दिरों के लोग आसपास की डकैती और लूटपाट में भी भाग लेते हैं और अनेकों केसों में फंसे रहते हैं. (समु 9.251)

4.3 नियोग ही धर्म है

ब्राह्मणों ने गोधर्म के रूप में एक ऐसी वीभत्स प्रथा का आविष्कार किया जिसकी दुनिया में कहीं और मिसाल नहीं मिलती. ब्राह्मणों और उनके पूजनीय देवों ने मिल कर नियोग के रूप में व्यभिचार का ऐसा नंगा नाच रचा कि उससें आम स्त्री का तो क्या कहना, भगवान कहे जाने वाले अनेक अवतारों की मांएं तक अपनी आबरू नहीं बचा सकीं. राम, हनुमान, अर्जुन आदि सभी गैर मर्दों द्वारा किये गए नियोग की उपज हैं. **नियोग के इतने अधिक केस हुए हैं कि आर्यों में ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसके पूर्वज नियोग सें पैदा न हुए हों! उनमें अपने असली बाप सें पैदा होने वाला कोई मिलेगा ही नहीं!!.**

नियोग का अर्थ

“अपने वीर्य के बिना भी लोग धर्म फल देने वाली संतान पा लेते हैं. यह बात मनु ने कही है. तुम अपने समान या अपने सें श्रेष्ठ वयक्ति सें संतान प्राप्त करो.” (आदि 119)

आप्टे ने नियोग का अर्थ दिया है किसी काम में लगाना, किसी की आज्ञा अनुसार कोई काम करना. प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निसन्तान विधवा को अपने देवर या किसी निकट सम्बंधी के द्वारा सन्तान पैदा करने की अनुमति है. इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'क्षेत्रज' कहलाता है. मनु (9.59)

ब्राह्मणों ने नियोग का अर्थ सन्तान पैदा करने के काम में लगना कर दिया. आप्टे ने चाहे देवर अथवा निकट सम्बंधी सें नियोग करवाने की बात कही है लेकिन नियोग के जितने भी उदाहरण मिलते हैं वे **सब के सब ब्राह्मणों** द्वारा गैरों की स्त्रियों सें किए गए थे. अतः वास्तविकता में नियोग का अर्थ है ब्राह्मण द्वारा किसी अन्य की स्त्री सें समागम करना है.

डबल पुण्य का काम : नियोग : पांडू ने जब कुंती सें नियोग द्वारा संतान पैदा करने के लिये कहा तो एक बार तो कुंती ने मना कर दिया. तब पांडू उसे समझाते हुए बोला कि संतान पैदा करना **सबसें बड़ा धर्म** है. अतः नियोग द्वारा पुत्र पैदा करने सें दोहरा लाभ होता है एक तो यह कि पति की आज्ञा का पालन होता है दूसरा यह कि पुत्र की प्राप्ति होती है. **और पुत्र पैदा होने पर ही व्यक्ति स्वर्ग जाने का अधिकारी बन पाता है. (अप्सरा 532)**

नियोग की शुरूआत : दयानन्द नियोग को आर्ष प्रथा कहता है. आर्ष अर्थात ऋषि परम्परा. उसके अनुसार नियोग की प्रथा ऋषियों द्वारा चलाई गयी है. ऋग्वेद हर विधवा नारी को आदेश देता है, “हे (विधवा) नारी, उठो और लोक जीवन अपनाओ. तुम व्यर्थ ही इस मरे हुए आदमी के पास लेटी हुई हो. आओ अब तुम नए पुरुष का समागम स्वीकार करो जो तुम्हारा हाथ पकड़ रहा है और जो तुम सें प्यार करता है.” (10.18.8)

दयानंद इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार सें करता है : हे विधवे, तू इस मरे हुए पति की आशा छोड़ कर बाकी जीवित पुरुषों में सें दूसरे पति को प्राप्त हो, तू इस बात का निश्चय रख कि जो तुझ विधवा का पाणिग्रहण करेगा उस नियुक्त पति सें सम्बंध के लिए नियोग होगा तो उससें जो बालक पैदा होगा वह उस नियुक्त पति का होगा. अगर तू अपने लिए नियोग करेगी तो सन्तान तेरी होगी.

इस श्लोक में कुछ शब्द चौंकाने वाले हैं.

1. **इस मृत पति :** सबसें पहला तो यही तथ्य चौंकाने वाला है कि यह आदेश तब दिया गया जब वह औरत अभी तक अपने ”इस मृत पति” का संस्कार भी नहीं कर पाई थी. अगर संस्कार किया जा चुका होता तो शब्द होते ”उस मृत पति” की आशा छोड़. इसका अर्थ हुआ कि दयानंद यह कहता है कि वेद की आज्ञा है कि मरे पति का संस्कार करने सें पहले ही नियोगी पति नियुक्त कर दिया जाए. औरत पर इससें बड़ा जुल्म और क्या हो सकता है कि पति की लाश घर पर पड़ी हो उसे नियोग के लिए किसी अन्य के हवाले कर दिया जाता था.
2. **दूसरा नियुक्त पति :** दूसरा जो ”पति” होगा वह नियुक्त किया जाएगा. किसके द्वारा, इस बात पर दयानंद चुप्पी साध गया. निश्चित रूप सें वह विधवा तो अपने लिए पति नियुक्त करने की स्थिति में नहीं है जिसे अपने विवाहित पति की लाश पर रोने भी नहीं दिया जा रहा तथा उसके पति के दाह संस्कार सें पहले ही उसके लिए नियोगी नियुक्त किया जा रहा है. जितनी भी नियोग की घटनाएं हुई हैं वहां नियोगी ब्राह्मण जाति सें ही रहा है. अतः दयानंद की चुप्पी का भी यही राज है.

3. **पति** : एक बात जो सबसें अधिक चौंकाने वाली है वह यह है कि उस नियोगी को भी "पति" कहा गया है जबकि उस पुरुष ने कुछ पल के लिए यौन सम्बंध बनाने के सिवाय कुछ भी नहीं करना था. उस पुरुष ने उस औरत को अपनी जायदाद का वारिस नहीं बनाना था, उसे अपने घर पर नहीं रखना था. यहां तक कि उस नियोग रूपी व्यभिचार सें पैदा संतान को अपना नाम भी नहीं देना था. इन सब बातों के बावजूद वह आदमी उस विधवा का पति कहा गया है. इसका अर्थ यह हुआ कि जो भी पुरुष किसी भी स्त्री सें यौन सम्बंध बनाता था तो वह उतने समय के लिए उसका पति कहलाता था. अतः जब तक व्यास ने पांडू पत्नियों सें व्यभिचार किया वह उनका पति था, जब तक ऋष्यश्रृंग ने पुत्रेष्टि यज्ञ तथा अश्वमेध यज्ञ किया, वह दशरथ की रानियों का पति था. जब तक पवन ने केसरी की पत्नि अंजनि के हनुमान पैदा किया तब तक वह उसका पति था. **कुल मिला कर निष्कर्ष यह निकला कि आर्यों में बिना शादी किए भी मर्द "पति" बन जाता था. अतः ब्राह्मण ग्रन्थों में जहां कहीं भी पति शब्द आया है उसका अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि उस आदमी ने उस स्त्री के साथ शादी की है.**

4. **पाणिग्रहण** : "नियुक्त पति द्वारा पाणिग्रहण" करने का अर्थ यह नहीं है कि वह उस विधवा सें शादी करेगा अथवा उसके साथ सारी उम्र बिताएगा. आज चाहे कुछ लोग अपनी बेटी की शादी के कार्ड में विवाह की जगह पाणिग्रहण शब्द का प्रयोग कर लेते हैं लेकिन इसका असली अर्थ है "हाथ पकड़ना". अतः यहां इसका अर्थ है कि वह नियोगी उस विधवा को नियोग के लिए हाथ पकड़ कर ले जाएगा. आर्य ऋषि किसी भी स्त्री का हाथ पकड़ लिया करते थे. अपनी इस करतूत पर पर्दा डालने के लिए उन्होंने शादी को भी पाणिग्रहण बना दिया. शेष ऊपर पति के अर्थ सें साफ है कि ब्राह्मणधर्म में पति कहलवाने के लिए शादी करना जरूरी नहीं है.

5. **अपने लिए संतान** : दयानंद कहता है कि अगर तू अपने लिए नियोग करेगी तो संतान तेरी होगी वर्ना नियोगी की होगी. इस बात का खुलासा यानंद नहीं करता. अतः इस बात का अर्थ है कि उस विधवा का नियोग तो होना ही है, अगर वह अपने लिए नियोग करेगी यानि अपनी मर्जी सें यौन सम्बंध बनाएगी तो संतान की हकदार होगी. अगर उसकी मर्जी नहीं है तो जो उससें बलात्कार करके संतान पैदा करेगा, वही संतान का हकदार होगा. दयानंद का पूर्वज मनु भी यही कहता है कि स्त्री तो धरती के समान है. जैसे फसल धरती की नहीं होती वैसे ही संतान स्त्री की नहीं होती. (मनु 9)

नियोग के लिए एक अन्य वेद मन्त्र (ऋग 10.84.45) का सहारा लिया गया. इस श्लोक में वधु को दस पुत्रों का आर्शीवाद दिया गया है. परन्तु नियोग का आनन्द चाहने वाले ब्राह्मण ऋषियों ने इस "आर्शीवाद" को "आदेश" में बदल दिया. वास्तव में संस्कृत भाषा है ही ऐसी कूट भाषा जिस का जो जैसे चाहे अर्थ कर सकता है. दयानन्द ने भी दस पुत्र पैदा करना वेद की आज्ञा माना और फतवा दिया कि अगर विवाहित पति सें दस पुत्र न पैदा हो सकते हों तो अन्य "देवरों" सें पैदा करे! विधवा भी दस पुत्र तो पैदा करे ही!

आर्य ब्राह्मण ऋषियों ने स्त्री को मात्र भोग की वस्तु बना दिया था. एक पति का दाह संस्कार करने सें पहले ही दूसरे को उसका हाथ पकड़ा दिया जाता था. इस नियम को दयानन्द भी मानता है. (समु 3.72) सीता तो राम सें पहले ही आत्महत्या कर चुकी थी और रूक्मणि कृष्ण के साथ जल मरी वर्ना उनके साथ भी ऐसा ही कुछ हो जाता. रही राधा की बात तो रंडियों को एक जार के मरने सें क्या अंतर पड़ता था.

माता का पति : ब्राह्मणों के अधिकतर धार्मिक ग्रन्थों में "माता का पति" शब्द का प्रयोग किया गया है. (आदि 286) आज हमें यह शब्द बहुत अटपटा सा लगता है. किसी को "पिता" कहने की बजाए "माता का पति" क्यों कहा जाता था. इसका सीधा सा कारण है कि आर्यों में सन्तान पैदा करने के लिए शादी करके पति बनना आवश्यक नहीं था. उदाहरणतः हनुमान के लिए केसरी उसका "माता का पति" है तथा पवन उसका असली बाप है. ऐसा ही राम के लिए ऋश्यश्रृंग उसका असली बाप है तथा दशरथ उसका "माता का पति" है. महाभारत तो माता के पतियों सें भरी पड़ी है.

नियोग कर्ता देवर : आज देवर का अर्थ है पति का छोटा भाई. भारत के लगभग सभी घरों में भाभी देवर का रिश्ता माँ बेटे के समान माना जाता है लेकिन ब्राह्मण धर्म में देवर का अर्थ कुछ और ही है. ऋग्वेद में कहा गया है कि विधवा स्त्री अपने **देवर** को अपनी सेज की ओर खींचती है. (10.40.2) दयानन्द ने "देवर" शब्द की जो व्याख्या की है उसीके शब्दों में, इस प्रकार सें है, "देवर शब्द का अर्थ जैसा तुम समझते हो वैसा नहीं. देखो निरूक्त में : देवरः कस्माद् द्वितीयो वर उच्चयते. (निरू अ.3 खण्ड15) **देवर उसको कहते हैं जो विधवा का दूसरा पति होता है**. चाहे छोटा भाई वा बड़ा भाई, अपने वर्ण का या अपने सें उत्तम वर्ण वाला है जिससें नियोग करे उसी का नाम देवर है." उसका कहना है जो विधवा अथवा सधवा नारी सें नियोग करे उसे **देवर** कहते है.

जैसा कि ऋग्वेद (10.18.8) के नियम सें स्पष्ट है कि पहले वर/पति के दाह संस्कार सें पहले ही स्त्री को दूसरे वर के हवाले कर दी जाती थी. **अथर्व वेद का आदेश है कि जो स्त्री ऐसे आदमी को नहीं अपनाती थी उसके बाल काट दिये जाते थे. (14.2.60)** दयानन्द के अनुसार इस तरह दूसरा वरण करने वाला पुरुष ही देवर है. याज्ञवल्क्य स्मृति (विवाह प्रकरण) के अनुसार भी देवर (वह है जो) पुत्रहीना सें पुत्र पैदा करने की कामना सें समागम करता है. (समु 3.90) इसलिए इसे **"देवा धर्म"** भी कहा जाता है. (राज 49) अतः व्यास पांडवों का देवर है तथा ऋष्यश्रृंग और वशिष्ठ रघुकुल के देवर हैं.

ब्राह्मणों द्वारा नियोग के निर्धारित नियम :

दयानन्द ने अपनी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश (समुल्लास 4) में नियोग प्रथा पर आर्य समाजियों को निर्देश दिये हैं. यह नियम हैं:

1. ब्राह्मण धर्म के सबसें बड़े कानूनविद मनु का आदेश है कि **बिना पुत्र पैदा किये कोई भी नर नारी मोक्ष प्राप्त करने की न सोचे क्योंकि पुत्र पैदा करने के बाद ही उसे मोक्ष मिल सकता है. बिना पुत्र पैदा किये जो मोक्ष के बारे में सोचेगा उसे नरक मिलेगा. (मनु 6.36)** अतः हर हिन्दू के लिए पुत्र पैदा करना जरूरी था चाहे जैसे भी पैदा किया जाए. ब्राह्मणों ने ऐसे में नियोग को सबसें आसान रास्ता बनाया.
2. हर नारी को ग्यारह पुत्र पैदा करने अनिवार्य हैं क्योंकि ऐसा वेद का विधान है: "प्रजां प्रजनय व है, एकादश पुत्रान विंदा व है स रेतो दधा व है" (समु 10.288)
3. जिस नारी के केवल लड़कियां ही पैदा हुई हों उसे त्याग दिया जाना चाहिए तथा दूसरी स्त्री सें नियोग करके पुत्र पैदा करने चाहिए. ऐसा दयानन्द के ही पूर्वज मनु का आदेश है. (मनु 9.81) नारी को पुत्र अवश्य पैदा करने चाहिए.
4. दयानन्द के अनुसार वेदों में ग्यारह पुरुषों सें नियोग का विधान है. उसने ऋग्वेद (10.84.45) पर भाष्य किया है कि अगर एक सें पुत्र न हो तो दूसरे सें संभोग करे. दूसरें सें भी पुत्र न हो तो तीसरें सें करे. इस तरह ग्यारह पुत्र होने तक पुरुष बदलती रहे. यह ब्राह्मणों की ऐसी वीभत्स धर्माज्ञा थी जिससें भारत की किसी नारी का स्तीत्व सुरक्षित नहीं रह सका. धर्म के नाम पर जारी की गई वेद की इस आज्ञा सें ब्राह्मणों और देवों के लिए परस्त्री गमन का रास्ता खुल गया. पुत्र प्राप्ति की वेदाज्ञा के कारण कौशल्या और अंजनि तक स्वयं को गैर मर्दों के व्यभिचार सें नहीं बचा पाई.
5. दयानन्द अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश (समुलास 4) में फतवा देता है कि स्त्री विधवा हो या सधवा हो, वह नियोग कर सकती है अथवा उनसें नियोग करवाया जा सकता है. लेकिन अगर सधवा नियोग करे तो भी वह अपने पति को नहीं छोड़ सकती. दयानन्द विधवा स्त्री द्वारा नियोग करना अनिवार्य करार देता है. जबकि उसके पूर्वज ब्राह्मण पुत्रहीना द्वारा नियोग करना अनिवार्य मानते हैं. याज्ञवल्क्य का निर्देश है कि पुत्रहीना पुत्र पैदा करने की कामना सें देवर सें समागम करे. दयानन्द का निर्देश है कि विधवा पुत्र पैदा करने की कामना सें देवर सें समागम करे. अतः दयानन्द भी पुत्रहीना (विधवा अथवा सधवा जिसका पति जीवित हो) दोनों के लिए नियोग अनिवार्य करार देता है. अगर ब्राह्मण धर्म का इतिहास देखें तो लगभग सभी नियोग जवान और सुन्दर सधवा अथवा कुंआरी स्त्रियों पर ही किये गए. बूढ़ी विधवाओं की ओर किसी ने देखा ही नहीं. पुत्रहीना का अर्थ भी वह स्त्री नहीं है जिसके कोई पुत्र न हो बल्कि इसका अर्थ है जिसके ग्यारह सें कम पुत्र हों. अतः ब्राह्मण किसी भी ऐसी स्त्री सें नियोग कर सकते थे जिसके अभी तक ग्यारह पुत्र न हुए हों.
6. नियोग कर्ता (देवर) सपिंड हो, नहीं तो सगोत्र हो, नहीं तो अपने सें उच्च कुल का हो, **किसी निम्न जाति सें न हो. (स प्र 4).** क्योंकि जब उच्च वर्ण (ब्राह्मण क्षत्रिय) की महिलाएं निम्न वर्ण के पुरुषों सें रमणात होती हैं तो उनकी सन्तानों को अंत्यज (अछूत) कहा जाता है. (आदि 83) सपिंड का अर्थ है पति की छः पीढ़ियों में से पुरुष और सगोत्र का अर्थ है पति के गोत्र का पुरुष जो छः पीढ़ियों में या उससें बाहर का हो.
7. महाभारत में आर्यों का बाप का बाप पितामह आदेश देता है कि किसी ब्राह्मण को धन देकर बुलाओ और नियोग करवाओ. (आदि 104) **मनु का आदेश है कि ब्राह्मण के अतिरिक्त किसी अन्य सें नियोग नहीं करवाया जा सकता क्यों कि ऐसा करने सें सनातन धर्म नष्ट हो जाता है. (9.64)**

- दयानन्द कहता है कि नियोग करते समय देवर अपने शरीर पर घी लगा कर जाए. लेकिन मनु केवल विधवा सें नियोग करते समय ही घी लगाने की बात करता है. दयानन्द इसलिए घी लगाने के लिए कहता है ताकि स्त्री के मन में वासना न जगे और नियोग का काम पुत्र प्राप्ति तक ही सीमित रहे. लेकिन वास्तविकता में दयानन्द की यह बातें महज किताबी बातें हैं बल्कि घड़ियाली आँसू हैं. ब्राह्मणों के ऐसे जितने भी देवर (ऋषि) हुए हैं वह सभी स्वाद और धन कमाने के लिए नियोग करते रहे हैं.
- नियोग के लिए देवर की नियुक्ति गुरूजन करें. ब्राह्मण के सिवाय कोई अन्य पढ़ लिख नहीं सकता था. इसलिए उसके सिवाय कोई अन्य गुरू नहीं हो सकता था. जैसे किसी ब्राह्मण ने आज तक गैर

ब्राह्मण को किसी मन्दिर का पुरोहित नहीं बनाया वैसे ही किसी गुरूजन ने आज तक किसी अब्राह्मण को नियोगी नियुक्त नहीं किया.

8. **स्त्री की सहमति जरूरी नहीं :** इस सारे प्रकरण में सब सें दुखदायक बात यह है कि जिस स्त्री के पुत्र पैदा किये जाते थे उससें सहमति लेना तो दूर, उससें इस काम के लिए पूछा भी नहीं जाता था. अक्सर औरतें पुत्र पैदा करने के नाम पर ब्राह्मण ऋषियों के बलात्कार का शिकार होती थीं. पांडव और कौरवों की मांओं सें व्यास ने बलात्कार ही तो किया था तभी तो एक अंधा और दूसरा पीलिया का मरीज पैदा हुआ. पांडवों की दोनों माँओं में सें एक भी व्यास सें यौन सम्बंध नहीं बनाना चाहती थी.

पांडू कुन्ती सें आर्य सनातन धर्म के अनुरूप नियोग द्वारा पुत्र पैदा करने की आज्ञा देता है. कुन्ती बचपन में सूर्य को भुगत चुकी थी वह जानती थी कि बलात्कारी कैसे होते हैं. उसने अपने पति सें बहुत मिन्नतें की कि वह उससें अधर्म न करवाये और न ही उसे बलात्कार के नर्क में धकेले. लेकिन पांडू ने कुन्ती की एक नहीं सुनी और अंततः उसे गैर मर्दों की हवस का शिकार होना ही पड़ा. उसे तीन परपुरुषों सें नियोग करके तीन पुत्र पैदा करने ही पड़े!!

हाँ, इतना अवश्य था कि अगर स्त्री अपने पति को बिना बताये भी नियोग अथवा व्यभिचार करके पुत्र पैदा कर लेती थी तो भी पति उस पुत्र को अपना मान लेता था. जैसा केसरी ने हनुमान के केस में किया. अंजनि ने केसरी सें पूछे बिना पवन सें नियोग करके हनुमान पैदा कर लिया लेकिन केसरी ने हनुमान को अपना पुत्र मानने में कोई आपत्ति नहीं की.

अप्सरा के लेखक देसाई महोदय ने वेदों की अनेक ऋचाओं का हवाला देते हुए कहा है कि इन ऋचाओं सें वेश्यावृति की बजाये व्यभिचार और खुलमखुला काम व्यवहार की गवाही अधिक मिलती है. ऐसी घटनाओं में अध्यात्मिक तत्व ढूंढने की बजाये इसे उस समय का काम व्यवहार मानना अधिक तर्कसंगत होगा. (524) अगर सही शब्दों में कहा जाये तो जैसे ब्राह्मणिक देव आवारा कुत्तों की तरह इधर उधर मूंह मारते घूमते थे वैसे ही उनकी देवियां होतीं थीं. वे भी आवारा कुत्तियों की तरह अपनी वासना मिटाने के लिये हांडतीं थीं.

9. **सन्तान किसकी :** ब्राह्मण ग्रन्थों में एक बड़ी अजीब समानता है कि उनके अधिकतर नायक बांझ या नपुंसक हैं जो अपनी पत्नि के संतान पैदा नहीं कर पाए लेकिन जिसने भी नियोग किया वह बच्चे पैदा करने में सफल रहा. अतः जब हर नियोगी संतान पैदा करने में सफल रहा तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि उस बालक का मालिक कौन होगा. कानूनन तो नियोग सें जो भी संतान पैदा होती थी अवैध अथवा इललैजिटिमेट होती थी. ब्राह्मण धर्म में ऐसा भी माना जाता था कि माँ तो चर्म की पिटारी है. (आदि 121) बच्चे का असली मालिक तो बाप होता है. जैसे धरती पर उगने वाली फसल धरती की नहीं होती जो उसे उपजाती है बल्कि उसकी होती है जो उसमें बीज डालता है वैसे ही संतान भी उस स्त्री की नहीं होती जो उसे जन्म देती है बल्कि स्त्री में बीज डालने वाले पुरुष की ही होती है.

- ☞ अगर नियोग का आनन्द लेने वाले ब्राह्मणों को अपने बच्चे भी संभालने पड़ जाते तो नियोग उनके लिए जी का जंजाल बन जाता. अतः उन्होंने नियोग की सन्तानों को इस सनातन नियम सें अलग रखा.
- ☞ नियोग अथवा गोधर्म से पैदा हुए बच्चे औरस बाप की बजाए माता और 'माता के पति' की संतान कहलाए. ऐसी संतानों को अपने वैध पिता का ही उतराधिकारी माना गया.
- ☞ अक्सर ऐसी संतान माँ के नाम सें भी जानी गई. जैसे पांडवों को कौंतेय (कुंती के बच्चे) कहा जाता है. लेकिन कुछ अपनी माँ के साथ साथ औरस बाप के नाम सें भी जाने गए. जैसे हनुमान को अंजनि पुत्र भी कहा जाता है तथा मारूत (पवन का पुत्र) भी कहा जाता है. वह अपने माता के पति केसरी के नाम सें कम ही बुलाया गया है.
- ☞ इस विषय पर दयानंद का कहना है (सप्र 4) कि अगर दोनों में सहमति हो तो पुत्र को दोनों में सें कोई एक भी रख सकता है. लड़की को माँ ने ही रखना होता था.
- ☞ जहां स्थिति ऐसी हो कि पुरुष भी पुत्र रखना चाहे तो दयानन्द ऋग्वेद (10.85.45) का हवाला देते हुए कहता है कि ऐसी स्थिति में स्त्री उससें चार पुत्र पैदा करे. इन में सें दो उसे दे दे तथा दो स्वयं रख ले.
- ☞ इस तरह एक स्त्री पाँच पुरुषों सें दस पुत्र अपने लिए पैदा कर सकती है तथा उनमें सें दो दो पुत्र प्रत्येक पुरुष को दे दे. ऐसे ही दस पुरुष भी एक ही स्त्री सें अपने लिए एक एक पुत्र पैदा कर सकते हैं.(सप्र.4 पृ 110,111)
- ☞ मनु का आदेश है कि विधवा सें केवल एक ही पुत्र पैदा किया जाए. (मनु 9.60) अतः अधिक पुत्र चाहिए तो किसी सधवा को ढूढना चाहिए.
- ☞ ऋग्वेद के श्लोक 10.18.8 का अर्थ करते हुए दयानन्द लिखता है (सप्र.4) हे विधवा, तू इस मरे हुए पति की आशा छोड़ दे. बाकी पुरुषों में सें जिंदा पति का प्राप्त कर. और इसका विचार और निश्चय रख कि

जो तुझ विधवा सें नियोग करने के लिए नियुक्त पति सें जो पुत्र पैदा होगा वह उसी नियुक्त पति का होगा. ऐसे निश्चय युक्त हो”.

☞ ऐसे ही जब हत्यारे परशु ने समस्त क्षत्रिय काट कर मार डाले तो क्षत्राणियों ने ब्राह्मणों सें नियोग करके जो बच्चे पैदा किये वे सभी क्षत्रिय कहलाए और अपनी माता के पति के उतराधिकारी बने!

असल में दयानंद भी ब्राह्मण ही था. सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति की अपनी सदियों पुरानी व्यवस्था को त्यागना नहीं चाहता था. अतः उसने ऐसी व्यवस्था दी. राम और कृष्ण सें तो उसें कुछ मिलने वाला नहीं था सो उनका तो खण्डन कर दिया लेकिन असली बात को नहीं छोड़ पाया. उसने कहा नियोग ब्राह्मण सें करवाएं और जब तक ग्यारह पुत्र नहीं हो जाएं नियोग करवाती रहें. अगर यह नियम सचमुच लागू हो जाता तो आज हर ब्राह्मण के दरवाजे पर स्त्रियां लाइन लगा कर खड़ी नजर आती. पूरा भारत व्यभिचार का अड्डा बन गया होता.

ब्राह्मणों का एकाधिकार : दयानन्द ने नियोग प्रथा पर लीपा पोती करने की असफल कोशिश की है. वह कहता है कि देवर सपिंड या सगोत्र होना चाहिए. दूसरे यह कि देवर विधवा होने पर ही नियुक्त किया जाए. ब्राह्मण ग्रन्थों में कहीं कोई ऐसी उदाहरण नहीं है कि नियोग के लिए किसी सपिंड या सगोत्र पुरुष द्वारा किया गया हो. जहां भी नियोग हुआ है वहां ब्राह्मण ने ही किया है. व्यास, वशिष्ठ, ऋश्यश्रृंग आदि सभी ब्राह्मण थे. हट्टे कट्टे सांड जैसे! अपने गोधर्म का पालन करने वाले!!

- राम के अनेकों पूर्वजों ने अपने जीते जी अपनी पत्नियों को ब्राह्मणों के हवाले करके पुत्र पैदा करवाये हैं.
- सारे के सारे पांडव ऐसे बिना सपिंड बिना सगोत्र पुरुष द्वारा ही पैदा हुए हैं.
- जब परशु ने सभी क्षत्रिय कत्ल कर दिये थे तब भी क्षत्राणियां सड़कों पर लाईन लगा कर बैठती थीं कि कोई ब्राह्मण आयें और उनके पुत्र पैदा कर दे!!
- भीष्म भी अपनी माँ सें कहता है कि यह नियोग का नियम है कि जब भी नियोग कराना हो तो ब्राह्मणों को घर बुलाओ. उसे धन दो और नियोग करवाओ. अथवा तीर्थ स्थानों पर जाओ और वहां ब्राह्मणों सें नियोग करवाओ. (आदि 105) तभी ब्राह्मणों ने अपने मन्दिरों में मैथुन करती मूर्तियां बनवाई हैं ताकि आम आदमी इस अनाचारी नियोग के धन्धे को धार्मिक कर्म माने.

ब्राह्मण राष्ट्रपति राधाकृष्णन के अनुसार ब्राह्मण धर्म के चार प्रयोजन हैं : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष. ब्राह्मणों ने इन चारों प्रयोजनों को एक साथ पूरा करने के लिए नियोग का रास्ता खोज निकाला. खुला सैक्स उनके लिए “सनातन धर्म” था. अतः नियोग सें उनके धर्म का प्रयोजन पूरा हो जाता था. नियोग करने पर उन्हें माल पूए तो मिलते ही थे साथ में दक्षिणा भी मोटी मिलती थी. सो अर्थ का प्रयोजन भी पूरा हो जाता था. “काम” अर्थात वासना का काम तो यह था ही. रही बात मोक्ष की तो जो लोग भगवानों तक को नियोग सें पैदा कर सकते हों उन्हें मोक्ष सें कौन रोक सकता है!! यह बात दूसरी है कि परस्त्री गमन के काम में मस्त ब्राह्मणों ने मोक्ष प्राप्त करने की बजाए ऐसा ही जन्म बार बार लेना ज्यादा बेहतर समझा! ब्राह्मणों की आत्मा तो यहीं इस मृत्यु लोक में नित्य माल पूए खाकर तथा नित्य नई नवेलियों सें संगम करके तृप्त हो जाती थी. ऐसे रसमयी जीवन के आगे मोक्ष तो नगण्य है!!

लोगों ने जब नियोग को व्यभिचार, वेश्यावृति अथवा पाप बताया तो ब्राह्मण दयानन्द महारिशी बोला,” पाप तो नियोग रोकने में है!!” थू तेरे हे ब्राह्मण!!

नियोग सें खच्चर ही पैदा क्यों हुए : ब्राह्मण ग्रन्थों में जहां भी नियोग की कथाएं आई हैं वहां एक बात बहुत बार उजागर हुई है कि नियोग सें पैदा किए गये बच्चे आम तौर पर नपुंसक पैदा हुए हैं. वैसे तो यह कुदरत का नियम है कि दो अलग अलग प्रजाति के पशुओं के मेल सें जो संतान पैदा होती है वह आगे बच्चे पैदा करने लायक नहीं होता. जैसे गधे और घोड़ी के मेल सें जो खच्चर पैदा होता है वह नर अथवा मादा कुछ भी नहीं होता. अतः वह आगे बच्चे पैदा करने या जन्म देने लायक नहीं होता.

ऐसा ही कुछ ब्राह्मण नियोगधारियों के साथ हुआ. उनके द्वारा पैदा किये गए बच्चे अक्सर खच्चर ही पैदा हुए. महाभारत ऐसे खच्चरों सें भरी पड़ी है. अर्जुन जैसा एकाध अपवाद भी कहीं कहीं मिल जाता है. खच्चरों का सबसें बड़ा खानदान राम का रघुकुल रहा. राम और उसकी माता का पति दशरथ इसकी मुख्य उदाहरण हैं. लवकुश के आगे कोई संतान हुई इसकी जानकारी नहीं है. उससे पहले उनके कुल में मंधाता, स्वयं रघु जिसके नाम सें रघुकुल चला है इसकी अन्य मुख्य उदाहरण हैं.

ब्राह्मण समाज में नियोग :

नियोग की सबसें अधिक कथायें महाभारत में पाई जाती हैं. अतः यह सत्य ही कहा गया है कि महाभारत की रचना तो ब्राह्मणों की नियोग प्रथा के प्रचार के लिए ही की गई है. उसमें निम्न मुख्य नियोग कथायें हैं :

1. ब्राह्मणों का धर्मराज युद्धिष्ठर था. उसके बाप के बाप भीष्म ने अपनी माँ को यह समझााने के लिए कि नियोग ही सनातन धर्म है ब्राह्मण ऋषि दीर्घतमा की एक कथा सुनाई. (आदि.104) दीर्घतमा जन्म सें अन्धा था लेकिन सांड की तरह तगड़ा था. वह बहुत ही बदकार था. अतः लोगों ने उसे बांध कर नदी में फैंक दिया. बहता हुआ वह बलिराजा के घर तक पहुंच गया. वह उसे निकाल कर अपने घर ले गया. बलिराजा बांझ था. अतः बच्चे पैदा करने के लिए उसने अपनी रानी सुदेश्णा उसे सौंप दी. रानी ने अन्धे सांड सें बचने के लिए अपनी जगह अपनी दासी को भेज दिया. ऋषि कहे जाने वाले उस ब्राह्मण सांड ने उस दासी के ग्यारह पुत्र पैदा कर दिये. तब राजा को पता लगा कि रानी तो उस ब्राह्मण सांड के पास गई ही नहीं है. अतः वह स्वयं उसे वहां लेकर गया. अन्धे ब्राह्मण दीर्घतमा ने रानी के अंग टटोले और पसन्द आने पर नियोग करके उसके चार पाँच पुत्र – अंग, बंग, कलिंग, पुण्ड्र और सुम्ह पैदा कर दिये. अब क्योंकि उस राजा ने ब्राह्मण, (बदकार सांड) को अपनी बीवी सौंपी थी अतः बदले में महाभारत के ब्राह्मण लेखक ने उस टुचे से राजा को महाराजा और धर्मात्मा घोषित कर दिया. यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि महाभारत का लेखक भी व्यास बताया जाता है और वह भी सांड जैसा नियोगी बलात्कारी था. लेकिन **जहां व्यास ने दो के साथ एक फ्री की स्कीम चलाई वहीं दीर्घतमा ने एक के साथ एक फ्री की स्कीम चला दी.**
2. सत्यवती ने अपने अवैध बेटे व्यास सें भीष्म की भाभियों अंबिका और अंबालिका सें नियोग करके धृतराष्ट्र और पांडू पैदा करवाये. साथ में दासी सें विदुर भी पैदा कर दिया. क्षत्राणियों के तो व्यास जैसे ही पैदा हुए, दलित दासी के जरूर कुछ ज्ञानी सूझवान पुत्र पैदा हो गया.
3. कुंती ने सूर्य, इन्द्र, पवन और यम सें नियोग करके तथा उसकी सौत माद्री ने अश्विनी कुमारों सें नियोग करके पांडव पैदा किये.
4. शरदंडायन ने अपनी पत्नि को पुत्र पैदा करने का आदेश दिया. वह सड़क पर गई और राह चलते ब्राह्मणों सें नियोग की याचना की और एक ब्राह्मण सें पुत्र पैदा करवाया. (आदि 120) एक पल के लिए कल्पना करें उस स्त्री ने कैसे राह चलते हुए लोगों को नियोग के लिए प्रार्थना की होगी. बेचारी बिल्कुल वेश्या की तरह गिड़गिड़ाई होगी! ब्राह्मणों ने धर्म को चलता फिरता वेश्यालय बना दिया था.
5. यवनराज ने ब्राह्मण ऋषि गार्ग्य सें अपनी पत्नि के साथ नियोग करवाया. कालयवन पैदा करवाया. (वि.पु. 34)
6. दशरथ ने अपने धर्मभाई के जंवाई ब्राह्मण ऋष्यश्रृंग सें चार पुत्र पैदा करवाए.
7. केसरी की पत्नि अंजनि ने पवन के साथ नियोग करके हनुमान पैदा किया.
8. युवनाश्व राम का पूर्वज था. उसने अपनी समस्त रानियां ब्राह्मणों को मैथुन के लिए दे दीं. अतः उसे स्वर्ग मिला. (शांति. 234) रघुकुल रीत सदा चली आई, गैरों सें सन्तान उपजाई!! किसी का तो आवा ऊत राम का तो खताना ही ऊत था.
9. पांडू ने कुंती को समझाते हुए बताया कि मदयंती ने अपने पति की आज्ञा मान कर राम के कुलगुरू वशिष्ठ सें नियोग करके पुत्र पैदा किये. (अप्सरा 533)
10. सुदास जिसे इन्द्र भी कहा जाता है, ने अपनी पत्नि दमयंती को राम के कुलगुरू वशिष्ठ सें नियोग करवा कर पुत्र पैदा करवाया.

अवतार भी गोधर्म के लिए : कृष्ण के सम्बंध में अनेकों कथाएं हैं जो यह सिद्ध करती हैं कि उसने अपने पूर्व जन्म राम के रूप में अनेकों स्त्रियों देव पत्नियों आदि को वचन दिया था कि वह अगले जन्म में कृष्ण बन कर उनकी काम वासना शांत करेगा. तीन करोड़ गोपियां और सोलह हजार रानियों की कथा यह सिद्ध करती हैं कि उसका जन्म मात्र गोधर्म निभाने के लिये ही हुआ था. कृष्ण और राम का जीवन अध्याय 5 में विस्तार सें दिया गया है.

4.4 विवाह–प्रथा भी गोधर्म

शादी के रीति रिवाज और उनके पीछे छिपे कारण

हरियाण और राजस्थान में एक समुदाय में "गोदा" अर्थात सांड प्रथा प्रचलित थी. उस समुदाय के लोग ह्रष्ट पुष्ट बलशाली बच्चे पैदा करने चाहते थे. अतः उन्होंने कुछ ह्रष्ट पुष्ट बलशाली युवकों को "गोदा" अर्थात सांड घोषित किया हुआ था. वह "गोदा" अपने समुदाय की विवाहित स्त्री सें समागम करते थे ताकि उनसें पैदा हुए बच्चे उनकी तरह ही बलशाली हों. बदलते समय के साथ उन्हें यह प्रथा मान्य नहीं लगी और उन्होंने इस प्रथा को छोड़ दिया. इस समुदाय में कोई भी इस प्रथा के गुणगान नहीं करता है.

ब्राह्मणों ने ऐसी ही प्रथा का वीभत्स रूप आर्य समुदाय में प्रचलित कर रखा था. जहां गोदा–प्रथा का उद्देश्य बलशाली बच्चे पैदा करना था वहीं ब्राह्मिक प्रथा का एकमात्र उद्देश्य परस्त्रीगमन अथवा ऐयाशी था. आज

भी हिन्दुओं की शादी में ब्राह्मण इस प्रथा का गुणगान करता है. शादी में ब्राह्मण जो भी मन्त्र पढ़ता है अथवा जो भी विधियां करता है वे इस बात की ओर संकेत करती हैं कि जिस लड़की की शादी हो रही है उसे पहले तीन देव भोग चुके हैं तथा अब मनुष्य उसका चौथा पति बनने जा रहा है.

ब्राह्मणों के सर्वोच्च ग्रन्थ ऋग्वेद (10.85.40) में आज्ञा है कि कन्या के पहले तीन पति अग्नि, सोम और गन्धर्व हैं. अतः मनुष्य उसका चौथा पति है. अग्नि को देवों का दल्ला कहा जा सकता है. ब्राह्मणों के हर यज्ञ में सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति का चढ़ावा होता था, उसमें से देवों का भी हिस्सा होता था. उस हिस्से को देवों तक सप्लाई करने का काम अग्नि का होता था. ऋग्वेद में कथा है कि देवों के लिए माल ढोते ढोते उसके कई भाई मर गये. तब उसने हड़ताल कर दी. जब उसका अपना हिस्सा बढ़ाया गया तभी वह सप्लाई शुरू रखने के लिए राजी हुआ. अतः लड़की पर पहला हक उसका माना गया. ऋग्वेद (1.66.4) में आज्ञा है कि अग्नि कुमारियों का जार है तथा विवाहितों का पति है. अतः अग्नि का शादी सें पहले और शादी के बाद भी आर्य स्त्रियों पर अधिकार माना गया.

सोम यज्ञ में पी जाने वाली शराब है. सोम पिये बिना यज्ञ हो ही नहीं सकते थे. ऐसी शराब बनाने वाले विशेष लोग होते थे. अतः यज्ञ में शराब बनाने अथवा सप्लाई करने वाले का हक भी लड़की पर माना गया. गन्धर्व खाने पीने और ऐश करने वाले देव थे. उनकी देखादेखी ही ब्राह्मणों ने गोधर्म चलाया था. अतः लड़की पर उन ऐयाशों का हक भी माना गया.

जहां ऋग्वेद में हर लड़की पर अग्नि, गन्धर्व और सोम नामक तीन देवों का कब्जा माना गया है वहीं आश्वलायन गृह्यसूत्र (अ.1 खण्ड.7 सूत्र.7) में वधु पर अर्यमन, वरुण और पूशण नामक तीन देवों का कब्जा माना गया है जिन के चंगुल सें वर अपनी वधु को साक्षात छुड़वाता है. देव वर–वधु पर आक्रमण करते हैं. लड़ाई होती है और अंत में देवों को मुआवजे के रूप में धान आदि देकर वधु को आजाद करवाया जाता है. आज भी शादी में जो मन्त्रजाप होते हैं अथवा धान अर्पित करने की जो विधि की जाती है वे सब इसी प्रथा का द्योतक हैं.

बाबा साहिब के अनुसार विवाह में लाजा होम और उसके मन्त्रों का यही अर्थ निकलता है कि वर देवों के चंगुल सें अपनी वधु को आजाद करवाता है. लगता है तभी सें दूल्हा तलवार लेकर बारात में जाने लगा था. बाद में यह प्रथा बन गई. यह भी एक तथ्य है कि प्राचीन भारत में आम मनुष्य को जो वधु मिलती थी वह उसका चौथा पति ही होता था. उससें पहले ये तीन देव और ब्राह्मण उसे भोग चुके होते थे. अथर्ववेद के खण्ड.2 अनुवाक.6, सूक्त.5 ऋक.2 में इस बात का स्पश्ट वर्णन है. राजवाड़े महोदय इस ऋचा का अर्थ इस प्रकार सें करते हैं. वधु वर को बताती है,"भग is enjoyed by सोम, ब्रह्मा एवं अर्यमन by divine धातर. अब मैं (तुम्हें) अपना पति चुनती हूँ" इन शब्दों का अर्थ इस प्रकार सें हैः

भग = स्त्री योनि,
is enjoyed by = का आनन्द उठाया है
सोम = शराब, इसे बनाने वाला, इसका देव
अर्यमन = सूर्य
by = द्वारा
divine = अलौकिक
धातर = निर्माता, विवाहित स्त्री का प्रेमी व्यभिचारी.

अतः इस पूरी लाइन का अर्थ हुआ अलौकिक व्यभिचारी सोम, ब्रह्मा और सूर्य ने योनि का आनन्द उठाया है. अब सें मैं तुम्हें अपना पति मानती हूँ.

वधु को बचाने में उसका भाई सहायता करता है. उसने भुने हुए चावल (खीलें) देकर " देवों के चंगुल सें बहन को मुक्त कराया" उसने वधु के हाथों सें खीलें देवों को दिलवायी. अग्नि की गवाही में अन्न दिया गया और उस ही ने तीन हिस्से करके तीनों देवों की झोली में खीलें डाली.

इसके बाद भी वरुण ने वधु के बालों को ऊन के डोरे द्वारा बांध कर पशु की तरह पकड़ रखा था. वह वधु को पीड़ा पहुंचा रहा था. भाई आकर उसके बाल खुलवाता है तथा वरुण की कैद सें भी आजाद करवाता है. रक्षा बन्धन में भाई के हाथ में धागा बांधने की प्रथा ऐसे ही शुरू हुई है क्यों कि भाई ही आकर देवों के चंगुल सें उसे आजाद करवाता था. शायद यही कारण है कि आज भी जहां देवताओं सें सम्बधित कुछ भी काम होता है स्त्रियां अपने बाल खुले रखती हैं.

इन छः देवों के चंगुल सें आजाद होने के लिए वधु सात कदम चलती है. छः में इन देवों सें आजाद हो जाती है तथा सातवें में दूल्हें सें उसका रिश्ता पक्का हो जाता है. इस सप्तपदी की विधि के बाद वधु पर सें देवों का कब्जा समाप्त हो जाता था और वधु अपने पति की मान ली जाती थी.

बाबा साहिब ने ब्राह्मण ग्रन्थों का गहन अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष निकालस कि उस समय के आर्य समाज पर देवों के निम्न अधिकार होते थे :

1. उनका पहला हक यज्ञों पर था. यज्ञ कुछ भी नहीं थे बल्कि देवों की सामंती बलात वसूली होती थी. ऋषि उनके दल्ले होते थे. उनके माध्यम सें देव लोगों सें दारू मीट और स्त्रियां ऐंठते थे. आर्यों को यज्ञ करने ही पड़ते थे और देवों को इन तीन चीजों की भेंट देनी ही पड़ती थी. यह बिल्कुल हफता वसूली जैसा काम था.
2. देवों का दूसरा हक आर्य लड़कियों पर होता था. उन्हें हर आर्य कन्या के साथ विवाह सें पहले यौन सम्बंध बनाने का हक हासिल था. आज भी विवाह की रस्में और मन्त्र इस बात का सबूत हैं कि वधु को देवों के चंगुल सें आजाद करवाया जा रहा है तथ वह पुत्र सहित दूल्हे को दी जा रही है.

देवों और उनके दल्ले ब्राह्मणों के इन्हीं कुकर्मों के कारण ही ऐसा हुआ किः

1. वर अपने साथ कई लोगों, परिवार जनों को वधु के घर लेकर जाता था ताकि वधु को देवों सें छुड़वाया जा सके! आज इस प्रथा ने बारात का रूप ले लिया है.
2. दूल्हा अपने साथ तलवार लेकर चलता था ताकि अगर देवों सें झगड़ा हो तो में काम आ सके. उस समय की इस आवश्यकता ने आज एक रस्म का स्थान ले लिया है.
3. वर के साथ विनायक/ बिंदायक/ सरभाला भी जाता था ताकि अगर देवों के साथ झगड़े में वर मारा जाए तो वह उसकी जगह ले ले.
4. आर्यों में जब लड़की की शादी होती थी तो अग्नि नामक देव ही मध्यस्थ अथवा दलाल बन कर देवों के लिए फिरौती वसूलता था और देवों में बांटता था. फिरौती मिलने पर अग्नि इस बात की गारंटी देता था कि वर का वधू सें सारी उम्र का पक्का रिश्ता बन गया है और इन्हें अब देव तंग नहीं करेंगे. आजकल शादी में आग को साक्षी माना जाता है. यह प्रथा भी अग्नि नामक देव को गवाह मानने के कारण ही बनी है.
5. कानूनन वर वधु की शादी तभी पूर्ण मानी जाती है जब सप्तपदी की रस्म हो जाती है. जब देवों का आर्य समुदाय पर आधिपत्य था तो शादी के समय जब तक वधु सात कदम ईशान दिशा (उत्तरपूर्व दिशा) की ओर नहीं चल लेती थी उस पर देवों का कब्जा बना रहता था. (राज. 84) अन्य रस्में हो चुकने के बाद भी उसके सात कदम पूरे होने सें पहले देव कभी भी उस पर अपना कब्जा दोहरा सकते थे अथवा फिरौती (अवदान) की रकम बढ़ा सकते थे. लेकिन सात कदम पूरे होने पर अग्नि शादी को अटूट घोषित कर देता था.
6. उस समय अग्नि नामक देव को भुने हुए चावल अर्थात खीलें बतौर फिरौती दी जाती थीं ताकि वह आगे पहुंचा सके. आजकल फेरों के समय वधु जो आग में खीलें डालती है वह इसी मजबूरी का द्योतक हैं. जैसे पहले देवों को फिरौती की खीलें अलग अलग दी जाती थीं वैसे ही अब आग में अलग अलग देवों के नाम सें मन्त्र पढ़ कर आग में खीलें डाली जाती हैं.
7. शादी के समय भाई मुख्य रक्षक का काम करता था. जिन लड़कियों के भाई नहीं होता था उनका देवों के चंगुल सें छूट पाना मुश्किल होता था. इसीलिए अभ्रातृक (बिना भाई के) बहन का मूल्य ब्राह्मण विवाह विधि में निम्न अथवा शून्य रखा गया है. (राज. 83)
8. आर्य अपनी लड़कियों और स्त्रियों को अग्र–उपभोग (शादी या सुहागरात सें पहले समागम) हेतु देवों को समर्पित करते थे. यह पुरातन आर्य प्रथा अब भी अवशेष के तौर पर हमारे बीच प्रचलित है. (राज. 84) अब भी अनेक समुदायों के लोग सुहागरात सें पहले वधु को मन्दिर ले जाकर शिवलिंग छुआ कर लाते हैं.
9. छोटी उम्र में लड़कियों की शादी भी इसीलिए की जाने लगी क्योंकि छः वर्ष की आयु के बाद उन पर देवों का कब्जा हो जाता था. इसलिए लोग छः सें आठ दस साल की उम्र में लड़कियों की शादी कर देते थे ताकि वे देवों की वासना का शिकार न पाएं. इसलिए स्मृतियों में फतवे दिए गए कि आठ साल की लड़की की शादी चौबीस साल के लड़के सें कर दी जाए तथा सुहागरात को समागम अवश्य किया जाए. (राज 86)
10. पुरातन काल में आर्य आग के चारों ओर इक्कठा होते थे शराब पीते थे, बलि देकर माँस भून कर खाते थे और फिर वहीं समागम करके बच्चे पैदा करते थे. शादी का मुख्य उद्देश्य भी सन्तान उत्पन करना ही है. अतः शादी की रस्में भी आग के सामने ही की जाने लगीं.
11. **एक सबसें महत्वपूर्ण बात यह भी है कि दलितों में शादी के समय सप्तपदी की रस्म नहीं होती है न ही उनकी रस्मों में खीलों का समावेश होता है. द्विजों के चार फेरे होते हैं लेकिन दलितों में सात फेरे होते हैं. इसका अर्थ है कि दलित आर्य धर्मी नहीं हैं.**

ब्राह्मणों द्वारा फैलाए गए इस अनाचार के विरुद्ध उस समय भी लोग आवाजें उठाते थे. इसीलिए उस समय जब महात्मा रावण ने रक्ष संस्कृति की नींव रखी तो पूरे भारतवर्ष के लोग उनकी छत्रछाया में एक हो गये.

कुछेक ब्राह्मणों तक ने उनकी रक्ष संस्कृति अपनाई लेकिन अधिकतर ब्राह्मण अपने गोधर्म में ही लगे रहे. महात्मा रावण ने देवों को मार भगाया. भारतीय नारी समाज को देवों और ब्राह्मणों की वासना के चंगुल सें आजाद करवाया. भारतीय नारी इस उपकार के लिए सदा उनकी ऋणी रहेगी!! अस्तु.

ब्राह्मण धर्म में आठ प्रकार के विवाह

मनु स्मृति (3.27 सें 3.34) में आर्यों के **कुल आठ** प्रकार के विवाह बताये गए हैं. इनके अतिरिक्त कोई नौवां ढंग आर्यों में विवाह का नहीं है. यह आठ प्रकार के विवाह हैंः—

1. **ब्राह्म विवाह** : इस पद्धति में कन्या द्वारा स्वयं पसन्द किये गए तथा उसके द्वारा खुश किए गए व्यक्ति को बुलाया जाता है तथा कन्या को सजा कर उसे सौंप दिया जाता है.
   पूरे ब्राह्मण धर्म के इतिहास में इस प्रकार सें किये गए विवाह की एक भी उदाहरण नहीं है. "कन्या द्वारा खुश किया गया" का क्या अर्थ है, किसी ब्राह्मणिक लेखक ने स्पष्ट नहीं किया है.
2. **दैव विवाह** : इस पद्धति में बड़े यज्ञ में ऋत्विक को कन्या वस्त्र आभूशणों सें सजा कर दक्षिणा में सौंप दी जाती है. (संस्कृति कोष) दशरथ के धर्म भाई रोमपाद ने उसकी बेटी शांता इसी पद्धति के तहत ऋश्यश्रृंग को सौंपी थी. राधाकृष्णन ने इसे अच्छा नहीं माना. यज्ञ लुप्त होते ही विवाह का यह सिस्टम भी बंद हो गया. (धर्म और समाज 172)
3. **आर्य विवाह** : इस पद्धति में दो गाय अथवा दो बैल अथवा गाय और बैल का जोड़ा लेकर कन्या सौंप दी जाती है. आर्यों में बेटी को मोल गाय बैल के जोड़े के बराबर आंकी गई है! **राधाकृष्णन ऋग्वेद (10.27.12, 1.109.2) में ऐसे विवाह होने की बात कहता है परन्तु अपनी ब्राह्मणिक नीति के अनुसार इस पद्धति को आसुर विवाह बताता है. इसे भी निष्कृट मानता है. (धर्म और समाज 172) जबकि मनुस्मृति में बिल्कुल स्पष्ट लिखा है कि आसुरी विवाह में वर को धन दिया जाता है. जहां कन्या के बदले में वर सें धन लिया जाए उसे आर्य विवाह कहते हैं. (मनु 3.29 एवं 3.31)**
4. **प्रजापत्य विवाह** : इस पद्धति में स्त्री पुरुष यज्ञशाला में विधि द्वारा प्रजा पैदा करने के लिए सम्बंध बनाते हैं. वे यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि वे एक दूसरे की धर्म अर्थ काम की बातों में दखल नहीं देंगे. (संस्कृति कोष) इसका अर्थ यह हुआ कि वे स्त्री पुरुष केवल बच्चे पैदा करने के लिए ही सम्बंध बनाएंगे. अन्यथा शादी के बाद तो पति पत्नि एक ही माने जाते हैं. उनका धर्म अर्थ काम मोक्ष सभी कुछ एक ही माना जाता है. अतः जहां गंधर्व विवाह कुछ पल का यौन सम्बंध होता था प्रजापत्य विवाह यज्ञ के दौरान यौन सम्बंधों का रिश्ता था.
5. **आसुर विवाह** : इस पद्धति में वर की जाति वालों को तथा कन्या को यथाशक्ति धन दिया जाता है तथा **हवन** करके कन्या वर को सौंप दी जाती है.
   इतिहास में भगवन बुद्ध द्वारा माता यशोधरा सें इस प्रकार विवाह किए जाने की पहली उदाहरण मिलती है. महाराजा रावण ने रक्ष संस्कृति की स्थापना करके इस पद्धति को पूरे भारत में लागू किया. भगवन बुद्ध सें पहले किसी आर्य ने इस पद्धति के तहत विवाह नहीं किया है. महाराज रावण और महारानी मन्दोदरी के बीच इसी पद्धति सें विवाह हुआ. **आज पूरा भारतीय समाज इसी पद्धति के अनुसार शादी रचाता है.** ब्राह्मण मनु इसे अशुभ विवाह ही बताता है और इस प्रकार के विवाह सें पैदा सन्तान को वह निन्दित, कर्मकर्ता, मिथ्यावादी और बड़े नीच स्वभाव वाला बताता है. (3.41) **तो क्या हम सभी भारतीय ऐसे ही स्वभाव वाले हैं!!**
6. **गांधर्व विवाह** : इस पद्धति में स्त्री और पुरुष का इच्छा सें संयोग होता है तथा वे अपनी इच्छा सें स्त्री पुरुष मान लेते हैं. आर्यों में ऐश करने के लिए इस पद्धति का बहुत सहारा लिया गया. यह मिलन वास्तव में "विवाह" कहा ही नहीं जा सकता क्योंकि यह सम्बंध जीवन भर के लिये नहीं होता था बल्कि कुछेक पल के स्वाद के लिये होता था. अर्जुन ने इसी पद्धति के तहत कई स्त्रियों सें सम्बंध बनाये और बच्चे पैदा कर दिये. उसने उलूपी सें इरावत, चित्रांगदा सें बभ्रुवाहन, सुभद्रा सें अभिमन्यु आदि. कृष्ण ने कुब्जा के साथ इसी पद्धति के तहत सम्बंध बनाये थे. ऋषिओं की सूचि तो अन्तहीन है.
7. **राक्षस विवाह** : इस पद्धति में कन्या को रोकने वालों के साथ मार पीट करके बलपूर्वक कन्या को ले जाया जाता है. कृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा को इसी पद्धति के तहत अर्जुन के हाथों उठवाया था. तब मारपीट भी हुई थी और अर्जुन बलपूर्वक सुभद्रा को उठा ले गया था. सुभद्रा के गर्भ सें ही अभिमन्यु का जन्म हुआ था. ऐसे पुत्र को मनु निन्दित, कर्मकर्ता, मिथ्यावादी और बड़े नीच स्वभाव वाला बताता है. (3.41) यह अलग बात है कि सुभद्रा अर्जुन के मामा की बेटी थी.

राधाकृष्णन कृष्ण–रुक्मिणी, अर्जुन–सुभद्रा के सम्बंधों को राक्षस विवाह बताता है. (धर्म और समाज 172)

कृष्ण रुकमणि और अन्य को भी ऐसे ही बलपूर्वक उठा कर लाया था. कृष्ण के सांब पैदा हुआ था जो अपनी सौतेली माँ को ही उधाल ले गया था. लगता है मनु ने यह बात सांब के संदर्भ में कही है.

8. **पैशाच विवाह** : इस पद्धति में सोई हुई, पागल अथवा नशे में उन्मत कन्या को एकांत में दूशित किया जाता है.

मनु का कहना है कि यह आठों प्रकार के विवाह वैध हैं. पहले चार प्रकार के विवाह शुभ माने जाते हैं तो अंतिम चार प्रकार के विवाह अशुभ माने जाते हैं. (3.41) आर्य धर्म में उपरोक्त **किसी भी पद्धति सें विवाह हो जाए वह वैध विवाह माना गया है.** उपरोक्त आठ प्रकार की विवाह पद्धतियों के अतिरिक्त कोई अन्य ढंग सें विवाह करने की पद्धति ब्राह्मण धर्म में मान्य नहीं है.

यह कौन सी विवाह पद्धति है : अतः यहां एक बहुत गहन सवाल पैदा होता है कि ब्राह्मणिक आर्यो और उनके नायकों ने ऐसे सम्बंध बनाए जो उपरोक्त किसी भी पद्धति में फिट नहीं बैठते तो यह कौन से विवाह हैं: वैध या अवैध! उदाहरणतः

☞ राम ने सीता धनुष तोड़ कर सीता को जीता था. उस समय सीता मात्र छः साल की थी. उसे तो पता भी नहीं था कि किसी ने उसे जीत लिया है. यहां सीता द्वारा स्वयं वर चुनने जैसी कोई बात ही नहीं थी. वधु को दांव में जीतना कौन सी विवाह पद्धति में आता है, कोई नहीं बता पाया!

☞ कृष्ण ने सारी उम्र राधा के साथ बिता दी. भागवत आदि में उनकी सुहागरात का आँखों देखा हाल दर्ज है मगर उन्होंने कौन सी विवाह पद्धति अपना कर सुहागरात मनाई, कहीं कोई जिक्र नहीं है. मात्र एक जगह वर्णन है कि जब दोनों समागम की तैयारी कर रहे थे तो ब्रह्मा आया उसने राधा का हाथ कृष्ण को पकड़ाया और चलता बना. **जबकि उस समय राधा पूर्ण रूप सें किसी अन्य मर्द की ब्याहता थी. और वह अन्य मर्द कोई और नहीं बल्कि कृष्ण का सगा मामा रायण था. एक शादीशुदा औरत द्वारा किसी गैर मर्द के साथ सुहागरात मनाना कौन सी विवाह पद्धति में आता है, कोई नहीं बता पाता.**

☞ अर्जुन ने राम की तरह दांव में द्रोपदी को जीता. वधु को लेकर घर गए तो उनकी माँ बोली बांट कर उपभोग करना. पांचों पांडवों ने बारी बारी सें द्रोपदी सें समागम किया. वैसे तो वधु को शर्त में जीतना ही कोई विवाह नहीं है मगर पांचों भाईयों द्वारा एक ही 'वधु' सें समागम करना कहां की पद्धति है? अर्जुन ने तो निशाना लगा कर द्रोपदी को जीता था लेकिन युद्धिश्ठर ने उसके साथ पहली सुहागरात किस प्रकार के विवाह के आधार पर मना ली? भारतीय समाज में छोटे भाई की पत्नि को बेटी समान माना गया है तथा बड़े भाई की पत्नि को माँ समान माना गया. अतः युधिष्ठर ने अपनी बेटी समान द्रोपदी के साथ किस विवाह पद्धति के आधार पर पहली सुहागरात मनाई, इसका कहीं कोई उत्तर नहीं है. नकुल और सहदेव की तो द्रोपदी माँ समान थी उन्होंने कौन सी विवाह पद्धति सें उससें यौन सम्बंध बनाए! (आज 15.10.08)

☞ माद्री पाँच में सें दो पाँडवों की माँ थी तथा कुंती की सौत थी. भीष्म ने उसके भाई शल्य को रत्न, घोड़े, रथ, गहने आदि दिये और माद्री को लाकर पांडू को सौंप दिया. कौन सी पद्धति का विवाह था यह? यह तो एक आर्य भाई ने सीधे सीधे अपनी बहन को बेचा था. भीष्म अम्बा अम्बालिका दो बहनो को जबरन उठा लाया और अपने नपुंसक भाई विचित्रवीर्य को सौंप दी. कौन सी पद्धति का विवाह था यह?

☞ राम ने धनुष उठाने की शर्त पूरी करके सीता को जीत लिया लेकिन जनक ने राम के शेष तीनों भाईयों को भी एक एक लड़की भेंट कर दी. एक भाई द्वारा वधु जीती जाए तथा शेष को एक एक वधु तोहफे में मिल जाए यह कौन सी विवाह पद्धति है कहीं कोई जिक्र नहीं है.

☞

4.5 पुत्रों की 15 किस्में

ब्राह्मणिक धर्म में जिस चीज पर सबसें अधिक जोर दिया गया है वह है हर नारी द्वारा पुत्र पैदा करना. उनका सबसें मुख्य कर्मकांड अर्थात यज्ञ इसी काम के इर्द गिर्द घूम रहा है. आज भी ब्राह्मण यह भ्रम फैलाते फिरते हैं कि जिसके पुत्र नहीं है उसे मोक्ष नहीं मिल सकता. अगर कोई बिना पुत्र पैदा किये मर जाएगा तो पितर बनने पर वह प्यासा ही रहेगा क्योंकि पितरों को पानी देने के लिए पुत्र का होना आवश्यक है. आज पुत्र पैदा

करने की धार्मिक अनिवार्यता चाहे लोग सीधे स्वीकार न करें लेकिन पुत्र पैदा होने की यही लालसा हरेक के मन में रमी हुई है. दयानन्द को गुजरे अधिक समय नहीं बीता है. वह भी यह कहता है कि हरेक स्त्री के लिए दस पुत्र पैदा करना अनिवार्य हैं. अगर उसका पति पुत्र पैदा नहीं कर सकता या उसका पति मर चुका है तो वह किसी अन्य पुरुष (ब्राह्मण) सें नियोग द्वारा पैदा करे. ऐसे में ही प्राचीन समय में ब्राह्मणों ने पुत्र पैदा करने की अनिवार्यता सें पूरे भारतवर्ष को व्यभिचार का अखाड़ा बना रखा था.

बारह साल की हो जाने पर अथवा रजस्वला होते ही बच्ची की शादी करना अनिवार्य था. अगर कोई लड़की इन पारिस्थितियों में अविवाहित रह जाती थी तो उसे **वृशली** कह कर पुकारा जाता था जिसका अर्थ है **बांझ, शूद्र की पत्नि.** (आप्टे) कोई भी स्त्री बांझ नहीं कहलवाना चाहती और न ही कोई ब्राह्मण क्षत्रिय स्त्री किसी शूद्र की पत्नि बनना चाहती है. अतः रजस्वला होते ही स्त्री को ऐसे लोगों सें सम्बंध बनाने पर मजबूर किया जाता था जिनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते. इस तरह एक स्त्री का अनेकों पुरुषों सें सम्बंध बना दिया जाता था. परिणाम स्वरूप विभिन्न पुरुषों सें उत्पन पुत्रों की भिन्न भिन्न किस्में हो जाती थीं.

आम आदमी सें पूछा जाए तो वह यही कहेगा कि पुत्रों की कोई किस्म नहीं होती. अधिक सें अधिक कोई कह सकता है कि पुत्र दो तरह के हो सकते हैं एक असल दूसरे हराम. लेकिन ब्राह्मणिक धर्म (मनु स्मृति) में चौदह प्रकार के पुत्रों को मान्यता दी गई है जो इस प्रकार सें हैं:

1. **औरस पुत्र** : पति द्वारा वैध रूप सें विवाहित स्त्री सें उत्पन पुत्र औरस पुत्र कहलाता है. प्राचीन आर्यों ब्राह्मणों देवों में मशाल लेकर ढूंढने सें शायद एकाध औरस पुत्र भी मिल जाए!
2. **कानीन पुत्र** : कानीन पुत्र अपने नाना का “धर्मोत्पादित पुत्र” अर्थात धर्म अनुसार पैदा किया गया पुत्र कहा या माना जाता था. **ऐसे पुत्र की जन्मदायी माँ को उसकी बहन माना जाता था. आज जिसे हम अधर्म मानते हैं आर्यों में पिता स्वयं अपनी कन्या सें सन्तान उत्पन कर लिया करते थे.** तब यह धर्म माना जाता था. (राज.74) ब्रह्मा और उसके बेटों ने ऐसे ही सन्तान पैदा की थी. वशिष्ठ संहिता के अनुसार पिता के घर में कन्या सें बाहरी पुरुषों द्वारा उत्पन पुत्र कानीन पुत्र कहलाते थे. (राज.73) ऐसा पुत्र नाना का ही पुत्र माना जाता था. कानीन पुत्र अपने नाना का पिंडदान करता था, उसकी सम्पत्ति का उपभोग भी कर सकता था.

   लेकिन महाभारत के समय इस प्रथा का विरोध होना शुरू हो गया था. अतः जब पराशर के बलात्कार सें सत्यवती ने व्यास को जन्म दिया तो सत्यवती के पिता ने उसे अपना पुत्र नहीं माना. कर्ण को भी कुंती के पिता ने नहीं अपनाया. दोनों कानीन पुत्र कहे जाते हैं. (राज. 142)
3. **क्षेत्रज या प्रणीत** : पति की सहमति सें किसी **निकट संबंधी** सें पैदा पुत्र क्षेत्रज अथवा प्रणीत पुत्र कहलाता है. इस प्रकार के पुत्र **नियोग** द्वारा उत्पन्न किये जाते थे. यह **निकट संबंधी** लगभग हमेशा ही ब्राह्मण होता था. चाहे वह ऋश्यश्रृंग हो व्यास हो दीर्घतमा हो या कोई और. राम और पांडव प्रणीत पुत्रों की मुख्य उदाहरणें हैं.
4. **परिक्रीत** : आर्थिक या अन्य किसी लालच में अपनी पत्नि का किसी अन्य पुरुष सें पैदा हुआ पुत्र.
5. **पौनर्भव** : विधवा, पति द्वारा त्यागी स्त्री, तलाकशुदा स्त्री द्वारा नव–पुरुष सें पैदा किये गये पुत्र. पूरे ब्राह्मणवाद के इतिहास में हमें एक भी उदाहरण ऐसी नहीं मिली जहां ऐसी किसी विधवा स्त्री का पुनः विवाह हुआ हो. हाँ, दयानंद जिसे देवर कहता है ऐसे नियोगियों द्वारा पैदा पुत्रों की गिनती करना ही मुश्किल है.
6. **स्वैरिणीज** : व्यभिचारिणी पत्नी के पैदा पुत्र. भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार किसी भी विवाहित स्त्री सें गैर मर्द द्वारा यौन सम्बंध बनाना व्यभिचार है. हनुमान ऐसे ही व्यभिचार सें पैदा हुआ पुत्र स्वैरिणीज है.
7. **दत्तक** : सगोत्री सें गोद लिया गया पुत्र
8. **कृत्रिम** : गोत्र सें बाहर गोद लिया गया पुत्र.
9. **क्रीति** : धन देकर खरीदा गया पुत्र
10. **स्वयंदत्त** : जब बालक स्वयं आकर गोद लिये जाने की याचना करे. ऐसे बालक अपनाये जाने पर स्वयंदत्त पुत्र कहलाता है.
11. **सहोढ़ज** : विवाह के समय अगर स्त्री गर्भवती हो तो उसके जो पुत्र पैदा हो वह सहोढ़ज कहा जाता है.
12. **हीनयोनिधृतः** शूद्र अथवा दासियों के पुत्र जो कि मालिक अथवा उनके रिश्तेदारों द्वारा पैदा कर दिये जाते थे. राजस्थान के राजपूतों में ऐसे पुत्रों को गोला कहा जाता है. पुत्री हो तो गोली कही जाती है. यह अपनी माँ की ही सन्तान माने जाते हैं और माँ के पास ही रहते हैं. अतः गोली पुत्री का बाप सें यौन सम्बंध आम बात थी. राजस्थान की आबादी का बहुत बड़ा भाग ऐसी सन्तानों का ही है. विदुर ऐसा ही बालक था.

13. **गूढ़ज** : दासी के इलावा घर में ही रहने वाली अन्य आश्रित स्त्री के साथ घर के मालिक द्वारा पैदा किये गये पुत्र.

14. **अपविद्ध** : जन्म लेते ही माता पिता द्वारा त्याग दिये गये पुत्र (पुत्री भी) को जो कोई पाल ले तो वह बालक उसका अपविद्ध पुत्र कहलाता था. कर्ण, सीता, शकुन्तला आदि इसकी उदाहरणें हैं.

15. **द्वैमित्री** : उपरोक्त चौदह किस्म के पुत्रों के अतिरिक्त एक किस्म उन पुत्रों की है जो दो मित्रों द्वारा एकसाथ एक स्त्री सें समागम या व्यभिचार करके पैदा किए जाते थे. जैसे वरुण और मित्र नामक देवों ने एक साथ उर्वशी नामक वेश्या सें समागम करके राम के कुलगुरू वशिष्ठ को पैदा किया था.

16. स्मृतियों में तो उपरोक्त चौदह प्रकार के पुत्र गिनाये गये हैं लेकिन ब्राह्मणवाद के इतिहास में अनेकों ऐसे बालक भी पैदा हुए हैं जो इन उपरोक्त वर्णित किस्मों में नहीं आते. उदाहरणतः गणेश जब शिव तपस्या में लीन था तो पार्वती ने "मैल" सें पुत्र पैदा कर लिया. ऋश्यश्रृंग को उसके बाप ने हिरणी सें यौन सम्बंध बना कर पैदा किया था. द्रोण अगस्त्य जैसे ऋषि जो उनके बापों द्वारा बर्तनों में निकाले गये वीर्य सें पैदा हुए थे. या लव कुश जैसे पुत्र जिन्हें घास सें बनाया गया बताते हैं. ऐसे पुत्रों की किस्म का नाम ब्राह्मण ग्रन्थों में नहीं पाया जाता जबकि उनके ग्रन्थों में ऐसे लोगों की संख्या ही सबसें ज्यादा है. अतः हमारे हिसाब सें ऐसे पुत्रों को **ब्राह्मणवादी पुत्र** कहना उपयुक्त होगा.

4.6 ब्राह्मणधर्म यानि वेश्यावृति भी धर्म

दुनिया में सैंकड़ों धर्म हैं लेकिन अकेला ब्राह्मणधर्म ही ऐसा धर्म है जहां वेश्यावृति धर्म का एक अभिन्न अंग है. ब्राह्मणधर्म के चौदह रत्नों में सें एक वेश्या भी है. कथा है कि देवों और असुरों ने मिल कर समुद्र मंथन किया तो उसमें सें चौदह रत्न निकले उनमें सें एक रत्न "स्त्री" भी थी. वह देवों की बारी में निकली थी लेकिन देवों ने उसे बहन अथवा बेटी के रूप में नहीं रखा बल्कि सर्वभोग्या यानि वेश्या के रूप में रख लिया.

ब्राह्मणिक सनातन धर्म में वेश्याओं को देवताओं के बराबर अथवा उन सें ऊपर का स्थान प्राप्त था. उनका कोई भी कर्मकांड बिना वेश्याओं के पूरा नहीं होता था. राम को पैदा करने के लिए जिस ऋषि को बुलाया गया उसे पहले पहल वेश्याएं ही जंगल सें बाहर लाई थीं. कृष्ण का जब तिलक हुआ तो वेश्याओं को ब्राह्मणों के बराबर सोना दिया गया था. अयोध्या में दशरथ ने सोने के रंग जैसी वेश्याएं पाल रखीं थीं. और तो और देवों के दरबार इन्द्रसभा में चौबीसों घण्टे वेश्याओं का नाच गाना होता रहता था इसलिए आज वेश्यालय को लोग इन्द्रसभा के नाम सें भी बुलाते हैं.

आर्य समाज में वेश्यावृति सें पेट पालने को बुरा नहीं माना जाता था अतः जब कृष्ण मरा तो उसकी पत्नियों अथवा रखैलों ने पेट पालने के लिए वेश्यावृति का धन्धा अपना लिया. (अप्सरा 551) . चाहे कृष्ण ने ब्राह्मणों का धर्म बचाने के लिए स्पैशल तौर पर अवतार लिया था तथा उसने यह भी वचन दिया था कि जब भी उनके धर्म की ग्लानि होगी वह फिर आयेगा. बावजूद इसके किसी भी ब्राह्मण ने अपने भगवान की बीवियों और रखैलों की कोई सुध नहीं ली. चाहे उन में सें अधिकतर पहले सें ही बदचलन थीं फिर भी ब्राह्मणों का यह फर्ज तो बनता ही था कि "विप्र हित मनुज अवतारा" लेने वाले की बीवियों की वे रक्षा करते पालन पोशण करते. **उलटा ब्राह्मणों ने तो कृष्ण की विधवाओं को अनंगव्रत के नाम पर बिना दाम दिये भोगा.**

अगर कहीं वेश्याएं नहीं थी तो मात्र महात्मा रावण की लंका नगरी में. हनुमान को वहां कोई वेश्या तो क्या बदचलन स्त्री भी दिखाई नहीं दी. इसी लिए भगवान वाल्मिकी ने जब अयोध्या का वर्णन किया तो उस अध्याय का नाम अयोध्या कांड रखा. जब किश्कंधा का वर्णन किया तो उस अध्याय का नाम किश्कंधा कांड रखा. लेकिन जब उन्होंने लंका का वर्णन किया तो उस अध्याय का नाम सुन्दर कांड रखा. सद्‌चरित्र लोगों की सुन्दर नगरी.

यह एक तथ्य है कि भाषा किसी भी समुदाय का आईना होती है. जैसा अच्दा या बुरा कोई समुदाय होता है वैसा ही चरित्र उनकी भाषा में झलकता है. उदाहरणतः अंगेजी भाषा में घी के समान अर्थ वाला शब्द नहीं है. इसका सीधा सा अर्थ है कि अंग्रेज घी नहीं खाते वे घी बनाते ही नहीं बल्कि मक्खन ही खाते हैं. अरब देश के लोग बेहद लड़ाके हैं. अतः उनकी भाषा में हथियारों के लिए लगभग 500 शब्द हैं. आर्य संस्कृत भाषा में ईंट के लिए कोई शब्द नहीं है. यह तथ्य दर्शाता है कि आर्य कहे जाने वाले लोग मकान बनाना जानते ही नहीं थे. इस तथ्य की पुष्टि इस बात सें होती है कि आर्यो द्वारा बनाई गई एक भी प्राचीन इमारत नहीं मिली है.

वेश्याओं की किस्में : इसी तरह **उनकी देवभाषा संस्कृत में मात्र वेश्या के लिए 235 शब्द हैं**. जो इस बात का सबूत है कि ब्राह्मणवादी आर्य समाज में वेश्यावृति का खूब प्रचलन था. ब्राह्मणों के गन्थ वेश्यावृति के किस्सों सें भरे पड़े हैं. उनके भगवान तक वेश्यओं के बेहद शौकीन थे. उन्होंने वेश्याओं के पद बना रखे थे. उदाहरणतः

- **गणिका** : उच्चकोटि की वेश्या होती थी. अक्सर राज परिवार या धनी लोगों सें ही सम्बंध रखती थी. आजकल कालगर्ल के गणिका की श्रेणी में आती हैं.
- **रामजनी** : राम की बेटी अथवा राम द्वारा पैदा की गई अर्थात जिसके बाप का पता न हो. ऐसा ही नाम हरिजन गांधी ने दलितों को दिया था .
- **अप्सरा** : इसका शाब्दिक अर्थ है पानी में सरकने अथवा तैरने वाली. यह सर्वोच्च स्थान रखने वाली वेश्याओं की किस्म होती थी. ब्राह्मणिक देवता और भगवान इनके चाहने वाले होते थे. अप्सराओं को ब्राह्मणधर्म में खास मुकाम प्राप्त है.
- **वारांगणा** : अलग अलग प्रेमियों को बारी बारी सें अलग अलग दिन मिलने वाली वेश्या .(अप्सरा 676)
- **रूपाजीवा** : अमीर व बेहद सुन्दर वेश्या जो धनवानों को भी नीचा दिखाने की हिम्मत रखती थी.
- **कुंभदासी** : साधारण अथवा छोटी मोटी वेश्या
- **देवदासी** : देवता को समर्पित की गई बालिका. जवान होने पर जिससें मंदिर के पुजारी और प्रबंधक यौन सम्बंध बनाते हैं. जब तक मंदिर की सेवा में रह कर वह वेश्यावृति सें धन कमाती है उस धन पर मंदिर के पुजारी व प्रबंधकों का अधिकार होता है. (मद्रास हाई कोर्ट का चलकोंडा नामक केस में किया गया फैसला) (अप्सरा 707) उम्र ढलने के बाद में वे कोठों पर नजर आती हैं.
- **स्वैरिणी** : अपनी मर्जी सें पैसे लेकर अथवा बिना पैसे के ही देह सम्बंध बनाने वाली वेश्या. घर में अथवा खुले में कहीं भी अपनी इच्छा सें व्यभिचार करने वाली स्त्री. राधा और देवपत्नियां मुख्य उदाहरण हैं.
- **दासी** : धन देकर खरीदी हुई अथवा तोहफे में मिली हुई स्त्री. जिसके साथ मालिक, उसके बेटे पोते और उनके घर आने वाले मेहमान देह सम्बंध बना सकते थे. वे अक्सर बलात्कार का शिकार होतीं थीं परन्तु कभी कभार थोड़ा बहुत धन भी मिल जाता था. जैसे द्रोपदी जब सरैंध्री नाम सें दासी बन कर रही थी तो उसे काफी धन मिला था जबकि राम को मिली दासियां कुछ नहीं पा सकीं.
- **नटी** : खेल तमाशा नाच गाना दिखला कर पैसे कमाना इसका मुख्य काम था लेकिन देह व्यापार सें भी एकदम अलग नहीं रहतीं थीं.
- **वेश्या** : जो केवल देह सम्बंधों सें ही धन कमाती है.
- **नगरवधु, नगरभूषणी** : पूरे गांव अथवा शहर की भोग्या.
- **विषकन्या** : जो अश्लील हरकतें करके विरोधी को आकर्शित करती थी और चुंबन के द्वारा उसे मार देती थी.
- **भड़ूआ** : महाराष्ट्र सें लेकर पश्चिमी यूपी तक किसी मर्द को गाली के रूप में भाड़या, भाड़ू अथवा भड़वा बोला जाता है. जिसका अर्थ है अपनी पत्नि सें वेश्यावृति करवा कर गुजारा करने वाला. राजवाड़े के अनुसार यह संस्कृत के शब्द "भारिक" का ही बिगड़ा हुआ रूप है. **संस्कृत भाषा में भारिक** शब्द होना यह दर्शाता है कि आर्यों में ऐसे लोग भी होते थे जो अपनी पत्नि सें वेश्यावृति करवा कर अपना गुजारा करते थे. कोटिल्य ने तो अपने अर्थशास्त्र में वेश्याओं सें टैक्स वसूलने के लिये पूरा विभाग ही खोल रखा था. जैसे आजकल हमारे यहां आयकर, बिक्री कर वाहन कर आदि अलग अलग विभाग हैं वैसे ही आर्य भारत में इतनी भारी संख्या में वेश्यायें होती थीं कि उन सें कर लेने के लिये पूरा विभाग ही खोलना पड़ता था. अर्थशास्त्र पढ़ कर तो ऐसा लगता है कि हम अगर सचमुच आर्यों की सन्तान हैं तो हम सबकी रगों में वेश्याओं का खून दौड़ रहा है.
- **यह बहुत अजीब सी बात है कि वात्स्यायन ने अपने काम–सूत्र में सुनार, शिल्पी, माली, तमोली आदि कारीगरों की स्त्रियों को वेश्यावृति करने वाली बताया है.** (अप्सरा 590)

वेश्याओं की किस्में:

- **कुलटा** : दो पुरुषों सें देह सम्बंध बनाने वाली स्त्री. जैसे राधा, अहिल्या, बालि पत्नि तारा आदि.
- **धषर्णी** : तीन पुरुषों सें देह सम्बंध बनाने वाली स्त्री. जैसे माद्री, सुभद्रा
- **पुश्चंली** : चार पुरुषों सें देह सम्बंध बनाने वाली स्त्री. जैसे कुंती.
- **वेश्या** : पांच पुरुषों सें देह सम्बंध बनाने वाली स्त्री. जैसे द्रोपदी
- **महावेश्या** : पांच सें अधिक पुरुषों सें देह सम्बंध बनाने वाली स्त्री. जैसे वेश्यावृति करने वाली कृष्ण पत्नियां.

4.6.2 ब्राह्मण–धर्म में वेश्याओं की स्थिति

ब्राह्मणधर्म में वेश्याओं की वही स्थिति है जो अन्य धर्मों में देवियों की है. यहां वेश्याएं पूजनीय हैं, अनिवार्य हैं. ब्राह्मणधर्मियों का अपनी माँ के बिना काम चल सकता है लेकिन वेश्या के बिना नहीं. इसी कारण ऐसा है कि

- जब राम वन में जाने लगा तो दशरथ ने आदेश दिया कि उसके साथ अन्य सामान के साथ एक्सपर्ट निपुण वेश्याएं भी भेजी जाएं. (अयोध्या कांड 36) (सच्ची रामायण 28)
- वेदों में ऊषा को "देवी" माना गया है. ऋग्वेद की ऋचाएं दर्शाती हैं कि वह कुशल नटी की तरह अपने स्तनों को नंगा करती थी और पैसे लेकर पुरुष को खुश करने वाली स्त्री की तरह मुस्कराती है. वह अपने यार सें मिलने के लिये इधर उधर भटकती स्त्री के समान दिखाई देती है. (अप्सरा 523,524) अप्सरा के लेखक महोदय ने ऋग्वेद की ऋचाओं की संख्या भी दी है लेकिन वे सरिता द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद सें मेल नहीं खातीं.
- चन्द्रवंश (जिसमें कृष्ण पैदा हुआ) का प्रर्वतक पुरूरवा था. उसने उर्वशी और उसकी सहेली वेश्याओं सें यौन सम्बंध बना कर पुत्र पैदा किये जिन्होंने चन्द्रवंश को आगे बढ़ाया. (अप्सरा 526)
- ब्राह्मण धर्म में कामदेव तथा रति की पूजा खूब प्रचलित थी. (अप्सरा 562) शूद्रों का छूआ खाना अथवा पीना तो पाप था मगर गणिकाओं के प्रति ऐसा नियम नहीं था. वेश्याएं तो पूजी जाती थीं.
- आर्य समाज में हर मंगल कार्य में वेश्याओं की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी. राम अथवा कृष्ण का राज तिलक हो, ऋष्यश्रृंग जैसे मेहमान की अगवानी करनी हो हर जगह वेश्याओं के बिना काम अधूरा रहता था. देसाई महोदय के अनुसार ब्राह्मणों की **हर प्रकार सें तृप्ति** के बिना कोई व्रत पूरा हो ही नहीं सकता. (553)
- ब्राह्मण धर्म में सम्पत्ति के मामले में ब्राह्मण के समान केवल गणिका को अधिकार प्राप्त थे. जैसे राजा को ब्राह्मण की सम्पत्ति छीनने का अधिकार नहीं था वैसे ही उसे गणिका की सम्पत्ति छीनने का अधिकार भी नहीं था. उससें बलात्कार भी नहीं किया जा सकता था. अपराधी को निर्धारित मूल्य सें आठ गुणा गणिका को देना पड़ता था तथा उतनी ही रकम राजा के खजाने में जमा करनी पड़ती थी. (अप्सरा 704)
- लगभग सभी ब्राह्मणिक धर्म गन्थों में वेश्यावृति को मान्यता दी गई है. इस तरह इन "धर्मशास्त्रों ने अमर्याद यौन व्यवहार को परोक्ष रूप सें प्रोत्साहन दिया था." (अप्सरा 705)
- महाभारत में 42 वेश्याओं का वर्णन आया है. (अप्सरा 636)
-

4.6.3 अनंगव्रत

ब्राह्मणवाद में हर पाप का "उपाय" है. कई बार तो उनके "उपाय" पाप सें भी अधिक भयावह होते हैं. उदाहरणतः वेश्यावृति के पाप सें छुटकारा पाने के लिये किया जाने वाला उपाय यानि अनंगव्रत.

महाभारत में विस्तृत वर्णन है कि जब कृष्ण मर गया तो उसकी रखैलों में सें पांच – रुक्मणि, गंधारी, हैमवती, शैव्या और जांबवती तो उसके साथ सती हो गईं. उसकी बाकी बची रखैलों को लेकर अर्जुन हस्तिनापुर जा रहा था. रास्ते में लुटेरों ने हमला कर दिया. वैसे तो कथा है कि उसने 18 अक्षौहिणी सेना मार दी थी लेकिन यहां उसकी असलीयत सामने आ गई. महाभारत की लड़ाई में तो कृष्ण की धोखाधड़ियों के कारण वह कर्ण जैसे योधाओं को मार सका लेकिन लुटेरों के सामने उसके झूठे तमगे और प्रमाणपत्र काम नहीं आये. लुटेरे न केवल अर्जुन का सामान लूट ले गये बल्कि कृष्ण की रखैलों को भी हांक ले गये. ब्राह्मणों के भगवान कहे जाने वाले कृष्ण की यह रानियां या रखैलें पहले तो लुटेरों की वासना का शिकार हुईं और बाद में वेश्याएं बन गईं. (अप्सरा 551)

कृष्ण की पत्नियां अथवा रखैलें वेश्याएं क्यों बनी इसके कारण की मत्स्य पुराण (अ.70) में कथा है कि एक बार कृष्ण की सोलह हजार एक सौ आठ रानियां सरोवर में स्नान कर रहीं थी कि उधर कृष्ण की एक अन्य रखैल जांबवती का पुत्र सांब आ गया. उसका सुन्दर शरीर देखकर उन सब के मन में जबरदस्त वासना जाग उठी. कृष्ण को जब पता लगा तो उसने श्राप दे दिया कि वे वेश्याएं बन जायें. (ब्राह्मण कथा के अनुसार ये गोपियां पिछले जन्म में ऋषि थे और राम को देख कर जब इन ऋषियों यानि की वासना जाग गई थी, तब उसने उनको अगले जन्म के लिये बुक कर लिया था. इस जन्म में राम तो कृष्ण के रूप में पैदा हो गया और वे ऋषि गोपियां बन कर पैदा हुई. लेकिन इस जन्म में लगता है कृष्ण को महाभारत सें ही फुर्सत नहीं मिली. सो अपनी कामाग्नि मिटाने के लिए उन को जांब पर डोरे डालने पड़े. परन्तु कमाल है जब वे उस पर लट्टू हुईं तो उसने एडवांस बुकिंग कर ली, बेटे पर लट्टू हुईं तो उसने उन्हें वेश्या बना दिया.) एक अन्य कथा है कि पिछले

जन्म वे अग्नि की पुत्रियां थीं. एक दिन वे सरोवर में नहा रही थीं कि नारद उधर आ निकला. उन्होंने उसे नमस्ते नहीं की. इसलिये नारद ने श्राप दे दिया कि वे वेश्याएं बन जायें.

खैर यह सब तो बनावटी बातें हैं कि वे वेश्याएं किस कारण सें बनी. असली बात यही है कि ब्राह्मणों के भगवान कहे जाने वाले कृष्ण की रखैलें उसके मरने के बाद ब्राह्मण समाज में ही वेश्यावृति करने लग गईं. कृष्ण की भूतपूर्व रखैलें तथा वर्तमान में वेश्याएं बनी इन स्त्रियों को एक दिन एक महर्षि मिल गया. इन वेश्याओं ने उससें इस नर्क सें छुटकारा पाने का उपाय पूछा तो महर्षि बोला मैं आपको वही उपाय बताता हूँ जो मैंने इन्द्र द्वारा युद्ध में जीती स्त्रियों को सुनाया था.

तब उस महर्षि दालभ्य ने **अनंगव्रत** का उपाय बताया जो कि इस प्रकार सें था. (अप्सरा 551)

1. सबसें पहले तुम सभी किसी **राजमंदिर या देवालय में वेश्या धर्म** का पालन करती हुई निवास करो.
2. पैसे लेकर तुम्हारे द्वार पर कोई भी आये तो तुम उसकी **तन** मन सें सेवा करना. पैसे देने वाले आदमी, (यानि ग्राहक) राजा और अपने पति में कोई अन्तर मत करना. यानि आम आदमी सें पैसे लेना लेकिन राजा सें मुफत में यौन सम्बंध बनाना.
3. त्योहार के समय ब्राह्मणों को जमीन, सोना, अन्न और गायें देना. अर्थात अपना तन बेच कर दो चार महीनों में जो कमाई हो, वह भी ब्राह्मण को त्योहार पर भेंट कर देना.
4. रविवार को स्नान करके कामदेव के समान विष्णु की पूजा करना. **उसके बाद किसी वेद के ज्ञानी ब्राह्मण को बुलाना. उसे माल पूऐ खिलाना तथा उसे साक्षात कामदेव मानना. अगर वह यौन सम्बंध बनाना चाहे तो खुश होकर उसकी कामना पूरी करना.**
5. तेरह महीने तक हर रविवार ऐसा ही करना. उसके बाद कामदेव की सोने की मूर्ति बनवा कर गायों के साथ ब्राह्मण को दान देना.
6. **तेरह महीनों के बाद भी हर रविवार को जो भी ब्राह्मण रतिसुख के लिए आये तो बिना पैसे लिये उसकी पूर्ण संतुष्टि करना.**
7. **पचास साल की उम्र होने तक इस अनंगव्रत का पालन करने पर तुम वेश्यावृति के दोष सें छूट जाओगी.**

हमें लगता है कि पति की मृत्यु हो जाने पर पत्नि द्वारा रोने का रिवाज यहीं सें शुरू हुआ है. कृष्ण की वे 16 हजार 1 सौ चार रखैलें/रानियां यह व्रत कथा सुन कर जरूर दहाड़ें मार कर रोई होंगी. राधा जैसी अधेड़ तो शायद जल्द ही इस व्रत सें छूट गई होंगी लेकिन जो बेचारी बीस तीस साल की उम्र की होंगी उन भगवान–पत्नियों को तो कई सालों तक मुफत में ब्राह्मणों की वासना का शिकार होना पड़ा होगा. यह व्रत कथा सुन कर हल्की सी कल्पना करने पर ही ब्राह्मणों की नीचता उजागर हो जाती है. उन्होंने अपने उस भगवान की विधवा रखैलों को भी नहीं बख्शा जिसने भिखारी ब्राह्मण के पांव धोकर पीये, जिसने गीता के रूप में उन्हें सारी उम्र का धन्धा दे दिया. मौका मिलने पर ब्राह्मणो ने अपना असली रूप दिखला ही दिया. जब ये लोग अपने अवतरित भगवान के साथ ही धोखा कर सकते हैं तो गुरू गोबिंद सिंह के सुपुत्रों को तो बेचने में उन्हें क्या शर्म हो सकती थी.

सबसें बड़ी बात यह कि उन वेश्याओं को मन्दिर के अंदर धन्धा करने का उपाय बताया ताकि उनकी कमाई भी ब्राह्मण पुजारी ही खा सकें. असल में देखा जाए तो यह अनंगव्रत मात्र ब्राह्मणों की ऐय्याशी का साधन था. जब उन्होंने अपने स्वार्थ के लिये अपने भगवान की पत्नियों की यह गत कर दी तो सहज कल्पना की जा सकती है कि साधारण स्त्री का वे क्या हाल करते होंगे.

अनंगः यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि अनंग कामदेव का नाम है. अतः उसके नाम पर जो व्रत रखा जाएगा उसमें क्या किया जाएगा हर कोई सहज कल्पना कर सकता है.

4.6.4 ब्राह्मण धर्म की आध्यात्मिक वेश्याऐं

ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़ कर ऐसा लगता है कि प्राचीन आर्य समाज में स्त्री पुरुष सम्बंधों में नैतिकता नाम की कोई चीज थी ही नहीं. ऋषि और देव कहे जाने वाले लोग तथा उनकी स्त्रियां तो इतने अधिक ऐय्याश होते थे कि वे आवारा कुत्ते कुत्तियों की तरह इधर उधर मूंह मारते रहते थे. उनकी ऐसी ऐसी कथायें हैं कि पढ़कर शर्म सें सिर झुक जाता है. सीता को माहवारी हो गई तो देव पत्नियां राम की वासना मिटाने के लिये आ गईं, कृष्ण ने बंसरी बजाई तो गोपियां उसकी वासना मिटाने के लिये आ गईं, भरत राम सें मिलने गया तो रास्ते में भरद्वाज ने हरेक आदमी को सात सात स्त्रियां भेंट कर दीं. हनुमान की माँ अंजनि नहा धोकर घूमने गई तो पवन उसे मिल गया. दोनों ने व्यभिचार किया. इतने अधिक किस्से हैं कि एक पूरा ऋग्वेद या भागवत लिखा जा सकता है.

ब्राह्मण धर्म के लगभग सारे ग्रन्थ ऋषि कहे जाने वाले ब्राह्मणों ने लिखे हैं. अतः इन ग्रन्थों में उन्होंने उन स्त्रियों को जिन्होंने उन्हें देह सुख दिया, देवी बना दिया. इन "देवियों" ने वेश्याओं को भी मात देने वाले कारनामे

किये मगर उन्हें पूजनीय बना दिया गया. **यहां तक कि क्षत्रियों के दोनों वंश – सूर्यवंश और चन्द्रवंश की आदि माताएं भी वेश्याओं को बना दिया गया.** (अप्सरा 641)

आज हमारे सामाजिक कार्यों में किसी वेश्या का उपस्थित होना हमें असहनीय लगता है लेकिन ऋषि काल में उनका कोई भी काम वेश्याओं के बिना पूर्ण नहीं होता था. देवों के राजा कहे जाने वाले इन्द्र के दरबार में तो अप्सरायें (वेश्यायें) भरी पड़ी थीं जो न केवल उसका और उसके मेहमानों का दिल बहलाती थीं बल्कि जब भी उसकी गद्दी को कोई खतरा होता था वह उन वेश्याओं को भेज कर अपना काम सिद्ध का लेता था. **कितनी शर्म की बात है कि ब्राह्मण ऋषि इन्द्र पद यानि वेश्याओं के राजा का पद पाने के लिए तपस्या किया करते थे.** किसी भी अन्य धर्म के देवता अथवा उनका राजा ऐसी वेश्यावृति में लिप्त नहीं रहे. लगता है मध्यकालीन राजे रजवाड़े ब्राह्मणवाद के देवों के राजा इन्द्र सें ही प्रभावित होकर विलासपूर्ण नाच गाने में तल्लीन रहते थे.

ब्राह्मण धर्म वैसे तो पूरा ही वेष्यावृति सें ओत प्रोत है लेकिन कुछेक उनकी मुख्य अप्सराएं अथवा धार्मिक वेश्याएं भी थीं. उनका वर्णन इस प्रकार सें है.

1. **उर्वशी** : **चन्द्रवंश का जन्म इसी उर्वशी नामक वेश्या सें ही हुआ था.** उर्वशी का उल्लेख ऋग्वेद में भी है. शायद वह उनकी सबसें पुरानी वेश्या है. वह कैसे पैदा हुई यह कथा भी ऋषिओं की दल्लागिरी का सबूत है. ब्रह्मा का बेटा था दक्ष. उसकी एक बेटी का नाम था मूर्ति. इस मूर्ति के साथ ब्रह्मा ने यौन सम्बंध बनाये और नर–नारायण की जोड़ी पैदा कर दी. यह जोड़ी तपस्या करने लगी तो इन्द्र ने अपनी कुर्सी बचाने के लिये चुनिंदा वेश्याएं भेजीं. लेकिन यह जोड़ी इन्द्र के नहले पर दहला साबित हुई. जब इन्द्र द्वारा भेजी वेश्याएं इस नर नारायण की जोड़ी को रिझाने में असफल रहीं तो उसे बहुत हैरानी हुई. तब इन्द्र स्वयं इस बात की जांच करने के लिए उनके पास आया. उसकी हैरानी दूर करने के लिए यह जोड़ी उसको अपने आश्रम में ले गई. वहां इस नर नारायण की जोड़ी ने ऐसी वेश्याएं पाल रखीं थीं कि इन्द्र को अपनी वेश्याएं उनके आगे तुच्छ लगीं. तब इस नर नारायण की जोड़ी ने अपने यहां सें एक वेश्या इन्द्र के लिये भेज दी. वह वेश्या क्योंकि नर नारायण की जांघों पर बैठी थी इसलिये उसका नाम उर्वशी रखा गया.

   इन्द्र को तो दो फायदे हो गये. एक तो उसे यह तसल्ली हो गई कि उसकी कुर्सी को कोई खतरा नहीं है. दूसरा उसे एक बढ़िया क्वालिटी की वेश्या और मिल गई. यह वही उर्वशी थी जिसने अर्जुन सें काम याचना की थी तथा अर्जुन नहीं माना था. तब उर्वशी ने उसे श्राप दिया कि वह एक साल के लिये हिजड़ा बन जाये.

2. **मेनका** : जहां जहां भी इन्द्र को तपस्या भंग करनी होती थी मेनका को भेजा जाता था. विश्वामित्र की तपस्या भी मेनका ने ही भंग की थी. उनके मिलन सें शकुंतला का जन्म हुआ था. विश्वामित्र ने उसकी जिम्मेवारी उठाने सें मना कर दिया तब मेनका भी उसे फैंक कर वापिस इन्द्र के पास चली गई. इससें पहले मेनका ने विश्वावसु सें यौन सम्बंध बनाये और प्रमद्वरा नामक लड़की को जन्म दिया और उसे भी पैदा करके फैंक दिया. बड़ी होकर उसे भी वेश्या बनना पड़ा. (अप्सरा 640)

3. **रंभा** : मेनका के जाने के बाद विश्वामित्र फिर तप करने लगा तो इन्द्र ने इस बार रंभा को भेजा लेकिन इस बार विश्वामित्र धोखे में नहीं आया और उसने रंभा को पत्थर की बना दिया अर्थात मार दिया. वेश्याओं की नियति शतरंज के खेल में प्यादों जैसी ही होती थी.

4. **तिलोतमा** : अपना काम निकालने के लिए स्त्री का प्रयोग करना आर्यों का सनातन धर्म रहा है. उनके सृष्टिकर्ता ब्रह्मा सें लेकर गांधी तक ने स्त्री का प्रयोग किया है. एक दारू न पीने वाला (असुर) परिवार था. उसके मुखिया थे सुंद व उपसुंद. युद्ध में कोई देव कोई ब्राह्मण उन्हें हरा नहीं पाया. तब ब्रह्मा ने अपना सनातन धर्मीय अस्त्र "भेद" यानि फूट डालो और राज करो की नीति का प्रयोग किया. उसने अपनी सबसें खूबसूरत वेश्या को उनके पास भेजा. उसे पाने के लिए दोनों भाई आपस में ही लड़ मरे. ऐयाश देव धोखे सें फिर जीत गए थे. यह बहुत ही अजीब तथा दुख की बात है कि अपने दुश्मन को हराने के लिए वेश्याएं भेजने वाले ऐसे नीच प्राणी को ब्राह्मण सृष्टि कर्ता बतलाते हैं.

5. **जानपदी** : देवों और वेश्याओं का राजा इन्द्र को हमेशा दो लोगों सें अपनी कुर्सी को खतरा रहता था. एक असुर और दूसरे ऋषि. असुर उसें मार भगाना चाहते थे ताकि समाज सें देवों की ऐयाशी बन्द हो सके. उन्होंने अनेकों बार इन्द्र को हराया और समाज में शांति स्थापित की. दूसरी ओर ऋषि इन्द्र को हटाना चाहते थे ताकि वे उसकी कुर्सी पर बैठ कर जी भर कर ऐयाशी कर सकें. ऐसे ही एक बार महारिषी गौतम का पुत्र शरद्वान ने तपस्या शुरू की तो इन्द्र को खतरा महसूस हुआ. लेकिन इन्द्र ऋषियों की औकात जानता था. उसने ब्राह्मण ऋषि शरद्वान के लिए जानपदी नामक एक सुन्दर सी वेश्या भेज दी. जिस तह हड्डी पाक कुत्ता भौंकना बंद कर देता है वैसे ही उस ब्राह्मण ऋषि ने वेश्या पाकर चुप्पी साध ली. उसके दो बालक पैदा हो गए. कृप और कृपी.

6. **धृताची :** एक था ब्राह्मण ऋषि भरद्वाज. कथा है कि उसकी माँ गर्भवती थी तो उसके चाचा ने उससें बलात्कार किया. इससें जो बालक गर्भ में था उस पर दो बापों का भार पड़ गया. अतः उसका नाम पड़ा भरद्वाज यानि दो भारों सें पैदा हुआ बालक! भगवन बुद्ध का कहना है कि आत्मा का नहीं बल्कि आदमी के संस्कारों का पुनर्जन्म होता है. सो दोनों बापों के संस्कार भरद्वाज में आ गए. एक दिन उसे घृताची नामक वेश्या नहाती हुई दिख गई और उसने द्रोण को पैदा कर दिया. बुद्ध वचन फिर सत्य साबित हुए. हरामी द्रोण ने महावीर एकलव्य का अंगूठा कटवा कर अपना खानदानी हरामीपन दिखला दिया.

बारह महीने बारह वेश्याएं

ज्यामिति के विद्वानों ने काल गणना करने के लिए साल को बारह महीनों में बांटा. लेकिन ऐयाश ज्योतिष शास्त्रीयों ने हर महीने के लिए एक वेश्या तय कर ली. बारह महीनों की बारह वेश्याएं इस प्रकार सें हैं. (अप्सरा 644)

क्रमांक	महीना	वेश्या
1	चैत्र	कृतस्थली
2	वैसाख	पुंजीकस्थली
3	जेष्ठ	मेनका
4	आषाढ़	रंभा
5	सावन	प्रम्लोचा
6	भादों	अनुम्लोचा
7	आश्विन	तिलोत्तमा
8	कार्तिक	विश्वची
9	मार्गशीर्ष	उर्वशी
10	पौष	पूर्वचिती
11	माघ	घृताची
12	फाल्गुन	सेनजित

4.6.5 देवदासी प्रथा यानि ब्राह्मणधर्मी वेश्यावृति

धर्म के नाम पर वेश्यावृति का धंधा कराने का जीता जागता उदाहरण आज भी प्रचलित देवदासी संगठन है. देवदासी बनना "प्रथा" नहीं है बल्कि यह धूर्त ब्राह्मणों का "संगठन" अथवा गिरोह है जो धर्म के नाम पर न केवल भोली भाली दलित बालिकाओं का यौन शोषण करता है बल्कि भड़ूआगिरी करके धन भी कमाता है. अंग्रेजों ने इस प्रथा को लगभग समाप्त कर दिया था लेकिन आजाद भारत में ब्राह्मणिक सरकार होने की वजह सें यह धार्मिक यौन शोषण का धन्धा आज भी फल फूल रहा है.

दक्षिण भारत में येलम्मा के मंदिर में हर साल अनेकों कुंआरी दलित लड़कियां मंदिर में अर्पित करा दी जाती हैं. इन्हें नाच गाने की शिक्षा दी जाती है. जवान होने पर अर्थात जिस समय इनको माहवारी शुरू होती है, इनका "विवाह" मंदिर की मूर्ति सें कर दिया जाता है. उस रात उस लड़की की बोली लगती है तथा अधिकतम बोली देने वाला ब्राह्मण ही उस लड़की सें सुहागरात मनाता है. "केवल बाह्मण को ही उसका कौमार्यभंग करने का अधिकार होता था." (अप्सरा 713) इसके बाद उसे नाच गाना करके तथा देह व्यापार करके धन कमाने की इजाजत मिल जाती थी. **विजयनगर की पूरी पुलिस फोर्स का खर्चा देवदासियां अपनी देह व्यापार की कमाई में सें उठाती थीं** (अप्सरा 747) (अप्सरा 707)

देवदासियों के जो लड़कियां पैदा होती थीं उन्हे भी इसी संगठन का शिकार होना पड़ता था. उन्हें भी देवदासी के रूप में वेश्यावृति करके ब्राह्मणों को धन कमा कर देना पड़ता था. खास मौकों पर उन्हें बड़े लोगों के घरों पर भी नाच गाना करना पड़ता था. जो लोग अनंगव्रत के नाम पर अपने जीते जागते भगवान की विधवाओं को भोग सकते हैं वे लोग पत्थर के भगवान की पत्नियों का नाच गाना देखने या उन्हें भोगने में कहां शर्म महसूस करेंगे!!

एक बार देवदासियों द्वारा वेश्यावृति सें की गई कमाई को लेकर झगड़ा हो गया. बात अदालत तक पहुंची. "चलकोंडा" नाम सें प्रसिद्ध मुकदमे में मद्रास हाई कोर्ट ने फैसला किया कि हिन्दू कानून में वेश्यावृति को मंजूरी मिली हुई है. सवाल उठा कि देवदासियों की वेश्यावृति द्वारा की गई कमाई कौन खाएगा. अदालत ने देवदासी संघ को इसके अयोग्य करार दिया तथा मंदिर प्रबंधन को इसका हकदार बना दिया. इस प्रकार ब्राह्मण जज के अमानवीय फैसले के कारण अपना शरीर बेच कर की गई कमाई भी ब्राह्मण पुजारियों के हत्थे चढ़ गई.

सन् 1290 में मार्को पालो ने मालाबार क्षेत्र में मंदिर की देवदासियों का नाच गाना देखा था जहां उस नाच गाने में उसे नग्नता भी दिखाई दी क्योंकि देवदासियां कमर सें ऊपर कोई वस्त्र पहने हुए नहीं थी. देसाई इसे हिन्दू (ब्राह्मण) संस्कृति मानते हैं (अप्सरा 746) जगन्नाथ मंदिर में न केवल संभोगरत मूर्तियां हैं बल्कि वहां भी फौज की फौज देवदासियां होती थीं जो मंदिर के आसपास मौहल्लों में रहती थीं. वे वेश्यावृति करके गुजारा करती थीं तथा मंदिर के पण्डे पुजारी भी इनके साथ व्यभिचार में गले तक डूबे रहते थे. (759)

ब्राह्मणग्रन्थों में सात प्रकार की देवदासियों का उल्लेख मिलता है. (संस्कृति कोश 434)

1. **दत्ता** : किसी को दान में मिली हुई या दान में दी गई देवदासी.
2. **विक्रिता** : पैसे देकर खरीदी गई देवदासी.
3. **भृत्या** : स्वयं पाली पोसी गई देवदासी.
4. **भक्ता** : सेवा करने वाली देवदासी
5. **हृता** : अपहरण करके लाई गई देवदासी.
6. **अलंकारा** : सजावट के काम करने वाली देवदासी
7. **रूद्रगणिका** : इसे गोपिका भी कहा गया है. रूद्रगणिका यानि महावेश्या को गोपिका बताना यह दर्शाता है कि गोपियां कौन होती थीं.

देवदासी की उपरोक्त सात किस्में यह दर्शाती है कि जो लड़कियां देवदासी के काम में झोंकी जाती थी उनका काम किसी अशरीर देवता की सेवा करना नहीं होता था बल्कि वे बाजार में खरीदी बेची जाती थीं, अपहरण की जाती थी, उनका यौन शोषण होता था तथा वेश्यावृति में झोंक दी जाती थीं. ब्राह्मणों द्वारा अपने धर्म के नाम पर की गई ऐसी लूटखसोट किसी अन्य धर्म में देखने को नहीं मिलती.

देवदासी के रूप में वेश्यावृति का यह सिस्टम इसलिये चल रहा है क्यों कि आज तक एक भी ब्राह्मण पुत्री देवदासी नहीं बनाई गई. सरकार द्वारा बनाये गये कानून भी किताबों तक ही सीमित हैं क्योंकि आज भी सरकार पर ब्राह्मणिकों का कब्जा है जो संविधान की बजाए अपने धर्म ग्रन्थों को सर्वोच्च मानते हैं जिनके अनुसार दलित स्त्री सभी की भोग्या है!!! चाहे वह ब्राह्मण मंदिर में भोगी जाए या मंदिर के बाहर, दलित देवदासी की यही दास्तान है.

4.7 भगवन बुद्ध द्वारा गणिका उद्धार

आम्रपाली : आचार्य चतुरसेन ने अपनी अमर कृति "वैशाली की नगरवधु" में आम्रपाली का जीवन चित्रित किया है. साथ में आर्य समाज में फैली कुत्सित वासना का भी सजीव व सटीक चित्रण किया है. आर्यों में पुत्र पाने की चाह इतनी बलवती थी कि लड़की पैदा होने पर उसे सीता, शकुन्तला की तरह मरने के लिए सड़कों पर फैंक दिया जाता था. आम्रपाली को भी उसके आर्यधर्मी माँ बाप ने ऐसे ही फैंक दिया था.

एक दलित चौकीदार ने उसे पाल–पोस कर बड़ा किया. वह चौकीदार आमों के बाग पालता था. अतः उस बालिका का नाम भी आम्रपाली रखा गया. वह एक बेहद सुन्दर शरीर वाली युवती के रूप में जवान हुई. जैसा कि आर्यों के आचार्यों व ऋषियों का चरित्र था, आर्य लोग भी उस सुन्दरी को पाने के लिए कुत्तों की तरह लड़ मरे. अन्त में सभी ने यह फैसला किया कि सारे आर्य समाज को लड़ाई झगड़े सें बचाने के लिए यह जरूरी है कि उस युवती को पूरे आर्य समाज की भोग्या बना दिया जाए. अतः आम्रपाली को वेश्यावृति के धन्धे में झोंक दिया गया.

बरसों उसने उस नर्क को भोगा. एक दिन भगवन बुद्ध सें उसने संघ में शामिल होने की इच्छा प्रकट की. भगवन बुद्ध ने उन्हें अपने संघ में दीक्षित किया **और उन्हें वेश्या आम्रपाली सें माँ अम्बा बना दिया.** इन्हीं माँ अम्बा के नाम पर ब्राह्मणों ने अपनी अम्बा की कथा घढ़ डाली जिसने पता नहीं कितने ही लोगों को मार दियाण

पद्मावती : अम्बापाली की तरह वह भी आर्य समाज के विलासता के नियमों का शिकार थीं. सम्राट बिंबसार सें उसके भी सम्बंध बने और उसने एक पुत्र को जन्म दिया. राजा ने उस बालक को अपना लिया. बड़ा होकर वह बौद्ध भिक्षु बन गया. फिर एक दिन उसकी माँ ने अपने पुत्र सें बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और इस नर्क सें छुटकारा पाया.

विमला : वह भी वैशाली की नगरवधु थी. उसने सुना था कि भगवन बुद्ध और बौद्ध भिक्षु अपने नियम पर अटल होते हैं. अतः एक दिन उसने ठाना कि वह किसी भिक्षु को उसके धर्म सें डिगायेगी. वह सज धज कर बौद्ध भिक्षु महामोग्गलायन की कुटिया में पहुंची और उसने अपने सारे पैंतरे आजमाने शुरू किये. महामोग्गलायन ने पूछा बहन, मैं तुम्हारा क्या भला करूं. विमला का गर्व ढल गया. वह भिक्षुणी बनी और अर्हत पद प्राप्त किया. ब्राह्मणधर्म में इन्द्र द्वारा अनेकों ऋषियों को अप्सराएं यानि वेश्याएं सप्लाई कीं मगर एक भी ऋषि ऐसा नहीं हुआ जिसने किसी अप्सरा को बहन बोला हो.

अर्धकाशी : वह बेहद सुन्दर स्त्री थी. उसने एक रात के लिये अपना मोल काशी नरेश की एक दिन की आमदन के आधे के बराबर रखा. इसलिये उसका नाम अर्धकाशी पड़ा. उसने भगवन बुद्ध के बारे में बहुत सुना था. सो एक दिन वह उनसें मिलने के लिये चली लेकिन बीच रास्ते में उसे समाचार मिला कि कुछ लुटेरे उसे लूटने के लिये छिपे हुए हैं. अतः वह अपनी यात्रा रद्द करके वापिस लौट आई और उसने भगवन बुद्ध को समाचार भेजा. उन्होंने उसके पास अपना एक शिष्य भेजा. उससें दीक्षा लेकर वह भिक्षुणी बन गई. उसके द्वारा लिखित कविताएं आज भी थेरीगाथा में मौजूद हैं.

एक पल के लिए इन गणिकाओं के बौद्ध उद्धार और ब्राह्मणिक उद्धार पर विचार करें. बुद्ध ने इन गणिकाओं के साथ क्या किया :

1. उन्होंने तुरंत उनका अमानवीय धन्धा छुड़वा दिया.
2. उन्हें भोग्या की जगह योग्या /बहन का दर्जा दिया.
3. उन्हें अपने धर्म में उनके सामर्थ्य अनुसार अर्हत पद प्राप्त करने तक का अवसर दिया.

और ब्राह्मणों ने अपने ही भगवान की विधवा बनी वेश्याओं के साथ क्या किया. उन्हें अनंगव्रत अपनाने का आदेश दिया.

1. उन्हें तेरह मास तक मंदिर या देवालय की सेवा में रह कर वेश्यावृति करने का आदेश दिया अर्थात अपने धन्धे सें जो कमाई हो उसे मंदिर के पुजारी के हवाले कर दे.
2. इन तेरह महीनों में हर रविवार को ब्राह्मण को दान दे और अगर ब्राह्मण उससें यौन सम्बंध बनाना चाहे तो वह बिना पैसे लिये उसे पूर्ण संतुष्ट करे. यानि उसकी कमाई में सें अगर कुछ पैसा बच भी जाए तो वह भी ब्राह्मण की भेंट चढ़ा दे. असली भडूए या दल्ले भी ऐसे कमीने नहीं होते होंगे.
3. तेरह महीने के बाद वह वेश्यावृति तो छोड़ दे लेकिन अगर कोई (कितने भी) ब्राह्मण उससें यौन सम्बंध बनाना चाहें तो तो वह बिना पैसे लिये उन सबको पूर्ण संतुष्ट करे. यानि तेरह महीने के बाद वह केवल ब्राह्मणों सें वेश्यावृति करे.
4. पचास साल की उम्र होने तक वह इसी अनंगव्रत का पालन करे तब उसे वेश्यावृति के पाप सें छुटकारा मिलेगा.

कितनी लज्जा की बात है कि ऐसे नीच ब्राह्मण अपने सिस्टम को धर्म को नाम देते हैं.

अध्याय 5

5.1 ब्राह्मणवाद के ध्वज–वाहक : हरामी और नपुंसक ऋषि गण

ब्राह्मण ऋषियों को बहुत महान बताया जाता है. ब्राह्मणवादी बढ़ चढ़ कर प्रचार करते हैं कि भारत ऋषियों मुनियों का देश है. प्रचार किया जाता है कि वह हजारों सालों तक भूखे प्यासे रह लेते थे, तप करते थे, स्वर्ग की सीढ़ियां चढ़ लेते थे. भगवान भी उनसे डरता था आदि. लेकिन सच्चाई और असलीयत यही है कि सब के सब ऋषि हद दर्जे के ऐयाश थे, चरित्रहीन थे. दारू मीट छक कर खाते थे, अपनी पराई सभी स्त्रियों पर बुरी नजर रखते थे तथा मौका मिलने पर भेड़िये की तरह टूट पड़ते थे. आजकल के फिल्मी डॉन भी उनके आगे कुछ नहीं थे. राजनीतिक सत्ता पर वह हावी थे. वह किसी की भी बहन बेटी की इज्जत पर हाथ डाल लेते थे. यहां तक कि उन्होंने राम की माँ कौशल्या तक को भी नहीं बख्शा. गुस्सेबाज इतने कि जरा भी भूल होने पर आम आदमी की हत्या तक कर देते थे.

उनके धर्म के मुख्य ऋषियों के कारनामे इस प्रकार सें रहे हैं:

अगस्त्यः राम के कुलगुरु वशिष्ठ का जुड़वां भाई. उसने अपनी बेटी विदर्भ के राजा के पास रखी. जब वह जवान हो गई तो वापिस अपने आश्रम में ले आया और सारी उम्र उससें व्यभिचार किया. (वनपर्व 96–,98). फिर

एक दिन भूख कुछ ज्यादा लग गई तो वातापि नामक आदमी को मार कर खा गया. ऐसे नरभक्षी होते थे ब्राह्मण ऋषि. (शांतिपर्व 141)

उसके जन्म की सच्चाई यह है कि वह माँ की कोख सें नहीं बल्कि घड़े में पैदा हुआ था. दूसरी सच्चाई यह है कि वह एक दिन गुस्सें में आकर सारे के सारे समुद्रों का पानी पी गया. जब लोग परेशान हो गए तो उसने सारा पानी वापिस मूत दिया जिससें समुद्र का पानी खारा हो गया.

ब्राह्मण ग्रन्थों का यह किस्सा क्या दर्शाता है. यही कि इन धर्म ग्रन्थों के लेखक दिमाग सें खाली होते थे तथा दिल सें कमीने होते थे. जिसने भी यह कथा लिखी उसने अपनी बेटी पर बुरी नीयत की होगी. इसलिए उसने ऐसे ऋषि की कथा घढ़ दी जो अपनी बेटी के साथ ही यौन दुराचार करने सें नहीं चूका. ऐसे नीच आदमी को महान बताने के लिए समुद्र पीने की कथा घढ़ दी जबकि हर कोई जानता है कि जितना धरती का आकार है उससें अढाई तीन गुणा समुद्र का पानी है. अतः कोई भी आदमी समुद्र का पानी पीकर धरती पर खड़ा नहीं रह सकता. कहते हैं सतयुग में आदमी की उम्र 400 साल होती थी. अगर अंगिरा को सतयुग में पैदा हुआ मान लें और उसकी उम्र भी 400 साल मान लें तो अगर वह सारी उम्र मूतता रहता तो भी समुद्रों का पानी अपनी मूत्र इन्द्री सें बाहर नहीं निकाल सकता था.

सबसें मजे की बात तो यह है कि कहानीकार ने कहानी घढ़ते यह नहीं सोचा कि उनका विष्णु नाम का भगवान समुद्र के एक हिस्से क्षीर सागर में पड़ा रहता है. अतः उनका भगवान भी एक ऋषि द्वारा किए गए पेशाब के गड्ढे में पड़ा है!

<u>अजीगर्त</u> : ब्राह्मणधर्म की सजीव प्रतिमा. ऐसे आदमी को आदमी कहना भी पूरी आदमजात को गाली देने के समान है. लेकिन ऐसे आदमी को ब्राह्मणधर्मी "सन्त" बताते हैं. इस ब्राह्मण ऋषि ने धन लेकर अपना बेट यज्ञ में बलि देने के लिए बेच दिया था. और जब यज्ञ के मण्डप पर जल्लाद भी उस मासूम बालक को काटने के लिए तैयार न हुए तो यही ब्राह्मण ऋषि कुछ और धन दिए जाने पर अपने ही अबोध बेटे को अपने ही हाथों सें काटने को तैयार हो गया.

ऐसे ही होते थे ब्राह्मण ऋषि पैसे के लिए अपने बेटे तक को कसाई की तरह काट देने वाले!

<u>अंगिरस</u> : ब्राह्मणों के प्रथम ऋषियों में सें एक अंगिरस या अंगिरा भी था. जैसे पुराने ऋषियों के साथ होता आया है उसके मां बाप का भी कोई अता पता नहीं है. कहीं उसे ब्रह्मा के मूंह सें पैदा हुआ बताया गया है तो कहीं आग की बेटी सें पैदा हुआ बताया गया है. (संस्कृति कोश) उसके मांबाप का तो किसी को पता नहीं लेकिन भागवतकार यह जरूर जानता है कि उसने क्षत्रिय राजा रथोतर की रानी के साथ नियोग करके कई पुत्र पैदा कर दिए थे. सत्रह औलादों का जिक्र तो संस्कृति कोश में भी आया है.

ब्राह्मण ऋषि अंगिरस के कुल मे पैदा हुए एक और ब्राह्मण ऋषि भरत ने अपनी तीन बहनों सें व्यभिचार किया.

<u>भारद्वाजः</u> ब्राह्मणों में "भारद्वाज" गोत्र कैसे शुरु हुआ इसकी कथा भी कम ऐतिहासिक नहीं है. कथा (आदि पर्व 104) इस तरह सें है कि भारद्वाज की माँ ममता गर्भवती थी. उसका चाचा ब्राह्मण ऋषि वृहस्पति ममता के पास संभोगार्थ गया. ममता ने मना किया. इस लिए नहीं कि वह उसके बड़े भाई उतथ्य की पत्नी है बल्कि इस लिए कि वह गर्भवती थी. परन्तु वृहस्पति कोई आम आदमी तो था नहीं जो भाभी का लिहाज कर देता, वह तो ऋषि था वह भी ब्राह्मण, उच्चकुलोत्पन, सभी देवों ब्राह्मणों का गुरु. अतः उसे अपने ब्राह्मणिक गो–धर्म का पालन तो करना ही था. न करता तो धर्म की ग्लानि हो जाती और कृष्ण को आना पड़ता. इस लिए उस ब्राह्मण ऋषि ने अपनी गर्भवती भाभी सें बलात्कार कर लिया. ममता क्योंकि पहले सें ही गर्भवती थी अब उस पर वृहस्पति का भार भी पड़ गया अतः उसका पुत्र दो भार वाला अर्थात भारद्वाज पैदा हुआ जिससें आगे ब्राह्मणों में "भारद्वाज" गोत्र शुरु हो गया. (आदि. 104)

भागवत (9.20) की कथा कुछ अश्लील है फिर भी यथासंभव मर्यादा का पालन करते हुए दे रहे हैं. उक्त कथा के अनुसार ब्राह्मण ऋषि वृहस्पति अपनी भाभी ममता सें संभोग (बलात्कार) में प्रर्वत हुआ. भाभी ने मना किया तो उस ने ममता के गर्भ को श्राप देने की धमकी दी. वह दीर्घतमा की कथा जानती होगी कि उसकी माँ ने भी ऐसे ही ऐतराज किया था और उस बेचारी के बालक को अन्धा पैदा होना पड़ा था. अतः बेचारी ममता ने ऋषि के आगे सर्मपण कर दिया. बलात्कार हो हटने के बाद उसने ऋषि द्वारा स्खलित वीर्य को साफ करना चाहा तो ब्राह्मणों के देवता बोले,'मूर्ख स्त्री, इस द्वाज को अपनी योनि में भर.' देवों का हुक्म मान कर उसने द्वाज अपनी योनि में भरे रखा. अतः उससें जो पुत्र पैदा हुआ वह भरद्वाज हुआ.

इस कथा सें स्पष्ट है कि उक्त ब्राह्मण ऋषि वृहस्पति द्वारा किए गए बलात्कार में न केवल देवताओं की सहमति थी बल्कि उन्होंने इस घिनौने बलात्कार को अपनी आंखों के सामने होते हुए देखा भी. तभी तो उन्होंने ममता को बलात्कार होने के तुरंत बाद अपनी योनि सें ऋषि वृहस्पति का वीर्य भी नहीं निकालने दिया.

ऐसा मात्र ब्राह्मण–धर्म में ही होता है कि वे लोग जो अबला सें बलात्कार करते हैं उन्हें संत या ऋषि कहा जाता है और जो लोग बलात्कार को अपनी आंखों के सामने होता हुआ देखते हैं और असहाय औरत को बलात्कारी का वीर्य भी अपने शरीर सें नहीं हटाने देते, वे देवता कहे जाते हैं! थू !!

राजस्थानी भाषा में कहावत है कि ''आकड़ा कै आकड़ा ही उपजींगा, आम कोनी.'' अर्थात आक के पौधे के आक ही लगेंगे आम नहीं. आक के पौधे के जो फल लगता है उसकी शक्ल चाहे आम जैसी हो लेकिन वह गुणों में आक जैसा ही होता है. अतः भारद्वाज की शक्ल चाहे आम आदमी जैसी थी लेकिन गुणों में वह अपने "डबल" बाप की तरह ही था. एक दिन गंगा में स्नान करती हुई अप्सरा अर्थात वेश्या घृताची को देख लिया. ऋषि का ब्राह्मण धर्म जाग उठा. घृताची तक पहुंचने से पहले ही महर्षि का "अमोघ" वीर्य स्खलित हो गया जो उस ने यज्ञ के दोणे में रख दिया. उस वीर्य सें बर्तन को एक बच्चा पैदा हो गया जो कि आगे चल कर पांडवों का गुरू द्रोण बना. (आदि. 131)

वास्तव में यह भारद्वाज द्वारा वेश्या घृताची के साथ यज्ञ भूमि पर किया गया समागम है. हो सकता है स्खलित वीर्य उसने यज्ञ पात्र में डाल लिया हो. वैसे भी ब्राह्मण–ऋषिओं द्वारा वीर्य के गुणगान में अनेकों धार्मिक ग्रन्थ रचे गए हैं. यहां तक कि वीर्य को चावल में मिला कर 'चरू' खाने तथा देवों को दान देने के श्लोक भी उनके ग्रन्थों में पाए जाते हैं. (कौशिक सूत्र 3.5 (राज. 61) यहां ध्यान देने वाली बात है कि यह वही घृताची वेश्या थी जिसके साथ समागम करके व्यास ने शुक पैदा किया था.

उसके द्वारा अनेकों गायों को मार कर खाने की कथाएं ब्राह्मण ग्रन्थों में मौजूद हैं. (स.मु 6.154) ऐसा था महान ब्राह्मण ऋषि!!

<u>दीर्घतमा</u> : आर्यों की गो–धर्म परम्परा का एक महाकर्णधार. उसे भी ममता का पुत्र बताया जाता है. कथा है कि उशिज की पत्नि ममता गर्भवती थी तो देवताओं के गुरू बृहस्पति ने उसके साथ अपना गो–धर्म निभाना चाहा. ममता तो कुछ नहीं बोली लेकिन उसके गर्भ में पल रहे बच्चे ने ऐतराज किया कि अगर उसकी माँ के साथ बलात्कार होगा तो उसके वेद पढ़ने में बाधा आएगी. देवगुरू ने उसका इलाज कर दिया यानि उस बालक को जन्म सें पहले ही अन्धा कर दिया ताकि उसकी वेद पढ़ने की समस्या जड़ सें ही समाप्त हो जाए. बलात्कार के बाद जब बालक पैदा हुआ तो वह अन्धा था. इसलिए उसका नाम पड़ा दीर्धतमा.

दीर्धतमा अन्धा था मगर शरीर सें सांड जैसा ताकतवर था. एक दिन एक आवारा सांड उसके घर में घुस कर उसका अनाज खाने लग गया. दीर्घतमा ने उसे दूसरों का अनाज खाने सें रोका तो उस सांड ने ज्ञान बघारा कि सांडों के लिए दो काम धर्म हैं पहला किसी के भी घर में घुस कर उसका अन्न खाना तथा गोधर्म का पालन करना यानि मनचाही गाय सें सहवास करना. दीर्घतमा तो जन्म सें पहले ही वेद का ज्ञान ले चुका था. सो उसे सांड का ज्ञान समझने और अपनाने में कोई कठिनाई नहीं हुई. अतः उसने मनचाही स्त्री सें यौन सम्बंध बनाने शुरू कर दिए. बाप की तरह बलात्कार करना उसे विरासत में मिल गया था.

बचपन सें अन्धा था. सोचता था जैसे उसे कुछ दिखाई नहीं देता औरों को भी कुछ दिखाई नहीं देता. अतः जहां कोई स्त्री हाथ लग जाती वहीं सबके सामने अपना ब्राह्मणिक गो–धर्म शुरु कर देता. दीर्घतमा क्योंकि ब्राह्मण ऋषि था अतः दिन दिहाड़े सार्वजनिक स्थानों पर सब के सामने किसी भी स्त्री सें बलात्कार करना उसका जन्मसिद्ध अधिकार था.

जब दीर्घतमा की पत्नी प्रद्वेशी ने इस कुकर्म का विरोध किया तो अन्य ऋषियों ने व्यवस्था दी कि पति का त्याग नहीं किया जा सकता. और उसके अपने पुत्र श्वेतकेतु ने कहा अगर स्त्री गैर मर्द सें संभोग सें मना करे तो उसे भ्रूण हत्या का पाप लगेगा. (समु 1.19)

उसके इस धर्म कार्य सें उसके "नास्तिक" पुत्र दुखी हो गए. उन्होंने अपने बाप को रस्से सें बांध कर नदी में पटक दिया. सांड भला मरता कैसे! सो एक क्षत्रिय राजा बलिदेव ने निकाल लिया. वह ब्राह्मण ऋषि था. सो वहां पर भी खाली नहीं रहा. राजा ने उसे अपनी रानी सुदेष्णा के यहां पुत्र पैदा करने का काम सौंप दिया. लेकिन सुदेष्णा अंधे सांड के पास नहीं गई बल्कि अपनी दासी भेज दी. ब्राह्मण दीर्घतमा ने वेदाज्ञा अनुसार उसके ग्यारह पुत्र पैदा कर दिये. बाद में राजा को हकीकत पता लगी तो रानी को स्वयं उसके पास ले गया. ब्राह्मण महात्मा ने रानी के अंग टटोले. रानी पसंद आ गई और वह कई बच्चों की माँ बना दी गई. ऐसे अंग टटोलने वाले व्यभिचारी ही ब्राह्मण धर्म में महात्मा कहलाते हैं. गांधी की तरह!!

ऐसे ही होते थे ब्राह्मण ऋषि. बेशर्म, बेहया. ब्राह्मणिक ग्रन्थ पढ़ कर ऐसा भास होता है कि जो जितना बड़ा गुण्डा होता था वह उतना ही बड़ा भगवान, देव, ऋषि कहलाता था.

<u>दुर्वासा</u> : यथा नाम तथा गुण. अत्रि और अनुसुइया का पुत्र. जरा जरा सी बात पर आग बबूला होने वाला. सन्तों का कहना है कि काम, क्रोध, लोभ मोह अहंकार को जीतने वाला साधु होता है. लेकिन ब्राह्मणों में तो ऋषि का

बेटा होने पर ही आदमी ऋषित्व प्राप्त कर लेता था चाहे उसमें एक पैसे का भी गुण न हो. दुर्वासा ऐसा ही प्राणी था. उसके अनेकों किस्से हैं जिसने भी उसे नमस्ते नहीं की, उसकी शामत आ गई.

बेचारी शकुन्तला ने उसे नमस्ते नहीं की. बस इसी बात पर उसी का ऋषित्व जाग उठा और उस अबला को बरसों ठोकरें खानी पड़ीं. गुस्से में आकर उसने अपनी पत्नि को भी जिंदा जला दिया यानि भस्म कर दिया. दुक्ष की बात है ऐसे हत्यारों को ऋषि कहा जाता है.

द्रोण : दो बाप की औलाद भारद्वाज ऋषि का पुत्र. भारद्वाज ने एक दिन घृताची वेश्या को नहाते देख लिया. उसका ऋषिपना जाग उठा. द्रोण पैदा कर दिया. ब्राह्मण द्रोण कौरव तथा पांडवों का गुरू बना जिनका जन्म अनैतिक ढंग सें हुआ था.

उसने एकलव्य नामक एक शूद्र युवक को मात्र उसकी जाति की वजह सें तीर चलाने की विद्या सिखाने सें इन्कार कर दिया था. बाद में उस युवक ने द्रोण की मूर्ति बना कर स्वयं तीर चलाने का अभ्यास किया. उधर द्रोण ने अर्जुन को शिक्षा दी और उसे स्वयं ही सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर घोषित कर दिया. एक दिन द्रोण और उसके शिष्य जंगल में शिकार करने गए. वे अपने कुत्ते को भी साथ ले गए. वह कुत्ता उधर निकल गया जिधर महावीर एकलव्य अभ्यास कर रहे थे. उन्हें देख कर कुत्ता भौंकने लगा. एकलव्य के अभ्यास में विघ्न पड़ा. उन्होंने एक साथ सात तीर इस प्रकार सें कुत्ते के मूंह पर छोड़े कि उसका मूंह तो बन्द हो गया लेकिन उसके एक खरोंच तक न आई. कुत्ता भागता हुआ अपने मालिक के पास आया. द्रोण व अर्जुन ने तीरअंदाजी का ऐसा करतब अपने जीवन में कभी देखा न था. वे हैरान थे कि कुत्ते के मूंह में सात तीर घुसे हुए थे मगर उसे एक खरोंच भी न आई थी. उन्होने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई तीरअंदाजी में ऐसा कमाल भी कर सकता है. ढूंढते हुए वे एकलव्य के घर तक पहुंच गए. पूछने पर एकलवय ने द्रोण को अपना गुरू बताया.

ब्राह्मण द्रोण ने अपनी धूर्तता दिखलाई और गुरू–दक्षिणा में उनके दाएं हाथ का अंगूठा काट लिया ताकि महावीर एकलव्य भविष्य में कभी तीर न चला सकें. थू तेरे हे ब्राह्मण!! जिसका बाप दो आदमियों के भार सें पैदा हुआ हो तथा माँ आवारा कुतिया जैसी हो, उस आदमी सें और उम्मीद भी क्या की जा सकती है! पंजाबी भाषा में ऐसे आमी को बेरड़ा कह कर गाली दी जाती है.

महाभारत की लड़ाई में वह छुप कर बैठ गया. "सत्यवादी'' युद्धिश्ठर ने झूठ बोला कि उसका बेटा मारा गया है. वह दुःख सें बाहर निकला कि धृष्टद्युमन ने उसका सिर काट दिया. धोखे सें महावीर एकलव्य का अंगूठा काटने वाला अंत में अपना सिर कटवा का कुत्ते की मौत मारा गया.

भारत की ब्राह्मणिक सरकार ऐसे धूर्त के नाम पर उत्तम अध्यापक को "द्रोणाचार्य पुरुस्कार" देती है. यह वास्तव में शर्म की बात है! ऐसे धूर्तो के नाम पर तो मूत्रदान बनने चाहिएं ताकि सबको सबक मिले कि अपने विद्यार्थी सें धोखा करने वाले अध्यापक का नाम केवल मूत्र त्याग करने वाले पात्र के योग्य ही होता है.

दम : ब्राह्मणिक आर्य धर्म का एक और महाकर्णधार ऋषि. अब दम क्योंकि ब्राह्मण ऋषि था तो उसे भी अपना गोधर्म निभाने का अधिकार था. महाभारत में भी लिखा है कि ब्राह्मण–ऋषि दम नित्य सनातन धर्म का पालन करता हुआ वन में रहता था. एक दिन कोई स्त्री हाथ नहीं लगी तो धर्म निभाने की समस्या आन खड़ी हुई. या हो सकता है रोज रोज स्त्रियों सें धर्म निभाते मन उब गया हो. अतः उसने हिरणी सें अपना ब्राह्मणिक धर्म कार्य शुरु कर दिया. तभी उधर सें पाण्डू आ निकला. उसने हिरणी के तीर मार दिया. ऋषि का काम अधूरा रह गया. पाण्डू सें महापाप हो गया. उसने एक ब्राह्मण ऋषि के ''काम'' में बाधा डाल दी थी. अतः दम ने उसे श्राप दे दिया कि क्योंकि उसने उसके संभोग में विघ्न डाला है अतः वह भी भविष्य में किसी सें संभोग नहीं कर पाएगा. अगर करेगा तो मरेगा. पाण्डू ने बरसों अपने पर काबू रखा लेकिन एक दिन उसमें धर्म की लहर प्रबल हो उठी. वह कुन्ती सें समागम करने लगा और मर गया.

बहुत ग्लानि होती है जब मंच पर खड़ा होकर कोई यह बोलता है कि भारत ऋषियों की भूमि है और हम उनके वंशज हैं. क्या हम भारतीय ऐसे लोगों के वंशज हैं?

गालव : ब्राह्मण–धर्म के महानतम ऋषिओं में सें एक. इसने वो कारनामे किए कि रन्डी बाजार का दल्ला भी शरमा जाए लेकिन इतना कुछ करके भी वह सन्त है ब्राह्मण–धर्म का महारिषी! कथा है कि पांडवों का आदि पुरुष ययाति था. उसे एक दिन "ब्रह्म ज्ञान" प्राप्त करने की धुन सवार हुई. ब्रह्मज्ञानी की तलाश शुरू हुई. पता लगा कि गालव नामक ऋषि ब्रह्मज्ञानी है. तलाश करने पर कोढ़ की खुजली सें पीड़ित गालव ऋषि एक बैलगाड़ी के नीचे छिपा मिला.

जैसे आजकल बड़े संस्थानों वाले उच्च शिक्षा के लिए बड़ी फीस लेते हैं वैसे ही ब्राह्मणिक सत्ययुग में बड़े ऋषि बड़ी बड़ी फीसें लेते थे. अत राजा अपने साथ बहुत सी बैलगाड़ियां धन की भर कर ले गया. लेकिन ब्राह्मण

ऋषि की फीस पूरी नहीं हुई. अंत में ब्रह्मज्ञानी ऋषि राजा की लड़की माधवी तथा सारा धन लेकर राजा को शिक्षा देने पर राजी हो गया.

उसने जो ब्रह्मज्ञान दिया उसे सुन कर प्राईमरी स्कूल का बच्चा भी मूंह बिचका लेगा. ऋषि बोला ब्रह्मज्ञान यह है कि वायु ही सबसें महान है. सूरज चांद तारे सारे वायु में तैरते हैं तथा इसी में उदय और अस्त होते हैं. आदमी हवा सें ही जीता है तथा हवा में ही मर जाता है.

राजा माधवी को उस ऋषि के पास छोड़ गया. अपनी फीस वसूलने के लिए उस ब्राह्मण ऋषि ने उस मासूम लड़की की दल्लागिरी शुरू कर दी. उसने उसे बारी बारी सें तीन राजाओं : हर्यश्य, दिवोदास तथा उशीनर के यहां रखैल बनाया. बदले में उस ब्राह्मण ऋषि ने हरेक राजा सें 200 घोड़े लिए. सभी राजाओं ने उस लड़की को भोगा और पुत्र पैदा कर लिये. वह माँ बनने के बावजूद खाली हाथ अगले ग्राहक को सौंपी जाती रही.

ब्राह्मणधर्म का कथाकार बेहद बेशर्मी सें लिखता है कि हर समागम के बाद वह लड़की फिर सें "कुंआरी" बन जाती थी. जब गालव के गुरू विश्वामित्र को इस बात का पता चला तो उसने गुरू दक्षिणा में उस लड़की को प्राप्त कर लिया. (संस्कृति कोष :गालव) उसने कब तक उस अक्षत कुंआरी को भोगा, पता नहीं.

ऐसी कथा पढ़ कर बाबा साहिब के वचन याद हो आते हैं कि अगर हिन्दू अपने धर्मग्रन्थ पढ़ लें तो वे स्वयं इनके आग लगा देंगे!

<u>**गांधी**</u> : ब्राह्मण–धर्म का आधुनिक ऋषि मोहन दास करम चन्द गांधी हुआ. उसने लगभग वे सभी कार्य किये जो प्राचीन काल में ब्राह्मण ऋषि किया करते थे. राम की तरह जोड़ तोड़ करके उसने नेहरू को प्रधान मन्त्री बना दिया. बदले में नेहरू ने गांधी को बापू बना दिया. कोई उसे माने या न माने लेकिन सरकारी तन्त्र पर प्रचार कर करके यह बात फैला दी कि वह बापू है.

हिटलर ने कहा था कि अगर एक झूठ को सौ बार सत्य कह कर प्रचार कर दो तो लोग उसे सचमुच सत्य मान बैठते हैं. कुछ लोगों को गांधी के बारे में भी कुछ ऐसा ही भ्रम हो रहा है. शूरी जैसे लोगों को यह भ्रम हो जाता है कि लोग सचमुच गांधी को अपना बापू मानने लग गए हैं. लेकिन सच्चाई यही है कि गांधी आज भी सरकारी बापू है. अगर आज सरकार उसका प्रचार बंद कर दे तो कल क्या आज शाम तक कोई उसका नाम लेवा भी नहीं होगा. हर साल करोड़ों रूपए उसके प्रचार पर खर्च किए जाते हैं लेकिन आज भी सरकारी अनुष्ठानों के अतिरिक्त कोई उसका जन्मदिन या मरण दिन याद नहीं रखता. पब्लिक का एक भी आदमी उसके जन्मदिन या मरण दिन के कार्यकर्म में शामिल नहीं होता. शूरी जैसे लोगों को यही दुख खाए जा रहा है. उसका दुख और बढ़ जाता है जब वे यह देखते हैं कि बिना सरकारी तामझाम के भी बाबा साहिब को मानने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है. आज भारत ही नहीं विदेशों में भी ऐसे असंख्य घर हैं जहां 14 अप्रैल को दीप जलाए जाते हैं और ऐसे हजारों नर नारियां हैं जो 6 दिसम्बर को उनके परिनिर्वाण को व्रत रख कर उन्हें श्रद्धा सुमन भेंट करते हैं. विजयदशमी के दिन हर साल लाखों लोग बिना सरकारी मदद के नागपुर की धर्म परिवर्तन स्थली पर माथा टेकने जाते हैं.

उसे कांग्रेसी बापू कहते हैं. असल में गांधी सचमुच आज के लीडरों का बाप ही है. उसी ने राजनीति में धोखाधड़ी शुरू की. कथनी और करनी में अंतर करने की बात सिखाई. वह लोगों सें कहता रहा कि पाकिस्तान उसकी लाश पर बनेगा लेकिन अंदरखाते नेहरू को कटे फटे भारत का प्रधान मन्त्री बनाने की साजिश करता रहा. जैसे ही सौदा पटा, गांधी न केवल भारत के टुकड़े करने को राजी हो गया बल्कि पाकिस्तान को करोड़ों रूपए नकद देना भी मान गया. लाशें गिरी तो मात्र पंजाबियों की! इज्जत लुटी तो मात्र अबलाओं की!! 1947 में जो मार काट मची उसका एकमात्र कारण गांधी का यह ऐलान था कि भारत का बंटवारा नहीं होगा. भोले भाले लोगों ने उसका भरोसा कर लिया और अपना सब कुछ लुटवा बैठे!

उसका सबसें महान कार्य था एक ब्राह्मण को भारत का प्रधान मन्त्री बनवाना. बदले में उस ब्राह्मण नेहरू ने गांधी को भारत का बापू घोषित कर दिया. भारत की आजादी गांधी के नाम कर दी. गांधी ने जो भूख हड़ताल और अहिंसा का दिखावा किया उससें कोई अपना मकान भी किरायेदार सें खाली नहीं करवा सकता. विदेशियों सें देश खाली करवाना तो बहुत दूर की बात है.

गांधी का बहुचर्चित असहयोग आंदोलन वास्तव में नामधारियों की देन है जिन्होंने सन् 1857 के गदर सें पहले अग्रेजों के विरूद्ध असहयोग आंदोलन चलाया था. (धरती है बलिदान की–31) गांधी ने यह आंदोलन अपने नाम कर लिया. ऐसे ही जापान के प्राचीन बौद्ध मन्दिर पर लगी तीन बन्दरों की मूर्तियों को गांधी ने अपने नाम सें प्रचारित कर दिया. वे मूर्तियां वहां तब लगाई गई थी जब गांधी पैदा भी नहीं हुआ था लेकिन प्रचार यह कर दिया गया कि गांधी ने कहा है कि बुरा न देखो, बुरा न कहो, बुरा न सुनो. (डिस्कवरी 27.01.2000 रात 9.45)

24 मार्च को भारत माँ के तीन सपूतों भगत सिंह राजगुरू और सहदेव को फांसी दी गई और 26 मार्च को गांधी ने कराची में कांग्रेसियों ने गांधी की छत्रछाया में अधिवेशन करके जश्न मनाया. मिठाईयां बांटी गईं कि

उनके रास्ते का सबसें बड़ा पत्थर हटा दिया गया है. बहाना किया गया गांधी–इरविन पैक्ट का. भारत माँ के सपूतों की चिताएं अभी ठण्डी भी नहीं हुई थीं कि गांधी और कांग्रेसियों ने मिठाईयां भी खा लीं. **यह वह समय था जब भारत के गांव में अगर बूढ़ा भी मर जाता था तो पूरे गांव में चूल्हा नहीं जलता था. और गांधी और उसके गुर्गों ने भारत माँ के सपूतों की जलती चिताओं पर मिठाईयां खाईं.**

हर जगह शोर मचाया जाता है कि गांधी ने 1942 में अँग्रेजों के विरूद्ध ''असहयोग'' आंदोलन चलाया. उस तथाकथित आंदोलन के बारे में सबसें पहला प्रश्न तो यही उठता है कि 1942 में ही ऐसा क्या हुआ कि गांधी ने अपने आकाओं को भारत छोड़ने के लिए कहना पड़ा. दूसरा प्रश्न यह उठता है कि गांधी ने यह तथाकथित असहयोग का आंदोलन कुछ ही समय में वापिस भी क्यों ले लिया?

गांधी सन 1914 में भारत की राजनीति में आया. यह बहुत अजीब सी बात है कि 28 साल तक गांधी ने कभी भी अँग्रेजों सें भारत छोड़ने की माँग नहीं की. जबकि इस दौरान बंगाल का विभाजन किया गया. सैंकड़ों लोगों की जाने गईं. 1919 में अँग्रेजों ने हजारों भारतीयों को जलियांवाला बाग में गोलियों सें भून डाला गया. सरदार भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस जैसे भारत माँ के सपूतों को शहीद किया गया. लेकिन गांधी ने एक बार भी अंग्रेजों सें भारत छोड़ने को नहीं कहा. **लेकिन 1942 में बाबा साहिब अम्बेडकर को गर्वनर जनरल काँउसिल का सदस्य बनाया गया. विदेशी यवन, पुर्तगाली, अंग्रेज और मुगल सदियों सें भारत पर राज करते रहे मगर गांधी या उसके पूर्वज 2000 साल तक उनके विरूद्ध नहीं बोले लेकिन एक शूद्र (बाबा साहिब) को गद्दी पर बैठाते ही गांधी बोल पड़ा हे आकाओ, भारत छोड़ो. दलित समाज के विरुद्ध गांधी की दुश्मनी की इससें बड़ी उदाहरण और क्या हो सकती है.**

दूसरा प्रश्न है तथाकथित असहयोग आंदोलन वापिस लेने का बहाना क्यों किया गया. गांधी ने अपने आकाओं को नाराज तो कर दिया था मगर आंदोलन वापिस लेने का बहाना ढूंढ रहा था. तभी समाचार मिला कि चौरा चोरी में दो चार अँग्रेज मारे गए. गांधी ने कहा वह हिंसा करके आजादी नहीं चाहता. सो उसने अपने आकाओं के विरुद्ध उठाया गया कदम वापिस ले लिया.

सरदार भगत सिंह, राजगुरू, सहदेव को जब फांसी दी गई तब भी गांधी बोला इन्होंने हिंसा का रास्ता चुना है इसलिए इनको फांसी होनी ही चाहिए. **लेकिन यह वही गांधी था जिसने प्रथम विश्व युद्ध के समय गांव गांव घर घर जाकर लोगों को अंग्रेजी सेना में भर्ती करवाने की दलाली की थी.** हजारों लोगों ने उसके कहने में आकर अंग्रेजों के लिए अपनी जान गंवाई. पूछा जा सकता है कि विदेशियों को देश सें खदेड़ने के लिए अपनी जान की बाजी लगाना अगर हिंसा है तो क्या युद्ध के समय विदेशी सेना में भर्ती होकर अपने ही लोगों को मारना हिंसा नहीं है. अगर भारतीय तो अंग्रेज मालिकों के लिए मारे जाएं तो गांधी के लिए "अहिंसा" है लेकिन अगर मासूम भारतीयों के अंग्रेज हत्यारे का वध कर दिया जाए तो गांधी को हिंसा नजर आता है.

गांधी ने अहिंसा के दोगले सिद्धांत की तरह ही अछूतोद्धार की दोगली बात भी की. वह बोला अगले जन्म में भंगी के घर पैदा होना चाहूंगा. उससें पूछा जा सकता था कि इस जन्म में भंगी का काम करने में उसे क्या समस्या थी. लेकिन असल बात यह थी कि वह अपने लोगों को बताना चाह रहा था कि जिस आदमी ने जिस जाति में जन्म ले लिया उम्र भर वह वही काम करे. भंगी अगर गन्दगी उठाने का काम छोड़ना चाहें तो अगले जन्म में किसी और जाति में पैदा हों. गांधी के अछूतोद्धार के सिद्धांत के अनुसार जो "भंगी" है वह मरने तक भंगियों वाले ही काम करे.वह बनिये ब्राह्मण वाले काम करने की बिल्कुल न सोचे. अगर गांधी जातिवाद समाप्त करना चाहता तो इसी जन्म में झाड़ू उठा कर सड़क पर आ जाता. लेकिन वह तो बापू था उन नेताओं का जो कहते कुछ और तथा करते कुछ और हैं!

हिटलर और गांधी में कुछ समानताएं भी हैं जैसे कि दोनों ने अपने देश की जनता को बेवकूफ बनाया. दोनों ने ऐसे काम किए जिसकी वजह सें लाखों लोगों की जानें गईं, घर सें बेघर हुए और दो पड़ोसी देशों में कभी न समाप्त होने वाला झगड़ा दे दिया. हिटलर ने गैस चैम्बरों में लोग मरवाए तो गांधी ने भारत के दो टुकड़े करके लाखों लोग मरवा दिए. गांधी अंतिम समय तक लोगों को बहलाता रहा कि पाकिस्तान उसकी लाश पर बनेगा. उसकी तथाकथित सच्चाई के ढोल रोज बजाये जाते थे. सो लोग समझे कि भारत का बंटवारा नहीं होगा. इसलिए वे पाकिस्तान में ही बैठे रहे. बंटवारा हो गया लोग मारे गए. इस गांधी की वजह सें सिखों हिन्दुओं और मुस्लमानों के दूधमूँहे बच्चों को भालों में पिरोया गया. आज भी पँजाब में ऐसे बुर्जुग मिल जाते हैं जो आपबीती बताते हैं कि किस तरह उनके बच्चों को हवा में उछाला गया और नीचे भाले खड़े कर दिए गए!! उनकी लाशों पर गांधी ने घड़ियाली आँसू बहाये.

गांधी और महात्मा : कहते हैं गांधी को महात्मा सबसें पहले रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा. जी हां, यह वही टैगोर है जिसने "जन गण मन अधिनायक .. भारत भाग्य विधाता" लिख कर अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम को भारत के जन, गण, मन का अधिनायक बताया, उसे भारत भाग्य विधाता बताया. उसे भारत के सभी प्रांतों का, सभी नदियों का, सभी पर्वतों का मालिक बताया. आजादी के बाद इस गाने को भारत का राष्ट्रीय गीत बना दिया गया.

जार्ज पंजम को तो मरे जमाना हो गया पर हम भारतीय आज भी नित्य उसकी स्तुति गाने को मजबूर हैं. गांधी को महात्मा क्यों कहा गया इसका सटीक उत्तर देते हुए माननीय वी टी राजशेखर कहते हैं गांधी को महात्मा की उपाधि ब्राह्मणों ने दी थी क्योंकि गांधी ने भारत में अंग्रेजी शासन को हटा कर ब्राह्मणिक शासन स्थापित कर दिया था. (गोडसे ने गांधी क्यों मारा 15) उन्होंने सही कहा है कि गांधी बीसवीं सदी का सबसें बड़ा मक्कार और चालबाज था जिसने मरणासन्न ब्राह्मणवाद को पुनः और अधिक खतरनाक ढंग सें भारत पर लाद दिया. (22)

बाबा साहिब ने गांधी के बारे में कहा कि अगर किसी आदमी के बगल में छुरी हो तथा मूंह में भगवान का नाम हो अगर ऐसे आदमी को महात्मा कहा जा सकता है तो गांधी सचमुच महात्मा है.

गांधी की वास्तविकता, उसी की आत्मकथा की जुबानी, इस प्रकार सें हैं:

1. उसका बाप काठियावाड़ रियासत का दीवान था. अतः दसवीं में फेल होने पर भी उसे पास कर दिया गया.
2. जब वह इंगलैंड पढ़ने के लिए गया तो वहां उसने पूरी ऐशपरस्ती की. रंडीबाजी की, दारू मीट का मजा लिया. बैरस्टरी उसने कभी पास ही नहीं की.
3. अनपढ़ गांधी एक भी किताब नहीं लिख पाया. यहां तक कि उसकी तथाकथित आत्मकथा भी किसी और द्वारा उसके भाषणों आदि का संकलन मात्र है.
4. अफरीका में वह हब्शियों के पक्ष में नहीं लड़ा बल्कि अग्रेजों को यह समझाता रहा कि आर्य और अंग्रेजों में कोई भिन्नता नहीं है. इसलिए अंग्रेजों को हिन्दूओं सें दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए.
5. उसने अपनी सारी जिन्दगी में कभी भी अंग्रेजों सें पूर्ण आजादी नहीं मांगी. वह केवल अंग्रेज राजा के अधीन भारत की सत्ता कांग्रेसियों को दिलवाना चाहता था.
6. धोखाधड़ी और मक्कारी उसकी रग रग में शामिल थी. उसने बातें गरीबी की कीं. एक धोती में रहता था मगर सोता था बिड़ला की कोठी में मखमली गद्दों पर. गीत गाता था ईश्वर अल्लाह तेरे नाम लेकिन मानता था पतित पावन सीता राम को. उसी ने अन्दरखाते कायदे आजम जिन्नाह का विरोध किया कि एक **मुस्लिम** को कांग्रेस का प्रधान नहीं बनाया जाना चाहिए. उसकी इसी करतूत की वजह सें उन्होंने अलग सें मुस्लिम लीग बनाई. गांधी द्वारा लगाई आग आखिर भारत के दो टुकड़े करके भी नहीं बुझ पाई.
7. उसने करोड़ों रुपए दलित उद्धार के नाम पर पब्लिक व सरकार सें प्राप्त किए मगर कुछ हजार रुपए दलितों के लिए जलसे करने पर खर्च किए तथा बाकी सारी रकम डकार गया. उसी के सिखाए गुरु मन्त्र के कारण ही आज उसे बापू कहने वाले लीडर जनता सें चंदा लेकर तथा सरकार सें ग्रांट लेकर डकार जाते हैं.
8. गांधी की एक सब सें बड़ी स्टंटबाजी यह थी कि वह रेल में थर्ड क्लास के डिब्बे में सफर करता था. मगर सच्चाई यह है कि पूरा डिब्बा गांधी और उसके चेले चेलियों द्वारा काबिज होता था. उसमें जनता का एक आदमी भी घुसने नहीं दिया जाता था. पूरे डिब्बे में खादी के गद्दे बिछे होते थे. अगर इस तरह सें सफर करना हो तो भारत की 99 प्रतिशत जनता सवारी गाड़ी तो क्या मालगाड़ी के डिब्बों में गद्दे बिछा कर सफर करने को तैयार मिलेगी.
9. गांधि का गोधर्मी कारनामा भी किसी सें कम नहीं है. अपने पूर्वज ऋषियों के पदचिन्हों पर चलते हुए उसने भी कई प्रकार के एक्सपैरीमैंट यानि तजुर्बे किए. इंगलैण्ड जाकर उसने रण्डीबाजी की. दक्षिण अफ्रीका में उसने क्या गुल खिलाए, उसने लोगों को नहीं बताया. लेकिन भारत आकर बुढया जाने पर उसने एक नया तजुर्बा करना शुरू किया. वह बड़े बड़े लीडरों की बीवियों बहनों को अर्धनग्न करके उनके साथ नंगा होकर सोता था ताकि यह देखा जा सके कि क्या वे दोनों वासना पर काबू रख सके हैं.

गांधी की आत्मकथा पता नहीं सच है कि झूठ है लेकिन जिस किसी ने भी लिखी उसने गांधी के पूरे जीवन का निचोड़ उसकी आत्मकथा के पहले पन्ने पर एक श्लोक के रूप में दे दिया है. इस श्लोक में गांधी ने अपना चरित्र इस प्रकार सें बयान किया है:

मो सम कौन कुटिल खल कामी!
जिन तन दियो ताहि बिसरायो!!
ऐसो निपट हरामी!!

अर्थात गांधी के जैसा कौन मक्कार, बुरा और वासनामयी होगा कि जिसने उसे जन्म दिया उन्हें ही दुत्कार दिया वह ऐसा निपट हरामी है.

समय के साथ लोगों में गांधी की कलई खुल रही है. शूरी जैसे लोग कितना भी हो हल्ला कर लें गांधी ज्यादा दिनों का मेहमान नहीं है. झूठ आखिर कितने दिनों तक चल पाएगा. एक न एक दिन तो उसे मौत आनी ही है. सभी जानते हैं कि सरदार भगत सिंह व नेता जी सुभाष चन्द्र सरीखे भारत माँ के सपूतों को मरवाने में

गांधी का कितना योगदान था. इसी लिए पंजाब हरियाणा के किसी भी गांव या शहर में किसी युवक के सामने गांधी का नाम लेने पर वह घृणा सें मूंह फेर लेता है. जैसे जैसे सच्चाई उजागर हो रही है उसके नाम पर थूकने वाले भी बढ़ते जा रहे हैं.

मनु : मनु ब्राह्मणवाद का प्रमुख है. उसने ही जाति, छूआछात के नियमों को कलमबद्ध किया. इन रिवाजों प्रथाओं को ईश्वरीय कानून का दर्जा दिया. अगर मनु ने मनु–स्मृति की रचना नहीं की होती तो आज भारतीय समाज जाति पाति, छूआछात के घिनौने जाल में नहीं फंसा होता. भारत आज भी विश्व का सर्वश्रेष्ठ देश होता.

ब्रह्मा ने अपनी बेटी शतरूपा सें बलात्कार कर मनु को पैदा किया जैसे मनु का बाप लम्पट था वैसा ही वह भी था. मनु की एक बहन थी नाम था श्रद्धा. जब वह जवान हुई तो मनु ने उसके साथ ब्राह्मण–धर्म निभा दिया. ब्राह्मणों के भगवान मनु ने अपनी सगी बहन के साथ ही संभोग किया. बहन के बाद बारी आई बेटी की. मनु के एक बेटी थी. इला नाम था उसका. जब वह भी जवान हुई तो मनु की उस पर नीयत खराब हो गई. मनु आर्य देव जो था आर्यपन तो जागना ही था. इला ने अपनी भूआ का हाल देख लिया था. अतः वह भेश बदल कर घर सें भाग गई वर्ना जैसे उसके बाप और दादा ने अपनी बेटी बहन को भोगा था वह भी नहीं बच पाती.

पराशर : उसे कहीं पर तो वशिष्ठ का बेटा बताया जाता है तथा कहीं पोता बताया जाता है. (संस्कृति कोशः पराशर) इस बात का सीधा सा अर्थ यह हुआ कि उसके जन्म में भी घालमेल है. हो सकता है ब्राह्मण ऋषि वशिष्ठ ने अपनी पुत्रवधु पर नीयत डिगा ली हो और उसी सें पराशर को पैदा कर दिया हो. अतः पुत्रवधु सें पैदा होने के कारण उसका पोता हुआ तथा उसके द्वारा पैदा करने सें उसका बेटा हुआ.

पराशर ब्राह्मण ऋषि था. अतः उसे स्त्री सें गोधर्म करने का गुण विरासत में मिला था. इसलिए उसने सब के सामने सत्यवती सें बलात्कार करने में जरा भी हिचक या शर्म महसूस नहीं हुई. वैसे भी उस समय आर्यों में सब के सामने खुले आम समागम करने में कोई अनैतिकता महसूस नहीं होती थी. (राज. 44) यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे आज कल पश्चिम में स्त्री–पुरुष में चुंबन को अनैतिक नहीं समझा जाता.

कथा के अनुसार पराशर ने नदी पार जाना था. सत्यवती के मल्लाह पिता ने उससें ऋषि को नदी पार कराने के कहा. सत्यवती जैसे ही नाव लेकर नदी के बीच में पहुंची पराशर के अंदर का शैतान यानि ऋषिपना जाग उठा. अकेली असहाय कन्या बहुत रोई गिड़गिड़ाई मगर उस दरिंदे ने एक नहीं सुनी और उसके साथ बीच नदी के सबके सामने बलात्कार किया. या तो उस समय ऋषियों का दबदबा इतना होता था कि कोई उनके जुल्मों के विरुद्ध बोलने की हिम्मत ही नहीं कर पाता था या फिर औरत की औकात ही इतनी मानी जाती थी कि कोई भी उसे कहीं भी दबोच सकता था. हमारे विचार में दोनों ही बाते सही हैं.

उस बलात्कार के कारण वह व्यास की माँ बनी. यह बात स्वयं सत्यवती ने अपने सौतेले बेटे भीष्म को बताई. जबकि वह भीष्म के पिता की पत्नि थी. अतः रिश्ते में उसकी माँ, चाहे सौतेली ही सही, लगती थी. सत्यवती ने यह आपबीती इसलिए सुनाई थी क्योंकि भीष्म ने स्त्री सें समागम न करने की कसम खा रखी थी और सत्यवती यह चाहती थी कि भीष्म उसकी पुत्रवधुओं सें नियोग करके पुत्र पैदा कर दे. वह उसे समझा रही थी कि जैसे कुआंरेपन में पराशर सें समागम करके तथा व्यास पैदा करके भी वह कुंआरी ही रही थी वैसे भीष्म भी उसकी पुत्रवधुओं सें समागम करके भी वह कुआंरा ही रहेगा.

पुरुरवा : वह क्षत्रिय चन्द्रवंश का प्रवर्तक था. इसका खानदान भी कुछ कम नहीं है. इसका बाप सोम या चन्द्रमा का पुत्र बुध है. बुध का बाप तो चन्द्रमा है मगर उसके माँ का पति बृहस्पति है. बृहस्पति की पत्नि तारा को चन्द्रमा भगा ले गया तथा उसके एक पुत्र बुध पैदा कर दिया. पंजाबी भाषा में बुध बेरड़ा (अनेक बापों का पुत्र) था.

उधर मनु की बेटी इला अपने बाप की वासना सें बचने के लिए घर सें भाग गई. वह बुध के हत्थे चढ़ गई और पुरुरवा का जन्म हो गया. जैसे उसका खानदान था वैसा ही पुरुरवा था. कहावत चरितार्थ हुई आक के आक ही लगेगे. एक दिन वेश्या उर्वशी को देखा और उसे घर ले आया. उसने शर्त रखी कि जब तक वह उसकी दो भेड़ों का खयाल रखेगा वह उसके साथ रहेगी.

जब वेश्या ही स्वर्ग में न रही तो देवों का तो जीना ही बेकार हो गया. वे एक दिन आए और उसकी भेड़ें खोल ले गए. सो वेश्या उर्वशी फिर सें स्वर्ग की रौनक बढ़ाने स्वर्ग में चली गई. लेकिन बीच बीच में पुरुरवा सें मिलने आती रही. इस तरह उस वेश्या सें पुरुरवा को छ पुत्र मिले. (संस्कृति कोश) इनका बाप कौन था देव या पुरुरवा शायद भगवान भी नहीं जान पाया होगा.

चन्द्रवंशी क्षत्रियों को याद रखना चाहिए कि उनकी रगों में वेश्या और उसके यारों का खून भी दौड़ रहा है.

संकर : ब्राह्मणिक लेखक उसे संकराचारय भी बताते हैं लेकिन उसने आचार्य यानि मार्गदर्शक वाला कोई काम नहीं किया. अतः वह आचार्य कहलाने योग्य बिलकुल भी नहीं है. उसने तो जालसाजी करके लोगों को गुमराह ही किया है. इसलिए हमने उसके नाम के साथ सें आचार्य शब्द अलग कर दिया है.

ब्राह्मणवाद को जिंदा रखने में गीता के बाद सबसें बड़ा हाथ संकर का है और असल में देखा जाए तो गीता को धर्म की किताब बनाने में भी उसी का हाथ है. उसके गीता भाष्य सें पहले कोई गीता को जानता तक न था. उसके चार काम ब्राह्मणवाद को हिन्दूधर्म के रूप में जिन्दा करने में सबसें ज्यादा कारगर साबित हुए:

1. सबसें पहला काम तो उसने यह किया कि मृतप्रायः ब्राह्मणवाद को हिन्दूधर्म के रूप में पुनर्जागृत किया. पुराने ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐयाशी और मूर्खता के सिवाय कोई बात दर्ज नहीं है. संकर ने सब बड़े ब्राह्मणगन्थों पर अपनी टिप्पणियां यानि भाष्य लिखे. उसने अपने भाष्यों में हर ब्राह्मणग्रन्थ का मनमाने ढंग सें अर्थ किया ताकि उन्हें जन लुभावना बनाया जा सके. ब्राह्मणों के सारे ग्रन्थ उनकी कूट भाषा संस्कृत में लिखे गए हैं. अतः संकर को उनके उल्टे सीधे अर्थ करने में कोई दिक्कत नहीं आई. ब्राह्मणों को अपनी कमाई सें मतलब था सो सारे के सारे ब्राह्मण उसके पीछे लग गए. **बौद्ध भिक्षु जनता में सद्धर्म का प्रचार करते थे. उसने सुन्धवा की सेना लेकर उनका कत्लेआम करवा दिया. अतः उसके सामने बोलने वाला कोई बचा नहीं.**
2. दूसरा काम उसने यह किया कि उसने सब ब्राह्मणों को एक सूत्र में पिरो दिया. पहले ब्राह्मणधर्म में माफिया दलों की तरह गुटबाजी थी. एक गुट दूसरे के साथ वैसे ही लड़ता मरता था जैसे अलग अलग माफिया सरगना आपस में लड़ते हैं. परशु और अर्जुन की लड़ाई विश्वामित्र और वशिष्ठ की लड़ाई उनके माफिया गिरोहों के ही संघर्ष की कहानियां हैं. ब्रह्मा विष्णु और शिव का सर्वोच्चता के लिए संघर्ष कहानी मात्र नहीं है. जैसे आज के समय में कुछ भाई लोग विदेशों में बैठ कर भारत में अपने गिरोह संचालित करते हैं वैसे ही ये लोग अपने अपने अड्डों पर बैठ कर अपना गिरोह चलाते थे. स्वयं ब्राह्मणग्रन्थ शैव और वैष्णव गिरोहों के खूनी संघर्ष के जीते जागते सबूत हैं. संकर ने इन गिरोहों में शांति करवाई तथा उन्हें एक दल में शामिल किया जिसे आज हिन्दूधर्म कहा जाता है.
3. तीसरा काम उसने यह किया कि ब्राह्मणवाद में "ज्ञान" घुसेड़ा. गीता और उपनिषदों को ज्ञान की किताबें कह कर प्रचारित किया गया. वेदान्त नाम का नया शोशा छोड़ा गया. **गीता के उस भाषण को जिसमें एक जुआरी को अपने धन के लिए अपने भाईयों तक को मार देने के लिए उकसाया गया था, अलौकिक ज्ञान बता कर प्रचारित किया गया. अर्जुन के सिवाय दूसरी कोई उदाहरण नहीं मिलती जिसने गीता के अपदेश को मानते हुए धन के लिए अपने भाईयों को ही मार दिया हो, फिर भी गीता को भगवान को ज्ञान और पता नहीं क्या कुछ बता कर प्रचारित किया गया.**
4. जैसे गांधी ने राजनीति में धोखाधड़ी करनी सिखाई, नेताओं को "कहना कुछ करना कुछ" का मन्त्र दिया वैसे ही संकर ने धर्म में धोखाधड़ी शुरू की. उसने भी ब्राह्मणों को कहना कुछ और करना कुछ का मन्त्र दिया. उदाहरणतः उसका सबसें बड़ा सिद्धांत है कि उसने लोगों सें कहा कि वे कहें : "अहमस्मि ब्रह्म" यानि मैं ब्रह्म हूँ. इसका अर्थ उसने यह किया कि हर इंसान ब्रह्म यानि भगवान का ही हिस्सा है. हर इंसान में जो आत्मा है वह परमात्मा का ही हिस्सा है. इस प्रकार सब इंसान एक ही भगवान के अंश हैं. **लेकिन जैसे ही एक दलित ने यह शब्द उच्चारित किए तो वह बौखला गया. तब वह बोला कि शूद्र और अछूत ब्राह्मणों के बराबर नहीं हैं. जिस प्रकार गांधी का हरिजन शब्द अछूतों को धोखा देने के लिए घड़ा गया था वैसे ही संकर का अहमस्मि ब्रह्म का नारा लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए बनाया गया था. उसने छूआछात को अमिट रखा मगर सबको ब्रह्म बता दिया.** इस सच्चाई को कट्टर ब्राह्मणवादी लेखक और पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन को भी स्वीकार करना पड़ा. (धर्म और समाज 138)

इस प्रकार उसने न केवल ब्राह्मण ग्रन्थों के मनमाने अर्थ किये बल्कि ब्राह्मणों के अंदर जो खूनी गुटबाजी हो रही थी उसे भी समाप्त करवा दिया वर्ना शैव और वैशणव रोजाना एक दूसरे को मरने मारने में ही जुटे रहते थे. विष्णु और शिव आपस में झगड़ते रहते थे कि कौन बड़ा है. राम कहता रहता था 'सिव पूजक, मम द्रोही.' अगर संकर नहीं होता तो ब्राह्मण कभी के आपस में ही लड़ कर मर मरा लिए होते.

उसने ब्राह्मणों की तो सुलह करवा दी लेकिन महिलाओं, विशेषतः दलित महिलाओं के मामले में वह भी कम नहीं रहा. उसने सभी ब्राह्मण स्त्रियों को आदेश दिया कि वे घर के अंदर ही रहें. अगर उन्हें बाहर जाना हो तो सफेद वस्त्र पहन कर घर सें बाहर निकलें और नौकरानी को साथ लेकर ही जायें. रास्ते में किसी पुरुष की ओर न देखें. **लेकिन दलित महिलाओं के लिये आदेश दिया कि वे घर सें बाहर जाते समय कमर सें ऊपर वस्त्र न पहनें. बूढ़ी हो या जवान अपने वक्ष को बिना ढके घर सें बाहर रहे!** (सीता 4.5) **ऐसा था संकर द बेरड़ा.**

ऋश्यश्रृंग : ऋश्यश्रृंग के बारे में विस्तार सें चर्चा "राम जन्म वृतांत" में की गई है. महाभारत (वन पर्व–110) में कथा है कि उसका बाप विभांडक नामक ऋषि था. विभांडक क्योंकि ऋषि था अतः उसने भी वह सारी करतूतें की जो ब्राह्मण ऋषि करते आये थे. उसने अपना ऋषिपन एक हिरणी के साथ मैथुन करके पूरा किया. ब्राह्मण ऋषि के समागम सें हिरणी गर्भवती हो गई और उसने एक लड़के को जन्म दिया जिसके सिर पर हिरण जैसा एक सींग था. इसलिए उसका नाम ऋश्यश्रृंग रखा गया.

राम कथा को झूठ साबित करने के लिए इससें बड़ा सबूत और क्या होगा कि राम का औरस पिता ही हिरणी के गर्भ सें पैदा हुआ बताते हैं. हां, यह तो माना जा सकता है कि ब्राह्मण ऋषि विभांडक ने हिरणी सें कुकर्म किया हो लेकिन हिरणी के गर्भ सें मानव शिशु का जन्म सम्भव ही नहीं है. जब ऋष्यश्रृंग का जन्म ही संभव नहीं है तो राम का जन्म तो हो ही नहीं सकता.

जैसा कि आम ही होता रहता था ब्राह्मण ऋषि अप्सराओं यानि वेश्याओं के दीवाने होते थे. ऋश्यश्रृंग भी था. अतः जब दशरथ के भाई रोमपाद ने अपनी पालतु वेश्याएं भेजीं तो वह कुत्ते की तरह उनके पीछे पीछे रोमपाल के महल में आ गया. आते ही रोमपाद ने दशरथ की बेटी शांता उसे सौंप दी. अयोध्या गया तो चार रानियां मिल गईं. उसने जम कर अपना गोधर्म निभाया.

कुछ समय पहले दूरदर्शन पर एक नाटक आता था जिसमें एक अधेड़ उम्र का सेठ एक लड़की को शादी का झांसा देकर उससें सम्बंध बना लेता है. कुछ समय बाद उस आदमी के अन्जाने में उस लड़की की विधवा माँ सें भी सम्बंध हो जाते हैं. वे दोनों शादी का फैसला करते हैं. जब लड़की को इस बात का पता चलता है तो वह अपनी माँ सें कहती है कि माँ और बेटी कभी भी सौत नहीं बन सकतीं और वह आत्महत्या कर लेती है.

अगर रामायण की कहानी सें इस नाटक की तुलना करें तो ऋश्यश्रृंग ने उस सेठ वाला रोल निभाया. शांता ने लड़की वाला तो रानियों ने विधवा वाला रोल निभाया. लेकिन कितनी अजीब बात है कि कलियुग में तो उस लड़की ने ग्लानि सें आत्महत्या कर ली मगर सत्ययुग में माँ बेटी में सें किसी ने भी आत्महत्या करना तो दूर, किसी को भी शर्म नहीं आई.

हम भारतीय कभी भी ऐसे नीच प्राणियों के वंशज नहीं हो सकते.

वामदेव : यह गौतम ऋषि का बेटा बताया जाता है. उसके जन्म की कथा भी कम अजीब नहीं है. जब माँ के गर्भ में था तो उसने फैसला किया कि आम आदमी की तरह जन्म नहीं लेगा. उसने फैसला किया कि वह माँ का पेट फाड़ कर पैदा होगा. माँ ने इन्द्र और अदिति को बुला लिया. उन्होंने समझाया तब वह पक्षी बन कर पेट सें बाहर निकल आया. (संस्कृति कोष)

अक्सर पुराणों में ऐसे बकवास किस्से भरे पड़े हैं. लगता है पुराण बनाने वाले भांग खाकर लिखते थे. सो नशे के लोर में जो कुछ उन्हें दिखता था उसकी कहानी टेप देते थे. अगर वह पक्षी बन कर पेट के रास्ते बाहर आया तो पेट तो तब भी फटा ही होगा. हर जीवित प्राणी के जन्म लेने का मार्ग कुदरत द्वारा तय किया गया है. अगर वह नियम सही नहीं होता तब तो दुनिया चलती ही नहीं. अतः ऐसे किस्से पागलपन की निशानी हैं.

वैसे तो किस्सा है कि उसने इन्द्र को हरा दिया तथा उसे ऋषियों के हाथ बेच दिया. मगर एक दिन भूख सें तंग आकर कुत्ते की अंतड़ियां ही उबाल कर खा गया. (ऋ.4/18/13) बाकी ऋषि तो अपने अड्डों यानि आश्रमों में दारू मीट और सुन्दरियों का पूरा जखीरा रखते थे. इसके पास पता नहीं कैसे समाप्त हो गया. भरत तो जब राम को मिलने जंगल में जा रहा था तो रास्ते में भरद्वाज का अड्डा यानि आश्रम आया उसने तो हर आम व खास को न केवल मीट शराब ही परोसा बल्कि हरेक को आठ दस सुन्दरियां भी सप्लाई कर दीं. लोगों को ब्राह्मण ऋषि के अड्डे पर इतनी ऐश मिली कि कोई भी आगे राम के पास चलने को तैयार ही न हुआ. वामदेव के पास तंगी कैसे हुई, अनहोनी सी बात है! फिर वह तो जन्म लेने सें पहले ही पक्षी बनने की कला जानता था. गिद्ध बनके उड़ जाता कहीं न कहीं मुर्दार पड़ा उसे मिल ही जाता! अपना कुत्ता तो न मारना पड़ता!

ब्राह्मण तो सुबह सवेरे ही चिल्लाना शुरू कर देते हैं कि अगर मंदिर में चढावा चढाओ तो उनका भगवान अंधों को आंख, कोढी को कंचन सी काया मांओं को पुत्र और पता नहीं क्या कुछ देता है. तो ब्राह्मण ऋषि वामदेव क्यों भूख मरा वह तो ऋषि था भगवान का वी.आई.पी चेला.

उसने तो ब्राह्मण ऋषियों की नाक ही कटवा दी!

वशिष्ठ : राम का कुलगुरू था. राम उसके जन्म की कहानी लक्ष्मण को सुनाता है कि एक बार दो देव मित्र और वरूण झील के किनारे टहल रहे थे. तभी उनकी नजर झील में नहाती हुई वेश्या उर्वशी पर पड़ी. जैसा कि देवों, ऋषिओं के साथ होता है, वे दोनों भी वासना सें पीड़ित हो उठे. उनका वीर्य सख्लित हो गया. उन्हें और तो कुछ मिला नहीं, यज्ञ के एक कलश (घड़े) सें अपनी वासना शांत की और उसमें दोनों ने वीर्य निकाल दिया. उसी सें राम का कुलगुरू वशिष्ठ और अगस्त्य पैदा हो गए. वैसे तो ब्राह्मण ग्रन्थ देवों और ऋषियों को अमोघ वीर्यवान

बताते हैं लेकिन स्त्री देखते उनका वीर्य ऐसे सख्लित हो जाता था जैसे मीठी गोली मूंह में डालते ही शिशु की लार टपकने लगती है.

असल में यह इन ग्रन्थों की व्याख्या करने वालों की धूर्तता है जो वे ऐसी बातें करते हैं. वास्तव में ब्राह्मण ऋषि स्त्री योनि को ही यज्ञ वेदी समान मानते थे तथा यज्ञ और मैथुन को एक ही सिक्के के दो पहलू मानते थे. अतः मित्र और वरुण ने यज्ञ वेदी पर ही उस वेश्या सें समागम किया था जिससें राम का कुलगुरू वशिष्ठ और उसका जुड़वां भाई अगस्त्य पैदा हुए.

वशिष्ठ की एक बेटी थी शतरूपा. जब वह जवान हो गई तो एक दिन ब्राह्मण ऋषि ने उसके साथ बलात्कार करके अपने ब्राह्मण–धर्म का ऋषि होने का सबूत दे दिया. (हरि. 2) (राज.44,73) मित्रसह नामक राजा ने अपनी रानी वशिष्ठ को भेंट कर दी. वशिष्ठ ने उसके साथ ऐयाशी की. कहानी बनाई गई कि ब्राह्मण ऋषि को रानी भेंट करने के बदले में राजा स्वर्ग गया. (शांति.234)

राम के पूर्वज अयोध्या के राजा कल्माशपाद ने अपनी रानी वशिष्ठ के पास भेज कर गर्भवती करवाया. (राज.50) सोदास ने भी उससें अपनी रानी मदयंती का उससें नियोग करवा कर पुत्र पैदा किया. दशरथ को पता नहीं क्यों वशिष्ठ पसंद नहीं आया जो उसने ऋश्यश्रृंग को बुलवाया. लगता है बूढ़ा वशिष्ठ कौशल्या आदि रानियों को पसन्द नहीं आया. वशिष्ठ सें राम एवं भाई पैदा करवा लेता तो घर की बात घर में ही रह जाती.

<u>विश्वामित्र</u> : ब्राह्मणधर्म का पहला "असंतुष्ट नेता"! वह जन्म सें क्षत्रिय था. उसने ब्राह्मण प्रधान वशिष्ठ सें टक्कर ली. उसने पूरा जोर लगा दिया कि उसे भी ब्राह्मण बनाया जाए मगर वह असफल रहा. यह अलग बात है कि उससें पहले वेश्याओं तक के जाये ब्राह्मण बने मगर आपसी दुश्मनी के कारण विश्वामित्र को ब्राह्मण का पद नहीं मिला.

खैर कथा है कि उसने अपना नया स्वर्ग बना लिया तथा वहां वे सब कुकर्म किए जो ब्राह्मण ऋषि अपने अड्डों यानि आश्रमों में किया करते थे. उसने इन्द्र पद पाने के लिए तपस्या की. मगर ऊपर सें मेनका आ गई. उसने उसी सें काम चला लिया और शकुन्तला को पैदा कर दिया.

आज के लिहाज सें देखा जाए तो यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे आजकल के नेता होते हैं. मनचाहा पद न मिलने पर वे अपनी पार्टी सें बगावत करते हैं अपनी अलग पार्टी बनाते हैं तथा बाद में छोटा मोटा पद पाकर संतुष्ट हो जाते हैं.

वह ऋषि तो था मगर ब्राह्मण पार्टी सें बगावत करके भूखों मरने की नौबत आ गई. सो एक दिन भूख मरते उसने पर चांडाल के घर सें कुत्ते का माँस चुरा कर खाया. (शांति.141)

उसका सबसें मुख्य किस्सा तो उसके ससुर तथा उसकी पत्नियों में अदला बदली होने का है. कथा है कि यज्ञ हो रहा था जिसमें विश्वामित्र और उसका ससुर अपनी अपनी पत्नियों के साथ विराजमान थे. चरू (वीर्य मिला कर उबाले गए चावल) परोसे गए लेकिन गलती सें चरू बदले गए. नतीजा यह हुआ कि विश्वामित्र ने अपनी सास के पुत्र पैदा कर दिया और उसके ससुर ऋषि गाधि ने अपनी बेटी यानि विश्वामित्र की पत्नि के पुत्र पैदा कर दिया!

ऐसे होते थे ब्राह्मणधर्मी ऋषि! डूब मरने की बात है कि हमें उनका वंशज बताया जाता है.

<u>व्यास</u> : ब्राह्मणधर्म का सबसें बड़ा लेखक ऋषि. जो भी ब्राह्मण ग्रन्थ देखो उसी के द्वारा लिखा या रचित बताया जाता है. लगता है सतयुग में उसने गीताप्रैस खोल रखी थी.

व्यास का बाप ऋषि पराशर था. एक बार वह उसे नदी पार जाना था. एक निशाद की कमसिन बेटी नाव खेने लगी. उसका नाम सत्यवती था. मछुआरे की बेटी थी. अतः उसके शरीर सें हमेशा मछली की गंध आती थी. जैसे ही नाव बीच नदी के पहुंची ऋषि का ब्राह्मण–धर्म जाग उठा. लड़की बेचारी बहुत रोई गिड़गड़ाई, बहुत बहाने बनाए, मिन्नतें की लेकिन ब्राह्मण–ऋषि ने तो अपने धर्म का पालन करना ही था. उस ऋषि ने उस असहाय बालिका सें वहीं नाव में सब के सामने बलात्कार किया. चाहे उस ब्राह्मण–ऋषि ने उस बालिका को झांसा दिया था कि उस का कौमार्य भंग नहीं होगा मगर वह बालिका उसके बलात्कार की वजह सें गर्भवती हो गई और व्यास को जन्म दिया.

बाद में सत्यवती का विवाह भीष्म के पिता शांतनु सें हो गया. भीष्म का भाई विचित्रवीर्य, जैसे कि आर्य होते थे, बांझ ही मर गया. सत्यवती ने भीष्म सें कहा कि वह नियोग द्वारा विचित्रवीर्य की पत्नियों अंबा, अंबालिका के पुत्र पैदा करे. भीष्म न माना तो सत्यवती ने अपने हरामी पुत्र व्यास को बुला लिया. जैसा बाप वैसा बेटा निकला. बुलाया गया था अंबा अंबालिका के लिए, साथ में वह दासी पर भी हाथ साफ कर गया. अंबा तो सांड जैसे ब्राह्मण–ऋषि को देख कर डर के मारे पीली पड़ गई अतः उसके पीलिया रोग सें ग्रस्त पांडू पैदा हो गया. अंबालिका ने अपनी जगह दासी को सजा–धजा कर भेज दिया. अंत में जब अंबालिका को बलात्कार के लिए ब्राह्मण–ऋषि के आगे समर्पण करना पड़ा तो डर के मारे उसने आंखें बन्द कर लीं, नतीजतन उसके अन्धा

धृतराश्ट्र पैदा हुआ. दासी न डरी न पीली पड़ी उसके ज्ञानी विदुर पैदा हो गया. ऐसी कहानियां इस लिए बनाई गईं ताकि यह जताया जाए कि जो स्त्री खुश होकर ब्राह्मणऋषि को समर्पण करेगी उसके ज्ञानी पुत्र पैदा होंगे.

ऐसे बलात्कार को दयानन्द भी नियोग के नाम पर उचित ठहराता है यह तो बेशर्मी की हद है. ऐसे लोग ही ब्राह्मणधर्म में पूजनीय कहे जाते हैं.

फिर एक दिन व्यास आग जलाने के लिए अरणियां घिस रहा था. उधर सें घृताची नामक वेश्या का आना हो गया. इधर आर्य ऋषि का ब्राह्मण–धर्म जाग उठा. उधर वह तो वेश्या थी ही. दोनों ने अपनी वासना शांत कर ली. इनके व्यभिचार सें शुक का जन्म हुआ. यानि एक और अवैध ऋषि पैदा हो गया.

विभांडक : ऋषि ऋष्यश्रृंग का बाप. अतः राम का औरस दादा! कबीर साहिब तक मानते थे कि श्रृंगी ऋषि राम का बाप उरथा. अतः स्वाभाविक ही है कि राम के बाप का बाप उसका दादा हुआ. उसका सारा शरीर वनमानुष की तरह बालों सें ढका हुआ था. अन्य ऋषियों की तरह औरतें उसके हिस्से नहीं आती थीं. अतः उस बेचारे को पशुओं के साथ ही अपना ब्राह्मणिक गोधर्म निभाना पड़ता था.

हिरणी ब्राह्मण ऋषियों की प्रिया भोग्या थी. ब्राह्मण ऋषि दम की तरह विभांडक भी हिरणी का दीवाना था. ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार विभांडक ने राम के वीर्यदाता बाप ऋष्यश्रृंग को भी हिरणी सें संभोग करके पैदा किया था. दम की हिरणी तो संभोग काल में ही मारी गई थी वर्ना वह भी दो चार ऋष्यश्रृंग और पैदा कर देता.

कितनी शर्म की बात है कि ब्राह्मणधर्म में पशुओं तक को अपनी वासना का शिकार बनाने वाले दुराचारियों को साधु कहा जाता है, ऋषि कहा जाता है.

शरद्वान : ब्राह्मण ऋषि शरद्वान ने एक दिन इन्द्र की कुर्सी हथियानी चाही. इन्द्र ने जनपदी नामक देव कन्या यानि वेश्या यानि अप्सरा उसे सप्लाई कर दी. उसका ब्राह्मण–धर्म जाग उठा. जनपदी तो हाथ न आई. अतः अपना आर्य धर्म सरकण्डों पर वीर्य निकाल कर पूरा किया. वहां सरकण्डों सें कृपी और कृपाचार्य पैदा हो गए. (आदि पर्व 130) यह वही कृपाचार्य था जिसने महाभारत के मुख्य पात्रों को तीर अंदाजी व अन्य प्रकार की शिक्षा दी थी. जिस कथा के मुख्य पात्र सरकण्डों द्वारा पैदा हुए हों वह कथा कितनी सत्य होगी यह बताने की आवश्यकता नहीं है.

खैर हम सब जानते हैं कि बच्चे सरकण्डों सें पैदा नहीं होते. इस कथा सें दो बातें साबित होती हैं : पहली यह कि कृपाचार्य ब्राह्मण था. उसकी रगों में वेश्या का खून दौड़ रहा था. अत किसी भी ब्राह्मण को अपने खून की शुद्धता पर बोलते समय यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए.

दूसरी बात यह कि बच्चे पैदा करने और पालने में ब्राह्मण ऋषि और वेश्याएं पशुओं सें भी गए गुजरे थे. उन्होंने जब तक जी में आया ऐश की तथा बच्चे सरकण्डों में फैंक कर चलते बने.

5.2 ब्राह्मणवाद के ध्वज–वाहक : हरामी और नपुंसक देवता

ब्राह्मणों का सर्वोच्च धर्म-कर्म गोधर्म है. इन के धर्म के चार स्तम्भों – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में सें भी काम प्रमुख है. धर्म के नाम पर इन्होंने केवल काम अर्थात सैक्स को ही अपनाया है. अपनी काम पिपासा को शांत करने के लिए उन्होंने धर्म की आड़ ली. धर्म के नाम पर ऐसे ऐसे भगवान घढ़ डाले जिन की विश्व में कहीं और मिसाल नहीं मिलती. इनका कोई ऐसा देवता या भगवान नहीं है जिसने पराई स्त्री सें नाजायज या अवैध सम्बंध न बनाए हों. चाहे वह ब्रह्मा हो, विष्णु हो, महेश हो, राम हो, इन्द्र हो या कोई और. सभी ने वासना का खुल कर खेल खेला. और कृष्ण का तो कहना ही क्या. उसने तो अपनी माँ बहन तक को न बख्शा. माँ समान मामी को खुद भोगा तो बहन अर्जुन के हाथों उठवा दी.

महाभारत (वन पर्व 45–46) में अर्जुन की उर्वशी सें मुलाकात का वृतांत है. हम सब को पता है कि अर्जुन की माँ कुंती ने इन्द्र के साथ नाजायज यौन सम्बंध बना कर अर्जुन को जना था. अतः अर्जुन का औरस बाप इन्द्र था. एक बार अर्जुन अपने बाप की एयाशगाह इन्द्रलोक गया. वहां इन्द्र की भोग्या उर्वशी सें उसकी मुलाकात होती है. उर्वशी क्यों कि अर्जुन के बाप की रखैल थी. अतः रिश्ते में अर्जुन की सौतेली माँ लगी. साथ में वह पांडव वंश चलाने वाले पुरूरवा की "पत्नि" भी थी. इस तरह वह अर्जुन की परदादी भी लगती थी.

जैसा कि आर्यों का सिस्टम था कि उनमें किसी रिश्ते की कोई बंदिश नहीं होती थी. कोई भी स्त्री पुरुष किसी भी स्त्री पुरुष सें पशुओं की तरह मैथुन कर सकता था. अतः माँ या दादी होते हुए भी उर्वशी ने अर्जुन सें संभोग याचना की. उसकी याचना का एक आधार यह भी था कि पुरूरवा के पुत्र एवं पौत्र वहां आते रहते थे और उससें समागम करते थे. यही तो आर्यों का सनातन धर्म है. परन्तु अर्जुन ने उर्वशी का प्रस्ताव स्वीकार न किया. इस बात पर नाराज होकर उर्वशी ने उसे श्राप दिया कि वह एक वर्ष तक नपुंसक हो जाए और इसी लिए अर्जुन एक साल तक हिजड़ा बन कर रहा.

कितनी अजीब सी बात है कि आर्यों की एक माँ दादी परदादी अपने पुत्र पौत्र परपौत्र को संभोग की याचना करती है!! और अगर वह पुत्र पौत्र इस अनैतिक याचना को नहीं मान रहा है तो माँ दादी उसे श्राप दे रही है कि अगर वह उससें संभोग नहीं करता तो वह किसी और सें भी संभोग के योग्य न रहे!! **और सब सें हैरानी एवं दुखदायी बात है कि ऐसी चरित्रहीना का श्राप लागू भी हो रहा है!!! कितनी घटिया बात है यह कि आर्यों में श्राप कोई चरित्रहीन व्यक्ति भी दे सकता था. उसका काम चाहे कितना भी कलंकित क्यों न हो!!**

ब्राह्मण–धर्म के सभी देव और भगवान ऐसे ही नीच कर्म करने वाले हैं. लगता है ब्राह्मण–धर्म का यही मापदण्ड है कि जो जितना बड़ा कुकर्मी हो वह उतना बड़ा भगवान बनाया जाए. बेटी पोती भोगने वाला सबसें बड़ा भगवान है. पोते की पुत्रवधु भोगने वाला उनके देवताओं का राजा है. अपनी माँ बहन सें कुकर्म करने वाला उनके धर्म की रक्षा के लिए बार बार अवतार लेने वाला भगवान है. विरोधी की शीलवती पत्नि सें बलात्कार करके उसकी हत्या करने वाला ब्राह्मण–धर्म का पालनहारा है. वेश्या के पीछे भागते भागते अपना वीर्य सख्लित करने वाला ब्राह्मण–धर्म का कामदेव संहारक भगवान है. ऐसे ब्राह्मण–धर्म के देवों की सूचि अंतहीन है.

कुछेक देवों की करतूतें यहां वर्णित हैं :

<u>अग्नि</u> : किसी जमाने में अग्नि नाम का देव आर्यों का सर्वोच्च देव होता था. ऋग्वेद में सबसें अधिक उसी की पूजा की बातें की गईं हैं. बाबा साहिब के अनुसार आर्य संस्कृति के लोग अपनी कन्याओं पर देवों का अधिकार मानते थे. शादी सें पहले अग्नि सोम और गंधर्व नामक देव क्रमशः लगभग हर आर्य कन्या के साथ यौन सम्बंध बना चुके होते थे. आज भी शादी में पढ़े जाने वाले मन्त्र इस बात के गवाह हैं कि वधु पुत्रों सहित आर्य वर को मिलती थी.

अग्नि का अधिकार प्रथम क्यों हुआ इस बारे में ऋग्वेद (10.51.52) में एक कथा है. उसके अनुसार अग्नि और उसका भाई 'होतृ' अथवा 'होता' का कार्य किया करता था. 'होता' का काम था कि वह अन्य देवों के घरों तक यज्ञ में मारे गए पशुओं का माँस और अन्य चढावे का हिस्सा पहुंचाए. देवों के लिए मांस व चढ़ावा ढोते ढोते थक कर उसके तीन भाई मर गए. तब उसने यह ढुलाई करने सें मना कर दिया. अग्नि बोला इतने से हिस्से के लिए इतना भारी बोझा नहीं उठाऊंगा. जब 3339 देवों ने उसकी मिन्नतें की तथा माँस और अन्य "चढावे" में उसका हिस्सा बढाया तब वह दुबारा काम करने के लिए राजी हुआ. उसके बाद ऋग्वेद में यह आज्ञा दी गई कि हर कन्या का पहला पति अग्नि है. (10.85.40)

अग्नि एक प्रकार सें देवों को आर्य समाज की बेटियां व यज्ञ का माल सप्लाई करने वाला दलाल अथवा मध्यस्थ था. उसका आर्य समाज सें सीधा सम्बंध था. दोनों पक्षों की बातें एक दूसरे तक पहुंचाना उसी के जिम्मे होता था. शादी के समय भी वह ही देवों की तरफ सें इस बात की गारंटी देता था कि आर्य वधु पर अब देवों का अधिकार समाप्त हो गया है. बाबा साहिब के अनुसार शादी में लाजा होम की रस्म इसी बात का सबूत हैं. समय के साथ देवों का वर्चस्व समाप्त हो गया तो अग्नि की जगह आग को साक्षी मान कर वही रस्में की जाती रहीं जो आज तक जारी हैं.

अग्नि के बाप का नाम उर्व था (हरिवंशःदेवासुर संग्राम.23) अतः अग्नि आम आदमी की जरह आदमी ही था. आज चाहे ब्राह्मणों ने घलमेल करके अग्नि नामक आदमी को आग बना दिया है.

अग्नि का गोधर्म आर्यों की बेटियों तक ही सीमित नहीं था. उसका गंगा सें कोई रिश्ता न था परन्तु उसने अपने कुनबे में भी गोधर्म निभाते हुए गंगा को गर्भवती कर दिया. गंगा ने बच्चा फैंक दिया. कार्तिकेय पैदा हो गया. (बा.रा. 1.37) यह आर्यों की मुख्य प्रथा थी. शिव द्वारा अग्नि के मूंह में वीर्यपात किए जाने की कथा भी ब्राह्मण गन्थों में मौजूद है.

<u>अश्विनी</u> : ब्राह्मणों के सूर्य नामक देव ने कुन्ती के साथ तो व्यभिचार करके कर्ण पैदा किया ही था. इसके अलावा उसने अश्विनी नामक वेश्या सें व्यभिचार करके दो जुड़वां पुत्रों को पैदा किया. इसलिए वे अश्विनी कुमार कहलाए.

महाभारत की कथा में कुन्ती और माद्री दोनों पाण्डू की पत्नियां हैं. कुन्ती सें सूर्य ने संभोग करके कर्ण को पैदा किया तो उसकी सौत माद्री के साथ सूर्य के बेटों अश्विनी कुमारों ने संभोग करके नकुल तथा सहदेव को पैदा किया. इस तरह आर्य पुत्रों ने अपने बाप की रखैल की सौत पर ही हाथ साफ कर लिए!

सूर्य ने छाया नामक स्त्री के तीन सन्तानें दो लड़के और एक लड़की पैदा की (आप्टे) ऋग्वेद में कथा है कि जब लड़की का स्वयंवर किया गया यानि उसे दांव पर लगाया गया तो उसके भाईयों ने भी दांव में हिस्सा लिया. शर्त रखी गई कि जो रेस जीतेगा वही सूर्या को ले जाए. अश्विनी कुमारों ने रेस में अपनी बहन को जीत लिया. (10.85.6) वैसे ही जैसे राम ने धनुष तोड़ कर सीता को जीता व अर्जुन ने मछली का निशाना लगा कर द्रौपदी को जीता. दोनों ब्राह्मणिक देवों ने अपनी बहन को 'स्वयंवर' में जीता और भोगा. शारीरिक सम्बन्ध बनाने में पशुओं और आर्यों में कोई अन्तर न था.

ऐसे होते थे ब्राह्मणों के भगवान और उन के स्वयंवर!

<u>**ब्रह्मा**</u> : ब्राह्मणों का सर्वोच्च देव, ब्राह्मणिक–आर्यों का सृष्टि कर्ता, पूरे आर्य विश्व को पैदा करने वाला. इसी ब्रह्मा सें पूरा आर्य वंश चला बताया जाता है. कहते हैं कि किसी किसी का आवा ऊत होता है, यहां तो खताना ही ऊत है. "आवा" वह स्थान होता है जहां कुम्हार कच्चे घड़े पकाने की प्रक्रिया करते हैं. इस प्रक्रिया में कुम्हार कच्चे घड़ों को एक सुनिश्चित ढंग सें एक दूसरे के ऊपर जंचाते हैं तथा फिर निश्चित अवधि के लिए उसमें आंच लगााते हैं. अगर कच्चे घड़े जंचाने में अथवा आंच लगााने में थोड़ी सी भी चूक हो जाए तो पूरा आवा खराब निकल जाता है अर्थात आवा ऊत हो जाता है. ऐसे आवे में बिगड़े घड़े किसी काम के नहीं रहते. खताना वह स्थान होता है जहां सें कुम्हार बर्तन बनाने के लिए मिट्टी लेकर आते हैं. अगर मिट्टी ही खराब हो तो बर्तन सही बनने का सवाल ही पैदा नहीं होता.

कुछ ऐसा ही आवा और खताना ऊत का माजरा ब्राह्मणों के साथ घटित हुआ है. उनके न केवल पीढ़ी दर पीढ़ी पूर्वज अर्थात आवा ही ऊत नहीं निकला बल्कि उनका तो प्रथम जन्मदाता अर्थात ब्रह्मा यानि खताना ही ऊत है. जब मिट्टी ही ऊत है तो बर्तन तो ऊत निकलेंगे ही. ब्राह्मणों के सर्वोच्च देव, ब्राह्मणिक–आर्यों के सृश्टि कर्ता ब्रह्मा के कारनामे कुछ इस तरह सें हैं.

- ब्रह्मा ने अपनी सगी बहन के साथ मैथुन करके एक पुत्री पैदा की और उसके युवा होने पर उसके साथ भी मैथुन किया. (गोमाँस)
- ब्रह्मा के चार सन्तानें थीं. तीन पुत्र : मरीचि, दक्ष और धर्म. एक पुत्री भी थी. उसका नाम नहीं दिया गया है लेकिन उसके गुणों के हिसाब सें उसे भिन्न भिन्न नामों सें बुलाया गया है. जैसे सरस्वती अर्थात रस भरी बातें करने वाली, दक्षा अर्थात दक्ष की बहन या काम में निपुण, शतरूपा अर्थात 100 प्रतिशत सुन्दर आदि. शतरूपा का यही गुण उसके जी का जंजाल बन गया. उसका यौवन और सुन्दरता देख कर ब्राह्मणों के सर्वोच्च देव ब्रह्मा का ब्राह्मण–धर्म जाग उठा. उसने अपनी वासना की प्यास बुझाने के लिए अपनी बेटी पर ही नीयत खराब कर ली. बेचारी लड़की वेश बदल कर घर सें भाग ली. लेकिन ब्राह्मणों के सर्वोच्च देव ब्रह्मा ने अपने गो–धर्म का पालन तो करना ही था. उसने अपनी बेटी का पीछा नहीं छोड़ा. उस दरिंदे को वह लड़की के जहां भी हाथ लगी उसने उससें वहीं बलात्कार किया. ब्राह्मण इतिहास पुराण–कार इस पाप कथा को पूरे मसाले के साथ अपने धर्म–ग्रन्थों में पेश करते हैं कि उनके सर्वोच्च देव ने अपनी बेटी के साथ नदियों, नालों, पत्थरों, खेतों में जहां भी हाथ लगी, हर जगह बलात्कार किया. इतना ही नहीं कि उसने अपनी बेटी सें अलग अलग स्थानों पर बलात्कार किया बल्कि उसने अलग अलग आसनों में बलात्कार किया. कथा है कि ब्रह्मा ने कभी घोड़ा बन कर तो कभी सांप बन कर बलात्कार किया. ब्राह्मण धर्म ग्रन्थ बयान करते हैं कि इस तरह सें ब्रह्मा ने सारी सृष्टि की रचना कर डाली.
- मनुष्य के रूप में ब्रह्मा ने अपनी बेटी सें मनु को पैदा किया. लगता है यह मनु वही मनु था जिसने मनु–स्मृति जैसे घिनौने ग्रन्थ की रचना की है क्यों कि ऐसे हरामीपने वाले काम ऐसे हरामीपने सें उपजा हुआ हरामी ही कर सकता है. अस्तु.
- ब्राह्मणों का सृष्टि–कर्ता यानि उनका भगवान ब्रह्मा यहीं शांत नहीं हुआ. उसने अपने संस्कार अपने बेटे को विरासत में दिए. उसके पुत्र दक्ष ने भी अपनी सगी बहन सें समागम किया. कहते हैं न कि आकड़ा कै तो आकड़ा ही लागींगा. बाप ने बेटी भोगी, बेटे ने बहन भोग ली.
- खताना ऊत वाली कहावत इन ब्राह्मण–देवों पर खरी उतरती है. दक्ष ने भी अपनी बहन सें 50 कन्याएं पैदा की. बाप बेटों की मौज बन गई. जब वे जवान हुईं तो एक पोती को ब्राह्मणों के देव ब्रह्मा ने अपने संभोगार्थ रख ली. उससें समागम करके नारद को पैदा किया. (हरि.अं 3 पृ 8)(राज 44). नारद के लगाई बुझाई के कारनामों सें सभी परिचित हैं. सांप के तो संपोले ही पैदा होंगे.
- इन 50 कन्याओं में सें एक तो ब्रह्मा ने भोग ली, एक सती नामक कन्या उसने शिव को दे दी. (आप्टे :दक्ष) 10 कन्याएं अपने सगे भाई धर्म को संभोगार्थ दे दीं. 13 कन्याएं अपने दूसरे भाई मारीचि के पुत्र कश्यप को संभोगार्थ दे दीं तथा 27 कन्याएं सोम अर्थात चन्द्रमा को दे दीं. वैसे हिसाब सें तो 26 बाकी बचती हैं, एक शायद अपने बाप ब्रह्मा वाली दे दी होगी.
- इस तरह जहां ब्रह्मा ने अपनी बेटी और पोती को भोगा, उसके बेटे दक्ष ने अपनी सगी बहन को भोगा, उसके दूसरे बेटे धर्म ने अपनी सगी भतीजिओं और भानजिओं को भोगा तो उसके पोते ने अपनी चचेरी बहनों को भोग डाला. कुल मिला कर सारा खताना ही ऊत निकला. धिक्कार ऐसे भगवान पर! धिक्कार ऐसे ब्राह्मणों पर जो ऐसे नीचों को भगवान घोषित करते हैं!! थू ब्राह्मणवाद के!!!

- संकराचारय के अनुसार प्रजापति ने वीर्य स्थापना के लिए लड़की पैदा की. उसके निचले भाग की पूजा की. फिर अपनी पैदा की उस लड़की सें संसर्ग किया. (वृ. उप. अ.6, ब्र.4 श्र.2) संकर जैसे ब्राह्मण लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं. वीर्य स्थापना का सीधा सा अर्थ है यौन सम्बंध बना कर वासना पूरी करना. सीधे सपाट शब्दों में ब्रह्मा ने अपनी वासना पूरी करने के लिए लड़की पैदा की.
- ऐसा नहीं कि ब्रह्मा ने मात्र अपनी बेटी पोतियों पर नीयत खराब की हो. उसने बाहर भी कसर नहीं छोड़ी. एक बार ब्रह्मा शिव पार्वती (दक्ष की बेटी और उसकी पोती) के विवाह में शामिल हुआ. चार फेरे हुए थे कि ब्रह्मा को पार्वती का अंगूठा दिख गया. वह वासना सें तड़प उठा. और तो कोई साधन मिला नहीं अपनी झोली में ही वीर्य निकाल दिया. (शिव पु. ज्ञान संहिता–18) (स मु 5.60) लगता है तभी सें द्विजों में चार फेरे कराने का नियम बना है कि कहीं चौथे फेरे के बाद कोई ब्रह्मा न बन बैठे.
- भागवत की कथा के अनुसार अपनी बेटी सें व्यभिचार करने पर ब्रह्मा को उसके बेटों ने डांटा तो ब्रह्मा ने अपने शरीर के टुकड़े टुकड़े (आत्महत्या) कर लिये. कोहरा उसके शरीर के टुकड़े ही हैं. (पहेली 10)

अगर आज के दिन ब्राह्मणों का देव ब्रह्मा जिंदा होता और ऐसा कुकर्म करता तो लोग उसका मूंह काला करके, जूतों की माला पहना कर, गधे पर बैठा कर तब तक जूते मारते जब तक कि उसकी सारी भगवानी उतर न जाती. अतः यह तो ब्राह्मणवाद की ही हिम्मत है कि ऐसे बेटी भोगी को भगवान बना कर मंदिर में बैठा रखा है.

वास्तव में आर्यों का यही मूल और सत्य इतिहास है. ब्रह्मा के समय के आर्य भाई–बहन, बाप–बेटी, माँ–बेटे, चाचा–भतीजी, आदि का रिश्ता जानते ही न थे. वे तो मात्र नर और मादा होते थे पशुओं की तरह. ब्रह्मा ही नहीं उसको मानने वाले ब्राह्मण ऋषि भी ऐसे किसी रिश्ते को न मानते थे वर्ना दशरथ का जवाई ऋष्यश्रृंग अपनी सासुओं सें समागम न करता. दशरथ जातक कथा के अनुसार तो राम और सीता भाई बहन थे जिन्होंने बाद में शादी कर ली.

कुछ ब्राह्मणवादी यह दलील देते हैं कि ब्रह्मा को सृष्टि की रचना करने के लिए अपनी बेटी सें समागम करना पड़ा. यह बहुत ही लच्चर सी दलील है क्योंकि :

1. जैसे उसने एक लड़की पैदा की वैसे ही वह अन्य लड़के लड़कियां भी पैदा कर सकता था. यह लड़के लड़कियां स्वयं पति पत्नि का जोड़ा बना कर आगे मानव जाति को पैदा कर लेते.
2. एक पल के लिए मान लेते हैं कि मानव पैदा करने के लिए ब्रह्मा को अपनी बेटी सें बलात्कार करना पड़ा. तब उसने अपनी पोतियों सें समागम क्यों किया. उसके बेटों ने अपनी बहनो, भतीजियों, भानजियों सें यौन सम्बंध क्यों बनाए.
3. और सबसें महत्वपूर्ण बात यह कि अगर ब्रह्मा का कार्य सच्चा था तो उसे अपनी बेटी पोतियों को भोगने पर उसके बेटों ने क्यों डांटा और क्यों उसे आत्महत्या करनी पड़ी.

चन्द्रमा : इसका नाम सोम भी है. उसकी एक बेटी थी. ब्राह्मण–धर्म का पालन करते हुए उसने अपनी बेटी सें बलात्कार किया और उसे गर्भवती कर दिया. इस धार्मिक कृत्य सें जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम दक्ष–प्रजापति रखा गया जिसका अर्थ है जो प्रजा पैदा करने में माहिर हो. अतः उसने भी अपने नाना मार्का बाप की तरह कुछेक लड़कियां पैदा कीं, और संभोगार्थ अपने नाना मार्का बाप को दे दीं. (हरिवंश–2 राज–44)

दक्ष–प्रजापति क्योंकि चन्द्रमा के वीर्य सें पैदा हुआ था, इसलिए उसका बेटा लगा और क्योंकि उसकी सगी बेटी सें पैदा हुआ था, इसलिए उसका दोहित्र लगा. ऐसे बेटों को आर्य ''कानीन–पुत्र'' कहते थे.

चन्द्रमा व अन्य देवों का गुरु वृहस्पति था. तारा उसकी पत्नी थी. गुरु–पत्नी को माँ के समान माना जाता है. चन्द्रमा ने इस माँ के साथ भी वही किया जो अपनी बेटी के साथ किया था. तारा का अपहरण करके ले गया. उनमें लड़ाई हो गई जिसके बढते बढते देव–दानव युद्ध की नौबत आ गई लेकिन ब्रह्मा ने सुलह करवा दी. इस बीच वह गर्भवती हो गई परन्तु वृहस्पति ने उसे अपना लिया. (म.भा. वनपर्व 219, भागवत 9.14.4.8 समु 2.50, 2. 59)

अगर कोई यह कहे कि वृहस्पति ने तारा को पुनः इस लिए अपना लिया कि वह उसकी पत्नि लगती थी तो यह झूठ है. आर्यों में ऐसा रिश्ता होता ही न था. जैसे कुत्तों के झुंड में किसी कुतिया के जाने और वापिस आने का कोई महत्व नहीं होता वैसा ही देवताओं के साथ होता था, उनके गुरू वृहस्पति के साथ भी ऐसा ही हुआ. इसी कारण जब राम लंका जीत कर सीता सें मिला तो उसने उससें यही का था कि उसने यह युद्ध सीता के लिए नहीं किया था.

गणेश : उसे पार्वती–पुत्र कहा जाता है. कहते हैं शिव 12 साल के लिए तप करने बैठ गया. कुछ समय बाद पार्वती को अकेलापन उबाने लगा. अतः उसने गणेश पैदा कर लिया. जब शिव तपस्या करके घर आया तो गणेश ने उसे भीतर घुसने नहीं दिया. भगवान का रास्ता किसी गैर का बालक रोक ले, यह तो अनहोनी थी. शिव ने अपना भगवानपना दिखलाया और गणेश का सिर काट कर फेंक दिया.

फिर जब पार्वती ने शिव को बताया कि जब वह तपस्या कर रहा था तो पार्वती बोर हो रही थी. अतः उसने गणेश पैदा कर लिया. जब शिव ने पूछा कि बिना उससें संसर्ग किए उसने बच्चा कैसे पैदा किया तो पार्वती बोली कि उसने गणेश को मैल सें पैदा किया है. कोई माने या न माने, शिव ने उसकी बात मान ली कि बिना पुरुष समागम के स्त्री बच्चे पैदा कर सकती है. तब शिव ने एक हथिनी के बच्चे का सिर काटा और पार्वती–पुत्र गणेश की गर्दन पर जोड़ दिया.

क्या शिक्षा मिलती है हमें इस कथा सें? यही कि :

- अगर पति की गैर हाजिरी में पत्नि बच्चे पैदा कर ले तो यह मान लिया जाए कि उसने मैल सें पैदा किए हैं.
- गैर का बालक अगर आपका रास्ता रोके तो उसकी गर्दन उड़ा दो.
- पशुओं की जान की कोई कीमत नहीं होती.
- आदमी दिमाग सें कुछ भी काम न ले. ऐसी कथाओं को भगवान की करनी मान कर चुपचाप सत्य मान ले. ऐसा बिल्कुल न सोचे कि अभी तक कोई हाथी का बच्चा इतना कमजोर पैदा नहीं हुआ कि उसका सिर आदमी के बच्चे की गर्दन पर फिट हो जाए. और न ही आदमी का बच्चा इतना बड़ा हुआ है कि हाथी के बच्चे का सिर उसकी गर्दन पर फिट हो जाए. वैसे भी शिव अगर भगवान था तो उसे इतना कुछ करने की आवश्यकता ही न थी. गणेश का काटा हुआ सिर वहीं वापिस लगा देता. किसी और के बच्चे को मारने की क्या आवश्यकता थी.

ऐसे ही एक बार उसने परशु राम को अंतःपुर अर्थात बैडरूम में घुसने सें रोका तो परशु राम ने उसका दांत तोड़ दिया.

ब्राह्मणधर्म में गणेश की पूजा सबसें पहले की जाती है. कथा है कि एक बार देवताओं में बहस हो गई कि किसकी पूजा सबसें पहले हो. तय हुआ कि जो धरती का चक्कर सबसें पहले लगा लेगा वही जीतेगा. बाकी सारे देवता तो भाग लिए, गणेश ने अपनी माँ का चक्कर लगाया और बोला माँ धरती समान होती है. अतः माँ का चक्कर भी धरती के चक्कर के समान ही है. उसे विजेता घोषित कर दिया गया.

शुक्र है शर्त धरती का चक्कर लगाने की लगी थी. कहीं धरती खोदने की शर्त लग जाती तो शिव तो दुबारा रंडुआ हो जाता. गणेश ने तो शर्त जीतने के लिए पार्वती को खोद डालना था. उसके गुर्दे फेफड़े खोद बाहर करता. शिव ने गणेश के तो हाथी की गर्दन लगा दी थी. पार्वती के लिए गुर्दे कलेजा फेफड़े लाने के लिए पता नहीं शिव को कितने कुत्ते बिल्लियों को मारना पड़ता.

ब्राह्मण–धर्म का आरंभ ही जब ऐसे बेईमान अर्धपशु सें होता है तो उनके धर्म के मध्य और अंत की कल्पना करना सहज है.

कितनी सोचनीय स्थिति बना दी है इन ब्राह्मणों ने हमारी कि एक आदमी जरा सी बात पर एक बच्चे का सिर काट डालता है और हम उसे भगवान मान लेते हैं. इन ब्राह्मणों ने हमें दिमागी तौर पर एकदम पंगु अपाहिज, लाचार बना दिया है. इन्होने कहा ऐसा धोखेबाज भगवान है हमने आँख मूंद कर मान लिया भगवान है.

हनुमान : ब्राह्मणों के हरामी देवताओं की लम्बी सूचि में एक नाम हनुमान का भी है. रामायण के उत्तरकांड में उसका जन्म वृतांत दिया गया है कि हनुमान की माँ का नाम अंजनि था और उसके पति का नाम केसरी था. केसरी उस पहाड़ी एरिया का राजा था. एक दिन अंजनि स्नान करके, साफ महीन वस्त्र पहन कर पर्वत पर घूमने निकली. वहां उसे पवन नाम का देव मिल गया. उसने उसके महीन वस्त्र हटा दिए. पवन उसका सुन्दर रूप और शरीर देख कर उस पर मोहित हो गया और उसने अंजनि सें संभोग याचना की. अंजति पहले तो नहीं मानी लेकिन जब पवन ने उससें पुत्र पैदा करने का लालच दिया तो अंजनि पवन सें संभोग के लिए राजी हो गई. पवन ने वहीं पत्थर पर लिटा कर अंजनि सें संभोग किया. उन दोनों के इस नाजायज समागम अथवा व्यभिचार सें हनुमान पैदा हुआ.

कुछ पुराणकार हनुमान को शिव का अवतार बताते हैं जो इस जन्म में राम की मदद करने जन्म लेता है. अगर उसका जन्म पूर्व नियोजित था तो उसने केसरी की पत्नी अंजति को ही क्यों चुना? अगर उसने अंजनि की कोख सें ही जन्म लेना था तो वह केसरी के वीर्य सें पैदा होता. और अगर उसने पवन के वीर्य सें ही पैदा होना

था तो पवन की पत्नि के गर्भ सें पैदा होता. उसने जन्म लेने के लिए अपनी माँ को क्यों गैर मर्द पवन सें दूषित करवाया?

माननीय ललई सिंह यादव ने आदरणीय पैरियर रामास्वामी नायकर की एक पुस्तक "सच्ची रामायण" को हिन्दी में छापा. सरकार द्वारा पुस्तक जब्त कर ली गई. तब उन्होंने अपनी पुस्तक के एक एक शब्द का सबूत अदालत में पेश किया. इन सबूतों को उन्होंने "सच्ची रामायण की चाभी" नाम सें छापा. उसी पुस्तक में हनुमान का चित्रण कुछ इस प्रकार सें हैः (पृ. 72...)

- हनुमान की माँ गौतम की बेटी थी. एक दिन गौतम बाहर सें आया. इन्द्र वहां था. उसने पूछा यह कौन है. अंजनि बोली "मांजार" अर्थात माँ का यार या मार्जार यानि बिल्ली. बस गौतम ने उसे गर्भवती होने का श्राप दे दिया.
- गुजराती लोककथा के अनुसार नारद ने अंजनी के कान में मन्त्र कह कर उसे गर्भवती कर दिया.
- शिवपुराण के अनुसार जब शिव मोहिनी बने विष्णु के पीछे भाग रहा था तो उसका वीर्य स्खलित हो गया. उस वीर्य सें अंजनी ने हनुमान को जन्म दिया.
- रामकथा के अनुसार राम और सीता ने बन्दर बंदरिया बन कर सम्भोग किया और पुनः आदमी बन गए. राम ने सीता का गर्भ निकाल कर अंजनि के गर्भ में रख दिया हनुमान पैदा हो गया.
- भविष्य पुराण के अनुसार शिव और पवन ने केसरी के शरीर में घुस कर बारी बारी सें अंजनि सें रमण किया. हनुमान पैदा हो गया.
- सेरीयम के अनुसार राम अंजनि को देख कर लट्टू हो गया. मर्यादा पुरुषोत्तम का वीर्य पतन हो गया. पवन ने उठा कर अंजनि के मूंह में डाल दिया. हनुमान पैदा हो गया.

अब हनुमान किस के वीर्य सें उपजा, कौन उसका औरस (असली) बाप है, पाठक स्वयं निर्णय कर लें.

हनुमान जैसे जन्म सें हरामी था उसके कर्म भी हरामीपन सें भरपूर थे. उदाहरणतः

1. हनुमान दूत बन कर गया था लेकिन लंका में घुस कर उसने अशोक वाटिका को उजाड़ दिया.
2. महात्मा रावण के पुत्र अक्षय तथा अनेकों सैनिकों का कत्ल कर दिया. परन्तु महाराज रावण ने उसे राम का दूत मानते हुए अवध्य माना. अतः उसे मौत की सजा न दी.
3. उसने लंका नगरी में आग लगा कर अनेकों बच्चों, बूढ़ों और स्त्रियों जिंदा जला कर मार डाला. ओसामा बिन लादेन ने दो टावर ध्वस्त किए तो सारी दुनिया ने उसे आतंकवादी घोषित कर दिया. हनुमान ने तो पूरा नगर ध्वस्त कर दिया था. ऐसे तो वह बिन लादेन सें भी बड़ा आतंकवादी और क्रूर हत्यारा साबित होता है.
4. उसे यति, ब्रह्मचारी आदि पता नहीं क्या कुछ कहा जाता है. वास्तव में वह भी और आर्यों की तरह पूरा लम्पट था. वह महात्मा रावण सें बोला,'तब जुवतिन्ह समेत सठ जनक सुतिन्ह ले जाउं' अर्थात मैं तुम्हारी स्त्रियों समेत सीता को उठा ले जाऊंगा. अगर वह यति था तो इन स्त्रियों का उसने क्या करना था. शायद उसकी ऐसी नीयत के कारण ही सीता ने उस के साथ आने सें मना कर दिया था.
5. जब राम अयोघ्या पहुंचा और गद्दी पर काबिज हो गया तो अपनी बरसों पुरानी इच्छा पूरी होने पर उसने हनुमान को 16 लड़कियां इनाम में भेंट की जिनके छिपे अंगों पर बाल आने शुरू हुए थे. इनाम में मिली ऐसी षोडशियों का हनुमान ने क्या किया होगा हर दिमाग वाला सोच सकता है.
6. सच्ची रामायण की चाभी के अनुसार उसने लंका में स्वयंप्रभा और सुन्दरी सें यौन सम्बंध बनाए. स्वर्णमच्छा नामक नाग कन्या सें उसने एक पुत्र भी पैदा किया. विभीषण की बेटी बेंजकाया सें भी हनुमान ने यौन सम्बंध बनाए. (पृ 74)

एक बात कुछ अटपटी, अनसुलझी सी है. महात्मा रावण ने सीता की तरह हनुमान के असली बाप पवन को भी तो कैदी बना रखा था. माना कि सीता ने तो हनुमान के साथ आने सें मना कर दिया था लेकिन वह अपने बाप को तो उठा कर ला ही सकता था. उसने महाराज रावण को उनकी स्त्रियां उठा ले जाने की धमकी तो दी लेकिन अपने बाप की सुध ही नहीं ली! हो सकता है उस समय तक महाभारत वाली प्रथा जारी हो जहां पाँडव भिन्न भिन्न पुरुषों द्वारा पैदा होने पर भी पांडू के ही पुत्र कहलाये थे! सो उस समय तक हनुमान भी पवन–पुत्र कहलवाने की बजाए केसरी–पुत्र ही कहलाता हो.

<u>इन्द्र</u> : आर्यों का सर्वाधिक शक्तिशाली पद था इन्द्र का. ऋग्वेद में उसे आर्यों की समस्त लड़कियों और स्त्रियों का जार (उपपति, यार, आशिक) माना गया है. अतः वह किसी भी कुआंरी कन्या अथवा विवाहित स्त्री सें यौन सम्बंध बना सकता था. किसी समय आर्यों में इन्द्र का पद इतना ही महत्वपूर्ण होता था जितना आज के समय में अमरीका में वहां के राष्ट्रपति का पद है अथवा भारत में प्रधान मन्त्री का पद है. इसका प्रमुख कारण इन्द्र की

सभा थी. जहां चौबीसों घंटे शराब व शबाब की महफिलें सजी रहती थीं. एक सें बढ़ कर एक वेश्या उसके दरबार में नाचती थी. चौबीसों घंटे रंडियों का नाच गाना होता रहता था इन्द्र के घर पर. आर्यों का मुख्य काम ही मीट खाना, शराब पीना और पराई स्त्रियों सें ऐश करना था. अतः हर कोई इस ऐयाशी के सर्वोच्च पद पर कब्जा करना चाहता था. इन्द्र इन वेश्याओं को भेज कर ऋषियों देवताओं का मनोरथ सिद्ध कर देता था और अपनी गद्दी सुरक्षित रखता था.

इन्द्र ने कुन्ती सें नियोग करके अर्जुन पैदा किया था. अर्जुन का बेटा परीक्षत था. परीक्षत का बेटा जन्मेजय था. इस तरह जन्मेजय इन्द्र का पड़पौता हुआ. इन्द्र ने जनमेजय की पत्नि वपुश्टमा के साथ कई सालों तक व्यभिचार किया जिसे सभी ने स्वीकार किया. (हरि. भविश्य पर्व–2) (राज. 44) भारतीय समाज में पुत्रवधु को बेटी समान माना जाता है. ससुर के द्वारा ऐसा कुकर्म पाप की चरम सीमा है. लेकिन ब्राह्मण–धर्म के सभी देव और भगवान ऐसे ही नीच कर्म करने वाले हैं. अतः उनके राजा ने भी तो उन सें बढ़ चढ़ कर कुकर्म करने थे. सो किये.

वपुश्टमा सें दिल भर गया या टेस्ट बदलने के लिए एक दिन ऋषि गौतम की पत्नि अहिल्या पर डोरे डाल दिए. पंजाबी में कहावत है चोर नालों पण्ड काहली. (अर्थात किसी के घर में चोर घुस गया और उसने सामान की गठड़ी बांध ली. चोर को तो माल लेकर भागने की जल्दी होती ही है लेकिन गठड़ी उससें भी पहले भागने को तैयार निकली.) ऐसा ही कुछ इन्द्र के साथ हुआ. अहिल्या उससें भी ज्यादा तैयार मिली. दोनों ने वासना का खुल कर खेल खेला. ऋषि ने देख लिया. उसने इन्द्र के अण्डकोश काट दिए. अहिल्या का खाना पीना बन्द कर दिया.

आप्टे के अनुसार गौतम ने इन्द्र को श्राप दिया कि उसने उसकी पत्नि की योनि को दूषित किया है. अतः वह सहस्त्र योनि हो जाए. उसके श्राप की वजह सें इन्द्र के एक हजार योनियां हो गई. यह कथा ब्राह्मणों के धार्मिक कहे जाने वाले ग्रन्थों में लिखी गई हैं. जरा एक पल के लिए सोचें कि इन्द्र का शरीर कैसा दिखता होगा.

खैर देवताओं की बैठक हुई. अर्ध–हिजड़ा बने इन्द्र के इलाज के उपाय सोचे गए. जैसे शिव ने गणेश के काटे सिर की जगह हाथी का सिर लगा दिया वैसे ही देवों ने इन्द्र के कटे अण्डकोशों की जगह बकरे के अण्डकोश लगा दिए. **कितने लोग हैं हम में सें जो यह धार्मिक कथा अपनी माँ, बहन बेटी को सुना सकते हैं.**

ऋषि पत्नियां उसे कुछ ज्यादा ही पसन्द थीं. तभी उसने भृगु की पत्नि पुलोमा सें भी संसर्ग लिया. (स.मु. 4.91)

इसी लम्पट इन्द्र को महाबली मेघनाद ने हरा कर बन्दी बना लिया. तभी सें उनका नाम इन्द्रजीत पड़ा. देवताओं ने महाबली मेघनाद सें मिन्नतें की कि इन्द्र को छोड़ दिया जाए. अंत में देवताओं के प्रमुख ब्रह्म ने यही तय किया कि कोई भी देवता उन पर वार नहीं करेगा. लेकिन वह ब्राह्मण देवता ही क्या जो बेईमानी न करे. एक दिन महाबली मेघनाद ध्यान लगा कर पूजा कर रहे थे कि राम के कहने पर लक्ष्मण ने छुपके सें जाकर उनका सिर काट दिया. (युद्धकांड 851)

कार्तिकेय : कहने को तो कार्तिकेय शिव का बेटा कहा जाता है. वैसे उसका जन्म भी गो–धर्म की एक बेजोड़ मिसाल है. उसकी जन्म कथा कुछ इस तरह सें है कि एक बार शिव और पार्वती सहवास में लीन थे. अग्नि वहां कबूतरी का वेश धारण करके आ गया. शिव ने अपना वीर्य अग्नि पर फैंक दिया. कबूतरी बने अग्नि ने वह वीर्य गंगा में नहाती हुई 6 वेश्याओं पर डाल दिया. उन वेश्याओं ने 6 पुत्रों को जन्म दिया. उन सभी छः को जोड़ कर एक पुत्र बना दिया जिसके बारह बारह हाथ पैर आंखें 6 सिर बन गए. अतः उसका नाम कार्तिकेय रखा गया.

दूसरी कथा के अनुसार शिव ने गंगा में अपना वीर्य छोड़ा अर्थात गंगा सें समागम किया. गंगा ने वीर्य सरकंडों पर फैंक दिया. वहीं कार्तिकेय का जन्म हुआ. इसलिए शरजन्मा भी उसका नाम है.

एक पल के लिए जरा आंखें मूंद कर कल्पना कीजिए कि उपरोक्त कथाओं में वर्णित घटनाएं आपके सामने हो रही हैं. कैसा वीभत्स दृश्य नजर आता है.

कश्यप :

लक्ष्मण : हमेशा बड़े भाई की पूंछ पकड़ कर चलने वाला. उसने किसी काम के लिए भला या बुरा नहीं देखा जो राम ने कह दिया उसने आँखें बंद करके कर दिया. वन में जाना हो या गर्भवती सीता को जंगल में पटक कर आना हो, उसने राम के सिवाय कभी किसी का हित नहीं सोचा. यहां तक कि उसने अपनी पत्नि सें भी कभी कोई सलाह नहीं की. राम के कहने पर उसने आत्महत्या भी कर ली. गुस्सैल इतना कि राम को गद्दी दिलाने के लिए वह अपने बाप को भी मारने को तैयार हो गया.

गद्दी न मिलने पर उसे इतना गुस्सा था कि जब भरत जंगल में राम सें मिलने गया तो उसने राम को सलाह दी कि भरत की वजह सें उसे गद्दी नहीं मिली है इसलिए ऐसे अधर्मी को मार दिया जाना चाहिए. (अयोध्या 96)

स्कंध पुराण (नगर खण्ड 20) के अनुसार दशरथ का श्राद्ध करने के समय सीता कहीं छिप जाती है और लक्ष्मण को ही सारा काम करना पड़ता है. गुस्से में आँखें लाल करके वह राम की हत्या करने और सीता को अपनी पत्नि बनाने की योजना बनाता है. अगले दिन वे आगे का सफर करते हैं और दिन भर लक्ष्मण राम को मारने का अवसर ढूंढता रहता है. (चाभी 44)

खोतानी रामायण में सीता राम और लक्ष्मण दोनों की सांझी बीवी है. (चाभी 45) शायद इसी कारण लक्ष्मण अकेला वन में गया अपनी असली पत्नि उर्मिला को साथ नहीं ले गया. सीता भी उस पर यही दोष लगाती है जब स्वर्ण मृग को मारने वह राम के पीछे नहीं जाता.

रामकथा के अनुसार उसके सोलह हजार पत्नियां थीं. उसने सरूपनखा के नाक कान ही नहीं काटे बल्कि उसकी दो बेटियों को भी मार डाला. (चाभी 18,21)

मित्र : ब्राह्मणों द्वारा कंडम करके फैंका गया उनका एक अन्य भगवान. कभी मित्र नाम का प्राणी भी उनका भगवान होता था. समय के साथ उसकी बिक्री कम हो गई तो ब्राह्मणों ने उसे उठा कर कूड़ेदान में डाल दिया. आज के दिन शायद ही कोई ब्राह्मणधर्मी होगा जो उसके जन्म मरण के बारे में कुछ जानता होगा.

मित्र और वरूण नामक देवों की स्तुति सें ब्राह्मण–ग्रन्थ भरे पड़े हैं. एक दिन उन्होंने नहाती हुई वेश्या उर्वशी को देख लिया. उनका ब्राह्मण–धर्म जाग उठा. उर्वशी तो उनके हाथ न लगी. एक घड़ा मिल गया. उस सें दोनों देवों ने अपनी वासना की भड़ास निकाली. कथा है कि उस घड़े सें राम के कुलगुरू वशिष्ठ का जन्म हो गया. जिस आदमी का कुलगुरू घड़े सें पैदा हुआ हो उसकी कहानी कितनी सच होगी, हर कोई सोच सकता है.

एक अन्य कथा है कि एक दिन मित्र ने उर्वशी सें काम याचना की लेकिन उर्वशी नहीं मानी. मित्र ने उसे स्वर्ग सें निकाल कर धरती पर पटक दिया जहां उसका मिलन पुरुरवा सें हुआ और वह उसके पांच पुत्रों की माँ बन गई.

पवन : भीम, हनुमान का औरस बाप अथवा वीर्यदाता बाप. इनकी माँओं सें किया गया व्यभिचार 'भीम' तथा 'हनुमान' के आगे दिया गया है. पवन का टेस्ट कुछ अजीब सा था वह केवल विवाहितों पर ही डोरे डालता था. जब उसने कुंती के भीम पैदा किया तब वह किसी अन्य की विवाहिता थी. जब उसने अंजनि के हनुमान पैदा किया तब अंजनि भी किसी अन्य की विवाहिता थी. इस प्रकार उसने केवल पहले सें ही शादी शुदा औरतों सें सम्बंध बनाए. दूसरी ओर सूर्य और पाराशर कुआंरियों के दीवाने थे.

पवन सोम नामक शराब पीने का शौकीन था. देव होने के नाते वह हर जगह सोम में सबसें पहले अपना हिस्सा ले लेता था. (संस्कृति कोश). एक दिन उसकी नीयत राम के पौते कुशनाभ की सौ लड़कियों पर बिगड़ गई. उसने इस बात का भी लिहाज नहीं कि राम ने तो उसे महाराजा रावण की कैद सें छुड़वाया था. खैर कुशनाभ ने उसे अपनी बेटियां फ्री में उसे सौंपने से इन्कार कर दिया. गुस्से में आकर उसने सारी लड़कियों को कुबड़ी कर दिया. (वही)

ऐसे दबंग होते थे देव. बिल्कुल गुंडों की तरह हफता वसूलने वाले! जो न दे उसके हाथ पांव तोड़ देने वाले!!

प्रजापति : कुम्हार जाति के कुछ लोग अपने को उच्च जाति का साबित करने के लिए स्वयं को प्रजापति कहलाते हैं. शायद वे लोग प्रजापति की सत्यता सें अनभिज्ञ हैं. प्रजापति का जन्म कुछ इस प्रकार सें हुआ. उसके पिता का नाम सोम था. सोम की पुत्री मारिशा थी. एक दिन दस प्रचेताओं ने अपने पुत्र सोम के साथ मिल कर मारिशा सें वही किया जो ब्रह्मा ने अपनी बेटी सें किया था. परिणाम स्वरूप प्रजापति का जन्म हो गया. इस तरह प्रजापति अपने दादा और बाप के कुकर्मों के कारण अपनी सगी बहन के गर्भ सें पैदा हुआ.
प्रजापति के 50 कन्याएं पैदा हुईं. उसमें सें 27 उसने अपने नाना मार्का बाप सोम को संभोगार्थ सौंप दीं ताकि वह बच्चे/प्रजा पैदा कर सके. (हरिवंश. अ.2) (राज.75)

शिव : ब्राह्मणों के मुख्य तीन भगवानों यानि त्रिमूर्ति में सें एक शिव है. आज के समय में शेष दो भगवान तो मात्र शोपीस रह गए हैं. केवल शिव बाकी बचा है जिसकी लोग मान्यता करते हैं. शिव के बारे में कुछ अजीब सें तथ्य हैं जिनका उत्तर कहीं नहीं मिलता है.

2. उसे "विनाश मन्त्रालय" का भगवान बताया जाता है मगर उसका लिंग हर मंदिर में पूजा जाता है. लिंग सृजना का द्योतक माना गया है. उसके भगवानपने के साथ यह बड़ा विरोधाभास है.
3. उसे काम वासना को नष्ट करने वाला भगवान बताया गया है मगर उसके जितने भी किस्से हैं उनमें वह वासना में ही लिप्त बतलाया गया है. काम वासना नष्ट करने वाले का ही लिंग क्यों पूजा जाता है. कहीं इस बात का उत्तर नहीं मिलता. काम वासना के सबसें ज्यादा कारनामे तो कृष्ण ने अंजाम दिए थे, उसकी पूजा इस रूप में क्यों नहीं होती, यह अजीब गोरखधंधा है.
4. शिव को शूद्रों का देव बताया गया है. विष्णु तो हमेशा ब्राह्मणों को पूजने या उन्हें बचाने के कामों में ही लगा रहा है. उसके सारे अवतार ब्राह्मण सेवा के लिए ही हुए हैं. ब्रह्मा ने ब्राह्मण पैदा किए हैं. शिव का इन ब्राह्मण पूजक देवों के साथ अनेकों बार झगड़ा भी हुआ है. विष्णु के अवतार राम ने तो यहां तक कहा कि शिव का पूजक मेरा दुश्मन है. ब्राह्मणों के इस विरोध के बावजूद त्रिमूर्ति में सें शिव की मान्यता सबसें ज्यादा हैं. ऐसा क्यों है, यह भी एक अनसुलझी पहेली है.
5. ब्राह्मणों के सभी देव सोम नामक शराब पीते हैं मगर शिव कभी भी सोम नहीं पीता. वह अकेला भांग पीता है. शिव बाकी ब्राह्मणिक देवों सें खान पान में अलग क्यों हैं, यह भी एक रहस्य है.
6. ब्राह्मणों के जितने भी देवता या भगवान हुए हैं उसमें शिव ही अकेला ऐसा प्राणी है जिसकी शादी में बाराती गए हैं, चाहे भूत प्रेत या राक्षस ही सही. शेष किसी भी देव या भगवान की कभी कोई बारात ही नहीं निकली. उन्होंने या तो बीवियां जीती हैं या उधाली हैं रखैलें रखी हैं या व्यभिचार किया है. शिव ही अकेला ऐसा ब्राह्मणिक भगवान है जो बारात लेकर पार्वती को ब्याहने गया. **वह अकेला "भगवान" है जिसने असुर पद्धति के अनुरूप शादी की है.**
7. **और शायद वह अकेला भगवान है जिसने अपनी पत्नि के सिवाय दूसरी औरत सें यौन सम्बंध नहीं बनाए या जो व्यभिचार में लिप्त नहीं रहा अथवा जिसने रण्डीबाजी नहीं की. शिव दूसरे ब्राह्मणिक देवों सें हट कर क्यों है, यह एक रहस्य है.**

ब्राह्मणग्रन्थों में शिव द्वारा किए कारनामे इस प्रकार सें हैं :

1. समुद्र मंथन सें अमृत निकला. मंथन की शर्तों अनुसार इस अमृत पर असुरों का अधिकार था. लेकिन वह देवता ही क्या जो ठगी न करे, धोखा न करे. विष्णु ने मोहिनी नामक वेश्या का रूप बनाया और अमृत कलश उठा कर भाग लिया. असुर तो बेचारे अभी सोच ही रहे थे कि क्या करें, शिव मोहिनी के पीछे भाग लिया. वैसे तो ब्राह्मण हर जगह यह प्रचार करते रहते हैं कि शिव ने काम (वासना) को जला कर नष्ट कर दिया था लेकिन उसके सारे कारनामे ऐसे हैं जहां वह काम वासना सें पीड़ित किसी लम्पट की तरह व्यवहार करता है. यहां भी वह मोहिनी के पीछे कामांध यानि वासना में अन्धा होकर दौड़ लिया जैसे हथिनी के पीछे वासना पीड़ित हाथी दौड़ता है. भागते भागते शिव पसीने पसीने हो गया. कुछ दूरी पर जाकर उसने मोहिनी को पकड़ लिया लेकिन वह उसके चंगुल सें निकल भागी. इसी छीना झपटी में शिव का वीर्य भी सख्लित हो गया. कथा के अनुसार जहां उसका पसीना गिरा वहां चांदी की खाने बन गईं और जहां उसका वीर्य गिरा वहां सोने की खानें बन गईं. इस तरह आज जो यह सोने चांदी की खाने पाई जाती हैं उनका निर्माण हो गया. यह ब्राह्मणों के अति धार्मिक ग्रन्थ भागवत (सं 8 अ 12) की अति धार्मिक कथा है. कथा सरित सागर में भी यह कथा पाई जाती है.

एक पल के लिए इस दृश्य की कल्पना करें कि इज्जत बचाने के लिए मोहिनी भागी जा रही है उसके पीछे कामांध सांड की तरह शिव भाग रहा है और पसीनो पसीने हुए शिव का वीर्य गिरता जा रहा है. कैसा मनोहरी दृश्य रहा होगा ब्राह्मणों के भगवान की यह करतूत!! आज कलियुग कहे जाने वाले समय में अगर कोई आदमी हमें ऐसे किसी स्त्री के पीछे भागता दिख जाए तो हम क्या करेंगे. निश्चित रूप सें जूते मार मार कर उसके काम–वासना का सारा भूत उतार देंगे. इन ब्राह्मण–देवताओं के साथ भी होना तो यही चाहिए.

यह तो विष्णु का भाग्य अच्छा था कि वह शिव के चंगुल सें छूट गया. अगर कहीं शिव ने उसे पकड़ कर अपना काम पूरा कर लिया होता तो, कल्पना करें कि क्या होता !! सोचें जरा कि आज जो यह सोने चांदी की खाने पाई जाती हैं वे कहां बनती!! विष्णु आज तक अपने गर्भ में सोने चांदी की खाने लिये घूम रहा होता.
यह और भी ज्यादा शुक्र हुआ कि विष्णु स्वयं वेश्या बन कर चला आया. कहीं अपनी जगह अपनी बीवी लक्ष्मी को भेज देता तो!! तो जो होता कल्पना ही की जा सकती है!

2. शिव आदमी सें लिंग कैसे बना इस की कथा भी कम धार्मिक नहीं है. आप्टे के अनुसार एक बार ब्राह्मणों के तीनों बड़े देवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश में झगड़ा हो गया कि कौन बड़ा है. जैसे आज के नेताओं में कुर्सी को लेकर झगड़ा होता रहता है, वैसे ही उन तीनों देवों में भी झगड़ा होता ही रहता था. इन के झगड़े के निपटारे के लिए भृगु नामक ब्राह्मण को जॅज बनाया गया. वह सबसें पहले ब्रह्मा के पास गया. ब्रह्मा ने भृगु का आदर सत्कार नहीं किया. भृगु बोला तूने ब्राह्मण का आदर नहीं किया इसलिए आज के बाद तेरा भी कोई आदर नहीं करेगा.

अतः उस के बाद ब्राह्मा की पूजा बन्द हो गई. उसके बाद वह शिव के पास गया. शिव बारे में प्रचार तो यही किया जाता है कि उसने कामदेव को नष्ट कर दिया था मगर जब भी देखें वह स्त्री मैथुन में जुटा ही मिलता था. यहां भी जब भृगु उसके पास गया वह पार्वती सें मैथुन में लीन था. शिव भी अपने काम में लगा रहा और उसने भी भृगु की कोई सुध न ली. भृगु बोला तू सदैव मैथुन कार्य में ही लीन रहता है इसलिए तू लिंग बन जा. सो शिव योनि सहित लिंग बन गया. इस प्रकार शिव लिंग बन गया.

एक बात ब्राह्मण–ग्रन्थों में बड़ी अजीब सी है कि उन्हें पढ़ कर ऐसा लगता है कि उस समय देव कहे जाने वाले लोग पशुओं की तरह खुले में ही मैथुन करते रहते थे. वर्ना भृगु को कैसे पता चला कि शिव उस समय पार्वती सें मैथुन में व्यस्त था तथा इस कारण उसकी सेवा में हाजिर नहीं हो सका.

बुद्ध महावीर काल सें पहले ब्राह्मण यज्ञों में जी भर कर पराई स्त्रियों सें व्यभिचार करते थे. लेकिन बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं के कारण ऐसे यज्ञ बन्द हो गए थे. अतः ब्राह्मणों ने अपनी ऐयाशी फिर सें चालू करने के लिए ऐसे किस्से घढ़ दिए. इस कथा सें शिव का कुछ हुआ हो या न हुआ हो ब्राह्मणों को अपनी उस ऐय्याशी को फिर सें चालू करने का साधन मिल गया जो यज्ञ बन्द होने के कारण बन्द हो गई थी. **इस बार उन्होंने लिंग को ही भगवान बना दिया.** मैथुन करते स्त्री पुरुषों की मूर्तियां मंदिरों के दरवाजों और प्रागणों में सजा दीं गईं. देवदासियों के रूप में मंदिर प्रांगण में वेश्याएं नचवा दीं.

सुहागरात सें पहले वधु के शिव लिंग स्पर्श करवाने की विधि बना दी गई. आज हम चाहे इक्कीसवीं सदी में जाने की कितनी भी डींगें मारें लेकिन आज भी अनेकों जातियां ऐसी हैं जिनमें यह प्रथा अटल रूप में चल रही है जहां सुहागरात सें पहले शिव के लिंग को स्पर्श करवाया जाता है. आज चाहे मंदिर में ब्राह्मण पुजारिनें इस काम को अन्जाम देती हों लेकिन एक समय था जब ढोल, पशु, गंवार, शूद्र और नारी मात्र ताड़न के अधिकारी माने जाते थे. तब यह लिंग छुवाई का कार्य पुरुष ब्राह्मण ही करते थे. अगर ब्राह्मणों के प्राचीन इतिहास का ध्यान करें जब उन्होंने भगवान कहे जाने वाले राम की माँ को ही नहीं बख्शा तो ऐसी स्थिति में आम नारी का शिव लिंग छुआई पर ब्राह्मणों ने क्या हाल किया होगा, हर कोई इसकी सहज कल्पना कर सकता है!

3. शिव को रूद्र भी कहा जाता है. ऋग्वेद (10.61.7) में रूद्र के जन्म की जन्म धार्मिक कथा इस प्रकार सें है : "जब पिता ने अपनी बेटी सें संभोग किया और उसे जमीन पर लिटा कर उस में वीर्य सींचा, शोभन कर्म वाले देवों ने उसी वीर्य सें व्रतरक्षक रूद्र को पैदा किया." अर्थात रूद्र का जन्म बाप और बेटी के पाप मिलन सें हुआ. इस कार्य में न केवल देवों की सहमति थी बल्कि उन्होंने ही उस वीर्य सें रूद्र को पैदा किया. ऋग्वेद ऐसे कर्म करने वालों को शोभन कर्म करने वाले देव कहता है. ऐसे पैदा होते थे ब्राह्मणों के देव!

4. ऐसी ही उसकी कथा कार्तिकेय के जन्म सें सम्बंधित है. एक बार अग्नि शिव को मिलने गया. उसने कबूतरी का रूप धारण किया हुआ था. जैसे भृगु ने पाया वैसे ही अग्नि ने भी उसे पार्वती के साथ सहवास करते पाया. शिव ने भृगु को तो माफ कर दिया मगर जैसे ही उसका वीर्य सख्लित हुआ अग्नि पर डाल दिया. अग्नि ने वह वीर्य गंगा में डाल दिया. वहां नहा रही 6 वेश्याएं उस वीर्य सें गर्भवती हो गईं. सभी ने एक एक पुत्र को जन्म दिया. उन 6 बच्चों को मिला कर एक बच्चा बना दिया गया जिसके 12 हाथ, 12 पैर, 12 आंखें 6 सिर थे. इसका नाम कार्तिकेय रखा गया.

एक पल के लिए कल्पना करें कि यह सारी घटना आपकी आँखों के सामने घटी है. क्या ऐसी नीच हरकत करने वाले को भगवान कहा जा सकता है.

5. शिव ने अग्नि देव में मूंह में वीर्यपात किया (स मु 2.50) इस करतूत पर तो कुछ कहने को शब्द ही नहीं बचते. शायद वेश्यालयों या रण्डीखानों में भी ऐसी घटनाऐं नहीं होती होंगी जैसी ब्राह्मणिक देव करते थे.

सूर्य : आर्यों के सर्वाधिक लम्पट पुरुषों में सें एक सूर्य भी था. उसके द्वारा की गई करतूतें अपने आप में मिसाल हैं.

- सूर्य ने अनेक पराई औरतों सें तो बलात्कार, समागम व्यभिचार किया ही, उसने अपनी दुहिता/दोहित्री उशा को भी नहीं बख्शा. ऐतरीय ब्राह्मण सें यही स्पश्ट रूप में कहा गया है कि सूर्य ने अपनी दुहिता सें पत्नि वाले सम्बंध बनाये. (पं. 3 अंक 3 खण्ड 33)
- आदि पर्व (अध्याय 66) में सूर्य द्वारा घोड़ी सें मैथुन का वृतांत है. (राज.89)
- सूर्य की मुख्य भोग्या संज्ञा थी जिससें उसने यम, यमुना, दोनों अश्विनी तथा शनि को पैदा किया. सूर्य की एक अन्य भोग्या अथवा "पत्नि" थी भारती. (ऋग्वेद 3.62.3)
- सूर्य ने सुग्रीव, कर्ण तथा मनु को भी पैदा किया. यह तो शुक्र हुआ कि कर्ण को एक शूद्र ने पाल पोस कर बड़ा किया जिससें उसमें मानवता के कुछ तत्व पनप सके. वर्ना वह भी मनु जैसा हरामी बनता.

ऐसे होते थे सत्ययुग के ब्राह्मणिक भगवान : अपनी बेटी की बेटी तक को अपनी हवस का शिकार बनाने वाले!

वरुण : वरूण और मित्र देवों ने मिल कर राम के कुलगुरू वशिष्ठ को पैदा करने के लिए जो कारनामा किया उसका वृतांत ''वशिष्ठ'' में दिया गया है. एक दिन वरूण को दीर्घतमा की माँ पसन्द आ गई. जैसे ब्राह्मण ऋषि किसी भी मानव की माँ बहन को भोग सकते थे, देव किसी की प्राणी, चाहे वह ब्राह्मण ऋषि या राजा ही क्यों न हो, की माँ बहन को भोग सकते थे. अतः जब देव को ब्राह्मण ऋषि की माँ पसन्द आ गई तो उसे कौन रोक सकता था. वह उसकी माँ को उठा ले गया. जैसे राम ने हनुमान को दूत बना कर लंका भेजा था, वही रीत निभाते हुए दीर्घतमा के पिता उतथ्य ने नारद को दूत बना कर वरूण के पास भेजा. जैसे हनुमान खाली हाथ लौटा वैसे ही नारद भी खाली हाथ लौट आया. अंततः राम की तरह उतथ्य ने स्वयं सागर सुखा कर अपनी बीवी को वरुण की कैद सें आजाद करा कर वापिस ले आया.

उतथ्य की यह आपबीती लगभग राम की कहानी जैसी है. कुछेक अंतर हैं जैसे कि सीता के केस में महात्मा रावण को खलनायक घोषित कर दिया गया लेकिन वरूण आज भी देव है क्योंकि जहां महात्मा रावण ने बलि वाले यज्ञ बन्द करके ब्राह्मणों की सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति प्राप्ति की राह में रोड़ा अटकाया, वरूण ऐसे यज्ञों का देव और संरक्षक बना रहा. अन्य अंतर यह रहा कि रिहा करवाने के बाद उतथ्य ने अपनी बीवी को आग में नहीं झोंका. वैसे भी राम ने लंका–युद्ध कौन सा सीता के लिए किया था. उसने तो सीता के जन्म सें पहले ही महात्मा को कत्ल करने की योजना बना रखी थी.

अतः बाबा साहिब ने बिल्कुल सत्य कहा है कि आर्य समाज के लोग अपनी स्त्रियों (कुंआरी तथा विवाहित दोनों) पर देवों का अधिकार स्वीकार करते थे. देवों को किसी भी स्त्री के साथ कहीं भी यौन सम्बंध बनाने की छूट थी. यह सम्बंध बलात्कार, व्यभिचार या समागम किसी भी रूप में हो सकते थे.

वेंकटेश्वर : एक सर्वेक्षण के अनुसार तिरूपति के वेंकटेश्वर मंदिर में भारत में सबसें अधिक चढ़ावा आता है. लोग वहां इतना दान क्यों करते हैं इसके बारे में कथा है कि एक बार तिरूपति के वेंकटेश्वर का दिल कमल सें पैदा हुई कन्या पर आ गया. जैसे कि आम ही होता है लड़की पटाने के लिए धन की आवश्यकता होती है, उसे भी धन की आवश्यकता पड़ी अतः उसने कुबेर सें कर्ज ले लिया. उस कर्ज को वापिस करने के लिए लोग उसके मंदिर में चढ़ावा चढ़ाते हैं ताकि वेंकटेश्वर कर्ज मुक्त हो जाए.

कतनी अफसोस की बात है कि हिन्दू अपने तथाकथित देवताओं की ऐयाशी के लिए उधार लिए गए कर्ज की अदायगी के लिए चन्दा देते हैं और उस चन्दे के पैसे सें पुरोहित ऐयाशी करते हैं. (समु 9.269)

विष्णु : विष्णु को मेधज भी कहा जाता है. मेध का अर्थ है वह पशु जो यज्ञ में मारा जाना है. मेधज का अर्थ है वह प्राणी जिसके लिए पशु की बलि दी जाती है. (आप्टे) इस तरह विष्णु वह देवता था जिसके लिए यज्ञ में पशु मारे जाते थे. वेदकाल में विष्णु को इन्द्र सें छोटा यानि जूनियर माना जाता था. उसे उप-इन्द्र (उपेन्द्र) कहा जाता था. समय के साथ ब्राह्मणों ने पलटी खाई और इन्द्र को बाहर फैंक कर विष्णु को सबसें बड़ा भगवान बना दिया.

विष्णु ब्राह्मणों का ऐसा भगवान है जिसने उन्हें यह बताया कि दुश्मन को समाप्त करने के लिए औरत का प्रयोग कैसे किया जा सकता है. उससें पहले इन्द्र अपनी गद्दी बचाने के लिए ऋषियों को यदाकदा वेश्याएं सप्लाई करता ही रहता था. या काम पूरा कर देने पर राम जैसे लोग हनुमानों को तोहफे में लड़कियां भेंट करते ही रहते थे मगर जो विष्णु ने किया वह गुंडागर्दी की चरम सीमा थी.

भागवत में कथा है कि महाबलि जालंधर भारत देश के सम्राट थे जिनके नाम पर आज भी पंजाब में एक बड़ा शहर बसा हुआ है. उनके राज्य में सब ओर अमन चैन और शांति थी. स्त्री आधी रात को भी हीरे, मोती, सोने चांदी के गहने पहन कर कहीं भी अकेली जा सकती थी. उसे अपनी इज्जत अथवा गहनों की कोई चिंता न होती थी. कोई ब्राह्मण, कोई ऋषि, कोई देवता उसकी ओर आंख उठा कर देखने की हिम्मत नहीं कर सकता था. यह ब्राह्मणों का सत्ययुग न था कि ब्राह्मण ऋषि दीर्घतमा राह चलती किसी भी स्त्री की इज्जत पर हाथ डाले ले, केसरी की पत्नि अंजनि को कोई पवन देवता पकड़ कर बलात्कार कर ले और हनुमान पैदा कर दे. न ही उन के राज्य में ब्राह्मण–ऋषि होते थे जो गंगा में नहाती वेश्याओं को देख कर अपना गो–धर्म जगा लेते थे.

भागवत के अनुसार इस अमन शांति सें देवता परेशान हो उठे. उनकी मीटिंग हुई जहां यह प्रस्ताव आया कि अगर असुर सम्राट का शासन ऐसे ही चलता रहा तो लोग देवों को तो भूल ही जाएंगे. अतः यह फैसला किया गया कि सम्राट जालंधर की हत्या के उपाय सोचे जाएं. जैसे महाराज रावण की हत्या के लिए विष्णु ने अवतार लिया था वैसे ही इस बार भी यह हत्या करने की सुपारी उसे ही सौंपी गई.

विष्णु ने पता लगाया कि सम्राट जालंधर की धर्मपत्नि वृंदा उनकी सलाहकार हैं. उनकी सलाह पर ही वे इतने बड़े राज्य को संभाले हुए हैं. अतः माफिया सरगना की तरह विष्णु ने वृंदा को ही समाप्त करने का प्लान बनाया. एक रात जब महारानी वृंदा अकेली थीं तो विष्णु ने बलात्कार करके उनकी हत्या कर दी. जब सम्राट अपनी अर्धांगिनी के गम में डूबे हुए थे तो विष्णु ने उनकी भी हत्या कर दी. **दुनिया के इतिहास में यह पहली घटना थी जब एक गुंडे ने अपने विरोधी को हराने के लिए उसकी पत्नि सें बलात्कार किया हो. इस प्रकार विष्णु ने अपने गुंडे साथियों को अपने विरोधी को हराने की रामबाण दवा बताई.**

भागवत में यह कहानी लिखने वाला चाहे कोई भी रहा हो मगर उसने एक बात सही लिखी कि महारानी वृंदा ने बलात्कारी विष्णु का मूंह काला कर दिया. राम और कृष्ण इसी लिए काले पैदा हुए लगते हैं. समाज ने इस घटना को बुरी तरह सें लिया और आगे सें बलात्कारी का मूंह काला करने की परिपाटी बना दी तथा अवैध सम्बंधों के लिए "मूह काला करना" की लोकोक्ति भी बनाई गई.

दुश्मन को हराने के लिए औरत के प्रयोग की दूसरी घटना मोहिनी बन कर असुरों सें अमृत छीनने की है. इस घटना का वर्णन शिव के कारनामों में किया गया है. विष्णु काम वासना में इतना लिप्त रहता था कि कृष्ण के रूप में उसका एक अवतार तो मात्र ऐयाशी करने के लिए ही बना है.

5.3 ब्राह्मणवाद के ध्वज–वाहक : हरामी और नपुंसक नायक

<u>अरविंद घोष योगी</u> : वह एक ब्राह्मण था जिसकी फोटो नित्य संसद समाचार में बाबा साहिब अम्बेडकर के साथ दिखाई जाती है जबकि अरविंद के पूरे खानदान का भारतीय संविधान सें दूर दूर तक का रिश्ता भी नहीं है. जो कुछ अरविंद ने प्रचारित किया उसका भारतीय संसदीय व्यवस्था सें दूर का भी नाता नहीं है. जहां तक उसकी जीवन कथा का सम्बंध है 24 साल का होने पर सन् 1906 में उसने बंगाल विभाजन के विरूद्ध चल रहे आंदोलन में भाग लिया. 1908 में बम फैंकने के जुर्म में कैद की सजा हुई. जेल में घुसते ही उसकी देशभक्ति हवा हो गई. आंदोलन ही नहीं छोड़ा बल्कि देश छोड़कर ही भाग लिया. पांडिचेरी पहुंचा. रूप बदला. ब्राह्मण तो था ही सो उनके हथकण्डे अपनाने में कोई दिक्कत नहीं आई. आत्माओं को बुलाना, ब्रह्मा के दर्शन कराने का दावा, काली मन्त्र, योग आदि के ढकोसले अपना लिए. आश्रम बना लिया. कमाई होने लग गई. देश और देशभक्ति गए भाड़ में.! 1918 में बीवी मर गई लेकिन उसे देखने भी नहीं आया. डरता होगा या सरता होगा. ध्यान लगाने के चक्कर में एक दिन अफीम कुछ ज्यादा चढ़ा गया परन्तु बच गया. अंततः 1950 में गुर्दे फेल होने के कारण मर गया. देश के लिए उसने क्या किया कि उसकी फोटो बाबा साहिब के साथ दिखाई जाती है.

<u>अर्जुनः</u> अर्जुन के बारे में सभी को पता है कि वह पांडवों का बीचका भाई था. उसे महान यौद्धा बताया जाता है मगर उसकी हकीकत कुछ इस प्रकार सें थी.

~ उसकी माँ कुन्ती ने इन्द्र के साथ व्यभिचार करके उसे पैदा किया. इस पाप कर्म में अर्जुन का दोष यह रहा कि उसे नर का अवतार बताया जाता है. अवतार यानि जो अपनी मर्जी सें जन्म लेता है. अतः अर्जुन ने अपनी माँ को गैर मर्द सें दूषित कराके जन्म धारण किया.

~ द्रोपदी को उसकी पत्नि यानि अर्धाग्नि कहा जाता है मगर उसे जीत कर घर में घुसने सें पहले ही युधिष्ठर ने उसमें अपना तथा अपने भाईओं का हिस्सा डलवा लिया. जब बड़ा भाई होने का लाभ उठाते हुए युधिष्ठर ने द्रोपदी के साथ पहली सुहागरात मनाई तो अर्जुन ऐसा शांत रहा जैसे द्रोपदी मुफ़त का माल हो.

~ द्रोपदी पर भाईयों का कब्जा हो जाने पर, ब्राह्मणिक गो–धर्म का पालन करते हुए अर्जुन ने यहां वहां मूँह मारना शुरु कर दिया. शायद कृष्ण को उस पर तरस आ गया तभी उसने अपनी बहन सुभद्रा उसके हाथों उठवा दी. लेकिन उसने तो ब्राह्मणिक गो–धर्म का पालन करते ही रहना था, अतः मणिपुर की चित्रगंधा के वभ्रुवाहन पैदा कर दिया. फिर नागराज कौरण्य की पुत्री ऊलुपी सें इरावत पैदा कर दिया. (आदि पर्व 215)

~ सबसें बड़ी बात जो उसके बारे में कही जाती है वह यह है कि अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर यानि तीर चलाने में सबसें उत्तम खिलाड़ी था. इसीलिए भारत की ब्राह्मण सरकार ने उसके नाम पर "अर्जुन पुरस्कार" की स्थापना की है जो सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को दिया जाता है. महावीर एकलव्य की धनुर्विद्या का कमाल देख कर तो अर्जुन और उसका गुरू द्रोण दोनों चकरा गए थे. तब अर्जुन की सहमति सें द्रोण ने महावीर एकलव्य का अंगूठा काट लिया ताकि वे तीर ही न चला सकें. **और अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित कर दिया गया.**

~ सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर महावीर एकलव्य को अपंग करने के बाद द्रोपदी को जीतने की प्रतियोगिता में अर्जुन को चुनौती दी उसी के माँजाए भाई कर्ण ने! लेकिन उसे भी शूद्र बता कर प्रतियोगिता सें बाहर कर दिया गया. इस प्रकार "सर्वश्रेष्ठ तीरअंदाज अर्जुन" द्रोपदी को जीतने में सफल कर दिया गया. ऐसे आदमी के नाम पर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का इनाम देना, धूर्तता ही है.

~ अर्जुन के बारे में सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर के अतिरिक्त यह भी दावा किया जाता है कि वह महान यौद्धा था. उसकी वीरता के अनेकों किस्से घढ़े गए हैं. सबसें बड़ा किस्सा उसके द्वारा कौरव पक्ष के समस्त वीरों को मारने का है. **जबकि सच्चई यही है कि उसने समस्त कौरव यौद्धा धोखे और कायरता सें मौत के घाट उतारे. एक भी यौद्धा ऐसा नहीं जो उसने आमने सामने लड़ कर मारा हो. कर्ण, भीष्म, दुर्योधन, द्रोण आदि सभी धोखे सें मारे गए. जैसे धोखे सें उसने सर्वश्रेष्ठ तीरअंदाज की डिग्री ली वैसे ही धोखे सें उसने अपने गुरू मामा चाचा ताया दादा की हत्या कर दी.**

~ महाभारत के बाद अर्जुन ने अश्वमेध यज्ञ किया. उसका घोड़ा वभ्रुवाहन ने पकड़ लिया. बाप बेटों में युद्ध हो गया. महाभारत के युद्ध में तो कृष्ण ने धोखधड़ी सें उसे जितवा दिया था तथा कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ने वाली उसीके खानदान के नपुंसक "योद्धाओं की भीड़" थी. यहां वह आमने सामने लड़ा तथा सामने वाला मर्द था. एक मर्द सें लड़ते ही सच्चाई सामने आ गई. वभ्रुवाहन ने उसे मौत के घाट उतार दिया. बाद में उलूपि ने उसे बचा लिया.

~ जब एक दिन कृष्ण महावीर एकलव्य के बाण का निशाना बना और मारा गया तो सर्वश्रेष्ठ तीरअंदाज तथा महान यौद्धा की असलीयत सब के सामने आ गई. अर्जुन जब कृष्ण की लाश का अंतिम संस्कार करके उसकी बीवीयों, रखैलों तथा प्रेमिकाओं को लेकर जा रहा था कि कुछेक अहीरों और भीलों ने उसका रास्ता रोक लिया. **घूमती मछली की आँख में निशाना लगाने वाले तथा 18 अक्षोहिणी सेना को मार देने वाले "सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर" सें कुल 18 भीलों का निशाना नहीं लगा. वे कुछेक भील कृष्ण के कुनबे की सारी औरतों और लड़कियों को हांक ले गए. ऐसा वीर था अर्जुन!!**

भीम : महाभारत में भीम का पात्र अलादीन के चिराग के जिन्न जैसा है. अंतर मात्र इतना है कि जिन्न टोकरे भर भर कर माँस नहीं खाता था. न ही जिन्न अपने दुश्मनों की छाती तोड़ कर लहू पीता था. भीम को ऐयाश बाप का आवारापन खून में मिला था. जैसे बाप पवन ने गैरों की बीवियों सें अवैध सम्बंध बनाए, भीम ने भी हिडिम्बा नामक राक्षस कन्या के घटोत्कच पैदा किया तथा काशी की जलंधरा के सर्वज्ञ पैदा किया. (संस्कृति)

भीष्म : भीष्म गंगा का पुत्र था. गंगा ने बिना शादी किए ही कुंआरेपने में भीष्म को जन्म दिया था. (धर्म और समाज 202) पांडवों का पितामह यानि उनके बाप का बाप था. वास्तव में अपनी करतूतों में वह सबका बाप था. अतः उसे पितामह कहा गया जबकि उसके न कोई बेटा था और न कोई पोता था.

उसका असली नाम देवव्रत था. एक बार उसके बाप शांतनु का दिल सत्यवती पर आ गया. सत्यवती वही लड़की थी जिसके साथ बलात्कार करके पराशर ने व्यास पैदा किया था. वैसे तो स्मृतियों में शूद्र को देखना भी पाप करार दिया गया है और महाभारत में घनुर्विद्या सीखने वाले शूद्रों के अंगूठे काटने का भी विधान है लेकिन महाभारत की कहानी में टविस्ट लाने के लिए कथाकार ने किस्सा घढ़ा कि सत्यवती के मछुआरे बाप ने राजा के साथ अपनी बलात्कार की शिकार तथा कुंआरेपन में ही माँ बन चुकी बेटी की शादी राजा सें करने सें इंकार कर दिया.

राजा उदास होकर घर बैठ गया. बेटे भीष्म को जब अपने बाप की उदासी का पता लगा तो वह अपने बाप का रिश्ता लेकर सत्यवती के बाप के पास गया. शर्त तय हुई कि सत्यवती की कोख सें पैदा बालक ही गद्दी पर बैठेगा और यहां तक कि भीष्म की औलाद भी गद्दी पर दावा नहीं करेगी. भीष्म बोला वह बच्चे ही पैदा नहीं करेगा. **बस उसकी बच्चे पैदा न करने की प्रतिज्ञा करते ही आर्य जगत में भूचाल आ गया. आर्य होकर स्त्री सें दूर रहेगा, ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता था. बस उसका नाम भीष्म रख दिया गया.**

भीष्म ने प्रतिज्ञा तो कर ली मगर अपने नपुंसक भाई विचित्रवीर्य के लिए अंबा अंबिका अंबालिका को उठा कर ले आया. इसी प्रथा का निर्वाह करता हुआ उसका पोता अर्जुन कृष्ण की बहन सुभद्रा को उठा लाया.

भीष्म सारी उम्र दुर्योधन का नमक खाता रहा मगर

युद्धिष्ठर : ब्राह्मणधर्म में युद्धिष्ठर को सबसें बड़ा सत्यवाचक, धर्मात्मा, पुण्यात्मा बताया गया है. उसे धर्म का अवतार बताया जाता है. उस के मूंह सें निकला हर शब्द धर्म का स्वरूप बताया गया है. ब्राह्मणों द्वारा की जाने वाली कथाएं सुन कर, टी वी रेड़ियो पर उसकी कथाएं देख कर तथा पाठ्य पुस्तकों में उसका चित्रण पढ़ कर

ऐसा लगता है कि उससें बढ़ कर भला आदमी न कभी हुआ न कभी हो सकेगा. लेकिन ब्राह्मण–ग्रन्थों में जो उसके कारनामे लिखे गए हैं, उन्हें देखते हुए एक प्रसिद्ध राजस्थानी लोकोक्ति उस पर पूरी फिट बैठती है कि **गधे को गोरख नाथ कहा गया है.**

महाभारत में वर्णित घटनाओं सें उसके चरित्र की निम्न खूबियां सामने आती हैं :

1. पहली यह कि युद्धिष्ठर **हद दर्जे का जुआरी** था. भूतो न भविष्यति. उसके जैसा जुआरी न कभी हुआ न कभी होगा. दुनिया के किसी और धर्म में ऐसी मिसाल नहीं मिलती जहां उनके आदर्श पुरुष ने जूए में अपने छोटे भाई की पत्नि दांव पर लगाई हो. या दूसरे ढंग से कहा जाए तो विश्व में ब्राह्मण–धर्म ही मात्र ऐसा सिस्टम है जहां अपने छोटे भाई की पत्नि को जूए में हारने वाले को धर्मात्मा कहा जाता है. वह इस हद तक जूए का आदी था कि जब उसे दुर्योधन सें जूए का न्योता मिला तो उसकी माँ सहित सभी सम्बंधियों ने उसे जूआ खेलने सें मना किया. माँ की बात मान कर वह द्रोपदी को भोगने को तो तैयार हो गया मगर उसी माँ, तथा दादा के रोकने पर भी वह जूआ खेलने सें बाज न आया.

उसने जूआ खेला. दांव पर दांव लगाए. पहले अपनी सम्पत्ति हारा, फिर अपने भाईयों को हारा और अंत में छोटे भाई की पत्नि को भी हार गया. **बस एक चीज की कसर रह गई कि वह अपनी माँ कुन्ती को दांव पर लगाना भूल गया.** दुर्योधन ने फिर भी अपनापन दिखाया. उसने उसे सारा धन लौटा दिया. जुआरी की जेब में फिर सें धन आ गया तो वह क्यूंकर टिकता. उसने फिर जूआ खेला. फिर सब कुछ हार गया. यहां तक कि राज्य में रहने का अधिकार और अपनी आजादी भी हार गया. लेकिन जूए में हारने के बाद भी युद्धिष्ठर ने राज्य में हिस्सा मांगा. उसका राज्य में हिस्सा मांगना नाजायज ही नहीं बल्कि बेशर्मी की हद पार करने समान थी. दुर्योधन ने एक बार फिर अपनापन दिखाया. उसने पांचों भाईयों और द्रोपदी को अपनी गुलामी सें आजाद कर दिया.

हम सब जानते हैं कि दशरथ ने कैकेयी सें इस शर्त पर शादी की थी कि उसके गर्भ सें उत्पन पुत्र ही राजगद्दी पर बैठेगा. जब राम ने धोखे सें गद्दी हथियानी चाही तो कैकेयी ने अपने बेटे के लिए उसका हक मांगा और धोखेबाज राम के लिए देश निकाला मांगा तो इस बात पर चिल्लपों मचाई जाती है लेकिन जब युद्धिष्ठर ने सबको देश निकाला करवा दिया तो भी उसे धर्म–पुत्र ही कहा जाता है. वन पर्व (34.3) के अनुसार युद्धिष्ठर ने दुर्योधन का राज्य और उसका राजपद छीनने के लिए ही जूए का दांव खेला था मगर हो उलटा गया. वह अपना भी सब कुछ हार गया.

द्रोपदी ने आपत्ति उठाई कि जब युद्धिष्ठर पहले ही अपने को हार चुका था तो वह उसे कैसे दांव पर लगा सकता है. आर्यों के लिए यह उनके धर्म का प्रश्न था. **किसी ने यह नहीं पूछा कि छोटे भाई की पत्नि को दांव पर लगाने का अनैतिक व पापपूर्ण कार्य युद्धिष्ठर ने क्यों किया**. उस पूरी सभा में सें एक भी प्राणी, भीष्म हो या विदुर, यह नहीं बोला कि तथाकथित धर्मपुत्र युद्धिष्ठर ने पाप किया है. और बेचारी द्रोपदी की त्रास्दी देखिए जिस आदमी के विरूद्ध उसने आपत्ति उठाई उसी को इस प्रश्न पर निर्णय करने को कहा गया. चोरी के केस में चोर को ही जज बना दिया गया. अतः जो उत्तर एक शातिर चोर देता वही उत्तर युद्धिष्ठर ने दिया. वह बोला धर्म का रहस्य अति गूढ़ है. इस लिए इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता.

होना तो यह चाहिए था कि ऐसे **पापी जुआरी का काला मूंह करके, गले में जूतों की माला डाल कर, गधे** पर उलटा बैठा कर, पूरे नगर का चक्कर कटवाया जाना चाहिए था ताकि फिर कोई ऐसा पाप करने की हिम्मत न करता. लेकिन ब्राह्मणों के लिए तो जूआ खेलना और छोटे भाई की पत्नि को हारना धर्म की बात थी. इसी काम के लिए ही तो उनका भगवान बार बार जन्म लेता है. पाप या अधर्म का अन्त करने के लिए जन्म लेता तो सन 47 में जन्म लेता जब लाखों बच्चे बूढे औरतें दरिंदगी के शिकार बने. या सन 82–92 में जन्म लेता जब पंजाब में हजारों मासूमों का कत्लेआम हुआ या फिर सन 84 में जन्म लेता जब हजारों बेगुनाह सिख मार दिए गए या फिर 2002 में जन्म लेता जब गुजरात में बीजेपी ने हजारों मासूमों को मार डाला. मगर वह तो जुआरियों हत्यारों को बचाने के लिए ही जन्म लेता है. अगर महा–भारत की कथा सच्ची है तो युद्धिश्ठर के इस पाप कर्म की वजह सें लाखों लोगों की जानें गईं.

2. दूसरी यह कि वह हद दर्जे का **लम्पट कामी** पुरुष था. इस मामले में युद्धिष्ठर गिद्ध की तरह था. जैसे गिद्ध स्वयं शिकार नहीं कर सकता और वह केवल मरे हुए या लाचार प्राणियों को ही अपना भोजन बनाता है वैसे ही युद्धिष्ठर ने लाचार द्रोपदी को अपना शिकार बनाया. इस घिनौने काम में उसकी चरित्रहीना माँ ने बखूबी साथ निभाया. कुन्ती को डर था कि कहीं उसकी बहू उसे अनेकों की भोग्या होने का ताना न दे दे इसलिए उसने उसका पहले ही इलाज कर दिया.

जब अर्जुन ने द्रोपदी को दांव में जीत लिया तो उसका रूप लावण्य देख कर धर्म–पुत्र युद्धिष्ठर का मन डोल गया. उसने मक्कारी सें छोटे भाई की पत्नि द्रोपदी सें यौन सम्बंध बनाने की साजिश गढ़ी. कथा है कि पांडव द्रोपदी को जीत कर घर पहुंचे. युद्धिष्ठर बोला माँ हम एक चीज लाए हैं कुन्ती बोली बांट कर लेना.

युद्धिष्ठर को मनोवांछित उत्तर मिल गया. उसने तुरंत व्याख्या दे डाली कि माँ का आदेश भगवान सें भी बढ़कर है. उसे हर हाल में मानना चाहिए. अतः द्रोपदी सब की पत्नि बन कर रहेगी.

कुन्ती ने जो उत्तर दिया उसकी सीधी सी बात अपने स्वार्थ के अनुसार ढाल ली. और वह बोला माँ तो भगवान सें भी बढ़कर होती है. चाहे गलती सें ही दिया गया हो उसका आदेश टाला नहीं जा सकता. लेकिन जब वह जूआ खेलने बैठा तो कुन्ती सचमुच उसके आगे रोई गिड़गिड़ायी कि जूआ मत खेलो. उसकी दूसरी माँ गंधारी भी रोई गिड़गिड़ाई. उसका दादा भीष्म भी चीखा चिलाया लेकिन अपनी जूए की लत पूरी करने के लिये उसने "भगवान सें भी बढ़कर माँ" को दरकिनार कर दिया. तब वह नहीं बोला कि माँ का आदेश तो भगवान सें भी बढ़कर है. (सभापर्व 76.20)

ऐसे ही मक्कार लोगों को धर्म–पुत्र कहते हैं ब्राह्मण–धर्म के प्रवर्तक. उसकी साजिश सफल हुई. अपनी धूर्ततापूर्ण बुद्धि की बदोलत द्रोपदी के साथ पहली सुहागरात भी उसी ने ही मनाई. युद्धिष्ठर की लम्पटता के कारण द्रोपदी को विशालकाय भीम और टुच्चु से नकुल सहदेव की भोग्या भी बनना पड़ा.

3. तीसरा यह कि वह हद दर्जे का **झूठा ही नहीं बल्कि मक्कारी भरा झूठा** था. आम आदमी झूठ बोलता है तो अपना बचाव करने के लिए बोलता है लेकिन युद्धिष्ठर ने जब भी झूठ बोला तो दूसरों का नुक्सान करने के लिए ही झूठ बोला. उदाहरणतः द्रोपदी को पाने के लिए उसने अपनी माँ सें झूठ बोला कि वह कोई चीज लेकर आये है. द्रोपदी कभी भी "चीज" नहीं थी. अश्वत्थामा के मरने की झूठी खबर भी उसने अपने गुरू द्रोण को मारने के लिए बोला. और तो और बनवास में जब पांडव अज्ञातवास करने के लिये विराट के दरबार में पहुंचे तो भी युद्धिष्ठर ने स्वयं को ब्राह्मण बता कर झूठ बोला.

4. वह अत्यंत चालाक, चरित्रहीन और धोखेबाज था. द्रोण को मारना था तो वह शंख की पों पों में बोला कि अश्वत्थामा मर गया. जब उसका मन द्रोपदी पर डोल गया तो उसने अपनी माँ कुन्ती सें द्रोपदी को जीतने की बात इस प्रकार सें बताई कि उसकी माँ से उसे मन चाहा उत्तर मिले. उसने अपनी माँ सें कहा कि वे कोई चीज लेकर आये हैं. शातिर युद्धिष्ठर को पता था कि ऐसी बातों पर हर माँ यही कहती है कि बांट कर लेना.

ऐसे में मन में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि युद्धिष्ठर को क्यों महान कहा गया? क्यों उसे "धर्मपुत्र" कहा गया? इसका सीधा सा उत्तर तो यही है कि ब्राह्मण अति दर्जे के लम्पट होते थे. अतः जो ऐसे कामों में उनका "गूरू" था उसे तो महान बताना ही था. दूसरी बात यह थी कि युद्धिष्ठर शातिर गुंडे की तरह था. वह अकेला माल नहीं हड़पता था बल्कि ब्राह्मणों को उनका पूरा हिस्सा देता था. और यह तो कहने की बात ही नहीं हैं कि दक्षिणा देकर ब्राह्मण सें कुछ भी करवाया जा सकता है.

युद्धिष्ठर ने समय समय पर अश्वमेध यज्ञ किए जिससें ब्राह्मणों को न केवल भरपेट दारू मीट मिला बल्कि द्रोपदी तक भोगने को मिली. (देखें यजुर्वेद में यज्ञ की विधि) जब युद्धिष्ठर ने यज्ञ किया तो हर ब्राह्मण को 30–30 दासियां सेवा करने के लिए दीं. ब्राह्मण को तो तीस टक्के मिल जाएं तो वह अपने स्वामी के बच्चे दीवार में चिनवाने को तैयार हो जाता है. 30 जवान दासियां दान देने वाले ऐसे दानी को कौन "व्यास" नहीं धर्मपुत्र कहेगा!! युद्धिष्ठर को सैंकड़ों जवान दासियां तो कृष्ण ने दीं थीं चौदह हजार द्रुपद लेकर आया था. सौ सौ दासियां उसने द्रोपदी जीतने पर अलग सें दी थीं. (आर्यनीति 38) अतः उसने आगे सप्लाई कर दीं.

जिस धर्म में ऐसे नीच जुआरियों और ऐयाशों को धर्म पुत्र कहा जाए उससें नीच धर्म और कौन सा होगा!!

<u>**दशरथ**</u> : अंग्रेजी भाषा में कहा जाए तो दशरथ एक "Typical Perfect Arya" यानि उदाहरणीय पक्का आर्य था. वह अपने खानदानीय आर्यों की तरह नपुंसक था. उसने भी अपनी रघुकुल रीत का पालन करते हुए नियोग द्वारा अपना वंश आगे बढ़ाया. उसने भी अपने अयोध्या कसबे में सोने समान वेश्यायें पालीं. उसने आर्य राजाओं की तरह ब्राह्मणों को दान दिया और अपनी स्तुति लिखवाई. उसके पास केवल सुमन्त नाम का एक नौकर था जो उसका महामंत्री भी था, उसका रथवान भी था रसोइया भी था. वह अकेला सब कुछ था. मगर ब्राह्मणों ने उससें धन और स्त्रियों का दान लेकर उसे चक्रवर्ती राजा लिख मारा.

औरों की तो छोड़ो यहां तक कि उसके पड़ोस की मिथिला नगरी के राजा जनक ने जब सीता को दांव पर लगाया कि जो भी धनुष उठाएगा सीता उसे दे दी जाएगी. उस समय भी जनक ने सभी राजाओं को बुलाया लेकिन दशरथ को टोका तक नहीं. **सीता को जीतने के लिए जनक ने महात्मा रावण को तो न्योता दे दिया लेकिन दशरथ को न बुलाया. बस इतना बड़ा चक्रवर्ती राजा राजा था दशरथ.**

और तो और वह बेटों सें धोखा करने में भी पक्का आर्य था. **आर्य समाजी बाप की रीत निभाते हुए उसने अपने एक बेटे का जायज हक मार कर दूसरे बेटे को नाजायज फायदा देने के लिए अपने ही बेटे के साथ धोखा किया.** सभी जानते हैं कि दशरथ ने कैकेयी सें शादी करते समय वचन दिया था कि उसकी कोख सें पैदा पुत्र ही गद्दी पर बैठेगा. लेकिन दशरथ ने अपना वचन तोड़ते हुए कैकेयी के पुत्र भरत को ननिहाल भेज दिया तथा पीछे

सें गुपचुप राम को गद्दी सौंपने की साजिश की. राम और दसरथ दोनों जानते थे कि गद्दी का असली हकदार भरत ही है मगर दोनों ने अपना आर्यक हरामीपना दिखाया.

दशरथ ने अपनी रघुकुल की आर्य रीत निभाते हुए अपनी रानियों के बच्चे पैदा करने का काम अपने जवांई अथवा जमाता ऋश्यश्रृंग को सौंपा. ऋश्यश्रृंग भी आर्यपने में कम नहीं था. वह भी जंगल में सें वेश्याओं के साथ बाहर आया था और फिर बिना रिश्ते की परवाह किए अपनी सासों को गर्भवती कर गया. इसी बात पर कबीर साहेब ने साखी कहीः देखो लोगो राम की सगाइ! हम बहनोई, राम हमारा साला!! हमहि बाप, राम पुत हमारा !!!
अर्थात राम का सगापाना देखो. जो राम का बहनोई है वही उसका बाप भी है!

कौटिल्य : उसको ब्राह्मण बताया जाता है जिसने नन्द वंश (शूद्र वंश) के विरूद्ध बगावत की तथा उसे नष्ट कर दिया. इस काम में उसने एक अन्य शूद्र का सहयोग लिया जिसका नाम था चन्द्रगुप्त मौर्य. यह अमान्य सी बात है कि कोई ब्राह्मण एक शूद्र कुल का नाश करने के लिए दूसरे शूद्र का सहयोग ले तथा फिर उस शूद्र को राजा बना कर स्वयं उसके अधीन नौकरी करे!!

भारतीय इतिहास की यह एक अति महत्वपूर्ण घटना है कि ब्राह्मण होते हुए भी कौटिल्य ने स्वयं हथियार नहीं उठाए बल्कि एक शूद कुल का राज्य नष्ट करके दूसरे शूद्र को राजा बनाया और फिर स्वयं उसके अधीन नौकर बन कर रहा.

तो इसका अर्थ यह हुआ कि उस समय तक ब्राह्मणों ने हथियार उठाना शुरू नहीं किया था. महाभारत की कहानी बाद में घढ़ी गई जिसमें एक ब्राह्मण (द्रोण) को हथियार चलाने का अध्यापक दिखाया गया है. **इससें महत्पपूर्ण यह तथ्य भी है कि परशुराम की कथा बाद में घढ़ी गई** जिसने ब्राह्मण होते हुए भी हथियार उठाए और क्षत्रियों का समूल नाश कर दिया.

☞ **वास्तव में शूद्र (चन्द्रगुप्त मौर्य) को नीचा दिखाने तथा ब्राह्मण को ऊँचा दिखाने के लिए कौटिल्य के ब्राह्मण होने की कहानी घढ़ी गई. अगर कौटिल्य ब्राह्मण होता तो वह कभी भी शूद्र चन्द्रगुप्त की सहायता नहीं करता. और एक शूद्र कुल को नष्ट करके उसी कुल के दूसरे व्यक्ति को वह कभी राजा बनने नहीं देता.**

☞ **इसका अर्थ यह हुआ कि या तो कौटिल्य नाम का प्राणी हुआ ही नहीं. अगर वह हुआ भी था तो वह भी किसी दलित परिवार सें ही था. ब्राह्मणों की यह सनातन नीति रही है कि जो भी ढंग का व्यक्ति होता है उसे वे ब्राह्मण घोषित कर देते हैं. कबीर साहेब को उन्होंने विधवा ब्राह्मणी की नाजायज औलाद घाषित कर दिया, रैदास साहेब को पिछले जन्म का ब्राह्मण शोषित कर दिया. इतिहासकार कल्हण, लेखक कालिदास व बाण भट्ट, वैज्ञानिक आर्यभट्ट जैसों को वे पहले ही ब्राह्मण घोषित कर चुके हैं.**

भारत के इतिहास में मात्र एक बार ऐसा हुआ है जब किसी विदेशी हमलावर को हार का मूंह देखना पड़ा था और वह अवसर था शूद्र चन्द्रगुप्त के हाथों सेल्यूकस की हार! इससें पहले सिकन्दर ने पूरा विश्व जीता मगर वह भी सम्राट नन्द के राज्य में घुसने की हिम्मत नहीं कर पाया. वह केवल आम्भी और पौरस जैसे क्षत्रिय रजवाड़ों को हरा कर ही लौट गया. **भारत का कोई क्षत्रिय राजा कभी किसी भी विदेशी हमलावर सें जीत नहीं पाया.** वे तो सिर्फ दलितों शोषितों का खून चूसने में ही अपनी बहादुरी दिखाते रहे!! या फिर अकबर जैसों को अपनी बहन बेटियां सप्लाई करके राजा बनते रहे.

सम्राट चन्द्रगुप्त की रगों में बहादुर शूद्र सम्राट नन्द का खून दौड़ रहा था. उन्हें अपनी बहादुरी दिखाने के लिए किसी ब्राह्मण की सहायता दरकार न थी. अतः कौटिल्य का किस्सा व्यर्थ में घढ़ा गया.

राजा राम मोहन राय : मोहन राय ब्राह्मणवादियों द्वारा समाज सुधार करने के ढकोसले की एक सटीक उदाहरण है. वह एक ब्राह्मण था. तुलसी की जात का कट्टर ब्राह्मण! उसने कभी अपनी पत्नि के हाथ का बना खाना नहीं खाया क्योंकि उसकी नजर में 'ढोल, गंवार, पशु, शूद्र अर नारी' मात्र मारने पीटने के लिए ही होते हैं. अतः वह मानता था कि जैसे शूद्र के हाथ सें बना भोजन खाना पाप है उसी तरह स्त्री के हाथ बना भोजन खाना भी पाप है. इसलिए वह केवल ब्राह्मण रसोइये द्वारा बना भोजन ही खाता था. माँ का दूध भी उसने मजबूरी में ही पिया होगा या वह भी किसी ब्राह्मण रसोइये सें ही पिया, कहीं जिक्र नहीं मिलता!

ऐसे आदमी को समाज सुधारक कहा जाता है. स्कूलों कॉलेजों में उसके पाठ पढ़ाये जाते हैं कि उसने सती प्रथा के विरूद्ध आवाज उठाई. सती प्रथा के बदले में उसने जो समाधान बताया वह सती होने सें भी बुरा था. उसने बाल विधवाओं का विवाह अधेड़ उम्र के लोगों सें करने की बात कही. इसी नियम के तहत उसने स्वयं अधेड़ उम्र (लगभग 50साल की उम्र) में एक छः सात साल की विधवा बालिका सें विवाह किया. नतीजा बेचारी फिर सें विधवा हो गई.

रामानन्द : रामानन्द एक ऐसा ब्राह्मण पात्र है जिसे हर दलित सन्त का गुरू बता दिया जाता है जबकि उसने कोई सन्त सरीखा आचरण ही नहीं किया जिससें उसे सन्त भी कहा जा सके. लगभग 500 साल पहले भारत के दलित सन्तों ने ब्राह्मणवाद के विरूद्ध आंदोलन चलाया. उस आंदोलन के विरूद्ध ब्राह्मणों को कोई हल नहीं सूझा तो उन्होंने यह बात फैलाना शुरू कर दी कि उस समय के तमाम दलित वर्ग के सन्त रामानन्द नामक ब्राह्मण के शिष्य थे. जबकि सच्चाई यह है कि तमाम दलित सन्त उसी सत्ता या विचारधारा के विरुद्ध आवाज उठा रहे थे जिस के सिंहासन पर रामानन्द विराजमान था.

अतः रामानन्द को दलित सन्तों का गुरु बताना वैसा ही है जैसे किसी गुंडे को उन लोगों का गुरु बताना जो उसकी गुंडागर्दी के विरुद्ध आवाज उठा रहे हों.

वास्तविक्ता यह है कि रामानन्द कट्टर ब्राह्मणवादी था. वह दलितों, मुस्लमानों सें सीधे बात भी नहीं करता था बल्कि उनसें बात करते समय बीच में पर्दा लटका देता था कि कहीं उनको देखने सें वह अपवित्र न हो जाए. (राधा स्वामी कृत ''सन्त कबीर'')

इसके विपरीत कबीर साहिब ब्राह्मण रामानन्द के कट्टर विरोधी थे, सीना ठोक कर कहने वाले :

तू अगर बामण बामणी जाया तो आन बाट क्यों नहीं आया!!

अर्थात तू अगर ब्राह्मणी के घर जन्म लेने के आधार पर ब्राह्मण है तो तूझे माँ के गर्भ सें पैदा होने की बजाए अन्य रास्ते सें जन्म लेना चाहिए था.

रैदास साहेब ने कहाः

रैदास ब्राह्मण न पूजिए जो होवे गुणहीन, पूजै चरण चंडाल के जो हो प्रवीण!!

अर्थात गुणों के आधार पर ही किसी को बड़ा या छोटा माना जाना चाहिए. जन्म के कारण ब्राह्मण को ऊंचा नहीं माना जाना चाहिए. गुणवान चंडाल भी पूजनीय है.

रामानन्द को ऐसा कहने पर भी अगर कोई दलित सन्तों को उस ब्राह्मण का चेला बताए तो यह तो उस व्यक्ति की धूर्तता ही है. रामानन्द वास्तव में घमण्डी ब्राह्मण था. एक बार उसका सामना गुरू कबीर सें हो गया. जब उसने कबीर साहेब सें बहस की तो उसे अहसास हुआ कि इतनी उम्र उसने व्यर्थ में ही गंवा दी है. कबीर साहेब सें श्रमण धर्म का ज्ञान लेकर वह उनका शिष्य बन गया. गुरु ग्रन्थ साहेब में उसका एक पद है जिसमें उसने इस बात को स्वीकार किया है कि गुरु कबीर ने उसे सम्यक मार्ग दिखाया है. उन्हें अपना गुरू स्वीकार करने के बाद वह गुरू रैदास सें मिला और उनके चरणों में लौट गया.

अतः यह ब्राह्मणिक लेखकों की धूर्तता ही है कि वे रामानन्द को दलित गुरुओं का गुरू बताते हैं.

5.4 : ब्राह्मण–धर्म की देवियां भी कम नहीं

ऐसा नहीं कि ब्राह्मण–धर्म के मात्र देवता, ऋषि व नायक ही कुकर्मी होते थे. कुकर्म करने में उनकी देवियां भी किसी सें कम नहीं थीं. केवल पुरुष वर्ग का ही खताना ऊत नहीं था देवियां भी काजल की कोठरी में सभी काली थीं. जैसे आर्य पुरुष लम्पट होते थे तथा यहां वहां मूँह मारते फिरते थे, अपनी बहन बेटी का भी लिहाज नहीं करते थे वैसे ही उनकी स्त्रियां होती थी. वे भी किसी का लिहाज नहीं करती थीं. इधर उधर मूँह मारने सें उनके जो बच्चे पैदा हो जाते थे उन्हें वे यूं ही फैंक जाया करती थीं. सीता, शकुन्तला आदि इस की प्रमुख उदाहरण हैं. (राजवाड़े पृ 80)

उर्वशी : उसे ब्राह्मणों के भगवान नारायण की सन्तान बताया जाता है जिसे उसने अपनी जांघ सें पैदा किया था. यह अजीब सी बात है कि उनके भगवान द्वारा पैदा करने के बावजूद वह वेश्या बनी. कृष्ण तथा अर्जुन को क्रमशः नारायण और नर का अवतार बताया जाता है. इस प्रकार नारायण अर्थात कृष्ण की बेटी थी वेश्या उर्वशी. (संस्कृति)

एक बार इन्द्र की महफिल में नाचते हुए उसकी नजर अर्जुन के पड़दादा पुरुरवा पर पड़ गई. इन्द्र की महफिल बिगड़ गई. उसे पुरुरवा के साथ भेज दिया गया. दोनों ने पुरु वंश पैदा कर दिया. इस प्रकार रिश्ते में वह अर्जुन की पड़दादी लगती थी. लेकिन जैसे उसके अवतारी बाप ने अपनी मामी राधा नही बख्शी, उसने अपने

पड़पोते अर्जुन को पकड़ लिया. अर्जुन ने अपनी पड़दादी की वासना शांत नहीं की तो उसने अर्जुन को श्राप दे दिया कि वह स्त्री सें सम्बंध बनाने के काबिल ही न रहे. अतः अर्जुन एक साल तक हिजड़ा बन गया. (आप्टे)

ऐसी नीच औरत के नाम पर ब्राह्मणधर्म के चार धामों में सें एक बद्रीधाम पर उसका तालाब बनाया गया है (संस्कृति 149) जहां नहाने सें कहते हैं सारे पाप धुल जाते हैं. ऐसी ब्राह्मणिक देवी है उर्वशी!

देव पत्नियां : ब्राह्मणधर्मी देवियां किसी सें संकोच नहीं करतीं थीं अर्थात अपना 'काम' चोरी छिपे पूरा नहीं करती थीं बल्कि सबके सामने, सीना तान कर करतीं थीं. जब सीता लंका में थी और राम विरह में तड़प रहा था तो देवों की पत्नियां उसकी वासना की आग बुझाने उसके पास आईं. राम ने कहा अगले जन्म में आप सब की वासना शांत करूंगा. अगले जन्म में वे देव पत्नियां गोपियां बन कर पैदा हुई और राम ने कृष्ण के रूप में जन्म लिया. उन्होने मिल कर जो व्यभिचार की होली खेली उसके आगे आज के पश्चिम के नाईट कल्ब भी फीके पड़ जाते हैं.

कितनी आश्चर्य की बात है देवों की पत्नियां तो पतियों के होते हुए भी गैर मर्द सें व्यभिचार करने जाएं तो भी पूजनीय हैं. शरूपनखा कुआंरी होते हुए भी शादी का प्रस्ताव रखे तो उनके नाक और कान काट दिए गए. नाक कटवाने का काम तो देव पत्नियों ने किया था. लेकिन राम और देव पत्नियां एक ही 'खानदान' सें थे जहां व्यभिचार उनका मूल अधिकार था, जीवन था. उनके नाक कान वह क्यों काटता!

अहिल्या : अहिल्या ब्राह्मण ऋषि गौतम की पत्नि थी. देखने में सुन्दर थी. एक दिन इन्द्र की नजर उस पर पड़ गई. ब्राह्मणों के देवताओं का तो काम यही था कि जहां सुन्दर नारी देखी वहीं पसर गए. फिर उनके राजा ने तो ऐसा करना ही था. एक दिन जब ऋषि घर पर नहीं था इन्द्र अहिल्या के पास जा पहुंचा. उसने अहिल्या के हर अंग की तारीफ की जैसे ब्राह्मण वेश में महात्मा रावण ने सीता की तारीफ की थी. अंतर केवल इतना रहा कि महात्मा रावण ने सीता सें काम याचना नहीं की. इन्द्र ने अहिल्या सें काम याचना की. आर्य नारियां कौन सी इस काम में कम थीं, उसने तुरन्त हामी भर दी. दोनों ने अपनी वासना का जी खोल कर खेल खेला. इन्द्र खुश होकर जाने लगा कि इतने में ब्राह्मण ऋषि गौतम आ गया. पता नहीं क्यों वह इन दोनों के गो–धर्म सें वह नाराज हो गया. उसने इन्द्र के अण्डकोश गिरा दिए तथा अहिल्या का अन्न जल बन्द कर दिया. (बाल कांड 48)

गंगा : एक तो गंगा नदी है जो हिमालय सें निकल कर बंगाल की खाड़ी में पहुंच कर सागर में समा जाती है. यह गंगा नदी सदियों सें भारत के खेतों को अपने पानी सें सींचती आ रही है. भारत की अधिकतर आबादी को अन्न जल प्रदान करती रही है इसलिए श्रद्धा सें लोग इसे गंगा–माँ कह कर बुलाते हैं. अपनी ऐयाशी को धर्म का नाम देने के लिए ब्राह्मणों ने इसी गंगा के नाम पर एक ऐसी गंगा की रचना भी कर डाली जो किसी भी लिहाज सें गंगा माँ कहलाने के योग्य नहीं है. उसने वे सब कुकर्म किये जो अन्य आर्य नारियां करती थी.

ब्राह्मण–ग्रन्थों (हरि.27) में गंगा के नाम पर जो कथाएं रची गईं हैं उनमें सें एक इस तरह सें है (राज.73) कि गंगा स्वर्ग में रहती थी. वह धरती पर आई. एक दिन वासना सें भर कर वह सज धज कर निकली. हरिद्वार में प्रतीप नामक राजा की जांघ पर जा बैठी और उससें बोली,''राजन मैं आपको चाहती हूँ. आप मुझे स्वीकार करें. काम वासना सें भरी स्त्री अगर संभोग के लिए प्रार्थना करे तो उसे इन्कार नहीं करना चाहिए क्यों कि ऐसी स्त्री का त्याग साधुओं द्वारा निंदित करार दिया गया है."
प्रतीप बोला,"मैं अपने ही वर्ण की कामातुर स्त्री के अतिरिक्त किसी और सें समागम नहीं करता क्यों कि यह धर्म के विरूद्ध है."
गंगा बोली, "मैं सुन्दर हूँ आप पर आसक्त हूँ कामातुर हूँ संभोग के योग्य हूँ. इसलिए आप मुझ सें संभोग करें."
प्रतीप बोला, "धर्म के अनुसार जो स्त्री बांई जांघ पर बैठे वह भोग्या होती है, जो दांई जांघ पर बैठे वह पुत्री समान होती है. तुम मेरी दाहिनी जांघ पर बैठी हो. इसलिए मेरी पुत्री या पुत्रवधु के समान हो. अगर बांई जांघ पर बैठती तो तुम्हारी काम याचना अवश्य पूर्ण करता. इसलिए अगर इस स्थिति में तुम सें भोग करूंगा तो धर्म का उल्लंघन होगा. अगर तुम मानो तो तुम्हें अपने पुत्र शांतनु के लिए ले चलता हूँ."
गंगा बोली," ठीक है राजन, मैं उससें ही संभोग युक्त हो जाऊंगी"

इस तरह गंगा का शांतनु सें समागम हुआ. उसने शांतनु सें इस शर्त पर समागम किया कि वह उससें कुछ भी नहीं बोलेगा. गंगा ने सात पुत्रों को जन्म दिया और सभी को गंगा नदी में बहा दिया. आठवें पुत्र को जन्म देकर जब वह उसे भी गंगा नदी में बहाने लगी तो शांतनु ने उससें इसका कारण पूछा. शर्त का उल्लंघन होने के कारण गंगा उसे छोड़ कर चली गई.

इस कथा सें निम्न बातें स्पष्ट होती हैं:

1. कि ब्राह्मण–धर्म के देवता और नायक ही आवारा नहीं होते थे उनकी देवियां और नायिकाएं भी कम आवारा नहीं होती थीं.

2. कि जिस तरह उनके देव कभी भी, कहीं भी मूँह मार लेते थे वैसे ही उनकी देवियां होती थीं. वे अपनी काम वासना शांत करने के लिए किसी भी गैर–मर्द की जांघ पर जा बैठती थीं और उससे मैथुन–याचना भी कर लेती थी. ऐसी याचना अकेले में नहीं की जाती थी बल्कि सबके सामने बीच बाजार कर ली जाती थी. ब्राह्मणिक देवियों के लिए गैर मर्दों सें शारीरिक रिश्ता बनाना बिलकुल इतना आसान और आम था जैसे आधुनिक समय में स्त्रियों द्वारा बाजार में सब्जी खरीदना.

3. प्रतीप अथवा वहां गंगा किनारे बैठे किसी भी व्यक्ति ने गंगा को ऐसी अश्लील बातें करने पर नहीं टोका. इसका सीधा सा अर्थ है कि आर्यों में इस प्रकार सें यौन सम्बंध बनाना कोई अजीब या नई बात नहीं थी. उनमें पशुओं की तरह शारीरिक सम्बंध बनाए जाते थे. यौन सम्बंध बनाने के लिए उनमें किसी रिश्ते की जरूरत नहीं होती थी. कोई पुरानी जान पहचान की भी आवश्यकता नहीं होती थी. पशुओं की तरह जो जिसके जंच गया उसी सें काम पूरा कर लिया जाता था.

4. गंगा मात्र बातें ही बेशर्मी की नहीं करती बल्कि वह सजधज कर कामातुर होकर अनजान गैर मर्द की जांघ पर भी जा बैठती है. जैसे आवारा कुतिया कुत्तों में आती है वैसे ही गंगा वहां बैठे लोगों के बीच आकर काम याचना करने लग गई. कितनी अजीब सी बात है कि ऐसे लोगों को पूजनीय माना जाता है. कितने लोग हैं आज के आधुनिक कहे जाने वाले समय में भी, जो अपनी बहन बेटी सें ऐसे आचरण की अपेक्षा कर सकते हैं. एक पल के लिए जरा इस घटना की कल्पना करक देखें कि कोई अनजान या जानकार स्त्री सजघज कर सबके सामने आपकी जांघ पर आकर बैठ जाए और आपसें ऐसी बातें करे. कैसा लगेगा यह दृश्य आपको या सामने बैठे लोगों को. लेकिन आर्य ब्राह्मण–धर्मी ऐसी घटनाओं को धार्मिक कथा बताते हैं. जिन पुस्तकों में ऐसी कथाएं छापते हैं उनको धार्मिक–ग्रन्थ कहते हैं.

5. और अगर कहीं गंगा ने ऐसी काम–याचना उसकी दांई जांघ पर बैठ कर की होती तो? तो निश्चित रूप में गंगा शांतनु के बच्चे की माँ होने की बजाए उसके बाप के बच्चों की माँ होती. विवाह जैसा पवित्र बंधन तो उनमें होता ही न था. अतः गंगा उसकी माँ, चाहे सौतेली ही सही, नहीं बन पाती. और हो सकता है किसी दिन गंगा का मन शांतनु पर आ जाता और वह उसकी जांघ पर जा बैठती. तो? तब भी कुछ विशेष अनहोनी न होती. आर्यों में यह तो मान्य रिवाज था. ऋषि विश्वामित्र और उसके ससुर ने तो आपस में अपनी पत्नियां तक बदल ली थीं.

6. यह कथा एक बात और सिद्ध करती है कि आर्य स्त्रियां आयु अथवा रिश्तों का बंधन न मानती थी. गंगा प्रतीक सें काम–याचना करती है और वह गंगा को अपने बेटे के नाम का प्रस्ताव करता है. गंगा उसके लिए भी राजी हो जाती है. बाप न मिला, बेटा ही सही. वह उससें भी काम चलाने को तैयार हो गई. उर्वशी रिश्ते में अर्जुन की माँ लगती थी मगर उसने भी अर्जुन सें वही कहा जो गंगा प्रतीक सें कहती है. इस तरह जहां एक आर्य स्त्री अपने बेटे सें अनैतिक सम्बंध बनाना चाहती है वहीं दूसरी ओर अन्य आर्य स्त्री अपने ससुर सें काम–याचना करती है. खताना ऊत आर्यों का!! ब्राह्मण–धर्म का!!!

7. और तो और प्रतीक भी ऐसी निर्ल्लज, अवारा, चरित्रहीन स्त्री को अपने बेटे के लिए प्रस्तावित करता हुआ बिलकुल नहीं झिझकता है. इससें साफ जाहिर है कि आर्य ऐसे ही होते थे. वर्ना कौन इज्जतदार बाप अपने बेटे के लिए ऐसी बहू स्वीकार करेगा. हमारे विचार में आज के समय में कोई भी आदमी इतना नीच नहीं होगा कि इस प्रकार सरेआम संभोग याचना करने वाली लड़की को अपनी पुत्रवधु बनाना चाहेगा.

8. नैतिकता ब्राह्मण–धर्म का कभी कोई आधार नहीं रही. यहां वहां मूँह मारना आर्यों की रीत थी बल्कि सनातन धर्म था. ब्राह्मणों ने हमेशा ऊलजलूल नियमों को ही धर्म का आधार बनाया. दांई जांघ पर बैठी स्त्री सें संभोग करना धर्म है तो बांई जांघ पर बैठी स्त्री सें समागम करना अधर्म है. ऐसी स्त्री सें बेटा समागम करले तो धर्म है. सजधज कर आई कामातुर स्त्री को संभोग से मना करे तो साधु इसे धर्म का उल्लंघन बताते हैं. बस ऐसे ऊलजलूल नियमों सें ही भरा पड़ा है ब्राह्मण–धर्म !! ऐसा ही है उनका सनातन धर्म!!

एक किस्सा यह भी है कि मौका आने पर गंगा ने अपने बाप जन्हू सें मैथुन किया.

अग्नि का गंगा सें कोई रिश्ता न था. फिर भी अग्नि द्वारा छोड़े गए वीर्य सें गंगा गर्भवती हो गई. गंगा ने बच्चा फैंक दिया. कार्तिकेय पैदा हो गया. (बा.रा. 1.37–14से 28) यह आर्यों की मुख्य प्रथा थी.

शिव ने गंगा में अपना वीर्य छोड़ा अर्थात गंगा सें समागम किया. गंगा वीर्य सें भर गई. उसने शिव का वीर्य सरकंडों पर फैंक दिया. वहीं कार्तिकेय का जन्म हुआ. इसलिए शरजन्मा भी उसका नाम है.

<u>काली</u> : ''माँ" शब्द जुबान पर आते ही एक ऐसी स्त्री की छवि मन में आती है जो ममता सें ओत प्रोत है, जो दयावान है, स्वयं भूखी रह कर दूसरों को खाना खिलाने वाली स्त्री माँ कहलाती है. लेकिन विश्व में मात्र ब्राह्मण–धर्म एक ऐसा सम्प्रदाय है जिस में लोगों का खून पीने वाली, नर माँस खाने वाली, हत्यारिन स्त्री को भी देवी माँ बना कर रखा गया है. ब्राह्मणों द्वारा रचित काली इतनी क्रूर और बेरहम है कि उसे माँ तो क्या औरत

कहना भी औरत जाति का अपमान करने समान है. बिलकुल नंग धड़ंग रहना, खून सें भीगी लाल जीभ बाहर लटकाए रखना, बाल फैलाए रखना इसकी विशेषता है. प्राणी विशेषतः मानव रक्त, माँस और शराब इसके भोजन हैं. ब्राह्मणों की देवी काली इतनी उद्दण्ड थी कि उसने अपने पति शिव तक को अपने पांवों तले रौंद दिया. वह अपनी नग्नता ढांकने के लिए उन आदमियों की खोपड़ियों और बाजूओं की माला पहनती है जिन्हे उसने मार दिया था. उसकी छातियां नर मुण्डों सें और स्त्री अंग कटे बाजूओं की माला तले छुपे रहते थे. उसके पुरे बदन पर सूत (जिससें कि कपड़े बनते हैं) की एक तार भी नहीं होती. बाजू और मुण्ड भी अंतड़ियों में पिरोये होते हैं. वह बर्तन की बजाए मानव खोपड़ी (खप्पर) में ही खून, माँस, चर्बी और शराब का सेवन करती है.

दुर्गा सप्तशती अ.8 की कथा के अनुसार काली ने रक्तबीज का गला छेदा और उसमें मूँह लगा कर खून पीने लगी. ऐसी वहशी औरत कभी भी "माँ" नहीं हो सकती!!

वास्तव में यह उन धूर्त ब्राह्मणों की चाल है जो पहले यज्ञों में धर्म के नाम पर मीट, शराब के गुलछर्रे उडाया करते थे. लेकिन गौतम बुद्ध, महावीर जैसे सन्तों के विरोध के कारण उनके ये गुलछर्रे बंद हो चले थे. अतः उन्होंने काली की रचना कर डाली जिस पर मीट, शराब का चढ़ावा चढ़ाया जाता है. काली ने तो पता नहीं कभी खाया हो या नहीं, इन ब्राह्मणों के ये गुलछर्रे बेरोकटोक चलते रहे.

महावीर, बुद्ध के प्रभाव सें लोग यज्ञों की हिंसा को नकार चुके थे. सम्राट अशोक ने भगवन बुद्ध का शांति, दया, प्रेम का संदेश सब ओर फैला दिया था. पहली सदी ईसा पूर्व में भारत के सम्राट अशोक के वंशज वृहद्रथ का रज्य था. ब्राह्मण पुश्यमित्र शुंग उनका मन्त्री था. उसने ब्राह्मण–धर्म के अनुरूप अपने मालिक सें गद्दारी की और सोये हुए सम्राट की हत्या कर दी. उसने फिर सें वही यज्ञ आरंभ किए जिनमें ब्राह्मण ऋत्विक निरीह पशुओं की बलि देते थे. लेकिन लोग इनमें साथ न लगे. तब उन्होंने अपने मीट, शराब का धंधा चालू रखने के लिए काली की कहानी गढ़ी ताकि लोग मंदिरों में ही चढ़ावे के रूप में उन्हें इन वस्तुओं की सप्लाई करते रहें.

रामायण के अयाध्या कांड–130 में कहा भी गया है कि जो वस्तु आदमी स्वयं खाता है वही अपने देवताओं के लिए भी कल्पना करता है.

ब्राह्मणों ने समाज को दिमागी तौर पर कितना खोखला कर दिया है इसका प्रमाण काली को माँ कहने की उदाहरण है. हम में सें कितने लोग यह कल्पना भी कर पाएंगे कि उनकी माँ नंगी होकर जीभ लपलपाते हुए आदमियों का खून पीये! गले में मानव खोपड़ियों की माला पहने! अपने गुप्तांग ढकने के लिए कटे हुए मानव हाथों की माला बांधे! हमारा विश्वास है कि पूरी दुनिया में एक भी आदमी अपनी माँ को ऐसा नहीं देखना चाहेगा. किन्तु आश्चर्य है कि पूरा ब्राह्मणधर्मी समाज डायन स्वरूप काली को माँ कहता है.

कुन्ती : कुन्ती आर्य सनातन धर्म की सटीक उदाहरण है. उसने न केवल शादी सें पहले स्वछन्द संभोग का आनन्द उठाया बल्कि शादी हो जाने के बाद भी अपने पति के अतिरिक्त तीन और गैर मर्दों सें समागम किया. इतना ही नहीं उसने अपनी जेठानी माद्री को भी गैर मर्द सें समागम का रास्ता बताया. **कुन्ती ने चार पुत्र जने. चारों के चारों अलग अलग पुरुषों सें पैदा किए.**

1. **कर्ण के लिए सूर्य सें समागम किया.**
2. **युद्धिष्ठर के लिए सूर्य के बेटे यम सें समागम किया.**
3. **भीम के लिए पवन सें समागम किया.**
4. **अर्जुन के लिए इन्द्र सें समागम किया.**

उसने अपना तो जीवन भ्रष्ट किया ही साथ में अपनी **जेठानी माद्री को भी गोधर्म में धकेल दिया. उसके लिए उसने सूर्य के बेटों अश्विनी कुमारों का प्रबन्ध किया.** स्वयं सूर्य के साथ रमणात हुई और जेठानी को उसके बेटों के साथ सैट कर दिया. कितना अपवित्र घालमेल है यह सब! एक बाप तथा उसका बेटा एक साथ चले आ रहे हैं. बाप एक औरत के पास जा रहा है और बेटे उसकी जेठानी के पास जा रहे हैं.

रिश्तों की इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न करें : यम सूर्य का पुत्र है तथा युधिष्ठर का बाप है. सूर्य कर्ण का भी बाप है तथा यम का भी बाप है. दो पांडवों नकुल सहदेव का सूर्य सें क्या रिश्ता बना? बाकी तीन पांडवों का अश्विनी कुमारों सें क्या रिश्ता बना?

उसने अपनी जेठानी के साथ साथ अपनी बहू को भी आर्य गोधर्म में धकेला. वैसे तो द्रोपदी को अर्जुन जीत कर लाया था. लेकिन उसने द्रोपदी को पांचों बेटों के हवाले कर दिया. युद्धिश्ठर पक्का जूआरी तो था ही, साथ में लम्पट भी पूरा था. द्रोपदी का रूप देखते ही लार टपकाने लगा. माँ कुन्ती ने उसकी मनोकामना पूरी कर दी. द्रोपदी की पहली सुहागरात उसी ने मनाई. ऐसी थी कुंती.

त्रिदेवियां : ब्राह्मर्णधर्म के त्रिदेव उनके सबसें बड़े भगवान हैं. उन तीनों के एक एक ''बीवी'' भी है. ब्रह्मा की सरस्वती, विष्णु की लक्ष्मी तथा शिव की पार्वती है. इन औरतों का चरित्र अथवा करतूत जान कर स्त्री जाति का

सिर शर्म सें झुक जाता है. किस्सा है कि एक बार उन्होंने नारद सें पूछा कि दुनिया में सबसें चरित्रवान स्त्री कौन है. उसने उन तीनों सें कहा कि अनुसुइया विश्व की सबसें चरित्रवान स्त्री है.

उन्होंने जब स्वयं को चरित्रवान कहा तो नारद ने उन तीनों के चरित्रहीनता के किस्से बयान किए. (बाबा साहिब 8.174) तब उन औरतों ने वह करने की ठानी जो आम नारी सोच भी नहीं सकती. उन तीनों ने अपने पतियों को सामूहिक रूप सें कहा कि वे जायें और अनुसुइया सें यौन सम्बंध यानि समागम या बलात्कार करके आएं. तीनों ने षडयन्त्र की तैयारी की. वे जानते थे कि समाज पर ब्राह्मणों का वर्चस्व है. **कोई भी स्त्री ब्राह्मण को अपने साथ यौन सम्बंध बनाने सें मना नहीं कर सकती.**

अतः वे ब्राह्मण का वेश बना कर अनुसुइया के घर गए. उसने उनके लिए खाना परोसा तो उन्होंने शर्त रखी कि वे खाना तब खाएंगे जब वह नग्न होकर उन्हें खाना परोसेगी. **उस बेचारी को नंगी होकर उन 'भगवानों' को भोजन परोसना पड़ा. ऐसा भय होता था ब्राह्मणों का!** यह तो उस बेचारी की तकदीर अच्छी थी कि उसी समय उसका पति आ गया और उस बेचारी की इज्जत लुटने सें बच गई. अगर उसका पति कुछ पल की देरी सें आता तो अनुसुइया भी वृंदा की तरह उन दरिंदों को शिकार हो जाती और त्रिदेवियां अपने पतियों के इस कारनामे पर फूल बरसातीं.

यह अत्यंत शर्म की बात है कि भारत वासियों को ऐसे ऋषियों मुनियों का वंशज बताया जाता है और भारत को ऐसे नीच लोगों की भूमि बताया जाता है. हम भारतीय ऐसे कदापि नहीं हैं!!

5.5 ब्राह्मणवाद का महानायक : राम

5.5.1 राम जन्म वृतांत

राम का जन्म वृतांत रामायण के बाल कांड (सर्ग 8 सें 15) में दिया गया है. दशरथ कोसल जनपद यानि जिले में स्थित अयोध्या नाम के कस्बे का राजा था. सुमन्त उसका नौकर, दरबान, मन्त्री, सईस, रथचालक, ड्राइवर, सलाहकार आदि सभी कुछ था. जिस राजा के सारे काम एक आदमी सें चल जाते हों, तो सहज कल्पना की जा सकती है कि उसका राज्य कितना बड़ा होगा. आजकल तो घरों में भी हर काम के लिए अलग अलग नौकर होते हैं. छोटी मोटी दुकान पर भी एक सें ज्यादा नौकर मिल जाते हैं.

पहले दशरथ के दो रानियां थीं कौशल्या और सुमित्रा. एक दिन उसने सुन्दरता की मूरत कैकेयी को देख लिया. कृष्ण–काल में तो ऐसी स्त्रियों को उठा लाने का रिवाज था. दशरथ या तो बुढिया चुका था या फिर उसके समय यह रिवाज बन्द हो गया था. अत उसने कैकेयी के पिता के सम्मुख कैकेयी को ले जाने का प्रस्ताव रखा. कैकेयी के पिता ने शर्त रखी कि कैकेयी के गर्भ सें उत्पन्न पुत्र को ही राज्य का वारिस बनाया जाएगा. **दशरथ ने वचन दिया कि कैकेयी के गर्भ सें जन्मा बालक ही राजा उसकी गद्दी का वारिस बनेगा.** अतः कैकेयी भी उसकी रानी बन गई. अब उसके तीन रानियां थी. दशरथ बुढा चुका था मगर अपने बाप दादाओं की तरह उससें सन्तान किसी भी रानी सें उत्पन्न नहीं हो पाई थीं. रघुकुल रीत सदा चली आई, सबे नर नपुंसक भाई.

उसने अपने एकमात्र आल-राउंडर सुमन्त्र सें पुत्र प्राप्ति का उपाय पूछा. उसने दशरथ को उपाय बताते हुए कहा कि आप भी वैसा ही **"पापरहित कार्य"** करें जैसा कि राजा रोमपाद ने किया था. तब सुमन्त्र दशरथ को कथा सुनाता है जो सनत कुमार पुत्र ब्रह्मा ने ऋषिओं को सुनाई थी. कश्यप का पुत्र विभांडक हुआ. (देखिए इसका चरित्र अ.5) एक दिन ब्राह्मण महर्षि विभांडक ने नहाती हुई वेश्या उर्वशी को देख लिया. वह महर्षि था अतः जो दूसरे ब्राह्मण ऋषिओं के साथ होता था, वह उसके साथ भी हो गया. उसका वीर्य स्खलित हो गया. वीर्य को एक हिरणी ने ग्रहण कर लिया. उसके गर्भ सें एक सींग वाला लड़का पैदा हुआ, नाम रखा ऋश्यश्रृंग. सींग वाला ऋषि. इससें राम की कथा का झूठ होने का भी पता चलता है क्योंकि राम को पैदा करने वाला स्वयं हिरणी सें पैदा हुआ था और हिरणी भी गर्भवती कैसे हुई, ब्राह्मण ऋषि विभांडक का वीर्य पी कर. आज कोई भी ब्राह्मण ऋषि, या संकराचारय कितना भी प्रयास कर ले तो भी इस तरह बच्चे पैदा करके नहीं दिखा सकता.

सुमन्त्र ने आगे बताया कि राजा रोमपाद के राज्य में अकाल पड़ा. वेद-विज्ञ ब्राह्मणों सें उपाय पूछा गया. वे बोले आपको ऐसा उपाय बताते हैं ''जिस में कोई अपराध नहीं होगा.''. वे बोले कि महा ऋषि ऋश्यश्रृंग को बुला कर लाओ और उसे अपनी बेटी सौंप दो. अकाल दूर हो जाएगा. ब्राह्मण उस महर्षि को बुला कर लाने का उपाय भी बताते हैं. वे कहते हैं कि अच्छी तरह सें सज धज कर वेश्याएं जाएं, उस ब्राह्मण महा ऋषि को रिझाएं. वह अपने आप इन के पीछे आ जाएगा. राजा ने वेश्याएं भेज दीं. उन्होने अपनी अदाएं दिखाईं. ऋश्यश्रृंग महर्षि

का ऋर्षित्व जाग उठा और सचमुच वह ब्राह्मण महा ऋषि जैसे कुत्ता कुतिया के पीछे पीछे चला आता है वैसे ही उन वेश्याओं के पीछे पीछे राजा रोमपाद के दरबार तक आ गया. आते ही राजा ने अपनी फूल सी बेटी उस सींग वाले को सौंप दी. अकाल दूर हो गया. वेश्याओं के पीछे लार टपकाते आने वाले उस ऋषि ने उस लड़की का क्या हाल किया होगा, इसका कोई भी सहज अनुमान लगा सकता है. **इस कथा सें सीधा सा संदेश मिलता है कि अपना काम निकलवाना हो तो ब्राह्मणों को लड़कियां सप्लाई करो. इसमें कोई अपराध नहीं होगा.**

अभी कुछ समय पहले तहलका कांड हुआ था जिसमें एक साहसिक व्यक्ति ने केन्द्रीय मंत्रियों और अफसरों द्वारा की जा रही वेश्यावृति और रिश्वतखोरी का भंडाफोड़ किया था. तब लगभग सभी अखबारों ने इस काम के लिए वेश्याओं के प्रयोग किए जाने की निन्दा की थी. कैसी विडम्बना है कि राम के ''बाप'' को लाने के लिए वेश्याओं के प्रयोग को यही अखबार धार्मिक कथा बता कर नित्य उसका गुणगान करते हैं. कितनी शर्म की बात है कि वे ही अखबार वाले ऐसे लम्पट व्यक्ति को महर्षि कहते हैं जो वेश्याओं के पीछे राल टपकाता फिरता था.

आल–राउंडर सुमन्त्र ने दशरथ को समझाया कि वही लम्पट ब्राह्मण महा ऋषि ऋश्यश्रृंग उसे पुत्र प्रदान करेगा. दशरथ बोला कि रोमपाद तो उसका भाई ही है. अतः जंवाई समान ऋष्यश्रृंग को लाने में कोई कठिनाई नहीं होगी. कई स्थानों पर ऐसा जिक्र भी आया है कि शांता दशरथ की ही बेटी थी. खैर उसने वशिष्ठ और तीनों रानियों को साथ लिया और ऋष्यश्रृंग के ठिकाने पहुंच गया. दशरथ समझदार था. सुमन्त्र से कथा सुन कर उसे ऋश्यश्रृंग को लाने की विधि का ज्ञान हो गया था. वह जान गया था कि पिछली बार ऋष्यश्रृंग वेश्याओं के साथ आया था. इस बार बूढ़े दशरथ के साथ आने का तो प्रश्न ही नहीं उठता. अतः वह रुपमति रानियों को साथ ही ले गया. अन्यथा रानियों को साथ ले जाने का और कोई औचित्य ही न था क्योंकि पुत्र प्रदान करने का उपक्रम तो ऋष्यश्रृंग ने अयोध्या में आकर ही करना था.

कुछ कथावाचक यह प्रचार करते हैं कि ऋष्यश्रृंग को यज्ञ करने के लिए लाया गया था ताकि दशरथ के सन्तान हो सके **लेकिन वाल्मिकीय रामायण के बालकांड सर्ग 11 में स्पष्ट रूप सें लिखा गया है कि ऋष्यश्रृंग को लाने के लिए दशरथ के तीन प्रयोजन यानि मकसद थे :**

1. **पहला यज्ञ करना,**
2. **दूसरा स्वर्ग जाने का उपाय करना और**
3. **तीसरा पुत्र पैदा करने का उपक्रम करना.**

अतः यज्ञ करना और पुत्र पैदा करना दोनों अलग अलग काम थे. इसी कारण अश्वमेध यज्ञ हो जाने के बाद दशरथ बोला कि अब ऋष्यश्रृग को पुत्र पैदा करने का उपक्रम करना चाहिए. जहां यज्ञ सबके सामने किया गया यह "उपक्रम" अकेले में किया गया जिसमें केवल ऋश्यश्रृंग, दशरथ और तीनों रानियां शामिल हुईं.

सरिता के सम्पादक ने सही लिखा है कि वैसे भी पुराने और बूढ़े ऋषिओं की क्या कमी थी कि पुत्र प्रदान करने के उपक्रम के लिए ऋष्यश्रृंग को ही लाया गया. यह यज्ञ के नाम पर नियोग द्वारा पुत्र पैदा करने की कार्यवाई थी.

उपरोक्त वर्णित तथ्य सन्त गुरु कबीर साहिब को भी मालूम थे. तभी उन्होने कहा थाः

देखहु लोगो राम की सगाइ,
हम बहनोई, राम हमारा साला,
हमहि बाप, राम पुत हमारा. (कबीर समग्र पृ 56)

अर्थात हे लोगो, राम की रिश्तेदारी देखो. मैं राम की बहन शांता का पति हूँ और राम मेरा साला लगता है. और मैं ही राम का बाप हूँ तथा राम मेरा बेटा है. सन्त गुरु कबीर साहिब ने यह बात ऋष्यश्रृंग की तरफ सें कही है क्योंकि उसने राम की बहन शांता सें शादी की थी. अतः राम उसका साला हुआ. फिर इसी ऋश्यश्रृंग ने दशरथ की तीनों रानियों के पुत्र पैदा किए, इसलिए वह राम का बाप लगा तथा राम उसका बेटा हुआ. अस्तु.

दशरथ ऋष्यश्रृंग आदि को लेकर चल पड़ा. रास्ते में भगवन बाल्मिकी का पावन स्थल आया. वे लोग वहां रुके और उनकी कल्याणिका नामक गाय को खा गए. (उतर राम चरित अंक–4) गाय का भोग लगा कर अयोध्या पहुंचे. यज्ञ की तैयारियां शुरू हुईं जो कि ब्राह्मण–शास्त्र के अनुरूप थीं.

उसी काल में भारत के सम्राट महाराजा रावण ने यज्ञ करने के कानून बनाए थे, जिनमें मुख्य नियम थे :

1. **यज्ञ को 16 की बजाए केवल एक पुरोहित /ऋत्विक संचालित करेगा.**
2. **यज्ञ में किसी किस्म की पशु या मानव की बलि नहीं दी जाएगी.**
3. **यज्ञ में किसी किस्म का व्यभिचार नहीं किया जाएगा.**

4. **यज्ञ में किसी किस्म की शराब अर्थात सोम रस का प्रयोग नहीं किया जाएगा.**
5. **जिस यज्ञ में इन बातों का उल्लंघन किया जाएगा, उन्हें ब्रह्मरकक्षों अर्थात महाज्ञानी रक्षकों द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा और दोषियों को सजा दी जाएगी. आम तौर पर बलि और व्यभिचार वाले यज्ञ करने वालों को यज्ञ की आग में ही फैंक दिया जाता था. इस कारण ब्राह्मण ऋषि ऐसे यज्ञ महाराजा रावण के रक्षकों सें छिप कर करते थे.**

लेकिन दशरथ ने तो वेद–विधि के अनुसार यज्ञ करने थे. उपरोक्त नियम मान लेने से उसका तो सारा किया धरा ही चौपट हो जाना था. अतः उसने इस बात का विशेष प्रबन्ध किया कि कोई विद्वान, ब्रह्मज्ञानी रक्षक वहां तक न पहुंच पाए. और वेद विधि के अनुसार किये जा रहे यज्ञ में विघ्न न डाल सके. (बाल कांड.8)

दशरथ ने वेद विधि के अनुसार किये जाने वाले यज्ञ के लिए निम्नलिखित प्रबंध किए.

1. यज्ञ में ब्राह्मणिक विधि अनुसार 16 ऋत्विक नियुक्त किए गए. ऋश्यश्रृंग को अध्वर्यु यानि मुख्य ऋत्विक नियुक्त किया गया. वशिष्ठ को ब्रह्मा यानि यज्ञ का मैनेजर बनाया गया.
2. 22 अंगुल अर्थात 18 इंच मोटे अष्टकोणीय खूंटे मजबूती सें गाड़े गए थे ताकि हाथी जैसा जानवर भी खूंटे सें छूट न पाए. उन खूंटों पर हरेक देवता के चढाने/खाने योग्य सर्प, पक्षी, घोड़े और जलचर बांधे गए थे. प्रत्येक देवता का अपना अलग टेस्ट होता था जैसे इन्द्र को गर्भादान योग्य सांड पसंद है, काली को बकरा, ऋषियों को नर्म मांस वाली बछिया, विष्णु को बौना बैल, पूषण को काली गौ, रूद्र को लाल गाय आदि. जैसे आजकल नॉनवैज लोग अपने उत्सवों में अनेक प्रकार के मॉंस पकवाते हैं वैसे ही दशरथ ने अलग अलग प्रकार के मॉंसों का प्रबन्ध किया था.
3. कुल 300 जीव यज्ञ में ***काटे जाने*** और यज्ञ की आग में भून कर खाने के लिए लाए गए थे. उन्हें उन खूंटों सें बांधा गया था. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा इन 300 के अतिरिक्त था. यानि कुल 301 प्राणी उस यज्ञ में मारे, काटे और यज्ञ की आग में भून कर खाए गए थे.
4. प्रचुर मात्रा में सोमरस यानि घर की बनाई शराब का प्रबंध किया गया. इस शराब सोमरस का भोग ब्रह्मण ऋषिओं व अन्य लोगों ने छक कर किया.
5. व्यभिचार के लिए अयोध्या में स्वर्ण समान वेश्याएं तो पहले सें ही थीं, अब 3 रानियां और दासियां अतिरिक्त उपलब्ध हो गई थीं.

यज्ञ शुरू हुआ. सबसें पहले देवों को बुलाया गया और उनमें सें सबसें पहले उनके प्रमुख इन्द्र को शराब पेश की गई अथवा पिलायी गई. (बाल कांड–14). अगर यह माना जाए कि राम वृतांत सचमुच त्रेता युग की घटना है तो उस समय इन्द्र को सर्वप्रथम शराब पिलाए बिना और बैल का मॉंस खिलाए बिना यज्ञ किया ही नहीं जा सकता था. देव और ऋषि यज्ञ का हिस्सा पाने के लिए कुत्तों की तरह लड़ते थे. हिस्सा न मिलने पर यज्ञ को नष्ट भी कर देते थे. जैसे यज्ञ हवि का हिस्सा न मिलने पर शिव ने अपने ससुर का यज्ञ ध्वंस कर दिया था. (संस्कृति : दक्ष)

उसके बाद कई तरह के कर्म कांड हुए. फिर अश्वमेध यज्ञ की बारी आई. राम की मॉं कौशल्या ने घोड़े की पूजा की और एक रात ''मन शांत करके'' घोड़े के साथ रही. अर्थात घोड़े के साथ रात भर संभोग रत रही. दयानन्द भी मानता है कि अश्वमेध यज्ञ में ब्राह्मण घोड़े के साथ रानी का समागम करवाते थेण इससें एक बार गोरखपुर की रानी मर भी गई थी. (सत्यार्थ प्रकाश–चौथा समुल्लास) उसके बाद ऋष्यश्रृंग आदि ऋषिओं ने दशरथ की अन्य रानियों सें घोड़े के लिंग को "स्पर्श" करवाया गया.

उसके बाद कौशल्या ने तलवार सें तीन वार करके उस घोड़े को मारा. ऋश्यश्रृंग आदि ऋषिओं ने सोम नामक शराब पी तथा घोड़े के 16 हिस्से करके यज्ञ की आग में भूना और शराब के साथ खाया. दशरथ के लिए चर्बी भूनी गई. भूनी गई चर्बी की गंध सें उसके सभी पाप भाग गए. उसके बाद शेष सभी जीवों की बलि दी गई. और उन्हें यज्ञ की आग में भून कर खाया गया.

उस यज्ञ में एक भी आहुति नहीं छूटी, न कोई कांड छोड़ने की भूल हुई. (बाल कांड.14). सभी काम वेद विधि से हुए. तब तीन दिन बाद यर्जुवेद (शुक्ल य.वे.–23 तथा कृष्ण य.वे.–7) में वर्णित विधि के अनुसार ऋष्यश्रृंग, वशिष्ठ आदि ऋषि तथा कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी ने निम्न अनुश्ठान किया गया.

कृष्ण यजुर्वद की विधि अनुसार अध्वर्यु ऋषि ऋश्यश्रृंग घोड़ा बन कर लेट जाता है. कौशल्या अपनी सौतों को सम्बोधित करके वेद–मंत्र बोलती है कि यह मुआ घोड़ा ही मेरे साथ सोयेगा क्योंकि मुझे संभोग के लिए कोई नहीं ले जा रहा. रानी की शिकायत सुन कर घोड़ा बना अध्वर्यु यानि ऋषि ऋश्यश्रृंग हड़बड़ा कर उठता है और कौशल्या सें वेद–मंत्र कहता है आओ हम धुला हुआ वस्त्र ओढ़ कर सोयें. **कौशल्या बोली मैं तुम्हारे पास गर्भ धारण करने आई हूँ. तुम मेरे में बीज डालने आओ.** आओ हम पैर फैला कर सोयें. दोनों पास पास लेट जाते हैं तब एक अन्य ऋषि पास आकर कौशल्या सें कहता है यह ऋषि ऋश्यश्रृंग तुझ में वीर्य सिंचन करे और तुम्हारी

योनि उस वीर्य को ग्रहण करे. ऐसा कहकर वह ऋश्यश्रृंग का लिंग रानी की योनि के पास लाता है और ऋश्यश्रृंग से यह वेद मन्त्र बोलता है रानी की जांघें अपनी जांघों पर रख और अपना लिंग उसकी योनि में डाल. स्त्रियों को लिंग जान सें भी प्यारा होता है क्योंकि वह योनि के काले छेद को कुचलता है.

इस के बाद वहां मौजूद स्त्रियां पटरानी कौशल्या सें बोली जंगल में घास का गट्ठर उठाते हुए जिस प्रकार कूल्हे आगे बढाते हैं उसी तरह तुम अपनी योनि आगे उठाओ और उसका मध्य भाग बढाओ. पटरानी कौशल्या ऐसा ही करती है. घोड़ा बना ऋश्यश्रृंग सो जाता है. रानी फिर बोलती है मुझसे कोई संभोग नहीं करता, इसलिए मैं घोड़े के साथ सोती हूँ. इस पर स्त्रियां बोलीं तुम्हारी योनि वीर्य सें भरी हुई है और वह गुलगुल की आवाज कर रही है, फिर शिकायत क्यों करती हो?

इसके बाद स्त्रियों द्वारा आपस में बोले गए अश्लील मन्त्र हैं जिनका राम जन्म सें सम्बंध नहीं है अतः यहां नहीं दिए जा रहे.

शुक्ल यजुर्वेद की विधि अनुसार जब अध्वर्यु ऋषि ऋश्यश्रृंग घोड़ा बन कर लेट जाता है तब सभी रानियां घोड़ा बने अध्वर्यु ऋषि ऋश्यश्रृंग को सम्बोधित करके वेद–मंत्र बोलती है तू सभी स्त्रियों का पति है मैं तेरे पास गर्भधारण के लिए आई हूँ, तू मुझ में गर्भ डाल. तू वीर्य सम्पन्न है, तू मुझ में वीर्य डाल. **तब दशरथ ऋषि ऋश्यश्रृंग के कान में बोलता है** तू मेरी इस पटरानी की जांघें ऊपर उठा कर अपनी जांघों पर रख और उसकी योनि में अपना लिंग ढकेल क्योंकि शिश्न पर ही स्त्रियों का सुख निर्भर करता है.

इसके बाद पटरानी वही शिकायत करती हैं कि कोई उससे संभोग नहीं करता. तब अन्य स्त्रियां उतर देती हैं कि उसकी योनि तो वीर्य सें भरी हुई है. अतः उसकी शिकायत झूठी है. इसके बाद ऋश्यश्रृंग सबसें छोटी रानी कैकेयी की योनि की ओर उंगली करके कहता है कि तेरी यह योनि चिल्ला रही है मुझे अच्छी तरह तपाओ, अच्छी तरह झुलसाओ. इसलिए मेरा लिंग तेरी योनि में ठूंसता हूँ. इससे तेरी योनि वीर्य सें भर जाएगी और गलगल की आवाज करेगी.

इस कांड के बाद ब्रह्मा ऋषि अर्थात राम का कुलगुरु वशिष्ठ कौशल्या सें कहता है तेरा बाप तेरी माँ के साथ पेड़ पर चढता था तथा वहीं उसकी योनि में अपना लिंग ठूंसता था. कौशल्या जवाब में ऐसा ही कहती है. इसके बाद अन्य ऋषिओं द्वारा दूसरी रानियों सें ऐसे ही अश्लील मन्त्र बाजी है और उन सें संभोग का कांड है. अंत में शराब पीकर सभी का नाच गाना होता है और अश्वमेध यज्ञ की कार्यवाई समाप्त होती है.

उपरोक्त वर्णित कांड हो चुकने के बाद किसी के भी मन में शक की गुंजायश बचती ही नहीं कि ऋष्यश्रृंग को वहां क्यों लाया गया था, उसने आकर क्या किया और राम एवं भाईयों का औरस बाप कौन था.

उपरोक्त वर्णित विधि द्वारा किए गए यज्ञ में ब्राह्मण ऋषिओं ने कोमल अंगों वाली रानियों के साथ क्या कुछ किया इस की सहज कल्पना की जा सकती है. **राजवाड़े के अनुसार इस मादक नाच गान सें ही गायत्री मन्त्र निकला है. (पृ.138)**

यहां ध्यान देने योग्य बातें हैं:

1. बा.रा. बाल कांड–14 यह सत्यापित किया है कि यज्ञ की समस्त कार्यवाई वेद विधि सें सम्पन्न हुई और **कोई भी** कर्मकांड भूल सें भी नहीं छूटा. अतः उपरोक्त विधि के अनुसार ऋश्यश्रृंग और कौशल्या ने यज्ञ मंडप पर शारीरिक सम्बन्ध बनाए. जिससें राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न का जन्म हुआ.

2. राजवाड़े महोदय के अनुसार ''जिस मालिक की धूनी होती थी, उसकी स्त्रियां आये हुए मेहमानों के साथ रमराण (संभोग रत) होती थीं और स्वयं यजमान ब्रह्मचार्य सें रहते थे.'' (पृ.137)

3. दयानन्द के अनुसार वेद की आज्ञा है कि यज्ञ के दौरान यजमान ब्रह्मचार्य का पालन करे. (सत्यार्थ प्रकाश) अतः दशरथ ने तो वेद विधि सें सम्पन्न हुए इस यज्ञ में ब्रह्मचार्य का पालन किया और ऋषियों ने जो कुछ रानियों के साथ किया, उसका वर्णन ऊपर दिया जा चुका है.

4. यज्ञ में दशरथ को छोड़ सभी संभोगरत हुए. यहां तक कि यज्ञ में मैनेजर बने, उसके कुलगुरू वशिष्ठ ने भी रानियों पर हाथ साफ कर लिया. अतः राम का औरस बाप तो ऋश्यश्रृंग हुआ. उसके सिवाय कौन किस के वीर्य से जन्मा, कोई पता नहीं.

5. यज्ञ के घोड़े को इन्द्र देव माना जाता था. इन्द्र आर्यों में यज्ञों का चीफ था. दशरथ द्वारा कराए गए यज्ञ में इन्द्र के आने का कोई जिक्र नहीं है. अतः उसका रोल ऋश्यश्रृंग ने ही निभाया क्योंकि वह उस यज्ञ का चीफ था. वैसे भी दशरथ को ''रैतोधा'' अर्थात पूर्ण रूप सें वीर्य सींचने वाला घोड़ा चाहिए था.

6. इस यज्ञ में सभी ने विशेषकर ब्राह्मण ऋषिओं ने घर की निकाली गई शराब अर्थात सोमरस पी रखी थी. साथ में वे लोग यज्ञ अग्नि में पशु अंगों को भून कर खा रहे थे. रानियों को गर्भवती होने की प्रबल लालसा थी. और उन ब्राह्मण ऋषिओं सें दशरथ ने कहा कि मेरी पटरानी की जंघाएं उठाओ.

7. गैर मर्द द्वारा हुए राम के जन्म पर चाहे लीपा पोती की गई मगर राम के सहायक वानरों विशेषकर हनुमान आदि के अवैध जन्म पर कोई लीपा पोती नहीं की गई. उत्तरकांड में भगवन बाल्मिकी ने साफ साफ लिखा कि केसरी की पत्नि अंजनि ने गैर मर्द पवन सें व्यभिचार करके हनुमान को जन्म दिया. दूसरे वानर भी गैर मर्दों द्वारा व्यापक व्यभिचार सें पैदा किए गए. स्वयं ब्रह्मा ने अपने देवों को हुक्म दिया था कि वे सभी जाति की औरतों सें व्यभिचार करे राम के सहायक पैदा करें. (बालकांड.17)

इतना कुछ होने के बाद भी रानियां गर्भवती नहीं हुई. अतः उसने फिर सें ऋश्यश्रृंग सें प्रार्थना की कि वह उसकी कुलवृद्धि का उपाय करे. ऋष्यश्रृंग ने कुछ देर सोचा और बोला कि अब मैं अथर्ववेद के मन्त्रों वाला पुत्रेष्टि यज्ञ करूंगा. ऋष्यश्रृंग ने यज्ञ शुरू किया. इसके बाद कथा है कि देवताओं की सभा हुई. उन्होंने हाय तौबा मचाई कि महात्मा रावण द्वारा बलि यज्ञों पर रोक लगाने के कारण उन के गुलछर्रे समाप्त हो गए हैं. ब्रह्मा के कहने पर विष्णु आदमी के रूप में पृथ्वी पर आकर महात्मा रावण **और उनके पुत्रों पौत्रों तक परे खानदान** को मारने का वादा करता है. **इस प्रकार विष्णु और उसके गिरोह ने महाराज रावण के पुत्रों की हत्या की साजिश उनके जन्म सें पहले ही बना ली थी.**

तब ऋष्यश्रृंग ने पुत्रेष्टि यज्ञ आरम्भ किया. इस यज्ञ में ऋष्यश्रृंग, दशरथ और तीनों रानियों के इलावा किसी और के भाग लेने का वर्णन नहीं है. लगता है यह ऋष्यश्रृंग का व्यक्तिगत प्रयास था. (समु 2/50). यज्ञ के दौरान वेदी में सें एक अति वीर्यवान, काले रंग का, लाल मुख वाला, सिंह के समान बालों वाला और पर्वत शिखर के आकार का प्राणी प्रकट हुआ. उसने दशरथ सें कहा यज्ञ करते हुए तूने इस पायस को पाया है जो कि यज्ञाग्नि सें बना, पुत्र उत्पादक एवं आरोग्य वर्धक है. इसे रानियों को दे. जैसे ही रानियों ने उस पायस को ग्रहण किया, वे **''अचिरेण''** (बिना एक पल की देरी के) गर्भवती हो गईं.

इसके साथ ही ऋश्यश्रृंग का वर्णन भी समाप्त हो जाता है. अपना काम करके वह कहां चला गया, इसका कहीं कोई वर्णन नहीं है. इसके बाद इस बात का वर्णन है कि ब्रह्मा ने सभी देवों को आदेश दिया कि वे सभी जाति की स्त्रियों सें व्यभिचार करके राम के सहायक पैदा करें. ब्रह्मा सें ऐसी आज्ञा पाकर देवों ने धरती पर व्यभिचार का खुल कर खेल खेला. उनके इस व्यभिचार सें शायद ही कोई स्त्री बच पाई होगी. इन देवों के व्यभिचार सें जन्मे बच्चे अपने जायज पिताओं सें अधिक बलवान थे. (बा.रा. बाल 17) उदाहरणतः हनुमान की माँ, जो कि केसरी की पत्नि थी, सें देव पवन ने व्यभिचार किया. पवन के अनैतिक समागम सें जन्मा हनुमान अपने असली बाप केसरी सें कई गुणा बलशाली था. अस्तु.

उपरोक्त तथ्यों सें यह तो स्पष्ट है कि **तीनों रानियों के गर्भ धारण में दशरथ का कतई कोई योगदान नहीं है.** उनके गर्भवती होने में प्रथमतः ऋश्यश्रृंग का योगदान है. अगर दूसरा किसी का योगदान हो सकता है तो वह है लाल मुखी के पायस या पयस का. प्रश्न उठना स्वभाविक है कि यह लाल मूंहा कौन है जिस सें पयस/पायस ग्रहण करते ही रानियां अचिरेण गर्भवती हो गई.

सर्वप्रथम तो यह सारा प्रकरण ही रामायण की मुख्य कथा के विपरीत है. जहां भगवन बाल्मिकी ने राम को सारी रामायण में एक साधारण प्राणी की तरह चित्रित किया है, इस प्रकरण द्वारा उसे भगवान घोषित करने की कोशिश की गई है. अतः यह प्रकरण इसी उद्देश्य के साथ बाद में जोड़ा गया है. क़ामिल बुल्के भी सर्ग 14 सें 18 तक को प्रक्षिप्त मानते हैं जिन्हें असली रामायण बाद में किसी ने जोड़ दिया है. (चाभी 14)

बाबा साहिब अम्बेडकर के अनुसार यह लाल मूंहा प्राणी पुरुष लिंग का द्योतक है और पायस पुरुष वीर्य का द्योतक है. लेकिन उनका उद्देश्य राम को विष्णु का अवतार बनाना था. अतः उन्हे इस प्रकार की कथा का निर्माण करना पड़ा. वे इस बात की हिम्मत नहीं कर पाए कि विष्णु को किसी के वीर्य में उपस्थित दिखाएं. इसलिए उन्हें पुरुष लिंग की शक्ल जैसे लाल मूंहे प्राणी और वीर्य जैसे पायस की कल्पना करनी पड़ी.

हो सकता है भगवान बाल्मिकी ने राम का जन्म नियोग द्वारा होना लिखा हो जिसे बाद में मोड़ तरोड़ कर वर्तमान रूप में बना दिया गया हो ताकि बिना घृष्टता किए, राम को उनके विष्णु का अवतार सिद्ध किया जा सके. अगर विष्णु को किसी पुरुष के वीर्य में स्थित दिखाते तो एक तो यह उनके भगवान के प्रति घृष्टता होती दूसरे रामायण को वह मान्यता न मिलती जो अब मिल रही है. अतः उन्हें पुरुष लिंग समरूप ''लाल मुखी'' और पुरुष वीर्य समरूप ''पायस" की कल्पना करनी पड़ी. **पयस का अर्थ वीर्य भी हैं. (आप्टे)**

एक और तथ्य भी यहां विचार योग्य है कि राम को तुलसी सें पहले कोई विशेष मान्यता प्राप्त न थी. यह तो जब तुलसी ने हिन्दी में रामचरित लिखा तभी लोग राम को जान पाए. वर्ना अलबरूनी, फाह्यान आदि के समय आम लोगों में राम को बहुत कम मान्यता थी. यहां तक कि राम के नाम पर बना कोई भी मंदिर 1000 ईस्वी सें पहले का नहीं है. अतः पूरी सम्भावना है राम को भगवान बनाने की यह गड़बड़ तुलसी के आसपास के समय में ही की गई हो और तभी भगवान बाल्मिकी द्वारा रचित रामायण में भी उपरोक्त प्रकरण जोड़ दिया गया हो.

प्रश्न उठता है कि यह लाल मुखी प्राणी कौन था? रामायण के उक्त सर्ग के अध्यन सें निम्न बातें प्रकट होती हैः

1. वह लाल मुखी विष्णु द्वारा भेजा गया अतिथि था.

2. वह लाल मुखी जब प्रकट हुआ तो उसे मात्र दशरथ ने देखा और मात्र उसी सें वार्तालाप किया.

3. उस लाल मुखी के आने का तथा ऋश्यश्रृंग के आने का एक ही प्रयोजन था अर्थात नपुत्रे नपुंसक दशरथ की पत्नियों के सन्तान पैदा करना.

4. रामायण के उक्त सर्ग में उस लाल मुखी और ऋश्यश्रृंग दोनों को "परम तेजस्वी'' के रूप में चित्रित किया गया है.

5. और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह कि जैसे ही वह लाल मुखी "अपना काम पूरा करके" अंतर्धान होता है. ऋश्यश्रृंग का भी काम पूरा हो जाता है. इस तरह दोनों अपना काम एक साथ पूरा करके एक ही बार में एक साथ गायब हो जाते हैं.

6. जहां वेद विधि अनुसार किए गए अश्वमेध यज्ञ में दशरथ के कहने पर ऋश्यश्रृंग रानियों की योनियां वीर्य सें भरता है, यहां पुत्रेश्टि यज्ञ में लाल मुखी द्वारा दिए गए पायस सें रानियां तुरंत गर्भवती हो जाती हैं. अतः दानों ही विधियों में गर्भाधान का कार्य ही सम्पन्न होता है जो कि ऋश्यश्रृंग के अतिरिक्त किसी और ने नहीं किया. **दोनों ही विधियों में दशरथ का रानियों सें कोई समागम नहीं हुआ.**

7. पैरियर रामास्वामी नायकर ने सत्य कहा है कि दशरथ उस समय तक साठ साल का बूढ़ा बन चुका था. जब सारी उम्र उससें कुछ नहीं हुआ तो यज्ञ के अगले दिन ही वह "बाप" कैसे बन गया. आर्यों में गैर मर्द विशेषकर ब्राह्मणों सें बच्चे पैदा करवाना धर्म माना जाता था. स्वयं राम के अनेकों पूर्वजों ने ब्राह्मणों सें नियोग करवा कर अपना रघुकुल आगे चलाया था. अतः इस तरह राम का जन्म पूर्णतया "सनातन धर्म सम्मत" था.

8. रामायण बाल कांड में वर्णित ऋश्यश्रृंग का हुलिया एक शक्तिशाली तथा अग्नि समान (लाल) पुरुष के रूप में किया गया है. दशरथ के उस अनुश्ठान में ऋश्यश्रृंग सें बढ़ कर शक्तिशाली तथा लाल पुरुष और कोई न था.

9. इस लाल मुखी के बारे में प्रसिद्ध मनोविज्ञानिक सी.जी.जुंग का उद्धरण देना उपयुक्त होगा. एक व्यक्ति ने उनसें पूछा कि उसे स्वप्न में एक अजीब सी आकृति दिखाई देती है जिसके एक आंख, लाल मूंह, काला रंग, पर्वत शिखर सा आकार आदि है. जुंग के अनुसार यह आकृति पुरुष लिंग की द्योतक है. प्राचीन काल में धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप पुरुष लिंग की कल्पना ऐसे रूप में ही सभी सभ्यताएं व समाज करते आए हैं. स्वयं ब्राह्मणधर्म में शिव का लिंग इसी रूप में पूजा जाता है.

10. इस आकृति का हुलिया रामायण में वर्णित लाल मुखी से लगभग मिलता है. अतः यह आकृति वास्तव में ऋश्यश्रृंग अथवा उसके पुरुषांग की द्योतक है जिससें कि तीनों रानियों ने वीर्य अर्थात पायस ग्रहण कर अचिरेण गर्भ धारण किया. **सरिता के सम्पादक महोदय ने बिल्कुल सही लिखा है कि यह वास्तव में दशरथ की रानियों को ऋश्यश्रृंग का वीर्यदान था. (समु 2.50).**

11. यहां यह बताना भी उपयुक्त है कि गुरू कबीर के जमाने तक लोग ऋश्यश्रृंग को ही राम का असली बाप मानते थे. इसीलिए कबीर साहेब ने बिना लाग लपेट के यह बात कही : **देखो लोगो राम की सगाइ! हम बहनोई, राम हमारा साला!! हमहि बाप, राम पुत हमारा !!! अर्थात राम का सगापाना देखो. जो राम का बहनोई है वही उसका बाप भी है!**

इन तथ्यों सें यह स्पष्ट होता है कि वह लाल मुखी और ऋष्यश्रृंग एक ही प्राणी के दो भिन्न रूप हैं और दशरथ की रानियों को गर्भाधान करने वाला ऋश्यश्रृंग ही था. राम को विष्णु का अवतार सिद्ध करना एक मात्र कारण था जिस की वजह सें इतना पर्दा डाला गया. वर्ना आर्यों में तो नियोग अनिवार्य प्रथा थी. यहां तक कि आधुनिक काल के आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द ने भी नियोग द्वारा दस पुत्र पैदा करना जायज और अनिवार्य करार दिया है. अतः दशरथ ने ऋष्यश्रृंग सें नियोग करवा कर आर्य प्रथा का निर्वहण ही किया था.

यहां हनुमान जन्म का उदाहरण देना भी प्रासांगिक है. हनुमान की माँ का नाम अंजनि था और अंजनि के पति का नाम केसरी था. केसरी उस पहाड़ी प्रांत का राजा था. एक दिन अंजनि स्नान करके साफ वस्त्र पहन, श्रृंगार कर पर्वत पर घूमने निकली. वहां उसे देव पवन मिल गया. उसने अंजनि के महीन वस्त्र हटा दिए. पवन उसका सुन्दर रूप, शरीर देख कर उस पर मोहित हो गया और उसने अंजनि सें संभोग याचना की. केसरी की ब्याहता अंजति पहले तो नहीं मानी लेकिन जब पवन ने उससें पुत्र पैदा करने का लालच दिया तो अंजनि पवन सें संभोग के लिए राजी हो गई. पवन ने वहीं पत्थर पर लिटा कर अंजनि सें संभोग किया. उन दोनों के इस नाजायज समागम अथवा व्यभिचार सें हनुमान पैदा हुआ.

उपरोक्त हनुमान जन्म प्रकरण में भगवान बाल्मिकी ने कोई लाग लपेट नहीं की है. उन्होंने बिना पर्दा डाले स्पष्ट लिखा है कि हनुमान की माँ ने गैर मर्द पवन सें व्यभिचार करके हनुमान को पैदा किया. उन्होंने पर्दा इस लिए नहीं डाला क्यों कि उन्होंने हनुमान को "भगवान'' का अवतार सिद्ध नहीं करना था. जबकि जिस किसी ने भी राम के विषय में रामायण के मूल स्वरूप में गड़बड़ की है, उसका उद्देश्य राम को अवतार सिद्ध करने का

था. अतः उसने ऋश्यश्रृंग द्वारा कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी सें किये गए व्यभिचार पर उपरोक्त ढंग सें पर्दा डालने की कोशिश की है.

रामायण कथा में एक बात बड़ी अजीब है तथा सबकी समझ सें परे है कि राम हनुमान आदि ने महात्मा रावण को मारने की योजना या साजिश अपने पिछले जन्म में ही बना ली थी और उसी योजना, साजिश के अनुरूप उन्होंने धरती पर जन्म या अवतार लिया **तो उन्होंने अपने माँ और बाप चुनने में धांधली क्यों बरती? उन्होंने ऐसे बाप क्यों चुने जो नपुंसक थे अथवा बच्चे पैदा करने में असमर्थ थे. उन्होंने जन्म या अवतार लेने के लिए अपनी माँओं को गैरों सें दूषित क्यों करवाया. अगर राम और हनुमान भगवान कहे जाने वाले विष्णु और शिव के अवतार थे और उन्होंने अपनी इच्छा सें मानव और वानर योनि में जन्म लिया था तो वे इतना तो कर ही सकते थे कि ऐसे मानव और वानर पिता का चयन करते जो स्वयं उन्हे पैदा करने की क्षमता रखते थे.**

और किसी भी "भगवान" में इतना सामर्थ्य तो जरूर होना ही चाहिए कि जिसके भी यहां वह जन्म ले, कम सें कम वैध सन्तान के रूप में तो जन्म ले और अपनी माँ को गैरों सें दूषित तो न करवाए. वैसे जो भगवान जन्म लेने के लिए अपनी माँ को गैर मर्द सें दूशित करवाता है तो बड़ा होकर वह स्वयं क्या गुल खिलाएगा, इसकी कल्पना सहज की जा सकती है.

इन बातों का सीधा सा अर्थ यह निकलता है कि ब्राह्मण ऋषि ऐयाशी चाहते थे. जो उनकी ऐयाशी पूरी कर देता था उसे वे "भगवान" बना देते थे. पढ़े लिखे ब्राह्मण ही होते थे अतः जो मन में आता वही स्टोरी लिख देते थे. ब्राह्मणों द्वारा घढ़े गए किस्सों सें तो ऐसा लगता है कि उस समय के शूद्रों को छोड़ कर शेष सभी जातियों में ऐसे ही बच्चे पैदा करवाने का रिवाज था.

5.5.2 राम .... और मर्यादा ?

एक बात का बहुत जोर शोर सें प्रचार किया जाता है कि राम मर्यादा–पुरुषोतम था. "मर्यादा–पुरुषोतम'' अर्थात जिसने पुरुषों की सर्वोत्तम मर्यादायें स्थापित कीं. उसने कौन सी मर्यादाएं स्थापित कीं. कोई धर्म–ग्रन्थ नही बताता. ले दे कर कोई बयान करता है तो इतना कि वह बाप की आज्ञा मान कर 14 वर्ष बनवास में रहा. बनवास जाने के प्रसंग पर टिप्पणी करने के साथ साथ राम के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं पर भी नजर डालते हैं.

1. **जन्म** : उसका जन्म ही आज की मान्यताओं के अनुसार ''अवैध, अपवित्र और पापपूर्ण'' है.
2. **लड़कपन** : लड़कपन की उम्र में उसने निरपराध ताड़का तथा अन्य राक्षसों को मार दिया. 12–13 वर्ष की आयु में उसने सीता को जीत लिया और दहेज में करोड़ों की सम्पत्ति के साथ साथ हजारों दासियां भी पाईं.
3. **युवावस्था** :अपने छोटे भाई और गद्दी के असली वारिस भरत सें धोखा करके, बाप के जीते जी गद्दी पर कब्जा करने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहा और 14 साल वनबास की सजा भोगी.
4. **गृहावस्था** : 25 साल सीता के साथ रहा परन्तु फिर भी बाप की तरह निसन्तान ही रहा.
5. **बनवास** : अनगिनत निरीह पशु मारे, यहां तक कि पवित्र पशु (गाय) भी मारी और खाईं.
   बालि की नियोजित तथा कायरतापूर्ण हत्या की.
   रक्ष संस्कृति के अनगिनित बच्चे, बूढों और स्त्रियों की निर्मम हत्या की.
   सीता को छुड़वाने के लिए दो बार दूत भेज कर अपनी "मर्दानगी'' का सबूत दिया.
6. **राज्यकाल** : ऋषि शम्बूक की हत्या की.
   वेश्याओं से रंगरलियां मनाईं.
   गद्दी के लिए सीता को जंगल में फिंकवाया.
   सारी उम्र सेवा करने वाले भाई लक्ष्मण से आत्महत्या करवाई.
7. **अंत** : सरयू में डूब कर आत्महत्या की.

इन मुद्दों का विस्तृत विवेचन इस प्रकार सें है :

<u>जन्म</u> : राम के जन्म लेने की विधि पर पीछे विस्तृत विवेचन कर चुके हैं. हम में सें कितने लोग हैं जो इस ब्राह्मणवादी वेद–विधि सें पैदा हुए हैं. या कितने लोग हैं जो अपनी पत्नी, बहन, बेटी, बूआ, चाची आदि सें इस विधि द्वारा संतान पैदा करवाना चाहेंगे, अथवा कितने लोग इस ब्राह्मणवादी विधि को स्वीकार कर पाएंगे कि

यजमान वेश्याऐं भेज कर ब्राह्मणों को बुलाए, फिर उनको मीट शराब ग्रहण करा कर वैसा कुछ आग्रह करें जैसा दशरथ ने ऋश्यश्रंग सें अश्वमेध में किया था.

हमारा दृढ़ विश्वास है कि राम जन्म की यह मर्यादा कोई भी गैरतमंद आदमी स्वीकार नहीं करेगा, यहां तक कि शिव–सेना, आर.एस एस, विश्व हिन्दू परिषद वाले भी अपनी बहन बेटी सें पण्डों द्वारा इस विधि सें संतान पैदा नहीं करवा पाएंगे. कहा जा सकता है कि ऐसे जन्म लेने में राम का क्या कसूर है. लेकिन यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि राम का जन्म पूर्णतया पूर्व नियोजित था. उसे विष्णु का अवतार बताते हैं जो महात्मा रावण को मारने के लिए ही पैदा हुआ था. अतः राम सोच समझ कर इस विधि सें पैदा हुआ था. वह चाहता तो सही मां–बाप के यहां भी पैदा हो सकता था.

बचपन : राम ने लगभग 10 वर्ष की आयु में पहली हत्या की. वह भी एक निरपराध महिला ताड़का की. बाल्मिकी रामायण के अनुसार ताड़का सीधी सादी स्त्री थी. पूरी रामायण में कहीं कोई जिक्र नहीं है कि ताड़का ने किसी निरपराध व्यक्ति या ऋषि को मारा हो. रक्ष संस्कृति के लोग (राक्षस) मात्र "छिद्र" वाले यज्ञों को नष्ट करते थे जो उनके पूजनीय महात्मा रावण के राज्य क्षेत्र में किए जाते थे. **''छिद्र वाले यज्ञ''** वे यज्ञ होते थे जिनमें कम सें कम 16 ब्राह्मणिक ऋषि एकत्रित होकर ''यज्ञ'' करते थे जिसमें वे ब्राह्मण ऋषि खुल कर सुरा, सुन्दरी और माँस का भोग करते थे. ब्राह्मणवाद के सभी प्राचीन ग्रन्थ इस बात के साक्षी हैं कि ब्राह्मणवादी ऋषि यज्ञ में पशुओं की बलि देते थे, उनके माँस को वहीं यज्ञ की आग में भून कर खाते थे और सोम नामक शराब पीकर वहीं यज्ञ वेदी पर व्यभिचार भी करते थे.

जैसे आज के सभ्य समाज को यह प्रथा अमानवीय और नीचतापूर्ण लगती है वैसे ही धर्म के नाम पर की जा रही यह करतूत महात्मा रावण को असहनीय लगी थी. अतः उन्होने अपने साम्राज्य में यज्ञ करने वाले लोगों के लिए निम्नलिखित मर्यादाएं निश्चित की थीं :

1. उन्होने पहली मर्यादा यह बनाई कि बड़े बड़े आडम्बर पूर्ण यज्ञों की बजाए **हर घर में हवन किए जाएं** जहां **मात्र एक पुरोहित** यह कार्य सम्पादन कर सकता है. स्वयं हनुमान ने लंका में घर घर में इसी प्रथा के अनुरूप हवन होते हुए देखे थे.
2. 16 ब्राह्मण ऋत्विकों के गिरोह द्वारा किए जा रहे अश्लील और वीभत्स यज्ञों पर उन्होंने पूरी तरह पाबन्दी लगा दी थी. हवन कुण्डों के पास किए जा रहे **यौन अनाचार को उन्होंने बन्द करवाया.**
3. उन्होने यज्ञ में किसी भी प्रकार की **बलि देने पर पूर्णतया पाबन्दी** लगा दी थी ताकि लोगों के पास दूध पीने के लिए गाएं और खेत में काम करने के लिए बैल बचे रहें.
4. उन्होंने यह भी व्यवस्था की कि हवन के समय कोई भी पुरोहित ऋषि, यजमान या अतिथि किसी प्रकार के **नशीले पदार्थ (सोमरस) का सेवन न करे.**
5. उनके राज्य की सीमा में जिन यज्ञों में बलि देने, शराब पीने और व्यभिचार करने की घटनाएं होती थीं, ऐसे यज्ञों को **"छिद्र वाले यज्ञ"** यानि अनैतिक यज्ञ कहा जाता था जिसे रक्ष–संस्कृति के रक्षक नष्ट कर देते थे तथा ऐसे यज्ञ कर्ताओं को सजा भी देते थे.
6. **उन्होने यह भी व्यवस्था दी कि हवन अब्राह्मण लोग भी कर सकते हैं. कोई भी यज्ञ या हवन बिना ब्राह्मण के भी किए जा सकते हैं. भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने तो अब 21 वीं सदी में यह व्यवस्था दी है कि कोई अब्राह्मण भी ''पुजारी'' बन सकता है. लेकिन इतिहास में पहली बार ऐसा तब हुआ जब महात्मा रावण ने अब्राह्मणों को पूजा करने और करवाने का अधिकार दिया. जहां भारतीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश मात्र कागजों पर छप कर रह गए हैं, महात्मा रावण ने इन नियमों को लागू भी किया.**

महात्मा रावण के इन क्रांतिकारी कदमों ने ब्राह्मणवाद की नींव हिला कर रख दी. इन व्यवस्थाओं के चलते ब्राह्मणों और उनके देवताओं की न केवल पेट पूजा मारी गई बल्कि उन की ऐयाशी भी समाप्त हो गई. उन की लंका में कौन कौन से ऐयाश देवता कैद थे, सभी जानते हैं. औरों की तो छोड़िए, हनुमान का असली बाप पवन भी उनका कैदी था. अस्तु.

प्राचीन समय में लोगों का मुख्य धन पशु होते थे. जो न केवल खेती करने में सहायक होते थे बल्कि दूध, दही और घी के भी स्त्रोत भी होते थे. ऋग्वेद पशुओं के लिए की गईं लड़ाइयों सें भरा पड़ा है. जैसे आज बाबा आम्टे जैसे लोग पर्यावरण बचाने के लिए जी जान सें जुटे हुए हैं वैसे ही उस जमाने में ताड़का और उनके सहयोगी भी इन कसाइयों अर्थात यज्ञ कर्ता ब्राह्मण ऋत्विकों सें पशु धन बचाने में जुटे हुए थे. उस समय वे ऋषि रोजाना सैंकड़ों गायों, बैलों, हिरणों आदि निरीह जीवों को यज्ञ में भून कर खा जाते थे, किसी भी बच्ची, युवति, अथवा स्त्री की इज्जत पर हाथ डाल लेते थे. औरों की बहन बेटी की तो बात छोड़िये ऋग्वेद में तो एक यज्ञ कर्ता द्वारा यज्ञ वेदी पर अपनी ही बेटी सें कुकर्म का वर्णन है. और इसमें घोर शर्मनाक बात यह है कि ऋग्वेद इस कुकर्म को "शोभन कार्य" बताता है. (देखिए अ.5)

महात्मा रावण ने क्योंकि उनकी इन करतूतों पर पाबंदी लगा दी थी, इससें इन ऋषिओं की एयाशी बन्द हो गई थी. अतः उनका सरगना विश्वामित्र दशरथ के पास आया. चोर का भाई गिरहकट. विश्वामित्र की मेनका नामक वेश्या के साथ मनाई गई रंगरलियां किसी सें छुपी नहीं हैं और दशरथ को ऋषिओं सें पुत्र प्राप्ति को ज्यादा दिन नहीं हुए थे. अतः उसने राम को पुत्र दाता ऋषिओं की रक्षा हेतु भेज दिया.

राम ने जाते ही निहत्थी ताड़का को पकड़ लिया तथा उनके गुप्त अंग में तलवार घुसेड़ कर बड़ी बेरहमी सें उनका कत्ल कर दिया. (सीता : जिनोसाइड)

आखिर कसूर क्या था ताड़का का कि राम ने उनको इस बेरहमी सें मार दिया ?

बाल्मिकी रामायण के बाल कांड (सर्ग 24 सें 26 तक) में ताड़का–वृतांत है, जहां ले देकर उनका कसूर मात्र इतना बताया गया है कि अगस्त्य ऋषि और उनका झगड़ा हुआ था जिसमें ताड़का और उनका बेटा मारीच अगस्त्य को मारने दौड़े थे. तब उसने ताड़का को कुरुप और उनके बेटे मारीच को राक्षस बना दिया. अगस्त्य को उन दोनों माँ बेटे ने कुछ हानि की हो, ऐसा कोई जिक्र नही है. औरतों को कुरूप बनाना या अंग भंग करना आर्य मर्यादा थी.

प्रश्न उठता है कि ताड़का और उनका बेटा मारीच अगस्त्य को मारने क्यों दौडे ? इसके लिए अगस्त्य का परिचय जानना जरुरी है. मित्र और वरुण दो देव थे. एक दिन दोनों ने एक वेश्या उर्वशी को नहाते देख लिया. दोनों ने उस वेश्या सें व्यभिचार किया. दो ऋषि, एक अगस्त्य और दूसरा राम का कुलगुरु वशिष्ठ पैदा हो गए. महाभारत के वनपर्व 96–98 मे अगस्त्य की करणी बयान है कि उसके एक लड़की पैदा हुई जिसको उसने विदर्भ के राजा के पास रख दिया. जब वह जवान हो गई तो उसे ले आया और उसके साथ उम्र भर व्यभिचार करता रहा.

फिर एक दिन भूख मिटाने के लिए वह ब्राह्मणऋषि वातापि नामक आदमी को मार कर खा गया.

अतः ऐसे नरभक्षी को अगर ताड़का ने छिद्र वाले यज्ञ करने सें रोका तो कौन सा गुनाह कर दिया कि राम ने उनकी हत्या ही कर दी.

हम फिर वही प्रश्न दोहराना चाहेंगे कि हम में से कितने लोग हैं जो राम की इस मर्यादा को अपने बच्चों पर लागू करना चाहेंगे कि वे 10–12 वर्ष की आयु में निरपराध महिलाओं को बेरहमी सें जान सें मार दें. या फिर ऐसे दरिन्दों के संरक्षक बन जाएं जो नरभक्षी हों और अपनी ही बेटी सें व्यभिचार करते हों.

लड़कपन : राम लड़कपन में था जब उसने सीता को जीता था. सभी ब्राह्मणग्रन्थों मे यही वर्णित है कि जनक ने यह शर्त रखी थी कि जो भी धनुष की डोरी चढ़ा देगा, सीता उसको दे दी जाएगी. अनेकों राजाओं सामन्तों ने जोर लगाया लेकिन असफल रहे. **जनक ने दशरथ, राम आदि को इस काम के लिए बुलाया ही नहीं था**. टोकारा भी न डाला था.

ताड़का आदि की हत्या करके जब राम लक्ष्मण विश्वामित्र लौट रहे थे तो मिथिला के बाहर ही उनकी मुलाकात जनक सें हो गई. उसने अपना दुखड़ा विश्वामित्र के आगे रोया कि कोई भी राजा या सामन्त धनुष की डोरी चढ़ा कर सीता को नहीं जीत पाया, तो विश्वामित्र ने धनुश देखने की इच्छा जाहिर की. जनक ने अपने आदमी भेजे और वे धनुश ले आए. राम ने सन्दूक में सें धनुश निकाला और उस पर डोरी कसने लगा कि वह टूट गया. जनक ने सीता राम को पकड़ा दी.

आर्य अपनी बेटियों को ऐसे ही दांव पर लगाते थे जिसे आजकल के ब्राह्मणिक विद्वान स्वयंवर बताते हैं.

जनक ने सीता ही नहीं दी बल्कि साथ में ''परम सुन्दरी 100 अलंकृत कन्याएं'' भी दीं. आजकल व्यापारी सेल लगाते हैं जहां "एक के साथ एक फ्री" की स्कीम चलाई जाती है लेकिन जनक ने तो **एक के साथ एक सौ फ्री** दे दीं.

प्रश्न उठता है कि इस सारे कांड में सीता की मर्जी कहां थी. उस बेचारी को तो पता ही नहीं था कि किसी निर्मम 'स्त्री हत्यारे' ने उसे जीत लिया है! इसमें वधु द्वारा स्वयं पति यानि वर चुनने का काम कहां हुआ. एक पल के लिए सोचें कि वह संदूक अगर विश्वामित्र खोल कर देख लेता और धनुष पर डोरी चढ़ा देता तो क्या सीता उसके साथ जाने सें मना कर सकती थी?

अगला प्रश्न उठता है कि ये दासियां कहां से आईं ? जनक भी तो दशरथ की तरह बांझ था. फिर किसकी बेटियों की दल्लागिरी उसने की ? कहां सें दल्लागिरी करके वह लाया इतनी सारी परम सुन्दर कन्याएं ? अगर उसने काम करने के लिए ही नौकरानियां देनी थीं तो ''परम सुन्दरियां'' किस लिए दीं. और ये सभी परम सुन्दरियां ''कन्याएं'' अर्थात ''कुंआरी'' ही क्यों दीं ? और उनको अलंकृत करके ही देने की क्यों आवश्यकता पड़ी ?

पूछा जा सकता है कि राम ने इन दासियों का क्या किया ?

फिर वही सवाल उठता है कि कितने लोग हैं जो अपनी बहन बेटियों को इस प्रकार दांव पर लगाने का काम कर सकते हैं और कौन है जो इस प्रकार दांव पर लगाई गई लड़की को जीत कर अपनी पत्नि बनाना स्वीकार करेगा. हमारे विचार में रामचरित लिखने वाला तुलसी भी अपनी बेटी को इस प्रकार दांव पर नहीं लगा पाता और न ही अपनी पुत्रवधु इस प्रकार सें ला पाता.

राम द्वारा स्थापित यह मर्यादा संघी भाई या विश्व हिन्दू परिषद के लोग भी नहीं अपनाना चाहेंगे और न ही अपना पाएंगे. अगर वे राम को मर्यादा पुरुषोत्तम मानते हैं तो उन्हें भी राम की तरह अपनी बहन बेटियों और वधुओं को ऐसे दांव पर लगा कर "स्वयंवर" करने चाहिएं. वे जाति की शर्त न रखें, फिर देखें सिवाय एकलव्यों के कौन उनके स्वयंवर जीतते हैं!!

युवावस्था : भरत समान जुड़वां भाई सें धोखा

इस कथा सें सभी परिचित हैं कि दशरथ ने **गुपचुप** रीति सें राम को गद्दी सौंपने का उपक्रम किया था जिसे राम ने **गुपचुप** ही स्वीकार कर लिया था लेकिन एन वक्त पर कैकेई ने उसकी साजिश चौपट कर दी. राम को बनवास मिला लेकिन भरत गद्दी पर नहीं बैठा और वन सें आते ही राम को गद्दी सौंप दी.

बाल्मिकी रामायण का अयोध्या कांड इस पूरे घटनाक्रम का ब्योरा देता है जिसे सर्ग दर सर्ग नीचे दिया जा रहा है.

पहले सर्ग में भरत और शत्रुघ्न के ननिहाल जाने का वर्णन है तथा दशरथ के **रिटायर** होने की इच्छा का वर्णन है. उसका एक मात्र सईस, मन्त्री नौकर सुमन्त दशरथ की इच्छा समर्थन करता है. तथा "कल'' अर्थात अगले ही दिन राम का राजतिलक किया जाना तय किया जाता है.

दूसरे सर्ग में तथाकथित परिषद दशरथ के प्रस्ताव को अनुमोदन करती है कि **विशाल तथा खून जैसी लाल आँखों वाले राम** को गद्दी सौंप दी जाए.

तीसरे सर्ग में वर्णन है कि **वेश्याओं और ब्राह्मणों** को राजतिलक के लिए तैयार रहने को कहा गया. यह भी कहा गया है कि **"कल पुष्य योग में चैत्र के शुभ महीने" में** राम का तिलक होना तय हुआ है.

चौथे सर्ग में दशरथ राम को **अकेले** में बुलाता है और कहता है कि **भरत के आने सें पहले** तेरा तिलक कर देना चाहता हूँ. राम इसे खुशी खुशी स्वीकार कर लेता है. राम अपनी माँ कौशल्या और सुमित्रा को यह समाचार देता है जिसे सुन कर कौशल्या कहती है तेरे दुश्मनों को नाश हो और तू सुमित्रा के निकट संबंधियों को प्रसन्न करे.

पाँचवें सर्ग में वशिष्ठ को यह दायित्व सौंपा जाता है कि निरविघ्न राजतिलक का प्रबन्ध पूरा किया जाए.

छटे सर्ग में वर्णन है कि राम अकेले सीता के साथ विष्णु मंदिर में यज्ञ करता है तथा सुबह नगरवासियों द्वारा राम के तिलक की चर्चा कर रहे होते हैं.

सातवें सर्ग में वर्णन है कि जब लोग राजतिलक देखने के लिए महल की ओर जा रहे थे तो मन्थरा को पता लगा कि राम का तिलक किया जा रहा है. उसने जाकर कैकेई को बताया. यह बात सुन का **कैकेई अति प्रसन्न** हुई और बोली कि वह राम और भरत दोनों में कोई अंतर नहीं समझती.

आठवें सर्ग में मन्थरा उसे समझाती है कि **जन्म के क्रम** के आधार पर भी गद्दी पर भरत का ही अधिकार बनता है और अगर राम को राज्य मिल गया तो भरत को उसका दास बनना पड़ेगा और अगर भरत राजा बन गया तो राम उसका स्वाभाविक दुश्मन बन जाएगा.

नवें सर्ग में वर्णन है कि मन्थरा उसे याद दिलाती है कि महाराज शंबर के साथ लड़ते हुए दशरथ घायल होकर अचेत हो गया था तब कैकेई ने उसकी जान बचाई थी. तब दशरथ ने उसकी दो बातें मानने का वचन दिया था. अतः अब उसे वे दोनों वचन पूरे करने के लिए दशरथ को कहना चाहिए.

दसवें व ग्यारहवें सर्ग में वर्णन है कि दशरथ अपनी काम वासना सें पीड़ित हो रतिक्रीड़ा के लिए कैकेई के कमरे में जाता है. वहां उसे कैकेई धरती पर पड़ी मिलती है. इससें पहले कि दशरथ उसे राम के तिलक का समाचार दे वह उससें अपने दोनों वचन पूरे करने को कहती है एक में भरत को राजा बनाना तथा दूसरे में राम को चौदह बरस का बनवास.

बारहवें सें सत्रहवें सर्ग में दशरथ और कैकेई के आरोप प्रत्यारोप आदि हैं.

अठारहवें सर्ग में कैंकेई राम को बताती है कि अपने पुराने वचनों को पूरा करने के लिए दशरथ ने उसकी जगह भरत को राजा बनाने तथा उसे **आजीवन बनवास** की बात स्वीकार की है.

उन्नीसवें सर्ग में राम कहता है कि वह चौदह बरस वन में रहने के लिए तुरंत जंगल में चला जाएगा.

बीसवें सर्ग में वह वचन देता है कि वह वन में **मांस भोजन नहीं करेगा.**

इक्कीसवें सर्ग में वर्णन है कि गद्दी मिलते मिलते छिन जाने पर लक्ष्मण गुस्सें सें लाल पीला होता है तथा **वह गद्दी पाने के लिए कामुक दशरथ, भरत और उनके समर्थकों को मार देने** बात करता है. **कौशल्या उसका समर्थन करती है.** लेकिन राम वन में जाने के फैसले पर अडिग रहता है.

बाईसवें सें पच्चीसवें तक सर्गों में गद्दी आते आते छिन जाने पर लक्ष्मण कौशल्या आदि का विलाप है.

छब्बीसवें सें तीसवें सर्ग तक सीता के वन जाने की जिद्द है. राम उसे भरत के पास छोड़ना चाहता है तो सीता राम को कहती है कि वह **आदमी के शरीर में औरत** है तथा वह उस नट की तरह है जो अपनी पत्नि को दूसरों को दे देता है.

इक्कतीसवें सर्ग में **राम लक्ष्मण सें कहता है** कि दशरथ ने कामवासना में अंधे होकर उसे बनवास जाने को कहा है. अब भरत राजा बन जाएगा तो उन दोनों की मांओं पर अत्याचार होंगे इसलिए उसे अयोध्या में ही रहना चाहिए.

बतीसवें सर्ग में राम अपना सारा धन ब्राह्मणों के नाम दान कर जाता है.

तैंतीसवें सर्ग में राम वैसे ही दुखी है जैसे गर्मी के मौसम में पानी सूख जाने पर पानी के जीव दुखी होते हैं.

सर्ग 107 में राम बताता है कि भरत गद्दी का असली हकदार है क्योंकि दशरथ ने कैकेई के पिता अश्वपति को वचन दिया है कि उसकी कोख सें पैदा पुत्र ही राजा बनाया जाएगा.

चौंतीसवें सर्ग में दशरथ राम सें कहता है कि वह उसे कैद में डाल दे और आज ही राजा बन जाए. **वह उसे "आज की रात मत जाओ"** भी कहता है लेकिन राम उसी समय चला जाता है.

पैंतीसवे सर्ग में सारथि मार्का मन्त्री सुमन्त्र अपने राजा दशरथ की रानी कैकेई को फटकारता है.

छतीसवें सर्ग में राम जब वन जाने लगता है तो दशरथ कहता है कि उसके साथ वेश्याएं तथा धनिक भेजे जाएं और जितना भी धन है वह सब राम के साथ भेज दिया जाए ताकि अयोध्या उस **मदिरा के समान** हो जाए जिसका नशा समाप्त हो चुका हो. ऐसा होने पर उजड़े हुए राज्य को भरत स्वीकार नहीं करेगा. इसके बाद राम वन में चला जाता है.

इस सारे प्रकरण में बहुत से तथ्य चौंकाने वाले हैं.

1. इतिहास अथवा मिथ्याहास में कहीं और ऐसी उदाहरण नहीं मिलती जहां किसी राजा ने अपने जीते जी **रिटायर होने** अर्थात विश्राम करने की सोची हो तथा जीते जी अपने बेटे को गद्दी सौंपनी चाही हो. आर्य राजा तो बार बार जवानी प्राप्त करके भोग भोगने वाले होते थे. अतः दशरथ की एच्छिक रिटायरमैंट **(Voluntary Retirement)** वाली बात पूरी रामकहानी को बनावटी बना देती है क्योंकि अगर दसरथ रिटायर न होना चाहता तो किसी बात का पंगा ही नहीं होना था. न वह मरने सें पहले गद्दी छोड़ना चाहता और न ही किसी बात का पंगा होता, न राम वन में जाता न रामायण होती!
2. इतिहास अथवा मिथ्याहास में कहीं और ऐसी उदाहरण भी नहीं मिलती जहां राजा ने अपने एक बेटे को गद्दी सौंपने का विचार बनाया हो और दूसरे बेटे को कानों कान खबर भी न होने दी हो. भारतीय समाज में कहावत है कि बैठना भाईयों का चाहे वैर हो. अब चाहे जमाना बदल रहा है लेकिन अब सें पचास साल पहले तक ऐसा होता था कि जो आदमी अपने भाईयों के साथ मिल कर नहीं बैठता था रिश्तेदार भी उसके विवाह शादी के कामों में शामिल नहीं होते थे. अतः त्रेता युग में राम का तिलक बिना भरत को बुलाये करना **एक नीचतम साजिश** के अंतर्गत ही हो सकती थी.
3. राम को गद्दी पर बैठाने का फैसला अचानक किया गया. **"केवल एक दिन पहले"** गद्दी देना तय किया गया. यानि जिस दिन यह तय किया गया कि राम को गद्दी पर बैठाना है उसके अगले दिन सुबह ही उसका राजतिलक करने कर फैसला किया गया. किसी को घर के लिए चारपाई भी लानी हो तो उस पर भी विचार करने में इससें ज्यादा समय लग जाता है.
4. यह बड़ी अजीब बात है कि दशरथ ने राम के ससुर जनक तक को भी खबर नहीं की कि उसके जंवाई को गद्दी सौंपी जानी है. वैसे रिश्तेदारों की तो बात ही छोड़ें दशरथ ने तो अपनी उस बीवी कैकेई तक को समाचार नहीं लगने दिया जिसने मुसीबत में उसकी जान बचाई थी.
5. आर्यों का कोई काम यज्ञ के बिना नहीं होता था लेकिन इस काम के लिए यज्ञ को भी टाल दिया गया क्योंकि यज्ञ होता तो कैकेयी, भरत समेत सभी को इस साजिश का पता चल जाता.

6. **दशरथ ने राम को अकेले में बुला कर कहा कि जब तक भरत इस पुर सें बाहर है, मैं तेरा तिलक कर देना उचित समझता हूँ.** राम की माँ यह बात सुन अत्यंत खुश हुई क्योंकि उसकी बरसों की चाह पूरी हो रही थी. वह बोली तेरे दुश्मन नष्ट हो जाएं और तू सुमित्रा के रिश्तेदारों का कल्याण करे!!
7. अयोध्या कांड (107) के अनुसार भरत गद्दी का असली हकदार था क्योंकि रधुकुलिए दसरथ ने उसकी माँ कैकेयी को वचन दिया था कि उसकी कोख सें जन्मा पुत्र ही गद्दी पर बैठेगा. पूरी अयोध्या को राम को गद्दी सौंपने की खबर दी गई मगर भरत तथा उसकी माँ कैकेई सें ही यह बात छुपाई गई. इन दो मां बेटों को ही भरत की जगह राम को गद्दी सौंपने की योजना (साजिश) की कानों कान खबर भी नहीं लगने दी गई. गली में उठ रहे शोर सें ही मन्थरा को पता चला कि राम का अभिषेक होने वाला है. यह समाचार सुन कर कैकेई अति प्रसन्न हुई लेकिन दशरथ, राम, लक्ष्मण कौशल्या आदि सभी भरत के विरुद्ध जहर उगल रहे थे.
8. राम को पूरी तरह सें यह मालूम था कि दशरथ ने **वचन दिया हुआ** है कि कैकेयी की कोख सें पैदा पुत्र (भरत) ही राजा बनेगा तो भी वह अपने भाई का हक मारने को तैयार हो गया. अतः उसने न केवल अपने भाई सें गद्दारी की बल्कि उसने **वचन निभाने** की तथाकथित रघुकुल रीत की भी पोल खोल दी.
9. कुल मिला कर यह भरत सें गद्दी हड़पने की एक गहन साजिश थी जिसमें राम, दशरथ कौशल्या आदि बदनीयती सें शामिल हुए और सीता, लक्ष्मण आदि गद्दी में हिस्सेदारी पाने के लिए शामिल हुए. कुल मिला कर सभी ने भरत जैसे सन्त समान व्यक्ति सें धोखा किया. ऐसे पवित्र भाई सें धोखा करके राम जैसे लोगों को सरयू में डूब मरना चाहिए था लेकिन राम तो पूरे चौदह साल वन में रह कर आते ही राजा बन बैठा. **उसके बाप द्वारा दिया गया वचन, बाप के साथ ही गया भाड़ में!!**
10. सारी रामायण में राम के खानदान में **भरत सें बढ़कर कोई भला** प्राणी नहीं है. फिर पता नहीं क्यों दशरथ, राम, लक्ष्मण और कौशल्या क्यों उसके विरुद्ध साजिश करते हैं. गद्दी का असली हकदार होने के बावजूद वह एक दिन भी गद्दी पर नहीं बैठा. फिर भी ये सारे उसे कोसते रहते हैं.

इस अध्याय सें स्पष्ट है कि राम के मन में कमीनापन था, छोटे भाई का हक मार कर गद्दी पर कब्जा करने की लालसा थी. उसका बाप दशरथ उससें भी बड़ा हरामी था. उसने तो स्वयं कैकेयी और उसके पिता को वचन दिया था कि कैकेयी के गर्भ सें जो पुत्र पैदा होगा उसे ही गद्दी दी जाएगी लेकिन जब वचन पूरा करने का समय आया तो भरत को बाहर भेज कर राम को गद्दी सौंप दी. दोनों बाप बेटों को पता था कि भरत गद्दी का असली वारिस है फिर भी दोनों बाप बेटों ने साजिश करके गद्दी हथियाने का प्रयत्न किया. इनकी ही जात वाला तुलसी था जिसने यह कह दिया ''रघुकुल रीत सदा चली आइ, प्राण जाएं पर वचन न जाइ'' **बस ऐसी ही थी रघुकुल रीत.** जिस व्यक्ति ने अपने भरत जैसे भाई का हक मारने की साजिश की हो ऐसे चरित्र वाले राम ने अगर धोखे सें छिप कर बालि को मारा तो कौन सी अनहोनी हो गई. सांप ने तो डसना ही है भाई हो या कोई और हो.

क्या इस कथा में राम का कमीनापन हरामीपन नजर नहीं आता ? आधुनिक काल को हम लोग अक्सर बुरा वक्त बताते हैं क्योंकि कहते हैं अब भाई भाई का शत्रु बना बैठा है. फिर भी आज के समय में भी अगर बड़े भाई की सगाई भी हो रही हो तो छोटे भाई की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती है. लेकिन राम ने क्या मर्यादा रखी ? भरत को अभिषेक समारोह में बुलाना तो दूर उसने तो लम्पट बाप के साथ मिल कर उसे जान सें भी बढ़ कर मानने वाले छाटे भाई का हक ही, उसकी अनुपस्थिति में मार लिया.

कितने लोग हैं हम में सें जो यह मर्यादा अपनाना चाहेंगे कि हमारा एक दगाबाज बेटा दूसरे भलेमानस बेटे का हक राम की तरह मार ले!!

गृहावस्था

राम के पारिवारिक जीवन में दो कलंक हैं. पहला यह कि वह तन सें ''पुरुष'' नहीं था और दूसरा यह कि वह मन सें भी "पुरुष" नहीं था. वह तन और मन दोनों सें बांझ था, नपुंसक था.

तन सें नपुंसक : रामायण पढ कर ऐसा भास होता है कि राम का कुल या खानदान हिजड़ों और नपुंसकों का वंश है. राम **''रघुकुल रीत सदा चली आई'' को अक्षरशः निभाते हुए, बाप की तरह बांझ रहा.** सभी जानते हैं कि राम सीता को जीत कर लाया. सीता बनवास जाने सें पहले 12 साल अयोध्या में राम के पास रही और सवा 13 साल उसके पास वन में रही. इन सवा 25 सालों में वह एक बच्चे की भी माँ नहीं बन पाई. फिर वह 10 महीने महात्मा रावण की कैद में रही. वहां से रिहा होते ही अयोध्या आई, और कुछ ही समय बाद घर सें निकाल दी गई. तब उसने भगवन बाल्मिकी के आंगन में दो बालकों को जन्म दिया.

रामायण में वर्णित कुछ विशेष तथ्य यहां ध्यान देने योग्य हैं :

1. **सीता जब तक राम के पास रही कभी माँ नहीं बन पाई.**

2. लंका पर कब्जा करने के बाद जब सीता राम के सामने लाई गयी तो वह बोला "सामने खड़ी तुम मुझे उसी प्रकार अधिक कष्ट दे रही हो, जैसे दुखती आँखों के रोगी को प्रकाश कष्ट देता है." (युद्ध कांड 138) प्रश्न उठना स्वभाविक है कि जिस सीता के लिए वह नित्य विरह का राग अलापता था उस पर नजर पड़ते ही उसमें उसने ऐसा क्या परिवर्तन दिखाई दिया कि सीता उसे ''दुखती आँख के रोगी को प्रकाश'' की तरह कष्टदायक लगने लगी ? सीधी सी बात है **उसे सीता में वही परिवर्तन दिखाई दिया होगा जो उसे पिछले सवा 25 साल में दिखाई नहीं दिया था.**

3. जब राम ने पूछा कि उसके सुन्दर रुप को देख कर महात्मा रावण अपने पर काबू नहीं रख पाए होंगे तो सीता ने यही कहा कि उसका अपने मन पर तो अधिकार था, अंगों पर नहीं. (युद्ध कांड 139)

4. **राम अपनी असलीयत जानता था कि वह तन सें नामर्द है.** इसके कई सबूत रामायण में ही वर्णित हैं. पहला यह कि जब हनुमान लंका में सीता को मिलता है तो सीता उसे भी महात्मा रावण की ही कोई चाल समझती है अतः उससें राम का दूत होने का सबूत मांगती है. तब हनुमान सबूत के तौर पर राम के पूरे शरीर का हुलिया बयान करता है. हनुमान के मुख सें राम के शरीर का हुलिया सुन कर ऐसा लगता है कि राम और वनमानुश के शरीर में कोई अंतर न था. हनुमान एक चौंकाने वाली सच्चाई भी बताता है कि राम के अंडकोश बड़े बड़े हैं परन्तु लिंग न होने के समान है. यही कारण था कि राम का असली हुलिया सुन कर सीता को तसल्ली हो गई थी कि हनुमान राम ही का दूत है दूसरा **स्वयं सीता राम को पुरुष के शरीर में नारी बताती है.** (अयोध्या 26)

5. सीता को घर सें निकालने का कारण भी यही है कि महात्मा रावण के यहां कैद रह कर जब सीता राम के सामने आई तो उस पर गर्भवती होने के लक्षण दिख रहे होंगे. तब देव अग्नि ने सीता की जांच (परीक्षा) की और सीता को "अदूषित'' घोषित कर दिया. सीता को ''अदूषित'' घोषित करने का अर्थ यह नहीं था कि सीता को महात्मा रावण ने छूआ नहीं था बल्कि इसका अर्थ यह था कि सीता उसी तरह ''अदूषित'' थी जैसे हनुमान की माँ अंजनि पवन सें यौन सम्बंध बना कर भी ''अदूषित'' थी. अथवा कुंती, सत्यवती की तरह गैर मर्दो सें समागम करके भी अदूषित (अक्षतयोनि) थी.

6. यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि उस काल में ब्राह्मण, आर्य और उनके देवों में यह मान्यता प्रचलित थी कि जैसे आग में कुछ भी जला देने पर भी वह दूषित नहीं होती, वैसे ही स्त्री पर-पुरुष से व्यभिचार करके दूषित नहीं होती. अतः अपनी मान्यताओं के अनुरुप अग्नि ने सीता को ''अदूषित'' घोषित कर दिया.

7. माननीय पैरियर महोदय के अनुसार लंका जय के बाद राम ने सीता को अपने साथ केवल एक महीने तक रखा और उसके बाद उसे लक्ष्मण के हाथों जंगल में छुड़वा दिया क्योकि तब एक दिन राम ने सीता के बढ़े हुए पेट के बारे में पूछा तो सीता ने बताया कि वह चार पाँच महीने सें गर्भवती है. अतः राम ने उसे लक्ष्मण के हाथों जंगल में छुड़वा दिया. (सच्ची रामायण 77)

8. राम द्वारा सीता को गर्भवती अवस्था में घर सें बाहर निकालना यह सिद्ध करता है कि राम को पक्का पता था कि सीता की कोख में पलने वाला बच्चा उसका नहीं है वर्ना कोई भी बाप इतना निर्दयी नहीं होता कि वह अपने वंश को ही नष्ट कर दे!! इस धरती पर हमारे अनेकों प्रकार के रिश्ते होते हैं लेकिन मात्र और मात्र बेटे (या बेटी) के लिए हम कामना करते हैं कि वह हम सें आगे निकले, लोग हमें उसके नाम सें जानें. ऐसे में राम अगर अपने बेटे को मर जाने के लिए जंगल में छोड़ता है तो इसका सीधा सा अर्थ है कि राम को पता था कि सीता के गर्भ में पल रहा गर्भ उसका पुत्र नहीं है. अगर उसे रत्ती भर भी यकीन होता कि सीता के गर्भ में उसी का बच्चा पल रहा है तो वह अपने वारिस को तो इस तरह मरने के लिए जंगल में न फिंकवाता/छुड़वाता.

यह सभी तथ्य इस बात के द्योतक हैं कि राम तन सें नपुंसक था.

मन सें नपुंसक

सन्त कबीर का वचन हैः

''जिस घट प्रेम न प्रीत रस, पुनि रसना नहीं नाम।
वे नर पसु संसार में, उपजि खपे बेकाम ।।

अर्थात जिनके मन में प्यार प्रीत नहीं है और बोली में मिठास नहीं है वे आदमी पशु समान हैं. उनका जन्मना मरना बिल्कुल व्यर्थ है!!

आम भारतीय की भाषा में इसे यूं कहा जाता है कि जिस आदमी के मन में दया भाव नहीं है, जो दूसरों को कष्ट देकर मन में ग्लानि का अनुभव नहीं करता, वह मन सें ..... नपुंसक है.

इस दोहे के संदर्भ में देखें कि राम ने पूरी जिंदगी क्या किया. सिवाय ब्राह्मणों के उसने किससें प्रीत निभाई.

- जिस उम्र में बच्चों को खेलने सें ही फुरसत नहीं होती उस उम्र में उसने ताड़का आदि का कत्ल कर दिया था. कुछ बड़ा हुआ तो छोटे भाई की गद्दी हथियाने की साजिश की, जब बनवास गया तो हजारों हिरण, खरगोश और गो मार खाईं. अपनी पूरी जिंदगी में वह कभी शेर मारने की हिम्मत नहीं कर पाया. रामायण में वर्णन है कि इस जालिम को आता देख कर निरीह जानवरों में भगदड़/त्राहि त्राहि मच जाती थी. **इस के मन में कभी महामानव बुद्ध की तरह दया नहीं उपजी.**
- बनवास के दौरान कितने ही रक्ष–संस्कृति के बच्चे बूढे और स्त्रीओं को कत्ल किया. रक्ष संस्कृति के अनगिनित बच्चे, बूढों और स्त्रियों की निर्मम हत्या करने के सिवाय तन और मन सें नपुंसक और कर भी क्या सकता था.
- राम कथा की एक बहुत ही आश्चर्य जनक बात है कि सीता हरण के बाद राम हनुमान को अपना दूत बना कर महाराजा रावण के पास भेजता है. हनुमान वहां जाकर उनको राम का संदेश, तुलसी की जबानी, देता है :

"राम चरन पंकज उर धरहु , लंका राज अचल तुम करहु"

अर्थात राम की अधीनता स्वीकार कर लो और लंका पर अटल राज करो. सीता गई भाड़ में

राम को क्षत्रिय बताया जाता है और दावा किया जाता है कि क्षत्रिय बहादुर, निडर, आन बान वाले होते हैं. लेकिन राम ने अपनी पत्नी सीता का अपहरण हो जाने पर जैसी बहादुरी, निडरता, आन बान दिखाई वह अपने आप में अनोखी है. जब उसे पता चला कि सीता लंका में है तो उस **क्षत्रिय-पुरुषोत्तम के खून में इतना ही "उबाल" आया** कि उसने **दो बार** अपने दूत लंका के दरबार में भेजे, जहां जाकर उन्होंने राम की तरफ से यह **प्रार्थना की** कि अगर सीता को लौटा दिया जाएगा तो महाराज रावण के राज को कोई नहीं छेड़ेगा.

एक पल के लिए सोचिए कोई किसी राजा की पटरानी उठा ले जाए तो क्या वह राजा उसके पास संदेशा भेजेगा कि मेरी पत्नी लौटा दो. साधारण आदमी भी मरने मारने को तैयार हो जाता है अगर कोई गैर उसकी पत्नी के हाथ भी लगा दे. और राम! वह तो दूत भेज कर अपनी ''मर्दानगी'' दिखला रहा था. असली अथवा असल मर्द का पूत होता तो खुद जा भिड़ता लंका में, हनुमान और अंगद के हाथ संदेशा न भेजता. असल होता तो शायद वह भी कुछ करता लेकिन तन और मन सें नपुंसक ने तो ऐसा ही कर पाना था. अपनी पत्नि को छुड़वाने के लिए सीधा टकराने की बजाए बार बार दूत भेजना राम की मानसिक नपुंसकता को दर्शाता है.

- फिर जब लंका जय के बाद उसे सीता मिली तो उसके साथ जो निर्दयता वाला व्यवहार उसने किया, उसकी कहीं मिसाल नहीं मिलती. हजार मुसीबतों व लाख प्रलोभनों के बावजूद सीता अपने धर्म सें नहीं डिगी. वह चाहती तो लंका की पटरानी बन सकती थी, चाहती तो पच्चीस साल का बांझपन मिटा सकती थी परन्तु उसने अपने पति के प्रति वफादारी नहीं छोड़ी. उसके बदले में राम ने लंका ध्वस्त के बाद उसकी जो दुर्गति की वह राम की मानसिक नपुंसकता का द्योतक है!
- और जब उसने गर्भवती सीता को लक्ष्मण के हाथों जंगल में मरने के लिए छुड़वाया तब तो वह अपनी मानसिक नपुंसकता की हर सीमा ही लांघ गया. **नित्य पशु काटने वाले कसाई के मन में भी इतनी दया तो होती ही है कि वह गर्भवती मादा को नहीं मारता.** लेकिन राम तो कसाई सें भी जालिम निकला. अपनी गर्भवती पत्नी को उसने तो मार ही दिया था. यह तो भगवन बाल्मिकी को सीता की मृत्यु अभी स्वीकार न थी. अतः उन्होंने अपने शिष्य भेज कर उन्होने सीता को अपनी शरण में ले लिया वर्ना उसे तो जंगली जानवर चट कर गए होते!
- पूजा पर बैठे महात्मा शम्बूक का कत्ल राम के माथे पर सबसें बदनुमा दाग है. पूजा करते सन्त को कत्ल करना, मानसिक नपुंसकता की चरम सीमा है! लेकिन तन और मन सें नपुंसक राम सें और आशा भी नहीं की जा सकती थी.
- महवीर बालि को छिप कर धोखे सें मारना उसकी मानसिक नपुंसकता को ही दर्शाता है. मर्द होता और मर्द का बच्चा होता तो पेड़ के पीछे छिप कर वार नहीं करता. सामने आकर लड़ता तो उसकी मर्दानगी पर सें पर्दा उठ जाता. रामायण की कहानी कुछ और ही बन जाती.
- ऐसा नहीं है कि राम ने सिर्फ उपरोक्त के साथ ही ऐसा किया था. सारी उम्र गुलाम सें बढ कर सेवा करने वाले लक्ष्मण को भी अंततः उसने आत्महत्या करने का आदेश देकर उसे मार ही दिया. (उतर कांड 106)

- अंत में स्वयं उसने सरयू में डूब कर आत्महत्या कर ली. नपुंसक और करता भी क्या!!

कौन पुरुष है दुनिया में जो तन और मन सें नपुंसक राम की तरह आचरण करना चाहेगा ? कौन उसकी ऐसी नपुंसकता को मर्यादा मान कर अपनाएगा!!

बनवास

बाप को गालियां : ब्राह्मणवादी गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाते हैं कि राम पितृभक्त था. बाप की आज्ञा मान कर वह चौदह साल वन में रहा. लेकिन असलीयत यही है कि राम ने दशरथ के साथ मिल कर भरत की गद्दी हथियाने की साजिश रची थी जिसमें दोनों नाकाम रहे. बदले में राम को चौदह साल वन में बिताने पड़े और दशरथ को असमय जान गंवानी पड़ी.

वन में जाकर राम ने अपने बाप को कोसा यानि गालियां दी कि दशरथ के वासनामयी चरित्र के कारण उसे वन की हवा खानी पड़ी. उसने कहा कि बुढ़ापे में उसके बाप ने कैकेयी का रूप देख कर उससें इस शर्त पर शादी की कि उसकी कोख सें पैदा बेटा ही गद्दी पर बैठेगा. अगर उसका बाप कैकेयी की सुन्दरता पर न रीझता तो आज उसे जंगल में भटकना नहीं पड़ता. बाप की मूर्खता के कारण उसे वन में आना पड़ा. बाप का काम के पीछे पागलपन देखकर उसे लगा कि धर्म, अर्थ और काम में सें काम ही सबसें श्रेष्ठ है. (अयोध्या कांड 53)

निरीह पशुओं की हत्या : ऐसा नही है कि राम ने सिर्फ निरीह जंगली पशु मारे, उसने तो गाय तक को नहीं छोड़ा. अरण्यकांड में गो, हिरण और सूअर मारने का जिक्र है. कई लोग गो का अर्थ गोह करते हैं जो कि ठीक नहीं है. अयोध्या कांड 56 के अनुसार लक्ष्मण हिरण मार कर लाया और उसे साबुत को ही आग में सेंक दिया. जब उससें खून टपकना बंद हो गया तो उसने राम को बताया. राम ने उसके मांस सें पूजा की. भरत आगमन पर राम और सीता ने **पवित्र और स्वादिष्ट** मांस खाया. (अयोध्या 93) ब्राह्मण ग्रन्थ इस तथ्य के गवाह हैं कि **गाय का मांस ही पवित्र** और स्वादिष्ट माना जाता था.

बालि की नियोजित तथा कायरतापूर्ण हत्या : राम ने अपने कुल की **रघुकुल रीत** पूरी तरह निभाई. जैसे उसके बाप ने छिप कर श्रवण को मारा था, उसी तरह राम ने महाबलि बालि की हत्या की. अंतर केवल इतना रहा कि दशरथ ने श्रवण को मारने की पूर्व–योजना नहीं बनाई थी, वहीं राम ने पूर्णतया सोच समझ कर योजना बना कर बालि की हत्या की थी. मरते समय महाबलि बालि ने सत्य कहा था कि ऐ राम, महाबलि बालि का सामना करने की हिम्मत तेरे में नहीं थी. तभी तूने मुझ को छिप कर निर्दयी शिकारी की तरह मारा. **ऐ राम तूने अपने पापों की कालिमा को हमेशा दूसरों के रक्त सें धोया है.**

महाबलि के इन सत्य वचनों को पढ़ने के बाद राम के बारे में और अधिक कुछ कहने की आवश्यकता शेष नहीं बचती है. तन और मन सें नपुंसक सें और किसी बात की उम्मीद भी नहीं की जा सकती.

बाबा साहिब के अनुसार राम द्वारा किया गया यह (planned cold blooded murder) ठंडे दिमाग सें सोच समझ कर किया गया कत्ल था. जब राम ने बालि की हत्या की तो बालि ने मरते वक्त राम सें पूछा ''क्यों मारा मुझे व्याध की न्याईं'' मुझे निर्दयी शिकारी की तरह क्यों मारा तो राम बोला इस लिए मारा कयोंकि तूने गैर की पत्नी का अपहरण करके अपने पास रख लिया था. लेकिन जब सीता का अपहरण हुआ तब तो वह महात्मा रावण को मारने नहीं गया बल्कि दूत भेजता रहा. क्योंकि तब राम के पास महाराज रावण को छिप कर मारने की वीरता दिखाने का मौका नहीं था. यह तो विभीषण गद्दारी कर गया वर्ना राम तो जिन्दगी भर दूत ही भेजता रहता. और तब यह मुद्दा ही न उठता कि सीता के बच्चों का बाप कौन था.

काम वासना में अन्धे होकर हाय तौबा मचाना : जब सीता लंका में थी तो एक दिन मौसम सुहावना हो गया और राम के काम वासना जाग उठी. वह हाय तौबा मचाने लग गया. लक्ष्मण ने उसे समझाया बुझाया तब जाकर वह शांत हुआ. यह तो शुक्र हुआ कि उसकी हाय तौबा देव स्त्रियों ने नहीं सुनी. वर्ना जैसे वे सीता के मासिक धर्म होने पर राम की वासना मिटाने आईं थी अब भी आ जाती. और अगर वे तब आ जातीं तो सीता का तो मुद्दा ही समाप्त हो जाता. राम को उसे छुड़ा कर लाने की आवश्यकता ही नहीं रहती. रामायण का किस्सा यहीं समाप्त हो जाता.

और सबसें बड़ी बात यह होती कि राम की आत्मा को भी मोक्ष मिल जाता. इन देव पत्नियों को भोगने के लिए ही तो राम ने कृष्ण के रूप में अगला जन्म लिया था. अगर उसे गोपियां नहीं भोगनी होतीं तो उसे सरयू में डूब मरने के बाद कहीं और जन्म लेने की आवश्यकता ही नहीं बचती!! काम वासना में अन्धे होकर हाय तौबा मचा कर कौन सी मर्यादा की स्थाप्ना की है राम ने!!

यह पहला अवसर नहीं जब राम ने कामांध होकर हाय तौबा मचाई. तुलसी के अनुसार जब उसने मिथिला में सीता को पहली बार देखा तब भी उसने ऐसा ही किया था. सीता को देख कर वह लक्ष्मण सें बोला :

मनहु मदन दुन्दभी दीन्हीं अर्थात सीता को देख कर मन में काम वासना ने बिगुल बजा दिया. सोचने वाली बात यह है कि **उस समय सीता मात्र 6 बरस की थी.** छः बास की कन्या को देख कर जिसके मन में वासना का बिगुल बज जाए ऐसे आदमी को मर्यादा पुरुषोत्तम केवल ब्राह्मण ही कह सकते हैं.

राज्यकाल

जैसे तैसे करके बनवास कटा. तीनों वापिस अयोध्या आ गए. भरत ने राम को गद्दी सोंप दी. राम एक पल भी गंवाए राजा बन बैठा. **उसे एक पल भी बाप द्वारा दिए गए वचन की याद नहीं आई. ''रघुकुल रीत सदा चली आइ, जैसे भी हो गद्दी हथियाइ''**. राम ने स्वयं भरत को बताया था कि दशरथ ने कैकेयी सें शादी करने सें पहले भरत के नाना को वचन दिया था कि कैकेयी के पुत्र को ही गद्दी पर बैठाया जाएगा. पहले तो दशरथ ने अपना वचन तोड़ा. जब वह मर गया तो राम गद्दी पर काबिज हो गया. वचन गया भाड़ में, गद्दी मिलती हो तो झपट लो. यही ''रघुकुल रीत सदा चली आइ, जैसे भी हो गद्दी हथियाइ''. राम गद्दी पर बैठा ब्राह्मणों की चांदी हो गई. नित्य अश्वमेध यज्ञ होने लगे. राम और लक्ष्मण वैश्य और शूद्रों को लूटते और ब्राह्मणों की तिजोरियां भरते. ब्राह्मण भगवान बन बैठे. जो थोड़ी सी भी चूं करता मरवा दिया जाता.

किसी भी ग्रन्थ में कहीं कोई उल्लेख नहीं है कि राम ने लोगों के लिए कोई सड़क बनवाई हो, कूएं खुदवाए हों, पेड़ लगवाए हों, धर्मशालाएं बनवाई हों. उसने कभी ऐसा नहीं किया.

राम के राज्य में सारे अधिकार केवल ब्राह्मणों और क्षत्रियों को प्राप्त थे. उन्हें कोई टैक्स नहीं देना पड़ता था. असली सत्ता तो ब्राह्मणों के हाथ में थी. राम तो मात्र कठपुतली था. महात्मा शम्बूक का कत्ल भी राम ने ब्राह्मणों के कहने पर किया. राम वैसा ही राजा था जैसा मध्यकालीन योरूप में राजा होता था. सारा काम पोप के कहने पर होता था और राजा तो मात्र हस्ताक्षर करने के लिए होता था.

<u>पूजा में ध्यानरत भगवन शम्बूक का कत्ल</u> : राम के माथे पर यह बदनुमा कलंक कभी नहीं धुल पाएगा. ताड़का, बालि, महात्मा रावण आदि को मारने का कोई न कोई बहाना राम के पास था लेकिन महात्मा शम्बूक को कत्ल करने का राम के पास कोई कारण कोई बहाना नहीं है. राम ने मात्र और मात्र ब्राह्मणों को खुश करने के लिए दलित सन्त का कत्ल कर दिया. कहते हैं कि दूध पिलाती माँ को, पूजा करते संत को, रोटी खाते भूखे को और सोये हुए पथिक को मारना **महापापी का काम** है. लेकिन राम ने जब यह महापाप किया तो ब्रह्मा तक ने फूल बरसाए. बेटी भोगी सें और क्या आशा की जा सकती है. तन और मन सें नपुंसक राम और कर भी क्या सकता था.

कितने लोग हैं भारत में, चाहे कट्टर ब्राह्मण ही सही, जो यह चाहेंगे कि उनका बेटा बड़ा होकर राम की तरह पूजा पर बैठे सन्तों का कत्ल करे!

<u>पूजा में ध्यानरत इन्द्रजीत मेघनाद का कत्ल</u> : पूजा करते हुए भगवन शम्बूक को कत्ल करना राम के लिए नई बात नहीं थी. इससें पहले भी वह महावीर मेघनाद को इसी प्रकार कत्ल कर चुका था. महाराज रावण के सपुत्र मेघनाद वीर यौद्धा थे. उन्होंने देवों की ऐयाशी बन्द कराने में अपने महाराज पिता को पूरा सहयोग दिया था. ऐसे में ऐयाश देव इक्कठे होकर अपने राजा इन्द्र के पास गए जो एक बार में बीस बैल खा जाता था. उसने अपनी सेना लेकर मेघनाद का सामना किया. **महावीर मेघनाद ने इन्द्र और उसकी सेना को छटी का दूध याद दिला दिया. ब्राह्मणिक देवता दुम दबा कर भाग लिये मगर महावीर मेघनाद ने इन्द्र को पकड़ लिया तथा उसे लंका ले गए. देवताओं के राजा इन्द्र के कैद होते ही ब्रह्मा तक हिल गया. वह भागा भागा लंका आया तथा जिस प्रकार गांधी ने बाबा साहिब सें पूना पैक्ट किया वैसे ही उसने महाराज रावण सें समझौता किया कि भविष्य में मेघनाद को इन्द्रजीत कह कर पुकारा जाएगा तथा कोई भी देव निहत्थे इन्द्रजीत पर वार नहीं करेगा.**

लेकिन वह ब्राह्मणवादी ही क्या जो धोखा न करे. एक बार जब महावीर इन्द्रजीत संध्या कर रहे थे राम ने पीछे सें आकर उनकी गर्दन काट दी. (आप्टे) रामायण के अनुसार यह करतूत लक्ष्मण ने की थी.

<u>भगवन बाल्मिकी सें कृत्घनता</u> : सभी जानते हैं कि जब राम ने सीता को मरने के लिए जंगल में फिंकवाया था तो वह पूरे दिनों की गर्भवती थी. भगवान बाल्मिकी ने सही समय पर सीता को आश्रय दे दिया वर्ना जंगली जीव सीता के साथ साथ राम के वंशजों को भी उनके जन्म लेने सें पहले ही चट कर गए होते. राम को कोई पानी देने वाला भी न बचता. भगवान बाल्मिकी ने राम के वंश को नष्ट होने सें बचा लिया. बदले में राम ने क्या किया?

जब उसने सीता की अनुपस्थिति में अश्वमेध यज्ञ किया जिसका घोड़ा भगवान बाल्मिकी द्वारा पालित लव कुश ने रोक लिया था, तो उसने भगवान बाल्मिकी को उस यज्ञ में बुलाना भी उचित नहीं समझा. उसके यज्ञ में दलित आ जाता तो उसका तो धर्म ही भ्रष्ट हो जाता. एक शम्बूक का कत्ल करके दूसरे शम्बूक को यज्ञ में

बुलाने की भूल वह नहीं कर सकता था. ब्राह्मणों के हाथों वेण व नहुष जैसे राजाओं की हत्याएं भी राम भूला नहीं था. तन और मन सें वह वैसे ही नपुंसक था. परोपकारियों सें कृत्घनता और ब्राह्मणों सें भय उसके खून में समाया था. उसमें हिम्मत ही नहीं थी कि इन सें बाहर निकल कर भगवन वाल्मिकी को अपने यज्ञ के लिए आमंत्रित कर पाता.

<u>सीता की बेदखली</u> : अपने राज्यकाल में जो दूसरा महापाप राम ने किया, उसे तो याद करके ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. उसने गर्भवती सीता को जंगल में फिंकवा दिया. जरा सोचिए कि सीता के मन और तन पर क्या बीती होगी. **इस कल्पना मात्र सें शरीर में सिहरन दौड़ती है कि अगर जो कुछ सीता के साथ हुआ अगर वैसा हमारी बेटी के साथ हो जाए तो!** जब लक्ष्मण उस पूरे दिन की गर्भवती स्त्री को जंगल में सैर कराने के बहाने ले जाता है और फिर वहां जाकर उसे बताता है कि राम ने उसे जंगल में छुड़वा दिया है. सुन कर सीता दुःख सें बेहोश हो जाती है मगर वह निर्दयी भी सीता को वैसे ही पटक कर आ जाता है. वह पलट कर भी नहीं देखता कि सीता मर गई या बच गई. ध्यान देने योग्य है कि सीता उस समय गर्भवती थी. एक पल के लिए सोचें कि जैसे राम ने सीता को जंगल में फिकवा दिया था अगर हमारी बहन या बेटी के साथ उसका पति ऐसा ही करता तो क्या हम उसे सहन कर लेते ?

तो कितने लोग हैं जो राम द्वारा स्थापित यह मर्यादा अपनाना चाहेंगे कि उनकी बहन बेटी को उसका पति जब चाहे जंगल में फिकवा दे.

सीता की बेदखली सें एक बात तो साफ होती है कि राम ने मात्र बाली को ही छिप कर नहीं मारा वह तो सभी पर छिप कर घात करता था. उसने सीता को को भी बताने की हिम्मत नहीं की कि उसका कोई दोष है और वह उसे घर सें निकाल रहा है. उसने बाली को तो फिर भी एक ही बार में मार दिया था लेकिन सीता को तो तिल तिल कर मरने के लिए जंगल में अकेले फिंकवा दिया था. राम ने तो अपनी ओर सें तो सीता को मार ही दिया था. यह तो सीता ने ही अभी और दुःख झेलने थे कि उसे मौत नहीं आई.

राम ने ऐसी पत्नी सें दगा किया जिसने उसे तन और मन सें चाहा था. सीता ने राम की खातिर महात्मा रावण की सभी धमकियों, प्रलोभनों का तिरस्कार किया. लेकिन राम तो तन सें ही नहीं मन सें भी नपुंसक निकला. पहले तो लंका जीतते ही सीता सें बोला,'तेरे लिए लंका जय नहीं की. महाराज रावण और तूने मिलकर पता नहीं क्या कुछ किया होगा. तू जरूर उनके रूप वैभव पर मोहित हुई होगी. अतः अब तू विभीशण, सुग्रीव, लक्ष्मण या भरत अथवा दसों दिशाओं में जो भी तुझे अच्छा, तू उसके रह सकती है. मुझे तेरे चरित्र पर संदेह है. राक्षसराज की गोद में बैठी तुझ को मैं अपने यहां नहीं रख सकता. (सुंदर कांड 118) तन और मन सें नपुंसक और कह भी क्या सकता था.

कुछ दिन पहले टीवी पर जंगली कुत्तों की जिन्दगी पर एक प्रोग्राम दिखाया जा रहा था. वे कुत्ते अत्यंत क्रूर होते हैं. जो भी मिले उसे मार कर खा जाते हैं. मौका लगे तो शेर तक को मार कर खा जाते हैं. लेकिन उनमें एक बात बेहद आश्चर्य जनक है कि जब कोई मादा गर्भवती हो जाए तो उसे शिकार करने साथ नहीं ले जाया जाता, बल्कि उसे घर पर ही रहने दिया जाता है ताकि उसे अथवा उसके होने वाले बच्चों को कोई हानि न हो जाए. सभी कुत्ते गर्भवती मादा को घर बैठे ही अपने अपने भोजन में से हिस्सा देते हैं.

इसकी तुलना राम के चरित्र सें करने पर हम क्या पाते हैं? यही कि राम तो उन कुत्तों सें भी गया गुजरा निकला!! उसने तो पूरे दिनों की गर्भवती सीता को जंगल में फिकवा दिया!! जंगली, खूंखार कुत्तों सें भी अधिक क्रूर था राम!!!

22.10.2000 सायं 7.50 पर दूरदर्शन (डी डी–1) पर राम के सम्बंध में दिखाए एक प्रोग्राम में यह बताया गया कि राम ने सीता को इसलिए जंगल में छुड़वाया क्योंकि अयोध्या आने के बाद सीता ने पंखे पर महात्मा रावण का चित्र बनाया था. राम को यह सहन नहीं हुआ और उसने सीता को घर सें निकाल दिया.

सीता पर लगाया गया यह लांछन बाल्मिकीय रामायण में वर्णित सीता चरित्र सें मेल नहीं खाता. पूरी रामायण में कहीं कोई ऐसा प्रसंग नहीं है जहां सीता ने किसी गैर मर्द की ओर अपना लगाव दर्शाया हो. न ही उसने ऐसा कुछ किया जिससें वह चरित्रहीन लगती हो. मात्र दो प्रसंग जरूर है जहां वह अपने स्वभाव सें कुछ अलग नजर आती है. पहला जब उसने राम को पुरुष वेश में स्त्री (नपुंसक) कहा है. लेकिन यहां भी सीता ने किसी गैर मर्द की ओर कोई आसक्ति नहीं दिखाई है और न ही किसी गैर मर्द की वजह सें राम को नपुंसक कहा है. दूसरा प्रसंग सीता हरण के समय महाराज रावण द्वारा उसके अंगों की तारीफ करने का है. गैर मर्द सें अपने स्त्री अंगों कर तारीफ सुन कर भी सीता चुप रहती है. लेकिन यहां भी सीता की बदनीयती नहीं झलकती बल्कि ब्राह्मण ऋषियों की ताकत झलकती है कि वे किसी की भी बहन बेटी बहू को कुछ भी कह सकते थे. सीता ने तब तक ही अपने स्त्री अंगों की तारीफ सुनी जब तक उसे महाराज रावण को ब्राह्मण ऋषि समझती रही. शेष पूरी रामायण में उसने सदैव राम की ओर अपनी लग्न की अभिव्यक्ति की है.

इसी कारण पंचकन्याओं में सीता का नाम भी है. शेष हैं **मंदोदरी, तारा, अहिल्या और द्रोपदी**. सीता के अतिरिक्त शेष चारों ने अपने पति के अतिरिक्त अन्य मर्द सें यौन सम्बन्ध बनाए थे. मंदोदरी ने विधवा होने पर विभीषण के साथ घर बसा लिया था. तारा ने चन्द्रमा सें, अहिल्या ने इन्द्र सें यौन सम्बन्ध बनाए थे. द्रोपदी को तो सभी जानते हैं कि वह पांच पुरुषों की पत्नि थी. इन में सें किसी की भी तुलना सीता के चरित्र सें कतई नहीं की जा सकती. बहुत दुःख की बात है कि ऐसी साधवी स्त्री को राम जैसा तन और मन सें नपुंसक पति मिला. **सीता की तुलना अगर की जा सकती है तो वह हैं माँ यशोधरा जो कि सिद्धार्थ गौतम की धर्मपत्नि थीं.**

<u>सीता की फोटोस्टैट कॉपी</u> : इसके बारे में एक गाना अकसर मंदिरों में बजता रहता है कि देवों को तो पहले ही पता था कि महाराज रावण सीता का हरण करेंगे. अतः अग्नि असली सीता तो वहां सें ले गया और उसकी जगह सीता की डुप्लीकेट कॉपी कुटिया में छोड़ गया. महाराजा रावण को असली नकली का भेद मालूम नहीं पड़ा और वे सीता की छाया कॉपी अर्थात फोटोस्टैट कॉपी उठा ले गये. महात्मा रावण की हत्या के बाद जब राम ने सीता को आग में झोंका तब अग्नि असली सीता लेकर आया और राम को असलीयत बताई.

उस कथा सें यह स्पष्ट नहीं होता कि राम भी महात्मा रावण की तरह बेवकूफ बन कर छाया कॉपी की परीक्षा लेता रहा या उसने अग्नि वाली असली सीता की परीक्षा ली. अगर उसने डुप्लीकेट सीता की परीक्षा ली तो इसका अर्थ यह हुआ कि राम भी बेवकूफ था. उसे पता ही नहीं चला कि उसकी बीवी को अग्नि उठा ले गया था. अगर राम ने असली सीता की परीक्षा ली तो इसका अर्थ हुआ कि राम को भी अग्नि की करतूतों और चरित्रहीनता का पता था. राम को पता था कि देव तो अपनी बहन बेटी का भी लिहाज नहीं करते. सीता तो वैसे भी उनकी कुछ नहीं लगती थी. इसलिए राम ने असली सीता जिसे अग्नि ले गया था, की सतीत्व परीक्षा ली!!

यह कथा तो कुछ और ही गुल खिला देती है. अगर असली सीता अग्नि के पास थी तो.... तो इसका अर्थ यह हुआ कि सीता को दूषित करने का दोष अग्नि पर आना चाहिए क्योंकि असली कॉपी तो उसीके पास थी जिसे राम ने चरित्रहीन मानते हुए वन में फिंकवा दिया था. यह विश्वास करने योग्य बात भी है क्योंकि देव तो होते ही नीच थे. आर्य स्त्रियों पर तो उनका वैसे भी अधिकार माना जाता था. **अतः महात्मा रावण पर तो सीता को दूषित करने का दोष लगाया ही नहीं जा सकता.**

लक्ष्मण को आत्महत्या करने पर मजबूर किया. रामायण में लक्ष्मण एक ऐसा पात्र है जिसने सारी उम्र राम की खातिर दूसरों को दुख दिया. राम की खातिर अपनी बीवी को छोड़ कर वन में चला गया, राम को गद्दी दिलाने की खातिर वह अपने बाप दसरथ, भाई भरत और मां कैकेयी तक को मारने को तैयार हो गया. राम के कहने पर वह सीता जैसी सुशील स्त्री को गर्भवती अवस्था में जंगल में पटक आया. रामायण में उसका सारा जीवन कुछ वैसे ही बीता जैसे फिल्मों में गिरोह के बॉस के खास चमचे का होता है जो सांस भी बॉस को पूछ कर लेता है.

लेकिन लक्ष्मण का अन्त बहुत बुरा हुआ. एक बार राम एक कमरे में किसी देवता सें गुप्त मीटिंग कर रहा था कि दूसरा देव आ गया. लक्ष्मण उस की खबर देने अंदर घुस गया. **राम ने उसकी मौत के फरमान जारी कर दिए. उसे हुक्म दिया कि वह सरयू में डूब मरे. लक्ष्मण चुपचाप जाकर सरयू में डूब कर मर गया.**

हम में सें कितने लोग हैं जो राम की यह मर्यादा अपनाना चाहेंगे कि हमारा बड़ा बेटा अपने छोटे भाई को इस प्रकार मरने पर मजबूर कर दे!

<u>स्वयं सरयू में डूब मरा</u> : वाल्मिकी रामायण में राम एक ऐसा पात्र है जो सारी उम्र कुंठाओं सें ग्रस्त रहता है, दूसरों को कष्ट देता है, पत्निभक्त सीता तथा भाईभक्त लक्ष्मण को आत्महत्या करने पर मजबूर करता है तथा अन्त में कुंठाओं सें त्रस्त होकर स्वयं भी सरयू में डूब कर आत्महत्या कर लेता है. तन और मन सें नपुंसक और कर भी क्या सकता था.

आम भारतीय की तो बात ही छोड़ो, कौन हिन्दू , कौन ब्राह्मणवादी यह मर्यादा अपनाना चाहेगा कि उसका बेटा 'राम' जैसा हो जो :

- ☞ **गैर मर्द के वीर्य सें पैदा हो!!**
- ☞ **बचपन में ही निरपराध लोगों की हत्या करदे!!**
- ☞ **अपनी बीवी को दांव में जीत कर लाए!!!**
- ☞ **बाप की जायदाद पाने के लिए अपने भाई का हक मारे!!**
- ☞ **छिप कर धोखें सें अन्जान लोगों को मारे!!**
- ☞ **निरीह जानवर मार कर जंगल के जंगल खाली कर दे!!**
- ☞ **अपनी गर्भवती बीवी को मारे !!**

☞ **फिर भाई को मारे !!**

☞ **और अन्त में स्वयं आत्महत्या कर ले!!!**

हमारे विचार में भारत ही नहीं पूरी दुनिया में कोई भी राम की "मर्यादा" नहीं अपना पाएगा!!

यह थी रघुकुल रीत

रघुकुल रीत सदा चली आई : प्राण जाएं पर वचन न जाई!! यह बात तुलसी ने रामचरित में कही है कि रघु (राम का पूर्वज) के खानदान की सदा सें यह रीत रही है कि वह अपना दिया हुआ वचन पूरा करते हैं चाहे इसके लिए उसकी जान ही चली जाए.

इस बात का विवेचन करने पर सच्चाई कुछ और ही नजर आती है. उदाहरण के लिए :

1. दशरथ ने जब कैकेयी का हाथ मांगा तो उसके पिता ने दशरथ सें यह वचन लिया था कि कैकेयी की कोख सें जन्मा पुत्र ही राजगद्दी पर बैठाया जाएगा. अतः दशरथ के दिए वचन के अनुसार गद्दी का असली हकदार भरत था लेकिन जब गद्दी देने का समय आया तो दशरथ ने भरत को तो ननिहाल भेज दिया और चोरी छुपे राम को गद्दी सौंपने का प्रयत्न किया. राम भी इस साजिश में शामिल हुआ. रघुकुल की रीत थी तो दोनों बाप बेटों ने उसे तोड़ा क्यों? वचन तोड़ने पर तो दोनों में सें किसी के प्राण नहीं गए!
2. राम ने सीता का हाथ पकड़ा. तो क्या उसने उसके साथ जीवन निभाने का वचन नहीं दिया था. लेकिन लंका विजय के बाद जैसे ही सीता उसके सामने आई उसने उसे अपनाने सें मना कर दिया. वह बोला तूने अवश्य महाराज रावण सें सम्बंध बनाए होंगे इसलिए अब चाहे जिसके साथ चली जाः हनुमान विभीशण सुग्रीव .....किसी के भी साथ चली जा. कहां गया रघुकुल का वचन?
3. अग्नि परीक्षा के बाद एक बार तो राम सीता को अयोध्या ले आया लेकिन राम अपनी मर्दानगी जानता था. वह साढे सताइस साल सीता के साथ रहा था. गद्दी मिलते ही वह राजा बन गया. कोई उसे रोकने वाला नहीं था. लेकिन सत्य कहने का साहस उसमें तब भी नहीं था. जैसे उसने छिप कर बाली को मारा वैसे ही उसने लक्ष्मण के साथ मिल कर साजिश रची और सीता को जंगल में मरने के लिए छुड़वा दिया. क्या अग्नि परीक्षा के बाद राम ने देवों को वचन नहीं दिया था कि सीता को पवित्र मानता है और अब आगे सें उसके साथ रहेगा. तब सीता को मरने के लिए जंगल में छोड़ना कौन से वचन की पालना थी?
4. राम ने प्रतिज्ञा की थी कि वह धरती को राक्षस विहीन कर देगा. लंका में उसने असंख्य बच्चे बूढ़े स्त्रियां राक्षस कत्ल किये. महाराज रावण के शहीद होने पर उसने देशद्रोही विभीशण को लंका का राजा बना दिया. विभीशण भी तो राक्षस कुल सें था. राम ने अपना रघुकुल वाला वचन पूरा करने के लिए उसे क्यों नहीं मारा जबकि उसने लंका में रहने वाले राक्षस कुल के अनेकों निरपराध बच्चे बूढे और स्त्रियों को मार डाला.
5. दण्डकारण्य के ऋषि जब उसे भोगने के लिए लालायित हुए तो उसने उन्हें अगले जन्म के लिए बुक कर लिया लेकिन अगले जन्म में राम तो वैसा ही रह गया ऋषियों की गोपियां बना दी. रधुकुल का वचन तो तब पूरा होता जब वह अगले जन्म में स्त्री बन कर उनकी काम इच्छा पूरी करता!!
6. राम ने वन जाते समय प्रतिज्ञा की थी कि वह बनवास के दौरान मांस नहीं खाएगा. (अयोध्या 20) लेकिन पंचवटी में कुटी बनाने सें लेकर अंत तक वह पशु मारता रहा और उनका मांस खाता और खिलाता रहा.

भगवन बाल्मिकी की नजर में राम और महात्मा रावण

भगवान बाल्मिकी ने रामायण के दो प्रमुख पात्रों राम और महात्मा रावण का जो चरित्र चित्रण किया है उसमें राम का चित्रण एक चरित्रहीन खलनायक जैसा किया गया है और महात्मा रावण का मर्यादा–पुरुषोतम की तरह. महात्मा रावण ने धर्म के नाम पर किए जा रहे अनाचार यानि ब्राह्मणवाद के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजाया था लेकिन ब्राह्मणों ने एक शण्ड के हाथों एक वीर क्रांतिकारी शहीद करवा दिया. भेड़िए सें शेर मरवा दिया. कहावत है कि जो जीता वही सिकंदर. अतः राम सिकंदर बना दिया गया और ब्राह्मण तब सें लेकर आज तक हिन्दू समाज को धर्म के नाम पर निर्बाध लूटते आ रहे हैं. भारत के समूचे तन्त्र पर इन की पकड़ इतनी मजबूत है कि एक विज्ञान संस्थान भी खोलना हो तो पहले इन सें शुभ महूत निकलवाना पड़ता है. आज भी काली के मंदिर

में बलि माँस और शराब की भेंट दी जाती है. हर साल इनके धर्म के नाम पर हजारों लोग अपनी जान गंवाते हैं परन्तु इन्हें कोई टोकने वाला नहीं. अस्तु.

राम तथा महात्मा रावण के चरित्र का तुलनात्मक ब्यौरा

राम	महात्मा रावण
1. राम अपने बाप की बजाए ऋश्यश्रृंग अथवा किसी अन्य ऋषि सें नियोग द्वारा उत्पन्न संतान है. बाप के अलावा किसी अन्य पुरुष के वीर्य सें उत्पन्न ऐसे हरामी को आर्य **क्षेत्रज या प्रणीत पुत्र** कहते थे.	महात्मा रावण अपने पिता विश्रवा और माता की वैध संतान हैं. वे अपने माँ और बाप के औरस पुत्र हैं. उन्हें पैदा करने के लिए किसी ऋषि की जरूरत नहीं पड़ी थी.
2. राम ही नहीं उसका सारा कुनबा ही हरामी था. राम का वंश संस्थापक रघु के बाप दिलीप के भी कोई संतान न थी. तब उसने अपनी पत्नी सुदक्षिणा को अपने कुलगुरू वशिष्ठ के पास भेजा. और रघु पैदा किया. **''रघुकुल रीत सदा चली आइ, दादा परदादा सबहु कुनबा हरामी भाइ"**	महाराज रावण के वंश में कभी कोई हरामी पैदा नहीं हुआ. उन्होंने तो ब्राह्मण ऋषियों का पुत्र–उत्पादक यज्ञ का धन्धा बन्द किया था ताकि उन में कोई तो अपने बाप सें पैदा हा. ब्राह्मणों की ऐयाशी बन्द करने के कारण ही उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ी.
2. हनुमान सीता को बताता है कि राम वनमानुश जैसा दिखता है. उसके अनुसार राम का रंग काला और चीकना है, बाल पतले, माथा उभरा हुआ पेट फूला हुआ तथा बांहें घुटनों तक लम्बी हैं. **आँखें खून जैसी लाल तथा दांत तीखे है.**	हनुमान ने जब महाराजा .रावण को देखा तो उनका रूप देख कर उसकी आँखें चौंधिया गईं. राम ने भी जब उनको देखा तो वह सीता सें बोला कि ऐसे सुंदर पुरुष को देख कर सीता का मन जरूर डोले बिना नहीं रहा होगा और सीता ने जरूर उससें सम्बंध बनाए होंगे.
3. राम की आँखें सदा खून की तरह लाल रहती थीं. जन्म सें मौत तक उसकी ''रक्ताक्ष'' अर्थात खून जैसी लाल आंखें रहीं.	हनुमान ने उनके कमल जैसे नयन देखे, जिन में नींद की खुमारी थी.
4. वह कृतघ्न था, निरंकुश था. बाप सें मिल कर षडयंत्र करके छोटे भाई भरत सें गद्दी हथिया लेता है. सारी उम्र गुलामी करने वाले भाई लक्ष्मण सें भी अंत मे आत्महत्या करवा देता है. सीता को घर सें निकालने सें पहले उसने किसी सें राय नहीं की.	स्वयं वाल्मिकी रामायण गवाह है कि महाराज रावण ने कोई काम पूरे परिवार की सलाह लिए बिना नहीं किया. विभीषण ने गद्दी की खातिर गद्दारी की परन्तु फिर भी उन्होने मन्त्री परिशद सें सलाह करके उसे देश निकाला दिया. छोटा भाई होने का लिहाज किया.
5. राम लड़कियों की दल्लागिरी करता है और वेश्याएं पालता है. उनसें रंगरलियां मनाता है. **अयोध्या सोने जैसी वेश्याओं सें भरी हुई थी** जो राम के हर कार्यक्रम का अनिवार्य भाग थीं.	लंका में कहीं कोई वेश्या नहीं थी. महात्मा रावण ने कभी लड़कियों की दल्लागिरी नहीं की और न कभी किसी को करने दी. पूरी लंका में एक भी वेश्या नहीं थी. **इसी लिए भगवान वाल्मिकी ने अपनी रामायण में "लंका कांड" का नाम आदर पूर्वक "सुन्दर कांड" रखा.**
6. राम इतना कमीना और निर्दयी था कि उसने पूरे दिनों की गर्भवती सीता को मरने के लिए लावारिस जंगल में छुड़वा दिया.	अपनी पत्नी को यथोचित आदर दिया. यही कारण था कि उनको कभी अपनी पत्नी सें वैसे अपशब्द नहीं सुनने पड़े जैसे सीता ने राम सें कहे.
7. राम की अयोध्या टूटा फूटा कस्बा थी. राम और उसके भाईयों ने आम आदमी को लूटने के सिवाय कुछ नहीं किया. कोई सड़क, कोई धर्मशाला नहीं बनवाई. कोई बाग नहीं लगाया. अयोध्या देख कर हनुमान को कोई आश्चर्य नहीं हुआ.	महात्मा रावण की लंका सड़कों, चैत्यों, बाग–बगीचों सें भरपूर थी. जैसी अशोक वाटिका में सीता रही, वैसे बाग की अयोध्या में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी. महात्मा रावण द्वारा पालित लंका देख कर हनुमान भौंचक्का रह गया. **वह बोला यह स्वर्ग है,या परासिद्धी?**
8. राम और उसका बाप कच्चे झोंपड़ेनुमा मकान में रहता था. जब राम के बनवास की खबर सुनी तो दशरथ और कौशल्या पछाड़ खाकर गिरे. गिरते ही दोनों मिट्टी सें लथपथ हो गये. अगर उनका महल होता या मकान ही पक्का होता तो वे फर्श पर गिर कर इस	हनुमान ने सुन्दर काण्ड में वर्णित लंका देखी जिसमें महाराज रावण के महल का फर्श स्फटिक का बना हुआ था. जब महाराज चलते थे तो उनका कमरबंध जमीन को छूता चलता था लेकिन कभी ऐसा जिक्र नहीं आया कि उनका कमरबंध कभी मैला हुआ हो!!

तरह मिट्टी सें लथपथ नहीं होते.	**ऐसी थी लंका नगरी!**
9. राम मात्र देवों और ब्राह्मणों का नेता था जिनका एकमात्र काम था खाओ, पीओ, ऐश करो. यज्ञ में मारे गए पशुओं का हिस्सा पाने के लिए यह लोग कुतों की तरह लड़ते थे वहीं शराब मे धुत होकर अपनी बहन बेटी सें संभोग करते थे. उनके बाप ब्रह्मा ने तो यज्ञ वेदी पर अपनी बेटी सें बलात्कार किया था. (ऋग्वेद)	महात्मा रावण **प्रथम कांतिकारी** एवं समाज सुधारक थे जिन्होने देवों और ब्राह्मणों की इस गुण्डागर्दी और एयाशी पर रोक लगाई. लेकिन अंत में भेड़ियों ने मिल कर एक शेर को मार दिया. जिस का खामियाजा पूरी हिन्दू बरादरी आज तक झेल रही है. शुभ कार्य पर जाते समय ब्राह्मण का मूंह देखना भी अशुभ माना जाता है परन्तु उसके बिना कोई अनुश्ठान नही हो पाता.
10. राम न केवल स्वय शराब, मीट का भक्षण करता था बल्कि सीता को भी शराब पिलाता था और तरह तरह के मासूम जीवों का मॉस भी उसे खिलाता था. बनवास में रहते जब वह कुटिया बनाता है तो उसमें प्रवेश के समय हिरण मार कर लाता है और उसकी बोटियां करके कुटी के अंदर बाहर ऊपर नीचे हर जगह फैलाता है. जब महात्मा रावण सीता के पास आते हैं तो सीता उन्हें बताती है कि राम हिरण, सूअर और **गौ मार** कर उनका बहुत सारा मॉस लेकर आएगा. स्वर्ण मृग को देखकर सीता भी उसे मारकर लाने के लिए राम को भेजती है ताकि वह उसकी खाल पर बैठ सके. **जवाहर लाल नेहरू के अनुसार राम अपने बाप के श्राद्ध में बलि देने के लिए स्वर्ण मृग को मारने गया था. (भारत एक खोज 26.5.2001)**	महात्मा रावण ने कभी मीट, शराब का भक्षण नहीं किया. न ही उनकी धर्मपत्नी ने कभी इन चीजों के हाथ लगाया. उन्होने कभी भी किसी मासूम जीव की जान नहीं ली. उन्होने तो सभी मासूम जीवों की पालना अपनी अशोक वाटिका में की थी. उन्होने मारा तो केवल उन निर्दयी देवों और ब्राह्मणों को जो नित्य सैंकड़ों की संख्या में हिरण, खरगोश व गाय जैसे मासूम जीवों को यज्ञ की आग में भून कर खा जाते थे. महात्मा रावण बौद्ध थे. बाबा साहिब के अनुसार बौद्धों में ब्राह्मणधर्मियों की तरह किसी को मारने की इच्छा नहीं होती. वे केवल अपनी जान बचाने के लिए ही किसी को मारते हैं. ऋषियों की तरह जीभ के स्वाद के लिए पशु नहीं मारते.
11. राम दोगला था. लंका पर चढाई करने सें पहले वह शिव के लिंग की स्थापना करता है. उसकी पूजा करता है और दूसरी ओर कहता हैः संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास! ते नर करहिं कलप भर घोर नरक में वास!! अर्थात जो शिव के भक्त है वे मेरे दुश्मन हैं तथा उसके दुश्मन मेरे भक्त हैं. उसके भक्त करोड़ों साल तक नरक में वास करेंगे.	महात्मा रावण ने गौतम बुद्ध सें दीक्षा ली थी. ब्राह्मणों ने **झूठा प्रचार** किया हुआ है कि वे शिव के उपासक थे. उन्होंने कभी किसी ब्राह्मणिक भगवान की पूजा नहीं की. उन्होने राम की तरह अवसरवादिता नहीं दिखाई. कोई भी अवसर रहा हो कभी किसी को यज्ञ के नाम पर पाप नहीं करने दिया. उन्होने सदैव एक सच्चे बौद्ध का जीवन व्यतीत किया.
12. राम ने सदैव सोच–समझ योजना बना कर हत्याएं कीं. अगर अवतारवाद को सत्य मान लें तो राम ने अपने पिछले जन्म में ही महात्मा रावण की हत्या करने की साजिश रच ली थी. सीता–हरण करवाने इत्यादि की स्कीमें इस हत्याकांड सें आधी सदी पहले ही बना ली थी. आर्यों में स्त्री हरण कोई विशेष बात न थी. दुर्योधन का जीजा जयद्रथ एक बार द्रोपदी का सौंदर्य देख कर वासना सें भर गया. अतः उसने द्रोपदी का हरण कर लिया. जब पांडवों को पता चला तो वे द्रोपदी को ले आए और जयद्रथ को छोड़ दिया. भागवत को सही मान लें तो कृष्ण ने तो पूरे भारत की स्त्रियां ही हरण करके अपने हरम भर लिये थे. महात्मा रावण ने तो सीता का हरण वासना में डूब कर नहीं किया था, मात्र अपनी बहन की बेइज्जती का बदला लेने के लिए ऐसा किया था अतः सीता हरण तो उन्हे मारने की तो कोई वजह ही नहीं बनती थी. असल में तो उन्होंने यज्ञों में बलि बंद कर दी थी इससें ब्राह्मणों के चटकारे बंद हो गए थे.	महात्मा रावण ने कभी किसी की हत्या नहीं की. आदमी तो दूर की बात है उनहोंने तो कभी बेवजह बिना कारण चींटी तक नहीं मारी. हां, यज्ञ में पशु मारने वालों, शराब पीने वालों और व्यभिचार करने वालों को उन्होंने उचित सजा दी. धर्म के नाम पर व्यभिचार करने वालों को उन्होंने बख्शा नहीं. किसी भी धर्मग्रन्थ में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जब उन्होने किसी निर्दोष, निरापराध प्राणी की हत्या की हो. यहां तक कि जब हनुमान ने उनके पुत्र अक्षय कुमार की हत्या की तब भी उन्हाने हनुमान को नहीं मारा. बल्कि पूरी सभा में उस पर मुकदमा चलाया. उस समय हनुमान ने अपने आप को राम का दूत बताया. लंका की परिषद ने उसकी बात पर विचार किया और अन्त में उसे दूत मानते हुए मौत की सजा सें माफ कर दिया. इसकी तुलना राम द्वारा बालि और सीता सें किए गए व्यवहार सें करके देखिए. राम ने दोनों सें धोखा किया. दोनों को ठंडे दिमाग सें सोच विचार करके मारा.

राम द्वारा दूसरी कुनियोजित सोची समझी, ठण्डे दिमाग सें की गई कायराना हत्या बालि की थी. राम तो बालि को जानता तक न था. बस सुग्रीव ने आकर वायदा कर लिया कि वह सीता ढूंढ देगा, राम ने बालि को मारने की साजिश बना डाली. और फिर वृक्षों की ओट में छिप कर एक कायर ने एक वीर को मार गिराया. उसने तीसरी कुनियोजित ''हत्या'' सीता की की. उसने तो लक्ष्मण के साथ मिल कर सीता को मार ही दिया था. पूरे दिनों की गर्भवती स्त्री को जंगली जानवरों के बीच लावारिस छोड़ना ''हत्या'' ही तो है. अगर भगवान बाल्मिकी के शिष्य उसे नहीं बचाते तो निश्चित तौर पर जंगली जानवर उसे खा गए होते.	बालि को मारने के लिए उसने सुग्रीव के साथ मिल कर साजिश रची तो सीता को मारने के लिए अकेले में रात भर योजना बनाई. पूरी योजना बना कर लोगों को मारता था वह राम! असहाय दलित को मारने के लिए तो उसे योजना बनाना भी जरूरी नहीं था. बस खड्ग उठाया और कसाई की तरह भगवन शम्बूक का सिर धड़ सें अलग कर दिया.
13. राम ने सन्त तपस्वी शम्बूक की निर्मम हत्या की. राम केवल ब्राह्मणों का संरक्षक था. ब्राह्मण के कहने मात्र सें उसने साधना करते हुए शूद्र सन्त का कत्ल कर दिया.	महात्मा रावण ने कभी किसी सन्त की हत्या नहीं की. हां धर्म के नाम पर अनाचार करने वाले ब्राह्मणों, ऋषिओं को उन्होने उचित सजा दी.
14. राम ने अपने जैसे भाई लक्ष्मण सें पूजा करते वीर इन्द्रजीत मेघनाद की गर्दन कटवा दी. उस समय इन्द्रजीत निहत्थे थे और आंखें बन्द किए ध्यानमग्न थे. राम ने कहा और लक्ष्मण ने कसाई की तरह इन्द्रजीत का गला काट दिया. बिलकुल वैसे ही जैसे स्वयं उसने तपस्वी शम्बूक का गला काटा था. दोनों थे ही एक थैली के कसाई.	महात्मा रावण और उनके भाईओं, बेटों ने कभी किसी को युद्ध के नियमों के विरुद्ध नहीं मारा. यहां तक कि जब लक्ष्मण घायल होकर गिर गया तो इन्द्रजीत मेघनाद ने उस पर और वार नहीं किया. अपने वीर होने का सबूत दिया. वे चाहते तो बेहोश पड़े लक्ष्मण को आसानी सें मार सकते थे.
15. राम चालाक राजनीतिज्ञ था. जैसे ही विभीशण अपने भाई सें गद्दारी करके आया, राम ने तुरंत ही उसका राजतिलक कर दिया. राम को पता था कि जो आदमी अपने भाई सें दगा कर सकता है उससें तो कभी भी दगा कर सकता है. अतः विभीशण को गद्दी का लालच दे दिया कि कहीं वह फिर सें न फिसल जाए.	महात्मा रावण को ऐसी ओछी राजनीति नहीं आती थी वर्ना वे भी विभीषण को गद्दी का लालच क्या विश्व में कहीं का भी राज्य दे सकते थे. जब सारे देवता उनकी गुलामी करते थे तो कहीं का भी राज्य देना उनके लिए कौन सी बड़ी बात थी. परन्तु उन्हें ऐसी राजनीति आती न थी.
16. राम हिंसामयी तथा पशु बलि वाले यज्ञ करता था. राम ने अनेकों बार अश्वमेध यज्ञ किये. हर यज्ञ में सैंकड़ों हजारों निरीह पशु मार कर भूने गए और सोम नामक शराब के साथ ब्राह्मण ऋषिओं तथा राम द्वारा खाए गए. सरेआम स्त्रियों सें मैथुन किया गया.	महात्मा रावण हिंसामयी यज्ञों के विरोधी थे. यज्ञ भूमि पर स्त्री समागम के भी विरोधी थे. उन्होंने ऐसे यज्ञों पर पाबन्दी लगा दी थी. ब्राह्मण ऋषिओं, देवों व राम आदि को उनसें इसी कारण वैर था. उनकी हत्या की साजिश भी इसी कारण रची गई थी.
17. रामायण के रचियता भगवान बाल्मिकी ने राम की प्रशंसा कहीं नहीं की है.	उन्होंने अपनी ओर सें अनेकों जगहों पर महात्मा, महाबलि आदि अलंकारों से सम्मानित किया है.
18. राम का रूप देख कर कोई स्त्री उसकी ओर आकर्षित नहीं हुई. मात्र शरूपनखा ने अपने जैसे रंग वाले सें शादी का प्रस्ताव रखा मगर उसके भी नाक कान उसने कटवा दिए. हिजड़ा और कर भी क्या सकता था.	महात्मा रावण पराक्रमी पुरुष थे. उनका रूप देख कर देव कुल तक की स्त्रियों ने उनके यहां आकर बस गईं थीं. उन्होंने सीता के सिवाय किसी और का हरण नहीं किया था, वह भी अपनी बहन की बेइज्जती कर बदला लेने के लिए ऐसा किया था.
19. अगर तुलसी का विश्वास करें तो राम न केवल निरीह पशुओं को मार कर खाता था बल्कि उसकी रसाई में मृग माँस के साथ **मानव माँस** भी पकाया जाता था. तुलसी के अनुसार : विविध मृगन्ह कर आमिश रांधा, ! तेहि महूं विप्र माँस खल सांधा !! अर्थात राम ने कई हिरण मार कर उन का माँस	महात्मा रावण की लंका में अथवा उनके राज्य में ऐसी घटना की कल्पना भी नहीं की जा सकती. रामायण में कहीं ऐसा जिक्र नहीं है कि लंका में कहीं माँस बिकता हो. और कहीं ऐसा जिक्र नहीं है कि किसी राक्षस ने कभी शिकार खेला हो. कभी किसी राक्षस ने किसी भी निरीह प्राणी की हत्या नहीं की.

पकाया. उस माँस में किसी ने ब्राह्मण का माँस भी मिला दिया. इस श्लोक सें तो ऐसा लगता है कि राम के राज्य में मानव माँस आम ही मिल जाता था.	
20. आर्यों जैसे कि राम कृष्ण आदि में विवाह नहीं होता था. उन में मुख्यतः पशुओं की तरह मुक्त मैथुन होता था, जैसे हनुमान की माँ अंजनि ने पवन के साथ किया. या फिर आर्य नर अपनी बेटियां दांव पर लगा देते थे. शर्त पूरी करो और बेटी ले जाओ. सीता, द्रोपदी आदि ऐसी अनेकों उदाहरण मौजूद हैं. या फिर जो पसंद आती थी उसे उठा लाते थे. रूक्मणि, सुभद्रा आदि अनेकों उदाहरण मौजूद हैं. स्त्री की कोई अहमियत नहीं होती थी. उसे मादा पशु की तरह किसे भी सौंप दिया जाता था.	**महात्मा रावण की भारतीय समाज को, विशेषतः नारी को, सबसें बहुमूल्य सौगात यह है कि उन्होंने नारी को भोग्या की जगह लक्ष्मी का दर्जा दिया. नर मादा की जगह पति पत्नि का बन्धन बनाया. शर्त में जीतने की जगह अग्नि को साक्षी मान कर जीवन भर साथ रहने की प्रथा चलाई. किसी भी धार्मिक कहे जाने वाले ब्राह्मण–ग्रन्थ में किसी भी देव, आर्य का इस प्रथा सें शादी होने का उल्लेख नहीं है. भारतीय समाज महात्मा रावण के इस योगदान के लिए सदैव ऋणि रहेगा. अगर वे शादी की प्रथा न चलाते तो भारत सदैव व्यभिचार का अड्डा बना रहता.**
21. राम न केवल निरीह पशुओं का शिकार करता था बल्कि आदमियों का भी शिकार करता था. राम जंगल में जिधर सें निकलता था उधर के जानवरों में त्राहि त्राहि मच जाती थी. (अरण्यकांड) राम ने बालि की हत्या करके भी उसे यही कहा कि उसने तो **आदमी का शिकार** किया है. (भारत एक खोज 26.5.2001) जवाहर लाल नेहरू के अनुसार (भारत एक खोज 19. 5.2001) सीता ने भी राम सें कहा कि वह मात्र कसूरवार राक्षसों को मारे लेकिन राम ने कहा कि वह राक्षसों का समूल नाश करेगा. राम ने अबोध बालक व स्त्री पुरुषों का हनन किया.	महात्मा रावण अथवा उनके रक्षक अनुयायिओं ने कभी किसी निरीह जानवर की हत्या नहीं की. कभी किसी रक्षक ने शिकार नहीं खेला. रक्षकों ने केवल उन्हीं ऋषियों को मारा जो यज्ञ में गाय हिरणों आदि की बलि देते थे तथा जो वहां दारू पीकर व्यभिचार करते थे. महात्मा रावण ने एक भी निरपराध स्त्री पुरुष को नहीं मारा. यहां तक कि ब्राह्मण समाज के लोगों में सें मात्र उन को सजा दी जो बलि वाले यज्ञ करते थे. उनके दरबार में अनेकों ब्राह्मण मंत्री थे. अनेकों ब्राह्मणों ने उनके रक्षस–धर्म में दीक्षा लेकर हिंसावादी यज्ञों को छोड़ दिया था.
22. जनक ने सीता को दांव पर लगाया कि कोई भी आओ धनुश उठाओ सीता को ले जाओ जिसे "स्वयंवर" कहा गया है. हैरानी की बात है कि जनक ने महाराज रावण को यह दांव खेलने के लिए बुलाया मगर उसने **राम या दशरथ आदि को टोका भी नहीं** जबकि मिथिला और अयोध्या पास पास में ही स्थित हैं.	महाराज रावण को इस बाजी में सादर निमंत्रण दिया गया था. वे आये भी लेकिन अपनी बारी आने सें पहले ही उन्हें वापिस लंका लौटना पड़ा. अगर वे बुरे थे तो जनक ने उन्हें अपना जवाईं बनाना क्यों स्वीकार किया? राम को क्यों नहीं बुलाया? जबकि महाराज रावण की उम्र सीता सें कहीं ज्यादा थी.
23. जब सीता को दांव पर लगाया गया जिसे कि ब्राह्मणवादी स्वयंवर कहते हैं, उस समय सीता की उम्र मात्र छः बरस की थी. उसे तो पता भी नहीं होगा कि उसके बाप ने उसे दांव लगा कर किसी को सौंप भी दिया है.	महाराजा रावण ने महारानी मन्दोदरी के साथ जब शादी की दोनों व्यस्क थे. दोनों ने पूर्ण सहमति के साथ जीवन साथी बनने का निर्णय किया था.
24. राम की अयोध्या में स्त्री पुरुषों की खुली बिक्री और खरीद होती थी. आम आदमी ही नहीं बल्कि ऋषि कहे जाने वाले लोग भी धन कमाने के लिये स्त्री पुरुषों की खरीद बेच करते थे. स्त्री को खरीदने के लिए उसके अंगों की खुली पड़ताल की जाती थी. खरीदी गई स्त्री के पैदा हुए बच्चे बेच कर ये ऋषि फिर सें धन कमाते थे.	महाराज रावण के राज्य में कभी भी स्त्री पुरुषों की खरीद बेच नहीं की गई. न उन्होंने कभी किसी सें दासियां लीं और न कभी किसी को दासियां अर्थात स्त्रियां तोहफे में दीं. हनुमान ने वहां सिर्फ साधवी पत्नियां और उनके पति देखे.
25. राम क्रूर और निरंकुश राजा था. उसके राज्य में कोई न्यायलय नहीं थी, कोई सभा, कोई पंचायत नहीं थी. जो भी फैसला करना होता राम ही करता था. किसी सें नहीं पूछता था. चाहे बालि की हत्या करनी हो, लक्ष्मण को मरवाना हो या सीता को मरवाने की	महाराज रावण के राज्य में मंत्रियों की पूरी सभा थी जो हर प्रकार के निर्णय लेती थी. सीता का हरण भी सभा की मंजूरी सें किया गया. महाराज रावण लंका के राजा थे. उनके पुत्र अक्षय का कत्ल हनुमान ने कर दिया. वे राजा होने के नाते

साजिश करनी हो, सभी फैसले उसने अपने आप लिये. किसी दरबारी सें पूछना या राय तो लेना दूर, किसी को बताया भी नहीं. पूरे दिनों की गर्भवती सीता को मरने के लिए जंगल में पटकवाना और सन्त शम्बूक की बेरहम हत्या उसकी क्रूरता और निरंकुशता का जीता जागता सबूत हैं.	हनुमान को वहीं फांसी पर लटका सकते थे लेकिन उन्होने न्यायधीशों के सामने अपना पक्ष रखा. हनुमान ने अपनी जान बचाने के लिए स्वयं को राम का दूत बताया. न्यायलय ने फैसला दिया कि हनुमान क्योंकि दूत है अतः उसे मौत की सजा नहीं दी जा सकती. महाराजा रावण ने अपने बेटे की हत्या के निजि गम को सहा और न्यायलय के फैसले को मानते हुए हनुमान को बरी कर दिया.
26. राम ने सीता को हमेशा ही बदचलन समझा था. जब राम को बनवास की सजा हुई तो उसने सीता सें कहा कि वह भरत को खुश रखती हुई वहीं रहे. इस पर सीता बोली कि राम पुरुष के शरीर में नारी है जो एक नट के समान अपनी बीवी गैरों को देना चाहता है. (अयोध्या 30)	पूरी रामायण में कहीं पर प्रसंग तो क्या, कहीं इशारा भी नहीं है कि महाराज रावण ने अपनी धर्मपत्नि मंदोदरी पर कभी शक भी किया हो. उन्होंने हर नारी का पूरा सम्मान किया. जब सीता लंका सें बाहर आई तो उसने एक बार भी ऐसा नहीं कहा कि वह लंका में असुरक्षित थी अथवा वहां उसकी इज्जत सुरक्षित नहीं थी बल्कि उसने तो वहां सें आकर अपने पंखे पर महाराजा रावण का चित्र बनाया और अपने सीने सें लगाया.
27. राम निर्दयी था. जल्लाद सें भी निर्दयी. उसने सरूपनखा और आयामुहा के नाक कान और स्तन काट दिए. (सच्ची रामायण 37) उसने ताड़का को मार कर उसकी योनि में अपनी तलवार डाली और उसके शरीर को चीर दिया. पूरे दिनों की गर्भवती सीता को जंगल में फिंकवा दिया. हिरण मार कर उसकी बोटियां अपनी कुटी में चारों ओर फैंक दीं.	**महात्मा रावण सच्चे बौद्ध थे. वे चाहते तो सीता का वही हाल कर सकते थे जो राम ने ताड़का और सरूपनखा के साथ किया था. वे चाहते तो सीता के साथ वहीं कुकर्म कर सकते थे जब उन्होंने सीता के अंग अंग की तारीफ की थी और सीता ने उन्हें ब्राह्मण समझ कर फल और मेवे भेंट किये थे. वे सीता को अशोक वाटिका में रखने की बजाए अपने बैडरूम में भी रख सकते थे. लेकिन उन्होंने हर जगह स्त्री मर्यादा का पालन किया.**
28. सेरीराम के अनुसार लंका विजय करने के बाद राम आदि लंका में ठहर गये. तब भरत, शत्रुघ्न आदि राम की बहन किकेवी देवी को लेकर लंका पधारे. **राम ने अपनी बहन का विवाह विभीषण सें कर दिया.** (चाभी 79)	महाराज रावण ने हरेक की इज्जत की. अपना निजि स्वार्थ पूरा करने के लिए अपने परिवार की किसी महिला को किसी को नजराने में भेंट नहीं किया. औरतों की दल्लागिरी केवल ब्राह्मण ऋषि और उनके देव करते थे.
29. खोतानी रामायण को सही मानें तो राम और लक्ष्मण दोनों ने सीता सें विवाह किया था. अर्थात दोनों भाईयों ने पांडवों की तरह एक ही स्त्री सें यौन सम्बंध बनाए थे. (सच्ची रामयण की चाभी 18)	महारानी मंदोदरी सें केवल महाराजा रावण ने विवाह किया था. उनकी हत्या होने के बाद विभीषण ने उनको अपने घर रख लिया था. **यही रिवाज आज भी अनेक दलित जातियों में ज्यों का त्यों प्रचलित है.**

असल में रामयण राम नामक पात्र के खोखले और कपटपूर्ण जीवन पर एक व्यंग कथा है. रामायण यह संदेश देती है कि अगर राम जैसे बनोगे तो जीवन भर कश्ट उठाओगे, दूसरों को पीड़ित करोगे, उनको मारोगे और अंत में स्वयं को मारोगे, आत्महत्या करोगे. सरिता ने सही निष्कर्ष निकाला है कि भगवान बाल्मिकी रामायण सें यह सिद्ध करना चाहते हैं कि राम जैसी कुंठित और अंधविश्वासी विचारधारा वाला राजा स्वयं तो डूबता ही है, साथ ही प्रजा को भी ले डूबता है. वास्तव में राम आरम्भ सें अंत तक कुंठाओं सें घिरा एक ऐसा व्यक्ति है जो सारी उम्र दूसरों के हक छीनता है, किसी को सुखी नहीं रहने देता. जो भी उस के साथ रहा, बेमौत मारा गया. लक्ष्मण ने अपने बीवी बच्चों को छोड़ कर सारी उम्र राम की सेवा की लेकिन अंत में राम ने उसे भी आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया. सीता पूरी तरह सें पतिव्रता रही मगर अंत में राम के दुःखों सें दुःखी होकर उसने भी आत्महत्या कर ली.

ऐसे कुंठित, नपुंसक, हत्यारे को भगवान बताना और मनवाना ब्राह्मणों और ब्राह्मणवाद की ही हिम्मत है. पता नहीं कब इस ब्राह्मणवाद सें भारत को मुक्ति मिलेगी.

5.5.3 राम कथा की सत्यता

ब्राह्मणों द्वारा फैलाये गए झूठों में सें एक बड़ा झूठ राम का है. स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थों से यह बात साफ होती है कि राम पुत्र दसरथ नाम का प्राणी कभी विश्व में कहीं आया ही नहीं. ऐसा कोई प्राणी कभी पैदा, अवतरित अथवा उपजा ही नहीं.

- ☞ जनक और दशरथ दोनों इक्ष्वाकु वंश के बताये जाते हैं. इस वंश की एक शाखा की साठवीं पीढ़ी में राम पैदा हुआ बताते हैं और दूसरी शाखा में उसका ससुर जनक तेईसवीं पीढ़ी में हुआ बताते हैं. अतः राम और सीता में छत्तीस पीढ़ियों यानि 700 सें 900 साल का अंतर बनता है. (सच्ची रामायण 9) लेकिन आचार्य चतुरसेन के अनुसार दशरथ 38वीं पीढ़ी में और जनक 17वीं पीढ़ी में पैदा हुआ था. अतः उनमें 21 पीढ़ियों का अन्तर है अर्थात राम और सीता के जन्म में 400 – 500 साल का अन्तर है. वे आगे लिखते हैं कि राम का ससुर कोई सीरध्वज नामक आदमी था जो 38वीं पीढ़ी में पैदा हुआ था. (वैदिक संस्कृति 132) अतः यह पता लगाना ही असंभव है कि कौन कब पैदा हुआ. जिसका जितना जी किया उतनी पीढ़ियां घढ़ दीं. यह लोग असल में होते तो इनकी असली और एक जैसी पीढ़ियां मिलतीं.
- ☞ सीता महाराजा रावण को बताती है कि बनवास आते समय राम की उम्र 25 साल थी जबकि उसकी माँ कहती है कि राम 17 साल का है. अगर बनवास के समय राम 17 साल का था तो क्या चार पाँच साल की उम्र में ही उसने आदमी मारने करने शुरू कर दिए थे. **ऐसी बातें यह दर्शाती हैं कि रामायण में कईयों का योगदान है. जिसको जितने साल का राम चाहिए था उतने साल का उन्होंने बना लिया**. असल में राम हुआ होता तो सब के लिए उसकी एक ही उम्र होती. सिद्धार्थ गौतम के बारे में कहीं दो बातें नहीं हैं. वे 29 साल में घर सें निकले, 35 साल की उम्र में ज्ञान मिला 45 साल उन्होंने धर्म का प्रचार किया और 80 बरस की उम्र में उनका महापरिनिर्वाण हुआ.
- ☞ राम और सीता में वियोग क्यों हुआ, इस पर हास्यास्पद लेकिन मजेदार कहानियां बनाई गई हैं. (सच्ची रामायण 60)
  - ~ एक कहानी के अनुसार विष्णु ने विरूह नामक ऋषि की पत्नि को मार डाला. ऋषि ने उसे श्राप दे दिया कि जैसे वह पत्नि के बिना कामवासना तड़प रहा है वैसे वह भी तड़पेगा. इसलिए अगले जन्म में वह सीता के हरण के कारण कामवासना में तड़पा.
  - ~ दूसरी कथा के अनुसार जब विष्णु ने वृंदा के साथ बलात्कार किया तो उन्होंने उसे श्राप दिया कि जैसे तूने गैर की पत्नि सें बलात्कार किया है तेरी पत्नि के साथ भी ऐसा ही हो! इसलिए सीता को महाराजा रावण ले गए.
  - ~ तीसरी कहानी के अनुसार शिव ने अपना दूत विष्णु के पास भेजा लेकिन विष्णु अपनी पत्नि सें भोग में तल्लीन था. इसलिए उसने दूत की बात नहीं सुनी. अपमानित होकर उसने शिव को अपनी बात बता दी. शिव ने उसे श्राप दे दिया कि जितने उसने मजे लिए है अब उतनी सजा भुगत!
- ☞ उत्तर प्रदेश के पुरातत्व विभाग ने अयोध्या में सत्रह स्थानों में और साथ में ऋणमोचनघाट तथा गुप्तारघाट के दो स्थानों पर खुदवाई करवाई ताकि राम के अवशेष मिल सकें **लेकिन कहीं पर भी राम के होने का कोई सबूत नहीं मिला.** इन सभी स्थानों पर ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी सें पहले आबादी होने का कोई चिन्ह नहीं मिला. यानि बुद्ध सें चार सौ साल बाद अयोध्या आबाद हुई. लेकिन तब भी अयोध्या में राम के होने का कोई निशान नहीं मिला. यहां तक कि राम के नाम पर बनने वाले मंदिर भी यूपी में सोलहवीं सदी सें पहले नहीं बने हैं. राम के नाम पर बना सबसें पुराना मंदिर कनकभवन भी सत्रहवीं सदी का बना हुआ है. (राम की अयोध्या 22) सांकलिया महोदय ने बिल्कुल सही कहा है कि इस तरह पुरातत्व विभाग हमारा समय और धन दोनों नष्ट कर रहा है. (रामायणः गप्प या सच्चाई 2)
- ☞ अयोध्या का सबसें पहला उल्लेख अथर्ववेद (10.2.31) में आया है **लेकिन वहां भी एक काल्पनिक नगर के रूप में.** (राम की अयोध्या 18)
- ☞ बौद्ध ग्रन्थ संयुतनिकाय में अयोध्या गंगा किनारे बसी हुई थी. अतः वह भी राम की सरयू किनारे बसी अयोध्या नहीं है. (राम की अयोध्या 18) चीनी यात्री हुएनत्सांग के अनुसार भी अयोध्या गंगा किनारे बसी नगरी है. वर्तमान अयोध्या को गुप्तकाल में राम सें जोड़ा गया. (राम की अयोध्या 19) यह वही समय था जब ब्राह्मणों ने एक सोची समझी रणनीति के तहत भारत के इतिहास को भ्रष्ट किया था.
- ☞ राम कथा के अनुसार राम और वानरों ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए 100 योजन लंबा और 100 योजन चौड़ा पुल बनाया. **योजन कितना बड़ा होता है कोई नहीं जानता.** हर किसी ने इसे अपने हिसाब सें प्रयोग किया है. किसी के अनुसार 100 धनुष की डोर जितना लंबा एक योजन होता है तो किसी के अनुसार 10 किलोमीटर का एक योजन होता है. अतः यह पुल कम सें कम 20 किलोमीटर लंबा और बीस किलामीटर

चौड़ा बनाया गया. **लंबाई तो माना बीस किलोमीटर थी लेकिन चौड़ाई 20 किलोमीटर क्यों रखी गई, इसका कोई उत्तर नहीं है. यह तो बेतुकी और मात्र कल्पना की बात है कि ऐसा पुल बनाया गया.**

- ☞ यह भी अजीब सी बात है कि पुल बनाने के लिए समुद्र को वृक्षों सें पाट दिया गया. और सबसें हैरानी की बात है कि ऐसे पेड़ों सें समुद्र को पाटने की बात कही गई है जो कि समुद्र किनारें उगते ही नहीं. अतः समुद्र पर पुल बनाने की बात मात्र कल्पना है. (सांकलिया 48)
- ☞ यह भी एक तथ्य है कि अभी तक ऐसा कोई सिक्का नहीं मिला है जिसे अयोध्या सें जोड़ा जा सके. अन्य नगरों उज्जैयनी, कौशाम्बी, कपिलवस्तु, वाराणसी, वैशाली नालन्दा आदि नगरों के सिक्के मिलते हैं. अयोध्या सें मिले शिलालेख में हत्यारे ब्राह्मण पुष्यमित्र और उसके वंशज का तो जिक्र है लेकिन राम पुत्र दशरथ का जिक्र नहीं है. (राम की अयोध्या 20)
- ☞ विष्णु स्मृति तीसरी सदी में रची गई. उसमें ब्राह्मणधर्म के 52 तीर्थ स्थानों के नाम गिनाये गये हैं (अ.85) **लेकिन उनमें अयोध्या का नाम नहीं है.** (राम की अयोध्या 21) इसका अर्थ हुआ कि तीसरी सदी तक राम और उसकी अयोध्या को कोई जानता तक नहीं था.
- ☞ **ग्यारहवीं सदी में लक्ष्मीधर ने "कृत्यकल्पतरू" नामक ग्रन्थ रचा जिसमें भारत के ब्राह्मणिक तीर्थों का जिक्र किया गया है लेकिन उस ब्राह्मण ने भी राम और उसकी अयोध्या का जिक्र नहीं किया है. (राम की अयोध्या 21) अतः ग्यारवीं सदी तक भी राम 'पैदा' नहीं हुआ था.**
- ☞ राम ने जिन अस्त्रों को प्रयोग किया वे सब कल्पित हैं क्योंकि अगर ऐसे अस्त्र भारत में प्रयोग होते थे तो प्रश्न उठता है कि किसी भी भारतीय राजा ने उनका प्रयोग विदेशी हमलावर के विरुद्ध क्यों नहीं किया.
- ☞ **यह भी हैरानी की बात है कि लंका के चारों और सौ योजन यानि बीस सें एक हजार किलोमीटर चौड़ा समुद्र था तब भी नगरी के चारों ओर खाई खोद कर पानी भरा गया था. किसी नगर के चारों ओर समुद्र हो और** फिर भी उसके चारों ओर खाई खुदवाने की कल्पना करना ही कथा को झूठ साबित करती है.
- ☞ सबसें हैरानी की बात है कि रामायण में कहीं ऐसा वर्णन नहीं है कि राम ने नर्मदा नदी को पार किया हो. नर्मदा भारत को लगभग दो भागों में बांटती है. नर्मदा पार किये बिना कोई दक्षिण भारत में जा ही नहीं सकता. अतः राम द्वारा दक्षिण में स्थित किसी लंका नगरी को जीतने की कहानी मात्र कल्पना है.
- ☞ इतना ही नहीं राम की कथाओं में भी अंतर है. बाल्मिकी रामायण के अनुसार गुप्तचर आकर सूचना देता है कि लोग सीता के चरित्र पर शक कर रहे हैं. तुलसी के अनुसार धोबी के कहने पर राम ने सीता को घर सें निकाला. लेकिन ऑल इंडिया रेडियो पूना पर आये एक प्रोग्राम के अनुसार राम ने ब्राह्मण ऋषि दुर्वासा (जो हर वक्त गुस्से सें फुंकारता रहता था लेकिन फिर भी ऋषि कहलाता था) और उसके 100 चेलों को भोजन पर बुलाया. दुर्वासा बोला वह बदचलन औरत के हाथ का बना खाना नहीं खाएगा. ऐसा सुनकर सीता ने दुर्वासा और उसके चेलों को आदमी सें औरत बना दिया. (सांकलिया 63) इस कारण सीता को निकाल दिया गया.
- ☞ **अतः राम की सच्चाई क्या है कोई नहीं जानता. असल में भगवन वाल्मिकी ने "उर" नामक ग्रन्थ में अयोध्या की गद्दी को लेकर हुए परवारिक झगड़े को कहानी के रूप में लिखा था कि राम ने अपने छोटे भाई की गद्दी हथियाने की साजिश की जिसमें वह नाकाम रहा. अतः उसे चौदह साल वन में रहने की सजा मिली. जैसे महाभारत में हरेक ने अपने किस्से घुसेड़े वैसे ही रामायण में किसी ने महात्मा रावण का किस्सा भी जोड़ दिया. किसी ब्राह्मण लेखक ने अपने मन की भड़ास निकालने के लिए यह किस्सा "उर" में जोड़ दिया कि उनका कत्ल राम के हाथों हुआ जबकि असलीयत सच्चाई यही है कि महात्मा रावण भगवन बुद्ध के समकालीन थे और राम जैसा टुच्चा सा आदमी उनके सामने खड़े होने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था.**
- ☞ बाली द्वीप के एक मंदिर में राम और सीता को भाई बहन दिखाया गया है. उत्तर रामायण में सीता को रावण की बेटी बताया गया है. (स.मु.1–10)
- ☞ भारत सरकार के प्रकाशन इंडिया अर्ली हिस्टरी पृ 3 रामायण में वर्णित सरयू नदी हरियाणा में बहने वाली घग्घर नदी है जबकि अयोध्या सें हरियाणा एक हजार किलोमीटर दूर है.
- ☞ मौर्य काल यानि 300 ई.पू. में अर्थ शास्त्र की रचना की गई थी. सम्राट चन्द्र गुप्त मौर्य के वजीर कौटिल्य ने अर्थ शास्त्र की रचना की थी. पहली सदी में मनु स्मृति की रचना की गई थी. अर्थात अर्थ–शास्त्र की रचना के लगभग चार पांच सदियों बाद मनुस्मृति की रचना की गई थी. अर्थ शास्त्र के समय भारत में योग्यतम पुत्र को राजगद्दी देने की प्रथा थी. सबसें बड़े बेटे को राजगद्दी देने की परम्परा मनु स्मृति के समय पड़ी. अतः राम को सबसें बड़ा पुत्र होने के नाते राजगद्दी पर बैठाने की बात यह सिद्ध करती है कि राम कथा का जन्म पहली सदी के बाद हुआ. (भारत एक खोज 19.01.2001)

- ☞ जब वहशीपन के अवतार परशु ने क्षत्रियों का कत्लेआम किया तो और्य अपनी माँ के गर्भ में पल रहा था. जब परशु उसे मारने आया तो उसकी माँ ने उसे अपने गर्भ में सें उसे निकाल कर अपनी जांघ में छिपा लिया. अतः वह बच गया. बड़ा होकर वह राम के पूर्वज सगर का गुरू बना. इतनी सच्ची है राम की कहानी!!
- ☞ माननीय ललई सिंह यादव के अनुसार असल में राम की कहानी मिश्र के राजा रामेसस की कहानी मात्र है. जब सिकन्दर जैसे हमलावरों ने भारत पर हमला किया तो वहां के राजाओं के किस्से भी साथ आ गए. विष्णु की प्राचीन मूर्तियां और मिश्र के फेराओं की मूर्तियां एक जैसी हैं. धर्म के नाम पर लड़कियों का शोषण प्राचीन मिश्र और रोम में ही होता था. वहीं के राजा ही अपना काम निकलवाने के लिए लड़कियां सप्लाई करते थे. भारतीय लोग ऐसे नहीं थे. ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए उनका सिस्टम अपना लिया.
- ☞ बाल्मिकी रामायण के गौड़िय पाठ के अनुसार जनक खेत में हल चला रहा था कि उसे वेश्या मेनका दिख गई. जनक ऋषियों के साथ रहता था. सो उसने भी मेनका के साथ वही किया जो ऋषि करते थे सीता पैदा हो गई. कृत्तिवास रामायण के अनुसार वेश्या मेनका नहीं उर्वशी थी. (सच्ची रामायण की चाभी 65)
- ☞ असल में राम कभी पैदा नहीं हुआ. लोगों में डर पैदा करने के लिए ब्राह्मणों ने हत्यारे पुष्यमित्र के करनामें को राम कथा में ढाल दिया. भगवन वाल्मिकी की कथा में महात्मा रावण की कहानी नहीं है. उनकी कहानी दशरथ जातक सें मिलती जुलती है. यह तो जब हत्यारे पुष्यमित्र ने बौद्धों का कत्लेआम किया तो उसे भगवान सिद्ध करने और यह भी सिद्ध करने के लिए कि जो भी ब्राह्मणों के विरुद्ध बोलेगा उसे इसी तरह कत्ल कर दिया जाएगा, उन्होंने पुष्यमित्र को राम बना दिया. माननीय राहुल सांकृत्यायन भी इसी बात को मानते हैं. (वोल्गा सें गंगा)

5.6 कृष्ण

आज के समय में ब्राह्मणों के प्रमुख भगवानों में एक कृष्ण भी है. कृष्ण के वेश में ब्राह्मणों ने ऐसा वयभिचारी भगवान घढ़ा है जिसकी कहीं और कोई मिसाल नहीं मिलती. मिसाल तो छोड़िये, कोई उसकी तुलना में भी नहीं टिक सकता. वह ऐसा ''भगवान'' है जिसने अपनी माँ, बहन, बेटी तक को न बख्शा. उसने अपनी माँ समान राधा, जो कि रिश्ते में उसकी मामी लगती थी, के साथ उसने नित्य रमण किया, अपनी कुआंरी बहन सुभद्रा को उसकी शादी के समय अर्जुन के हाथों उठवा दिया. ऐसा नीच कर्म तो फिल्मी गुंडे भी नहीं कर पाते. और ब्राह्मणों ने ऐसे बहन–घाती को भगवान बना दिया. (म.भा.आदि 221) महात्मा रावण अगर राम की पत्नि सीता को ले जाएं तो पापी कहलाएं, और कृष्ण अगर अपनी कुआंरी बहन को शादी शुदा अर्जुन सें उठवा दे तो भगवान कहलवाया जाता है. धन्य हे ब्राह्मण ! तेरी क्षय हो. !! अस्तु.

5.6.1 जन्म सें मरने तक का सफर

कृष्न के जीवन की मुख्य घटनाओं पर नजर दौड़ाएं तो वे कुछ इस प्रकार सें हैं:

1. उसका जन्म बड़े अटपटे ढंग से हुआ.
2. लड़कपन आवारागर्दी लम्पटपने में बीता.
3. जवानी में गैरों की तथा अपनी भी माँ बहन बेटी को नहीं बख्शा.
4. सारी उम्र धोखाधड़ी जालसाज़ी में लगााई.
5. कुत्ते की मौत मारा गया. लाश पर कोई रोने वाला भी न आया.

कृष्ण–जन्म

कृष्ण का जन्म ही बड़े अटपटे ढ़ंग सें हुआ था. उसकी जन्म कथा सभी जानते हैं कि कृष्ण की जन्मदायी माँ कंस की बहन देवकी थी. जब कंस अपनी बहन को विदा करने लगा तो आकाशवाणी हुई कि जिस बहन को वह आज विदा कर रहा है, उसी की कोख सें उत्पन पुत्र उसे मारेगा. अतः कंस ने अपने बहन बहनोई को कैद में डाल दिया जहां उनके आठ संताने हुई. कृष्ण को छोड़ कर बाकी सारे मारे गए. अंत में कृष्ण ने कंस को मार दिया.

कृष्ण के जन्म की संक्षेप में यही कथा है. लेकिन इस कथा में मुख्य घटना एक **बहुत बड़ी अनहोनी घटना** है कि कंस को मालूम था कि देवकी की कोख सें उत्पन बालक ही उसे मारेगाा, फिर भी उसने देवकी को **पूरे**

आठ बच्चे पैदा करने दिए. यह तो माना जा सकता है कि दयावश या किसी अन्य कारण सें उसने छोटी बहन की हत्या नहीं की. परन्तु उसने उसे कैद में अपने बहनोई के साथ ही क्यों रखा? क्यों उसे आठ बच्चे पैदा करने दिए?

किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ में इसका उत्तर नहीं है अतः इस प्रश्न का उत्तर न होना यह दर्शाता है कि यह **मनगढंत कथा** है वर्ना **इतनी अक्ल तो कंस में भी रही होगी ही कि दोनों इक्कठे रहेंगे तो उसकी मौत का सामान तैयार करेंगे. फिर भी उसने उन्हें ऐसा करने दिया. वो भी एक बार नहीं, पूरे आठ बार.** सचमुच आश्चर्य की बात है.

वैसे भी कृष्ण और कंस में खून का रिश्ता था. सभी जानते हैं कि कृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा को शादीशुदा अर्जुन के हाथों उठवा दिया था. कंस इतना तो कर ही सकता था कि अपनी बहन को उसके पति सें अलग कैद कर देता. लेकिन कंस भी तो आर्य था. उसे पता था कि **बच्चे पैदा करने के लिए आर्यों में 'विवाह' और पति का कोई बन्धन नहीं होता है.** कुंती को वह जानता था जिसने बिना पति के पूरे 6 बच्चे पैदा कर दिए थे. शायद हनुमान की माँ को भी जानता हो जो अपने पति केसरी को घर पर छोड़ गई और पवन सें गर्भवती होकर आ गई.! और शायद पार्वती को भी जानता हो जिसने शिव की गैर हाजिरी में ''मैल'' सें ही बच्चे पैदा कर लिए थे. **इसलिए लगता है कंस को यही बेहतर लगा कि देवकी अपने विवाहित पति सें ही बच्चे पैदा कर ले. सो उसने देवकी और वासुदेव को एक ही कोठरी में बन्द करके 8 बच्चे पैदा करवा दिए.**

खैर कृष्ण जन्मा. बाल्यकाल में जब बच्चे खेलने में मस्त होते हैं, वह 'राक्षसों' को कत्ल करने में लगा रहा. उसकी कथा पढ़ कर ऐसा लगता है कि राक्षस मारना उसका नित्य का काम था कुछ बड़ा हुआ तो लम्पटता, कामुकता छाने लगी. महाभारत, भागवत, ब्रह्मा वैवर्त, विशणु पुराण आदि पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे जहां कृष्ण रहता था वहां की लड़कियों और स्त्रियों को लाज शर्म का पता ही न था. वे तो वेश्याओं सें भी गई गुजरी लगती हैं. कृष्ण के कारनामे पढ़ कर लगता है कि वहां के पुरुष भी बेगैरत थे. उनकी माँ, बहन, बहुएं, बेटियां कृष्ण का बिस्तर गर्म करती फिरतीं थीं परन्तु उन्हें कोई अन्तर ही न पड़ता था. जैसा कि विशणु पुराण में लिखा हैः वे संभोग प्रिय गोापियां अपने पतियों, पिताओं और भाईयों के रोकने पर भी रात में कृष्ण के साथ रमण करती थी. (अंश 5 अ.13)

लड़कपन

कृष्ण में वासनामयी कामुकता लड़कपन सें ही झलकने लगी थी. उसकी एक उदाहरण वह करतूत है जब वह नदी में नहाती हुई लड़कियों व स्त्रियों के कपड़े उठा कर पेड़ पर चढ़ गया था और उन्हें कपड़े तब तक नहीं लौटाए थे जब तक उसने हर लड़की के अंग अंग का ऊपर नीचे सें बारीकी सें निरीक्षण नहीं कर लिया था. उन गोपियों के हर स्त्री अंग को देखने के लिए कृष्ण ने उन्हें अपने हाथ सिर पर अंजलि बांध कर पानी सें बाहर आने के लिए कहा. उसने उन्हें झुकने या बैठने नहीं दिया. कथा के अनुसार सबकी सब उसके सामने नंगी होकर खड़ी रहीं. जब तक उसका जी चाहा उसने अपने गांव की बहन बेटियों के नंगे बदन का आनन्द लिया और जब उसका जी भर गया तो उसने कपड़े लौटा दिए.

कृष्ण की इस करतूत या कहानी में एक बड़ी अनहोनी सी बात है. वह यह कि पूरे गांव की बहन बेटियों को उसने नंगा करके देखा मगर पूरे गांव में सें किसी ने भी इस बात पर आपत्ति नहीं जताई. न तो नंगी होने वाली स्त्रियां ही कुछ बोलीं और न ही उनके परिवार वाले कुछ बोले. इसका अर्थ यह हुआ कि वह पूरा गांव ही वेश्याओं और भडूओं या दल्लों का था. किसी को भी इस बात की परवाह ही नहीं थी कि किसी ने उनकी बहन बेटियों को नंगा कर दिया है!

खैर कृष्ण की इस करतूत को कथावाचक पूरे आनंद के साथ बयान करते हैं. वे यदुवंशी कन्याओं के नंगेपन के एक एक इंच का आंखों देखा हाल प्रस्तुत करते हैं. **इन कथाकारों सें पूछा जाना चाहिए कि अगर ऐसा उनकी बहन बेटियों के साथ हुआ होता तो! तो क्या वे उनका हाल भी ऐसे ही चटकारे लेकर सुनाते!!**

बालसुलभ जिद्द : इस बेहयाई की घटना पर कुछ लोग यह कह कर पर्दा डालने की कोशिश करते हैं कि उस समय कृष्ण छोटी उम्र का था और यह उसकी बाल सुलभ जिद्द थी. लेकिन कोई ब्राह्मण ग्रन्थ नहीं बताता कि उस समय कृष्ण की उम्र कितनी छोटी थी. यहां ध्यान देने योग्य बात है कि जब कृष्ण ने यह करतूत की, उस समय उसकी उम्र इतनी बड़ी अवश्य थी कि

1. वह पेड़ पर चढ़ सकता था तथा वृक्ष की चोटी तक जा सकता था. कोई भी ''छोटा'' बालक ऐसा नहीं कर सकता.

2. वह इतना बड़ा हो चुका था कि उसे इस बात का ज्ञान हो चुका था कि स्त्रियों के सारे स्त्री–अंग देखने के लिए उनके हाथ सिर पर रखवाये जाने चाहिए ताकि वे अपना कोई भी स्त्री–अंग हाथों सें ढांप न सकें. कितनी बड़ी उम्र के ''बच्चे'' को इतना ज्ञान होता है, यह बात सभी जानते हैं.

3. कृष्ण ने यह करतूत तब की और वहां की जहां उसे पता था कि इन लड़कियों का कोई भाई या पिता आसपास नहीं होगा या उस समय वहां नहीं आएगा. उसकी यह सारी करतूत एकाध घण्टे तो जरूर चली होगी मगर उस समय वहां कोई अन्य मर्द नहीं आया. यहां तक कि सदा उसके साथ रहने वाले उसके साथी भी वहां नहीं आ पाए. **ऐसी गहरी चाल सोचना बाल सुलभ बच्चे का काम नहीं है.**

4. **उसकी माँ या बहन भी तो कभी वहां नदी पर नहाई होंगी या कभी घर पर उसकी उपस्थिति में नहाई होंगी, उसने अपनी माँ बहन सें तो कभी नहीं कहा कि वे नंगी होकर उसके सामने आएं.** अतः जब उसने गैरों की बहन बेटियों को नंगा किया तब तक वह इतना बड़ा हो चुका था कि उसे इतना ज्ञान हो चुका था कि **सिर्फ गैरों** की बहन बेटी को ही नंगा किया जाना चाहिए.

5. जो आदमी पराई औरतों को नंगे बदन हाथ ऊपर करके सामने आने को कहे, निश्चित रूप में वह **''बालसुलभ'' तो कतई नहीं हो** सकता. **हां, अगर उस समय उसने अपनी माँ यशोधा या बहन सुभद्रा को नंगी देखने की जिद्द की होती तो शायद कहा जा सकता था कि यह उसकी बाल सुलभ जिद्द थी.**

वैसे पूरे विश्व भर में ऐसी उदाहरण और कहीं नहीं मिलती जब किसी ''भगवान'' ने पराई औरतों को नंगे होकर सिर पर हाथ रख कर सामने आकर खड़े होने का आदेश दिया हो. विश्व भर के वासनामयी और लम्पट राजाओं के अनेकों किस्से भरे पड़े हैं लेकिन उन राजाओं ने भी ऐसी जबरदस्त ''बालसुलभ'' कारस्तानी नहीं की. अगर कहीं किसी ने ऐसी करतूत की भी होगी तो उसका मूंह काला करके जूते मारे गए होंगे लेकिन ब्राह्मणों न ऐसे करतूतिए को "भगवान" बना दिया. ऐसा है ब्राह्मणवाद. थू!

महाभारत के ब्राह्मणिक कथाकार के अनुसार कि कृष्ण ने उन्हें यह ''सजा'' इसलिए दी क्योंकि वे नंगी होकर जल में स्नान कर रहीं थीं. यह बेतुका बहाना है क्योंकि शरीर पर कपड़े डाले हों या न डाले हों पानी में घुसकर नहाने सें पूरा बदन गीला होता है. पानी पूरे शरीर को छूता है. वास्तव में ऐसा करना गाोपियों के लिए सजा हो न हो लेकिन कृष्ण और उसके कथाकारों के लिए ''मजा'' जरूर है. अगर यह कृष्ण का मजा न होता तो बाद में इन्ही गोपियों के साथ इसी जल में रमण क्यों करता. अगर नंगा नहाना जुर्म है तो पराई औरतों के साथ उसी जल में संभोग करना तो महापाप है.

वास्तव में ऐसी कहानियां उन लोगों ने महाभारत में घुसेड़ी जिन्होंने मंदिर के नाम पर खजुराहो जैसे वेश्याघर बनवाए! मंदिरों में देवदासी के नाम पर वेश्याओं का नंगा नाच करवाया गया. भगवान के नाम पर शिव के लिंग को भगवान बना कर पूजा करवाई गई. स्त्रियों की नंगी मूर्तियां मंदिरों की शोभा बनी. वात्सायन जैसे ब्राह्मणों ने कामसूत्र की रचना की तथा वासना को ही धर्म बताया गया. उसी समय कृष्ण और राधा एण्ड कम्पनी का वासना का खेल जारी हुआ. अफसोस की बात यह है कि ब्राह्मणधर्मी यह नंगापन आज तक जारी रखे हुए हैं!

जवानी

कहते हैं पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं. कृष्ण ने बचपन में ही रक्षकों की हत्या करना शुरू कर दिया था. सो बड़े होकर उसने महाभारत करवा डाली, पूरे भारत की मांओं की गोद सूनी कर दी, औरतें विधवा कर दीं. लड़कपन सें उसने अपने गांव की बहन बेटियों को नंगा करना शुरू किया था सो जवान होने पर वही गुल खिलाए जिसकी कि आशंका थी. वह जहां भी गया, वहां की स्त्रियों सें शारीरिक सम्बंध बनाए. चाहे वह रिश्ते में उसकी माँ समान ही क्यों न रही हो. अपहरण करके या वैसे भी जैसे भी उसे औरतें मिली उसने ला लाकर अपने हरम भर लिए. अगर भागवत या अन्य बाह्मण ग्रन्थों को सत्य मानें तो उसकी पत्नियों, रखैलों माशूकाओं की गिनती करोड़ों में है.

5.6.2 कृष्ण और राधा एवं गोपियां

ब्राह्मणग्रन्थों में दर्ज कृष्ण की लीलाओं में उसके द्वारा अनगिनत गोपियों सें बनाए गए यौन सम्बंधों का विस्तृत विवरण है. अगर इन ग्रन्थों को सच मान लें तो कृष्ण ने अपनी दूध पिलाने वाली माँ यशोधा को छोड़ कर, लगभग बाकी सभी स्त्रियों के साथ रमण अथवा संभोग किया. कृष्ण ने अपनी माँ यशोधा को तो बख्श दिया

लेकिन माँ समान **मामी राधा** सें सारी कसर निकाल ली. उसे राधा कुछ ज्यादा ही आनंददायक लगी. तभी तो कृष्ण ने उससें नित्य संभोग करने के लिए उसके पति **रायण को नपुंसक** कर दिया था. (भागवत अ.51 समु 2.44) **रायण कृष्ण को दूध पिलाने वाली माँ यशोधा का सगा भाई था.** अतः रिश्ते में **राधा कृष्ण की सगी मामी** लगती थी. एक पल के लिए सोचें कि जो कुछ कृष्ण और राधा ने रायण के साथ किया अगर ऐसा ही हमारे बेटे, भाई या अन्य सम्बंधी के साथ कोई कर दे तो? तो क्या हम ऐसा नीच काम करने वालों के साथ क्या सलूक करेंगे?

वैसे तो कृष्ण की हजारों रखैलें थी. **16,108** तो उसकी **स्वकीया** यानि निजि स्त्रियां थीं. **परकीया** यानि किसी और की विवाहिता लेकिन अन्य सें शारिरक सम्बंध बनाने वाली स्त्रियां, तो शायद लाखों में थी. परन्तु राधा उसकी स्पैशल रखैल थी. कृष्ण की कोई भी कथा राधा के बिना पूर्ण नहीं होती. ब्राह्मणों के मंदिरों में भी कृष्ण के साथ उसकी पत्नी, हरणित ही सही, रूकमणि की नहीं परन्तु उसकी मुख्य रखैल राधा की ही मूर्ति लगी मिलती है. क्या कारण है इसका? इस प्रश्न का उतर ढूंढना आवश्यक है.

सर्वप्रथम तो यह पता लगाना आवश्यक है कि राधा वास्तव में थी कौन और उसने ऐसा क्या किया कि ब्राह्मणों ने मंदिरों में उसकी **हरणित पत्नी रूकमणि** की नहीं परन्तु उसकी मुख्य रखैल राधा की ही मूर्ति लगाई.

जहां तक इस बात का प्रश्न है कि ''राधा कौन थी'', भिन्न भिन्न ब्राह्मण–ग्रन्थों में इस का उत्तर भिन्न भिन्न प्रकार सें दिया गया है. जैसे कहा जाता है कि एक झूठ को छिपाने के लिए हजार झूठ बोलने पड़ते हैं, वैसे ही राधा–कृष्ण की अनैतिक लीलाओं पर पर्दा डालने के लिए ब्राह्मण–ग्रन्थों में झूठ दर झूठ बोला गया है.

भागवत : कृष्ण की लीलाओं का मुख्य ब्राह्मण–ग्रन्थ भागवत माना जाता है लेकिन हैरानी की बात है कि **भागवत में राधा का नाम ही नहीं है**. केवल स्कंध 10 अध्याय 30 में ''अनया राधितो नूनं...'' में राधितो शब्द आया है लेकिन यहां इस का अर्थ कृष्ण की रखैल राधा नहीं है. संस्कृत हिन्दी कोष के अनुसार **''अनय'' का अर्थ है दुराचार ''राधितो'' का अर्थ है मनाना, खुश करना और ''नूनं'' का अर्थ है निश्चय ही**. अतः इस **श्लोक का अर्थ है कि निश्चय ही उस गोपी ने कृष्ण सें दुराचार करके खुश कर लिया है तभी वह उसे एकांत में प्यार करने ले गया है.** शेष वहां एकांत में किए गये प्रेम का आँखों देखा हाल है. जिस प्रकार आज के समय में ''दारा सिंह'' या रैम्बो ताकतवर व्यक्ति का प्रयाय बना हुआ है, हो सकता है उस सपय जो गोपी कृष्ण को ''खुश'' कर देती हो उसी को ''राधा'' कहा जाता हो, और गोपियों में राधा बनने की होड़ लगी रहती हो.

ब्रह्मा वैवर्त पुराण (कृष्ण जन्म खण्ड 4 अ.15) में राधा का इतिहास कुछ इस प्रकार सें आया है कि सुदामा के शाप के कारण राधा **30 करोड़** गोपियों के साथ भारत में पैदा हुई. यहां उसके पिता का नाम वृशभान था. स्वर्ग में वह कृष्ण की पत्नी थी. यहां भारत में उसकी शादी यशोधा के सगे भाई रायण सें हो गई थी.

इस अध्याय में आगे राधा कृष्ण द्वारा मनाई गई सुहाग रात का आँखों देखा विवरण है. ब्राह्मण ग्रन्थ वेद पुराण आदि दावा करते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों का पाठ करने अथवा पढ़ने सें पाप कट जाते हैं. अतः पाठकों को इस पुण्य सें सरोबार कर रहे हैं. कथा यूं हैः

एक बार नन्द और कृष्ण वृंदावन गए. कृष्ण ने बादल कर दिए. राधा उसी समय कृष्ण के पास आई. उसने वहां सुन्दर बालक देखा. राधा ने वासना सें भर कर उसे गोद में उठाया और अपनी छाती सें लगा कर बार बार चूमा. वहां उसने मण्डप देखा. भीतर सांवला युवक फूलों की सेज पर लेटा मुस्करा रहा था. कृष्ण बोला ''भली मानस सेज पर आ जा, और मुझे छाती पर कर ले.'' राधा बोली '' मैं बैठी हूँ आप लेटे हैं. इतना समय बातों में व्यर्थ गया.'' तभी ब्रह्मा वहां आया. उसने राधा का हाथ कृष्ण के हाथ में दिया और चला गया.

राधा कृष्ण की सेज पर गई. कृष्ण ने अपना चबाया पान राधा को दिया और राधा का चबाया पान स्वयं खाया. कृष्ण ने राधा को हाथ सें पकड़ कर सीने सें लगा लिया. मुस्कराती राधा को चिपटा कर कृष्ण ने नाखूनों और दांतों सें उसका सारा अंग घायल कर दिया. उसके कपड़े खोल कर चार प्रकार का चुंबन लिया. चुंबन सें ओठों का रंग और आलिंगन सें पत्रक नष्ट हो गए. संभोग रूपी युद्ध सें छोटे छोटे घुंघरूओं वाली करघनी टूट गई. नव संगम सें राधा का अंग पुलकित हो गया. वह बेहोश हो गई. उसे रात दिन का भी ज्ञान न रहा. काम शास्त्र के ज्ञानी कृष्ण ने राधा के साथ आठ प्रकार का संभोग किया. वहां संभोग के कारण बड़ी हलचल हुई. संभोग समाप्त होने पर राधा मुसकाने लगी. राधा नित्य ही कृष्ण के साथ संभोग करती थी.

अध्याय 69 के अनुसार राधा अपनी माँ के समान कामुकी थी. उसने कृष्ण के साथ 64 आसनों सें संभोग किया. नाखूनों के घाव सें राधा के स्तन और नितम्ब घायल हो गए. **सती राधा** सुखकारी संभोग में मग्न हो कर नंगी हो गई. और कष्ट के कारण बेहोश हो गई.

इसी धार्मिक पुराण के अध्याय 28 में कथा है कि एक बार कृष्ण रात को वृंदावन गया. वहां उसने मुरली बजाई. मुरली की आवाज सुन कर राधा उसके पास आ गई. सती राधा ने आलिंगन कर कृष्ण को चूम लिया. काम वासना युक्त कृष्ण संभोग को प्रस्तुत/तैयार राधा के साथ सेज पर लेट गया. वहां कृष्ण ने विपरीत आदि 8 प्रकार से संभोग किया. नाखून व दांतों सें चोट की. दोनों संभोग करने में कुशल और काम शास्त्र के ज्ञानी थे.

अतः उनका संभोग रूपी **युद्ध** रूक ही नहीं रहा था. कृष्ण ने राधा को अपने ऊपर कर लिया. उसके नितम्ब और स्तनों पर नाखूनों सें छेद कर दिया. उसके बिंबाफल जैसे होंठों पर दांतों से घाव कर दिए.

भागवत अ.51 की कथा के अनुसार शिव और पार्वती इस जन्म में विपरीत लिंग में पैदा हुए. अर्थात शिव ने राधा के रूप में जन्म लिया और पार्वती ने कृष्ण के रूप में जन्म लिया. इसलिए राधा और कृष्ण ने विपरीत आसन में संभोग किया. शिव बनी राधा का विवाह रायण नामक गोप सें हो गया. राधा ने कृष्ण सें नित्य संभोग करने के लिए अपने वर्तमान पति को नपुंसक कर दिया.

इस कथा को पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे यह कथा किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गई है जो वासना से विक्षिपत **(Sex-maniac)** था. उसने अपने मन में दबी भावनाओं को यहां उजागर किया है. एक पल के लिए अगर यह भी मान लें कि राधा उसकी वैध भोग्या थी तो भी उनके समागम का आंखों देखा हाल इस विस्तार सें देने की क्या तुक थी. ऐसी पुस्तकें पढ़ कर कैसा पुण्य मिलता है, पाठक स्वयं निर्णय कर सकतें हैं.

उपरोक्त कथाओं में राधा और कृष्ण के संभोग–युद्ध का आंखों देखा हाल है. लेकिन लगता है पुराण कार को, कृष्ण सें मात्र राधा के संभोग कथा सें प्राप्त **"पुण्य" सें "तृप्ति"** नहीं हुई, अतः उसने पूरे वृंदावन की बहन, बहू बेटियों का कृष्ण के हाथों संभोग करवा डाला ताकि उसे तथा ब्राह्मण–ग्रन्थ पढ़ने वाले मोक्षाकांक्षियों को पूरा पुण्य मिले और वे धन्य हो जाएं.

अतः कथा है कि कृष्ण की मुरली की आवाज़ सुन कर राधा ही नहीं पूरे वृदावन की स्त्रियों में काम वासना भड़क उठी. वे भागी भागी कृष्ण के पास गईं. कृष्ण ने उन सब के साथ वही ''पुण्य कर्म'' किया जो वह अपनी मामी राधा के साथ किया करता था. उन्हे भी उसी तरह काटा छीला, करघनियां तोड़ी आदि.

भागवत (स्‍ 10 अ 31–2 तथा 29–45) के अनुसार सभी गोपियां कृष्ण की बिन पैसे की गुलाम थीं और कृष्ण उनका संभोग का पति था. कृष्ण ने उनके स्तनों, जाघों और नाड़ा बांधने की जगह हाथ फिराया. नर्म अंगों पर नाखून गढ़ाए. इस तरह उनकी काम वासना भड़का कर उन से ठंडी बालू पर संभोग किया.

फोटोकॉपी द्वारा होम सर्विस : आगे कथा है कुछ गाोपियां अपने बाप, भाई अथवा पति के रोकने के कारण कृष्ण के पास नहीं पहुंच पाईं. कृष्ण ने उनके लिए भी पूरा प्रबन्ध कर दिया था. उसने अपनी फोटोकॉपियां उनके घर भेज दीं यानि डायरेक्ट टू होम सर्विस प्रदान कर दी. कृष्ण की फोटोकॉपी ने वही करतूत की जो असली ने जमना की बालू पर अन्य गोपियों के साथ की थी. उसने घर पर ही पर्दे के पीछे, उन गोपियों के साथा संभोग कर डाला. वहां संभोग की **सुन्दर आवाज** हुई. नव संभोग के कारण गोपियां बेहोश हो गईं. जूड़ा, वस्त्र, घुंघरू आदि खुल गए. कृष्ण ने रूप बदल कर गोपियों सें पानी में संभोग किया. यह मनोहर **पुण्य कार्यक्रम** 30 दिन तक चलता रहा परन्तु उनकी वासना तनिक भी शांत न हुई.

सीधी सरल बात है कि जब तीस दिनों तक यह अतृप्त और अनवरत संभोग–युद्ध का **पुण्य कर्म** यमुना किनारे चलता रहा तो गोपियों के घरवालों का परेशान होना स्वाभाविक था. अतः पुराण कार ने अपना दिमाग दौड़ाया है कि आगे इस पुण्य कर्म को कैसे चलाया जाए. अतः कथाकार ने कृष्ण सें वही काम करवाया जो रामकथा में अग्नि ने सीता के साथ किया था. कृष्ण ने सभी गोपियों की फोटोकॉपी तैयार की. ओरिजिनल यानि असली अपने पास रखी तथा फोटोकॉपी अपने अपने घर भेज दीं. इधर घरवाले संतुष्ट हो गए कि उनकी बहन, बेटी बहु घर आ गई है उधर कृष्ण ओरिजिनल गोपियों के साथ यमुना की ठण्डी बालू पर **पुण्य कर्म** करता रहा!!

लगता है कृष्ण सुपर कलोनिंग जानता था. उसने न केवल अपने कलोन बना कर उन गोपियों के घर भेजे जो उसके पास न आ सकीं बल्कि उन गाोपियों के कलोन भी बना डाले जो उस के पास आईं थीं. उसने न केवल सब के कलोन बनाये अपितु हाथ की हाथ, उन्हें उनकी आयु के बराबर बड़ा भी कर दिया. कृष्ण ने न केवल उनके शरीर बनाये बल्कि उनके कपड़े तक की कलोनिंग कर डाली. **कौन कहता है** कि कलोनिंग की विधि का भारत में आविष्कार नहीं हुआ? कृष्ण तो कलोनिंग का थोक का व्यापारी था. फिर भी कोई उसे भगवान न माने, यह तो अन्याय है!! अब भी कोई कहे कि वेदों पुराणों में फोटोकॉपी बनाने या कलोनिंग की विधि नहीं है तो यह तो नास्तिक लोगों का काम है. लोग तो कागजों की फोटोकॉपी करते हैं कृष्ण ने तो स्त्रियों की फोटोकॉपी बना दी, फिर भी कोई ब्राह्मणों को फोटोकॉपी का आविष्कारक न माने तो कोई क्या करे!!

इतना ही नहीं तीस दिनों तक बिना रुकावट चले इस **पुण्य कर्म** सें एक भी बालक पैदा नहीं हुआ, कोई यदुबाला गर्भवती नहीं हुई फिर भी कोई यह कहे कि वेदों पुराणों में **परिवार नियोजन** की विधि का आविष्कार नहीं हुआ था तो यह तो ब्राह्मण इतिहास के साथ अन्याय है!

यहां एक बात दिमाग में खटकती है कि द्रोपदी उसकी बहन लगती थी. उसे पांच पांडवों के साथ यौन सम्बंध बनाने पड़े. भीम जैसे विशालकाय तथा नकुल जैसे मरीयल सें भी सम्बंध बनाने पड़े. युधिष्ठर जैसा लम्पट तो पहली सुहागरात मनाने वाला था ही. सवाल पैदा होता है कि कृष्ण ने यह कलोनिंग की विधि द्रोपदी पर क्यों नहीं आजमाई. उसकी भी पांच कॉपियां बना देता. द्रोपदी को भी कुछ राहत मिल जाती. पांचों भाईयों को भी अपनी अपनी बीवी मिल जाती. किसी को भी दूसरे की "झूठन" नहीं झेलनी पड़ती!

लिव एण्ड लैट लिव : अंग्रेजी में कहावत है कि लिव एण्ड लैट लिव यानि जीओ और जीने दो. इसी प्रकार भ्रष्टाचार का नियम है कि खाओ और खाने दो. कृष्ण ने व्यभिचार में ऐसा ही **सनातन नियम** बनाया कि खुद भोगो और दूसरों को भोगने को दो. इसीलिए कृष्ण ने अपने गुट या गिरोह के दूसरे सदस्यों का भी पूरा ख्याल रखा. न केवल उसने अपने परिवार, कुल और गांव की बालाओं को भोगा बल्कि अपने साथियों को भी इस **पुण्य कर्म** में पूरा हिस्सा दिया. आनंद रामायण का यह श्लोक चौंकाने वाला हैः

स तासां काम पूर्त्यर्थं निशि निद्रा विवर्जित
बन्धुभ्यां गाेधिका भुक्त्वा मातृतुल्य वयोऽधिका !! सर्ग 3–47

अर्थात कृष्ण और साथियों ने **मिल कर** अपने सें बड़ी उम्र की तथा **अपनी माँ समान गोपियों** की काम वासना की प्यास शांत की.

यह श्लोक मिल बांट कर भोगने की बात को सिद्ध करता है. बाह्मणों के धर्म ग्रन्थ झूठ तो बोल नहीं सकते कि 30 करोड़ गोपियां एक साथ पैदा हुई थीं. कृष्ण अकेला था. सभी गोपियों के लिए अपनी एक एक फोटोकॉपी भी बनाता तो उसकी तो सारी उम्र इसी काम में निकल जानी थी! फिर उन बालाओं के साथ पुण्य कर्म कौन करता! अतः जैसे आजकल आउटसोरसिंग (अपना काम दूसरों सें करवाना) का जमाना है, कृष्ण ने उस समय ही यह प्रथा चला दी थी. उसने अपने **पुण्य कर्म** की आउटसोरसिंग कर दी. उसने अपने गुट के लोग ”काम” में लगाए और उन्होंने अपने ही गांव की अपनी ही बहनों, बेटियों, बहुओं और **मांओं** की काम वासना पूरी की!!

ब्रह्मा वैवर्त पुराण की यह कथा इस सच्चाई को भी सुदृढ़ करती है कि राधा कृष्ण की मामी थी. एक तो वह रिश्ते में उसकी **मामी यानि ”माँ समान”** लगती थी दूसरे वह उम्र में भी उससें बड़ी थी. राधा के साथ समागम करके ही तो कृष्ण अपनी ‘‘मातृ तुल्य’’ अर्थात माँ समान स्त्रियों सें समागम कर पाया.

यह कथा पढ़ कर मन सें एक ही आवाज निकलती है : हे ब्राह्मण धिक्कार ! धिक्कार तुझे!! तूने अपने गिरोह की शबाब, शराब और सम्पत्ति (Woman,Wine & Wealth) के खेल को जारी रखने के लिए ऐसे नीच पात्र को घढ़ा जिसने हर किसी की बहन, बेटी और पत्नि को तो भोगा ही, अपनी दूध दात्री माँ यशोधा की सगी भाभी और अपनी सगी मामी को भी नहीं बखशा. थू!!

हम जैसे लोग ब्राह्मणिक भगवानों द्वारा किए गए पाप, व्यभिचार आदि करतूतों को पुण्य मानने सें मना करते हैं, वैसे ही राजा परीक्षत ने कृष्ण के इन कुकृत्यों पर एतराज किया. उसने पूछा कि कृष्ण तो अधर्म का नाश करने का दावा करता है फिर उसने परस्त्री गमन का ऐसा पाप क्यों किया तो पुराणकार बोला,**‘‘नैतिकता के विरूद्ध काम करना ही तो ईश्वरों का साहस है.’’** वास्तव में ऐसा दुस्साहस केवल ब्राह्मणों के भगवानों में ही है. इस बात को दूसरे ढंग सें कहें तो ऐसा साहस ब्राह्मणों में ही है कि वे ऐसे कुकर्मी लोगों को ”भगवान” बताते हैं!

जैसे राजा परीक्षत ने पुराणकार सें पूछा, वैसे ही पदम पुराण उत्तर खण्ड 245 में पार्वती ने शिव से पूछा कि कृष्ण ने ऐसा अनैतिक, अनाचार, पाप क्यों किया तो शिव ने भी कहा कि **बड़े लोग चाहे कुछ भी अनैतिक करें, अधर्म करें., अनाचार करें उनको पाप नहीं लगता. जैसे आग किसी को भी जला सकती है, वैसे ही बड़े लोग किसी की भी माँ बहन बेटी को भोग सकते हैं.**

ऐसा ही **तुलसी** ने फरमाया थाः **समरथ को नहीं दोश गोसाईं.**

कितनी घटिया दलील है यह. अगर इस बात को मान लें तब तो गरीब, कमजोर को तो जीने का हक ही नहीं रह जाएगा. उनकी बहन बेटियों की इज्जत कोई भी कहीं भी उछालता फिरेगा. किसी को कोई पूछने वाला न होगा. इसी तरह की घटिया ब्रह्माणवादी दलीलों की वजह सें हम भारतीय 2000 सालों तक विदेशियों के गुलाम रहे हैं. और तो और हम भारतीय लोग गुलामों के भी गुलाम रहे हैं. हमलावर आए हमारी सम्पत्ति लूट ले गए. हम भारतीयों की माओं बहन बेटियों को रेवड़ की तरह हांक ले गये. ब्राह्मण केवल यही गान करते रह गये समरथ को नहीं दोश गोसाईं. क्योंकि ब्रह्माणवाद ने सिखाया यही था कि जो ताकतवर लोग हैं, बड़े लोग हैं वे कुछ भी कर सकते हैं. हमलावर हम सें ज्यादा ताकतवर थे. हम से बड़े थे. वे कुछ भी करते रहे, हम चुपचाप सहते रहे.

यह तो भला हो भगवन् गौतम बुद्ध का, गुरू गोबिंद सिंह का, गुरू रैदास का और उन जैसे सन्तों का, जिन्होने हमारी गैरत, इन्सानियत, मानवता को मरने नहीं दिया. या सत्‌गुरू कबीर का जिन्होने हमें ललकार कर कहाः

‘‘ सूरा सोइ सहारिये, जो लड़ै दीन कै हेत!
पुरजा पुरजा कट, भूइं गिरै, तबहु न छाडै खेत!!”

दलित सन्त अगर भारतीय समाज को नहीं बचाते तो आज ब्राह्मणों और उनके द्वारा गढ़े भगवानों की करतूतों सें भारत में चहुं ओर वासना और भोग का साम्राज्य होता. भारत की बहुत बड़ी आबादी आज भी इन

ब्राह्मणों की दिमागी गुलाम है. और यही कारण है कि आज भी पूरी हिन्दू कौम ''**समरथ ब्राह्मण** पुरोहितों के भ्रष्टाचार, व्यभिचार और पाप कर्मण्यता को सहन कर रही है. बाबा साहिब का आदेश है कि इस ब्राह्मणवादी दिमागी गुलामी सें छुटकारा पाना हर भारतीय का परम कर्त्तव्य और अधिकार है.

कहा जाता है कि एक झूठ को छिपाने के लिए हजार झूठ बोलने पड़ते हैं. सो ब्रह्माणों ने कृष्ण और राधा के अनाचार अथवा व्यभिचार को सही करार देने के लिए यह झूठ घढ़ा कि वह पिछले जन्म में कृष्ण की पत्नी थी. अतः इस जन्म में गैर की पत्नी होने पर भी वह उसे भोग सकता था. इसी तरह शेष गोपियों के साथ किये गए व्यभिचार को सही ठहराने के लिए जो **धार्मिक कथा** उन्होने गढ़ी है, उसके पुण्य का भी रसवादन भी पाठक कर लें.

कथा है कि जब राम को बनवास हुआ तो वह घूमता हुआ दण्डक वन में पहुंचा. वहां ब्राह्मण ऋषि रहते थे. उन्होने राम का सुन्दर शरीर देखा और उसे पाने अर्थात भोगने के लिए उतेजित हो उठे. राम ने उन ब्राह्मण ऋषिओं सें वादा किया कि अगले जन्म में उनकी इच्छा पूरी कर दी जाएगी. अगले जन्म में वे सभी ब्राह्मण ऋषि गोपियां बन कर पैदा हुए और काम वासना के सहारे ''भगवान'' को पाकर मोक्ष को प्राप्त हुए. (पदम पुराण उतर खण्ड अ.245)

धन्य हो पुण्य कथा के !! धन्य हो कहने वाला!! और धन्य हो इस विधि सें मोक्ष प्राप्त करने वालों के!!

इंगलिश भाषा का एक शब्द है डमसट्रिकन (Dumbstricken) हिन्दी में इसका लगभग अर्थ है बोलती बन्द होना. इस कथा की कल्पना देख कर हमारी तो बोलती बन्द हो गई है. अनैतिकता की चरम सीमा है यह तो. अपने भगवान को भोगना चाहते हैं महान ऋषि!! और अगले जन्म में भगवान उन्हे ही भोग देता है. क्या कहें? मोक्ष पाने के लिऐ ऐसे कारनामे भी करने पड़ेंगे, ऐसा तो किसी धर्म में नहीं है.

यह कथा चाहे और कुछ बयान न करती हो लेकिन ब्राह्मण ऋषिओं की असलियत/वास्तविकता बयान जरूर करती है कि ब्राह्मण ऋषि इतने गिरे हुए होते थे कि जहां सुन्दर शरीर देखा, भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़ते थे. चाहे सामने आदमी हो या औरत हो, या पशु हो साधारण प्राणी हो या उनका भगवान हो, उन्हें कोई अंतर नहीं पड़ता था. उन्हें तो अपना "काम" पूरा होता था जिसे वे किसी भी तरह सें पूरा कर लेते थे.

मात्र ब्राह्मण ऋषि ही ऐसे नहीं थे. राम भी उनसें कम नहीं था. उसे भी उन ब्राह्मण ऋषिओं की बात बिल्कुल भी नहीं अखरी. उसे कुछ भी गलत नहीं लगा. ब्राह्मण ऋषिओं ने भोगना चाहा, राम ने हामी भर दी. कहते हैं किसी का तो आवा ऊत होता है इनका तो खताना ही ऊत है. शर्म की बात है **अगर** हम ऐसे नीचों के वंशज हैं. निश्चित रूप में हम भारतीयों का ऐसे गिरे हुए लोगों सें कोई सम्बंध नहीं है. यह तो ब्राह्मण ही हैं जिन्होने ऐसा प्रचार कर रखा है. अब समय आ गया है कि हम इस ब्राह्मणवाद को कूड़े में फैंक दें जो कि इस की वास्तविक जगह है.

अब पाठकगण एक क्षण के लिए कल्पना करें कि अगर राम उसी जन्म में उनकी बात मान जाता और ये ब्राह्मण ऋषि राम के शरीर सें अपनी काम वासना मिटाने में सफल हो जाते तो राम का क्या हश्र होता?

हम सभी जानते हैं कि 60 सैकिंड का एक मिनिट होता है, 60 मिनिट का एक घंटा बनता है, 24 घंटे का एक दिन होता है. 365 दिनों का एक साल होता है. हमारी प्राचीन समय पद्धति के अनुसार **24 सैकिंड का एक पल** होता है.

मान लें कि हर एक ऋषि राम का शरीर पाने यानि भोगने में मात्र आधा पल (यानि 12 सैकिंड) का समय लगाता और यह **पुण्य कर्म** अनवरत, बिना रूके चलता तो भी 15 करोड़ पल लगते. साधारण सा हिसाब लगाने में यह समय **114 वर्ष** बनता है. अतः जहां राम को 14 साल बनवास में रहना था वहां 114 साल बाद तो इन ऋषिओं का ''**पुण्य कार्यक्रम**'' ही समाप्त होता. **(12x30 करोड़=360 करोड़ सैकण्ड = 10 लाख घण्टे = 41667 दिन = 114 साल)**

यही गणना कृष्ण और गोपियों पर लगाएं तो अकेले कृष्ण को तो 30 करोड़ गोपियों को "मोक्ष'' देने में 114 साले ही लगते परन्तु जैसा कि ब्राह्मण–ग्रन्थकारों ने कहा है कि 30 दिन तक उनका अतृप्त संभोग–युद्ध चला, तो इसका अर्थ हुआ कि कृष्ण ने इस 114 वर्षों में होने वाले **पुण्य काम** को 30 दिनों में निपटाने के लिऐं अपने 1,368 साथियों की मदद भी ली. वैसे भी यह भ्रष्टाचार का शाश्वत नियम है कि स्वयं खाओ औरों को भी खाने दो. फिर कृष्ण की कौन सी वे अपनी कुछ लगती थीं. और गोपियों का आचरण तो वेश्याओं समान था ही. अतः 114 वर्ष का काम 30 दिन में निपटाने पर किसी को भी कोई आपत्ति न हुई.

वैसे विष्णु तो एक साथ कई अवतार ले सकता था. जैसे राम और उसके तीनों भाई विष्णु के एक साथ लिए गए अवतार थे. वह स्त्री के रूप में भी अवतार ले सकता था जैसे उसने मोहिनी का अवतार लिया था जिसके पीछे शिव कामांध हो भाग लिया था. यह तो शुक्र हुआ कि मोहिनी अर्थात विष्णु शिव के हाथ नहीं आया **वर्ना** शिव उसका वह हाल करता कि वह कहीं बलात्कार की रिर्पोट कराने लायक भी न रहता. यहां एक बात

समझ में नहीं आई कि जब ऋषिओं नें उसे भोगना चाहा तो तब उसने मोहिनी अवतार **क्यों नहीं** लिया. जैसे महात्मा रावण को सीता की फोटोस्टैट कापी दी गई थी वैसे ही इन ऋषिओं को भी मोहिनी की फोटोस्टैट कापी दे दी जाती. ऋषिओं नें भी शायद यही सोच कर उससे भोगने की इच्छा प्रकट की होगी लेकिन उन बेचारों के साथ तो उल्टा हो गया. **लेने के देने** पड़ गए. अगले जन्म में सारे ऋषि स्त्री बन गए. राम नर का नर रह गया. भोगने वाले खुद भोगे गये.

इसी विषय पर कुछ कसर बाकी रह गई थी तो वह आनंद रामायण के ब्राह्मण कथाकार ने पूरी कर दी. आईये इस धार्मिक कथा का पुण्य भी लीजिएः

कथा है कि बनवास के समय एक बार सीता को मासिक धर्म चल रहा था. देवताओं की पत्नियों को यह बात पता चली. (देवताओं की पत्नियां अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश, पवन, इन्द्र, गणेश, यमराज आदि की पत्नियां) तो उन्होने सोचा कि राम की काम पीड़ा शांत की जाए. वे सभी सजधज कर राम के पास पहुंचीं. दासियों ने राम को देवियों के आने की सूचना दी और आने का प्रयोजन भी बताया. राम ने कहा इस जन्म में तो मेरा एक पत्नित्व का व्रत चल रहा है. अगले जन्म में मैं यमुना की ठण्डी रेत पर आप सब का **कल्याण** करूंगा. अतः वे सब अगले जन्म में गोपियों के रूप में पैदा हुईं. (विलास खण्ड सर्ग–7) (शायद इसी कारण गीताप्रैस वाले ने अपनी मासिक पत्रिका का नाम "कल्याण" रखा हुआ है.)

इस कथा सें ब्राह्मणवादी व्यवस्था के कुछ तथ्य स्पष्ट होते हैं कि :

1. ब्राह्मणों के देवता तो कामी, लम्पट, व्यभिचारी होते ही थे, देवियां भी कम न थीं. वे भी पर–पुरुष सें संभोग करने की ताक में रहती थीं. वे भी आर्य देवों की तरह बेरोकटोक व्यभिचार करतीं थीं.
2. राम को उनका संभोग का प्रस्ताव अनैतिक तो क्या, अनुचित भी नहीं लगा. उसने उन देवों की पत्नियों को भला बुरा नहीं कहा बल्कि उनके प्रस्ताव को मान लिया कि वह अगले जन्म में उनके साथ भोग करेगा.
3. राम जंगल में भी दासियो को साथ ले गया था.
4. जो स्त्रियां किसी भी गैरमर्द सें सरेआम भोग कर सकती थी, ब्राह्मणधर्म में उनको ''**देवी**'' कहा जाता है. ऐसा कुकर्म करने वाली राधाओं को **"सती"** बताया जाता था.

वैसे वृहत वाराहि संहिता 47.3 का मानना है कि जो पुरुष पराई स्त्री सें व्यभिचार करता है, वह 6 महीने गधे की खाल औढ़ कर भीख मांगे तो अपने पाप सें मुक्ति पाता है. अगर कृष्ण यह रास्ता अपनाता तो आज मथुरा वृंदावन की गलियों में गधे की खाल ओढे भीख मांगता नजर आता. उसने 30 करोड़ 16 हजार एक सौ सात गोपियां+राधा+कुब्जा को भोगा था. अतः उसे 15 करोड़ 8 हजार 54 साल तथा 6 महीने गधे की खाल औढनी पड़ती. लेकिन कहते हैं न कि ताले तो शरीफों के लिए होते हैं. अगर देवों को प्रायश्चित ही करना होता तो वे ऐसा काम ही क्यों करते!!

यहां एक छोटी सी घटना बयान करना उपयुक्त होगी. घटना उस समय की है जब भारत में अनाज की बेहद कमी चल रही थी. समस्या सें निपटने के लिए सरकार ने एक विदेशी विशेषज्ञ को अपनी राय देने के लिए बुलाया. वह हवाई जहाज सें आया और हवाई अड्डे सें बाहर निकला. देखा सड़कों पर अवारा गाएं सांड घूम रहे हैं. उनकी तरफ इशारा करके वह बोला,''व्हेयर इज द् फूड प्राब्लम? द् फूड इज रोलिंग ऑन द् रोड़स''. अर्थात खाने की कहां समस्या है? खाना तो सड़कों पर बिखरा पड़ा है.

यही बात कृष्ण एवं ब्राह्मण पुराणकारों पर भी लागू होती है. जैसे गाय अथवा सांड हमारे लिए तो अभक्ष्य हैं उनके लिए ये मुख्य आहार है. अतः उस विदेशी विशेषज्ञ को गाय ''खाना'' नजर आई. वैसे ही गोपियों का व्यभिचार कृष्ण अथवा पुराण कारों के लिए **पुण्य कर्म** की बात थीं हमारे लिए यह व्यभिचार है.

5.6.3 कृष्ण और कुब्जा

कृष्ण की स्पैशल रखैलों में राधा के बाद कुब्जा का नाम आता है. बाकी 30 करोड़ तो बेनाम अपितु गुमनाम ही हैं. आनंद रामायण विलास खण्ड अ–8 में कथा है कि एक बार राम सेज पर सोया हुआ था. उसके पास पिंगला नामक वेश्या आई और काम याचना की. राम ने एक पत्नी व्रत होने का बहाना किया और अगले जन्म के लिए उसकी एडवांस बुकिंग कर ली. तब तक सीता की आंख खुल गई. वह बोली कि राम का एक–पत्नी व्रत झूठा है. उसने वेश्या पर दोष लगाया कि उसने राम सें संभोग किया है. सीता ने पिंगला को श्राप दिया कि वह अगले जन्म में तीन जगह सें कुबड़ी पैदा होगी. अतः वह अगले जन्म में तीन जगह सें **कुबड़ी यानि कुब्जा** के नाम सें पैदा हुई.

भागवत स्कंध 10 अ 42 में इसी कुब्जा की कथा है. कृष्ण और बलराम को रास्ते चलते कुब्जा मिल गई. उसने बलराम के सामने ही कृष्ण सें संभोग याचना की. कृष्ण बोला तेरा घर दिल बहलाने की जगह है, वहीं आकर **कल्याण** करूंगा. वह कुब्जा के घर गया. उसका कूबड़ ठीक कर दिया. उसके बाद उसने कुब्जा के साथ वही किया जो अन्य गोपियों के साथ करता था. भागवतकार ने उनके मिलन का आंखों देखा हाल राधा की तरह अधिक पुण्यात्मक नहीं दिया है.

हाँ, ब्रह्मावैवर्त पुराण के लेखक ने पूरे मजे लेकर आखों देखा हाल बयान किया है. उसने लिखा है कि कृष्ण ने कुब्जा सें यौन सम्बंध बनाने के लिए उससें कहा कि वह पिछले जन्म में सूर्पनखा थी और वह राम था. तब वह उसके पास आई थी लेकिन तब उसका एक–पत्नि व्रत था. इसलिए उसने उस जन्म में उससें यौन सम्बंध नहीं बनाए. कुब्जा ने उसकी बात मान ली. और उसके बाद कृष्ण ने उसकी "इच्छा" पूरी कर दी. उसके भी स्तन, नितम्ब आदि घायल कर दिये. राधा की तरह कुब्जा भी संभोग–एक्सपर्ट थी. उसके साथ भी कृष्ण ने रात पर संभोग–युद्ध जारी रखा. रात्रि समाप्ति पर वीर्यधान किया. सुन्दरी युद्ध के बाद बेहोश हो गई और कृष्ण उठ कर घर आ गया.

इन कथाओं सें कुछ तथ्य तो स्पष्ट होते हैं कि :

1. आर्यों तथा देवों की बीवियां और बेटियां सरेआम किसी भी पर–पुरुष सें समागम कर लेती थीं. जैसे आज के समय में औरत बाजार में अच्छी व ताजा सब्जी लेने जाती है, वैसे ही आर्य स्त्रियां ताजा मर्द ढूंढने जाती थीं. जहां भी जो काम का मर्द उन्हें दिख जाता था उससें वहीं सरेबाजार समागम के लिए पकड़ लाती थीं. उनको किसी अन्य की उपस्थिति का कोई अंतर नहीं पड़ता था. कुब्जा बलराम के सामने कृष्ण को ले गई, देवताओं की बीवियां इक्कठी होकर आ गईं. राम किसी के साथ कहीं भी कुछ भी कर सकता था जैसे कुत्ते कुत्तिया को किसी की उपस्थिती का कोई अंतर नहीं पड़ता वैसे ही आर्य और उनके देवता थे.
2. पुराण के अनुसार सीता राम की नीयत पर शक करती थी. उसे राम का एक पत्नी–व्रत झूठा लगता था लेकिन वाल्मिकी रामायण पढ़ कर तो हमें ऐसा नहीं लगता कि राम शक करने लायक था.
3. वैसे तो राम को भगवान और उसके बाप दशरथ को चक्रवर्ती राजा कहा जाता है लेकिन उनके घर ऐसे बने होते थे कि वेश्याऐं तक बिना रोक टोक के शयन कक्ष में चली जाती थीं. इसका अर्थ हुआ कि या तो राम या उसके बाप के झोंपड़ीनुमा घर होते थे जिसमें कोई कहीं सें भी घुस कर कहीं भी जा सकता था. अथवा उनके घर में वेश्याओं का आना जाना लगा रहता था और वे उनके सोने के कमरों तक बेरोकटोक घुस सकती थीं.
4. कुब्जा भी राधा की तरह चरित्रहीन थी. कृष्ण अगर पिछले जन्म का झूठा बहाना नहीं बनाता तो भी वह उससें यौन सम्बंध बनाने को तैयार थी. पंजाबी में कहावत है कि चोर नालों पण्ड काहली यानि चोर तो गठड़ी चुराने आया था मगर गठड़ी उससें पहले ही चलने को तैयार मिली. हरियाणवीं भाषा में कहावत है कि भूआ "जाऊँ' 'जाऊँ' करै थी फूफा लेने आ गया. सो दोनों ने जी भरके ऐयाशी की.
5. राम को वेश्या का न तो अपने कमरे तक आना अखरा और न ही उसका समागम का प्रस्ताव बुरा लगा. उसे कुछ कहने की बजाए राम ने तो उसे अगले जन्म के लिए बुक कर लिया.

किन्ही भी हालातों में राम का कार्य सही नहीं है. कृष्ण का तो कहना ही क्या? जो व्यक्ति अपनी सगी मामी को भोग सकता है, अपनी कुंआरी बहन को जबरन शादी–शुदा गैर मर्द सें उठवा सकता है, उसके लिए वेश्या सें भोग कोई अनोखी बात नहीं है. ब्राह्मणों द्वारा गढ़े ऐसे भगवानों के कारनामों का अनुसरण करके ही तो भारत देश के राजा ऐयाश होते गये. जिस राजा को प्रजा की भलाई के लिए काम करना चाहिए था वह कृष्ण की अश्लील रास लीलाओं में मग्न हो गया, जहां उसे सड़कें और स्कूल बनवाने चाहिए थे वहां उसने खजुराहो जैसे मैथुन घर बनवाये. परिणाम यह हुआ कि सम्राट अशोक का बसाया भारत ब्राह्मणों ने उजाड़ दिया.

जैसे कृष्ण को एक वेश्या ने अपने घर बुलाया, वैसे ही एक बार अपने समय की प्रसिद्ध गणिका अम्बापाली ने गौतम बुद्ध को अपने घर भोजन पर बुलाया. बुद्ध अकेले नहीं गये. भिक्षुओं का पूरा संघ उनके साथ गया. बुद्ध अम्बापाली के घर पहुंचे. बोले,**"भगिनी, भिक्षा दे.**" अम्बापाली के आंसू बह निकले. वर्षों बाद किसी ने उन्हे बहन बोला था. बुद्ध और भिक्षुओं ने भोजन किया. और वर्षों बाद किसी ने उनके हाथ का भोजन स्वीकार किया था. संघ भोजन कर चलने को हुआ तो अम्बापाली उनके कदमों में गिर पड़ी, बोली भगवन् दीक्षा दें. बुद्ध ने दीक्षा दी और वह भिक्षुणी बन गई. आज विश्व उस "**गणिका" अम्बापाली को "माँ अम्बा"** के नाम सें पूजता है.

जरा इन दो एक सी घटनाओं की तुलना करके देखें. हम पाते हैं जैसे कोठे वाली वेश्या के पास एक ऐयाश जाता है कृष्ण भी कुब्जा के पास उसी तरह गया. उसे भोगा और वापिस आ गया. उसे राधा या कुब्जा में मात्र भोग्या मादा के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझा. बुद्ध को अम्बापाली में ममता के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया.

इसीलिए आज लोग राधा या कुब्जा को प्रेयसी या वेश्या सें ज्यादा नहीं मानते. कोई माँ–बाप अपनी बेटी को राधा या कुब्जा की तरह वासना की पिटारी नही बनाना चाहेगा. माँ अम्बा सदैव पूजनीय रही है और रहेगी.

5.6.4 शेष उम्र की घिनौनी जालसाजियां

सुभद्रा सें यौन सम्बंध और उसे अर्जुन के हाथों उठवाना : कृष्ण ने मात्र अपनी मामी राधा, कुब्जा और गोपियों को ही नहीं खराब किया बल्कि उसने तो अपनी सगी बहन सुभद्रा तक को भी नहीं बख्शा. उसने और उसके भाई बलराम ने मिल कर सुभद्रा सें अनैतिक यौन सम्बंध बनाये. **आज भी जगन्नाथ** मंदिर सें जो रथ यात्रा निकाली जाती है उसमें इन तीनों को पति पत्नि के रूप में दर्शाया जाता है. (सीता 6.6) कुछ लोग यह दलील देते हैं कि जगन्नाथ वाली सुभद्रा कोई अन्य स्त्री है लेकिन प्राचीन ग्रन्थों में एक ही सुभद्रा (कृष्ण की बहन) है जिससें कृष्ण और बलराम ने अनैतिक सम्बंध बनाये.

उसे डर था कि कहीं उसकी बहन सुभद्रा किसी और सें शादी न कर ले. अतः उसने उसे शादी के मण्डप सें ही जबरन अर्जुन के हाथों उठवा दिया. (आदि.221 स.मु.1.19) उस समय अर्जुन शादीशुदा था. उसकी इस घिनौनी व नीच हरकत का बलराम और अन्य लोगों ने विरोध किया. वे लोग अर्जुन को मारने भी दौड़े लेकिन कृष्ण ने उन्हे रोक लिया. अपनी बहन को उधाल ले जाने के एवज में कृष्ण ने अर्जुन को गाय, घोड़े, घोड़ियों के अतिरिक्त हजारों लड़कियां भेंट की जो ''उबटन लगाने में निपुण, नवीन वय वाली और थोड़े थोड़े गुह्य रोमों सें युक्त थीं." (आदि 219) (स.मु 1.19). आम हिन्दोस्तानी भाषा में इसका अर्थ है कि कृष्ण ने जो लड़कियां अर्जुन को भेंट कीं वे मालिश करने में कुशल, ताजा ताजा जवान हुई थीं तथा जिनके गुप्त अंगों पर बाल उगना शुरू हुए थे.

यहां ध्यान देने वाली बात है कि अर्जुन सुभद्रा को ब्याह कर नहीं ले गया था, उसे उसकी तथा शेष परिवार की मर्जी के खिलाफ उठा कर ले गया था. अतः कृष्ण ने जो यह नारियां भेंट कीं वह **"दहेज" नहीं था**. यह तो बहन को उठाने के लिए दिया गया मुआवजा या नजराना था.

दूसरी बात ध्यान देने योग्य है कि कृष्ण ने अर्जुन को जो नारियां भेंट की वे बूढ़ी दासियां नहीं थी. सभी कमसिन थीं. महाभारत के आदि पर्व में **बहुत बेशर्मी** सें यह बात लिखी गई है कि वे ताजा जवान उम्र की थीं जिन के गुप्त स्थानों पर अभी रोयें (बाल उगने की शुरूआती अवस्था) उगने शुरू हुए थे.

इस ब्यौरे का क्या अर्थ है? कृष्ण ने अपने शेष जीवन में जो गुल खिलाए उससें साफ जाहिर है कि कृष्ण ने दल्लागिरी में यह लड़कियां भेंट की, वर्ना इतनी लड़कियां वह कहां सें लाया? ये उसकी 16,109 रखैलों सें पैदा हुई अपनी बेटियां तो थीं नहीं. फिर कहां सें लाया वह हजारों लड़कियां और क्यों उसने दी ये लड़कियां अर्जुन को? सीधी सी बात है जैसे उसने अपनी बहन उठवाई वैसे वह दूसरों की बेटियां उठा लाया होगा. या फिर कहीं सें दल्लागिरी की होगी. जो व्यक्ति अपनी बहन को उठवा सकता है उसके लिए किसी और की बेटियां उठाना कौन सा कठिन काम है. हां इतना अवश्य है कि सत्याभामा के साथ दहेज में उसे 3000 सजी सजाई नवयोवनाएं मिली थी. हो सकता है उन्ही की दल्लागिरी कर ली हो.

यह तो ब्राह्मणों की कृष्ण के प्रति **दरियादिली** ही है कि उसने रूक्मणि को उठा लिया व अपनी बहन को उठवा दिया, फिर भी उसे भगवान का दर्जा दे दिया वर्ना महात्मा रावण ने सीता का हरण किया तो उन्हें खलनायक बना दिया.

कृष्ण की गांधीगिरी : कुछ लोग विशेषतः ब्राह्मणों ने इस घटना का खूब प्रचार किया हुआ है कि कृष्ण स्त्रियों की बहुत कदर करता था तभी तो वह नंगी होती द्रोपदी को कपड़ा देने पहुंच गया. यह घटना बिलकुल आज के नेताओं की सी लगती है. कहीं किसी औरत सें बलात्कार हो जाता है तो नेता लोग **बलात्कारी को अपने घर में छिपा कर** लुटी पिटी औरत के पास घड़ियाली आंसू बहाने यानि गांधीगिरी करने पहुंच जाते हैं. उसे कपड़ा देते हैं, पैसा देते हैं. दोषी को सजा दिलाने की सौ सौ बातें करते हैं और कुछ दिनों बाद उसी बलात्कारी के साथ घूमते नजर आते हैं. गांधी ने भारत के तीन टुकड़े करवा दिए. जब बंटवारे के कारण लोग मारे गए तो वह घड़ियाला आंसू बहाता हुआ पाकिस्तानियों तक को धन बांटने चला गया.

ऐसा ही कुछ कृष्ण ने किया. द्रोपदी को उसका पति नं.1 युद्धिश्ठर जूए में हार गया. कृष्ण कुछ न बोला. द्रोपदी शोर मचाती रही कोई न आया. उसे बालों से पकड़ कर घसीट कर दरबार में लाया गया. कृष्ण कुछ न बोला. जब उसे भरी सभा में नंगी कर दिया गया तब कृष्ण आया. **उसने द्रोपदी पर कपड़ा डाला और चलता बना.**

उसने किसी सें कुछ न कहा. न तो युद्धिश्ठर सें पूछा कि उसने उसकी बहन को जूए के दांव पर क्यों लगाया और न ही कौरवों सें पूछा कि उन्होंने द्रोपदी सें दुर्व्यवहार क्यों किया.

और कुछ दिनों बाद जब महाभारत का युद्ध अटल हो गया तो अपनी **लीडरी** अथवा **गांधीगिरी** चमकाने दोनों पक्षों में सें एक को अपनी सेना दे दी और एक ओर स्वयं हो गया. कोई जीते हारे, कोई जीए मरे, उसकी चौधर पक्की. **अगर उसे द्रोपदी का इतना ही ख्याल था तो उसने कौरवों को स्वयं और सेना में सें एक को चुनने के लिये क्यों कहा.!! अगर दुर्योधन उसकी सेना की बजाये उसे ही अपनी ओर मांग लेता तो!! तो क्या वह द्रोपदी को नंगा करने वालों के पक्ष में युद्ध नहीं करता.**

किसी भी ब्राह्मण–ग्रन्थ में कहीं भी कोई जिक्र नहीं है कि उसने **द्रोपदी की बेइज्जती** करने वाले किसी भी प्राणी को कभी कोई सजा दी हो. न युधिष्ठर को सजा दी जिसने अपनी पत्नि को दांव पर लगाया और न ही कौरवों को सजा दी जिन्होंने उसे भरे दरबार में नंगा कर दिया. निश्चित रूप में आज के लीडरों ने कृष्ण सें बहुत कुछ सीखा है. कम सें कम स्त्री की बेइज्जती होने पर उसके सामने घड़ियाली आंसू बहाना और बलात्कारियों के साथ यारी रखना तो सीखा ही है. अगर उसके मन में नारी के लिए सम्मान होता तो वह अपनी उन रखैलों को भी बचाने जरूर आता जिन्हे लेकर अर्जुन द्वारका सें हस्तिनापुर आ रहा था. इन्हे रास्ते में लुटेरों ने लूट लिया. महान धर्नुधर कहा जाने वाला अर्जुन लुट पिट कर खाली हाथ लौट आया.

सरिता मुक्ता के संपादक ने बिलकुल सही लिखा है कि कृष्ण बेहद महत्वाकांक्षी था. वह प्रमुख व्यक्ति बनना चाहता था. द्रोपदी प्रकरण के रूप में उसकी चिरकाल की अभिलाषा फलीभूत हुई. इस घटना को लेकर उसने दोनों पक्षों में फूट पक्की करने का अवसर मिल गया. उसकी महत्वाकांक्षा का जो परिणाम हुआ, अगर महाभारत सच्ची है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि मथुरा वृंदावन के तमाम पुरुष मारे गए और उनकी माँ बहनों बेटियों को भील संथाल व अन्य जंगली लोग हांक ले गये. कुछ ऐसा ही स्त्री रक्षक था कृष्ण.

जामवन्त सें कृतघ्नता : ब्राह्मण–ग्रन्थों के अनुसार कृष्ण राम का अवतार था अथवा पिछले जन्म में वह राम था. सभी जानते हैं कि राम को लंका ले जाने के लिए वानरों ने समुद्र पर पुल बनवाया था. उस पुल को बनाने का श्रेय जापवन्त को जाता है. अगर जामवन्त समुद्र पर वह पुल न बनाता तो राम का लंका में जाना लगभग असंभव ही था. जामवन्त के कारण ही राम सीता को पुनः मिल पाया.

जैसे कि कथा है राम का अंत सरयु नदी में डूब मरने सें हुआ और अगले जन्म में वह कृष्ण बन कर पैदा हुआ. जामवन्त अभी जिन्दा था. उसके पास स्यमंतक मणि थी. कृष्ण को यह तो याद रहा कि राम होते हुए उसने गोपियों सें वादा किया था कि अगले जन्म में वह उन की वासना पूर्ति करेगा परन्तु यह जामवन्त का एहसान भूल गया कि उसने उसे सीता दिलवाई थी. अगर जामवन्त पुल न बनाता तो वह आज भी समुद्र किनारे खड़ा सीता सीता चिल्ला रहा होता. खैर जैसे आर्य होते थे, पिछले जन्म का राम और इस जन्म का कृष्ण भी काम निकलते ही लोगों के एहसान भूल गया. कृष्ण ने मणि के लिए जामवन्त पर धावा बोल दिया. मणि तो हथियाई ही, उसकी बेटी भी लेता आया. उपकार का अच्छा बदला दिया कृतघ्न ने.

कर्ण को घिनौनी ऑफर : ब्राह्मणों ने अधिकतर अवतारों की रचना विष्णु के नाम पर की है. विष्णु पहला आदमी था जिसने दुश्मन को समाप्त करने के लिये स्त्री को प्रयोग करने का रास्ता सिखाया था. वृन्दा माँ अथवा तुलसी सें बलात्कार करके उसने महाराज जालन्धर का कत्ल किया तो मोहिनी बन कर असुरों सें दगा किया. कृष्ण सचमुच उस नीच का अवतार था. वह जानता था कि महाभारत की लड़ाई में केवल कर्ण ही उसके रास्ते का रोड़ा बन सकता है. अतः वह कर्ण के पास गया और उसने कर्ण को जो ऑफर दी उसे सुन कर आज के जमाने के दल्लों को **उसकी दल्लागिरी** सें सीख लेनी चाहिए. कृष्ण बोला कि अगर कर्ण पांडवों के साथ मिल जाये तो जैसे दूसरे पांडव द्रोपदी को भोगते हैं वह भी द्रोपदी को भोग सकता है. उसका भी द्रोपदी पर अधिकार होगा बल्कि सबसें बड़ा कुन्ती–पुत्र होने के नाते उसे द्रोपदी को भोगने का सबसें पहला अधिकार होगा. ( )

यह तो शुक्र है कि कर्ण बचपन सें ही किसी दलित परिवार में पला बढ़ा था. अतः उसमें मानवता के संस्कार मौजूद थे. अगर वह भी कहीं आर्य कृष्ण जैसा ही होता तो? तो आज महाभारत की कथा कुछ और ही होती. वैसे कृष्ण ने तो ब्राह्मणिक भगवानों वाला काम ही किया था. अगर वह अपनी सगी बहन को शादीशुदा मर्द के हाथों अगवा करवा सकता था तो मूंह बोली बहन को किसी और को ऑफर करने में उसे क्या संकोच हो सकता था. ऐसे प्राणियों पर लानत है!

5.6.7 महाभारत युद्ध

इस युद्ध में कृष्ण ने जो जालसाजियां की उन को पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे कि वे किसी भ्रष्ट राजनीतिज्ञ या अंडरवर्ल्ड के किसी डॉन के कारनामे हों. निश्चित रूप सें आज के **भाई लोगों** ने कृष्ण की जालसाजियों सें प्रेरणा अवश्य ली होगी.

महाभारत का औचित्य : महाभारत की कथा सभी जानते हैं कि कौरव और पाँडव दो जुआरी परिवार थे. वे इस हद तक गिरे हुए लोग थे कि जूए में अपनी बहन बेटियों तक को दांव पर लगा देते थे. एक बार जूए में पाँडव अपना घर बार एवं सारी सम्पत्ति तक हार गये. यहां तक कि शर्त में जीत कर लाई गई कृष्ण की बहन द्रौपदी तक को दाव पर लगा दिया और उसे भी हार गए. कौरवों ने द्रौपदी तो लौटा दी मगर सम्पत्ति न लौटाई. अंत में उसी सम्पत्ति को लेकर झगड़ा हो गया. कुरूक्षेत्र के मैदान में सेनाएं आमने सामने आ खड़ी हुई. अर्जुन में थोड़ी बहुत इनसानियत बाकी थी. वह बोला इस सम्पत्ति के लिए अपने गुरू, दादा, भाई भतीजों को नहीं मारूंगा. लेकिन कृष्ण ने अपनी नीचता और चालाकी का ऐसा खेल खेला और ऐसा भयंकर युद्ध करवाया कि भारतवर्ष वीरों सें खाली करके रख दिया. अर्जुन ने तो जूए की सम्पत्ति के लिए युद्ध करने सें मना कर दिया था. लेकिन कृष्ण ने उसे ऐसी पट्टी पढाई कि उनका समूल नाश करवा दिया. युद्ध के बाद कृष्ण अर्जुन जैसों की बहन बेटियों और उन गोपियों को जो कृष्ण के आगे पीछे डोलती थीं, उन्हें भील व अन्य जंगली लोग भेड़ बकरियों की तरह हांक ले गये.

ऐसा मात्र और मात्र कृष्ण की जालसाजियों की वजह सें हुआ. अगर कृष्ण इमानदारी और समझदारी सें काम लेता तो महाभारत का रूका रूकाया युद्ध निश्चित रूप सें टाला जा सकता था. लेकिन कृष्ण को क्या अंतर पड़ना था गोपियां कोई उसकी ब्याहताएं तो थी नहीं और न ही वे गोपियां कोई सति सावित्री थीं. कृष्ण ने भोगी या किसी और ने किसी को क्या फर्क पड़ा वेश्याओं के लिए सब मर्द एक समान.

5.6.5.1 : कर्ण की हत्या : पूरे महाभारत में कर्ण एक अलग ही पात्र है. **अवैध माँ बाप की जायज सन्तान**. दुर्योधन के नमक का हक अदा करने की खातिर उसने अपने माँ जाए भाईओं के विरूद्ध हथियार उठाने पड़े. पाँडवों द्वारा बार बार अपमानित करने पर भी यह उसकी महानता ही थी कि उसने अपनी अवैध माँ कुन्ती को यह वचन दिया कि वह युद्ध में अर्जुन को नहीं मारेगा. लेकिन कृष्ण इतना नीच निकला कि उसने एक छोटे भाई अर्जुन के हाथों अपने निहत्थे बड़े भाई कर्ण की हत्या करवा दी. अकेला अर्जुन कभी ऐसा महापाप न करता. मात्र कृष्ण के उकसाने पर अर्जुन ने ऐसा घोर पाप किया. और ऐसे कायर पापी के नाम पर भारत की सत्ता पर विराजमान ब्राह्मणवादी सरकार खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार देती है.

5.6.5.2 : द्रोण को मारा: महाभारत के निकृष्टतम पात्रों में से एक द्रोण भी है. द्रोण न केवल जन्म के आधार पर हरामी था बल्कि अपने कामों सें भी पूरा हरामी था. एक वेश्या के गर्भ सें जन्मा था वह, पता नहीं किस का बीज था वह. भारत के श्रेष्ठतम धर्नुधारी महात्मा एकलव्य का अँगूठा काटने वाला धूर्त द्रोण ही था. युद्ध में वह मारा नहीं जा रहा था. अतः कृष्ण ने अपनी चालाकी दिखाई. कौरव मानते थे कि युद्धिश्ठर झूठ नहीं बोलता. कृष्ण उससें बोला कि वह बोले कि उसका पुत्र अश्वथामा मारा गया. युद्धिश्ठर ने कृष्ण के साथ सांठगांठ करके झूठ बोल दिया. द्रोण पुत्र मरने के गम में हथियार छोड़ कर बैठ गया और तब ब्राह्मणों के भगवान कहे जाने वाले कृष्ण ने अर्जुन के हाथों उसके निहत्थे गुरू को मरवा दिया. पुत्र–मृत्यु में गमगीन बैठे बुर्जुग को इस तरह मरवाने की उदाहरण दुनिया में और कहीं नहीं मिलती.

खैर इस तरह एक बड़े हरामी ने एक छोटे हरामी के हाथों एक निकृष्टतम हरामी मरवा दिया. शुक्र है धरती का बोझ कुछ तो कम हुआ.

5.6.5.3 भीष्म का हनन : कहते हैं कि भीष्म ने प्रण किया था कि वह हिजड़ों पर तीर नहीं चलाएगा. कृष्ण ने अर्जुन को हिजड़े की ओट में खड़ा कर दिया. भीष्म ने हथियार रख दिए. और कृष्ण के कहने पर अर्जुन ने हिजड़े की ओट लेकर अपने निहत्थे दादा को मार गिराया. इस तरह जहां पिछले जन्म में उसने राम के रूप में बाली की छिप कर हत्या की थी इस बार ऐसा काम अपने चमचे के हाथों करवा दी. अपने निहत्थे दादा को मारने वाला ऐसा ही महान तीर अंदाज था अर्जुन. और उसके नाम पर ब्राह्मणिक सरकार सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को पुरस्कार देती हैं.

5.6.5.4 क्रान्तिकारी दुर्योधन : भारत के आदि क्रांतिकारियों में सें एक दुर्योधन था जिस ने ब्राह्मणों और ब्राह्मणवाद के विरूद्ध आवाज उठाई थी. उसने कभी यज्ञ में बलि नहीं दी, कभी ब्राह्मणों को दक्षिणा नहीं दी, कभी भी ब्राह्मणों द्वारा स्थापित वर्ण व्यवस्था जाति पाति को नहीं माना. ऐसे वीर को नीच कृष्ण ने भीम के हाथों मरवा दिया. नैतिकता का नियम था कि कोई भी वीर कमर सें नीचे गदा का वार नहीं करेगा. दुर्योधन ने समझा कि भीम वीर है, अतः उसकी कमर के नीचे वार नहीं करेगा. लेकिन उसे ध्यान नहीं रहा कि भीम के साथ धूर्त कृष्ण भी है. कृष्ण ने इशारा किया और भीम ने गदा का वार उसकी जांघ पर किया. दुर्योधन शहीद हो गया. इस तरह दो भेड़ियों ने मिल कर एक सिंह मार दिया.

तब महाभारत के **रचनाकार** ने दुर्योधन के मुख सें सत्य कहलवाया था,'' हे कृष्ण, तू अत्यंत निर्लज्ज है. भीम को मेरी जांघ पर प्रहार करने की प्रेरणा देकर तूने पाप सें मेरी हत्या करवाई है, तूने ही कपटपूर्ण आचरण करके भीष्म, द्रोण कर्ण आदि को मरवाया है. धर्म के लिए लड़ने वाले कौरवों सें पांडव कभी न जीत सकते थे. तूने ही अपनी कुटिल चालों सें उन्हें विजयी बनवाया है. मैने जीवन भर असहायों को दान दिया, उत्तम ढंग सें

प्रजा पालन किया. धर्म सें युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हो मैं स्वर्ग में सुख भोगूंगा परन्तु **तू पाप पथ का पथिक निसंदेह नरक की यातनाएं झेलेगा. इस यथार्थ वाणी पर देवताओं और गंधर्वों ने फूल बरसाए.**

5.6.5.7 आम जनता का हनन : कृष्ण ने मात्र नायकों को ही नहीं मरवाया बल्कि उसने आम जनता को भी मरवाया. उसके कहने पर ही भीम की नाजायज औलाद घटोत्कच ने रात को सोये पड़े सैनिकों को मार दिया. दो हरामी मिल कर और कर भी क्या सकते थे.

5.6.5.8 सारथि के वेश में जनरल : कहने को तो कृष्ण सारथि बना हुआ था मगर पांडवों की तरफ सें पूरे युद्ध का संचालन उसी ने किया था. उसने सेनापति वाला सारा काम किया. सारथि का वेश तो इसलिए धारण किए हुआ था ताकि कौरव उसे मार न दें. अतः कौरवों ने उस पर एक बार भी वार नहीं किया. लेकिन उसने न केवल अर्जुन के हाथों निहत्थे कौरवों की हत्या करवाई बल्कि स्वयं भीष्म को मारने दौड़ पड़ा. अतः जिन्दगी का कोई पल कोई काम ऐसा नहीं था जहां कृष्ण ने कपट, छल धोखा न किया हो.

5.6.6 गो–हत्या में भागीदार कृष्ण :
हर जगह यह प्रचार किया जाता है कि कृष्ण गाय–प्रेमी था, गो पालक था. उसके नाम पर परे भारत में गौशालाऐं चलाई जाती हैं. परन्तु मौका पड़ने पर वह भी गो हत्या में कम भागीदार नहीं रहा. रूक्मणि की शादी में उसके भाई ने **एक लाख गाएं**, दो लाख हिरण, चार चार लाख खरगोश और कछुए ,दस लाख बकरे तथा 16 लाख भेड़ें पकाने का प्रबन्ध किया. निश्चित रूप सें यह संख्याएं शेखी मारने के लिए बढा चढा कर लिखी गई हैं. फिर भी उसकी शादी में 100 गाएं, 200 हिरण तथा 400 खरगोश भेड बकरे तो काटे गए ही होंगे. (ब्र.वै.पु. प्रकृति खंड 61)

4.6 स्त्री उधालक : कृष्ण के लिए औरत मात्र भोगने की वस्तु थी. उसने न केवल राधा, कुब्जा और अन्य गोपियों को भोगा बल्कि रूक्मणि जिसे कि उसकी ब्याहता पत्नि करार दिया जाता है, को भी वह जबरन उठा कर लाया था. जब वह रूक्मणि को अगवा करके ला रहा था तो लोगों ने उस का विरोध किया. युद्ध हुआ जिसमें अनेकों लोग मारे गए. (हरि. 59) अतः कृष्ण द्वारा रूक्मणि का हरण दिखावा मात्र न था. यह उतना ही सत्य और घृणित था जितना सत्य और घृणित महात्मा रावण द्वारा सीता का हरण था. अंतर मात्र इतना था कि महात्मा रावण ने अपनी बहन के अपमान का बदला लेने के लिए हरण किया था, कृष्ण ने मात्र भोग के लिए सुन्दरता की मूरत रूक्मणि का हरण किया था. अगर उसने घर बसाने के लिए रूक्मणि का हरण किया होता तो वह अपनी मामी राधा सें अनैतिक सम्बंध न बनाता. उसे रूक्मणि सुन्दर दिखी उसे उठा लाया, जब राधा दिख गई तो रूक्मणि को लात मार दी और राधा के संग हो लिया. इसी प्रकार उसने अपनी भूआ की दो बेटियों मित्रविन्दा और भद्रा सें यौन सम्बंध बनाए. (धर्म और समाज 178)

मौत : जरस नामक योद्धा ने मार गिराया. धरती पर सें एक अनाचारी कम हुआ.

अध्याय 6

यज्ञ

यज्ञ के मूल उद्देश्य

जैसा कि यज्ञ शब्द के शाब्दिक अर्थ तथा उसके इतिहास सें प्रमाणित होता है कि मूल रूप में सामूहिक रूप में मिलजुल कर बच्चे पैदा करने की कार्यवाही को यज्ञ कहा जाता था. ऋग्वेद में आर्यों द्वारा अन्य समाज के लोगों के साथ युध करने के किस्सों की भरमार है. महाभारत की कहानी में चाहे पांच आदमियों ने करोड़ों प्राणियों को मार दिया हो मगर वास्तव में जब युध होता है तो आमने सामने दोनों तरफ के लोग मारे जाते हैं. आर्यों द्वारा किए गए युधों में भी उनके युवक बहुतात में मारे जाते थे. अतः उन्हें युध करने के लिए आदमियों की जरूरत तो रहती ही थी. इस लिए वे यज्ञ के रूप में एकत्रित होकर सामूहिक तौर पर बच्चे पैदा करते थे.

समूह में स्त्री भोग करना हर किसी के बस की बात नहीं होती. अतः इस शर्म या झिझक को दूर करने के लिए वे सोमरस नामक शराब पीते थे. फिर नशे में मस्त होकर बच्चे पैदा करने का यज्ञ करते थे. किसी सामारोह में शामिल होने के लिए माँस आज भी एक प्रेरणा या लोभ बना हुआ है. वे लोग जो घर पर कभी अण्डा भी नहीं खाते शादी विवाह की पार्टियों में इन चीजों का अनन्द लेते हैं. लड़के लड़कियों द्वारा की जाने वाली जो हरकतें शादी विवाह के समारोह में सही मानी जाती है वही हरकत बाजार में की जाए तो शायद किसी को अच्छी नहीं लगेंगी.

यही हाल पुराने समय में यज्ञ का होता था. वहां लोग इसी उद्देश्य सें शामिल होते थे कि दारू मीट खाएंगे तथा स्त्रियों सें ऐश करेंगे. राजवाड़े महोदय के अनुसार आर्या पूर्वजों की नकल उनके वंशज हूबहू करते थे. आज के समय में भी शादी के समय बोले जाने वाले संस्कृत के मन्त्रों में अश्लीलता की झलक मिलती है.

इस प्रकार यज्ञों के तीन उद्देश्य होते थे.

1. **बच्चे पैदा करना यानि स्त्री भोग करना.**
2. **शराब पीना तथा**
3. **यज्ञ की आग में माँस भून कर खाना.**

यज्ञों के इतिहास सें स्पष्ट जाहिर होता है कि यज्ञ का मूल उद्देश्य सामूहिक प्रयत्न द्वारा बच्चे पैदा करना होता था. आर्य समाज के सभी वर्ण के स्त्री पुरुष एक ही जगह इक्कठे होकर बिना भेदभाव के सन्तान पैदा करते थे. इसीलिए यह कहावत बनी कि बच्चे सब के सांझे होते हैं. राजवाड़े महोदय के अनुसार आर्य पूर्वजों की नकल उनके वंशज यज्ञ में हू ब हू करते थे.

समय के साथ इन नकल किए जाने वाले यज्ञों पर देवों और फिर ब्राह्मण जाति का अधिकार हो गया. सुरा सुन्दरी और माँस वैसे तो शुरू सें ही यज्ञ का हिस्सा थे मगर बाद में इन्हें धार्मिक अनिवार्यता का रूप दे दिया गया. इस प्रकार ब्राह्मणिक यज्ञों के माध्यम सें ब्राह्मणों का सुरा, सुन्दरी और माँस पर लगभग पूर्ण अधिकार हो गया. ब्राह्मण ऋषिओं का मानना था कि सोम नामक सुरा पीने सें वीर्य बनता है तथा मांस खाने सें शरीर बनता है. उनका यह भी विश्वास था कि स्त्री भोग सें परे सें आदमी की मर्दानगी समाप्त हो जाती है.

यज्ञों में ब्राह्मणों को तीनों चीजें मिल जाती थीं. धर्म के नाम पर ऐसा नंगा नाच दुनिया में कहीं और नहीं हुआ. अगर कहीं हुआ भी तो जल्द ही समाप्त हो गया. ब्राह्मणवाद की तरह सदियों तक ऐसा अनाचार कोई नहीं कर पाया.

आज के समय में यज्ञ कोई अधिक महत्वपूर्ण कार्य नहीं रह गया है लेकिन कभी ऐसा समय भी था कि यज्ञ करना लगभग अनिवार्य होता था. विशेषकर राजा को तो यज्ञ करने ही पड़ते थे. पुष्यमित्र सें लेकर शिवाजी तक कोई ब्राह्मणिक राजा ऐसा नहीं हुआ जिसे अपनी हैसीयत मनवाने के लिए यज्ञ न करने पड़े हों!

आज कोई हिन्दू सोच भी नहीं सकता कि वह यज्ञ में किसी गाय की बलि चढ़ा दे और उसे भून कर खा जाए. आर्यों में ब्राह्मण कभी नरमेध, गोमेध व अश्वमेध यज्ञ किया करते थे और वे यज्ञ में इन सब प्राणियों को भून कर खा जाते थे. लेकिन समय समय पर ब्राह्मणों ने गुलगंडियां खाईं. जैन महावीर, भगवन बुद्ध के अहिंसा के आंदोलनों के चलते उन्होंने यज्ञ का स्वरुप ही बदल लिया. वे यज्ञ का साईज दिनों दिन छोटा करते गए. 2000 गाएं प्रतिदिन काटने वाले यज्ञ आज सिमट कर ड्राईंगरूम में समा गए हैं. वेद काल में जब बड़े बड़े यज्ञ किये जाते थे इन्द्र उनका सर्वोच्च भगवान होता था. लेकिन जैसे जैसे यज्ञों का आकार छोटा होता गया इन्द्र का आकार भी घटता गया. आज स्थिति यह है कि इन्द्र को कोई जानता भी नहीं.

6.1 यज्ञ शब्दावली

यज्ञ के वास्तविक अथवा मूल स्वरुप को जानने के लिए यज्ञ सें जुड़े कुछ शब्दों का अर्थ जानना आवश्यक है.

1. **यज्ञ** : यज्ञ शब्द यज् + नड्. सें बना है. यज् क्रियावाचक है और नड्. भाववाचक. यज् का अर्थ है प्राप्ति के लिए उपक्रम करना, प्रयास करना, पैदा करना. नड्. इसे बहुवाचक बनाता है. अर्थात यज्ञ का अर्थ हुआ बहुत सारे लोगों द्वारा मिल कर एकसाथ किया गया उपक्रम, प्रयास अथवा उत्पति.

राजवाड़े के अनुसार आर्य यज्ञ में यज् का अर्थ है संतान पैदा करना और नड्. इसे बहुवाचक बनाता है. अतः यज्ञ का अर्थ हुआ बहुत सारे लोगों द्वारा एकसाथ मिल कर संतान पैदा करने के लिए किया गया उपक्रम अथवा प्रयास. उनके अनुसार संतान प्राप्ति के लिए **एक जगह इक्कठे होकर संतान पैदा करने के उपक्रम अथवा प्रयास को यज्ञ कहा जाता था.**

पुराने समय में आर्यों के पूर्वज आग जला कर उस के चारों ओर इक्कठा होते थे. वहीं बैठ कर अपने सुख दुःख बांटते थे. वे लोग अन्य कबीलों सें लड़ाई झगड़ा करते ही रहते थे. इन युद्धों में अनेकों लोग मारे जाते थे. अतः दुश्मनों सें युद्ध करने के लिए उन्हें अपनी संख्या बढ़ाने की आवश्यकता सदैव बनी रहती थी. इसलिए वे लोग आग के चारों ओर एकत्रित हो जाते थे और मिलजुल कर समूह में सोम नामक शराब पीते थे. आग में पशुओं का माँस भून कर खाते थे. वहीं फिर नशे में मस्त हो सामूहिक मैथुन करते थे. **इसी को यज्ञ कहते थे**. समय के साथ ब्राह्मण ऋत्विकों ने इसे सनातन धर्म का नाम देकर धार्मिक रिवाज बना दिया. इस प्रकार यज्ञ

उनके लिए सुरा, सुन्दरी तथा सम्पत्ति प्राप्त करने का पक्का साधन बन गए. सदियों तक उनका यह धन्धा बेरोकटोक चलता रहा.

2. **ऋत्विक** : यज्ञ संचसलन करने और कराने वाले ब्राह्मण को ऋत्विक कहा जाता है. ब्राह्मणिक, सनातन, अथवा आर्य यज्ञ में ऋत्विकों की संख्या कम सें कम 16 होती थी. वे 16 ऋत्विक इस प्रकार सें थे :

2.1 **अध्वर्यु** : यह सारे यज्ञ का एकछत्र मुखिया होता था. सारे अनुष्ठान उसी के कहे अनुसार किए जाते थे. यज्ञ में मारे गए पशु उसी के निर्देशानुसार काटे और बांटे जाते थे. अश्वमेध यज्ञ में "घोड़े" का अभिनय वही करता था. उदाहरणतः राम के जन्म के लिए किए गए अश्वमेध यज्ञ में ऋश्यश्रृंग अध्वर्यु बना था.

2.2 **ब्रह्मा** : यज्ञ के किसी एक भाग या एक काम के मुखिया को ब्रह्मा कहा जाता था. एक यज्ञ में एक सें अधिक ब्रह्मा ऋत्विक हो सकते थे. कोई लकड़ी का प्रबंध करने वाला, कोई दारू का प्रबंध करने वाला, कोई मांस का प्रबंध करने वाला तो कोई लड़कियों का प्रबंध करने वाला. एक बड़ा यज्ञ साल भर चलता था. अतः उसके हर काम के लिए एक अलग आदमी की जरूरत तो पड़ती ही थी. `कभी कभी छोटे मोटे यज्ञ में एक ब्रह्मा ही पूरे यज्ञ का प्रबंध देख लेता था. राम के जन्म के लिए किए गए अश्वमेध यज्ञ में उसका कुलगुरू वशिष्ठ अकेला ही ब्रह्मा बना था.

2.3 **उद्‌गाता** : वह ऋत्विक होता था जो श्लोकों को गाकर बोलता था. एक यज्ञ में कई उद्‌गाता होते थे जो एक सुर में श्लोक गाने के अंदाज में बोलते थे. इसे **उद्‌गीथ** भी कहा जाता था.

2.4 **होतृ या होता** : यह वह ऋत्विक होता था जो यज्ञ में मारे गए पशुओं का माँस और अन्य चढावे का हिस्सा देवों के घरों तक ढोकर ले जाता था. बड़े यज्ञों में सात होतृ ऋत्विक होने का उल्लेख ऋग्वेद में कई जगह आया है. (ऋग्वेद 10.63.7,10.61.1) **अग्नि और उसके भाई ऋग्वेद काल में होता का काम करते थे**.

ऋग्वेद (मंडल10 सूक्त 51एवं 52) में एक कथा है कि अग्नि और उसका भाई होता का कार्य करता था. देवों के घरों तक यज्ञ में मारे गए पशुओं का माँस, सोम और अन्य चढावे का हिस्सा ढोते ढोते थक कर उसके तीन भाई मर गए. तब उसने यह ढुलाई करने सें मना कर दिया और डर कर जंगलों, तालाबों में छिप गया. देवों का माल–पानी बंद हो गया. तब उसे देव ढूंढने निकले. अंततः यम ने उसका छिपने वाला स्थान देख लिया और वरुण ने उसे पकड़ लिया. अग्नि बोला इतने से हिस्से के लिए इतना भारी बोझा नहीं उठाऊंगा. जब **3339 देवों** ने उसकी मिन्नतें की तथा माँस और अन्य चढावे में उसका हिस्सा बढाया तथा उसे सुरक्षा भी प्रदान की गई. तब वह दुबारा काम करने के लिए राजी हुआ.

अतः उसे होता की बजाए खोता (गधा) कहना अधिक सही होगा. हो सकता है खोता शब्द यहीं सें बना या निकला हो. यज्ञ का माल ढोने वाला ''होता'' तथा अन्य माल ढोने वाला "खोता"

2.5 **प्रस्तोता** : इसे प्रशास्ता भी कहा गया है. इस का काम वैसा ही होता था जैसे किसी गाने में संगीत निर्देशक का होता है. इसका काम मन्त्र गाने वाले ऋष्सियों को सुर लय सम्बंधी निर्देश देना होता था.

2.6 **मैत्रय** : जैसे फिल्मों में एक्सटरा कलाकार होते हैं वैसे ही यज्ञ में मैत्रय ऋत्विक होते थे. बड़े यज्ञों में चढ़ावे को संभालना या उस काम में सहायक होना इसका काम होता था.

2.7 **वरुण** : उसका काम भी लगभग मैत्रय जैसा होता था. मित्र और वरुण दो देव जोड़े में रहते थे. उसी प्रकार यह दोनों प्रकार के ऋत्विक भी जोड़े में पाए जाते थे. यज्ञों में वरुण की मान्यता कुछ ज्यादा थी. सो हो सकता है इन दोनों ऋत्विकों को दोनों देवों के अलग अलग काम सौंपे जाते हों.

2.8 **प्रतिष्ठाता** : जैसा कि नाम सें ही स्पष्ट है इस ऋत्विक का काम यज्ञ मण्डप, वेदी बनाना आदि होता था. आधुनिक भाषा में इसे सैट डिजाइनर कहा जा सकता है.

2.9 **प्रतिहारी** : इस ऋत्विक का सीधा सा काम यज्ञ में पशु काटना होता था. कबीर साहेब ने जो साखी कही है : पण्डे निपुण कसाई साधो! वह इन्हीं ऋत्विकों के लिए कही गई है. पशु को यज्ञ की आग में काट कर भूनने सें पहले नशा खिला कर शिथिल करना, उसे बांधना काटना इन्हीं प्रतिहारियों का काम होता था.

2.10 **पोतृ** : यज्ञ में ब्रह्मा नामक पद वाले ऋत्विक का सहायक होता था. वह यज्ञ का सहायक–प्रबंधक अथवा सहायक–ब्रह्मा होता था.

2.11 **अच्छावाक** : यज्ञ में होतृ ऋत्विक के सहायक के रूप में काम करता था अर्थात सहायक–होतृ होता था. देवों के लिए ले जाने वाले माल की लोडिंग अनलोडिंग (लदाई उतराई) का काम इसी का होता होगा.

2.12 **नेष्टृ** : संस्कृत भाषा में नेष्टृ का अर्थ है मिट्टी का ढेला. अतः इस ऋषि का काम यज्ञ कुण्ड के लिए मिट्टी जुटाना, सालों चलने वाले यज्ञ के कुण्ड का रख रखाव करना, उसे रखना आदि हो सकता है.

2.13 **अग्निधर** : यज्ञ वेदी की आग को लगातार जलाए रखना इस ऋत्विक की जिम्मेवारी होती थी.

2.14 **ग्रवन** : माल चढ़ावे को ढक कर रखने वाला ऋत्विक.

2.15 **उन्नेत्री** : उठाने वाला या जगाने वाला ऋत्विक.

2.16 **ब्रह्मण्य** : ब्रह्मा सें सम्बंधित अन्य काम करने वाला ऋत्विक.

इस प्रकार सें आर्यों के यज्ञों में यह **सोलह ऋत्विक** काम करते थे.

3. हवि : यानि आहूति. यज्ञ की आग में कोई भी पदार्थ अथवा बलि किए गए पशु के अंग डालने की क्रिया हवि कहलाती है. जब नरमेध यज्ञ होता था तो उसमें आदमी के अंग भी काट कर हवि किए जाते थे. अश्वमेध यज्ञ में घोड़ा तो गोमेध में गाय के 16 टुकड़े करके भूना जाता था.

4. हव्य : वह कोई भी पदार्थ जैसे घी, अन्न अथवा जीव जो यज्ञ की आग में डाला या भूना जाता है, हव्य कहलाता है. नरमेध में आदमी हव्य होता था तो गोमेध में गाय और अश्वमेध में घोड़ा हव्य होता था.

5. हव्यशेष, हुतशेष और हव्यवाहन : ब्राह्मण जब यज्ञ करते थे तो हव्य कुछ भाग ही आग में झोंकते थे और इस प्रकार यज्ञ में मारे गए पशुओं तथा चढाए गए अन्य प्रकार के अन्न यानि हव्य लगभग पूरा बच जाता था, उसे **हव्यशेष** कहा जाता था. ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञ में बलि किए गए पशु का बंटवारा जिस प्रकार सें किया जाता था, उसे पढ़ कर लगता है कि पशु की अंतड़ियां ही यज्ञ की आग में हवि की जाती थीं. बाकी सारे पशु को ऋत्विक ही चट कर जाते थे. उस हव्यशेष में सें देवों का हिस्सा उन तक उठा कर ले जाने वाले को **हव्यवाहन** कहा जाता है. ऋग्वेद काल में अग्नि और उसके भाई हव्यवाहन का काम करते थे.

कुछ ब्राह्मणिक लोग हव्यशेष का अर्थ करते हैं : होम करने के बाद बचा हुआ प्रसाद या अन्न आदि वस्तुएं. वे प्रचार करते हैं कि यज्ञ में काटा पीटी नहीं होती थी मगर दयानंद हुतशेष शब्द का प्रयोग करता है जिसका सीधा अर्थ है : बलि देकर बचा हुआ हिस्सा. और बच्चा भी जानता है कि बलि मात्र जीवित प्राणी की दी जाती है. अन्न की "बलि" नहीं दी जाती.

6. यजमान : यज्ञ का आयोजन करने वाला अथवा यज्ञ करवाने वाला आदमी यजमान कहलाता था. आजकल पुरोहित के पास जाने वाले हर आदमी को यजमान कह दिया जाता है. यज्ञ के दौरान उसे ब्रह्मचार्य का पालन करना होता था. जिस मालिक की धूनी होती थी उसकी स्त्रियां आये हुए मेहमानों के साथ रममाण होती थी और स्वयं यजमान ब्रह्मचार्य में रहते थे. (राज.137)

7. अयोनिज : योनि का प्राचीन अर्थ है घर. अतः घर सें बाहर जन्मे बच्चे अयोनिज कहलाते थे. विशेष रूप सें वे बच्चे जो यज्ञों में पैदा होते थे. यज्ञ में ऋत्विकों का काम प्रजा अर्थात बच्चे पैदा करना होता था. ऐसे पैदा हुए बच्चे अयोनिज बच्चे कहलाते थे. (राज.पृ. 51) द्रौपदी, द्रुपद आदि इसकी उदाहरण हैं. अक्सर ऐसे बच्चों को यूं ही छोड़ दिया जाता था. सीता, शकुन्तला, कृप, कृपी आदि इसकी उदाहरण हैं.

8. वामदेव्य व्रत : ऋत्विक यह ''व्रत'' यज्ञ भूमि पर ही करते थे अर्थात जो स्त्री संभोग की इच्छा करती थी (बच्चे के लिए या अपनी काम पिपासा शांत करने के लिए) ऋत्विक लोग वहीं यज्ञ भूमि/वेदी पर ही उससें संभोग करते थे. इसे यज्ञ में किया जाने वाला वामदेव्य व्रत कहा जाता था. ऐसे पैदा हुए बच्चे अयोनिज बच्चे कहलाते थे. राजवाड़े (पृ. 80) सीता, राम और भाई इसके उदाहरण हैं.

9. यज्ञोपवीत : इसका शाब्दिक अर्थ है यज्ञ का वस्त्र अर्थात वह वस्त्र जो यज्ञ के समय तन पर धारण किया जाता था. आपसतंब सूत्र, गोपथ गृह्य सूत्र, आदि में भी दो तीन लड़ वाले या दो तीन अंगुल चौड़े वस्त्र की पट्टी डालने का विधान है. (स.मु.1.25)

ऐसे धागे या दो तीन अंगुल चौड़ी कपड़े की पट्टी सें तन "ढक" कर, सोम नामक शराब पीकर मस्ताए हुए और यज्ञाग्नि में भूने मॉस को खाकर यह सांडनुमा ऋषि यज्ञ में आई स्त्रियों के साथ क्या गुल खिलाते होंगे, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है.

और ऐसे में बेचारी स्त्रियों का क्या हाल होता होगा जब आर्य समाज का संस्थापक दयानन्द वेदों को ईश्वरीय घोषित कर यह आदेश सुनाता है कि जिस स्त्री के 10 पुत्र पैदा नहीं हुए उसे मोक्ष नहीं मिलता. अगर 10 पुत्र होने सें पहले उसका पति मर जाए तो भी उसे ब्राह्मणों सें 10 पुत्र पैदा करने आवश्यक हैं.

10. समिध : हवन कुंड में डाली हुई लकड़ी अथवा अन्य ईन्धन आदि

11. मेध : वह पशु अथवा प्राणी जिसकी बलि यज्ञ में दी जाती है. जैसे अश्वमेध अर्थात वह अश्व या घोड़ा जिसकी बलि यज्ञ में दी जाती है. गोमेध अर्थात वह गाय जिसकी यज्ञ में बलि दी जाती है. नरमेध अर्थात वह आदमी जिसकी बलि दी जाती है.

12. प्रोक्षण : यज्ञ वेदी पर पशु अथवा मानव की बलि देने यानि काटने सें पहले उसे नहला धुला कर शुद्ध किया जाता था. उसे नशीले पदार्थ खिलाए जाते थे ताकि वह भाग न सके. इस प्रक्रिया को प्रोक्षण कहते हैं. अनुशासन पर्व (115) के अनुसार प्रोक्षण किये गए पशु के माँस सें देवता और पितर प्रसन्न हो जाते हैं.

13. यज्ञहनः, यज्ञअरि : यज्ञ को नष्ट करने वाला, यज्ञ का दुश्मन. यह विशेषण शिव के लिए प्रयोग किया जाता है. शिव की कथाओं आदि सें जाहिर होता है कि किसी समय शिव ब्राह्मण–धर्म का भाग न होता था लेकिन समय के साथ ब्राह्मणों ने शिव का ब्राह्मणिकरण कर दिया. उसके साथ इतनी घिनौनी कथाएं जोड़ दीं कि आज उसमें और शेष ब्राह्मण देवों में कोई अन्तर नहीं रह गया है.

14. पुरोडाश : जो हव्य चावल को पीस कर तथा बलि दिए जाने वाले पशु या आदमी के **कपाल** में रख कर यज्ञ अग्नि में डाला जाता था, उसे **पुरोडाश** भी कहा जाता है.

15. चरू : देवों और पितरों को दी जाने वाली आहुति. जहां तक चरू का प्रश्न है कौशिक सूत्र 3.5 (राज. 61) के अनुसार चरू तैयार करने के लिए चावलों को वीर्य मिला कर उबाला जाता है.

6.2 यज्ञ यानि खूनखराबा

ब्राह्मणग्रन्थ पढ़ कर एक सच्चाई सामने आती है कि बाबा साहिब ने सत्य कहा था कि अगर हिन्दू अपने धर्मग्रन्थ पढ़ लें तो वे स्वयं उनके आग लगा देंगे. यज्ञों के बारे में ब्राह्मण ग्रन्थों में जो कुछ बयान किया गया है उसे पढ़ कर सचमुच उन्हें आग लगा देने को मन करता है. यज्ञ के बारे में रोंगटे खड़े कर देने वाली एक सच्चाई यह है कि **जितना खून ब्राह्मणों ने यज्ञों में बहाया है, सात समुद्रों का पानी भी उससें कम है.**

ब्राह्मणों द्वारा "यज्ञ" के लिए बहाये गए खून को चार वर्गों में बांटा जा सकता है.

1. **यज्ञ करने के अधिकार को प्राप्त करने के लिए बहाया गया खून!**
2. **यज्ञ बलि में हिस्सा प्राप्त करने के लिए बहाया गया खून!!**
3. **यज्ञ करने में बहाया गया खून !**
4. **यज्ञ विरोधियों का का बहाया गया खून!**

1. यज्ञ करने के लिए खूनखराबा : प्राचीन काल में आर्यों के पास धर्म के नाम पर केवल यज्ञ होता था. यज्ञ सें देवों और उनके पुरोहितों को तीन चीजें प्राप्त होती थीं : **सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति!** (wine, wealth and women) इसलिए प्राचीन काल सें ही यज्ञ करने के अधिकार को लेकर ब्राह्मणों और क्षत्रियों में झगड़ा हुआ. पहले तीन ही वर्ण होते थे : ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. वैश्य वर्ग को अपने काम धन्धे सें ही फुर्सत नहीं होती थी. क्षत्रिय और ब्राह्मणों में यज्ञ करने के अधिकार की खातिर खूनी संघर्ष हुआ जिसमें अंततः क्षत्रिय हार गए और उनको चौथा वर्ण शूद्र बना दिया गया. इस संघर्ष में **ब्राह्मणों ने क्षत्रियों का इतना खून बहाया** कि पढ़ कर दिल दहल जाता है. हत्यारे ब्राह्मण परशु ने बच्चे बूढ़े जवान क्षत्रिय तो मारे ही, उसने तो यहां तक मारकाट की कि क्षत्राणियों के गर्भ में पल रहे बच्चे तक निकाल कर काट डाले!! ऐसा भयंकर खूनखराबा दुनिया के किसी अन्य धर्मग्रन्थ में नहीं मिलता!

2. यज्ञ बलि में हिस्सा प्राप्त करने के लिए खूनखराबा : यज्ञ बलि में हिस्सा पाने के लिए आम ब्राह्मण ही नहीं उनके देव भी कुत्तों की तरह लड़ते थे. सभी इस कथा सें परिचित हैं कि शिव को उसके ससुर ने यज्ञ में न बुलाया था और न ही उसे यज्ञ बलि में हिस्सा दिया था. अतः उसने यह सिद्ध करने के लिए कि "यज्ञ" पर देवों का एकाधिकार है उसने अपने आदमी भेज कर ब्रह्मा के बेटे तथा अपने ससुर दक्ष का यज्ञ तहस नहस कर दिया तथा यज्ञकर्ताओं को वहीं यज्ञ स्थल पर ही मार दिया था. यहां तक कि इसी बात को लेकर उसकी प्रथम पत्नी सती को भी आत्महत्या करनी पड़ी थी. ब्राह्मणग्रन्थों में ऐसे किस्सों की भरमार है जब ब्राह्मणों और देवों ने हिस्सा बांटने के लिए आपस में ही खूनखराबा किया.

3. यज्ञ में कत्लेआम : ऋग्वेद में वर्णन है कि देवों के राजा इन्द्र के लिए यज्ञ में बीस बैलों की बलि दे दी जाती थी यानि इन्द्र के लिए बीस बैल काट कर यज्ञ की आग में भून लिए जाते थे. किसी भी युग में इन्द्र का पद खाली नहीं रहा. अतः हर युग में हर दिन उसके लिए यज्ञों में बैल काट कर भूने गए. अन्य देव और ब्राह्मण जो मारकाट करते थे उसका अनुमान इस बात सें लगाया जा सकता है कि अकेला एक राजा रंतिदेव दो हजार

गायें रोजाना यज्ञ में काट कर ब्राह्मणों को खिला देता था. अयोध्या जैसे टुच्चे सें गांव के राजा दसरथ ने भी 310 पशु यज्ञ में काट कर भून दिए थे.

गाय बैल हिरण आदि जानवर ही नहीं ब्राह्मण तो यज्ञ में आदमी तक मार कर खा जाते थे. यज्ञ में जो भी हवि यानि बलि दी जाती थी उसका बचा हुआ हिस्सा खाना अति पुण्य का काम माना जाता था. अतः यज्ञ करने वाले ब्राह्मण, यजमान और मेहमान छक कर यज्ञ में हर प्रकार का मांस खाते थे. देव यानि ब्राह्मणों के देवताओं को यज्ञों में माँस खाना, शराब पीना और स्त्री भोग बेहद प्रिय था. सही कहा जाए तो उन्हें यज्ञ में यह तीनों चीजें देना अनिवार्य था. **कबीर साहेब** के जमाने तक यज्ञ में पशु काट कर खाना आम बात थी. इसीलिए **उन्होंने पण्डों को निपुण कसाई** बताया था.

4. यज्ञ विरोधियों का कत्लेआम : ब्राह्मण और देव यज्ञ का हिस्सा पाने के लिए तो कुत्तों की तरह ही लड़े मगर यज्ञ विरोधियों का कत्लेआम करने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी. एक समय कुछ चरित्रवान व्यक्तियों ने ब्राह्मणों और देवों के इन कुकर्मों के विरुद्ध आवाज उठाई. मगर उनकी आवाज इतनी बेरहमी सें कुचली गई कि सदियों तक कोई ब्राह्मणों के अनाचार के विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्म्त ही नहीं कर पाया. नतीजा यह रहा कि यज्ञों में मारकाट अनवरत जारी रही.

अनाचारी ब्राह्मणिक यज्ञों के विरुद्ध एक मात्र सशक्त आवाज भगवन बुद्ध की बुलंद हुई थी. उनके बाद उनके ही शिष्य महात्मा रावण ने ब्राह्मणों द्वारा यज्ञों में किए जा रहे कत्लेआम को बन्द करवाया मगर अंत में वे भी ब्राह्मणों की घिनौनी चाल के शिकार हुए और मारे गए. सारे के सारे ब्राह्मणग्रन्थ उन रक्षकों और असुरों के खून सें लथपथ हैं जिन्होंने यज्ञों में किए जारे अनाचार के विरुद्ध आवाज उठाई थी.

महात्मा रावण ब्राह्मणों की भेद अर्थात फूट डालो और राज करो की घिनौनी नीति के शिकार हुए. विभीषण को राजगद्दी का लालच गद्दारी करवाई गई. महात्मा रावण का एक मात्र कसूर यही था कि उन्होंने यज्ञ में सुरा, सुन्दरी और बलि पर प्रतिबन्ध लगाया था. 16 ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ करने की जगह एक ही पुरोहित सें "होम" कराने का विधान बनाया था. इससें ब्राह्मणों और देवों को सुरा, सुन्दरी तथा सम्पत्ति मिलना बन्द हो गयी. अतः देवों और ब्राह्मणों ने ठण्डे दिमाग सें महात्मा रावण की हत्या की साजिश रची और उसे पूरा भी किया.

इस प्रकार सें ब्राह्मणों ने देवों के साथ मिल कर यज्ञों अर्थात सुरा, सुन्दरी तथा सम्पत्ति पर एकाधिकार जमा लिया. **इस सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए यज्ञों में तथा यज्ञों की खातिर इतना खून बहाया गया है कि यज्ञ शब्द सें ही घिन्न होने लगती है.**

6.3 यज्ञ में स्त्री भोग अनिवार्य

देव आर्यों के अगुवा होते थे. इन का लक्ष्य खाना, पीना और ऐश करना होता था. अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए स्थानीय निवासियों की गाय बैल धन दौलत लूट लेना इनका नित्य का काम था. लड़ाई झगड़ों में लोग मरते भी थे. आर्यों का अन्य स्थानीय लोगों सें लड़ाई होती रहती थी. ऋग्वेद ऐसी लड़ाईयों के ब्योरे सें भरा पड़ा है आर्य स्थानीय निवासियों की तुलना में गिनती में कम ही थे. वैसे भी किसी भी समाज में चोर, लुटेरे, डाकू बहुसंख्या में होते ही नहीं.

अतः आर्यों को युद्ध के लिए युवकों की आवश्यकता होती थी. इसलिए अपनी संख्या बढाने के लिए प्रजापतियों ने यज्ञों की पद्धति अपनाई. (राज.134) पण्डों को परस्त्री गमन का इससें अच्छा अवसर और कहां मिलना था. अतः उन्होंने समय के साथ इस व्यभिचार को धर्म का रंग दे दिया. अस्तु.

राजवाड़े के अनुसार प्राचीन ब्राह्मणिक आर्यों के तीन ही काम थे खूब शारीरिक काम करना, खूब खाना पीना और बच्चे पैदा करना. वे लोग आग के आसपास इक्कठा होते थे. खूब दारू पीते थे, आग में भून कर माँस खाते थे, अश्लील बातें करते थे. नशे में धुत हो, माँ बहन बेटी आदि का रिश्ता भूल कर वहीं सब के सामने संभोगरत होते थे. आगे चल कर ब्राह्मणों ने इसे धार्मिक अनिवार्यता के तौर पर ''यज्ञ'' के रूप में प्रचलित कर दिया. चारों वेद ऐसे ही अश्लील मन्त्रों (ऋचाओं) सें भरे पड़े हैं. जिन्हें आवश्यकता अनुसार इस पुस्तक में उद्धृत किया गया है.

राजवाडे के अनुसार ऋषि पूर्वज (1) आग के आसपास जमा होते थे. (2) गुप्त अंगों के बारे में बातें करते थे. (3) और वहीं गर्भादान भी सम्पन्न करते थे. इन तीनों क्रियाओं को मिला कर उसके लिए वे यज्ञ शब्द का प्रयोग करते थे. उनके वंशज भी यज्ञ प्रक्रिया में आग के चारों ओर इक्ठे होकर, अश्लील बातें करने और संभोग करने की नकल अश्वमेध यज्ञ में हूबहू करते थे. (राज. 132.133)

बच्चे पैदा करने या अपनी मर्दानगी बनाए रखने के लिए यज्ञ में स्त्री समागम करने के अनेकों मन्त्र और नियम ब्राह्मणिक ग्रन्थों में लिखे गए हैं. उदाहरणतः

1. ब्रह्मचार्य सें मैथुन शक्ति कम हो जाती है. इसलिए यज्ञ वेदी पर ब्रह्मचारी और वेश्या का संभोग देख कर मैथुन शक्ति पुनः विकसित हो जाती है. (यर्जुवेद तैतरीय संहिता कांड 7, प्रपाठक 5 अनुवाक 10)
2. योनि में डाला वीर्य जैसे वहां जमा हो जाता है वैसे ही यज्ञ में डाली हवि भी वहां रेतरूप (वीर्य) बन कर जमा हो जाती है क्योंकि यज्ञ अग्नि जनन इन्द्री है. शाम को यज्ञ करने सें वीर्य संचित होता है और सुबह यज्ञ करने का अर्थ है शाम को संचित वीर्य सें गर्भ धारण करना. (वही 1—5—9)
3. बर्हिशा वै प्रजापतिः प्रजा असृजत (वही 1—7—4) अर्थात प्रजापति (बच्चे पैदा करने वाले) ने यज्ञ की अग्नि के चारों ओर बिछी घास पर समागम कर बच्चे पैदा किए. ब्राह्मणिक ऋषि यज्ञ अग्नि के पास बैठ कर सोम रूपी शराब पीते, गाय बैल अथवा अन्य पशुओं का माँस यज्ञ अग्नि में भून कर खाते, अश्लील बातें करते, फिर नशे में मस्त हो कर यज्ञ वेदी के चारों ओर बिछी घास पर वहां आई स्त्रियों सें यथेच्छ संभोग करते थे. (राज. 122) वहां यज्ञ की अग्नि के चारों ओर पुरुषों के पीछे लगने वाली स्त्रियां और स्त्रियों के पीछे लगने वाले पुरुष इक्कठे होते थे और इच्छा अनुसार समागम करते थे.(राज.137)
4. प्रजननम् ज्योति अर्थात यज्ञ अग्नि के समान पुरुष लिंग सें बच्चे अर्थात प्रजा पैदा होती है. (वही 7—1—1)
5. यज्ञ अग्नि स्त्री गर्भ है. (वही 5—6—10)
6. बृहदारण्यक उपनिषद इस विषय पर सभी शंकाएं दूर कर यह स्पष्ट कर देता है कि आर्यों ब्राह्मणों के लिए यज्ञ और स्त्री मैथुन एक ही काम के दो नाम थे. इसका अध्याय 6, ब्राह्मण 2, श्लोक 13 इस प्रकार सें है. ''स्त्री ही अग्नि है. उपस्थ ही उसकी समिध् है, लोम धूम हैं, योनि ज्वाला है, जो भीतर को करता है वह अंगार है, आन्दलेश विस्फुलिंग हैं. इस अग्नि में देवगण वीर्य होमते हैं, उस आहुति सें पुरुष उत्पन्न होता है. ''

इस श्लोक का उपरोक्त अर्थ ब्राह्मणों के प्रथम शंकराचार्य ने अपने शंकरभाष्य में किया हैं. अर्थात यज्ञ की अग्नि और स्त्री सें समागम एक समान है. योनि का मध्य भाग यज्ञ वेदी में रखी लकड़ी जैसा है, वहां उगे हुए बाल यज्ञ वेदी के धूआं जैसा है, योनि यज्ञ की वेदी जैसी है, योनि में लिंग का प्रवेश यज्ञ वेदी के अंगार जैसा हैं और स्त्री संभोग सें जो आन्नद मिलता है वह यज्ञ वेदी की चिन्गारियां जैसा हैं. इस यज्ञ अग्नि समान स्त्री योनि में देव अपना वीर्य डालते हैं जिससें बच्चे पैदा होते हैं.

प्रथम शंकर आगे (अध्याय 6, ब्राह्मण 4, श्लोक 3) लिखता है ''स्त्री की उपस्थ इन्द्री वेदी है, वहां के रोएं कुशा हैं, योनि का मध्य भाग प्रज्वलित अग्नि है, योनि के पार्श्वभाग में जो दो कठोर माँसखण्ड हैं उनको मुश्क कहते हैं, वे दोनों मुश्क ही अधिशवण नाम सें प्रसिद्ध चर्ममय सोमफलक हैं. **वाजपेय यज्ञ** करने सें यजमान को जो जितना पुण्यलोक प्राप्त होता है, उतना ही उसे भी प्राप्त होता है जो इस प्रकार जान कर मैथुन का आचरण करता है. वह इन स्त्रियों के पुण्य को अवरुद्ध कर लेता है और जो इसे नहीं जानता है, वह यदि मैथुन करता है तो स्त्रियां उसके पुण्य को अवरुद्ध कर लेती हैं.''

उपरोक्त श्लोक का सरल हिन्दोस्तानी भाषा में अर्थ इस प्रकार सें हैः

यज्ञ—वेदी स्त्री की बीच वाली इन्द्री है, वेदी की सूखी घास वहां पर उगे बाल हैं, जलती हुई आग योनि का बीच वाला भाग है, इसके दोनों ओर जो सख्त माँस है वे दोनों उस मूसल समान हैं जिससें यज्ञ करते समय पी जाने वाली सोम नामक शराब बनाई जाती हैं. जो व्यक्ति यह जान कर स्त्री (अपनी अथवा पराई) सें संभोग करता है उसे वाजपेय यज्ञ करने जितना पुण्य मिलता है. अगर संभोगकर्ता व्यक्ति को इस बात का ज्ञान है तो वह जिस भी स्त्री सें संसर्ग करेगा उसके पुण्य ले लेगा, अगर कोई व्यक्ति यह नहीं जानता कि संभोग करने सें उसे वाजपेय यज्ञ करने जितना पुण्य मिलता है तो वह जिस भी स्त्री सें संसर्ग करेगा वह स्त्री उसके पुण्य ले लेगी.

पुण्य कमाने का इस सें आसान रास्ता कोई दूसरा धर्म बता ही नहीं सकता. बस स्त्रियों सें संसर्ग करे जाओ और उनके पुण्य लिए जाओ. यही कारण है कि ब्राह्मणों का धर्म व्यभिचार का ही दूसरा नाम है. तभी तो ब्रह्मा सें लेकर कृष्ण तक उनके सभी भगवान इसी व्यभिचार रूपी पुण्यकारी कर्म में लिप्त रहे हैं.

यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि उपरोक्त श्लोक में पुरुष का जिक्र एकवचन में है और स्त्री का बहुवचन में. इसका अर्थ यह हुआ कि यज्ञ में एक पुरुष कई कई स्त्रियों सें पुण्य—कर्म कर सकता था. तभी तो राम के जन्म के लिए किए गए यज्ञ में ऋषिश्रृंग ने भी कई वाजपेय यज्ञों का पुण्य लिया था.

ब्राह्मणों का प्रथम शंकराचार्य आगे लिखता है (अध्याय 6, ब्राह्मण 4, श्लोक 7) कि अगर कोई स्त्री किसी मर्द को समागम न करने दे तो वह उसे मारपीट का भय दिखाए और उसके साथ बलात्कार करे. अगर कोई स्त्री तब भी राजी न हो तो उसे यह मंत्र बोल कर श्राप दे '' मैं अपनी यश स्वरूप इन्द्रिय अर्थात लिंग सें तेरे यश को छीने लेता हूँ''. इस प्रकार श्राप देने सें वह स्त्री निश्चित रूप सें बांझ या दुर्भगा हो ही जाती है.

ब्राह्मणवाद के प्रणेता कुछ लोग यह दलील दे सकते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों में उपरोक्त कर्म पति पत्नि के लिए निर्धारित किए गए हैं क्योंकि संतान पैदा करना आवश्यक है और उसके लिए मैथुन कर्म आवश्यक है. परन्तु उनकी यह दलील निराधार है क्योंकि ब्राह्मणवाद का वास्तविक चेहरा दिखाने वाले इसी उपनिषद के अगले दो श्लोक (अध्याय 6, ब्राह्मण 4, श्लोक 9 तथा 10) इस बात की पुष्टि करते हैं कि **ब्राह्मणिक लोग मात्र मजे लेने के लिए भी स्त्री समागम करते थे तथा समागम कर्ताओं के लिए पति पत्नि होना भी आवश्यक न था**.

श्लोक 9 की व्याख्या करते हुए ब्राह्मणों का प्रथम शंकर कहता है कि जो पुरुष किसी भी स्त्री के बारे में ऐसी इच्छा करे कि वह उसके प्रति कामासक्त हो, उसे मन सें चाहे तो उसकी योनि में अपना लिंग डाल कर उसके मुख सें अपना मुख मिलाए और उसकी योनि का स्पर्श करते हुए इस 'अंगादंगादित्यादि'. मन्त्र का जप करे. अगर वह आसानी सें न माने तो श्लोक 7 के अनुसार बलात्कार करे, श्राप देने का सहारा ले.

आगे श्लोक 10 में कहा गया है कि जो पुरुष किसी स्त्री के बारे में ऐसी इच्छा करे कि वह उसके संभोग सें गर्भधारण न करे तो उसकी योनि में अपना लिंग डाल कर उसके मुख सें अपना मुख मिलाए और उसकी योनि में अपना लिंग अंदर बाहर करते हुए इस मन्त्र का जाप करे 'इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आददे' अर्थात ''मैं तेरे रेतस् को ग्रहण करता हूँ.'' तो वह गर्भधारण नहीं करेगी.

यही उपनिषदों का गूढ़ ज्ञान है जिसे ब्राह्मण सदियों सें आम लोगों सें छिपा कर रखे हुए थे. इस प्रकार उपनिषद मात्र स्वाद के लिए यज्ञ में किए गए संभोग को भी वाजपेय यज्ञ समान मैथुन कर्म मानता है. श्लोक 9 में वर्णित ''स्पर्श'' का कार्य और श्लोक 10 में वर्णित बिना गर्भ के प्रयोजन हेतु मैथुन को एक साथ मिला कर देखें तो, क्या उपनिषदों में वर्णित मैथुन की क्रिया मात्र वासना अथवा स्वाद की वस्तु नहीं बन जाती जिसे ब्राह्मण–ग्रन्थ पुण्य कर्म बताते हैं.

7. स्त्री–योनि और यज्ञपात्र की समानता सिद्ध करने के लिए महा भारत के आदि पर्व 131 में ब्राह्मण महा-ऋषि भारद्वाज की कथा है कि एक दिन वह गंगा किनारे अग्निहोत्र यज्ञ करने गया. उसने वहां गंगा में स्नान करती हुई वेश्या घृताची को देख लिया. उसका ऋषिपन जाग उठा. उसने यज्ञ के बर्तन 'द्रोण' में अपना वीर्य डाल दिया, जहां सें द्रोण पैदा हो गया. मानने की बात है कि मानव शिशु का जन्म कभी भी बर्तन सें नहीं हो सकता. उपरोक्त श्लोकों में जिस तरह सें यज्ञ वेदी की तुलना स्त्री योनि सें की गई है उससे साफ जाहिर है कि भारद्वाज ने भी वेश्या के यज्ञ–पात्र अर्थात उसकी योनि में अपना वीर्य डाल दिया. बाद में उसने द्रोण को जन्म दिया. वैसे भी वह गंगा किनारे अग्निहोत्र यज्ञ करने ही तो गया था.

8. वीर्य की महिमा गाने में ब्राह्मण ऋषि और उनके धर्म ग्रन्थ थकते नहीं हैं. वे स्त्री समागम में वीर्य को महत्वपूर्ण मानते थे. ब्राह्मण ऋषि यह भी मानते थे कि सोम नामक शराब पीने सें मनुष्य में वीर्य पैदा और संचित करता है. (तैतरीय संहिता कांड 7) (राज.124) इसीलिए ऋग्वेद सें लेकर उपनिष्द तक उनके सभी धर्म ग्रन्थ सोम की महिमा गाने और पीने सें भरे पड़े हैं. और क्योंकि यज्ञों का मूल उद्देश्य ही स्त्री समागम था अतः कोई भी यज्ञ बिना सोम पिए किया ही नहीं जाता था.

9. राजवाड़े के अनुसार प्राचीन समय में ऋषिओं द्वारा किए जाने वाले यज्ञों की नकल उनके प्रगतिशील वंशज भी हूबहू करते थे. स्वयं दयानंद ने माना है कि गोरखपुर के राजा ने अश्वमेध यज्ञ करवाया. यर्जुवेद में दी गई पद्धति के अनुरूप जब पण्डों ने रानी का समागम घोड़े सें करवाया तो रानी मर गई. (स.प्र. पृ. 286 समुल्लास 11)

ऐसा लगता है वे पण्डे यज्ञ में किस देवता को "भेंट" देनी है इस वारे में मनुस्मृति के आदेश सें अन्जान थे. मनुस्मृति (4–124) यह आदेश देती है कि "ऋग्वेद के देवता ''देव'' हैं, यर्जुवेद के देवता ''मनुष्य'' और सामवेद के देवता ''पितर'' हैं. सामवेद अपवित्र है क्योंकि मरा हुआ पितर तो आ नहीं सकता." अतः जिस वेद का यज्ञ करो उसी के "देवता" को भेंट दो. अश्वमेध यज्ञ क्योंकि यर्जुवेद का यज्ञ है इसलिए इस आदेश के अनुसार राजा को चाहिए था कि वह यज्ञ के मुख्य मनुष्य (अध्वर्यु पुरोहित) को अपनी रानी भेंट करता. दयानंद ने भी सही कहा है कि घोड़े सें समागम कराने का तो कहीं प्रावधान ही नहीं है. यह काम तो अध्वर्यु जैसे ऋत्विकों का है. राजा दशरथ ने भी तो इसी आदेश के अनुरूप सफलता पूर्वक अश्वमेध यज्ञ करवाया था.

10. ऋग्वेद (10.40.2) में कहा गया है कि यज्ञ करने वाला (ऋत्विक) वैसे ही बुला रहा है जैसे विधवा अपने दूसरे पति देवर को बुलाती है. दयानंद के अनुसार हर स्त्री के लिए चाहे वह विधवा ही क्यों न हो, ग्यारह पुत्र पैदा करने आवश्यक थे. अतः विधवा को भी बार बार देवर को बुलाना पड़ता था. अतः जिस काम के लिए विधवा देवर को बुलाती है वैसे ही ऋत्विक द्वारा यज्ञ में स्त्रियों को बुलाया जाना सिद्ध करता है कि यज्ञ में स्त्री भोग अनिवार्य था.

11. मनुस्मृति का भी आदेश है कि माँस खाने, शराब पीने तथा मैथुन करने में कोई बुराई नहीं है. (5.56) यह तीनों काम एक साथ यज्ञों में धड़ल्ले सें होते थे. धर्म के नाम पर ऐसा व्यभिचार और कहीं देखने को नहीं मिलता.

6.4 यज्ञ में शराब पीना अनिवार्य

बाबा साहिब के अनुसार आर्य समाज पियक्कड़ों का समाज था. ब्राह्मणग्रन्थ इस बात के सबूत हैं कि उनकी स्त्रियां भी दारू पीती थीं. ब्राह्मणियां तक शराब पीने की आदी थीं. इसी कारण उनके सबसें महत्वपूर्ण धार्मिक काम यानि यज्ञ में दारू की भरमार रहती थी. यज्ञ के दौरान नशा करना अनिवार्य होता था क्योकि बिना नशा किए यज्ञ वाले कुकर्म कोई साधारण आदमी कर ही नहीं सकता था.

आर्य समाज के लोग अनेकों प्रकार की शराब पीते थे. ब्राह्मण ऋषि पुल्तस्य ने अलग अलग चीजों सें बनी बारह प्रकार की शराब का उल्लेख किया है.

	वस्तु का नाम	**शराब का नाम**
1.	पनसा	कटहल
2.	अंगूर	द्राक्षा
3.	खजूर	खरजूरी
4.	ताड़ी	ताड़ी
5.	नारियल	नारिकल
6.	गन्ना (ईख)	इक्षु
7.	माधविका	मदिरा
8.	पीपल	सैरा
9.	बेर	आरिष्ट
10.	शहद	मधुका
11.	शीरा	मैरेय या गौडी
12.	अरक, चावल अन्य अनाज	सुरा, वारुणी या पैश्ती

सांकलिया महोदय के अनुसार वारुणी नामक शराब रोम सें सप्लाई की जाती थी. रोम सें औरतों की दल्लागिरी भी होती थी. ब्राह्मण ऋषि भरद्वाज के अड्डे (आश्रम) पर भरत और उसके लोगों को जो शराब और औरतें सप्लाई की गई वे रोम सें आई थीं. (रामायण : झूठ या सच्च पृ. 57)

सोमरस : यज्ञिक अथवा धार्मिक शराब : ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ में सोमरस नामक शराब पीने की महिमा बहुत गायी गई है. उनका कोई भी यज्ञ सोमरस पिए बिना नहीं हो सकता था. सोमरस की इतनी मान्यता या इज्जत थी कि ऋग्वेद के अनेकों सूक्त अर्थात अध्याय सोम नामक शराब की महिमा गाने के लिए लिखे गए हैं. शराब को धार्मिक रंग देने के लिए सोम नामक एक देवता भी घढ़ा गया. ऋग्वेद काल यानि ब्राह्मणों के सतयुग काल में सोम का तीसरा स्थान था. पहले नम्बर पर इन्द्र तथा दूसरे नम्बर पर वरुण होता था. यह दोनों भी पक्के पियकड़ थे.

सोमरस क्यों : सवाल पैदा होता है कि यज्ञ में सोमरस क्यों पीया जाता था. ब्राह्मणग्रन्थों में इस बात का उत्तर मौजूद है. ब्राह्मण ऋषि बच्चे पैदा करने के लिए यज्ञ करते थे. उनकी धारणा थी कि सोम पीने सें शरीर में वीर्य बनता है जिससें अधिक सें अधिक बच्चे पैदा किए जा सकते हैं. दूसरा उनका मानना था कि सोम पीने सें शरीर में ताकत तथा उत्तेजना आती है.

सोम के बारे में ब्राह्मणगन्थों सें निम्न जानकारी मिलती है :

- **सोमवल्लरी** : वह पौधा जिसे कूट कर निकाले गए रस सें सोमरस नामक नशीला पदार्थ या शराब बनाई जाती थी.
- **सोमाभिषव** : ऋग्वेद में उसें बालों वाली खाल सें छानने का वर्णन भी है. इस क्रिया को सोमाभिषव कहा जाता था.
- **सोमेश्वर** : ब्राह्मणों के नशेड़ी शिव नामक भगवान को सोम–ईश्वर कहा जाता है जिसकी मूर्ति सोमनाथ के मंदिर में लगी हुई थी.
- **सोमग्रह** : जैसे आजकल शराब बोतल में रखी जाती है वैसे ही सोमरस सोमग्रह नामक बर्तन में रखा जाता था.
- **सोमपति** : जैसे राष्ट्रपति देश का सर्वोच्च अधिकारी होता है वैसे ही सबसें अधिक सोमरस पीने या रखने वाला सोमपति कहलाता था. बेशक इन्द्र ही वह व्यक्ति था. ऋग्वेद में बयान है कि इन्द्र उन लोगों सें खुश होता था जो उसके लिए यज्ञ में बीस बैल भून लेते थे तथा उसके कंधों पर

सोमरस की मश्कें लाद देते थे. (मश्क खाल की थैली को कहते हैं. गाय बैल की पूरी खाल को चारों ओर सें सिल कर थैली बना ली जाती थी. एक मश्क में लगभग 50 लीटर सोमरस आ सकता है)

- **सोमपाथिन व सोमपीथिन** : जैसे शराब पीने वाला शराबी होता है वैसे ही सोमरस पीने वाला सोमपीथिन तथा पीने वाली सोमपाथिन कहलाती है.
- **सोमप्रवाक** : सोमयज्ञ में ऋत्विकों को सोमरस पीने के लिए बुलाने वाला कोई व्यक्ति. दारू पीने वालों की भाषा में इसे साकी कहा जा सकता है.
- **सोमिन व सोमिनी** : सोमयज्ञ करने वाला यजमान व उसकी पत्नि.
- **सोमविक्रियन** : सोमरस बेचने वाला आदमी. आजकल ऐसे आदमी को ठेकेदार कहा जाता है.
- **सोमसुत्** : सोमरस निकालने या बनाने वाला आदमी.
- **सोम्य** : भला, मिलनसार आदमी जो सोम की आहुति देता है. दूसरे शब्दों में ब्राह्मण ऋषियों को दारू पिलाने वाला आदमी मिलनसार तथा भला कहा जाता था.

जैसे शराब बनाने की विधि हर कोई नहीं जानता वैसे ही सोमरस बनाने की विधि हर कोई नहीं जानता था. पहले पहल केवल इन्द्र जैसे देव ही सोम पीते थे. बाद में ब्राह्मण ऋषियों को भी हिस्सा मिलने लग गया. आम आदमी सोम पीने को तरसता था. अतः सोमरस बनाने की विधि भी गुप्त ही रखी गई. यहां तक कि ब्राह्मण ग्रन्थों सें भी इसकी विधि छिपा कर रखी गई. इतना जरूर है कि सोम को भांग की तरह कूट कर बनाया जाता था तथा भेड़ या किसी अन्य बालों वाले जानवर की खाल में छाना जाता था.

खैर जैसे भी बनाते हों सोमरस नशीला पदार्थ था जिसे पीकर आर्य ऋषि मस्त हो जाते थे तथा फिर मस्ती में अपना "काम" पूरा करते थे.

6.5 यज्ञ में माँस अनिवार्य

यज्ञ के मुख्य तथा मूल तीन उद्देश्यों में सें एक उद्देश्य माँस भक्षण भी है. ब्राह्मणों भगवान कहे जाने वाले मनु की यह धर्माज्ञा थी कि यज्ञ में माँस खाया जाए. (मनु. 5.37) अतः उनका कोई भी यज्ञ बिना सुरा, सुन्दरी और माँस के होता ही न था. ब्राह्मणों के मुखिया देव प्रजाति के लोग माँस के बिना यज्ञ होने ही नहीं देते थे. एक बार कुछ समझदार ऋषियों ने यज्ञों में अन्धाधुन्ध पशु मारने का विरोध किया मगर देवों के बल के आगे उनकी कुछ नहीं चली और यज्ञों में पशु मारना अनवरत जारी रहा.

इसीलिए आप्टे महोदय ने "**पशु–घात**" का अर्थ "**यज्ञ में** पशु मारना" ही किया है. उन्होंने यज्ञ में बलि देने सें पहले पशु के कान में बोले जाने वाला गायत्री–मन्त्र भी अपने शब्दकोश में दिया है जो इस प्रकार सें हैः

"पशुपाशाय विग्रहे शिरश्छेदाय (विश्वकर्मणे) धीमहि, तन्नो जीव प्रचोदयात्"

यज्ञ में पशु मारने के बारे में ब्राह्मण–धर्म के **मुख्य नियम** इस प्रकार सें हैंः

1. पशु बलि दिए बिना नए अन्न तथा माँस को न खाया जाए. क्यों कि जो बिना बलि दिए नए अन्न और नए पशु माँस को खाता है, यज्ञ अग्नि उस मनुष्य को खा जाती हैं. (मनु. 4.27–28) आज भी लोग होली की लपटों में नए अन्न की बलियां अवश्य सेंक कर खाते हैं. महावीर एवं भगवन बुद्ध की शिक्षाओं के कारण लोगों ने बलि वाले यज्ञ छोड़ दिए वर्ना पहले ब्राह्मण ऐसे माँस भून कर भी खाते थे.
2. चार प्रकार सें माँस खाया जाना चाहिए (मनु. 5.27)

(i) मन्त्रों सें पवित्र किया गया माँस खाया जाना चाहिए. जैसे श्राद्ध के समय मन्त्रों द्वारा पवित्र किया गया माँस खाया जा सकता है. मन्त्रों सें पवित्र किए बिना माँस नहीं खाना चाहिए (मनु. 5.36) इसी नियम के तहत राम ने जटायु का पिण्डदान करते हुए मोटे हिरण के माँस के गोल पिण्ड बना कर श्राद्ध किया. (चाभी 25)

(ii) **ब्राह्मणों की इच्छा हो तब माँस खाया जाना चाहिए.**

(iii) शास्त्रों में दी गई विधि के अनुसार यज्ञ में अर्पित माँस खाया जाना चाहिए.

(iv) प्राणों पर संकट पड़ जाने पर माँस खाया जाना चाहिए.

इसके विपरीत **भगवन बुद्ध ने तीन अवस्थाओं में माँस** खाना जायज करार दिया है :

(i) जब आदमी किसी रोग सें ग्रस्त हो और वैद्य अर्थात डाक्टर ने जान बचाने के लिए माँस खाना आवश्यक करार दिया हो, तब आदमी अपनी जान बचाने के लिए मांस खा सकता है. उदाहरणतः आम तौर पर तपेदिक के रोगी को डाक्टर मांस खाने की सलाह देते हैं. ऐसे में मांस खाना बुरा नहीं है.

(ii) संकट की स्थिति में जब और कुछ खाने को उपलब्ध न हो. उदाहरणतः अगर कोई समुद्र, जंगल अथवा रेगिस्तान में भटक जाए और वहां खाने को फल आदि कुछ न मिलें तो मनुष्य अपने को जिंदा रखने के लिए किसी पशु को मार के उसका माँस खा सकता है.

(iii) ऐसे ही अचानक आए अतिथि को अगर मेजबान के घर खाने में अगर मात्र माँस परोसा जाए तो भी अतिथि को चाहिए कि मेजबान को सब्जी बनाने के लिए तंग करने की बजाए वह माँस खा ले.

बाबा साहिब ने इस बात को बिल्कुल सही शब्दों में बयान किया है. उन्होंने कहा कि ब्राह्मणधर्मी **इच्छा** होने पर मांस खाते थे. बौद्ध **आवश्यकता** होने पर मांस खाते हैं. उनमें **wish** और **need** का अंतर है.

3. ब्राह्मणों को चाहिए कि वे यज्ञ में **उत्तम** पशुओं और पक्षिओं को काट लें. सेवकों के पालन पोषण के लिए भी इन को मार लें. प्राचीन काल में अगस्त्य महा ऋषि ने भी ऐसा ही किया था. (मनु. 5.22) ब्राह्मणों के साधारण ऋषि गाय आदि उत्तम पशुओं को खाते थे लेकिन अगस्त्य तो महा ऋषि था इसलिए उसने कुछ महा कारनामा करना था अतः वह भूख लगने पर वातापि नामक आदमी को ही मार कर खा गया था.

4. ब्राह्मणों को चाहिए कि वे यज्ञ में पशु मार लें क्यों कि पहले भी ब्राह्मणों और क्षत्रियों के संयुक्त यज्ञों में भक्ष्य कहे जाने वाले पशु और पक्षिओं के पुरोडाश (यज्ञ की बलि) बने हैं. (मनु. 5.23) मनु स्मृति के आदेशानुसार एक ओर दांतों वाले पशुओं में सें ऊंट को छोड़ कर शेष सभी पशु यज्ञ में मार कर खाए जा सकते हैं. गाय, बैल आदि एक ओर दांतों वाले उत्तम पशु हैं. अतः इन्हें यज्ञ में मार कर खाया जाता था. मनु स्मृति की पाबंदी के कारण ही ब्राह्मण–ग्रन्थों में ऐसे किसी यज्ञ का उल्लेख नहीं मिलता जिस में ऊंट को मार कर खाया गया हो. जबकि गोमेध तथा अश्वमेध यज्ञों में गायों तथा घोड़ों को मार कर खाने के अनेकों उदाहरण हैं.

5. **यज्ञ में माँस खाना देवविधि है**. इससें भिन्न विधि सें माँस खाना तो राक्षस विधि है.(मनु. 5.31) लेकिन खाने के अधिकारी मनुष्य को भक्ष्य प्राणियों को नित्य खाने सें भी पाप नहीं लगता. क्योंकि परमात्मा ने खाए जाने वाले पशु और उन्हें खाने के अधिकारी मनुष्य भी बनाए हैं. ब्राह्मण क्योंकि अपनी इच्छा सें जब चाहे मांस खाने का अधिकारी था अतः उसे कभी भी मांस खाने सें कोई पाप नहीं लगता था.

6. यज्ञ, श्राद्ध आदि के उदेश्य बिना पशु न मारा जाए. अगर अन्यथा माँस खाने की इच्छा हो तो आटे का पशु बना कर खा ले. (मनु. 5.37) जो कोई बिना यज्ञ, श्राद्ध अथवा देवता आदि के कारण पशुओं को मारता है वह जितने पशु के बाल हैं उतनी बार मारा जाता है. (मनु. 5.38) दूसरे शब्दों में बिना ब्राह्मण के कोई भी पशु मार कर न खाए.

7. भगवान ने स्वयं सारे जीव यज्ञ में मारने के लिए ही बनाए हैं. इसलिए **यज्ञ में पशु मारना हिंसा नहीं बल्कि अहिंसा ही है**. इस चर अचर संसार में जो हिंसा (गाय, घोड़ा आदि पशुओं या आदमी को यज्ञों में मारना) वेदों द्वारा निश्चित की गई है, उसे अहिंसा ही समझना चाहिए क्यों ऐसा धर्म वेद सें पैदा हुआ है. (मनु. 5.44)

इस श्लोक पर सन्त कबीर ने सही टिप्पणी की है:

अजामेध, गोमेध यज्ञ अश्वमेध, नरमेध ! कहहिं कबीर अधर्म को धर्म बतावें वेद !!

8. मनु की आज्ञा है कि केवल इन अवसरों पर पशु मारा जाए **(1)** मधुपर्क के लिए **(2)** यज्ञ में **(3)** श्राद्ध में और **(4)** देव कर्म में. वेद का रहस्य जानने वाला ब्राह्मण इन अवसरों पर पशु मार कर स्वयं तो उत्तम गति प्राप्त करता है मरने वाले पशु को भी उत्तम गति प्रदान करवाता है. (मनु. 5.39–42)

9. अश्विनी कुमारों का यज्ञ बकरे की ताजा चर्बी के साथ करना चाहिए. (यर्जुवेद 21.43) (समु 6.154)

10. तैंतीस देव और उनकी पत्नियां अन्न लेने के लिए आओ लेकिन हमारे गाय और घोड़ों को मत मारना. (ऋग 3.6.9)

11. जो व्यक्ति यज्ञ में घोड़े की बलि देता है अर्थात अश्वमेध यज्ञ करता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं. (मनु. 11.260)

भगवन बुद्ध का कथन है कि पाप मात्र प्रायश्चित सें नष्ट होते हैं. पाप कभी किसी अनुष्ठान सें नष्ट नहीं होते और पाप–पूर्ण अनुष्ठान सें तो पाप बढ़ता ही है कम नहीं होता. इस विषय पर सन्त कबीर ने सटीक शब्द कहे हैं:

जीव हनै, हिंसा करै, प्रगट पाप सिर होय! निगम सुने, पर पाप ते सुरग गया न कोय!!

अर्थात जो आदमी जीवों को मारता है, उन पर जुल्म करता है, पाप उसके सिर चढ़ कर बोलता है. दूसरों के साथ पाप करने वाले वेद की कथा सुनने सें कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता.

जैसे माँस पसु की, तस मास नर की, रूधिर रूधिर एक सारा!
पसु मास भखे सब कोय, नरहिं न भखे सियारा !!

माटी की करे देवी देवा, काट काट जीव देइया !
जो तेरे है सांचे देवी देवा, खेत चरत क्यों न लेइया !!
कहै कबीर जो कुछ किया जिभ्या के स्वारथ, बदला परैगा देइया!!

अर्थात हे ब्राह्मणों, तुम माटी के देवी देवता बना कर उन पर पशु काट काट चढ़ाते हो, अगर तेरे देवी देवता सच्चे हैं तो वे खेत में घूमते हुए पशुओं को क्यों नहीं खा लेते. कबीर साहेब का कहना है कि अपनी जीभ के स्वाद के लिए तुम पशु मार कर खा रहे हो जिसका तुम्हें एक न एक दिन हिसाब देना पड़ेगा!

अंकुर भखे सो मानवा, माँस भखे सो स्वान, जीव को मुरदा करे, सोइ राकस परमान!

अर्थात अनाज खाने वाला मनुष्य है, मांस खाने वाला कुत्ता है. जो जीव को मारता है वही राक्षस है.

यज्ञ में जिन प्राणियों की बलि दी जाती थी उनमें मानव भी शामिल हैं. ब्राह्मण–ग्रन्थों में नर बलि दिए जाने की अनेकों उदाहरण हैं. घोड़े की बलि देने वाले अश्वमेध यज्ञ तो लगभग हर देव व राजा ने किए थे. यज्ञों में हमेशा अन्न सें अधिक माँस को प्रधानता दी जाती थी. कई बार देवताओं और ऋषिओं में वाद विवाद भी हुआ कि यज्ञ में अन्न की आहुति दी जाए या माँस की. देवता यज्ञ में माँस खाने पर अड़ गए. राजा वसु को जज बनाया गया. उसने निर्णय दिया कि यज्ञ में माँस की ही आहुति दी जाए क्योंकि यही सनातन पद्धति है. अश्वमेध के अतिरिक्त गोमेध व नरमेध यज्ञ भी किए जाते थे जिसमें गाय व मनुष्य की बलि दी जाती थी. **नरमेध यज्ञ पर तो ब्रिटिश सरकार ने 1845 में एक्ट संख्या 21 द्वारा प्रतिबंध लगा दिया था. (समु 1–1).**

यज्ञ में चढ़ाई गई सोम नामक शराब और मारे गए पशुओं के माँस में हिस्सा पाने के लिए देवता और ऋषि गिद्धों की टूट पड़ते थे और कुत्तों की तरह लड़ते थे. इसलिए उनके प्रमुख इन्द्र को यह आदेश पारित करना पड़ा कि जो यजमान यज्ञ में मारे गए पशु के माँस और शराब में सें उसे हिस्सा नहीं देंगे उसे वह मार डालेगा. जो हिस्सा देगा उसकी रक्षा करेगा. (ऋग्वेद 10.27.1–3) इस बात पर ऋषिओं ने 15 दिन तक लगातार खूब तेज शराब और 15 बैल काट कर यज्ञ अग्नि में पका कर इन्द्र को भेंट किए. इन्द्र खुश हो गया. अथर्ववेद (18.4.20) में भी आदेश है कि माल पूऐ और माँस मिले चरू (पुलाव) यज्ञ वेदी पर लेकर आओ क्योंकि उस में सें देवों को उनका हिस्सा देना है.

ऐसे यज्ञ धार्मिक अनुष्ठान न होकर मात्र **बूचड़खाने** का स्वरूप होते थे. महात्मा रावण और उनके सैनिक ऐसे ही छिद्रों वाले यज्ञों को नष्ट कर देते थे. अगर उनके रक्षक यज्ञों सें गाय हिरण आदि पशु नहीं बचाते तो आज हमें इन पशुओं के मात्र चित्र ही मिलते!

6.5.1 नरमेध यज्ञ : यानि यज्ञ में आदमी को सेक कर खाना भी धर्म

आर्य और उनके ब्राह्मण ऋषि मात्र पशुओं का माँस खाकर ही संतुष्ट नहीं हो पाते थे. उन्हें नर माँस का भी स्वाद मूँह लग चुका था. अनेक ब्राह्मण-ग्रन्थों में नर बलि की घटनाएं या कथाएं भरी पड़ी हैं. ब्राह्मण ऋषिओं द्वारा भी मानव माँस खाने की घटनाएं भी ब्राह्मण-ग्रन्थों में भरी पड़ी हैं.

ऋग्वेद को ब्राह्मण-धर्म का प्राचीनतम् धर्म-ग्रन्थ माना जाता है. अतः ऋग्वेद में वर्णित नर बलि की घटना को भी नरमेध यज्ञ की प्राचीनतम् घटना माना जा सकता है. इस नर बलि की घटना सें इतना तो स्पष्ट है कि मानव माँस खाना आर्यों का प्राचीनतम् रिवाज है. यह उस समय का रिवाज है जिस समय को ब्राह्मण लोग सत्ययुग कहते हैं. इसका अर्थ यह हुआ कि सत्ययुग में ऋषि नर बलि देते थे और नर माँस खाते भी थे. ऋग्वेद (मण्डल 1 सूक्त 24–30) में वर्णित नर बलि की पहली घटना इस प्रकार सें हैः

6.5.1.1 ऋग्वेद में नरमेध यज्ञ की घटनायें

1. **पुरुषसूक्त यानि नरमेध** : ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में एक रहस्यमय जीव "पुरुष" की बलि चढ़ाए जाने का वर्णन है. उसकी बलि सें तीनों वेद पैदा हुए. वैसे यह समझ सें बाहर की बात है कि आदमी को काटने सें वेद कैसे पैदा हो गये. आदमी को मारने काटने सें तो खून ही बहता है वेद कैसे बह निकले, वेद बनाने वाला जाने.

   ऋग्वेद के मण्डल 10 के श्लोक 90 में प्रथम नर बलि का वर्णन है जो कुछ इस प्रकार सें हैः

उस आदमी के एक हजार सिर, एक हजार आँखें और एक हजार पैर थे. (बड़ा अजीब सा दिखता होगा क्योंकि उसके हर सिर पर केवल एक ही आँख थी.) देवों ने उसे बांध कर बलि देने के लिए घास पर लिटा दिया. फिर ऋषियों देवों और सन्ध्या ने मिल कर उसकी बलि दी. उसके अनेकों टुकड़े किए गए. उसके टुकड़ों सें ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आकाश, हवा और पता नहीं क्या कुछ निकला!!

2. **शुनःशेप की कथा :** राजा हरिशचन्द्र का नाम सभी भारतीय जानते हैं. कहते हैं कि उसने सपने में एक ब्राह्मण को अपना राज पाट सब कुछ दान में दे दिया था. सवेरे उठ कर जब उसने यह बात ब्राह्मण को बताई तो उस ब्राह्मण ने सपने में दान की गई सम्पत्ति सचमुच दान में मांग ली. राजा ने उस ब्राह्मण को सपने में दिए गए दान की रकम पूरी करने के लिए अपनी पत्नि और बेटे को बेच दिया. फिर स्वयं भी बिक गया. उसने क्यों कि एक ब्राह्मण के दान की रकम पूरी करने के लिए अपने बीवी बच्चे तक बेच दिए थे इसलिए ब्राह्मणों ने उसका नाम सत्यवादी रख दिया. वर्ना अपने जीवन में जो काम उसने अंजाम दिए, वे किसी भी जल्लाद सें कम नहीं थे.

कथा है कि राजा हरिशचन्द्र के कोई औलाद न थी. वह भी दशरथ के सूर्यवंशी खानदान सें था. अतः उसने भी बांझ रहने की अपनी वंश परम्परा को जारी रखा. दशरथ ने तो ऋषिओं को बुला कर बेटे प्राप्त किए. राजा हरिश्चन्द्र ने मन्नत मांगी कि अगर उसे पुत्र प्राप्त हो जाए तो वह **उस पुत्र को देवताओं के बलि चढ़ा देगा.अर्थात उस बालक को काट कर देवताओं को खिला देगा.** देवों की कृपा सें उसकी रानी के पुत्र पैदा हो गया. स्वभाविक है कि माँ बाप को पुत्र सें स्नेह होता ही है. उन्हें भी था. उन्होंने अपने पुत्र रोहताश की बलि न दी. देवताओं का मन बालक का नर्म माँस खाने को तड़प रहा था. उन्होंने हरिशचन्द्र को कई संदेश भेजे. चेतावनियां भी दीं. मगर राजा ने अपना वायदा न निभाया. अंततः देवता वरूण ने हरिशचन्द्र को जहर दे दिया जिससें उसे जलोधर रोग हो गया. अब उसे अपनी जान के भी लाले पड़ गए. उसने देवताओं सें वार्ता की. राजा ने अपने बेटे की जगह किसी और बच्चे की बलि देने की पेशकश की. देवताओं को तो नर्म नर्म मानव माँस खाने सें मतलब था. अतः देवता राजी हो गए. (ऐसे होते थे ब्राह्मणों के देवता जिन्हें सुधारने का दायित्व महात्मा रावण ने लिया था)

तब राजा ने रोहताश के समान किसी बालक की तलाश शुरू की. कोई भी माँ-बाप अपने बेटे को यज्ञ में काटने यानि बलि देने के लिए तैयार न हुए. अंततः एक ब्राह्मण कुछ धन के बदले में अपने बेटे को इस धार्मिक कहे जाने वाले कुकृत्य के लिए अपने बेटे को देने के लिए तैयार हो गया. ब्राह्मण का नाम अजीगर्त था और जिस बालक को वह यज्ञ में कटने के लिए देने को तैयार हुआ उस का नाम शुनःशेप था. अजीगर्त के तीन पुत्र थे. सबसें बड़ा बाप को प्यारा था. सबसें छोटा माँ को प्यारा था. अतः ब्राह्मण अजीगर्त अपने मझोले बेटे को बलि के लिए देने को तैयार हो गया. शुनःशेप आम बच्चों की तरह भोला और प्यारा सा था. मगर ब्राह्मण अजीगर्त को अपने बेटे की मासूमियत पर कोई तरस न आया. उसने धन लिया और बेटे के गले में रस्सी बांध कर राजा को सौंप दिया. सत्यवादी कहे जाने वाले राजा हरिशचन्द्र का मन बच्चे का क्रंदन सुन कर बिलकुल भी न पसीजा. वह सत्यवादी उस बालक को पशु के समान घसीटता हुआ यज्ञ वेदी पर ले आया.

फिर उस सत्यवादी राजा ने उस बिलखते हुए बालक को यूप (खूंटे) के साथ रस्से सें बांध दिया ताकि वह बालक भाग न जाए. ब्राह्मण ऋषिओं ने उसका प्रोक्षण किया. बालक शुनःशेप की भोली सूरत और उसका रूदन देख कर जल्लादों ने भी उसे यज्ञ वेदी पर काटने सें मना कर दिया. तब राजा पुनः उस ब्राह्मण अजीगर्त के पास गया और उससें आग्रह किया कि वह यज्ञ वेदी पर अपने बेटे की बलि दे दे यानि उस बच्चे को काटे और उसके छोटे छोटे टुकड़े करके आग में भून दे ताकि देवताओं को उनका हिस्सा पहुंचाया जा सके. ब्राह्मण अजीगर्त ने और ज्यादा धन की मांग की. सत्यवादी ने उसकी शर्त मान ली. वह ब्राह्मण अजीगर्त हाथ में खड़्ग लेकर राजा के साथ हो लिया.

शुनःशेप अपने लालची ब्राह्मण बाप को जानता था. उसने रो रो कर सब सें प्रार्थना की कि उसे बख्श दें. सब ब्राह्मणिक देवताओं को आवाजें लगाईं. लेकिन वे तो सब गिद्धों की तरह मुर्दार खाने को तैयार बैठे थे. बे तो इस ताक में थे कि कब शुनःशेप के टुकड़े टुकड़े करके यज्ञ की अग्नि में पकाया जाए और उन्हें भेंट किया जाए और वे उसके नर्म नर्म गोश्त का आनन्द ले सकें. बालक का क्रंदन सुन कर उधर सें गुजर रहे जैन धर्म के संस्थापक तीर्थंकर ऋशभनाथ वहां आए. उन्होंने ब्राह्मणों और देवताओं के विरोध के बावजूद बालक को आजाद करवा लिया. वह बालक फिर अपने बाप के साथ न गया. वह तीर्थंकर ऋशभनाथ का शिष्य बन गया.

ऋग्वेद के उपरोक्त सूक्त में बालक शुनःशेप का क्रंदन इतने मार्मिक रूप में दिया गया है कि जो कोई उसे आज भी पढ़ता है, उसके आंसू बह निकलते हैं. यह तो जल्लादों सें भी क्रूर ब्राह्मणों और उनके देवताओं का ही पत्थर दिल था जो उस बालक का क्रंदन प्रत्यक्ष देख सुन कर भी नहीं पिघला. कसाई चाहे

रोज कितने ही जीव काटता होगा परन्तु वह भी इतना क्रूर नहीं होता कि धन के लालच में अपने ही बेटे को काट कर बेच दे. ये ब्राह्मण और उनके देवता तो कसाई सें भी गए गुजरे निकले! थू!!

पता नहीं क्यों इतिहास में ब्राह्मणों में सें ही ऐसे आदमी क्यों निकले जो पैसे के लिए कुछ भी करने को तैयार हो गए. अजीगर्त जैसा ब्राह्मण धन के लिए अपने बेटे को ही काटने को तैयार हो गया, गंगू जैसा ब्राह्मण धन के लिए अपने मालिक गुरू गोबिंद सिंह के बेटों को जिन्दा दीवार में चिनवा आया. तो एक अन्य ब्राह्मण ने धन के लिए अपने मालिक राजा दाहिर सें गद्दारी करके देश को गुलामी की भट्ठी में झोंक दिया.

3. **श्राद्ध में नरबलि की कथा :** अन्य कथा जो ऋग्वेद में मिलती है वह सामान्य कथा है. जो यह दर्शाती है कि आर्यों, ब्राह्मणों और देवों के लिए नरमेध कोई अनहोनी या कभी कभार होने वाली घटना न थी. यह उनके लिए नित्य प्रति दिन होने वाली घटना थी. जैसे आज की गृहणी नित्य यह पूछती है कि आज कौन सी सब्जी बनानी है,, कैसे बनानी है, वेदों में नरमेध का उल्लेख लगभग ऐसे ही मिलता है कि आदमी को कैसे पकाना है. उदाहरणतः ऋग्वेद (मण्डल10 सूक्त 16) में ही वर्णित नरमेध जैसी घटना कुछ ऐसा ही आभास देती है. ऋचाक्रम सें इसका विवरण इस प्रकार सें है:

- ऋचा 1 सें 4 तक आग सें प्रार्थना की गई है कि वह व्यक्ति को पूरी तरह न जलाए. उसके चमड़े और माँस को छिन्न भिन्न न करे. आग सें पुनः प्रार्थना की गई है कि वह उस व्यक्ति को अच्छी तरह सें पका दे. फिर अग्नि (होता) सें कहा गया है कि जब उस व्यक्ति का माँस पूरी तरह पक जाए तो उसे पितरों के पास ले जाए.
- ऋचा 5 में आग सें कहा गया है कि मरा हुआ व्यक्ति उसकी आहूति है. आग उसे पितरों तक ले जाए.
- ऋचा 6 में आहूत हुए व्यक्ति सें कहा गया है कि ब्राह्मणों द्वारा पी जाने वाली सोम नामक शराब उसको भी नीरोग बनाए.
- ऋचा 7 में प्रेत यानि मारे हुए व्यक्ति सें कहा गया है कि वह गाय की खाल ओढ़ ले और चर्बी तथा माँस सें ढक जाए ताकि आग उसे जला न सके.
- ऋचा 8 में अग्नि (होता) सें कहा गया है कि वह शराब के बर्तन चमस को ध्यान सें ले जाए ताकि यह छलके नहीं. यह शराब देवताओं के पीने के लिए है क्यों कि शराब उनको प्रिय है.
- ऋचा 9–10 में यज्ञकर्ता द्वारा बताया गया है कि वह तेज आग को दूर हटा रहा है ताकि माँस जल न जाए. वह अग्नि सें प्रार्थना करता है कि वह यम प्रांत के देवों के लिए हव्य (माँस) ले जाए. वहां उसे उसके जैसे अन्य होता भी मिलेंगे. आगे माँस जलाने वाली आग का घर में घुसने का उल्लेख है. अर्थात उस आग सें घर में आग लग गई.
- ऋचा 11 में यज्ञकर्ता कहता है कि मैं यज्ञ सामग्री उस अग्नि (होता) को देकर आता हूँ जो श्राद्ध का सामान देवों तक ले जाता है.
- ऋचा 12 में यज्ञकर्ता द्वारा अग्नि (होता) सें कहा गया है कि वह होम सामग्री अर्थात हव्य (माँस) देवों तक ले जाए ताकि वे उसे खा सकें.

उपरोक्त सारे विवरण सें ऐसा स्पष्ट होता है कि यह सारा कर्मकांड श्राद्ध कर्म के लिए किया गया नरमेध यज्ञ है जिस में एक मनुष्य को मार कर उसके शरीर की बलि दी गयी है. उसके माँस को अच्छी तरह ध्यान सें पकाया जा रहा है कि कहहीं वह जल न जाए. अग्नि, जिसका काम देवों के लिए हव्य ढोना था, उसे यह काम सोंपा गया कि वह पितरों तथा देवों के लिए नर–माँस ले जाए ताकि वे उसे खा सकें. इस अवसर पर देवों और ब्राह्मणों के लिए विशेष रूप सें चसक भर कर शराब का प्रबन्ध किया गया था.

मनु स्मृति में श्राद्ध के समय माँस खाना अनिवार्य करार दिया गया है. ऋग्वेद में वर्णित उपरोक्त क्रियाकर्म भी श्राद्ध के समय नर–माँस खाने के रिवाज को इंगित करता है. यह सभी यह सिद्ध करते हैं कि ब्राह्मण धर्म को मानने वाले व्यक्ति, ब्राह्मण पुरोहित, ऋषि और उनके देवता हर प्रकार के यज्ञ व श्राद्ध में खूब शराब पीते थे और माँस खाते थे. न केवल पशुओं का माँस खाते थे बल्कि मानव माँस खाने सें भी न चूकते थे. बच्चों का माँस उन्हें बहुत अधिक पसन्द था. आज के समय इन ब्राह्मण ऋषिओं मुनियों व उनके देवताओं की कितनी भी महान छवि क्यों न बनाई गई हो, वास्तव में यह सब **गुन्डों, लुटेरों और ऐयाशों का गिरोह** था. इन्होंने पूरे भारतवर्ष को रौंदा है. आज उन्हीं के वंशज शराफत का मुखोटा लगा कर उन्हीं ऐयाश गुन्डे लुटेरों को हम सें पुजवा रहे हैं.

ब्राह्मणों की सबसें पवित्र कही जाने वाली किताब में किसी मासूम बच्चे को यज्ञ में काटने के लिए खंभे सें बांधे जाने का उल्लेख मिलना और एक अन्य व्यक्ति को आग में पकाये जाने का उल्लेख मिलना, यह दर्शाते हैं

कि प्राचीन काल में ब्राह्मण ऋषि और उनके देवता किस प्रकार के लोग होते थे. शराब पीकर वे बच्चों तक को भून कर खा जाते थे.

6.5.1.2 पुराणों में नरमेध

सोमक एवं जन्तु की कथा

महाभारत के वन पर्व में नर बलि की कथा दी गई है. इसे नर बलि की बजाए बाल–बलि कहा जाए तो अधिक सही होगा. कथा है कि एक सोमक नाम का राजा था. उसके एक सौ पत्नियां थीं. लेकिन उन एक सौ पत्नियों में सें उसके यहां केवल एक ही पुत्र जन्मा. उसका नाम जन्तु रखा गया. जन्तु बहुत ही सुन्दर और भोला भाला बालक था. आपस में सौत होते हुए भी सभी रानियां उसे बहुत प्यार करती थीं. उनके प्यार को देख कर कोई बता ही नहीं सकता था कि उसकी जन्मदायी माँ कौन सी है. सौ माताओं का एकेला लाल होने के कारण वह सब का लाडला था. अगर भूले सें भी उसे मामूली सी चोट लग जाती तो घर में कोहराम मच जाता था. एक बार उसे एक चींटी ने काट लिया. किसी भी छोटे बालक को चींटी द्वारा काट लेना कोई अनहोनी अथवा बड़ी बात नहीं होती. लेकिन जन्तु अपनी माताओं का इतना लाडला था कि मात्र चींटी के काटने पर ही सभी माताएं रोने चिल्लाने लग गईं.

ऐसे में सोमक को चिन्ता हुई कि अगर कहीं सचमुच जन्तु को कुछ हो गया तो उसकी माताएं तो बेमौत मर जाएंगी. अतः उसने तय किया कि उसके जन्तु के अतिरिक्त और भी पुत्र होने चाहिए. उसने एक वेदवेता ब्राह्मण ऋषि सें इसका उपाय पूछा तो वह बोला कि पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करना पड़ेगा और उस **यज्ञ में अपने बेटे जन्तु की बलि देनी पड़ेगी.** वैसे तो जन्तु राजा को बेहद प्यारा था. प्रमथतः वह अपने एकमात्र पुत्र को यज्ञ वेदी पर काटने को नहीं माना. लेकिन ब्राह्मण के आश्वासन देने पर सोमक को विश्वास हो गया कि यज्ञ में जन्तु के टुकड़े टुकड़े करके यज्ञ में चढ़ाने सें उस की सभी रानियों को पुत्र जन्मेंगे. अतः वह यज्ञ में जन्तु की बलि देने को तैयार हो गया.

यज्ञ की तैयारियां हो गईं. वह वेदज्ञ ब्राह्मण ऋषि उस मासूम बालक जन्तु को यज्ञ की आग में झोंकने के लिए ले जाने लगा तो सभी रानियां रोने लगीं. उन्होंने उस बालक को घेर लिया और उसे यज्ञ में मारने के लिए ले जाने सें रोकने का प्रयत्न किया. उन सब माताओं के रोने गिड़गड़ाने का उस वेदज्ञ ब्राह्मण ऋषि पर कोई प्रभाव न पड़ा. उसने उन रोती बिलखती माताओं सें उस मासूम बालक को छीन लिया. फिर **उस ब्राह्मण ने बालक के सब अंगों के टुकड़े टुकड़े कर दिए और शास्त्रों में दी गई विधि के अनुसार सब अंगों की यज्ञ में आहूति दी. फिर उस बालक की चर्बी को यज्ञ अग्नि में पकाया. चर्बी की गंध सें शोकपीड़ित माताएं बेहोश हो गईं.** तदन्तर वे सब रानियां गर्भवती हो गईं. राजा ने सभी रानियों को गर्भवती करने के एवज में उस ब्राह्मण ऋषि को एक भव्य आश्रम बनवा दिया जहां उसने सब भोगों का उपभोग किया. महा भारत में कहा गया है कि जो व्यक्ति वहां 6–7 रात गुजार लेता है उसे **मोक्ष मिल जाता है.**

क्या संदेश देती है यह धार्मिक कहे जाने वाली कथा? यह कथा यही संदेश देती हैः

1. कि अगर पुत्र चाहिए तो सौत के पुत्र के अंगों के टुकड़े टुकड करके यज्ञ की आग में में डाल दो.
2. कि अबोध बालक की चर्बी की गंध सें स्त्री गर्भवती हो जाती है. चाहे वह बांझ ही क्यों न हो.
3. कि यज्ञ के दौरान ही स्त्रियां गर्भवती हो जाती हैं, उन्हें अपने पतियों सें सम्पर्क बनाने की भी जरूरत नहीं होती. विचारने की बात है कि स्त्रियों को यज्ञ में कौन गर्भवती करता है!
4. कि नरमेध यज्ञ करना और उसमें मासूम बच्चों की बलि देना वेद सम्मत है. किसी बालक को टुकड़े टुकड़े करके यज्ञ करने की प्रथा वेद सम्मत है क्योंकि कथा के अनुसार यज्ञ कराने वाला ब्राह्मण था, ऋषि था तथा वेदवेता था.
5. कि ऐसे बूचड़ों के ठिकानों को आश्रम कहा जाता था. और जो उन आश्रमों में 6–7 दिन रूक जाए उसके पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे मोक्ष मिल जाता है. ऐसा ब्राह्मण–ग्रन्थों का दावा है.
6. कि ब्राह्मण ऋषि रानियों की भी परवाह नहीं करते थे. एक सौ रानियों के विरोध के बावजूद ब्राह्मण ऋषि ने उनके बेटे के की हत्या करके उसकी चर्बी निकाल कर यज्ञ अग्नि में भून डाली.
7. कि ब्राह्मण ऋषि कसाईयों सें भी ज्यादा निर्दयी होते थे जिन्हें मासूम बालकों के टुकड़े करने में जरा भी संकोच, दर्द न होता था. ब्राह्मण ऋषि न केवल जीवित बालक को काट लेते थे बल्कि उसकी चर्बी निकाल कर उसे आग में भून भी लेते थे. इतना क्रूर कर्म करते हुए उनका ***मन एक बार भी न कांपता था.***

पुराणों में नरमेध के नियम

ब्रह्मावैवर्त पुराण (प्रकृति खण्ड.2 अध्याय 64) में भी नरमेध की पूरी विधि दी गई है. उसके अनुसार नरमेध के लिए ऐसा आदमी चुना जाए जो स्वस्थ हो, कुंआरा हो, व्यभिचारी न हो और जिसका जन्म व्यभिचार सें न हुआ हो. (इस तरह कोई भी ब्राह्मण बलि देने लायक नहीं था.) साल भ्र उसकी सेवा की जाए. फिर अष्टमी और नवमी के बीच वाली रात को उसकी बलि दे दी जाए. बलि करवाने वाले ब्राह्मण को दान दिया जाए.

6.5.1.3 नरभक्षी देवियां

ब्राह्मणों ने पुराणों में नर माँस भक्षण के नए नए तरीके खोजे गए. काली की कल्पना की गई जो मनुष्य का खून पीती है उसका माँस कच्चा ही खा जाती है. वह नंग धड़ंग रहती है. अपने तन पर सूत की एक डोर तक नहीं रखती. अपने गुप्त अंग छिपाने के लिए वह उन लोगों की सिरों और बाजूओं की माला पहनती है जिन्हें मार कर वह खा गई थी. काली के मंदिर में आजकल जो मीट शराब की भेंट चढ़ती है उसे "श्रद्धालुओं" में बांट दी जाती है.

सहज कल्पना की जा सकती है कि जब ब्राह्मणधर्म अपने चरम पर था तो काली को चढ़ाए गई नर बलि के मांस को कौन खाते होंगे! अगर अपने चरम काल में ब्राह्मण तुलसी बीच बाजार खड़ा होकर पशु शूद्र और नारी को मारने पीटने की बात कह सकता था तो अपनी मां को चढाए नर मांस को खाने सें उन्हें कौन रोक सकता था. विशेषकर जब उनके धर्म ग्रन्थ यह आज्ञा देते हैं कि यज्ञ के हव्य को खाना पुण्य है तथा देवी देवताओं पर चढ़ाया प्रसाद खाना पुण्य है.

ब्राह्मण जरूर नर मांस खाते रहे होंगे वर्ना कबीर साहेब यूं ही नहीं कहतेः

> पण्डे निपुण कसाई साधो, पण्डे निपुण कसाई!
> बकरी मार भेड को धावै, मन में दया न आई, साधो पण्डे निपुण कसाई!!

पुराण पढ़ कर दिमाग घूम जाता है कि ऐसी पुस्तकें भी धर्म ग्रन्थ कहलाती हैं. ऐसी अश्लील और वीभत्स किस्से उनमें लिखे गए हैं कि पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं. ऐसे में बाबा साहिब के वचन याद आते हैं कि अगर हिन्दू स्वयं अपने धार्मिक कहे जाने वाले ग्रन्थ पढ़ लें तो वे स्वयं उनें आग लगा देंगे! हमारा तो यह भी कहना है कि उन्हें धार्मिक कह कर प्रचार करने वालों का भी यही हाल होना चाहिए.

ऐसा ही वीभत्स प्रकरण काली पुराण का रुधिर अध्याय है. इसमें चण्डी का आदेश हैः

- सभी अवसरों पर सभी देवों को बलि चढाई जाए.
- पानी, हवा और धारती पर रहने वाले लगभग **सभी प्राणी** खासकर आदमी बलि के लिए उचित है.
- बलिदाता का स्वयं का खून चण्डी और भैंरों के लिए उचित पदार्थ है. **ब्राह्मण की बलि नहीं दी जा सकती.**
- भक्त अशुद्ध माँस न चढाएं क्योंकि वे सिर और खून को अमृत मानते हैं.
- जीव (आदमी पशु पक्षी) काटने के लिए चन्द्रहास (गंडासा या फरसा) सबसें अच्छा हथियार है. छुरे का दूसरा स्थान है कुदाली घटिया हथियार है.
- सारे दिन में दोबार पानी पीने वाली इकरंगी बकरी सर्वोत्तम हव्य (यज्ञ बलि का भाग) और कव्य (श्राद्ध) है.
- नीली गर्दन, लाल सिर, काली टांगों और सफेद पंखों वाला पक्षी चण्डी और विष्णु का प्रिय भोजन है.
- **ब्राह्मण के खून की बलि न दी जाए.**
- शेर और बाघ की बलि न दी जाए.

कौन से देवी देवता को क्या पसंद है

चण्डिका : आदमी समेत लगभग सारे जीवित प्राणियों का खून और उनका खून उसे पसंद है. जीवित प्राणी का अर्थ है कि आदमी या पशु वहीं मंदिर में काटा जाना चाहिए. उसका ताजा मांस और बहता हुआ खून ही ब्राह्मणों की देवी को चाहिए. बासी मांस और खून उसें माफिक नहीं आते!

कामाख्या और भैरव : आदमी का माँस खाने सें एक हजार साल प्रसन्न रहते हैं. कामाख्या को मानव **सिरी** बहुत पसंद है. आदम खोर दरिंदी !!

शिव : बलि में वृषभ यानि सांड पसंद हैं. इसीलिए हर समय सांड उसके लिंग के पास बैठा रहता है. पता नहीं "भगवान" का कब खाने को मूड बन जाए. मौके पर न मिला तो तांडव शुरू हो जाएगा. पता नहीं कितने ही मारे जाएंगे. आश्वलायन गृह्यसूत्र में शिव को सांड की बलि कैसे दी जाए, इसका विस्तार सें वर्णन किया गया है.

विष्णु : **ब्राह्मण और शेर** को छोड़ कर बाकी सब को काट कर देवी और विष्णु के चढ़ाया जाना चाहिए. इसीलिए विष्णु को मेधज कहा जाता है जिसका अर्थ है जिसके लिए पशु काटा गया.

बलि देने का ढंग

आदमी को पूर्व दिशा की ओर काटा जाए. सिर दक्षिण दिशा में चढ़ाया जाए. खून पश्चिम की ओर डाला जाए. यानि कुल मिला कर आदमी को न केवल दरिंदगी सें काटा जाए बल्कि उसके टुकड़े और खून सब तरफ फैला दिया जाए. ऐसा वीभत्स काम तो कसाई भी करने सें कतराते होंगे. मनोवैज्ञानिक अगर इन पुराणों को पढ़ें तो निश्चित रूप में इनके लेखकों को साइकोपैथ पागल कहेंगे. अर्थात ऐसा पागल जिसके दिमाग में ही क्रूरतम हत्याएं करने के कीटाणु बस चुके हों.

एक दिन पहले उसे नहला धुला कर हार पहनाया जाए, भोजन खिलाया जाए उसकी पूजा की जाए. **साथ में यह भी निर्देश दिये गए हैं कि जल्लाद बलि-मनुष्य सें नजरें न मिलाये. पुराण लिखने वाले हत्यारे को पता था कि मरने वाले की आंखें दया की भीख मांगती हैं और कहीं उन आंखों में झांक कर उसे काटने वाला पिघल न जाए. इसलिए उसे निर्देश दिया गया है कि वह अपनी नजरें दूर रखे.**

बलि का फल या लाभ : चण्डी या काली ने केवल यही नहीं बताया कि उसे कौन कौन सा जीव खाना पसंद है उसने यह भी बताया है कि उसके लिए काटा और चढ़ाया गया किस किस का माँस कितना लाभ देता है.

क्रमांक	काटा गया प्राणी	देवी कितनी खुश
1	मछली कछुआ	एक महीना
2	मगरमच्छ	तीन महीने
3	वन्य जीव	नौ मास
4	नीलगाय का खून	एक साल
5	हिरण, जंगली सूअर	बारह साल
6	सरभ का खून	पच्चीस साल
7	भैंस व हिप्पो का खून	एक सौ साल
8	हिरण व हिप्पो का माँस	पाँच सौ साल
9	शेर बारहसिंगा	एक हजार साल
10	**एक आदमी का खून**	**एक हजार साल**
11	**एक आदमी का माँस**	**एक हजार साल**
12	**तीन आदमियों का खून**	**एक लाख साल**
13	**तीन आदमियों का खून**	**एक लाख साल**
14	**आदमी का सिर**	**कामख्या अति प्रसन्न**

कहने को तो महाभारत कहती है कि ऐसे नरमेध यज्ञ कलियुग में बन्द हो गये. (वन.146) लेकिन वास्तव में ब्राह्मणों का यह कलियुग तब आया जब अंग्रेजों ने 1845 में एक्ट संख्या 21 के द्वारा नरबलि पर प्रतिबन्ध लगा दिया. अगर कहीं अंग्रेज भी इन ब्राह्मणवादियों की तरह मासूमों का माँस भक्षण करने वाले होते तो आज हर गली मौहल्ले में ये पण्डे नर माँस की हाट लगाए बैठे होते!!

पन्द्रहवीं सदी में जब कबीर बोले :

पण्डे निपुण कसाई साधो, पण्डे निपुण कसाई!!

तो पण्डों ने उनकी परवाह नहीं की लेकिन उनीसवीं सदी में अंग्रेज के डण्डे के आगे उन्हें अपना स्वाद छोड़ना ही पड़ा.

बाबा साहिब ने सत्य ही कहा है कि ऐसे मंदिर बुचड़खाने ही थे.

6.5.1.3 यर्जुवेद में नरमेध

यर्जुवेद (अध्याय 30.2) में कहा गया है कि जो ब्राह्मण या क्षत्रिय **देवताओं सें भी ऊपर की पदवी** पाना चाहता हो तो उसे चाहिए कि वह **पुरुषमेध** यज्ञ करे. अध्याय 31 में नर मेध की विधि का विवरण दिया गया है. वहां (मन्त्र 9) वर्णन है कि सर्वप्रथम बलि दिए जाने वाले मनुष्य को जल छिड़क कर प्रोक्षण किया गया. जैसे गृहिणी सब्जी काटने सें पहले धोकर उसे साफ करती हैं वैसे ही ब्राह्मण ऋषि नरमेध यज्ञ के लिए मनुष्य को काटने सें पहले उसे अच्छी तरह धो कर साफ कर लेते थे. इस विधि को प्रोक्षण कहते हैं. मन्त्र 10 में इस विधि का उल्लेख है कि यज्ञ में आहूति देनेके लिए मनुष्य के कितने टुकड़े करने हैं तथा उन टुकड़ों में सें ब्राह्मण ऋषि, देवता तथा यजमान को कौन कौन सा भाग खाने के लिए मिलेगा. मन्त्र 14 में पुनः पक्का किया गया है कि यज्ञ में मानव माँस की हवि दी गई है.

दयानन्द कहता है, "जो इस संसार में बहुत पशु वाला होम करके हुतशेश का भोक्ता वेद वित् मनुष्य होवे, सो प्रशंसा को प्राप्त होता है." (यर्जुवेद अ.19 मन्त्र 20 पर दयानन्द का भाष्य) (समु.6.154) साधारण भाषा में इस का अर्थ है कि **जो वेद का ज्ञानी (ब्राह्मण) यज्ञ में बहुत सारे पशु मार कर उन्हें यज्ञ की आग में भून कर खाता है, उसे संसार में प्रशंसा मिलती है.** नरमेध यज्ञ में मारे जाने वाला मनुष्य भी "यज्ञ–पशु" ही होता है. अतः दयानन्द के अनुसार यज्ञ में अगर मनुष्य मारा जाए तो उसके बचा माँस खाया जाए तो वाही वाही मिलती है.

कहीं लोग इस पाप के विरुद्ध आवाज न उठाएं इसलिए संकराचारय ने व्यवस्था दी कि धर्म अधर्म, पाप पुण्य का निर्णय धर्म ग्रन्थों में किया गया है. वहां पशु और आदमी मारने वाले यज्ञों को **धर्म** बताया गया है. अतः ऐसे यज्ञ करने सें कोई पाप नहीं लगता. (ब्रह्मसूत्र 3.1.2 पर संकरभाष्य) (अज्ञात : स्मृतियों में 53)

उसके साथी **रामानुज ने तो हद कर दी**. वह बोला हमारे धर्म ग्रन्थों में सही लिखा है कि जिस आदमी या पशु को यज्ञ में काटा जाता है वह सोने का बन कर स्वर्ग में जाता है. इसलिए यज्ञ में गला कटवाने या आग में सिकने का थोड़ा सा कष्ट उठाना घाटे का सौदा नहीं है. (अज्ञात : स्मृतियों में 53) काश उसने यह बात महाराज रावण के समय कही होती तो उसका सारा खानदान सोने को बनकर स्वर्ग गया होता!!

यर्जुवेद के नरमेध में ऋग्वेद के पुरुषसूक्त का उच्चारण आवश्यक माना जाता था क्योकि ऋग्वेद ब्राह्मणों का सबसें प्राचीन ग्रन्थ है तथा उसके पुरुषसूक्त में पहली नरबलि का वर्णन है.

नरमेध में अलग अलग रंग रूप वाले तथा अलग अलग काम करने वाले 184 स्त्री पुरुषों की बलि दी जाती थी. (अप्सरा 527)

6.5.1.4 राम राज्य में नर माँस

आर्य ब्राह्मण और उनके देवता नर माँस खूब चाव सें खाते थे. यज्ञ ही नहीं नर माँस उनके यहां वैसे भी मिल जाता था. स्वयं तुलसी ने बालकांड में लिखा है कि राम नित्य ही जंगल में हिरणों का शिकार करता था. इसी बालकांड में वह आगे लिखता है,

"बिबिध मृगन्ह कर आमिश रांधा!
तेहि महुं विप्र माँस खल सांधा!!"

अर्थात कई प्रकार के हिरणों का माँस पकाया गया जिसमें किसी दुष्ट आदमी ने ब्राह्मण का माँस मिला दिया. इस दोहे सें तुलसी रामराज्य की वास्तविकता बयान करता है कि राम के राज्य अयोध्या में नर माँस आसानी सें मिल जाता था. हिरण तो सरेआम पकाए जाते थे. आदमी का मांस भी आराम सें मिल जाता था. यहां तक कि ब्राह्मण का मांस भी मिल जाता था. ब्राह्मण का मांस ही अगर ऐसे मिल जाता था तब तो क्षत्रिय, वैश्य का मांस तो रामराज्य में ऐसे मिलता होगा जैसे आजकल बाजार में मुर्गी के अण्डे मिल जाते हैं.

6.5.1.5 अन्य प्रसंग

इनके अतिरिक्त ब्राह्मण–ग्रन्थों में अनेकों ऐसे प्रसंग मिलते हैं जो यह दर्शाते हैं कि आर्य और उनके ब्राह्मण पुरोहित नर माँस खाने में बिलकुल न झिझकते थे.

- उदाहरणतः भीम ने दुशासन को मार कर उसका खून पीया.
- ब्राह्मण ऋषि अगस्त्य भूख लगने पर वातापि नामक मनुष्य को मार कर खा गया.

- राम का पूर्वज कल्माशपाद नर माँस खाता था. (राज.50)
- जब दादा परदादा ऐसा कुकृत्य करते थे तो राम के राज्य में तो नर मांस की बिक्री होनी ही थी.
- जब शिव को उसके ससुर दक्ष ने यज्ञ का हिस्सा न दिया तो उसने वीरभद्र की अगुवाई में अपने आदमी भेजे. उसने "यज्ञ मण्डप में यज्ञ पशुओं को जैसे मारा जाता है, उसे देख कर उसी प्रकार दक्ष रूपी उस यजमान पशु का सिर धड़ सें अलग कर दिया.'' और सिर को यज्ञ की दक्षिण अग्नि में डाल दिया. (भागवत पुराण स्कन्ध 4 अध्याय 4 सें 6)

यह तो शुक्र है कि नरमेध यज्ञ पर ब्रिटिश सरकार ने 1845 में एक्ट संख्या 21 द्वारा प्रतिबंध लगा दिया वर्ना आज भारत में स्थान स्थान पर ब्राह्मण नरमेध का आयोजन किए बैठे होते. दूसरे शब्दों में वे नर माँस की दुकानें खोले बैठे होते.

इन ब्राह्मण–ग्रन्थों की ही यह देन है कि नित्य प्रतिदिन भारत के गांवों कस्बों में ऐसी घटनायें होती रहती हैं कि मासूम बालकों को मार कर उनके अंग भंग करके देवी के चढ़ा दिए गए. दैनिक भास्कर 15.04.2005 में छपी खबर के अनुसार ऐसी ही एक धार्मिक परम्परा को निभाते हुए पश्चिम बंगाल में दो गांवों के लोगों ने पाँच बच्चों के शवों के सिर काट लिए. फिर वे लोग उन नर मुण्डों के साथ नाचते गाते हुए गए और उन नर–मुण्डों को शिव मंदिर में चढ़ा दिया. यह सारा कांड धर्म के नाम पर किया गया क्योंकि ब्राह्मण–ग्रन्थ ऐसा करने को धार्मिक कर्म बताते हैं.

3 मई 1983 को ऐसी ही एक धार्मिक कथा को सुनकर एक 15 वर्षीय बालक ने स्वयं को शिव के चढ़ाने का निश्चय किया. अतः उसने स्वयं के आग लगा ली और शिव लिंग की ओर भागा मगर रास्ते में ही गिर कर मर गया. उसके पास सें एक पत्र मिला जिस में उसने लिखा कि निज बलि की धार्मिक कथा से प्रभावित होकर वह ऐसा कर रहा हैं. (समु 5.147)

6.4.2 गोमेध यज्ञ

किसी समय आर्य ब्राह्मणों का सर्वाधिक लोकप्रिय यज्ञ **गोमेध यज्ञ** था. गोमेध का इतना महत्व था कि एक सौ गोमेध यज्ञ करने वाले को "इन्द्र" (ब्राह्मण देवताओं का राजा) बना दिया जाता था. (गोमाँस 68) ब्राह्मण ऋषि बहुत चाव सें गाय का माँस खाते थे. घर आए अतिथि विशेषकर ब्राह्मण के आगमन पर गाय का माँस पेश करना लगभग वैसे ही आम था जैसे आजकल घर आए मेहमान को चाय बिस्कुट पेश किये जाते हैं. कहते हैं कि अगर शेर के मूँह एक बार आदमी का खून लग जाए तो वह उसके बाद किसी अन्य पशु का माँस नहीं खाता. ब्राह्मण ऋषिओं को कुछ ऐसा ही स्वाद गाय के माँस सें मिलता था. इसी कारण यज्ञों में गाय मारना अनिवार्य किया गया. (गोमाँस 37)

ब्राह्मणों ने इतनी संख्या में गाएं खाईं कि आज भी अगर उनके खून की जांच की जाए तो असली ब्राह्मण के खून में निश्चित रूप में गाय के खून के अंश मिलेंगे. गाय काटना और खाना इतना आम था कि ऋग्वेद के समय गाय काटने की लकोक्तियां बनी हुई थीं. जिस तरह हम आज कल एक लकोक्ति 'गाजर मूली की तरह काटना' का प्रयोग करते हैं वैसे ही प्राचीन आर्य लोग 'गाय की तरह काटना' की लकोक्ति का प्रयोग करते थे. (ऋग 10.89.14)

ब्राह्मण–ग्रन्थों में जिस काल को सत्ययुग कहा गया है, उस काल में गाय ही मुख्य माँसाहारी आहार होता था. ऋग्वेद में उल्लेख है कि देवताओं के राजा इन्द्र के लिए एक बार में 15–20 बैल यज्ञ की आग में भूने जाते थे और उसे शराब सें सरोबार कर दिया जाता था.

आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में गोमाँस और गोमेध के विषय को लेकर बहुत लीपापोती की, अनेक शब्दों के अर्थ बेअर्थ किए. लेकिन अंततः उसे भी सच्चाई माननी ही पड़ी कि जिन आर्यों के समाज को वह पुनः आर्य–समाज के रूप में स्थापित करना चाहता था, वे सब लोग यज्ञ में गाय का माँस भून कर खाते थे. उसे सच्चाई तो कबूलनी पड़ी परन्तु वह अपनी धूर्तता सें बाज न आया. वह लिखता है," जहां गोमेध आदि यज्ञ लिखे हैं वहां नर पशु मारना लिखा है क्योंकि जितना तगड़ा बैल होता है वैसी गाय नहीं होती. जो वंध्या गाय है, उसे भी मारना लिखा है."(स.प्र. 303) (समु.6.154) वह आगे कहता है,"जो इस संसार में बहुत पशु वाला होम करके हुतशेश का भोक्ता वेद वित् मनुष्य होवे सो प्रशंसा को प्राप्त होता है."(यर्जुवेद अ.19 मन्त्र 20 पर दयानन्द का भाष्य) (समु. 6.154)

दयानंद के उपरोक्त अर्थ सें निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं:

1. **गोमेध का अर्थ यज्ञ में गाय मारना है.**
2. गोमेध में गाय, बैल और सांड मारे जाते थे.
3. बैल और सांड इसलिए मारे जाते थे क्योंकि गाय के शरीर सें उतना चर्बी और माँस नहीं मिलता थे जितना बैल और सांड सें मिलता था. बैल और सांड तगड़े होते थे अतः उन सें गोल गोल बोटियां और चर्बी अच्छी मात्रा में मिल जाती थीं. दशरथ का अश्वमेध हो या सोमक का पुत्रबलि यज्ञ, ब्राह्मण ऋषि चर्बी जरूर भूनते थे. सो **यज्ञ में चर्बी भूनना अति जरूरी थी.**
4. यज्ञ में गाय काटी जाए अथवा बैल यह बहस ब्राह्मण ऋषिओं में होती ही रहती थी. जैसे दयानन्द ने अपना विचार दिया कि गाय में चर्बी कम होती है इसलिए बैल मारा जाना चाहिए, वैसे ही याज्ञवल्क्य का मत था कि दोनों में जिस का माँस नर्म हो, उसी की बलि देकर खाया जाना चाहिए.
5. जिस गाय के बच्चे होने बंद हो गए थे अथवा जो बच्चे पैदा नहीं कर सकती थी, उसे भी यज्ञ में मारा जाता था. अतः बूढ़ी गायों का अंतिम स्थल ब्राह्मणों के गोमेध यज्ञ ही होते थे. अगर किसी कारणवश कोई जवान गाय भी बच्चे पैदा न कर सकती हो तो उस बेचारी का भी यही हश्र होता था.
6. गाय, बैल, बछिया अथवा सांड आदि को मार कर यज्ञ की आग में डालने मात्र सें ही काम पूरा न होता था बल्कि उसके **हुतशेष** अर्थात आग में भूने गए अवशेषों का खाना भी जरूरी था. गीता में भी कहा गया है कि यज्ञ बलि का बचा खाना परम पुण्य का काम है. (गीता 3.13) दयानंद कहता है कि हुताशेष यानि बलि देकर बाकी बचा मांस खाने सें आदमी जग में प्रसिद्ध हो जाता है.
7. यज्ञ में थोड़े सें नहीं बल्कि बहुत से पशु काटे जाते थे. जैसे रंतिदेव के यज्ञ में रोजाना 2000 गाएं काटी जाती थीं. एक बार तो उसने एक ही दिन में 21,000 गाएं काटी थीं. (गोमाँस 62) इन्द्र के लिए 15–20 बैल एक बार के यज्ञ में ही भूने जाते थे. अथवा राम को पैदा करने के लिए किए गए यज्ञ में 300 सें ज्यादा पशु काटे गए थे.
8. दयानंद की हुतशेष अर्थात यज्ञ में मारे गए पशुओं को खाने की बात पर गोपथ–ब्राह्मण में नियम दिये गए हैं. गोपथ–ब्राह्मण (3.18) के अनुसार गाय के जीभ, गला, कंधा, नितम्ब और टांगें यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों को खाने के लिए दी जाएं. यजमान को गाय की पीठ की हड्डी और उसकी पत्नि को पेडू का भाग दिया जाना चाहिए.

दयानन्द की तरह **अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ गोमाँस भक्षण** के बारे में इस तरह सें कहते हैंः

9. आश्वलायन गृहसूत्र (1–11–12) के अनुसार गाय के 11 भाग करके यज्ञ अग्नि में पकाया जाए. उसके दिल को शूल में गाड़ कर तपाया जाए. फिर उसका स्थालीपाक किया जाए. स्थाली का अर्थ है मिट्टी का बर्तन, पाक का अर्थ है पकाना. अर्थात गाय के कलेजे को पहले शूल में गाड़ कर सेका जाए (सींक कबाब की तरह) फिर उसे हांडी में पकाया जाए. अश्टमी के दिन जो पशु मारा जाए उसी का माँस ब्राह्मणों को खाने के लिए दिया जाए. (2–5–2)
10. मानव गृहसूत्र में आदेश है कि हर पुर्णिमा तथा अमावस्या को पशुयज्ञ (गोमेध भी) करें. यज्ञ में बचा माँस, शहद आदि को भी खाया जाए. दयानन्द ने भी हुताशेष खाने के लिए ऐसा ही कहा है.
11. पारस्कर गृहसूत्र का आदेश है कि घर पर अगर आचार्य, ऋत्विक, राजा अथवा द्विज मित्र आये तो गवालम्भ अर्थात गाय काटनी चाहिए. गृहस्वामी मेहमान को गाय और खड़ग दोनों सौंप दे अगर वह गाय खाना चाहे तो उसे मार ले, छोड़ना चाहे तो छोड़ दे. परन्तु यज्ञ और शादी में आये मेहमान को गाय छोड़ने की मनाही थी. अतः **यज्ञ और शादी में गाय मारना अनिवार्य था.** आज भी पंजाब में लगभग हर शादी में मीट शराब अनिवार्य है.
12. आश्वलायन गृहसूत्र (4) के अनुसार अग्निहोत्र ब्राह्मण के मरने पर उसकी चिता में यज्ञपात्र, बकरी और **गाय** भी जलाई जाती थी. (राज. 45)
13. ब्राह्मणों का मुखिया आदि–संकर का वृहदारण्यक उपनिष्द पर टिप्पणी करते हुए आदेश देता है कि जो स्त्री पुरुष (जरूरी नहीं कि वे पति पत्नि ही हों) चाहते हैं कि उनका पुत्र ज्ञानी, वेद पढ़ने वाला, मीठा बोलने वाला तथा सौ साल तक जीने वाला हो तो उनको चाहिए कि वे उक्षा और ऋषभ का माँस चावल के साथ पका कर खायें. उक्षा जवान सांड को कहते हैं. संकराचारय अपनी ब्राह्मणिक लीपापोती करते हुए लिखता है कि यहां माँस खाने का अर्थ उक्षा और ऋशभ नामक जड़ी बूटियों का गूदा खाना है लेकिन आगे टिप्पणी करते हुए स्वयं कहता है कि **उक्षा और ऋशभ नामक जड़ी बूटियों में गूदा नहीं होता बल्कि केवल त्वचा अथवा छिलका ही होता है. (वृ** उ 6.4.18) अतः उक्षा और ऋषभ का मांस खाने का अर्थ है जवान व तगड़े सांड का मांस खाना!

14. ऋग्वेद में इन्द्र के लिए 15 बैल पकाने का आदेश दिया गया है. (10.28, 10.27) जैसे आज के समय राम कृष्ण सबसें बड़े भगवान हैं वैसे ही प्राचीन काल में इन्द्र सब देवताओं का राजा होता था. विष्णु भी उसका उप इन्द्र होता था. उस समय ब्राह्मण सिर्फ इन्द्र की ही पूजा सर्वोपरि मानते थे. अतः उसके लिए वैसे ही बैल काटे जाते थे जैसे आजकल गणेश के लिए लड्डू चढ़ाए जाते हैं.

15. आश्वलायन गृह्य सूत्र के अनुसार शिव के लिए मोटे ताजे बैल की बलि दी जानी चाहिए. उसकी पूंछ खाल और पैर (खुर) अग्नि को दिये जाएं. (बाबा साहिब 8.171)

16. ऋग्वेद के शतपथ ब्राह्मण (11.7.1.3) में गोमाँस को सर्वोत्तम आहार माना गया है. (गोमाँस 109) अथर्व वेद में अतिथि सें पहले गोमाँस खाने की मनाही की गई है तथा मेहमान को माँस खिलाने पर 12 यज्ञों का फल मिलने की बात भी कही गई है. (9.6.39) (समु 3.80)

17. ब्राह्मण ऋषियों में यह बहस आम ही होती रहती थी कि किस पशु का माँस अधिक स्वादिष्ट होता है, कौन से पशु का माँस खाया जाना चाहिए कब खाया जाना चाहिए आदि. आपसतम्ब सूत्र (2.2.5.15) में गाय और सूअर को खाने की मनाही की गयी है लेकिन बैल का माँस खाना पवित्र कहा गया है. जनक का गुरू याज्ञवलक्य का कहना था कि गाय और बैल में जिस का माँस नर्म हो वह खा लिया जाना चाहिए. (शतपथ ब्राह्मण 3.1.2.21)

18. प्रसिद्ध इतिहासज्ञ रोमिला थापर के अनुसार आम आदमी गोमाँस खाना अमान्य, बुरा, (टैबू) समझता था लेकिन विशेष अवसरों पर गाय खाना अति पवित्र माना जाता था. (रोमिला 34) सभी जानते हैं कि यज्ञ, शादी, श्राद्ध आज भी विशेष अवसर माने जाते हैं. पुराने समय में राजा और ब्राह्मण का अतिथि बन कर आना भी विशेष अवसर माना जाता था. जयचन्द्र विद्यालंकार ने भी अपनी पुस्तक "भारतीय इतिहास में प्रमाणित किया है कि आर्य समाज के लोग पूरे माँसाहारी थे तथा शादी विवाह व अतिथि के आने पर गाय अथवा बैल मार कर पका लेते थे. (पृ. 252)

19. आज भी बंगाल आसाम के ब्राह्मणवादी काली की मूर्ति के आगे भैंसे की बलि देते हैं और केरल तथा दुर्ग के ब्राह्मणवादी गोमाँस खाने में धर्म का उल्लंघन नहीं समझते. (समु 10.287)

20. विष्णु पुराण के अध्याय 10 में गोहत्या करने और गोमाँस खाने का प्रबल समर्थन किया गया है. (गोमाँस 71)

21. देवी भागवत (स्कंध.1,अ.18) में ऐसे ही एक अन्य ब्राह्मणवादी "महात्मा" की कहानी दी गई है. राजा शषबिंदु ने इतनी गायें तथा अन्य पशु काट कर ब्राह्मणों को खिलाये कि उनकी खालों और हड्डियों का पहाड़ जैसा ढेर लग गया. जब बारिश आई तो उसके पानी के साथ मिल कर खून की नदी चम्बल बह निकली. (गोमाँस 72)

22. ब्रह्मा वैर्वत पुराण (1.140.48) के अनुसार मनु ने तीन करोड़ ब्राह्मणों को भोजन करवाया जिसमें अन्य वस्तुओं के साथ साथ उसने घी में अच्छी तरह तला हुआ पाँच लाख गायों का माँस उन्हें खिलाया था. (गोमाँस 73) अर्थात एक गाय को साठ ब्राह्मणों ने खाया. यह तो ज्यादती कर दी गई ब्राह्मणों के साथ. एक गाय और साठ ब्राह्मण!! एक के हिस्से किलो गोमाँस भी नहीं आया होगा!

23. तैतरीय ब्राह्मण में पंचशारदीय यज्ञ का वर्णन है जिसमें तीन साल की आयु के 17 बौने बछड़े तथा पाँच वर्ष की आयु के 17 बौन बैल मारे जाते थे. (आर्य नीति 32)

24. राजवाड़े के अनुसार गोवध महाभारत के व्यास के बाद भी चलता था.

25. ब्राह्मण–ग्रन्थों में गोमेध यज्ञ करने की सबसें बड़ी घटना का वर्णन महाभारत (वन पर्व 208) में मिलता है. वहां एक रंतिदेव नामक राजा की कथा दी गई है जो रोजाना तो 2000 गाएं काटता ही था. कभी आवश्यकता पड़ ताए तो 21000 तक गाऐ काट लेता था. उसके यज्ञ में भारत भर सें आए मुफतखोर ब्राह्मणों का जमावड़ा लगा रहता था. (द्रोण पर्व 66) उसके यज्ञ में ब्राह्मण वैसे ही भीड़ लगाए रखते थे जैसे कसाई की दुकान के आगे कुत्ते भीड़ लगाए रखते हैं. ब्राह्मणों को वहां पेट भर गो–माँस मिल जाता था. अतः वे महाभारत में रंतिदेव को महादानी कह कर पूजते हैं. यह तो आज कल उन्होंने गो–माँस खाना छोड़ रखा है वर्ना राम की कथा तो कहीं सुनने को ही न मिलती. हर जगह जय रंतिदेव! जय रंतिदेव!! के नारे गूंज रहे होते, जैसे महाभारत के समय गूंजते थे.

    रंतिदेव इतनी गायें कटवा कर ब्राह्मणों को खिलाता था कि गायों की खालों और आंतों आदि सें रिसने वाले खून सें चम्बल नदी का पानी भी खून जैसा जाता था. (शांति पर्व 29) वहीं अध्याय 265 में विरचक्षु नामक राजा की कहानी है जो कटे हुए पेडों की तरह यज्ञ में कटे पड़े बैलों और रोती हुई गायों को देखकर विलाप करता है. (गोमाँस.65)

गाय कैसी हो

चाहे ब्राह्मण हजारों गायें एक बार में खा जाते थे तो भी वे इस बात का ख्याल रखते थे कि उनके खाने के लिए स्वस्थ सुंदर गाय ही काटी जाये. उन्होंने व्यवस्था दे रखी थी कि उनके लिए गाय वही काटी जाए जो पूर्णतया स्वस्थ हो. उन्होंने नियम बना रखे थे कि ऐसी गाय मारी जाए :

- जो सात या नौ खुर वाली न हो, (पूरे आठ खुर हों यानि लंगड़ी न हो)
- जिसके सींग टूटे हुए न हों, (लड़कर किसी सें सींग न तुड़वाये हों यानि तगड़ी गाय हो)
- काली न हो (शायद उन्हें लगता होगा कि काली गाय खाने सें उनका रंग भी काला न हो जाए)
- कानी न हो (दोनों आँखें खाने को मिलें. बहुत से माँस खाने वालों का मानना है कि आँखें खाने सें नेत्र ज्योति बढ़ती है. शायद ऐसा ही मत वैदिक ब्राह्मणों का भी रहा हो.)
- कान कटी न हो (ताकि सुब्रह्मण्य ऋत्विक को स्वस्थ गाय का सिर दानों कानों समेत मिले.)

गाय को काटने और बांटने का विधान

ब्राह्मण ग्रन्थों में इस बात का विस्तार सें वर्णन किया गया है कि यज्ञ में गाय और अन्य पशुओं को कैसे काटा जाये तथा काटने के बाद उन्हें ब्राह्मणों और यजमान में कैसे बांटा जाये. गाय और अन्य पशुओं को काटने की विधि इस प्रकार सें है:

- **यूप संधि** : सर्वप्रथम गाय को मजबूत रस्सी के साथ मजबूत खूंटे के साथ बांधा जाता था ताकि वह भाग न पाये. यज्ञ के लिए बनाये गये खूंटे को यूप कहा जाता है. रामायण में जिन यूपों का वर्णन किया गया है उन्हें हाथी भी नहीं उखाड़ सकता था.
- **प्रोक्षण** : काटने सें पहले वेद मन्त्र पढ़ते हुए गाय तथा अन्य बलि पशुओं को पानी छिड़क कर अच्छी तरह साफ किया जाता था. इस विधि को प्रोक्षण कहा जाता है. जिस पशु को काटना होता था उसी का प्रोक्षण किया जाता था. प्रोक्षण का अर्थ था कि अब यह पशु कटेगा.
- यज्ञ वेदी पर गाय को काटते समय वेद मन्त्र बोलते हुये गाय के पैर बांध दिये जाते थे. फिर वज्र के समान मजबूत तलवार सें एक ही वार में गर्दन धड़ सें अलग कर दी जाती थी. (शतपथ ब्राह्मण 2.8.2) (गोमाँस 45)
- **वेदमन्त्र : "पशुपाशाय विग्रहे शिरश्छेदाय (विश्वकर्मणे) धीमहि, तन्नो जीव प्रचोदयात्"** का मन्त्र पढ़ कर जीव यानि गाय, घोड़ा, बकरी, आदमी आदि को यज्ञ में काट लिया जाता था.
- सत्ययुग अथवा वेदकाल में यज्ञ वेदी पर गाय और अन्य पशु काटने का काम 'होता' ऋत्विक करता था. त्रेता युग अथवा महाभारत के समय केवल वेद पढ़े लिखे ब्राह्मण ही यह काम करते थे. (गोमाँस 65)
- गाय की गर्दन काट देने के बाद वेद का आदेश है कि गाय के ऊपर की खाल को बिना काटे साबुत ही उतारो. नाभि को काटने सें पहले आंतों के ऊपर की झिल्ली को चीर डालो. (ऐतरेय ब्राह्मण 2.6.6) (गोमाँस 42) खाल इसलिये साबत उतारी जाती थी क्योंकि यह सोम बनाने में काम आती थी. (गोमाँस 48)
- खाल उतार लेने के बाद छाती का एक टुकड़ा बाज के आकार का काटो. अगली दोनों टांगों को कुल्हाड़ी और धान की बाली की शक्ल में काटो. फिर कमर के नीचे का हिस्सा साबत निकालो. ढाल के आकार वाले जांघों के ऊपरी दो भागों को काटो. दोनों घुटनों और 26 पसलियों को निकालो. (ऐतरेय ब्राह्मण 2.6.6) (गोमाँस 42)
- इस तरह मारी गई प्रत्येक गाय और पशु के **कुल 36 टुकड़े** कर दिये जाते थे. हर टुकड़े को संभाल कर रखने का आदेश भी दिया गया है ताकि आपसी बंटवारे में कोई अड़चन न आये. (ऐतरेय ब्राह्मण 2.6.6) (गोमाँस 42)

गाय काटने की विधि पढ़ कर बरबस कबीर साहिब की बात याद हो आती है:

पांडे निपुण कसाई! साधो, पांडे निपुण कसाई!!
भेड मार बकरे को धावै, मन में दया न आई!
साधो, पांडे निपुण कसाई!!

कबीर साहेब के समय में गाय तो नहीं खाई जाती थी लेकिन बकरे और मेंढे खूब मारे और खाये जाते थे अन्यथा वे कहते "गाय मार बैल को धावै, मन में दया न आई"

गाय और बलि पशुओं का बंटवारा

यज्ञ में काटे गये पशुओं और चढावे के लिये ब्राह्मण ऋषि और उनके देव कुत्तों की तरह लड़ते मरते थे. इसलिये ब्राह्मण ग्रन्थों में गाय और पशु काटने मात्र का विधान नहीं है बल्कि उनमें इस बात का भी पक्का विधान है कि पशु का कौन सा हिस्सा किस ऋत्विक (यज्ञ करने वाला ब्राह्मण ऋषि) को मिलेगा तथा कौन सा हिस्सा यज्ञ करवाने वाले यजमान को मिलेगा. **नरमेध यज्ञ में काटे जाने वाला आदमी भी "यज्ञ-पशु" माना जाता था.** अतः यह बंटवारा उस पर भी लागू होता था. **ऐतरेय ब्राह्मण के अध्याय 31** में बंटवारे का विधान इस प्रकार सें है :

1. जबड़े की दोनों हड्डियां और जीभ प्रस्तोता नामक ऋत्विक को दी जाये.
2. बाज की आकार जैसी छाती का टुकड़ा उद्गाता नामक ऋत्विक को दिये जाये.
3. गला और तालू प्रतिहर्ता नामक ऋत्विक को दिये जाये.
4. कमर के नीचे का दाहिनी ओर का हिस्सा होता नामक ऋत्विक को दिया जाये.
5. कमर के नीचे का बाईं ओर का हिस्सा ब्रह्मा नामक ऋत्विक को दिया जाये. दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में उसका कुलगुरू वशिष्ठ ब्रह्मा बना था. अतः उसे घोड़े की कमर का बायां भाग मिला.
6. दायीं जांघ मैत्रावरुण को दी जाये.
7. बांयीं जांघ ब्राह्माछंसी को दी जाये.
8. दाहिने कंधे का हिस्सा अध्वर्यु को दिया जाये. दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में ऋश्यश्रृंग अध्वर्यु बना था. अतः उसे घोड़े के दाहिने कंधे का हिस्सा मिला.
9. बांया कंधा प्रतिप्रस्थाता को, कुछ हिस्सा मन्त्र उप गायकों को, दाईं टांग का निचला हिस्सा नेश्टा को तथा बाईं टांग का निचला हिस्सा पोतृ को दिया जाये.
10. दाहिनी जांध का ऊपरी भाग अच्छावाक को, बाईं जांघ का ऊपरी भाग अग्निधर को, अगली दाहिनी टांग का ऊपरी भाग आत्रेय को तथा बाईं टांग का ऊपरी भाग सदस्य को दिया जाये.
11. सिर सुब्रह्मण्य को, गर्दन का कुछ भाग प्रावस्तुत को, पीठ का माँसल भाग उन्नेता को तथा गर्दन को कुछ भाग गाय काटने वाले को दे दिया जाये.
12. ऊपर दिये गये विवरण में हिस्सा पाने वाले सभी ब्राह्मण ऋत्विक हैं. यज्ञ करवाने वाले दम्पति के हिस्से में आते थे : **पीछे की हड्डी और अण्डकोश.** अगर गाय काटी जाये तो उसे मात्र पीछे की हड्डी मिलती थी.
13. अगर यज्ञ के बिना गाय काटी जाती थी तो यजमान को मिलता था दायां खुर और उसकी पत्नि को मिलता था बांया खुर तथा दोनों को सांझे में मिलता था आधा आधा ऊपरी होंठ.

मान्यवर सागर अपनी पुस्तक "प्राचीन भारत में गामाँस भक्षण–एक तथ्य" में लिखते हैं कि वैदिक युग का यज्ञस्थल पूरा बुचड़खाना था. हम इस तथ्य को सुधारना चाहेंगे कि वैदिक काल ही नहीं ब्राह्मणों के पूरे काल में उनके यज्ञ बूचड़खाने ही होते थे जहां कुछ ब्राह्मण ऋषि कसाइयों का काम करते थे और उनके बाकी साथी माँस के लिये वैसे ही लड़ते थे जैसे बुचड़खाने में कुत्ते हड्डी के लिये लड़ पड़ते हैं.

हर काल में गाय औा अन्य पशु काटे गये हैं चाहे वह वैदिक काल हो, दशरथ का त्रेता काल हो, युधिष्ठर और रंतिदेव का द्वापर काल हो या अभी के समय में गुप्त काल और कबीर काल हो. गायों को मुक्ति मिली तो मात्र महात्मा रावण के काल में जब उन्होंने बुद्धम शरणम का नारा लगा कर ऐसे बूचड़खानों का अंत किया. गायों के इलावा भेड बकरियां तो अब तक काटी जाती थीं. काली मंदिर में तो आज भी बकरे काटे जाते हैं.

गोहत्या अथवा गोमेध के ब्राह्मणिक लाभ

प्रसिद्ध ब्राह्मण भाष्यकार महीधर का कहना है कि यज्ञ मे भून कर खाई गई गाय का खून और हड्डियां क्रमशः दूध और कपूर बनते हैं. गोमेध करने वाले यजमान को स्वर्ग और गाय को गोलोक मिलता है. इस बात पर महामुनि चार्वाक ने सही कहा है कि अगर यज्ञ में कट कर गाय अगर स्वर्ग जाती है तो ब्राह्मण अपने माँ बाप की बलि यज्ञ में क्यों नहीं दे देते. वास्तव में कोई स्वर्ग जाए न जाए ब्राह्मणों को खूब मीट शराब मिल जाता था. गाय खाकर उन्हें तो यहीं स्वर्ग मिल जाता था. किसी और सें उन्हें क्या लेना देना.

गोमेध यज्ञ केवल कुछ प्राप्त करने के लिए ही नहीं किये जाते थे बल्कि किसी का कुछ नष्ट करने के लिए भी किये जाते थे. शल्य पर्व में दालभ्य नामक ऋषि ने गोमेध यज्ञ करके धृतराष्ट्र का राज्य क्षीण कर दिया

था. (गोमाँस 65) अतः गोमेध करने सें दोहरा लाभ मिलता था. करने वाला सुखी रहता था और उसका दुश्मन मारा जाता था. इसी सें कहावत बनी : एक तीर सें दो शिकार!

गोहत्या के नाम पर लीडरी करने वाले ऐसे ही एक नाम था राम कृष्ण डालमिया का. साठ सत्तर के दशक में जब जनसंघियों ने गोहत्या बंद करने के बारे में जलसे जलूस किये तो यह बड़े नेताओं में सें एक था. लेकिन यह वही आदमी था जिसने दूसरे महायुद्ध के समय अंग्रेजों को गोमाँस सप्लाई करने का ठेका लिया था. उसने अपने बुचड़खानों में काटा गया लाखों टन गाय का माँस अंग्रेजों को बेचा. (गोमाँस 108) गांधी ऐसे सेठों द्वारा बनाये मंदिर में ही मरा था.

6.5.3 अश्वमेध यज्ञ

ब्राह्मणों के सर्वाधिक प्रिय यज्ञों में अश्वमेध यज्ञ भी था. जहां गाय और बैल का माँस उन्हें खाने में ज्यादा स्वाद लगते थे वहीं अश्व यानि घोड़े का माँस उन्हें ताकत और जोश पैदा करने वाला लगता था क्योंकि घोड़ा सदा सें ही पौरुष अथवा मर्दानगी का सूचक रहा है. पूरे विश्व में कहावत है कि घोड़ा और मर्द कभी बूढ़े नहीं होते. अतः आर्य ब्राह्मणों व ऋषियों को भी लगता था कि घोड़े का माँस खाने सें वे ज्यादा समय तक मर्द बने रहेंगे.

अश्वमेध यज्ञ की विधि के कारण उन्हें इस यज्ञ में सुरा, सम्पत्ति और स्त्री तीनों चीजें प्रचुर मात्रा में मिल जाते थे. यह यज्ञ कई कई महीनों तक चलता था. अतः एक बार शुरू होने पर ब्राह्मणों का कई महीनों का खाने पीने और ऐयाशी करने का पक्का प्रबंध हो जाता था. हर यज्ञ में सैंकड़ों पशु काटे और खाये जाते थे. अतः हर राजा को यही सलाह दी जाती थी कि वह अश्वमेध यज्ञ करवाये. **चौथी सदी के गुप्त काल को इसी लिये स्वर्ण युग कहा जाता है क्योंकि उस समय के राजाओं ने खूब अश्वमेध यज्ञ किये थे.** प्रजा के लिये उन्होंने चाहे कुछ नहीं किया लेकिन वे फिर भी स्वर्ण युग के राजा कहलाये.

अश्वमेध यज्ञ की विधि

घोड़े का चुनाव : इस यज्ञ की शुरुआत करने में सबसें महत्वपूर्ण काम होता था घोड़े का चुनाव. ऐसा घोड़ा चुना जाता था जो "रैतोधा" अर्थात वीर्य सींचने में पूर्ण समर्थ हो. बूढ़े अथवा कमजोर बीमार घोड़े को यज्ञ के लिये नहीं चुना जाता था. यज्ञ के अंत में इसी घोड़े को काट कर इन्हीं ब्राह्मण ऋत्विकों ने खाना होता था. अतः ऐसा घोड़ा चुना जाता था जिसमें बढ़िया माँस और चर्बी निकल सकती हो. जैसे कसाई दूर सें देख कर ही पशु के माँस और चर्बी का अंदाजा लगा लेता है वैसे ही यह ब्राह्मण ऋत्विक होते थे. नित्य यज्ञ में पशु काटने वाले इन ब्राह्मण कसाइयों को पशु की स्थिति का पूरा ज्ञान होता था. इसीलिए कबीर साहिब बोले : पांडे निपुण कसाई साधो, पांडे निपुण कसाई!!

परिक्रमा और लीद यज्ञ : घोड़े का चयन करने के बाद ब्राह्मणों का पूरा गिरोह उस घोड़े को लेकर निकल लेता था. घोड़े के साथ पूरी सेना चलती थी. घोड़ा किसी के खेत अथवा घर में कहीं भी मूंह मार ले कोई उसे रोकने की हिम्मत नहीं कर पाता था. कहने को तो घोड़ा पूरी पृथ्वी का चक्कर लगा कर लौटता था मगर घोड़ा आसपास के इलाके में घूमता रहता था और कुछ दिन बाद वापिस आ जाता था. जहां जहां घोड़ा लीद करता था वहां वहां ब्राह्मण आग जला कर वेद मंत्र पढ़ते हुए यज्ञ करने बैठ जाते थे. (अल.65) अतः पैदल चलते हुए तथा जगह जगह लीद यज्ञ करते हुए घोड़े की पूरी उम्र में भी धरती का चक्कर लगाना सम्भव नहीं है.

वैसे भी ब्राह्मण और आर्य समाज "कौन राजा है" इस प्रश्न सें परेशान नहीं हुए. अतः कोई भी घोड़ा छोड़े उन को अंतर ही नहीं पड़ता था. शायद एकाध बार ही ऐसा हुआ कि यज्ञ का घोड़ा रोका गया. एक बार अर्जुन का घोड़ा उसके नाजायज सम्बंधों सें पैदा चित्रांगदा के पुत्र ब्रभुवाहन ने रोका. दूसरी घटना तब हुई जब राम का घोड़ा भगवन बाल्मिकी के शिष्यों लव कुश ने रोका. दोनों ही अवसरों पर यज्ञकर्ता मारा गया. ब्रभुवाहन ने अर्जुन की गर्दन काट दी और राम की मौत लव कुश के हाथों हो गई. दोनों ही केसों में उनकी त्यागी हुई पत्नियों की प्रार्थनाओं पर उन्हें दुबारा जीवन दान मिला. अर्जुन का उपचार नाग राजा ने किया तो राम को भगवन बाल्मिकी ने जीवनदान दिया. (महात्मा दर्शन रत्न रावण का प्रवचन)

अश्व मिलाप : जब घोड़ा वापिस आ जाता था तो उसे नहला धुलाया जाता था. यजमान की पत्नि को भी सजाया संवारा जाता था. अगर यजमान के एक सें अधिक पत्नियां होती थीं तो सबसें प्रमुख पत्नि को इस काम के लिए संवारा जाता था. जैसे दशरथ के केस में कौशल्या को इस काम के लिये चुना गया था. उस रात

यजमान की पत्नि घोड़े के साथ संभोगरत रहती थी. दयानन्द ने भी माना है कि ऐसी विधि सें एक बार गोरखपुर के राजा की पत्नि मर गई थी.

बलि : अगर "अश्व मिलन" में रानी नहीं मरती थी तो अगले दिन घोड़े को काटने के लिए रानी के हाथ में तलवार अथवा अन्य हथियार दिया जाता था और रानी को एक वार में घोड़ें का सिर धड़ सें अलग कर देना होता था. वैसे कौशल्या ने भी अगले दिन तीन वार में घोड़े को काटा था. फिर घोड़े की चर्बी यज्ञ की आग में भूनी जाती थी जिसे यजमान ने सूंघना होता था. बाद में घोड़ें के टुकड़े टुकड़े करके उन्हें यज्ञ की आग में पकाया जाता था और शराब के साथ खाया जाता था. उसके बाद बाकी पशुओं को काटा जाता था और यज्ञ की आग में भून कर खाया जाता था.

अश्लील नाटक : अंत में एक अत्यंत निर्ल्लज और अश्लील नाटक होता था जिसमें यजमान को छोड़ कर सभी लोग रानियों, दासियों, रखैलों और अन्य स्त्रियों सें वहीं सबके सामने यौन सम्बंध बनाते थे. सबसें प्रमुख रानी यज्ञ के प्रमुख ऋत्विक सें यौन सम्बंध बनाती थी तो बाकी सभी अन्य ऋत्विकों सें सम्बंध बनाती थीं. पूरे नाटक का वर्णन अध्याय राम जन्म वृतांत में दिया गया है.

गायत्री मन्त्र उच्चारणः राजवाड़े के अनुसार अश्लील नाटक के समय जो मन्त्र बोले जाते थे उन्हीं मन्त्रों में सें गायत्री मन्त्र निकला है. गायत्री मन्त्र बालने के बाद यज्ञ समाप्त हो जाता था.

6.6 यज्ञ दक्षिणा : सम्पत्ति बनाने का साधन

ब्राह्मणों के लिए यज्ञ सुरा, सुन्दरी ही नहीं बल्कि सम्पत्ति अर्जित करने का मुख्य साधन थे. सही कहा जाए तो यज्ञ ब्राह्मणों एवं उनके देवों के लिए धंधा था. हर प्रकार की सुख सुविधा प्राप्त करने का धन्धा. जैसे गुन्डे बदमाश अपने धन्धे में दखल देने वाले को मार डालते हैं, वैसे ही ब्राह्मण और उनके देव होते थे. जो भी उनके सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति कमाने वाले यज्ञों की राह में रोड़ा बनते थे, उन्हें बेरहमी सें मार दिया जाता था.

यज्ञ सें प्राप्त सुरा, सुन्दरी तथा सम्पत्ति के लिए ब्राह्मणों और उनके देवताओं का आपस में तथा दूसरों सें घमासान होता ही रहता था. मुफत का माल पाने के लिए सभी कुतों की तरह लड़ते झगड़ते थे. ब्राह्मण ग्रन्थ ऐसी घटनाओं सें भरे पड़े हैं. ऐसा ही एक किस्सा शिव का है. उसके ससुर दक्ष ने यज्ञ किया मगर उसने न तो शिव को बुलाया और न ही उसे यज्ञ के माल (चढ़ावे) में सें कोई हिस्सा दिया. यज्ञ में भाग न मिलने पर उसने अपने चेले वीरभद्र के नेतृत्व में अपने आदमियों को भेजा. उन्होने जाते ही यज्ञ तहस नहस कर दिया. वहां आए लोगों को मार दिया. यहां तक कि यज्ञ वेदी को तोड़ कर उसमें पेशाब तक कर दिया. फिर उसने "यज्ञ मण्डप में यज्ञ पशुओं को जैसे काटा जाता है, उसे देख कर उसी प्रकार दक्ष रूप उस यजमान पशु का सिर धड़ सें अलग कर दिया.'' और सिर को यज्ञ की दक्षिण अग्नि में डाल दिया. (भागवत पुराण स्कन्ध 4 अध्याय 4 सें 6 तक)

यह कथा क्या दर्शाती है? यही कि यज्ञ कोई धार्मिक अनुश्ठान नहीं होते थे. देवताओं के मन में यज्ञों के प्रति कोई आदर की भावना नही होती थी. अगर होती तो शिव के भेजे आदमी यज्ञ वेदी में क्यों मूतते.

ऐसी ही अन्य कथा राजा वेण की है. वैसे तो वह मनु का वंशज था लेकिन उसके मन में दयाभाव था. उसे यज्ञों में की जा रही हिंसा मान्य न थी. अतः राजा बनते ही उसने यज्ञों पर पाबंदी लगा दी. ब्राह्मणों का धंधा वंद हो गया. उन्होंने राजा वेण को डंडों सें पीट पीट कर मार दिया. बाद में उसके वंशज पृथु को राजा बना दिया. उसने कुछ समय तो ब्राह्मणों का धंधा चलने दिया परन्तु बाद में वह भी जैन धर्म में प्रवर्तित हो गया. उसने भी यज्ञ बंद कर दिए. उसने एक कदम और आगे बढ़ कर वर्ण व्यवस्था पर भी पाबंदी लगा दी. (आप्टे : वेण) उसका हश्र भी वही हुआ जो उसके पिता का हुआ था.

ब्राह्मणों ने यज्ञों में धन पाने के लिए एक सें बढ़ कर एक नियम बनाए. इसी तरह उसने यह भी आदेश दिया है कि अगर यज्ञ में किसी चीज की कमी रह गई हो तो राजा वह वस्तु वैश्य या शूद्र सें जबरदस्ती ले ले. (5.112,113) मनु स्मृति (11.38—40) थोड़े धन वाला यज्ञ न करवाए. ब्राह्मणों को यज्ञ में दक्षिणा न देने वाले का यज्ञ व्यर्थ जाता है. उसे यज्ञ का कोई लाभ नहीं मिलता. मनु स्मृति (7.79) का आदेश है कि राजा बड़ी बड़ी दक्षिणा वाले यज्ञ करे. ऐसे यज्ञ बार बार करे. ब्राह्मणों को धर्म के लिए स्त्री, घर, पलंग, वाहन आदि भोगों के साधन दे. और धन भी दे. अर्थात धर्म के नाम पर ब्राह्मणों को औरतें, गाड़ियां, बंगले तथा रूपया पैसा दे ताकि वे भोग यानि ऐश कर सकें. ब्राह्मण—धर्म का तो अर्थ ही यही हैं कि ब्राह्मणों की ऐश होगी तो धर्म फूले फलेगा. अगर ब्राह्मणों की ऐयाशी बन्द हो गई तो धर्म का नाश हो जाएगा. और तब किसी भगवान को अवतार लेना पड़ेगा.

मनु स्मृति (7.79) ने आगे आदेश दिया है कि गैर—ब्राह्मण को दिया दान साधारण फल देता हैं. ब्राह्मण को दिया गया दान दोगुना फल देता है. विद्वान ब्राह्मण को दिया गया दान 10 लाख गुणा फल देता है और वेदिक यज्ञ करने वाले ब्राह्मण को दिया गया दान इतना फल देता है कि उसकी गिनती नहीं हो सकती. अगर अग्नि न

जले तो ब्राह्मण के हाथों में तीन गुणा आहुतियां दे क्योंकि अग्नि भी ब्राह्मण ही है. फिर ब्राह्मणों को आग्रह करके माल पूए खिलाए. (3.209,212)

जैसे दुकानदार, व्यापारी अथवा उद्योगपति छोटे बड़े होते हैं और उनका नियम होता है कि हर बड़ी मछली छोटी को खा सकती है, वैसा ही व्यापारिक नियम ब्राह्मणों में भी सनातन है. वेद, स्मृतियां बनाने वाले बड़े ब्राह्मण थे अतः उन्होंने वेदों, स्मृतियों में अपने पक्ष के नियम बनाए. दक्षिणा के लिए ब्राह्मण कुत्तों की तरह लड़ते झगड़ते थे. उनके धर्म–ग्रन्थ ऐसी घटनाओं सें भरे पड़े हैं.

वास्तव में ब्राह्मणों का यही तो ''धर्म'' है कि बस उनका धन्धा चलना चाहिए. उसके लिए यह वर्ग माँ को वेश्या और वेश्या को माँ बना सकता है. ब्राह्मण ऋषि अजीगर्त और गालव जैसों के उदाहरणों सें ब्राह्मण–ग्रन्थ भरे पड़े हैं. सभी जानते हैं कि ब्राह्मण अजीगर्त ने पैसों की खातिर अपने बेटे शुनःशेप को यज्ञ में बलि देने के लिए बेच दिया था और जब कोई उस मासूम को यज्ञ–वेदी पर काटने को तैयार न हुआ तो उसने कुछ और धन के बदले में यह काम करना भी ओट लिया था.

बूढे और कोढ़ी ब्राह्मण ऋषि गालव ने एक राजा सें दक्षिणा में उसकी कमसिन बेटी मांग ली फिर उसने उसकी दल्लागिरी करके धन कमाया. उसकी दल्लागिरी की धार्मिक–कथा के आगे आज के फिल्मी दल्ले भी फीके पड़ जाते हैं. अस्तु.

अध्याय 7

गाय भक्षण सें गाय पूजा का पैंतरा

गोमाँस अछूतपन का मूल : बाबा साहिब अम्बेडकर के अनुसार गोमाँस खाना भी अछूतपन का कारण है. जैसे आज के समय में लोग बकरे अथवा मुर्गे का माँस खाते हैं एक समय था जब पूरा आर्य समाज गाय का माँस खाता था. जैसे हम आजकल भीख में रोटी या मिठाई दान करते हैं उनके समाज में माँस खाना इतना अधिक प्रचलित था कि लोग भीख मांगने वालों को दान में माँस दे देते थे. इसलिए बौद्ध तथा जैन भिक्षु भिक्षा में मिले माँस को खा लेते थे. भिक्षुओं को स्वयं पशु मारने और माँस पकाने की मनाही थी जबकि ब्राह्मण यज्ञों व अन्य कर्मकांडों में धड़ल्ले सें गाय बैल आदि पशु मारते थे और उनका माँस खाते थे. जैन तथा बौद्ध भिक्षुओं द्वारा स्वयं पशु हिंसा न करना ब्राह्मणों सें एक कदम आगे था. इस बात सें समाज उनकी ओर झुका.

बहुत सालों तक तो ब्राह्मण अपने पुराने ढंग सें चलते रहे. बुद्ध धर्म के इन करुणा संदेशों के विरोध में ब्राह्मणों ने फतवा दिया कि यज्ञ में पशु मारना और खाना तो अहिंसा ही है क्योंकि यज्ञ में की गई हिंसा तो अहिंसा ही होती है. इसके दो कारण ब्राह्मण देते थे एक तो यह कि समस्त पशु यज्ञ में मारने के लिये ही ब्रह्मा ने बनाये है तथा दूसरा यह कि यज्ञ में काटे जाने पर पशु स्वर्ग में जाता है तथा उसकी हड्डियों का कपूर बन जाता है. उन्होंने वेदों को भी ईश्वर द्वारा रचित बता दिया और गाय खाना ईश्वर का आदेश बना दिया.

लेकिन समय के साथ ब्राह्मणों के अनुयाइयों की संख्या कम होती गई. ऐसे समय में सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपना कर अनावश्यक हिंसा बन्द करने का संदेश घर घर पहुंचा दिया. ब्राह्मणों का धन्धा लगभग चौपट हो गया. तब उन्होंने वह किया जो भारत के इतिहास में कभी नहीं हुआ था. ब्राह्मणों ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या करके राज सत्ता पर कब्जा कर लिया. इससें पहले तक ब्राह्मण केवल दान पर गुजारा करते थे. अब वे राजा बन गये थे. भारत के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि कोई गैर–शूद्र राजा बना था और वह भी ब्राह्मण! राजा बनने के साथ ही उन्होंने एक जबरदस्त गुलगंडी खाई. **उन्होंने गाय मारना और गोमाँस खाना पाप घोषित कर दिया.** इस समय तक अधिकतर जनता गाय का माँस बिना रोक टोक के खाती थी क्योंकि ब्राह्मण धर्म का असर उन पर अभी तक मौजूद था. भिक्षु भिक्षा में मिले गोमाँस को खा लेते थे.

अब सत्ता क्योंकि ब्राह्मणों के हाथ में आ गई थी उन्होंने गाय खाने वाले बौद्धों को मारना शुरू कर दिया. उनके विरुद्ध प्रचार करना शुरू कर दिया. सत्ताशीन ब्राह्मणों के इलावा दूसरे ब्राह्मण गोमाँस खा रहे थे. इसलिए आज भी मनुस्मृति में गाय खाने के नियम मिल जाते हैं. सत्ता ब्राह्मणों के हाथ में आने सें बौद्ध धर्म को न केवल राज्य की मदद बंद हो गई बल्कि ब्राह्मण सेनाओं ने बौद्धों का कत्लेआम भी शुरू कर दिया. इसके साथ ही ब्राह्मणों ने दण्ड भेद की नीति अपनाते हुए बौद्धों को गोहत्यारे, पापी कहना शुरू कर दिया. सत्ताशीन होने के कारण प्रचार के साधन उनके पास थे. अतः गोमाँस खाने वाले बौद्धों को उन्होंने पापी और अछूत घोषित कर

दिया. आज भी अछूतों में ऐसे लोग हैं जो गाय मारते तो नहीं लेकिन गोमाँस सें परहेज नहीं करते. लेकिन पंच-गौड़ ब्राह्मण जिंदा और मुर्दा दोनों प्रकार की गायों को माँस खा लेते हैं. (पहेली 13 पृ.119)

7.1 गोमांस : आर्यों का प्रिय भोजन

कहावत है "यथा राजा तथा प्रजा" यानि जैसा राजा होगा वैसी प्रजा होगी. अर्थात जैसा आचरण बड़े लोग करेंगे वैसा ही आचरण आम जनता करेगी. पुराने समय में ब्राह्मण ऋषि राजा सें भी बढ़कर होते थे. अतः जैसा वे चाहते थे वैसा ही आचरण्र राजा को तथा प्रजा को करना पड़ता था. वेण या पृथु जैसे राजा अगर ब्राह्मणों का विरोध करने की कोशिश करते थे तो पीट पीट कर मार दिये जाते थे. अतः राजा को मजबूरन ऋषियों के आदेशानुसार आचरण करना पड़ता था.

मात्र रंतिदेव जैसा राजा जो रोजाना सैंकड़ों गायें काट कर ब्राह्मणों को खिला देता था इनके कोप सें बच पाता था. जो कोई भी उनके गोमांस भक्षी यज्ञों का विरोध करता था महाराज रावण की तरह मार दिया जाता था अथवा महाराज हरिण्यकश्पु की तरह सरेआम चीर दिया जाता था. इसलिये प्राचीन भारत में ब्राह्मण ऋषियों का अनुसरण करते हुए आम जनता को भी गोमाँस खाना पड़ता था.

महावीर जैन ने हर प्रकार की हिंसा का विरोध किया. उन्होंने "अहिंसा परम धर्म" का संदेश दिया. भगवन बुद्ध ने हिंसामयी यज्ञों की जगह सादे हवन करने का संदेश दिया. उन्होंने राजा प्रसेनजित द्वारा यज्ञ के लिये बांधे गये अढाई हजार पशु आजाद करवाये जिनमें 1500 गायें और बैल थे. ऐसे ही कूटदन्त नामक ब्राह्मण ने यज्ञ के लिए सैंकड़ों गाय बैल और बछड़े यूपों के बांध रखे थे. उसने भगवन बुद्ध को यज्ञ में आमंत्रित किया. उन्होंने उस ब्राह्मण को भी निरीह पशुओं के प्रति करुणा दिखाने का संदेश दिया और उस ब्राह्मण ने सभी पशुओं को आजाद कर दिया. (गोमाँस 83) यह तो शुक्र है कि इन लोगों ने भगवन बुद्ध को बुलाया. कहीं इन्होंने ब्राह्मण देव इन्द्र को बुला लिया होता तो .... तो उनके पशु कम पड़ जाते पर इन हैवानों की भूख शांत नहीं होती!!

लेकिन जैसे जैसे जैन और बौद्ध धर्म के अनुयाईयों की संख्या बढ़ी, गाय खाने वाले ब्राह्मणों के प्रति लोगों की नफरत बढ़ने लगी. तब ब्राह्मणों ने एक जोरदार गुलगण्डी (summersault) खाई. उन्होंने न केवल गाय खाना छोड़ दिया बल्कि उन्होंने गाय को माँ बना डाला. उसे पवित्र घोषित कर दिया. गोहत्या को ब्रह्महत्या के बाद सबसें बड़ा पाप घोषित कर दिया. उन्होंने हर प्रकार का माँस खाना पाप बना दिया. यह कार्य उन्होंने सम्राट ब्रहदर्थ की हत्या के बाद पहली सदी ईसा पूर्व में किया. बौद्धों पर अमानवीय जुल्म ढाये. वे लोग घर बार छोड़ कर भागे. खेती का साधन उनके पास नहीं रहे. माँस उन्हें आसानी सें उपलब्ध हो जाता था. ऐसे माँस भक्षी लोगों विशेषकर गोमाँस भक्षी लोगों को ब्राह्मणों ने अछूत घोषित कर दिया. अगर ब्राह्मणों ने गोमाँस खाना न छोड़ा होता तो आज पूरा ब्राह्मण समाज अछूत होता.

ब्राह्मणिक आर्यो में गाय का माँस खाना इतना अधिक प्रचलित था कि पूरे भारत के ब्राह्मणों को गोहत्या का काम छोड़ते कई बरस लगे. दक्षिण भारत के ब्राह्मणों ने तो हर्श काल सें पहले ही गाय खाना छोड़ दिया मगर उत्तर भारत के ब्राह्मणों ने बहुत बाद में गाय खाना छोड़ा. (गोमाँस 84) ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ आदि में भेड़ बकरी मार कर खाना तो कबीर रैदास काल तक जारी था. इसीलिए गुरू कबीर ने उन्हें निपुण कसाई बताया.

लोगों ने महावीर स्वामी तथा भगवन बुद्ध की शरण में जाकर ब्राह्मणों और उनके देवों द्वारा अन्धाधुंध गोहत्या के विरुद्ध आवाज उठानी शुरू कर दी थी. इसलिए जब राम के पूर्वज इक्ष्वाकु के यज्ञ में ब्राह्मणों ने लाखों निरीह गायें काटीं गईं तो लोगों ने उसे धर्म सें गिरा दिया और उसका सत्कार करना छोड़ दिया. (गोमाँस 85)

ब्राह्मणिक आर्यो में गाय का माँस खाना इतना अधिक प्रचलित था कि न केवल सैंकड़ों की संख्या में यज्ञों में गायें काटी जाती थीं बल्कि गाय के माँस की बीच बाजार दुकानें होती थीं जहां पैसे के बदले में गोमाँस बेचा जाता था. (गोमाँस 81) जैसे आजकल बकरे काटने के लिए बुचड़खाने होते हैं वैसे ही सत्ययुग में आर्य गाय काटने के लिए अलग सें पक्का स्थान बनाते थे. गाय काटने के ऐसे स्थानों को **"गोघातसूना"** कहा जाता था. जिस छुरे/परशु सें गाय काटी जाती थी उसे **"गोभिकर्तन"** कहा जाता था. गाय मरने वाले को **गोघातक** कहा जाता था. प्राचीन समय में **केवल ब्राह्मण ही गोघातक होते थे.** (नजुट्ठ जातक 216) (गोमाँस 82) **"गोघातसूना"** के बाहर कुत्ते हड्डियों के लालच में घूमते रहते थे. (ऋग्वैदिक आर्य) लेकिन यज्ञों के पास कुत्तों के घूमने का उल्लेख नहीं मिलता है. इसका अर्थ है कि गोमेध अथवा अश्वमेध के यज्ञ मण्डप में कुत्तों के लिये भी हड्डी नहीं बचती थी.

मझिम निकाय में दिये गये वर्णन सें स्पष्ट होता है कि "गोघातसूना" में गोघातक मारी गई गाय की खाल बड़ी चतुराई सें उतारते थे कि कहीं खाल पर कोई कॅट न लग जाये. खाल इतनी सफाई सें उतारी जाती थी कि अगर गाय के पिंजर पर वापिस रखी जाये तो कहा जा सके कि गाय अभी तक खालयुक्त है अर्थात मारी नहीं गई है.

जैन ग्रन्थ "उपासगदसा" सें विदित होता है कि गोमाँस इतना अधिक और आम उपलब्ध था कि लड़कियां अपने पीहर सें भी गोमाँस मंगवा लेती थीं. इस जैन ग्रन्थ में कथा है कि एक सेठानी ने अपने पीहर सें गाय के दो बछड़ों / बछियों का माँस मंगवाया था. हो सकता है जैसे आजकल त्यौहार पर विवाहित बेटी को मिठाई आदि देने का रिवाज है वैसे ब्राह्मणिक आर्यों में गोमाँस का तोहफा उपहार देने का रिवाज रहा हो.

पुत्र प्राप्ति के लिये भी गोमाँस खाने का विधान ऋषियों ने बनाया था. वृहदारण्यक उपनिषद (6.4.18) का आदेश है कि जो स्त्री चाहे कि उसके ऐसा पुत्र पैदा हो जो ज्ञानी हो, लोग उसकी बात सुनें और जो लम्बी आयु वाला हो तो उस स्त्री को चाहिए कि वह बैल या साँड का माँस चावलों के साथ मिला हुआ पुलाव खाये. आदि संकर इस पर टिप्पणी करते हुए कहता है कि माँस व्यस्क पशु का होना चाहिए. छोटे बछड़े का नहीं. (गोमाँस 51)

ऋग्वेद में गाय का माँस खाने के बारे में अनेकों ऋचायें भरी पड़ी हैं जो यह दर्शाती हैं कि लोग गाय का माँस न केवल स्वयं खाते थे बल्कि अपने देवों को भी खिलाते थे. स्मृतियों में भी ऐसे ही आदेश दिये गये हैं. कुछ मन्त्र इस प्रकार सें हैं:

- हे वृशकापि की पत्नि, (इन्द्र की पुत्रवधु) तू उत्तम पुत्र वाली हो, तेरे बैल इन्द्र खा जाये. इन्हें वह यज्ञ की हवि बना कर वह भक्षण करे. (ऋग10.86.13) (गोमाँस 39)
- जिसमें घोड़े, सांड, जवान बैल, गाय और भेड़ दिये गये और हवन किये गये मैं उस अग्नि के गुण गाता हूँ (क्योंकि इससें हमें गाय बैल और भेड़ को माँस खाने को मिलता है) (ऋग 10.91.14)
- हे इन्द्र, पूशा और विष्णु तेरे लिये सैंकड़ों भैंसे मार कर पकाते हैं तथा तीन घड़े शराब तैयार करते हैं. (ऋग 6.10.11)
- माँस खाने, शराब पीने और (अपनी या पराई स्त्री सें) संभोग करने में कोई दोष नहीं है. (मनु 5.56)
- जो मनुष्य श्राद्ध और मधुपर्क में माँस नहीं खाता वह मर कर 21 बार पशु के रूप में पैदा होता है. (मनु 5.35)
- मधुपर्क, यज्ञ, श्राद्ध तथा अन्य देव कार्य में पशु मारा जाना चाहिए. (मनु 5.41)
- प्रोक्षण (पानी सें धुला हुआ) किये गए पशु का माँस यज्ञ में खाना चाहिए. ब्राह्मण का जब जी करे माँस खा ले. रोजाना खाये जाने वाले जीवों (गाय, बैल, भेड़ बकरी आदि) को खाने में कोई बुराई नहीं है क्योंकि ब्रह्मा ने जीव और उन्हें खाने वालों, दोनों को इसीलिए बनाया है. (मनु 5.27,30)
- खरीद कर, स्वयं मार कर, या किसी द्वारा दिये गये माँस को देवताओं और पितरों को देने में कोई बुराई नहीं है. (मनु 5.32) यानि ब्राह्मणिक देवों को कैसा भी मांस खिला दो, सब भक्ष्य है.
- पराशर ऋषि का कहना है कि विवाह के समय वर का स्वागत करने वाला व्यक्ति तलवार लेकर आये और तीन बार गाय! गाय!! गाय!!! बोल कर गाय को काट दे क्योंकि विवाह और यज्ञ में गाय को मारना अनिवार्य है. (गोमाँस 49) अनेक जातियों में आजकल इस प्रथा के अवशेष मिलते हैं. दूल्हा वधु द्वार पर आकर तोरण मारता है. दलित जातियों में लकड़ी की पांच चिड़ियां बनाई जाती हैं तथा दूल्हे को बीच वाली बड़ी चिड़िया के तलवार लगानी होती है. हो सकता प्राचीन काल में पराशर के आदेश अनुसार सचमुच की गाय मारी जाती रही हो!
- गाय तो फिर भी साफ सुथरा पशु है ब्राह्मण ऋषि तो भूख लगने पर कुत्ते की अंतड़ियां तक को पका कर खा जाते थे. (ऋग4.18.13)(मनु 10.106)
-

7.2 श्राद्ध में गोमेध

ब्राह्मणों का सनातन उद्देश्य सुरा, सुन्दरी और सम्पत्ति अर्जित करना रहा है. समय बदला मगर उन्होंने इन तीनों वस्तुओं को सनातन रखा है. मात्र उन का स्वरूप बदला है. पहले सुरा के नाम पर वे शराब और मीट का डट कर सेवन करते थे. आजकल वे खीर पूरी पर जोर देते हैं. माँस का भक्षण मात्र काली, भैरों आदि के कुछेक मन्दिरों तक सीमित रह गए हैं. जहां पहले ब्राह्मण किसी की भी माँ बहन पर हाथ डाल लेते थे और यज्ञ में स्त्री गमन अनिवार्य था. अब यह "सुन्दरी'' का खेल रास लीलाओं और देवदासियों के रूप में चल रहा है. सम्पत्ति तो ब्राह्मण–धर्म का दूसरा नाम है ही. ब्राह्मण सम्पत्ति अथवा धन के लिए धर्म के नाम पर कुछ भी करने को तैयार है. आज अगर ब्राह्मणों को ऐसा लगे कि राम की बजाए महात्मा रावण की पूजा करने में ज्यादा धन लाभ है तो अभी सारे मन्दिरों सें राम की मूर्तियां बाहर सड़क पर आ जाएंगी. किसी जमाने में इन्द्र उनका सबसें बड़ा भगवान होता

था. आज पूरे ब्राह्मणिक जगत में उसें कोई जानता ही नहीं है. जैसे ही ब्राह्मणों ने यज्ञ में माँस खाना छोड़ा, साथ के साथ उन्होंने इन्द्र को भी उठा कर बाहर फैंक दिया.

ऐसा ही पर्दा उन्होंने श्राद्ध में माँस भक्षण के नियम को लेकर किया है. ब्राह्मणों का संविधान कहे जाने वाली मनुस्मृति के अनुसार श्राद्ध में ब्राह्मणों को माँस परोसना अनिवार्य है. मनु के अनुसार

- ☞ ऊंट को छोड़ कर एक ओर दांतों वाले सभी पशु भक्ष्य अर्थात खाये जा सकते हैं. (5.18)
- ☞ अगर कोई ब्राह्मण अथवा यजमान श्राद्ध के समय विधि पूर्वक माँस नहीं खाता तो वह 21 बार पशुयोनि में पैदा होता है. (5.35).
- ☞ ब्राह्मणों का गो-माँस खाना अनवरत चलता रहे, इसके लिए उन्होंने यथोचित नियम बनाए. गौतम धर्म सूत्र (7.16.25) के अनुसार **श्राद्ध में गो-माँस खाने सें पितर एक साल तक तृप्त रहते हैं.** (समु 3.80) **इसका अर्थ यह हुआ कि यजमान हर साल श्राद्धों में ब्राह्मणों को गो-माँस खिलाता रहे ताकि उनके पितर तृप्त रहें.**
- ☞ वायु पुराण के अनुसार गोमाँस खाकर पितर अधिक प्रसन्न होते हैं.
- ☞ मार्कण्डेय पुराण के अनुसार गाय का माँस खाने सें पितर 10 महीने तक तृप्त रहते हैं. (गोमाँस 71)
- ☞ श्राद्ध में गो-माँस के अतिरिक्त अन्य जानवरों का माँस खाने सें पितरों को कितनी तृप्ति मिलती है, उसकी सूचि इस प्रकार सें हैः (मनु 3.267—272)

सूअर = 10 मास	पक्षी = 5 मास	बकरी = 6 मास	कांटे वाली मछली = अनंत काल
मछली = 2 मास	बकरा = 12 मास	चित्र मृग = 7 मास	गेंडा = अनंत काल
हिरण = 3 मास	खरगोश = 11 मास	काला मृग = 8 मास	लाल बकरा = अनंत काल
मेढा = 4 मास	कछुआ = 11 मास	रूरू मृग = 9 मास	भैंसा = 12 मास

मरने के बाद कोई पितर बनता भी है या नहीं, कोई नहीं जानता. अतः श्राद्ध में ब्राह्मणों को गो-माँस खिलाने सें पितर तृप्त होते हैं या नहीं, कोई नहीं जानता परन्तु इतना निश्चित है कि श्राद्ध में ब्राह्मणों गो-माँस खाकर खूब तृप्त होते थे.

याज्ञवल्क्य कहता है कि गाय और बैल दोनों पवित्र हैं इसलिए दोनों का माँस खाया जा सकता है. (गोमाँस 47)

7.3 ब्राह्मण ऋषि और उनका प्रिय मधुपर्क

प्राचीन काल में ब्राह्मणों का सबसें प्रिय भोजन **मधुपर्क** था. बाबा साहिब के अनुसार मधुपर्क का अर्थ है किसी के आने पर आचमन के लिए मधु अर्थात शहद उंडेलना. आचमन में मेहमान के चुल्लू में पीने की वस्तु डाली जाती है जिसे वह चुल्लू से ही पी लेता है. समय के साथ साथ इसमें अन्य वस्तुओं को मिलाना भी शुरू हो गया. पहले पाँच फिर नौ पदार्थ : घी, दही, शहद, तेल, खली आदि मिलाये जाने लगे.

फिर मानव गृह्य-सूत्र का समय आया जिसने आदेश दिया कि वेद का कहना है कि मधुपर्क बिना माँस के नहीं बनाया जा सकता. प्रश्न उठा कि माँस किस का हो! आर्य ऋषि गाय के माँस के विशेष इच्छुक थे. अतः नियम बना कि गाय न मिले तो बकरे अथवा हिरण का माँस मिलाया जाए. इस आदेश का आधार बना ऋग्वेद (8. 101.5) जो कहता है कि मधुपर्क बिना माँस के न हो. (पहेली 121) हिरण्य गृह्यसूत्र ने तो स्पष्ट आदेश दिया कि केवल गाय का मांस ही खाया जाये. (आर्य नीति 33)

आपस्तम्ब सूत्र का आदेश है कि जब वेदज्ञ ब्राह्मण, आचार्य अथवा स्नातक (वेद पढ़ने वाला विद्यार्थी) मेहमान बन कर आयें तो उसके लिए गाय मार कर उसके माँस का मधुपर्क बनाया जाए. (समु 6.154) इस सूत्रकार का कहना है कि क्योंकि गाय और बैल पवित्र हैं इसलिए इन्हें खाया जाना चाहिए. जैसे आजकल मिठाई का प्रशाद पवित्र मानकर खाया जाता हैं उस समय ब्राह्मण गोमांस को प्रशाद की तरह खाते थे.

पंजाब में इस प्रथा के अवशेष अब भी मौजूद हैं. वहां घर आए मेहमान के स्वागत में दरवाजे की चौखट पर तेल डाला जाता है तथा मेहमान का मूंह गुड़ शक्कर अथवा मिठाई सें मीठा करवाया जाता है. उसके बाद ही मेहमान को अंदर लाया जाता है. अभी तक पंजाब में मेहमान के आने पर मुर्गा मीट न बनाना मेहमान का अपमान समझा जाता है.

मानव गृह सूत्र (1.9.19) के अनुसार गाय को मार कर भिन्न भिन्न गोत्र वाले चार ब्राह्मणों को खिलाया जाए. सूत्र 21 का आदेश है : **नामाँसो मधुपर्क इति श्रुतिः** अर्थात वेद की आज्ञा है कि बिना माँस के मधुपर्क बन

ही नहीं सकता. आश्वलायन गृहसूत्र (1.24) के अनुसार ना माँसो मधुपर्क भवति. अर्थात बिना माँस के मधुपर्क नहीं बनाया जा सकता. (गोमाँस 47) अतिथि के आने पर गाय मारना अनिवार्य था इसलिए मेहमान को **'गोघ्न' गाय मरवाने वाला** भी कहा जाता था.

अतिथि यानि ब्राह्मण, ऋत्विक, राजा, ससुर चाचा और मामा के आने पर गाय का मधुपर्क बनाया जाये. याज्ञवल्क्य (1.110) के अनुसार केवल उसी राजा को मधुपर्क खिलाया जाये जो क्षत्रिय हो. मनु (3.119) के अनुसार शूद्र राजा को छोड़ शेष सभी जाति के राजाओं को मधुपर्क खिलाया जा सकता है. (गोमाँस 112)

लगता है कि महाकवि भवभूति के समय तक मधुपर्क में गोमाँस का प्रचलन कुछ कम हो गया था. इसलिए उन्होंने अपने नाटक "उत्तर रामचरित" में यह दर्शाया है कि राम के कुलगुरू वशिष्ठ के लिए बनाये गये मधुपर्क में तो दो साल की कल्याणिका नामक बछिया काट कर पकाई गई लेकिन जनक के आने पर केवल दही और शहद का ही मधुपर्क बनाया गया क्योंकि जनक गोमाँस नहीं खाता था.

कृष्ण जब रुक्मणि को लेकर आया तो उस समारोह में बतीस लाख हिरण खरागोश व भेड़ बकरियों के अतिरिक्त एक लाख गायें काट कर माँस पकाया (मधुपर्क बनाया) गया था. (ब्र वै पुराण जन्म खण्ड.105) साथ में ब्राह्मणों द्वारा पांच करोड़ गायें खाने का जिक्र भी है. (ब्र वै पुराण प्रकृति खण्ड.61)

हठयोग प्रदीपिका के अनुसार जो नित्य गोमाँस खाये और शराब चढ़ाए वह कुलीन है शेष सभी कुलकलंकी हैं. (समु 6.154) कूर्मपुराण (2.17.40) भी कहता है जो द्विज यज्ञ और श्राद्ध में गोमाँस नहीं खाता वह पतित है और वह मर कर नरक में जायेगा. (गोमाँस 74)

ब्रह्मावैवर्त पुराण (अ.115) में वर्णन है कि ब्राह्मण पाँच करोड़ गायों को माँस और माल पूऐ खा गये. (गोमाँस 73) गैंडे का माँस खाना केवल ब्राह्मणों का विशेष अधिकार था. (अलबरूनी – भारत 104)

परशुराम जब वशिष्ठ और विश्वामित्र को मिलने गया तो दोनों ऋषियों ने एक तन्दुरुस्त बछिया को काटा और उसे घी में डाल कर मधुपर्क बनाया. (गोमाँस 60) इस तरह (परशु यानि ब्राह्मणों का एक अवतार, वशिष्ठ यानि एक अवतार का कुलगुरू और विश्वामित्र यानि एक अवतार को हथियार सप्लाई करने वाला ऋषि) तीनों ने पेट भर कर गाय का मधुर माँस खाया.

राम के कुलगुरू ने अरदेश दिया कि अपने घर पर ब्राह्मण अथवा राजा अतिथि बन कर आये तो उसके लिए एक बैल या बड़ा बकरा काट कर पकाना चाहिए. (वशिष्ठ.4) (गोमाँस 55) इसलिए जब वशिष्ठ भगवान वाल्मिकी के आश्रम में आया तो उनकी दो साल की बछिया को खा गया. (उ. रामचरित) (समु 6.154) लेकिन जब राम का पूर्वज सत्यव्रत ने उसकी गाय मार ली तो उसने उसके तीन सींग उगने का श्राप दे दिया.

राम का पूर्वज सत्यव्रत था. एक बार उसने ब्राह्मण की पत्नि का अपहरण कर लिया जैसे महाराजा रावण ने सीता का अपहरण किया था. ब्राह्मण की पत्नि अगवा करने के जुर्म में सत्यव्रत के बाप ने उसे घर सें निकाल दिया. वह विश्वामित्र के आश्रम के पास रहने लग गया. विश्वामित्र जब आश्रम सें बाहर जाता तो वह पेड़ पर माँस टांग देता ताकि पीछे सें परिवार वालों को खाना मिलता रहे. एक दिन उसने वशिष्ठ की गाय काट कर माँस वहां टांग दिया. वशिष्ठ ने सत्यव्रत को शाप दिया कि उसके तीन सींग उग आयें. (समु 6.154)

सभी ब्राह्मण ग्रन्थों (वेदों स्मृतियों उपनिश्दों) के रचियता ब्राह्मण ही हैं. इसलिए उन्होंने धर्म के नाम पर ऐसे नियम बनाये जिससें उन्हें अपना प्रिय भोजन गोमाँस और सोम नामक शराब बिना रूकावट के मिलती रहे. इसी कारण मीट खाकर, शराब में मस्त होकर ब्राह्मण सदैव व्यभिचार में रत रहते थे. उनका अनुकरण करते हुए समाज भी पतित हो गया था. (गोमाँस 55)

भारतीय समाज को एहसान मानना चाहिए कि महाराज रावण ने गौ–वंश को ब्राह्मण ऋषियों के चंगुल सें बचा लिया. अगर वे भगवन बुद्ध के मार्ग पर नहीं चलते तो आज गाय और बैल की तस्वीरें केवल सिन्धु साम्राज्य की मुहरों पर ही नजर आतीं.

अध्याय 8

ब्राह्मणधर्म यानि नारी शोषण

अक्सर डींग हांकी जाती है कि आर्य भारत में नारी की स्थिति शिखर पर थी. कुछेक नाम भी दोहराए जाते हैं कि फलां फलां स्त्री ने वेदों के मन्त्र तक भी लिखे हैं. लेकिन वास्तविकता यही है कि भारतीय नारी का जो बदहाल ब्राह्मणधर्मियों के हाथों हुआ है उसकी दुनिया में कहीं और मिसाल नहीं मिलती. ब्राह्मणों का शायद ही कोई ऐसा देवता अथवा ऋषि होगा जिसने कि स्त्री का शारीरिक व मानसिक शोषण न किया हो, जिसने परस्त्री सें बलात्कार या व्यभिचार न किया हो.

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अरूण, वरूण, सूर्य, चन्द्रमा, राम, कृष्ण, इन्द्र, हनुमान, वशिष्ठ, संकर, विश्वामित्र, गांधी कोई भी नाम ऐसा नहीं जिसका दामन स्त्री दमन सें साफ हो. ब्राह्मणों के सभी देव और ऋषि दागदार हैं. उनके ग्रन्थ स्त्री निंदा सें भरे पड़े हैं. उनके प्रचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद सें लेकर मध्यकालीन तुलसी के रामचरित और आधुनिक काल के सत्यार्थ प्रकाश तक सभी ग्रन्थ स्त्री–दमन को धार्मिक कृत्य बताते नहीं थकते.

8.1 सतीत्व की परिभाषा यानि नारी शोषण का ढंग

मानव समाज के कुछ नियम सनातन काल सें आज तक वैसे के वैसे ही चले आ रहे है. उनमें सें एक नियम नारी सतीत्व सें सम्बंधित है. पूरे मानव समाज में ही यह धारणा है कि नारी को मर्यादित होना चाहिए. उसके सतीत्व की रक्षा की जानी चाहिए. आम भाषा में सतीत्व का अर्थ है कि नारी शादी सें पहले किसी भी मर्द सें और शादी के बाद किसी भी गैर मर्द सें यौन सम्बंध न बनाए. इसी नियम की अगली सीढ़ी यह है कि स्त्री मन, वचन और कर्म सें अपने पति को ही समर्पित रहे, किसी अन्य पुरुष को नहीं. साथ ही पुरुष वर्ग की भी यह जिम्मेवारी बनाई गई है कि वह उसके साथ व्यभिचार या बलात्कार न करे.

इस नियम की उल्लंघना को पाप कहा जाता है तथा कानून की नजर सें अपराध कहा जाता है. हर सभ्य समाज ने इसके लिए कानून तथा नियम बनाए हैं तथा दोषियों को सजा देने के प्रावधान भी बनाए हैं.

लेकिन दुनिया में ब्राह्मणधर्म ही ऐसा सिस्टम है जहां "सतीत्व" की परिभाषा को ही बदल दिया गया है. इस धर्म के तथाकथित उच्च वर्ग को "पाप–प्रूफ" घोषित कर दिया गया तथा यह भी नियम बना दिया गया कि जो नारी, कुंआरी या विवाहित, उनसें यौन सम्बंध बनाएगी उनका सतीत्व सलामत रहेगा. सतीत्व तो बड़ी बात है उनका कौमार्य भी भंग नहीं होगा!!

सतीत्व सें सम्बंधित उनके नियम थे :

1. देवों सें यौन सम्बंध बनाने सें सतीत्व भंग नहीं होता :

ब्राह्मणों के सनातन धर्म का यह नियम था कि देवों सें अगर कोई विवाहित स्त्री व्यभिचार करे तो उसका सतीत्व भंग नहीं होता. भारतीय संस्कृति कोश के अनुसार पवन नामक देव ने केसरी की पत्नि अंजनि के हनुमान पैदा कर दिया मगर इससें उसका सतीत्व भंग नहीं हुआ! कुंती ने कुंआरे पन में सूर्य नामक देव सें गर्भवती होकर कर्ण पैदा किया. फिर सूर्य के ही बेटे यम सें गर्भवती होकर युधिष्ठर पैदा किया, फिर इन्द्र नामक देव सें गर्भवती होकर अर्जुन तथा पवन सें गर्भवती होकर भीम पैदा किया. **चार भिन्न भिन्न आदमियों के बच्चे पैदा करके भी वह कन्या ही रही. सतीत्व भंग होने की तो बात ही छोड़ो.!** उसका नाम पंचकन्याओं में आता है. ब्राह्मणग्रन्थ कहते हैं कि उस कन्या का नाम जपने सें पाप कट जाते हैं!

एक सौ दस करोड़ की जनसंख्या वाले पूरे भारतीय समाज में शायद ही कोई ऐसे पापी बाप बेटे होंगे जिन्होंने एक ही स्त्री सें यौन सम्बंध बनाए हों और शायद ही कोई ऐसी नीच स्त्री होगी जिसने बाप और बेटे दोनों सें कुकर्म किया हो. अगर कोई ऐसा नीच काम करले तो निश्चित रूप सें उन लोगों का मूंह काला करके जुलूस निकाल दिया जाएगा **मगर ब्राह्मणधर्म में ऐसा काम करने वाली स्त्री को कन्या कहने का नियम बनाया गया तथा ऐसे पापी पुरुषों को देवता बना कर पूजने के नियम बनाये गए.!!**

यह नियम इसलिए बनाये गये ताकि निर्लज्ज आवारा स्त्रियां आर्य समाज में शान सें घूम सकें.

2. देव किसी स्त्री सें बलात्कार करें तो उस स्त्री को स्वयं को धन्य समझना चाहिए.

ब्राह्मणों के सृष्टि पालक विष्णु ने वृंदा सें बलात्कार करके उन्हें मार दिया. आज अनेकों ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार उनका भगवान लाखों बरसों की तपस्या के बाद मिलता है लेकिन वृंदा तो उस बलात्कारी भगवान को बिना मेहनत के ही पा गई और वह भी सशरीर! अतः वह धन्य हो गई.

इसके उत्तर में तो हम इतना ही कहेंगे कि मोहिनी बना विष्णु काश शिव के हाथ आ जाता! उस भगवान को तथा उसके ब्राह्मण कथाकारों को पता चल जाता कि बलात्कार की पीड़ा क्या होती है!

3. ब्राह्मणों सें कुंआरी लड़की यौन सम्बंध बनाए तो उसका कौमार्य भंग नहीं होता.

ब्राह्मण ऋषि पराशर ने पांडवों की आदि–माता सत्यवती सें बलात्कार किया. उसके एक सांडनुमा बालक व्यास भी पैदा हो गया मगर महाभारत के अनुसार इतना होने पर भी उसका कौमार्य भंग नहीं हुआ तथा एक राजा ने उसके बाप सें मिन्नतें करके उससें शादी की. इस प्रकार ब्राह्मण यह बताना चाहते थे कि उनसें यौन सम्बंध बनाने वाली लड़की का सतीत्व तो क्या भंग होना था उसका तो कौमार्य भी भंग नहीं होगा तथा राजा उसें ब्याह कर ले जाएगा.

4. ब्राह्मणों सें विवाहिता यौन सम्बंध बनाए तो उसका सतीत्व भंग नहीं होता.

ब्राह्मणिक आर्य समाज में जब ब्राह्मण मेहमान बन कर घर आता था तो उस घर की स्त्रियों पर उसका अधिकार मान लिया जाता था. दिन हो या रात उसे स्त्री भेंट कर दी जाती थी. इस सचाई को साबित करने वाली अनेकों कहानियां ब्राह्मणग्रन्थों में मौजूद हैं. सती अनुसुइया के घर त्रिदेव ब्राह्मण का वेश बना कर गए थे. उन्होंने अपना ब्राह्मणिक हक जमाते हुए अनुसुइया सें नंगी होकर उनके सामने आने को कहा और उस सती नारी को उनके आगे नंगा होना पड़ा. महाराज रावण ब्राह्मण का वेश बना कर सीता हरण के लिए गए. उन्होंने सीता के स्त्री अंगों की वैसे ही तारीफ की जैसे एक पति कर सकता है, सीता ने फल पेश करके उस नग्न तारीफ को स्वीकार किया.

"ब्राह्मण" द्वारा "नग्न" कर देने पर भी दोनों में सें किसी के भी "सतीत्व" को आंच भी नहीं आई. एक आम आदमी ने सीता के बारे में कुछ कह दिया तो राम ने सीता को उठा कर जंगल में फैंक दिया. यही ब्राह्मणिक सतीत्व की परिभाषा है!

5. **ब्राह्मण किसी भी स्त्री सें कुछ भी करें उन्हें पाप नहीं लगता, स्त्री को पुण्य मिलता है.**

ब्राह्मणग्रन्थों में ऐसी कहानियां मौजूद है कि ब्राह्मण ऋषियों ने बिना रोक टोक के अनेकों स्त्रियों सें सम्बंध बनाए. किसी भी ऋषि को कभी पाप नहीं लगा. वे अपनी गद्दी पर बने रहे. हर किसी की बहन बेटी को सरे राह पकड़ करे बलात्कार करने वाले ब्राह्मण ऋषि दीर्घतमा जैसे ऐयाश को उसकी पत्नि ने ही नदी में बहा दिया मगर उसका ऋषित्व नहीं छिना. सभी ब्राह्मण ग्रन्थ उसे महात्मा और पूजनीय बताते हैं. यम ने अपनी सौतेली माँ कुन्ती सें व्यभिचार करके युधिष्ठर पैदा किया. ब्राह्मणधर्म में दोनों ही पूजनीय हैं!!

6. **ब्राह्मण को स्त्री पेश करने वाला आदमी असंख्य जन्मों तक स्वर्ग में अप्सराओं के साथ ऐश करता है :** महाभारत में सुदर्शन नामक राजा का किस्सा बयान किया गया है. उसकी पत्नि ओघवती बेहद सुंदर थी तथा पतिव्रता थी. एक ब्राह्मण उसके यहां अतिथि बन कर गया. ब्राह्मण की नीयत उसकी सुन्दरता पर खराब हो गई. उसने ब्राह्मण होने के नाते ओघवती पर अपना हक जताया. पतिव्रता ओघवती को उस ब्राह्मण की वासना का शिकार होना पड़ा. **भीष्म ने यह कथा अपने पोते युद्धिश्ठर को सुनाते हुए कहा,"इस सत्कृत्य के कारण सुदर्शन की कीर्ति त्रिभुवन में फैल गई और उसे इन्द्रलोक प्राप्त हुआ."**

कितना घटियापन है कि एक दादा अपने पोते को ऐसी निर्ल्लज कथा सुना रहा है! साथ में यह भी बता रहा है कि एक पतिव्रता का सतीत्व ब्राह्मण सें व्यभिचार करके बढ़ता ही है कम नहीं होता!!

7. **ब्राह्मणिक अवतारों सें तो ऐश करने के लिए अगर स्त्री अपने पति को नपुंसक भी बना दे तो भी वह सती ही रहती है** : यह कथा तो भारत का बच्चा बच्चा जानता है कि राधा कृष्ण की प्रेमिका रखैल और पता नहीं क्या कुछ थी. रिश्ते में वह उसकी मामी लगती थी. अपने भांजे सें ऐश करने के लिए उसने अपने पति रायण को नपुंसक बना दिया.

ब्राह्मणधर्म में ऐसी औरतें सती कही जाती हैं!! ऐसी औरतों सें ऐश करने वाले भगवान बताए जाते हैं.

8. **अपने पुराने यारों सें यौन सम्बंध बना कर स्त्री का सतीत्व भंग तो क्या होना था वह दूषित भी नहीं होती!** : ब्राह्मणधर्मियों ने अपनी ऐयाशी बेरोकटोक जारी रखने के लिए यह नियम बनाया कि स्त्रियां अपने जारों सें दूषित नहीं होतीं! चाहे वे शादीशुदा हों या कुंआरी हों! यह भी नियम बनाया गया कि माहवारी होने पर स्त्री शुद्ध हो जाती है. अतः गैर पुरुष सें सम्बंध बना कर किसी भी स्त्री का सतीत्व या पतिव्रत कभी भंग नहीं होता.

ब्राह्मणवाद की एक विशेषता यह भी है कि इसमें चरित्रवान नारियां हमेशा ही प्रताड़ित की गईं हैं और वेश्याओं तथा बदचलन स्त्रियों को देवी बना कर पूजा गया है.

ब्राह्मणवाद की सताई नारी : सीता : सीता के विषय में भारतीय समाज के समस्त स्त्री पुरुषों के साथ एक अजीब सी विडम्बना है. हर भारतीय घर यह चाहता है कि उसके यहां सीता सी बेटी पैदा हो लेकिन कोई नहीं चाहता कि उसकी बेटी का सीता जैसा हाल हो. सीता का जीवन बाह्मणवादी समाज में स्त्री की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है. ब्राह्मणवाद ने अगर अरबों नहीं तो करोड़ों स्त्रियों को अवश्य सीता का सा जीवन भोगने पर मजबूर किया है. और उनका यह दमन चक्र अभी थमा नहीं है.

सीता के जीवन का **आरंभ दुखद** है **मध्य दुखद** है और **अंत भी दुखद** है.

- उसके माँ बाप का कोई ठौर ठिकाना नहीं मिलता जिहोंने उसे पैदा करके खेतों में फैंक दिया. जैसे आजकल सड़कों पर अवैध बच्चे पड़े मिल जाते हैं वह जनक को खेत जोतते समय मिल गई. आर्य पहले लड़कियों को जन्म के बाद फैंक देते थे आजकल भ्रूण की स्थिति में ही मार देते हैं.
- जब वह छः साल की हुई तो उसके पालतु बाप ने उसे दांव पर लगा दिया कि जो उसका धनुश उठायेगा उसे इनाम में सीता दे दी जाएगी. जब राम ने धनुश तोड़ कर सीता को जीता तो उस अबोध बालिका को इतनी समझ भी नहीं थी कि किसी ने दांव में जीत लिया है. आर्य पुत्री होने की सजा उसे भुगतनी पड़ी.
- पति के रूप में उसे मिला राम! एक ऐसा शख्स जो था तन और मन सें नपुंसक!! मानवता के नाम पर कलंक! साढ़े सताइस साल सीता उसके साथ रही लेकिन माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सकी. दयानन्द तो बीसवीं सदी में भी 11 पुत्र पैदा करने की वेदाज्ञा बताता है सीता के समय में तो बांझ होना असहनीय था. दया धर्म क्या होता है राम को पता ही न था. राम चाहे कैसा भी था सीता ने किसी गैर मर्द को अपने पास नहीं फटकने दिया.
- लम्बे समय तक वह महाराज रावण की कैद में रही. उन्होंने सीता को हर तरह के प्रलोभन दिये, डराया धमकाया लेकिन सीता अपने सत्त सें नहीं डिगी. उस कैद में वह एकदम असहाय और अकेली थी. उसका पति राम उसे आजाद करवाने की बजाए हनुमान के जरिये संदेश भेजता रहा कि महाराज रावण उसकी दासता कबूल कर लें और बेफिक्र होकर राज करें. सीता गई भाड़ में!
- जब राम ने लंका जीत ली तो सीता को लगा कि उसके बुरे दिन समाप्त हो गये हैं. वह खुश होती हुई अशोक वाटिका सें निकल कर राम के सामने आई. उसे देखते ही राम बोला,'' सुन सीता, मैने लंका का युद्ध तुझे छुड़ाने के लिए नहीं किया है. तू इतने समय महाराज रावण के पास रही है उनका रूप यौवन धन वैभव देख कर तेरा मन डोले बिना रहा ही नहीं होगा. इसलिए मैं तुझे अपने साथ नहीं रख सकता. तेरे सामने विभीशण है हनुमान है सुग्रीव है तू चाहे जिसके साथ अपना घर बसा ले. तू मेरी आँखों में वैसे ही चुभ रही है जैसे दुखती आँखों में प्रकाश चुभता है.'' उस समय सीता ने जरूर सोचा होगा कि राम सें मिलने सें अच्छा तो यही था कि वह लंका में ही कैद रह लेती.
- राम को अपनी नपुंसकता का पता था. शक होते हुए भी देवों के समझाने बुझाने पर वह सीता को अपने साथ अयोध्या ले आया. लेकिन जब सीता पर गर्भवती होने के लक्षण स्पष्ट हुए तो राम ने लक्ष्मण के हाथों उसे जंगल में फिंकवा दिया. जब वह जंगल में बेहोश होकर गिर पड़ी तो लक्ष्मण उसे वहीं पटक कर वापिस घर आ गया. उसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा कि सीता मर गई या जिन्दा है. भगवान वाल्मिकी के शिष्यों ने उसका क्रंदन सुना तो वे उसे उठा कर आश्रम में ले आये. अगर भगवन वाल्मिकी भी राम जैसे होते तो सीता को जंगली कुत्ते खा गए होते!
- भगवन वाल्मिकी के आश्रय में वह कुछ समय वह चैन सें रह पाई कि एक दिन राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ के लिये छोड़े गये घोड़े को लेकर राम और लव कुश में युद्ध हो गया. इस युद्ध में राम घायल होकर मरनासन्न हो गया. सीता के प्रार्थना करने पर भगवान वाल्मिकी ने राम को बचा लिया. लेकिन राम के सामने आते ही सीता को उसके साथ बिताये एक एक पल का स्मरण हो आया. सीता को उस तन मन सें नपुंसक राम के साथ जाने की बजाए आत्महत्या करना अधिक श्रेयकर लगा. अतः उसने खाई में कूद कर आत्महत्या कर ली.
- रामायण में एक बड़ी अजीब सी बात है कि जब सें राम सीता को जीत कर ले गया उसके बाद सें जनक ने सीता सें नाता ही तोड़ लिया. यहां तक कि उसका हरण हो जाने पर भी जनक ने उसकी सुध नहीं ली. राम ने जब उसे जंगल में फिंकवा दिया तब भी वह अपनी बेटी का हाल चाल पूछने तक नहीं आया. सीता को पालतू बाप मिला तो वह भी महा निर्दयी जिसने उसे घर सें विदा करने के बाद कभी याद भी नहीं किया! यह ब्राह्मणवादी परम्परा आज भी जारी है. आज भी राजस्थान में कहावत है कि वधू पैरों पर चल कर आती है और कंधों पर सवार होकर जाती है. बेटी को कितना भी दुख हो बाप ऐसा ही कहेगा.

माँ अम्बा : आज के समय में ब्राह्मणों ने अम्बा, अम्बे के नाम सें एक देवी बना रखी है. ब्राह्मण ग्रन्थों में उसके प्रकट होने की अनेकों कथएं बनाई हुई हैं. लेकिन वास्तव में लोग अम्बा के नाम सें जिस देवी की पूजा करते थे वह थी भगवन बुद्ध की शिष्या अम्बपाली. अम्बपाली के आर्य माता पिता ने उसे पैदा करके आम के बगीचे में पटक दिया था. एक गरीब शूद्र ने उसे पाल पोस कर बड़ा किया. वह अति सुन्दर थी. जवान होने पर उसकी यही सुन्दरता उसे ले डूबी. जब उसके पिता ने उसकी शादी करनी चाही तो आर्यो ने सभा की और यह निर्णय किया कि इतनी सुन्दर नारी को किसी एक की होकर रहने की अनुमति नहीं दी जा सकती. उसकी सुन्दरता का

आनन्द उठाने का सभी को हक है. अतः आर्य धर्म के अनुसार उसे कोठे पर बैठा दिया गया. बहुत साल तक उसने वेश्यावृति का कष्ट झेला. फिर जब भगवन बुद्ध उसके नगर में आये तो वह उनसें मिलने गयी. आर्शीवाद में उसने भिक्षुणी होना मांग लिया. **वह विश्व की प्रथम धर्म प्रचारिका बनी. आर्यों द्वारा सर्वभोग्या वेश्या बनाई गई नारी को भगवन बुद्ध ने सर्व पूजनीय माँ अम्बा बना दिया.**

मौर्य सम्राट अशोक के शासन काल में जब बुद्ध धर्म का प्रचार प्रसार हुआ तो लोग अम्बा को माँ की तरह आदर देने लगे. लेकिन जब ब्राह्मणों ने राजा वृहदर्थ का कत्ल करके पुनः ब्राह्मणवाद की स्थाप्ना की तो चालाक ब्राह्मणवादियों ने अपनी साम दाम की नीति में सें साम का रास्ता अपनाते हुए माँ अम्बा को अपनी देवी घोषित कर दिया. उसके साथ सैंकडों की संख्या में कहानियां घढ़ कर जोड़ दीं. लेकिन इन ब्राह्मणवादियों ने अपने धन कमाने की "अर्थ" नीति का त्याग नहीं किया. जिस तरह लोग पहले उसके कोठे पर धन लुटाते थे ब्राह्मणवादियों ने उसके मंदिर बना कर चन्दा वसूलना शुरू कर दिया. अन्यथा किसी भी "देवी" को धन की क्या आवश्यकता!!

8.2 आर्य स्त्रियों पर देवताओं की धाक

प्राचीन वेद काल, जिसको सत्ययुग भी कहा जाता है, में भारतीय नारी की स्थिति वेश्या सें भी बदतर थी. वेश्या के पास कम सें कम इतनी गुंजायश तो होती ही है कि वह मन मर्जी का ग्राहक चुन ले और उससें धन वसूल ले, लेकिन आर्य नारी की स्थिति तो वेश्या सें भी गई गुजरी थी. उसके पास तो ऐसी गुंजायश भी न थी. वह तो मुफत की भोग्या थी. कोई भी पुरुष विशेषतः देव कहे जाने वाली जाति का नर किसी की भी बहन, बेटी, बहू को कभी भी, कहीं भी अपनी हवस का शिकार बना सकता था. इस बात के अनेकों उदाहरण ब्राह्मण–ग्रन्थों में भरे पड़े हैं. हनुमान की माँ सें पवन नामक देवता का व्यभिचार इसकी प्रमुख उदाहरण है. कुन्ती के साथ सूर्य द्वारा किया गया बलात्कार अन्य उदाहरण है. इन्द्र द्वारा अहिल्या समागम जैसे अनेकों काण्ड ब्राह्मण–ग्रन्थों में दर्ज हैं.

उस सत्ययुग काल में आर्य समाज पर देव जाति के लोगों का वर्चस्व था. राजवाड़े के अनुसार ताकतवर होने के कारण देवों ने आर्य समाज पर अपना अधिकार जमा लिया था. समस्त वस्तुओं, सम्पत्ति, पशुओं तथा विशेष तौर पर स्त्रियों, जिनकी स्थिति गुलामों जैसी थी, पर देवों का अधिकार हो गया था. स्त्री पैदा होते ही किसी न किसी देव के नाम कर दी जाती थी. जवान होने अर्थात रजोदर्शन होने सें पहले ही अक्सर लड़कियां इन देवों की हवस का शिकार बन जाती थीं. कुन्ती और सत्यवती इस की प्रमुख उदाहरण हैं. जब सूर्य ने कुन्ती सें बलात्कार किया, उस समय वह अव्यस्क थी. कुन्ती बहुत रोयी गिड़गिड़ाई. अपनी छोटी उम्र का वास्ता दिया मगर वह शैतान न माना.

पूरे आर्य समाज के साथ ऐसा होता था. अतः अपनी बच्चियों को इन देवों की हवस सें बचाने के लिए लोग छोटी आयु में ही लड़कियों की शादी करने लगे. बाद में यह मजबूरी परम्परा के रूप में विकसित हो गई. आज भी शादी के समय पढ़े जाने वाले मन्त्र और कर्मकाण्ड इस बात की पुष्टि करते हैं कि प्राचीन समय में शादी के समय देवों के अधिकार सें लड़की को छुड़ाया जाता था. अनेकों बार देवों सें झगड़ा भी होता था. अंत में उन्हें दक्षिणा देकर लड़की को आजाद करवाया जाता था. शायद तभी सें दूल्हे द्वारा तलवार लेकर जाने की परम्परा की शुरूआत भी हुई और शायद देवों सें टक्कर लेने के लिए ही दूल्हे के साथ बारात के रूप में आदमी जाने लगे. वैसे यह भी तथ्य है कि भारत के सिवाय विश्व में कहीं भी दूल्हा अपने साथ तलवार और बारात लेकर नहीं जाता. इसका एक ही कारण है कि समस्त विश्व में ब्राह्मणधर्म के अतिरिक्त अन्य किसी भी धर्म के देवताओं ने अपने भक्तों की बहन बेटियों को अपनी हवस का शिकार नहीं बनाया.

प्राचीन काल में रोम, युनान, चीन, मिश्र आदि अनेक स्थानों पर सभ्यताओं का विकास हुआ. वहां भिन्न भिन्न धर्मों का विकास भी हुआ. सभी जगह धर्म के नाम पर अनेकों कर्मकांड भी विकसित हुए. लगभग हर स्थान पर धर्म के नाम पर स्त्री जाति का शोषण भी हुआ. लगभग सभी स्थानों पर धर्म गुरूओं ने ऐसे धार्मिक कर्म–कांड बनाए जिससें उन्हें धर्म के नाम पर अपनी हवस पूरी करने की खुली छूट मिल गई. लेकिन भारतीय नारी का जितना शोषण देवता कहे जाने वाले लोगों ने किया है, उतना किसी अन्य धर्म के देवताओं ने नहीं किया है.

आज तक ब्राह्मणों का कोई भी देवता ऐसा नहीं हुआ जिसने गैर स्त्री सें व्यभिचार अथवा बलात्कार न किया हो. अन्य सभी स्थानों पर मात्र धर्म के ठेकेदारों ने ही नारी शोषण किया लेकिन ब्राह्मण–धर्म में न केवल ब्राह्मणों ने शोषण किया बल्कि उनके देवताओं ने भी जी भर कर नारी शोषण किया. विश्व के किसी और धर्म में ऐसी मिसाल नहीं मिलती जहां उस धर्म के देवताओं ने ही अपने भक्तों की माँ, बहन, बेटियों को अपनी हवस का शिकार बनाया हो. ऐसा महान कार्य तो महान ब्राह्मण–धर्म के महान देव ही कर सकते हैं.

जहां दुनिया के अन्य धर्मों ने अपने पुराने व्यभिचारी देवताओं को दफन कर दिया है, ब्राह्मणधर्म की सबसें "महान" बात यह है कि आज भी ब्राह्मण अपने ऐसे भगवानों के गुणगान चौबीसों घंटे करते नहीं अघाते. आज भी

सुबह सवेरे सें ही ''राधा रमण गोपाल की जय'' के नारे मंदिरों में गूंजने लगते हैं जिसका कि सीधा सा अर्थ है कि राधा सें संभोग करने वाले गोपाल की जय बोलो! राधा सें संभोग करने में क्या धार्मिकता है कि इसकी जय बोली जाए!!

भारत में देवों के इस आधिपत्य को बनाने में और फिर उसे बनाये रखने में ब्राह्मण ऋषियों का विशेष योगदान रहा है. वेदों में इस बात के साक्ष्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं. वे ब्राह्मण जो देवों की इस काम में मदद करते थे उन्हें ऋषि घोषित कर दिया जाता था. जो देवों की ऐयाशी का जितना अधिक प्रबन्ध करता था वह उतना बड़ा ऋषि बनाया जाता था. ऋषि बनने के लिए सद्‌चरित्र होने की कोई आवश्यकता नहीं होती थी. इसीलिए ऋषि कहे जाने वाले सभी लोग ऐयाश, गुस्सैल या चरित्रहीन थे.

इन ब्राह्मण ऋषियों ने ऐयाश देवों की ऐसी छवि बना रखी थी कि आर्य नारी उनसें समागम करना अपना सौभाग्य समझती थी. आर्यो को लगता था कि अगर मानव स्त्री देवों सें गर्भ धारण कर लेगी तो उनका भाग्य शिखर तक जा पहुंचेगा. (राज 81) जैसे तस्मानिया में युरोपीय पुरुष सें समागम, स्त्री के लिए सम्मानजनक माना जाता था वैसा ही विचार आर्य नारी के मन में देवों की प्रति बना दिया गया था. इसी चाह के कारण ही अविवाहित एवं अव्यस्क कुन्ती सूर्य सें समागम करने को तैयार हो गई, केसरी की पत्नि एवं हनुमान की माँ पवन सें व्यभिचार को राजी हो गई. अविवाहित एवं अव्यस्क गंगा शांतनु सें समागम को राजी हो गई. राम की माँ कौशल्या ऋश्यश्रृंग सें समागम करने को तैयार हो गई. अगर ब्राह्मण–ग्रन्थों को देखा जाए तो इसी चाह या मजबूरी के कारण लगभग सभी ऋषियों, राजाओं और अनेकों भगवानों की मातायें गैर मर्दो सें व्यभिचार करने को तैयार हो पाई.

समय के साथ देवों की यह रीत स्वयं ब्राह्मण ऋषियों ने अपना ली और फिर समय के साथ ये ब्राह्मण ऋषि अपने उन देवताओं सें भी दो हाथ आगे निकल गये. इन ब्राह्मण ऋषियों ने वह अनाचार फैलाया कि बेचारी आम नारी का तो कहना ही क्या, उन्होंने तो भगवान कहे जाने वाले राम की पत्नि सीता और माँ कौशाल्या तक को भी नहीं बख्शा. अपनी हवस मिटाने के लिए उन्होंने वेदों के जरिए हर नारी के 10 पुत्र पैदा करने का आदेश जारी किया.

ब्राह्मण दयानंद इस नियम की व्याख्या करते हुए अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखता है इसका अर्थ यह है कि अगर किसी स्त्री का पति 10 पुत्र पैदा करने सें पहले मर जाए तो उस स्त्री को ब्राह्मणों सें नियोग यानि व्यभिचार करके 10 पुत्र पूरे करने चाहिए. इसी नियम के तहत ही जब हत्यारे परशुराम ने 21 बार क्षत्रियों का नाश किया तब क्षत्राणियां सड़कों पर सें ब्राह्मणों को पकड़ पकड़ कर ले जाती थीं उन्हें दक्षिणा देती थीं, माल पूए खिलाती थीं ताकि वे खुश हो जाएं और उनसें संभोग कर लें ताकि वे पुत्र पैदा कर लें. ऐसी भयावह त्रासदी विश्व में धर्म के ठेकेदारों द्वारा और कहीं नहीं की गई. थू!

8.4 ब्राह्मणधर्म में नारी के लिए कुछ अत्यंत लज्जाजनक नियम बनाए गए थे. ये नियम इस प्रकार सें हैं :

1. ब्राह्मणवाद में वेद सबसें अधिक आदरणीय ग्रन्थ हैं. इन वेदों को ईश्वर रचित भी बताया जाता है. चारों वेदों में सें एक वेद यजुर्वेद भी है जिसकी तैतरिय संहिता का आदेश है कि अगर लड़की जन्मे तो उसे ठुकरा दो लड़का हो तो अपना लो. (6.5.10.3) (जिनोसाइड) सीता, शकुन्तला,अम्बपाली जैसी अनेकों बालिकाएं इसी नियम का शिकार हुईं जो जन्मते ही सड़क पा फैंक दी गईं.

2. ऋग्वेद का आदेश है कि स्त्रियों सें मैत्री सम्भव नहीं है क्योंकि उनके दिल लकड़बग्घों जैसे होते हैं. (10.95. 15) अतः उन्हें मात्र अपनी हवस मिटाने के काम लिया जा सकता है. यह नियम बिल्कुल ऐसा ही है जैसे तथाकथित ऊँची जाति के लोग दलित महिलाओं के हाथ सें छूआ अन्न पानी अपवित्र मानते हैं मगर मौका मिलने पर उनके शरीर सें अपनी हवस मिटाने में नहीं झिझकते. दयानन्द ऐसे वेदों को भगवान द्वारा रचित बताता है.

3. स्त्री मृत पुरुष के लिए क्यों विलाप करे, उसे तो नया पुरुष अपना लेना चाहिए. (ऋ.वे.10.18.8) इस वेदमंत्र का अर्थ करते हुए दयानन्द कहता है कि वेद काल अर्थात सत्ययुग में पति की लाश उठाने सें पहले स्त्री का किसी अन्य पुरुष के साथ नियोग करवा दिया जाता था. (समुलास 4) ब्राह्मणों और उनके देवों की नजर में स्त्री मात्र शारीरिक भोग की वस्तु थी. यहां तक कि अगर उसका जीवन साथी मर जाता था तो भी उसे गम करने का अधिकार न था. ब्राह्मण लोग उसके पति का दाह संस्कार होने सें पहले ही उसे किसी और को भोग के लिए सौंप देते थे क्योंकि ब्राह्मणवाद का संविधान कही जाने वाली मनु–स्मृति का आदेश है कि स्त्री कभी भी पुरुष के स्वामित्व सें आजाद नहीं होनी चाहिए. अतः जैसे ही उसका वर्तमान पति मरे उसे तुरंत किसी और के हवाले कर दिया जाए. दयानंद तो इसे वेदाज्ञा मानता है जिसका कि उल्लंघन नहीं किया जा सकता.

4. पति चाहे कैसा भी हो, वह चाहे कुछ भी करे परन्तु स्त्री पर सें उसकी सत्ता कभी समाप्त नहीं होती. वह उसके पुण्य,तप और प्राणों का स्वामी होता है. (सभा.67 एवं 70) यह व्यवस्था ब्राह्मणों के बाबा भीष्म ने तब दी

जब ब्राह्मणों का धर्मपुत्र कहे जाने वाला युधिश्ठर जूए में कृष्ण की बहन द्रोपदी को हार जाता है और द्रोपदी इस अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाती है. आर्यों के ऐसे नियमों के कारण ही तब सें लेकर आज तक पता नहीं कितनी द्रोपदियां जूए में हारी गईं हैं, पता नहीं कितनी गर्भवती सीताओं को मरने के लिए जंगल में छोड़ा गया है. कितनी रूकमणियों को अपने पतियों की ऐयाशी बेवफाई चुपचाप सहन करनी पड़ी है.

5. ब्राह्मण–धर्म के अनुसार प्रत्येक नारी को 10 पुत्र पैदा करना आवश्यक है. इन 10 पुत्रों के जन्म के लिए मात्र अपने पति का सहयोग जरूरी नहीं है. सत्ययुग में तो लड़की जन्म लेते ही देवताओं की सम्पत्ति बन जाती थी और फिर जब देवता उसे उसके माँ-बाप अथवा पति को लौटाते थे तब तक वह बेचारी कई कई बच्चों की माँ बन चुकी होती थी. आज भी शादी में बोले जाने वाले मन्त्र और विधियां इस बात की द्योतक हैं. त्रेता और द्वापर युगों में नियोग प्रथा की भरमार रही. मात्र कलियुग में आकर महाराजा रावण द्वारा "एक औरत एक आदमी" का नियम लागू हो पाया. अन्यथा उससें पहले आर्यों में और पशुओं में कोई विशेष अंतर न था.

दस पुत्र पैदा करने के नियम की व्याख्या करते हुए आधुनिक आर्य समाज का संस्थापक दयानंद कहता है कि दस पुत्र पैदा करना हर नारी के लिए परम धर्म है क्योंकि ऐसा वेद का वचन है. वह इससें भी आगे जाकर कहता है कि अगर 10 पुत्र होने सें पहले स्त्री का पति मर जाए, तो ऐसी अवस्था में उस औरत को चाहिए कि वह ब्राह्मणों सें नियोग करके शेष बचे पुत्र पैदा करे. (स.प्र. समुल्लास4) दयानन्द के अनुसार वेद में 10 पुत्र पैदा करने की आज्ञा लिखी है इसलिए हर हिन्दू नारी को हर हालत में 10 पुत्र पैदा करने हैं. चाहे अपने पति सें करे अथवा किसी और सें. बस पुत्र 10 होने चाहिए.

ब्राह्मणों ने अपनी वासनापूर्ति के लिए वेद में ऐसी आज्ञाऐं लिखीं. इसी कारण जब परशु ने क्षत्रियों के बच्चे तक काट कर मार डाले तो विधवा हुई क्षत्राणियों को वेदाज्ञा के अनुसार पुत्र पैदा करने के लिए ब्राह्मणों के आगे लाइन लगा कर खड़ा होना पड़ा. ब्राह्मणों ने न केवल अपनी हवस मिटाई बल्कि बढ़िया माल पूए खाये और उन विधवाओं सें मोटी दक्षिणा भी वसूली. (आदि 64 एवं 104) **आज अगर कोई क्षत्रिय अपनी जाति का अभिमान करता है तो उसे जान लेना चाहिए कि उनके पूर्वज कैसे पैदा हुए थे!!**

अथर्व वेद फतवा देता, "हे पुरुषो, उस उर्वरा नारी में बीजारोपण करो!" अर्थात वेद लिखने वाले ब्राह्मणों की नजर में उपजाऊ मिट्टी और औरत में कोई अन्तर नहीं है. वेद एक स्त्री के लिए अनेकों आदमियों को आदेश देता है कि वे अपना बीज उस स्त्री में डालें. कौन कब बीज डाले इसमें स्त्री की कतई कोई अनुमति की आवश्यकता नहीं है.

6. गरूड़ पुराण (अ.10)की आज्ञा है कि जब पति मर जाए तो पत्नि को चाहिए कि वह नहा धोकर श्रृंगार करे. ब्राह्मणों को सम्पत्ति दान करे, शमशान घाट पर चिता में पति की लाश को लेकर बैठे. जलती हुई लपटों को गंगा की धारा समझे और पति के साथ जल जाए. जो स्त्री ऐसा नहीं करती वह पतिव्रता नहीं है, उसे स्वर्ग नहीं मिलेगा तथा उसे हर बार स्त्री शरीर ही धारण करना पड़ेगा. (स.मु.1.28)

नारी सम्बंधी ब्राह्मणों की अमानवीय प्रथायें

1. कीचक के मरने पर सैरंध्री बनी द्रोपदी को जलाने के लिए उसके शव के साथ ले जाया जाता है. महाभारत काल में विधवाओं व **रखैलों** को मृत पति के साथ जला दिया जाता था. (विराट पर्व 22,23) रुक्मणि आदि कई स्त्रियां कृष्ण की लाश के साथ जल मरी थीं. राधा सती क्यों नहीं हुई, इस सवाल का किसी के पास कोई !
2. पुण्यक व्रत में लोग **स्त्रियां खरीद कर** ब्राह्मणों को दान में दे देते थे. बाद में धन देकर उन्हें वापिस ले लेते थे. (हरि. 79) (राज. 58) जब तक प्रयाप्त धन का प्रबन्ध न होता था, ब्राह्मण उस स्त्री सें कुछ भी करने के लिए आजाद होता था.
3. आर्य लोग **अपनी बेटी का मूल्य एक गाय के बराबर** आंकते थे और एक गाय के बदले में अपनी बेटी का लेन देन कर लेते थे. इसीलिए विवाह की आठ पद्धतियों में सें एक पद्धति के अनुसार वधु का पिता वर सें एक गाय/बैल लेकर अपनी बेटी उसे सौंप देता था. इस विवाह पद्धति को "**आर्य विवाह**" कहा गया है.
4. आर्यों में अपने अतिथियों एवं मित्रों को अपनी पत्नि संभोगार्थ देने की प्रथा थी. (राज.70) ब्राह्मण सबसें बड़ा अतिथि होता था. अतः वह किसी के भी घर अतिथि के रूप में जाकर उसकी पत्नि के साथ हम बिस्तर हो सकता था. म.भा. (उद्योग पर्व.45) में सच्चें मित्र के छः गुण बताए गए हैं. उन में सें एक गुण यह भी है कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी पत्नि भी अपने मित्र को अर्पित कर दे. आर्यों में ऐसे दो मित्रों की संतान को

"द्वैमित्रि" कहा जाता है. ब्राह्मण–ग्रन्थों में इस प्रथा के अनेकों उदाहरण हैं. अनुशासन पर्व में सुदर्शन नामक व्यक्ति की कथा है. एक ब्राह्मण उसके यहां अतिथि बन कर गया. ब्राह्मण की नीयत सुदर्शन की पत्नि ओघवती की सुन्दरता पर खराब हो गई. ब्राह्मण ने अपना हक जताया और ओघवती को उस ब्राह्मण की वासना का शिकार होना पड़ा. भीष्म ने यह कथा युद्धिश्ठर को सुनाते हुए कहा,''इस सत्कृत्य के कारण सुदर्शन की कीर्ति त्रिभुवन में फैल गई और उसे इन्द्रलोक प्राप्त हुआ."

कितनी अजीब बात है ऐसे कुकर्मी लोगों को हम धर्म के ठेकेदार मानते हैं. ब्राह्मण ने तो ओघवती का रस्वादन कर लिया. सुदर्शन को तो वेश्यालयों का मुख्यालय इन्द्रलोक मिल गया. लुट गई तो बेचारी ओघवती! अपना सतीत्व गंवा कर उसे क्या मिला? अपनी पत्नि को गैर मर्द सें व्यभिचार करने पर मजबूर करना ब्राह्मण–धर्म में सत्कृत्य है. बस ऐसा ही है ब्राह्मणवाद.

5. ऐसी ही एक और कथा भीष्म युद्धिश्ठर को सुनाता है (शांति पर्व 266) कि इन्द्र ब्राह्मण का वेश धारण करके गौतम ऋषि की पत्नि अहिल्या सें समागम करता है. इस घटना की जानकारी मिलने पर गौतम ऋषि एक बार तो गुस्सा होता है परन्तु बाद में इसे **धर्म सम्मत प्रथा** मान लेता है क्योंकि स्त्री द्वारा घर आए अतिथि की "बात'' न मानना, ब्राह्मण–धर्म के विरूद्ध है.

6. ब्राह्मण अतिथि बन कर त्रिदेव द्वारा अनुसुइया के सतीत्व भंग करने की कुचेष्टा करने की कथा सर्वव्यापी है. ब्राह्मणों के तीनों प्रमुख देवता ब्रह्मा विष्णु और महेश को उनकी पत्नियां इस बात के लिए उकसाती हैं कि वे तीनों मिल कर अनुसुइया का सतीत्व भंग करें. इस काम के लिए वे तीनों ब्राह्मण का वेश धारण करके जाते हैं. अनुसुइया उन्हें ब्राह्मण अतिथि मान कर खाना परोसती हैं. वे शर्त रखते हैं कि वे खाना तभी खाएंगे जब वह निपट नग्न होकर उन्हें खाना परोसे. अनुसुइया को उनकी बात माननी पड़ी. इससें पहले कि तीनों कुछ कर पाते अनुसुइया का पति आ गया और उस बेचारी का सतीत्व लुटने सें बच गया.

7. रामायण काल में इस प्रथा का कुछ विरोध होने लगा था. तभी सीता ने महात्मा रावण का अनुरोध ठुकरा दिया था. लेकिन क्योंकि वे ब्राह्मण वेश में थे अतः उनके मुख सें अपने स्त्री अंगों की तारीफ करना, सीता ने बिना विरोध के सुन लिया. चाहे अतिथि अथवा ब्राह्मण को पत्नि सौंपने का विरोध होना शुरू हो गया था मगर कालिदास के समय तक स्त्री को बेचना, उसे दान में देना, जान सें मार देना, घर सें निकाल देना अथवा बतौर सम्पत्ति प्रयोग करना ब्राह्मण–धर्मी लोगों में सर्वमान्य था.

8. आर्य अपनी बेटियों को दांव पर लगाते थे. दांव जीतो लड़की को ले जाओ. इस प्रथा को वे स्वयंवर कहते थे.सीता व द्रोपदी के "स्वयंवर" में भी ऐसा ही हुआ था. इन स्वयंवरों में चाहे कोई भी जीता हो सीता या द्रोपदी की "इच्छा" का इस जीत में कहीं कोई स्थान नहीं था.

9. याज्ञवल्क्य एवं नारद का आदेश है कि विधवा को सम्पत्ति में हिस्सा नहीं मिलेगा. (समु1.19)

10. मनु का आदेश है कि अगर किसी स्त्री के मात्र लड़कियां ही पैदा होती हों तो उसे त्याग दिया जाए. (मनु 9.) क्योंकि वेद का फतवा है कि बेटी कष्ट देने वाली और दुःख देने वाली होती है. (ऐत ब्रा 7.3.1) (समु 3. 72)

11. विधवा को दोबारा शादी करने कर अधिकार नहीं है. (मनु 5.157) लेकिन दयानन्द के अनुसार वेद की आज्ञा है कि हर स्त्री के लिए ग्यारह पुत्र पैदा करना जरूरी है अतः विधवा ब्राह्मणों की वासना का शिकार होने पर मजबूर थी. **कितनी दुख की बात है कि ब्राह्मणों के लिये विधवा का नियोग तो धर्म कार्य है लेकिन विधवा का दुबारा घर बसाना अधर्म है. अगर कोई पुरुष विधवा सें विवाह करने का अधर्म कर ले तो उसे तुरंत पश्चाताप (ब्राह्मणों को दान) करना चाहिए और उस स्त्री सें सम्बंध तोड़ लेना चाहिए.** (लघु आश्वलायन 21.6) (सीता 4.7)

12. पत्नि, दास और सन्तान (बेटी बेटा) जो भी कमाई करें उस पर इन तीनों का हक नहीं होता. जो धन यह कमाएं अपने पति, मालिक अथवा पिता को दे दें. (मनु 8.416) तुलसी ने फतवा दे दिया कि नारी ताड़न की अधिकारी. इसीलिये आज भी भारत भर की बाइयां और कामकाजी महिलायें महीने भर अपने खून का पसीना करती हैं और तनखाह उनके मर्द हक सें छीन लेते हैं.

13. स्त्री चल सम्पत्ति के समान मानी जाती थी. इसलिए युद्धिश्ठर ने द्रोपदी जूए में हारी, ययाति ने अपनी पुत्री को ब्राह्मण ऋषि गालव को दक्षिणा में दिया जिसने उसे आगे तीन राजाओं के पास गिरवी रखा. हरिश्चन्द्र ने अपनी पत्नि को बेच दिया. राम का जब मूड बना सीता को कबाड़ की तरह उठा कर जंगल में फिंकवा दिया.

14. लगभग सभी ब्राह्मण ऋषि और देव लड़कियों की दल्लागिरी में लिप्त रहते थे. विवाह या अन्य समारोहों में हजारों लड़कियां दहेज या तोहफे में एक दूसरे को सप्लाई की जाती थीं. वे किसी की बेटियां तो होंगी ही!

15. आर्यों में स्त्री को मादा पशु के समान माना जाता था. आर्य लोगों में वधुऐं शर्त में ही जीती जाती थीं अथवा भगाई जाती थी या उठाई जाती थीं या उधाली जाती थीं. आर्यों में एक पुरुष के अनगिनित पत्नियां या रखैलें होती थीं. एक नारी के कई कई पति और जार होते थे. **एक पुरुष एक नारी यानि शादी की प्रथा चला कर महात्मा रावण ने नारी जाति को वरदान दिया है.**

16. आर्यों में **वाग्दान** अथवा कन्या दान इस बात का द्योतक हैं कि कन्या बाप के स्वामित्व सें निकल कर पति के स्वामित्व में चली गई है. मनु के अनुसार स्त्री कभी आजाद रखा ही नहीं जा सकता. बचपन में बाप के अधीन तो जवानी में पति के अधीन तथा बुढ़ापे में बेटे के अधीन रहे.(5.152 एवं 5.148)

17. लड़की की दूसरी बार शादी नहीं हो सकती क्योंकि वाग्दान अथवा कन्यादान केवल एकबार हो सकता है. जैसे एक को दान में दी गई वस्तु पुनः किसी अन्य को दान में नहीं दी जा सकती वैसे ही कन्या का दान भी दो बार नहीं हो सकता. (मनु 9.)

18. आर्यों के सबसें पवित्र ग्रन्थ ऋग्वेद (8.33.17) का आदेश है कि स्त्री, (माँ, बहन, बेटी, पत्नि, पुत्रवधु) को शिक्षित नहीं किया जा सकता क्योंकि उनकी अक्ल कम होती है.

19. स्त्रियों को यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं है. (समु 10.270) यज्ञोपवीत अर्थात जनेऊ धारण करने का अधिकार शूद्र को भी नहीं है. अतः स्त्रियां शूद्रों की तरह शिक्षा ग्रहण करने सें वंचित रखी गईं चाहे वे ब्राह्मणी हों या क्षत्राणियां. सभी अनपढ़ रहने पर मजबूर की गईं.

20. जब जूए में हार जाने के बाद द्रोपदी को जब आर्य सभा में नंगा किया जाने लगा तो उसने कहा कि किसी पति को यह अधिकार नहीं है कि वह जूए में अपनी पत्नि को दांव पर लगा दे. तब भीष्म, ब्राह्मणवाद का पितामह ने आदेश जारी किया कि पति कैसा भी हो पत्नि पर उसकी सत्ता सदा कायम रहती है. **अतः युद्धिश्ठर ने उसे जूए में हार कर कोई गुनाह नहीं किया है.** ऐसा करना तो उसका अधिकार था. (सभा पर्व 67, 70) मनु का भी आदेश है कि पति चाहे अवगुणों सें भरा हो, व्यभिचारी हो तो भी पत्नि उसे भगवान मान कर पूजा करे. (5.154) मनु भी तुलसी का रिश्तेदार था. एक ने पुरुष पुजवा दिया तो दूसरे ने नारी को पिटवा दिया.

21. मासिक धर्म शुरू होते ही कन्या का विवाह करना अनिवार्य बनाया गया. ऐसा न करने वाले माता पिता का सामाजिक बहिष्कार करने का आदेश दिया गया. यह भी कहा गया कि जो लोग मासिक धर्म शुरू होने के बाद कन्या की शादी नहीं करते वे हर महीने उस कन्या का मासिक रज पीते हैं. बारह साल सें बड़ी लड़की सें शादी करने वाले व्यक्ति को पापी घोषित किया गया और उसके लिए तीन साल तक गायत्री मन्त्र जपने की सजा नियत की गई. (मनु 7.8)

22. ब्राह्मणग्रन्थों में कहीं भी विधवा विवाह का आदेश नहीं दिया गया है. इसके उलट विधवाओं के लिए नियोग करना अनिवार्य बनाया गया है. वशिष्ठ का आदेश (17.55.56) है कि विधवा होने के बाद स्त्री 6 महीने तक जमीन पर सोए. उसके बाद उसका पिता उससें सन्तान पैदा करने के लिए किसी नियोगी को नियुक्त करेगा. (धर्म और समाज 183)

8.5 आर्य नारी – मात्र जूए का दांव

ब्राह्मणवादी विद्वान बहुत हो हल्ला मचाते हैं कि आर्यों में स्वयंवर की प्रथा थी. कन्या को पूरी आजादी थी कि वह चाहे जिसे अपना वर चुन ले. स्वयंवर का अर्थ भी स्वयं वर को चुनना किया जाता है. उदाहरण दिये जाते हैं सीता द्रोपदी के स्वयंवर की!

लेकिन क्या इन दोनों में सें किसी को यह आजादी थी कि वह अपनी मर्जी सें वर चुन ले. अगर राम की बजाए कोई और धनुश उठा लेता तो क्या सीता उसके साथ जाने सें मना कर सकती थी या उसका बाप उसे उस धनुष उठाने वाले को सौंपने सें मना कर सकता था! जनक ने जब सीता को दांव पर लगाया : "धनुश उठाओ सीता को ले जाओ" तो उसने राम को तो इस समारोह में बुलाया ही नहीं था.

अगर तुलसी की बात सत्य मान लें कि महात्मा रावण को इस दांव–समारोह में आमंत्रित किया गया था लेकिन उन्हें समारोह को बीच में ही छोड़ कर जाना पड़ा. अगर वे अपनी बारी तक रुक जाते तो धनुश उठाना उनके लिए कोई मुश्किल बात ही न थी. **वे तो धनुश के मालिक शिव को उसके कैलाश पर्वत समेत उठा लेते थे.** तब क्या शर्त के अनुसार जनक सीता को उनके हाथ नहीं सौंप देता!! सीता की मर्जी का तो सवाल ही नहीं था अपने "स्वयंवर" में!!!

आर्यों के किसी भी स्वयंवर में वधू ने अपनी इच्छा सें कभी भी किसी वर को नहीं चुना. उसे हमेशा ही खुली बोली की तरह दांव पर लगाया गया. सीता के स्वयंवर का उदाहरण देखें तो जनक ने तो दशरथ अथवा

राम को तो स्वयंवर के दिन बुलाया ही न था. उस दिन महात्मा रावण सहित अनेकों राजाओं को बुलाया गया था. महात्मा रावण को तो सभा छोड़ कर जाना पड़ा तथा शेष लोग धनुश तोड़ न पाए.

राम तो ताड़का को मार कर लौट रहा था कि मिथिला के बाहर रास्ते में जनक मिल गया. विश्वामित्र ने हाल चाल पूछा तो जनक ने अपना दुखड़ा रो दिया. विश्वामित्र ने ऐसे धनुश को देखने की चाह व्यक्त की. जनक ने वहीं रास्ते पर ही धनुश मंगवा लिया. राम जब उस पर डोर कसने लगा तो धनुश टूट गया. और इस तरह राम ने सीता को जीत लिया. अगर पहले कोई और तोड़ देता तो सीता को वह जीत ले जाता और राम की बारी ही न आती.

स्वयंवर की प्रथा भी आर्यों में जूए की लत का ही साक्ष्य है. ब्राह्मणों द्वारा धर्मपुत्र कहा जाने वाला युद्धिश्ठर दांव में अपने छोटे भाई की पत्नि को लगाता है लेकिन अन्य आर्यों और देवताओं में तो बेटी को दांव पर लगाने की परम्परा ही थी. पूर्ण इतिहास में अथवा समस्त ब्राह्मण–ग्रन्थों में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जहां स्वयंवर के नाम पर वधू दांव पर न लगाई गई हो. हर स्वयंवर में वधु का बाप ही शर्त तय करता था कि फलां दांव जीतो और लड़की को ले जाओ.

वीर एकलव्य को जाति के कारण भाग न लेने दिया गया और कर्ण को शूद्र द्वारा पालित होने के कारण भाग न लेने दिया गया. अगर वीर एकलव्य को भाग लेने दिया गया होता तो शेष किसी की बारी ही न आती.

स्वयंवर के नियम :

1. **शर्त तयकर्ता** : स्वयंवर के दांव की शर्त दुल्हन का बाप तय करता था. ऐसा कहीं कोई उदाहरण नहीं है कि किसी लड़की ने अपनी मर्जी सें शर्त तय की हो या अपनी मर्जी सें आर्य स्वयंवर में पति चुना हो!

2. **लड़की का समर्पण** : ऐसा कोई किस्सा नहीं है जहां वधु ने उसे जीतने वाले आदमी के साथ जाने सें मना किया हो. जो भी स्वयंवर का दाव जीता लड़की चुपचाप उसके साथ चली गई.

3. **उम्र का बन्धन नहीं** : स्वयंवर के दांव में अपनी किस्मत आजमाने के लिए उम्र का कोई बन्धन नहीं होता था. रामायण के अनुसार महाराज रावण जब राजा बन कर तीनों लोकों को जीत चुके थे उसके बाद सीता का जन्म हुआ था. अतः महाराज रावण और सीता की उम्र में तीस चालीस साल का अंतर था लेकिन सीता के बाप ने उन्हें भी स्वयंवर में दांव खेलने के लिए बुलाया.

4. **कोई भी दांव खेलो** : स्वयंवर में बाहर वाले ही नहीं घरवाले भी भाग लेते थे तथा अगर जीत जाते तो लड़की को ले जाते थे चाहे रिश्ते में वे भाई बहन ही क्यों न लगते हों! सूर्य के बेटे अश्विनी कुमारों ने अपनी बहन के स्वयंवर में हिस्सा लिया और अपनी बहन को जीत लिया. अतः उन्होंने अपनी बहन को पत्नि की तरह घर में रखा तथा बच्चे पैदा किए. आचार्य चतुरसेन द्वारा दी गई वंशावली के अनुसार सीता और राम एक ही वंश परम्परा सें हैं. दसरथ जातक के अनुसार राम और सीता दोनों दसरथ की औलाद हैं.

5. **सभी की सम्पति** : स्वयंवर में जीती गई स्त्री पूरे कुनबे की जायदाद बन जाती थी. अश्विनी कुमार दो भाई थे दोनों ने स्वयंवर में जीती हुई अपनी बहन को सयुंक्त रूप में भोगा. अर्जुन ने अकेले ही द्रोपदी को स्वयंवर में जीता मगर पांचों भाईयों ने भोगा. यहां तक कि छोटे भाई द्वारा जीते जाने पर भी युधिष्ठर ने उसे धन की रह जूए के दांव पर लगा दिया. अर्जुन एक बार भी नहीं बोला कि द्रोपदी पर उसका अधिकार है. लेकिन जब उसने चित्रांगदा सें "शादी" की तो उसने अकेले ने ही उसके साथ सम्बंध बनाए. किसी दूसरे भाई को पास भी फटकने नहीं दिया.

6. **दलित नहीं** : पहले पहल स्वयंवर के दांव में सभी मानव जाति के लोग शामिल होते थे. आर्य लड़कियों के स्वयंवर में यक्ष किन्नर राक्षस असुर देव आदि सभी दांव खेलने आते थे. लेकिन दलितों को इसमें भाग लेने की मनाही थी. यहां तक कि दास पुत्रों को भी राजाओं के स्वयंवर में दांव लगाने का मौका बन्द कर कर दिया गया. सीता के स्वयंवर में तो महाराजा रावण जैसे असुर भी बुलाए गए मगर द्रोपदी के स्वयंवर में दास पालित कर्ण को भाग नहीं लेने दिया गया.

7. **स्वयंवर विवाह नहीं** : मनु स्मृति में जो आठ प्रकार के विवाह दिये गए हैं स्वयंवर उसमें कहीं फिट नहीं होता. अतः मनु के बनाए नियमों के अनुसार भी स्वयंवर में लड़की जीत कर लाना शादी ही नहीं है. यह बड़ी अजीब सी बात है कि आर्यों की इस पद्धति को उनका एक भगवान शादी ही नहीं मानता तथा दूसरे (राम) का पूरा कुनबा इसी पद्धति सें घर बसाता है.

8. **सेल का सामान** : जैसे आजकल दुकानदार अपना माल निकालने के लिए सेल लगाते हैं वैसे ही स्वयंवर का समारोह हेता था. जैसे सेल में एक के साथ एक फरी की स्कीम होती है ऐसा ही

कुछ स्वयंवर में होता था. सीता के साथ राम के तीनों भाईयों को भी इनाम में लड़कियां मिल गईं. द्रोपदी के साथ इनाम नहीं मिला तो बेचारी द्रोपदी को बाकी चार पांडवों का हमबिस्तर होना पड़ा.

8.6 सती प्रथा

ब्राह्मणों द्वारा स्त्री के विरुद्ध स्थापित क्रूरतम प्रथओं में से एक प्रथा सती प्रथा है. धर्म के नाम पर कितना जुल्म किया जा सकता है यह प्रथा उस स्थिति को दर्शाती है. धर्म के नाम पर यह प्रथा उन स्त्रियों को सजा देने के लिए बनाई गई जो स्त्रियां ब्राह्मणवाद में व्याप्त मुक्त व्यभिचार को मानने सें इन्कार करती थीं.

महात्मा रावण ने देवों, ब्राह्मणों और ऋषियों के खुले सैक्स पर अंकुश लगाया था. उन्होंने पूरे समाज में "एक स्त्री एक पुरुष" की शादी करने का नियम सख्ती सें लागू किया. मगर उनके कत्ल होने के बाद ब्राह्मण ऋषियों ने फिर सें नग्नता का नाच शुरू कर दिया. अतः जो स्त्रियां एक पति के नियम का पालन करती रहीं उन्हें विधवा होते ही पति के साथ ही उसकी चिता की आग में झोंक दिया जाने लगा.

सती प्रथा का मूल कारण : सत्ययुग में स्त्री को मात्र भोग की वस्तु माना जाता था. कोई भी पुरुष, विशेषकर ब्रह्मण किसी भी स्त्री सें कहीं भी मैथुन अथवा बलात्कार कर सकता था. इस काम में ब्राह्मण ऋषियों का तो कोई सानी ही न था. आर्य स्त्रियां, विशेषकर देव स्त्रियां भी कम नहीं थी. वे भी आवारा कुतियों की तरह घूमती रहती थीं.

महात्मा रावण ने अपने शासन काल में इस खुले व्यभिचार पर अंकुश लगा रखा था. उन्होंने सख्ती के साथ "एक स्त्री एक पुरुष" का नियम लागू किया था. उन्होंने ही **"एक स्त्री एक पुरुष"** में शादी करके घर बसाने का नियम बनाया. देवों ऋषियों और ब्राह्मणों ने इसका विरोध किया मगर ऐसे ऐयाश लोग महाराज रावण के आगे टिक नहीं पाये. आम लोगों को महाराज रावण द्वारा बनाये गए नियमों के कारण बहुत राहत मिली. उनकी बहन बेटियां सुरक्षित हो गईं थीं. अतः किसी भी व्यक्ति ने देवों का साथ नहीं दिया. जब भी इन ऐयाश देवों ने महाराज रावण सें युद्ध किया तो उन्हें हमेशा मूंह की खानी पड़ी. ब्राह्मण ग्रन्थ ऐसी घटनाओं सें भरे पड़े हैं कि कब कब देव राक्षसों अथवा असुरों सें हारे. लगभग सभी देव महाराज रावण की कैद में बन्द थे.

महात्मा रावण की हत्या करने के बाद देवों और ब्राह्मणों ने पुनः वासना का खेल खेलना चाहा मगर लोगों ने इस का विरोध किया. **तब ब्राह्मणों ने अपनी हवस मिटाने के लिए वेद में यह फतवा जारी कर दिया कि जो भी स्त्री किसी एक पुरुष सें शादी करेगी उसे अपने पति की मृत्यु होने पर उसके साथ ही जिन्दा जल कर मरना पड़ेगा.** जो स्त्रियां अनेकों सें सम्बंध बनाती थीं उन्हें किसी के साथ भी जल कर नहीं मरना पड़ता था.

ब्राह्मण ग्रन्थ गवाह हैं कि जब कृष्ण मरा तो "एक पति" व्रत का पालन करने वाली रुकमणि उसके साथ चिता में जल कर मर गई लेकिन उससें अवैध यौन सम्बंध बनाने वाली गैर–पत्नि राधा उसकी चिता के पास भी नहीं आई. साथ में जलने का सवाल ही पैदा नहीं हुआ. **यह प्रथा सभी स्त्रियों को सीधी सपाट चेतावनी थी कि या तो राधा कुन्ती की तरह व्यभिचारणी बनो या फिर रुक्मणि की तरह चिता में जल मरो!**

इस संदर्भ में **दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश** में वर्णित नियम उल्लेखनीय हैं. **विधवाओं के साथ नियोग करने के नियम को भगवान की आज्ञा** बताते हुए दयानन्द लिखता है कि जब किसी स्त्री का पति मर जाता था तो पति का संस्कार करने सें पहले ही उस स्त्री का किसी अन्य सजातीय पुरुष अथवा ब्राह्मण सें नियोग (बलात्कार) करवा दिया जाता था. दयानन्द इसे ईश्वरीय वेद की आज्ञा बताता है तथा वेद मन्त्रों का हवाला देकर कहता है कि हर स्त्री को दस पुत्र पैदा करने ही पड़ेंगे चाहे वह विधवा हो जाए तो भी उसे गैर मर्दों सें पुत्र पैदा करने पड़ेंगे!

हमारे विचार में किसी भी स्त्री पर इससें अधिक अन्याय नहीं किया जा सकता कि जैसे ही उसका जीवन साथी मृत्यु को प्राप्त हो उस स्त्री को बलात्कारियों के हवाले कर दिया जाये. ऐसी स्थिति में पतिव्रता स्त्री को यही श्रेयकर लगेगा कि वह भी अपने पति के साथ ही जल मरे. पता नहीं कितने ही दयानन्दों ने ऐसी भोली भाली विधवाओं को नियोग के रूप में बलात्कार किया होगा कि भारतीय नारी ने पति के साथ जल कर मरना ही उचित समझा होगा.

पता नहीं कितनी ही रुकमणियों ने सारी उम्र पतियों की बेवफाई को सहन किया होगा तथा विधवा होने पर गैरों के हाथों नियोग का शिकार होने सें बेहतर यही समझा होगा कि ऐसे आवारा पति के साथ जल मरा जाए!

यही सती प्रथा का मूल है!!

सती प्रथा कब सें शुरू हुई

ब्राह्मणवादियों ने हमारे भारत का सबसें बड़ा नुक्सान यह किया है कि उन्होंने भारत के इतिहास को मटिया मेट कर दिया. उन्होंने सोची समझी बदनीयति के अंतर्गत हम भारतीयों का इतिहास इस प्रकार सें नष्ट किया है कि कोई पता ही नहीं चलता कि कौन सी घटना कब घटित हुई थी. सती प्रथा के बारे में भी स्थिति भिन्न नहीं है. केवल कुछ अन्य तथ्यों के आधार पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि सती प्रथा कब शुरू हुई होगी.

1. पति के साथ सती होने का पहला नियम अथवा आदेश अथर्व वेद में ही मिलता है. बुद्ध वाणी सें ऐसा आभास होता है कि भगवन बुद्ध के समय अर्थात ईसा सें 500 बरस पहले तक केवल तीन वेद होते थे. चौथा वेद (अथर्व वेद) उनके महापरिनिर्वाण के बाद बनाया गया. अतः कहा जा सकता है कि बुद्ध काल के बाद ही सती प्रथा की शुरुआत हुई.

गौतम बुद्ध के पास लोग न केवल अपनी निजि समस्यायों का समाधान करवाने आते थे बल्कि समाज में व्याप्त अन्य समस्याओं व रीति रिवाजों पर भी उनका मार्ग दर्शन प्राप्त करने आते थे. बौद्ध त्रिपिटक में ऐसी अनेक घटनाएं दर्ज हैं जब लोग उनसें जाति, आत्मा, यज्ञ जैसी जटिल समस्याओं पर चर्चा करने आये **लेकिन पूरे त्रिपिटक में सती होने की किसी घटना पर कहीं भी कोई प्रश्न अथवा चर्चा नहीं की गई है जो इस बात का द्योतक है कि उनके समय तक सती प्रथा की कोई घटना नहीं हुई थी.** अगर सती की घटना हुई होती तो लोग उनसें इस अमानवीय प्रथा के विषय में अवश्य बात करते.

2. महात्मा रावण ने **"एक पुरुष एक स्त्री"** की शादी का नियम बनाया जो उनको कत्ल किये जाने का एक मुख्य कारण बना क्योंकि ऐसा करने सें आर्यों के उच्छृंखल यौन सम्बंधों पर पाबन्दी लग गई थी. लंकावतार सूत्र के अनुसार महात्मा रावण ने भगवन बुद्ध सें दीक्षा ली थी. इस तरह सें "एक पुरुष एक स्त्री" की शादी का नियम लगभग 600 सदी ईसा पूर्व में बनाया गया. अतः स्वभाविक हैं कि पतिव्रता विधवा को पति के साथ जला कर मारने की सती प्रथा भी तभी बनी जब एक आर्य स्त्री का "एक ही पति" होने का नियम लागू हुआ. सत्ययुग में जब आर्य पशुओं की तरह मैथुन करते थे, तब न कोई 'पति' था और न कोई 'पत्नि' थी. अतः सती होने का सवाल ही नहीं उठता.

यहां तक कि स्वयं भगवन बुद्ध के साथ घटित हुई ऐसी ही घटना इस बात का साक्ष्य है कि **आर्यों में शादी की प्रथा बुद्ध काल तक भी पूरी तरह लागू नहीं हुई थी.** कुमारी यशोधरा ने युवराज सिद्धार्थ को स्वयंवर में जीवन साथी चुन लिया था लेकिन जैसे ही सिद्धार्थ यशोधरा को अपने घर ले जाने के लिए चले तो अन्य आर्य राजाओं ने उन्हें रोक लिया. उन्होंने इस शादी को वैध नहीं माना क्योंकि युवराज सिद्धार्थ ने कुमारी यशोधरा को प्रतियोगिता में आर्य पद्धति के अनुरूप जीता नहीं था. बहुत बहस तकरार होने के बाद अंततः युवराज सिद्धार्थ को अन्य प्रतिद्वंदियों को प्रतियोगिता में हराना पड़ा. तभी उन्हें कुमारी यशोधरा को अपने साथ ले जाने दिया गया. इसका अर्थ यह हुआ कि बुद्ध काल तक भी आर्यों में स्त्री को दांव में "जीता" ही जाता था उनकी शादी नहीं होती थी.

3. एक बात और ध्यान देने योग्य है कि सम्राट अशोक ने जब बौद्ध धर्म अपनाया तो उन्होंनें उस समय समाज में व्याप्त सभी बुराइयों पर पाबंदी लगाई उदाहरणतः उन्होंने यज्ञ बलि पर पाबंदी लगाई, चोरी व्यभिचार न करने के आदेश दिये. जूए शराब पर पाबंदी लगाई. **लेकिन उनके किसी भी शिलालेख में सती प्रथा का उल्लेख भी नहीं है.** अतः ब्राह्मण ग्रन्थों में जितनी भी सती होने की घटनाएं दर्ज हैं वे सभी घटनाएं बुद्ध काल ही नहीं मौर्य काल अर्थात 200 ईसा पूर्व के बाद की हैं.

4. वैसे भी ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार सत्ययुग, त्रेता तथा द्वापर युगों में खुले सैक्स का रिवाज था. शादी का रिवाज तो कलियुग में ही शुरू हुआ. ब्रह्मकुमारी संस्था ने काल गणना के अनुसार कलियुग को सन 2000 में समाप्त हो जाना था. कलियुग 1200 साल का होता है. अतः 800 ईसवी में कलियुग शुरू हुआ है. इस काल गणना को अगर सही मान लें तो ब्राह्मणवादियों ने 800 ईसवी के बाद सती की प्रथा की शुरुआत की है.

अतः कुल मिला कर यह निष्कर्ष निकालता है कि महाराजा रावण ने भगवन बुद्ध के समय अर्थात छटी सदी ईसा पूर्व में "एक पुरुष एक स्त्री" की शादी का नियम लागू किया. मौर्य शासन काल में "एक पुरुष एक स्त्री" की शादी की प्रथा ने अपनी जड़ें पक्की कर लीं. पहली सदी ईसा पूर्व तक जब तक भारत में बुद्ध शासन रहा सती करने की कोई घटना नहीं हुई.

अतः जब महाराज वृहदर्थ का कत्ल करके ब्राह्मणधर्म की पुनः स्थापना की गई, उसके बाद ही "एक पति" रखने वाली स्त्रियों के विरुद्ध यह नियम बनाए गए. उस समय ब्राह्मण सत्ययुग कालीन मुक्त यौन वाला नियम

लागू नहीं कर पाये अतः उन्होंने यही नियम बना दिया कि एक पति वाली स्त्री को पति के साथ ही जला दिया जाए. अपनी यौन विकृति को उन्होंने नग्न स्त्री मूर्तियां बना कर प्रदर्शित किया. गुप्त काल और उसके बाद यानि ब्राह्मणधर्म के स्वर्ण काल में बने खजुराहो व पुरी जैसे यौनालयों में नग्न मैथुनरत स्त्री पुरुषों की मूर्तियां बनाई गईं. ऐसे वेश्याघरों को "मंदिर" बताया गया!! जो विधवाएं सती नहीं हुईं वे इन मंदिरों की भक्तिनियां बन कर वेश्यालयों में पहुंचीं. आज भी ये मंदिी इस प्रथा का जीता जागता सबूत हैं.

ब्राह्मण ग्रन्थों में सती होने के नियम

ब्राह्मण ग्रन्थों में कौन सती हो, कौन नहीं, इस विषय पर जो नियम बनाये गए हैं वे (Mind Bongling) दिमाग को झझकोर देने वाले हैं.

उनका सबसें बड़ा नियम यही था कि पतिव्रता विधवाओं को ही सती किया जाए. जिन औरतों के एक सें ज्यादा पुरुषों सें अवैध सम्बंध थे उन्हें सती होने सें मना किया गया. ऐसी चरित्रहीन स्त्रियों को बाल कटवा कर साध्वी बन कर रहने के लिए भी मजबूर नहीं किया गया. अतः यह सिर चकराने वाला सवाल है कि उन्होंने ऐसे नियम क्यों बनाए कि केवल "एक पति" व्रत का पालन करने वाली स्त्रियां ही सती हों!

दशरथ की तीनों रानियों ने अश्वमेध तथा पुत्रेश्टि यज्ञ में दूसरे पुरुषों और ब्राह्मण ऋषियों सें शारीरिक सम्बंध बनाये अथवा व्यभिचार किया. इसलिए जब दशरथ मरा तो किसी ने भी उन रानियों को सती होने के लिए नहीं कहा. कौशल्या मरना चाहती थी मगर उसे रोक दिया गया. (अयोध्या कांड 66)

राधा भी इसकी सबसें मुख्य उदाहरण हैं. कृष्ण के मरने पर रुक्मणि तो उसकी लाश के साथ जल मरी लेकिन राधा बच गई. राधा को कृष्ण के पिछले जन्म की पत्नि बताया गया. इसलिए इस जन्म में उसने अपने असली पति को नपुंसक बना कर कृष्ण सें मजे किये लेकिन उसका चाहे असली पति मरा या कृष्ण मरा उसे किसी के साथ भी सती होने के लिये नहीं कहा गया. एक पतिव्रत वाली रुक्मणि तो कृष्ण के साथ जल कर सती हो गई लेकिन राधा बिना जले ही सती कही जाती है.

पांच पुरुषों सें यौन सम्बंध बनाने वाली द्रोपदी पर भी सती होने का नियम लागू ही नहीं किया गया. **अन्य अहम उदाहरणें गांधारी, माद्री तथा कुंती की हैं.** गांधारी ने एक पति व्रत का पालन किया. उसे धृतराष्ट्र की लाश के साथ जला दिया गया यानि सती कर दिया गया. पांडू माद्री तथा कुंती दोनों का पति था. लेकिन जब वह मरा तो माद्री को उसके साथ जला दिया गया लेकिन कुन्ती को बख्श दिया गया. क्यों! क्योंकि कुन्ती ने न केवल अनेकों मनुष्यों सें यौन सम्बंध बनाये बल्कि देवों तक को कुंआरेपन सें ही प्रसन्न किया था. अतः उसे सती करने की कौन हिम्मत या हिमाकत कर सकता था.

अतः ब्राह्मणों ने मात्र उन स्त्रियों को जला कर मारने के लिए सती प्रथा चलाई जो महात्मा रावण के बनाये नियम के अनुरूप केवल एक ही पुरुष को अपना पति मानती थीं. यहां तक जो स्त्रियां विधवा होने के बाद नियोग के लिये भी राजी हो जाती थीं उन्हें भी बख्श दिया जाता था. केवल पतिव्रताओं पर यह प्रथा थोपी गई थी. ब्राह्मणों के लिए उनके जीवित रहने का कोई लाभ न था. अतः उनका मारना ही उचित था.

जिन करोड़ों गोपियों ने अपने पतियों के मना करने पर भी कृष्ण सें ऐयाशी की उन्हें भी न तो अपने पतियों के साथ सती होने के लिए कहा गया और न ही कृष्ण के साथ सती होने को कहा गया. भारतीय समाज में अवैध यौनाचार फैला कर इस देश का बेड़ागर्क करने की ब्राह्मणधर्मियों की यह साजिश थी जिसमें वे काफी हद तक सफल भी रहे.

ब्राह्मण ग्रन्थों में जो अन्य नियम बनाए गए वे इस प्रकार सें हैं :

1. सती प्रथा के बारे में पहले पहल मन्त्र अथर्व वेद में ही मिलते हैं. इसका आदेश है, "हे मृत पुरुष, प्राचीन धर्म का पालन करती हुई यह स्त्री तेरे पास आती है. तू इसे परलोक में भी इसी तरह सन्तान वाली बनाना और इसे धन देना." (18.3.1)

इस श्लोक सें एक बात जाहिर होती है कि किसी बहुत ही धूर्त व्यक्ति ने यह श्लोक बनाया है. उसने सती प्रथा को प्राचीन धर्म कहा है ताकि कोई इस पर उंगली न उठा सके. इस श्लोक सें यह भी जाहिर होता है कि यह श्लोक वेद में तब घुसेड़ा गया जब सती प्रथा प्राचीन हो चुकी थी.

2. पदम पुराण में वशिष्ठ के अनुसार **पतिव्रता पत्नि** को अपने पति की चिता में उसके साथ अवश्य जल जाना चाहिए. (सीता अ.5)
3. गरुड़ पुराण के अनुसार जो पतिव्रता स्त्री विधवा होने पर अपने पति के साथ जल कर सती नहीं होती उसे अगले जन्म में बीमार स्त्री का शरीर मिलेगा. वह जब तक अपने पति की चिता में जल

कर सती नहीं होगी तब तक हर बार उसे ऐसा ही जन्म लेना पड़ेगा. मात्र गर्भवती स्त्रियों को सती होने सें छूट दी गई थी. (11.4.91) (सीता अ.5)

4. दक्ष स्मृति (4.18) : पति की चिता पर जल कर सती होने वाली स्त्री अनन्त काल तक स्वर्ग में रहती है. (सीता अ.5)

5. आपस्तम्ब सूत्र में याज्ञवल्क्य का आदेश है कि **पतिव्रता विधवा** के लिए सती होना ही एक मात्र विकल्प है. मनु के बाद याज्ञवल्क्य ही ब्राह्मणों का सबसें बड़ा कानूनविद् है. (सीता अ.5)

6. योगिनी तन्त्र (2.303) भी **पतिव्रता विधवा** के लिए सती होना ही विकल्प बताता है. अतः जो स्त्रियां "एक पति" के अतिरिक्त अन्य पुरुषों सें भी सम्बंध रखतीं थी उनके लिए सती होना मना था. (सीता अ.5)

7. ऋग्वेद (10.18.8) के नियम सें स्पष्ट है कि पहले "वर" के दाह संस्कार सें पहले ही स्त्री को दूसरे वर के हवाले कर दी जाती थी. जो स्त्रियां अपने पति की लाश के साथ जल कर सती नहीं होती थीं अथवा नियोग के लिए राजी नहीं होती थीं उनके बाल काट दिए जाते थे. **अथर्व वेद का आदेश है कि जो स्त्री ऐसे आदमी को नहीं अपनाती थी उसके बाल काट दिये जाते थे. (14.2.60)**

8. **मनु का आदेश है कि बेटी का कन्यादान (विवाह) केवल एक बार हो सकता है. पति के मर जाने पर विधवा हुई कन्या का फिर सें विवाह नहीं हो सकता. (8.226) साथ में वेद की दो आज्ञाएं हैं कि हर स्त्री को दस पुत्र पैदा करने अनिवार्य हैं तथा विधवा होते ही स्त्री को नियोगी के हवाले कर दिया जाए.**

इस प्रकार विधवा के पास दो ही विकल्प बचते थे कि या तो वह पति की लाश के साथ जल मरे या फिर ब्राह्मणधर्मियों की हवस का शिकार हो!

9. कुछ लोगों के अनुसार ऋग्वेद का श्लोक (10.18.7) भी सती प्रथा की ओर इंगित करता है. राम मोहन राय के अनुसार इस श्लोक का अर्थ है, **"हे आग, ये औरतें जिनके तन पर घी मला हुआ है तथा जिनकी आँखों में सुरमा है, आँसू नहीं हैं, तेरे में घुस रही हैं. तू इन्हें अपने पतियों सें अलग मत करना. ये निश्पाप हैं और स्त्रियों में रत्न के समान हैं."**

सरिता मुक्ता समूह द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद में गंगा सहाय ने इस श्लोक का अर्थ करते हुए "आग" की जगह "घर" शब्द का प्रयोग किया है. उनके अनुसार यह श्लोक नव वधुओं को गृह प्रवेश के समय दिया गया आशीर्वाद है. श्री गंगा सहाय ने सरिता में अनेकों विद्वता पूर्ण और पक्षपात रहित लेख लिखे हैं. अतः उनके द्वारा किया गया अर्थ अधिक उपयुक्त लगता है.

वैसे भी सती प्रथा के इतिहास पर नजर दौड़ायें तो ऋग्वेद के समय आर्यों में पति–पत्नि का रिश्ता अभी पक्का नहीं हुआ था. अतः उस समय सती होने का प्रश्न ही नहीं उठता. हाँ, इस बात की सम्भावना सें इन्कार नहीं किया जा सकता कि जैसे जातिवाद को पक्का करने के लिए पहली सदी में पुरुषसूक्त को ऋग्वेद में घुसेड़ दिया गया था वैसे ही सती प्रथा को प्राचीन सिद्ध करने के लिए भी यह श्लोक ऋग्वेद में घुसेड़ दिया गया हो!!

पुनर्विवाह बनाम पुनर्भु

अथर्व वेद (9.5.27) कहता है जो स्त्री पहले पति को प्राप्त होकर दूसरे पति को प्राप्त होती है वह और दूसरा पति दोनों मिल कर यदि पंचोदन यज्ञ करें और बकरे की बलि दें तो इनका कभी वियोग नहीं होता. यदि वह साथ में सोना भी दक्षिणा में दें तो **पुनर्भु स्त्री** का दूसरा पति समान लोक को प्राप्त होता है. (9.5.27) (समु 6. 163)

उपरोक्त मन्त्र अथवा श्लोक में "पुनर्भु" शब्द का प्रयोग किया गया है. अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में भी पुनर्भु शब्द का उल्लेख हुआ है. राधाकृष्णन जैसे ब्राह्मणधर्मी 'विद्वान' पुनर्भु शब्द का अर्थ करते हैं "विधवा का दुबारा विवाह होना". इस तरह का अर्थ करके वह ताल ठोंकते हैं कि उनके समाज में विधवा का पुनर्विवाह हो जाता था और उसे सती होने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी.

परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है. **ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसी एक भी घटना दर्ज नहीं है जहां किसी विधवा की दुबारा शादी की गई हो!** पुनर्भु शब्द का अर्थ "विधवा की पुनः शादी" कभी रहा ही नहीं.. उपरोक्त श्लोक स्वयं तथा दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थ इस बात का प्रमाण हैं कि पुनर्भु शब्द का वास्तविक अर्थ विधवा का पुनर्विवाह नहीं है **बल्कि एक पति को प्राप्त करके दूसरे को प्राप्त करने वाली स्त्री पुनर्भु कही जाती है.** इस शब्द के सही

अर्थ के अनुरूप कार्य करने वाली स्त्रियां राधा, कुन्ती, अहिल्या, अंजनि, कौशल्या आदि हैं जो अपने एक पति को प्राप्त होकर दूसरे "पति" को प्राप्त हुईं.

इस श्लोक में **कहीं भी पहले पति के मरने का उल्लेख नहीं** है और न ही इस श्लोक में स्त्री को पहले पति द्वारा त्यागे जाने का कहीं कोई उल्लेख है और न ही विधवा के दूसरे विवाह की कोई बात की गई है. इस श्लोक में पहले पति के अतिरिक्त दूसरे पति को भी अपनाने वाली स्त्री **(पुनर्भु)** सें कहा गया है कि अगर वह बकरे की बलि वाला यज्ञ करेगी तो दूसरे पति सें उसका वियोग नहीं होगा. लगता है कृष्ण और राधा ने खूब अजामेध यज्ञ किये थे!

अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ भी पुनर्भु का अर्थ विधवा विवाह नहीं करते हैं. उदाहरणतः विष्णु स्मृति (15.8) के अनुसार पुरुष संग न की हुई स्त्री अगर पहला पति छोड़ कर अन्य दूसरे सें सम्बंध करे तो उसे पुनर्भु कहा जाता है. पराशर एवं अंगिरा स्मृति के अनुसार एक सें ब्याही हुई कन्या को अगर दूसरे सें ब्याह दी जाये तो उसे पुनर्भु कहा जाता है. वैसे भी संस्कृत क्योंकि कूट भाषा है अतः हर कोई अपने स्वार्थ के अनुसार इस शब्द का अर्थ कर लेता है.

दूसरे पति को प्राप्त होना : उपरोक्त श्लोक में एक बड़ी अजीब सी बात कही गई है कि

- ☞ स्त्री पहले पति को प्राप्त होकर दूसरे पति को "प्राप्त" होती है.
- ☞ यहां "प्राप्त" होने का अर्थ क्या है? सीधे शब्दों में इसका अर्थ है कि स्त्री पुरुष में पति पत्नि का रिश्ता बनना यानि वंश वृद्धि के लिए बच्चे पैदा करना.
- ☞ फिर सवाल उठता है कि स्त्री पहले पति को प्राप्त होकर दूसरे को प्राप्त कैसे हो सकती है.
- ☞ यहां "पहला" पति मरने का जिक्र नहीं है. इसका अर्थ हुआ कि **स्त्री दूसरे पति को पहले पति के जीते जी प्राप्त होती थी**.
- ☞ यहां पर दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश सचमुच में प्रकाश डालता है. दयानन्द अथर्ववेद के एक श्लोक का अर्थ करता है, हे पति और देवर को दुख न देने वाली स्त्री तू पुत्र जनने वाली हो. **देवर** की कामना करने वाली और पति को सुख देने वाली तू **पति और देवर को प्राप्त होकर** इस अग्निहोत्र का सेवन कर. (पृ 114)
- ☞ दयानन्द **देवर का अर्थ** करते हुए लिखता है **देवरः कस्माद द्वितयो वर उच्चयते** अर्थात **दूसरा वर** ही देवर है. (पृ 115). **शब्दों के अर्थों में घालमेल न हो इसलिए यह जान लेना जरूरी है कि देवर का अर्थ पति का छोटा भाई नहीं है. यह देवर भाभी वाला देवर नहीं है. बल्कि पति के अतिरिक्त जिस भी आदमी सें स्त्री यौन सम्बंध बनाती है वह "देवर" है.**
- ☞ इस प्रकार उपरोक्त श्लोक में पुनर्भू का जो विधवा विवाह कह कर शोर मचाया जा रहा है दयानन्द उसे ठण्डा कर देता है.
- ☞ **वह साफ कर देता है कि विवाह के समय ही आर्य स्त्री दो प्रकार के पतियों को प्राप्त होती थी.**
- ☞ **पहली किस्म का पति वह होता था जो उससें विवाह करता था तथा उस स्त्री की कोख सें जन्मे बच्चे उसकी सम्पति के वारिस बनते थे.**
- ☞ **दूसरी किस्म के वे पति होते थे जो उसके साथ नियोग करने के लिए मिलते या नियुक्त होते थे. वे देवर कहलाते थे. इन दूसरे पतियों सें पैदा बच्चे न तो उनके वंश के होते थे और न ही उन दो नम्बर के पतियों की सम्पति के वारिस होते थे.**
- ☞ **दयानन्द "दूसरे पति" यानि देवरों की गिनती ग्यारह बताता है : नम्बर एक सोम, नम्बर दो गंधर्व, नम्बर तीन अग्नि तथा नम्बर चार सें ग्यारह तक आम आदमी. (पृ. 115)**
- ☞ इस प्रकार पुनर्भु को प्राप्त होने वाले दूसरे पति का अर्थ विधवा सें शादी करने वाला व्यक्ति कदापि नहीं है!
- ☞ विधवा विवाह को पूरी तरह नकारते हुए दयाननद इसें वेद विरोधी करार देता है.

उपरोक्त वेदाज्ञाओं सें निम्न बातें स्पश्ट होती हैं :

1. जो स्त्री (बिना दूसरा पति किये) "विधवा" हो जाए तो उसे पति के साथ जल मरना चाहिए लेकिन जो स्त्री एक सें ज्यादा पतियों को प्राप्त होती है उसके सती होने की बात नहीं की गई है.
2. दूसरे पति सें वियोग न हो इसका तो उपाय वेद बताता है मगर पहले पति सें वियोग न हो इसका उपाय वेद में नहीं है उसके साथ तो सती होना ही उपाय है.

3. पति का अर्थ शादी करने वाला नर नहीं बल्कि उस स्त्री सें सम्बंध बनाने वाले को पति कहा जाता था.

एक बहुत ही हैरानी वाली बात ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलती है कि आर्यों, देवों, ब्राह्मणों में कभी भी विधवा का दुबारा घर नहीं बसाया गया लेकिन अन्य जातियों व धर्मों लोगों में जब भी कोई स्त्री विधवा हुई उसका समयानुसार घर बसा दिया गया. बालि मरा तो तारा को सुग्रीव ने बसा लिया. महाराज रावण के बाद उनकी विधवा को विभीषण ने बसा लिया.

सो आज जो हम विधवा का पुनः घर बसाते हैं यह रीत ब्राह्मण धर्म की नहीं है. यह रीत हमारे उन पूर्वजों की है जिन्हें ब्राह्मण नीच कहते हैं. यह रीत महाराज रावण की चलाई हुई है जिसे ये लोग राक्षस कहते हैं.

पुनर्विवाहिता के सम्बंध में ब्राह्मण ग्रन्थों के नियम

ब्राह्मणधर्मियों ने अपने धर्मग्रन्थों में दुबारा घर बसाने वाली नारी के बारे में ऐसे फतवे जारी किए :

1. कश्यप सात प्रकार की कन्याओं को अधम तथा वर्जनीय बताता है उनमें छटी पुनर्विवाहिता तथा सातवीं उसकी सन्तान बताई गई है. अतः पुनर्विवाहिता तथा उसकी जायज सन्तान को अधम जाता था. जबकि नियोग व व्यभिचार सें पैदा भगवान तथा देवता कहे जाते थे.
2. पुनर्विवाहिता के हाथ का अन्न खाने योग्य नहीं है. (अंगिरा 4.56) जबकि नियोग अथवा व्यभिचार करने वाली कुन्ती को पंचकन्या बताया जाता है जिसका नाम जपने मात्र सें ब्राह्मणधर्मियों के पाप धुल जाते हैं.
3. ब्राह्मणों में पुनर्विवाह होने पर जो सन्तान हो उसे भोजन की पंक्ति में न बैठाएं क्योंकि ऐसी सन्तान पंक्ति में बराबर बैठने योग्य नहीं है. (याज्ञ 1.224) लेकिन नियोग सें पैदा होने वालों को अवतार बताया गया.
4. जिस घर में पुनर्विवाहिता हो वह घर सदा अपवित्र रहता है. अतः ऐसा घर सब प्रकार के पवित्र कार्यों के अयोग्य है. (पराशर 5.65)
5. अन्य ब्राह्मण तो पुनर्विवाह को अपवित्र बता रहे थे लेकिन मनु ने तो स्पश्ट शब्दों में कह दिया कि स्त्री विधवा हो जाने पर पुत्रों के अधीन रहे. वह चाहे तो घास फूस खाकर शरीर को मिटा दे मगर दूसरे विवाह के बारे में सोचे भी नहीं क्योंकि **पतिव्रता स्त्रियों** के लिए दूसरा विवाह करने का कोई विधान ही नहीं है. (मनु 5.148–162) उनके लिए तो जल मरना ही विकल्प है.
6. ब्राह्मणधर्म का आधुनिक विद्वान दयानन्द कहता है कि स्त्री का दुबारा विवाह हो ही नहीं सकता. विधवा का केवल नियोग हो सकता है जो कि अनिवार्य है. (सत्यार्थ. 4)

वैसे तो आर्यों में विधवा स्त्री को पुनः घर बसाने की इजाजत ही नहीं थी. फिर भी अगर कोई हिम्मत करके किसी अन्य पुरुष सें घर बसा लेती थी तो अगर साफ शब्दों में कहा जाए तो ब्राह्मणों का एक शिकार कम हो जाता था. इसलिए उन्होंने अपने धर्म का सहारा लेकर स्त्री के पुनर्विवाह को बिल्कुल बन्द करा दिया. बीसवीं सदी तक आर्यों में कभी किसी विधवा या त्यागी हुई स्त्री का फिर सें विवाह नहीं हुआ. गांधी तक इस सवाल पर मक्कारी भरी चुप्पी साध गया. केवल 1956 के बाद जब बाबा साहिब ने हिन्दू कोड बिल में इस बात का प्रावधान बनाया तब कहीं जाकर हिन्दू नारी को फिर सें जीने का अधिकार मिला.

8.7 नारी को गर्क करने वाला ब्राह्मण : तुलसी

भारत के इतिहास में स्त्री और शूद्र की कहानी लगभग एक जैसी है. शूद्रों की तरह भारतीय नारी वेदकाल (सत्तयुग) सें लेकर अब तक ब्राह्मणधर्म में सताई जा रही है. ब्राह्मण ऋषि और उनके देव स्त्री का शोषण करने अथवा कराने के धन्धे में जुटे हुए थे. उस समय के राजे रजवाडे भी उनकी इस लूट में सम्मिलित थे. स्त्री

शोषण के नियम क्योंकि संस्कृत भाषी धर्म ग्रन्थों में होते थे तथा संस्कृत आम आदमी की भाषा नहीं होती थी इसलिए आम आदमी ब्राह्मणों और देवों की तरह स्त्री शोषण में लिप्त नहीं हुआ था.

लेकिन तुलसी ने हिन्दी में रामचरित लिख कर धर्म के नाम पर ब्राह्मणों के मन में नारी के प्रति जो घृणा थी उसे घर घर पहुंचा दिया. उसकी रामचरित पढ़ कर ऐसा लगता है कि जैसे तुलसी का बचपन सें लेकर मरने तक कभी माँ बहन पत्नि बेटी सें आत्मीयता का नाता रहा ही नहीं. उसने जिस तरह सें नारी जाति के विरूद्ध जहर उगला है अथवा जिस तरह सें उसने नारी को प्रताड़ित करने की बातें कही हैं उससें लगता है कि तुलसी की माँ, बहन, पत्नि, बेटी सभी चरित्रहीन थीं. तभी उसने पूरी नारी जाति को चरित्रहीन घोषित कर दिया. उसने नारी के विरूद्ध जो फतवे दिये वे इस प्रकार सें हैं:

♦ **नारी सुभाव सत्य सब कहहिं, अवगुण सदा आठ उर रहहिं!**
साहस अनृत चपलता माया, भय अविवेक असोच अदाया!!

अर्थात सभी ब्राह्मणों ने सत्य कहा है कि नारी के आठ गुण सदा उसके पेट में रहते हैं – हिम्मत, झूठ, चंचलता छल, डर, मूर्खता, अपवित्रता और निर्दयता.

तुलसी जब यह फतवा देता है कि नारी के ये गुण उसके पेट में होते हैं तब वह अपनी बेवकूफी को दर्शाता है. उसकी इस बात सें तुलसी की "विद्वता" का पता चलता है. तुलसी समझता था कि क्योंकि सारा खाया पिया पेट में जाता है अतः आदमी के सारे गुण भी पेट में ही होते हैं. उसके जैसा ही विद्वान रोम युनान में भी हुआ था जो अपने पेट के चारों ओर लोहे की जंजीरें लपेट कर रखता था ताकि अधिक ज्ञान होने पर उसका पेट न फट जाए. अस्तु!

खैर तुलसी के अनुसार हर नारी में साहस होता है लेकिन तीन शब्दों बाद ही वह नारी में डर होने का गुण भी बताता है. नारी के प्रति उसके दृश्टिकोण को देखते हुए उसके अनुसार नारी स्वभाव सें डरपोक है लेकिन उसमें अपनी मनमानी करने का साहस होता है जैसे गोपियां अपने घरवालों के रोकने पर भी कृष्ण सें भोग करने आ जाती थीं.

इसके अतिरिक्त तुलसी के अनुसार नारी में अन्य गुण होते हैं : नारी झूठी होती है, चंचल होती है लक्ष्मी की तरह एक के पास सारी उम्र टिकने वाली नहीं होती, धोखेबाज होती है, मूर्ख होती है, चरित्रहीन होती हैं और निर्दयी होती हैं.

असौच का अर्थ चरित्रहीन करने पर कईयों को एतराज हो सकता है लेकिन तुलसी स्वयं इस की पुश्टि करता है जब वह कहता है:

♦ **भ्राता पिता पुत्र उरगारी, पुरुष मनोहर निरखत नारी!**
होइ विकल मनहिं न रोकी, जिमि रविमनि द्रव रबिहि बिलोकी!!

तुलसी कहता है कि नारी पुरुष की सुन्दरता देखते ही उस पर मोहित हो जाती है चाहे वह उसका भाई, पिता अथवा पेट सें जन्मा पुत्र ही क्यों न हो. जैसे सूर्य की गर्मी में मक्खन पिघल जाता है वैसे ही सुन्दर नर को देखते ही नारी का मन तड़प उठता है.

तुलसी तो खैर कभी का मर लिया लेकिन उसके वारिस ब्राह्मणवादी तो अभी तक मौजूद हैं हैं जो नित्य इन श्लोकों का पाठ करते हैं. हम उनसें एक ही बात पूछना चाहते हैं कि क्या उनकी माँ बहन बेटियां ऐसे ही चरित्र की नारियां हैं. क्या सीता भी ऐसे ही चरित्र की नारी थी ? क्या सावित्री भी ऐसी ही थीं? आधुनिक युग में पैदा हुई कस्तूरबा, इंदिरा, राणी लक्ष्मी आदि इसी प्रकार के "गुणों" वाली नारियां थी?

एक राधा के चरित्रहीन होने पर, अथवा एक काली के निर्दयी होने पर पूरी नारी जाति को लांछित करना तो अन्याय है, दिमागी पागलपन है! लेकिन यह ब्राह्मणों का विशेष गुण है वे एक बुरे के कारण पूरे समाज को ही बुरा बता देते हैं. ब्राह्मण परशु की एक क्षत्रिय सें झगड़ा हुआ और उसने पूरे क्षत्रिय समाज का कतलेआम कर मचा दिया.

♦ **ढोल गंवार पशु शूद्र अर नारी, सकल ताड़न के अधिकारी!**

अर्थात जैसे ढोलक को बजाने के लिए उसे पीटना पड़ता है, कम अक्ल आदमी, पशु और शूद्र सें काम करवाना हो तो उन्हें भी पीटना पड़ता है, वैसे ही नारी भी मार पिटाई करने पर ही बाज आती है.

♦ **काम क्रोध आदि मद मोह के धारि, तिन मंह अति दारुण दुखद रूपी नारी!**

♦ **जप तप नेम जलाश्रय धारी, होइ ग्रीसम सोसई नारी!!**

तुलसी ने स्वयं तो नारी के विरुद्ध जहर उगला ही उसने राम के मूंह सें भी यह कहलवाया कि नारी का तन वासना, गुस्से, अहंकार और मोह सें भरा होता है इसलिए उनकी इतनी दयनीय हालत रहती है. जैसे सूरज की गर्मी तालाब के पानी को सुखा देती है वैसे ही स्त्री आदमी की भक्ति, तपस्या, व्रत और प्रतिज्ञा को सोख लेती है.

तुलसी स्त्री विरोधी ही नहीं था बल्कि अक्ल सें भी पैदल था. वह लिखता है कि जब राम जन्म ले रहा था यह **कौतुक देख कर** सूर्य एक महीने तक अपनी चाल ही भूल गया और अयोध्या के ऊपर ही टिका रहा. तुलसी इतना बेअक्ल था कि उसे यह भी मालूम नहीं था कि कोई भी स्त्री बच्चा जनने के लिए कुछ ही पल का समय लेती है. राम को जनने में कौशल्या को कुछ पलों का ही समय लिया होगा, महीने भर का नहीं. सो महीने भर सूर्य वहां रुक कर क्या कौतुक देखता रहा, तुलसी जाने!!

भगवन बुद्ध ने स्त्री की खोई हुई प्रतिश्ठा को पुनः बहाल किया. आम स्त्री को ब्राह्मणवाद के चंगुल सें निकाला. उन्होंने स्त्री को अम्बपाली "वेश्या" सें अम्बा माँ का दर्जा दिया. जब तक भारत में बौद्ध धर्म का बोलबाला रहा स्त्री की स्थिति ठीक रही लेकिन गुप्त काल में ब्राह्मणवाद ने फिर सिर उठाया और स्त्री का पतन पुनः शुरू हो गया. रही सही कसर तुलसी ने पूरी कर दी.

8.8 दासी प्रथा यानि ब्राह्मणिक दल्लागिरी

ब्राह्मण-धर्म या आर्य-धर्म के भगवानों, देवताओं, पुरोहितों, ऋषिओं और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने स्त्रियों की लेन देन इस व्यापक स्तर पर की कि एक बार तो ऐसा लगता है कि **ब्राह्मण-धर्म या आर्य-धर्म स्त्रियों की दल्लागिरी का ही दूसरा नाम है.** उनमें दासियों का लेन देन बहुत व्यापक स्तर पर होता था. सैंकड़ों हजारों की संख्या में इन असहाय लड़कियों का लेन देन होता था.

कभी किसी लेखक ने इस घिनौने रिवाज पर आपति नहीं की. दासी कोई पेड़ों पर उगने वाली वस्तु नहीं है. वह भी मानव स्त्री की जाई बेटी ही होती है. उसकी माँ ने भी उसे नो महीने गर्भ में पाला होता है, उसके लिए प्रसव पीड़ा भी सहन की होती है. उसके मन में भी अपना घर बसाने की कामना रहती है. उसे भी सुख दुख महसूस होते हैं.

अतः किसी असहाय बच्ची को दासी बना कर किसी देव या ऋषि को भेंट करना कभी भी धर्म कार्य नहीं हो सकता. लेकिन ऐसे नीच काम सभी देवों और ब्राह्मण ऋषियों ने अन्जाम दिये हैं. अत्यंत दुख की बात है कि ऐसे लोगों को साधु देवता और भगवान कहा जाता है तथा उनके कुकृत्यों को धार्मिक कहा जाता है. मात्र सत्गुरू कबीर ने सीना ठोक कर कहा : .... अधर्म को धर्म बतावैं वेद!!

सन 1843 में अंग्रेजों ने इस अमानवीय लेन देन पर पाबंदी लगा दी वर्ना ब्राह्मण तो अब तक दास दासियों के लेन देन के व्यापार में लगे रहते. देवराज चानना महोदय के अनुसार मिथिला के ब्राह्मण बकायदा रजिस्ट्री करा कर दासियों व दासों का व्यापार करते थे. (सलेवरी 3)

देव कहे जाने वाली कौम, जिसमें कि समस्त देव जैसे ब्रह्मा, विष्णु, पवन, अरूण, वरूण, राम, कृष्ण, हनुमान आदि सभी शामिल हैं, किसी न किसी रूप में औरतों की लेन देन में शामिल रहे हैं. **सीधे साफ़ शब्दों में कहें तो लगभग समस्त देव और ब्राह्मण ऋषि औरतों की दल्लागिरी में लिप्त रहे हैं.** ब्राह्मण ग्रन्थ ऐसी दल्लागिरी की घटनाओं सें भरे पड़े हैं. देवों और ब्राह्मण ऋषियों के लिए स्त्रियों का लेन देन न केवल साधारण सी बात थी बल्कि धर्म सम्मत भी थी. उनके धर्म ग्रन्थ स्त्रियों की दल्लागिरी करने पर मिलने वाले "पुण्य कथाओं" सें भरे पड़े हैं. उदाहरणतः

1. ब्राह्मण ऋषि कण्व को राजा ने पचास दासियां रथ समेत प्रदान कीं. (ऋग 6.27.8,1.126.3) अगर कण्व सन्त था तो उसने दासियों का क्या करना था. परन्तु वह तो ब्राह्मण ऋषि था. ऋषि यानि स्त्रियों की लेन देन करने वाला दल्ला!!
2. दीर्घतमा को सभी जानते हैं कि वह ब्राह्मण ऋषि सरेआम सबके सामने औरतों सें मैथुन या बलात्कार करता था. उसके बेटे कक्षिवान को भी रथ भर भर कर दासियां मिली थीं. (ऋग 8.19.36) सरिता के अनुसार अक्सर ये दासियां वेश्यावृति के काम आती थीं. (3.72) पैसा कमाना भी तो ब्राह्मणवाद का एक अंग है. ऋषि ऐसे भी कमाई कर लेते थे. माधवी प्रकरण इस का सबूत है.
3. राम और उसके सभी रिश्ते नाते वाले स्त्रियों की दल्लागिरी में लगे रहे. औरों का तो क्या कहना यति, ब्रह्मचारी आदि कहे जाने वाले हनुमान तक को राम ने लड़कियां स्पलाई की. और हनुमान ने वे लड़कियां स्वीकार की, प्राप्त की. हनुमान ने यह लड़कियां बेटी बना कर गोद नहीं ली थीं बल्कि रामायण के अनुसार यह वे लड़कियां थी जो मालिश करने में एक्सपर्ट थीं और उनके गुप्तांगों पर

रोंऐ उगने शुरू ही हुए थे. हर कोई सहज कल्पना कर सकता है कि ऐसी लड़कियों का हनुमान ने क्या किया होगा!!

4. राम के जन्म वृतांत सें स्पष्ट है कि राम को पैदा करने जो ब्राह्मण ऋषि आया था उसे जंगल सें बाहर लाने के लिए दशरथ के भाई रोमपाद ने उसे पहले वेश्याएं भेजी (स्पलाई) की थीं. जनक ने जब सीता को दांव पर लगाया और राम ने उसे दांव में जीत लिया तो जनक ने राम और उसके तीनों भाईयों को एक एक सौ सुन्दर लड़कियां भी स्पलाई की. जनक के तो दशरथ की तरह कोई औलाद थी नहीं. फिर राम को सप्लाइ करने कहां सें लेकर आया वह चार सौ लड़कियां. (बाल कांड 74) दहेज और दास दासियां इसके अतिरिक्त दिये गये थे.

   तुलसी कहता हैः दासी दास तुरंग रथ नागा...... दाइज दीन्ह न जाई बखाना. अर्थात राम को दहेज में इतने दास दासियां मिलीं कि उनकी गिनती बताई नहीं जा सकती. दासी भी किसी की तो बेटी होती ही है. कोई माँ ही उसे जन्म देती है. दासियां आसमान सें नहीं टपकतीं. **काश इन दासियों में एकाध तुलसी की बेटी या बहन भी होती. तब शायद उसे पता लगता कि किसी की बेटी को दासी बनाने का क्या अर्थ होता है.** लेकिन जो तुलसी अपनी माँ के लिए यह कह सकता है : नारी ताड़न की अधिकारी, वह अपनी बेटी के लिये भी ऐसा ही कहता.

   राम उन दासियों को ले आया. जब राम को बनवास हुआ तो वह उन दासियों को अपने साथ वन में ले गया. (आनंद रामायण विलास खण्ड.7)

5. रामायण में ही कथा है कि जब भरत राम को मिलने गया तो अयोध्या सें कुछ लोग भी उसके साथ चल पड़े. रास्ते में भारद्वाज का आश्रम आया. अब ब्राह्मण ऋषि का आश्रम हो और वहां स्त्रियों की स्पलाई न मिले, ऐसा तो हो ही नहीं सकता. भारद्वाज ने सभी पुरुषों को सात सात स्त्रियां स्पलाई कर दीं. बढ़िया मीट शराब पेश कर दीं. अगले दिन भरत ने उन अयोध्या वासियों सें आगे चलने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया. जैसा गुरू वैसे चेले. बहुत हैरानी की बात है कि हम लोग सदियों सें यह कथाएं सुनते आ रहे हैं लेकिन आज तक किसी ने यह नहीं पूछा कि वह ऋषि इतनी औरतें कहां सें लेकर आया. ये औरतें उसकी अपनी बेटियां तो थीं नहीं तो किस की बेटियां उसने सप्लाई कीं.

6. सीता हरण और खोज के समय सुग्रीव ने राम को तेरह कन्याएं भेंट की. (चाभी 18)

7. जब अर्जुन ने दांव पर लगी द्रोपदी को जीत लिया तो उसके बाप द्रुपद ने पांचों पांडवों को सौ सौ ऐसी लड़कियां भेंट की जो ताजा जवान हुई थीं. (आदि 197)

8. अगर कृष्ण की कथा को सच मान लिया जाये तो शायद दुनिया में उससें बड़ा दल्ला न कभी हुआ और शायद न कभी पैदा होगा. उसने तो अनेकों देशों की ताजा जवान हुई लड़कियां स्पलाई कीं. (आदि 198) कृष्ण के कहने पर जब अर्जुन ने उसकी बहन सुभद्रा को अगवा कर लिया तो कृष्ण ने इनाम के तौर पर उसे एक हजार गौरे रंग की लड़कियां सप्लाई कीं.

कहां से लाया कृष्ण इतनी लड़कियां? यह लड़कियां उसने अपनी 16128 रखैलों सें पैदा की अथवा राधा सें या कुब्जा सें पैदा की! अथवा उन करोड़ों गोपियों सें पैदा की जो पिछले जन्म में ऋषि थे और उसका सुन्दर शरीर "पाना" (भोगना) चाहते थे. किस किस की बेटियां उठा कर लाया कृष्ण अपने जीजा अर्जुन को देने के लिए!

कृष्ण जब सत्याभामा को लेकर आया तो उसके बाप ने कृष्ण को तीन हजार सुन्दर जवान लड़कियां सप्लाइ की थीं. हो सकता है उनमें सें एक हजार उसने आगे अर्जुन को सप्लाइ कर दीं हों.

9. कहां

10.

ब्राह्मण-धर्म ग्रन्थों में औरतों की दल्लागिरी के बारे में मिली कुछ कथाएं तो दिल दहला देने वाली हैं. यह कथाएं दर्शाती हैं कि ब्राह्मणवादी लोग जब दल्लागिरी करने पर उतरते थे तो उन्हें अपनी बहन बेटी का भी ख्याल नहीं रहता था.

1. **माधवी प्रकरण** : महाभारत के उद्योगपर्व 106 व 123 में माधवी की कथा मिलती है. वह ययाति नामक राजा की बेटी थी. ययाति कोई आम पुरुष नहीं है. **वह पाँडवों का आदि पुरुष है**. कौरव तथा पाँडव उसी के ही वंशज हैं. ययाति को एक दिन ब्राह्मणों के ''ब्रह्म-ज्ञान'' प्राप्त करने की धुन सवार हुई. गहरी छानबीन के बाद उसे मालूम हुआ कि गालव नामक ब्राह्मण ऋषि उसे ''ब्रह्म-ज्ञान'' दे सकता है.

गालव की खोज की गई. वह एक बैल गाड़ी के नीचे छिपा मिला क्योंकि उसके कोढ़ निकला हुआ था. राजा उसके पास पहुँचा. ''ब्रह्म-ज्ञान'' देने का मोल भाव शुरू हुआ. आखिर सौदा इस बात पर पटा कि राजा अपनी कमसिन बेटी उस कोढी ब्राह्मण ऋषि को कुछ समय के लिए उधार दे देगा. राजा ने एडवांस में लड़की सौंप दी. उस ब्राह्मण ऋषि ने जो ब्रह्म-ज्ञान दिया, वह यह था, 'वायु सबसें महान है क्योंकि यह सब कुछ अपने में मिला लेता है. आग भी बुझ कर उस में लीन हो जाती है. सूरज और चाँद भी वायु में ही अस्त होते हैं. जल भी वायु में ही लीन होता है'.

अगर आज कोई ऐसी बकवास करे तो लोग उसे पागल कहेंगे मगर राजा ने ब्राह्मणों के बनाए इस ब्रह्म-ज्ञान के लिए अपनी बेटी की आबरू एक दल्ले अर्थात ब्राह्मण ऋषि को सौंप दी.

उस ब्राह्मण ऋषि ने जो व्यवहार उस मासूम लड़की के साथ किया, उसे जान कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं. वह ब्राह्मण ऋषि उस मासूम बच्ची को एक राजा के पास ले गया. वहां राजा के सामने उसने लड़की के अंग अंग की जो तारीफ की उसे सुन कर फिल्मी दल्ले भी फीके पड़ जाते हैं. वह ब्राह्मण ऋषि के लड़की के अंगों का वर्णन ऐसे कर रहा था जैसे कि उसने उस मासूम बाला को अपने सामने नग्न खड़ी कर रखा हो. राजा ने तारीफ सुनी, लड़की देखी और उसे भोगार्थ रख लिया.

ब्राह्मण ऋषि को खूब सारा माल यानि दक्षिणा मिल गई. कुछ समय बाद वह राजा के बच्चे की माँ बन गई तो राजा ने उस ब्राह्मण ऋषि को लड़की लौटा दी. वह ब्राह्मण ऋषि उसे फिर दूसरे राजा के पास ले गया. वहां भी वही कुछ हुआ. ब्राह्मण ऋषि को माल मिल गया. राजा को रखैल मिल गई. लड़की फिर माँ बन गई. फिर उस ब्राह्मण के पास आ गई. उस ब्राह्मण ऋषि ने तीसरी बार फिर एक और राजा को लड़की सप्लाइ कर दी. वहां वह लड़की फिर गर्भवती हो गई. उस बेचारी को पुनः उस दल्ले के पास आना पड़ा. इतने में उस ब्राह्मण ऋषि के गुरू विश्वामित्र को पता लगा कि उसके चेले के हाथ एक सुन्दर लड़की लगी है. वह भी अपनी गुरू-दक्षिणा मांगने चला आया. चौथी बार वह बेचारी ब्राह्मणों के महा ऋषि विश्वामित्र की हवस का शिकार बनी. अब वह चार बच्चों की माँ बनाई जा चुकी थी लेकिन उस माँ का अपने किसी बच्चे पर अधिकार नहीं था. उसका रूप सौंदर्य ढल गया था. ब्राह्मण ऋषि उससें और अधिक कमाई नहीं कर सकता था. अतः उस ब्राह्मण ऋषि ने माधवी को वापस उसके बाप को लौटा दिया.

ऐसे ही थे महान ब्राह्मण ऋषि! वे थे ही दल्ले!! निपट दल्ले!! ऐसे ही दल्लों का धर्म है ब्राह्मण-धर्म!! क्या संदेश देती है ब्राह्मणों की यह धार्मिक कथा? यह कथा सबूत है इस बात का कि

(1) ब्राह्मणवादी आर्य पिता अपनी बेटी को किराये पर उठाते थे. उसे धन के बदले में किसी के पास बतौर जमानत रख देते थे. शायद इसी लिए माँएं भगवान सें बेटी की बजाए बेटा ही मांगती थीं. गैर मर्द के यहां जमानत के तौर पर बंधक रहने की पीड़ा नारी ही समझ सकती है.

(2) ब्राह्मण ऋषि गुरू दक्षिणा के रूप में लड़कियां भोगार्थ लेते थे, जिसे धर्म सम्मत माना जाता था.

(3) ब्राह्मण ऋषि लड़कियों की दल्लागिरी करते थे और यह उनका धर्म कार्य माना जाता था.

(4) ब्राह्मणधर्म में ऐसी कथाएं धार्मिक कथाएं कही जाती हैं. उनका दावा है कि ऐसी कथा सुन कर आदमी मोक्ष प्राप्त कर लेता है.

.

2.

3.

तेरह किस्म की दासियां

1. **गृहजात** : घर की दासी सें पैदा हुई बेटी दासी ही बनती थी. चाहे उसे पैदा करने वाला घर का मालिक ही क्यों न हो.

2. **क्रीत** : पैसे सें खरीदी गई दासी. धन की खातिर बिकने वाली दासियां हर जाति की होती थीं जैसे कि तारामती क्षत्राणि थी. ऐसी दासियों के पैदा हुई संतान को दासी का ही गोत्र मिलता था. अतः आज कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र अपने खून की पवित्रता की डींग नहीं मार सकता.

3. **लब्ध** : उपहार या दान में मिली दासी. ब्राह्मण ऋषियों, राजाओं व अन्य नायकों ने इस वर्ग में इतनी दासियां ली और दी हैं कि गिनती करना ही संभव नहीं है.

4. **दाय** : विरासत में मिली हुई दासी. बाप के मर जाने पर बेटे के अधिकार में आने वाली दासियां. जिस प्रकार पहले बाप उन दासियों का उपभोग करता था बाद में बेटा करता था. दासी के गर्भ सें बाप द्वारा पैदा की गई लड़की को विरासत में बेटा भोगता था चाहे रिश्ते में वह उसकी बहन ही लगती थी. ऐसा था आर्य समाज!!

5. **गिरवी** : पैसे के लिए गिरवी रखी गई लड़की गिरवी दासी कहलाती थी. माधवी की कथा सभी जानते हैं. पाण्डवों के आदि पुरुष ययाति ने अपनी बेटी ब्राह्मण ऋषि गालव के पास गिरवी रख दी थी. उस ऋषि ने उस बेचारी को तीन राजाओं के पास गिरवी रखा. तीनों ने उस लड़की को गर्भवती किया. जब तक उसके बाप ने छुड़वाया वह चार लोगों के बच्चों की माँ बन चुकी थी. अनुमान लगाया जा सकता है कि जब राजा की बेटी के साथ यह हाल हुआ तो आम दासी के साथ क्या हाल होता होगा!

6. **कर्जदासी** : परिवार में किसी द्वारा लिया गया कर्ज न उतार पाने पर जो स्त्रियां साहूकार के यहां काम करने पर मजबूर होती थीं, इस वर्ग में आती थी. भारत को आजाद हुए साठ साल होने के बावजूद आज भी यह ब्राह्मणिक प्रथा जारी है. आज भी ईंट भट्टा व पत्थर की खानों में इस प्रकार के कर्जदास और दासियां भरे पड़े हैं.

7. **स्वयंदासी** : अपने निजि कारणों सें किसी की दासी बन कर रहना इस वर्ग में आता हैं. बनवास के दौरान द्रोपदी राजा कीचक की स्वयंदासी बन कर रही थी. दासत्व के उस दौर में कीचक ने अनेकों बार द्रोपदी पर नीयत खराब की. यहां तक कि कीचक की बहन ने भी दासी द्रोपदी को अपने भाई की हमबिस्तर बनाने में मदद की.

8. **युद्धजिता** : युद्ध में जीती गई स्त्रियां इस वर्ग में आती थीं. अधिकतर इतिहासकार यह मानते हैं कि आर्य बाहर सें भारत आए और उन्होंने यहां के मूल निवासियों को युद्ध में हरा कर बन्दी बना लिया. मुद्राराक्षस महोदय ने सिद्ध किया है कि केवल ब्राह्मण ही बाहर सें आए तथा उन्होंने यहां के निवासियों को तहस नहस कर दिया. बाबा साहिब के अनुसार केवल क्षत्रियों ने ब्राह्मणों के विरुद्ध संघर्ष किया था. हार जाने पर वे समाज का चौथा वर्ण शूद्र बनाए गए.

   युद्ध में हारे क्षत्रियों यानि शूद्रों को सबक सिखाने के लिए ब्राह्मणों ने नियम बनाए. अब तक मालाबार जैसे एरिया में शूद्र स्त्रियों को नंगे बदन सड़क पर आना पड़ता था, वह युद्धजिता दासीत्व का ही परिणाम है.

9. **पणजिता** : वे स्त्रियां जो उनके पतियों द्वारा या पिताओं द्वारा जूए में हारी जाती थीं, पणजिता कहलाती थीं. ऋग्वेद में अनेकों श्लोक हैं कि जूआ खेलना आर्यों का धर्म था तथा अपने धर्म को पूरा करने में आर्य पुरुष अपनी पत्नियों को जूए के दांव पर लगाने में बिल्कुल भी नहीं झिझकते थे. जूए में हारी गई स्त्रियों (पणजिताओं) को जब बाजी जीतने वाला लेकर जाता था तो उनके द्वारा किए गए विलाप के किस्से वेदों में वर्णित हैं. विश्व प्रसिद्ध पणजिता द्रोपदी के किस्से को तो सारी दुनिया जानती है.

10. **अकालदासी** : हर युग में भारत भूमि अकालग्रस्त रही है. अकाल पड़ने पर धनवान ब्राह्मण पुजारियों और साहुकारों की मौज बन जाती थी. भूख सें मरते हुए किसान और मजदूर अपनी बेटियां बीवियां इन दरिंदों को बेचने या गिरवी रखने को मजबूर होते थे. आज भी कालाहांडी जैसे इलाकों सें बच्चियां बेचने के किस्से अखबारों में आते रहते हैं. हर काल में ये अकालदासी बच्चियां यौन शोषण का शिकार हुई हैं.

11. **विवाहदासी** : घर के दास के साथ विवाह करने वाली स्त्री भी मालिक की दासी बन जाती थी. उसके साथ भी मालिक अपनी मन मर्जी का बर्ताव करता था.

12. **भुक्तदासी** : शूद्र कुल की स्त्री के अवैध गर्भ सें उत्पन बच्ची भुक्तदासी कहलाती थी. मालिक अथवा उसके दोस्तों द्वारा दासियों सें सम्बंध तो बनाए ही जाते थे. ऐसे में यह बताना सम्भव नहीं

होता था कि संतान का बाप कौन है. ऐसी संतान को किसी का भी गोत्र नहीं मिलता था तथा वे दास दासी बनने पर ही मजबूर होते थे.

13. **स्वयंबिक्रत** : हरीशचन्द्र की तरह स्वयं को बेचने वाली स्त्रियां इस वर्ग में आती थीं.

दासी प्रथा सम्बंधी ब्राह्मणिक नियम

मनु के अनुसार गाय भैंस घोड़ी ऊंटनी **दासी** भेड़ बकरी सें उत्पन्न सन्तान पर माँ का ही अधिकार होता है पैदा करने वाले नर का नहीं होता. (9.48) अतः दासी सें पैदा सन्तान का भरण पोशण करने की जिम्मेवारी माँ की होती है पैदा करने वाले बाप की नहीं. अर्थात आर्य मालिक अपनी दासी को पशुओं की तरह रखता था. उसके रूप यौवन का आनन्द लेता था लेकिन उससें पैदा बच्चों को पालने की जिम्मेवारी दासी की ही होती थी. महान आर्य समाज!!

द्रोपदी जूए में हारी गई.

गर्भवती सीता को जंगल में फिकवा दिया गया.

अहिल्या पत्थर की बनी पर इन्द्र के बकरे के अण्डकोश लगा दिए गए.

कृष्ण नहाती हुई औरतों के कपड़े उठा लेता है उन्हें तब तक नहीं लौटाता जब तक वे नग्न हो कर उसके सामने नहीं आती

अध्याय 9

सुधारकों का क्रूर दमन

भारत में युगों सें दो विचारधाराएं चली आ रही हैं एक श्रमण संस्कृति तथा दूसरी ब्राह्मण नीति. बाबा साहिब के अनुसार भारत का इतिहास वास्तव में इन दो विचारधाराओं के संघर्ष का इतिहास ही है. जहां श्रमण संस्कृति सदाचार, नैतिकता का दूसरा नाम है वहीं अनाचार, कपट, धोखाधड़ी व अश्लीलता का संयुक्त नाम ही ब्राह्मणधर्म है. ब्राह्मणधर्मियों और उनके देवों के अनाचार के विरूद्ध सदियों सें लोग संघर्ष करते आ रहे हैं. वेद काल में शंबर सें लेकर आधुनिक काल में बाबा साहिब अम्बेडकर तक, यह टकराव अनवरत चला आ रहा है.

हर काल में ब्राह्मणों ने साम दाम दण्ड भेद हर प्रकार के हत्थकण्डे प्रयोग करके अपने विरोधियों का दमन किया है. उन्हें जैसा भी ठीक लगा वैसा ही ढंग अपना कर अपने विरोधियों का दमन किया है.

भगवन वाल्मिकी तथा गुरू कबीर का चरित्र हनन किया. एक को चिड़ीमार तो दूसरे को नाजायज औलाद बताने की घृष्टता की गई. भगवन बुद्ध को बलात्कारी हत्यारे विष्णु का अवतार बताने की घृष्टता की गई. बाबा साहिब को आधुनिक 'मनु' घोषित करने की घृष्टता की जा रही है.

महाराज रावण, गुरू रैदास, सन्त शम्बूक, हरिण्यकशिपु सम्राट वृहदर्थ जैसों की उन्होंने निर्मम हत्या की गई ताकि जनता में दहशत फैले और कोई ब्राह्मणों की ओर अंगुली उठाने की भी हिम्मत न कर पाए. महावीर एकलव्य को अपंग बना दिया गया.

लेकिन यह भी एक तथ्य है कि इतने जुल्मों के बावजूद भारतीयों ने ब्राह्मणों और उनके अनाचारी देवों के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखा है. अगर इस संघर्ष को काल गणना के अनुसार देखें तो हम पाते हैं कि हर काल में भारतीय वीरों ने ब्राह्मणवाद के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की है :

1. **सिन्धु काल** : आदि काल सें पूर्व बुद्ध काल तक : शंबर, बाल्मिकी, रावण, एकलव्य, शम्बूक, बली, हरिण्यकशिपु, प्रहलाद, विरोचन
2. **बुद्ध काल** : बुद्ध सें लेकर मौर्य काल के अंत तक : नंद, मौर्य
3. **मध्य काल** : रैदास, कबीर,
4. **आधुनिक काल** : ज्योतिबा, पैरियर, अम्बेडकर, वी टी आर,

आदि सम्राट शंबर

ब्राह्मणवाद के विरूद्ध जो सर्व प्रथम योद्धा उठा उनका नाम हैं शंबर. ऋगवेद में इन्द्र द्वारा उनके सैंकड़ों नगरों को नष्ट करने और जलाने का जिक्र आया है. उनके पानी के बांध तोड़ने का जिक्र आया है. सिन्धु साम्राज्य के लोग आर्य ब्राह्मणों और उनके देवों के अश्लील तथा वीभत्स यज्ञों के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे. जहां आर्य गुण्डे किस्म के लोग थे स्थानीय मूल निवासी सीधे सादे लोग थे.

अतः गुण्डे आर्य–सेनापति इन्द्र के हाथों मारे गए. ब्राह्मणों ने इन्द्र को भगवान घोषित कर दिया. उसके गुणगान करने के लिए वेद रच डाले. जैसे अधिक भिक्षा पाने के लिए भिखारी हरेक स्त्री को पुत्रवती होने का वरदान देते है, लम्बी आयु की दुआ देते हैं वैसा ही कुछ ब्राह्मण ऋषियों ने इन्द्र के लिए किया. ब्राह्मण ऋषियों ने इन्द्र की शान में अनेको श्लोक बना डाले क्यों कि उसने इन ब्राह्मणों की ऐयाशी की राह आसान कर दी थी.

ऋषि और देवता शराबी कबाबी और चरित्रहीन होते थे. अतः ब्राह्मणिक देव कभी भी रक्ष संस्कृति के जवानों के सामने नहीं टिक पाये. वे बार बार हारे. वेद पुराण उनकी ऐसी हारों के किस्सों से भरे पड़े हैं. तब वे देव इक्ठे होकर अपने मुखिया ब्रह्मा या विष्णु के पास जाते थे. वे सब लोग मिल कर कोई साजिश रचते थे तथा उसी साजिश पूर्ण नीति का सहारा लेकर रक्ष संस्कृति के नायकों को मार देते थे.

उनके किसी ग्रन्थ में ऐसा एक भी किस्सा नहीं है जहां देवों ने बिना छल कपट के विजय प्राप्त की हो!!

देवों और बाह्मणों के जितने भी हीरो अर्थात भगवान हुए हैं उन्होंने हमेशा कपटपूर्ण साम दाम दण्ड, भेद की नीति का सहारा लिया और जन नायकों का कत्ल किया. जैसे ही मूलनिवासी जननायक की हत्या होती थी आम जनता को रौंद दिया जाता था. उनके घर जला दिये जाते थे. मवेशी अगवा कर लिए जाते थे.

आदि सम्राट शंबर की हत्या भी इसी प्रकार सें की गई. जब वे सोये हुए थे तो इन्द्र ने धोखे सें उनका सिर काट कर हत्या कर दी. उनकी हत्या करने के बाद ब्राह्मणिक आर्यो ने इन्द्र के नेतृत्व में हैवानियत का नंगा नाच किया. इन्द्र ने सिन्धु साम्राज्य के 99 नगरों को तहस नहस कर दिया गया. बच्चे बूढ़े जवानों को निर्दयता सें कत्ल कर दिया गया. सिन्धु साम्राज्य के नगरों की खुदाई में इस बात के सबूत मिले हैं कि वहां के निवासियों को कत्ल किया गया था तथा उनके घरों को आग लगाई गई थी.

ऋग्वेद में इन्द्र की इन करतूतों का बार बार बखान किया गया है. भोली भाली जनता को कत्ल करने, उनके घरों दुकानों व अनाज भण्डारों को जला देने की निर्मम घटना को वेदों में ईश्वरीय चमत्कार बताया गया है. ऐसी वहशियाना घटनाएं एक बार ही नहीं हुई बकल्क बार बार हुईं.

जैसे दिल्ली अनेकों बार उजड़ी तथा फिर सें बसाई गई वैसे ही सिन्धु साम्राज्य के नगर उजाड़े जाने के बाद फिर सें बनाए गए. सबसें हैरानी की बात यह है कि सभी भवन, घर, दुकानें या अनाज भण्डार वैसे की वैसे ही बना दिए गए. प्राचीन नगरों की खुदाई में यह पाया गया कि सभी घर अनेकों बार टूट कर बने मगर उनके नक्शे तक में कोई बदलाव नहीं आया. कोई गली कोई मौहल्ला नहीं बदला.

शायद यही कारण रहा है कि भगवन बुद्ध ने अपनी बाणी में सिन्धु साम्राज्य के नष्ट होने की बात नहीं की है. उनके समय में भी सिन्धु साम्राज्य वैसे ही फल फूल रहा था जैसे ब्राह्मणों के आगमन सें पहले अपने शिखर पर था. सम्राट शंबर के कत्ल के बाद सिन्धु साम्राज्य नष्ट नहीं हुआ. भारतीयों ने फिर सें अपना साम्राज्य बनाया.

हरिण्यकशिपु

एक बात जिसने हमें बार बार हैरान परेशान किया है वह यह है कि प्राचीन मूल निवासी सम्राटों के नाम स्वर्ण यानि सोने सें सम्बंधित रहे हैं. उनके पास सोने के ढेर होते थे. हरिण्यकशिपु का अर्थ है सोने का पहाड़. महाराज रावण की लंका को सोने की नगरी बताया जाता है. **सिन्धु साम्राज्य के नगरों में कहीं भी लोहे की बनी हुई वस्तु प्राप्त नहीं हुई है. उनके हथियार तक तांबे तथा सोने सें बने हुए मिले हैं. जब भारत के मूल निवासी**

ब्राह्मणों सें हार गए तो मनु स्मृति आदि ब्राह्मणिक ग्रन्थों में यह नियम बनाया गया कि यह लोग सोना धारण नहीं करेंगे. उनके गहने लोहे के तथा बर्तन मिट्टी के होंगे!

इसी बात पर गुरू रैदास बोले : दारिद देख हर कोई हंसे, ऐसी दशा हमारी!

हरिण्यकशिपु को मारने के लिए उनके बेटे प्रह्लाद को गद्दी का लालच दिया गया. बेटे सें गद्दारी करवा कर उनकी नृशंस हत्या की गई. बाद में प्रह्लाद, उसके बेटे विरोचन तथा उसके बेटे बली ने इन्हीं देवों के विरूद्ध घमासान किया और अंत में वे भी कपट का शिकार हुए. राम ने विभिशण को बरगलाया और महात्मा रावण की हत्या करने में सफल हुआ. विभिशण सें अगर गद्दारी न करवाई जाती तो राम आज तक महाराजा रावण के पास दूत भेज कर सीता को वापिस लौटाने की फरियादें ही कर रहा होता!! विष्णु ने वृंदा सें बलात्कार करके महाराज जालंधर की हत्या की.

आदि काल सें लेकर पहली सदी तक ब्राह्मणों और दूसरे वर्णों में वर्चस्व की लड़ाई चलती रही जिसमें ब्राह्मण हारते ही रहे थे क्योंकि कोई भी उनके मत को स्वीकार करने को तैयार नहीं था. लोग ब्राह्मणों द्वारा किये जा रहे बलि यज्ञों सें परेशान थे. ब्राह्मण यज्ञों में गाय, बैल, घोड़े मार कर खा जाते थे. यज्ञ वेदी पर अश्लीलता का नंगा नाच होता था. अतः जब गौतम बुद्ध ने धर्म–चक्र चलाया तो लोग ब्राह्मणवाद सें मुक्ति का मार्ग मिल गया. उन्होंने ब्राह्मणवाद के हरेक सिद्धांत की धज्जियां उड़ा दी.

बुद्ध की शरणागत शूद्रों ने नन्द वंश की नींव रखी. उन्हीं के बारे में कथा है कि ब्राह्मण चाणक्य जब उनके दरबार में बेइज्जत किया गया तो उसने नंद वंश को समाप्त करने की कसम खाई तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ मिल कर उसने नंद वंश का नाश कर दिया. लेकिन इतिहास में इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता. वास्तव में चन्द्रगुप्त मौर्य भी नंद सम्राट रासयसय का पुत्र ही था. अशोक सें पहले तक के शूद्र राजा निजि जीवन में श्रमण धर्मी थे. कोई भी उनमें ब्राह्मणधर्मी नहीं था. अशोक ने बुद्ध धर्म को राज धर्म घोषित किया. मौर्य सम्राटों ने उनका मानवता का संदेश घर घर तक पहुँचा दिया.

तब पहली बार ब्राह्मणों ने वह किया जिसकी पूर्व में कहीं मिसाल नहीं मिलती. उन्होंने सम्राट अशोक के पौत्र राजा वृहदर्थ का कत्ल कर दिया तथा राजगद्दी पर कब्जा कर लिया. तब भारत के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि सत्ता पर शूद्र के अतिरिक्त किसी अन्य वर्ण का अधिकार हुआ हो. सम्राट वृहदर्थ का कत्ल करके पहली बार एक ब्राह्मण सत्ता पर काबज हुआ अन्यथा उससें पहले भारत पर शूद्रों और सिर्फ शूद्र राजाओं का ही शासन रहा था. सत्ता हथियाते ही उन्होंने बौद्धों का कत्लेआम शुरू किया. मनु स्मृति की रचना की. पुराण रच डाले. शूद्र–विरोधी साहित्य रचा गया. उनके विरूद्ध अमानवीय नियम बनाए. बुद्ध काल में केवल दास प्रथा थी. शूद्र भी थे मगर उनको घृणा नहीं की जाती थी. जिन लोगों ने बुद्ध की शरण ली ब्राह्मणों ने उन्हें दैत्य, दानव, असुर राक्षस आदि नाम दे डाले.

ब्राह्मण ऋषि पतंजलि के उकसाने पर जातिय अपमान का बदला लेने के लिए ब्राह्मण पुश्यमित्र ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या की. (समु 5.142)

शंबर : बलि, विरोचन : दीवाली

9.1 प्रथम सुधारक : महात्मा रावण

[Façade of Ravana ka kÈi], Ellora

Photograph of the entrance to the Ravana ki kÈi temple at Ellora, part of the Allardyce Collection: Album of views and portraits in Berar and Hyderabad, taken by J. Johnston in the 1860s. The site of Ellora Ès a spectacular series of Hindu, Buddhist and Jain cave temples excavated into the rocky façade of a cliff of basalt. The works were carried out under the patronage of the Kalachuri, the CÈlukya and the Rashtrakuta dynasties between the 6th and the 9th Centuries. The cave known as Ravana ki kÈi was a Buddhist viÈra tÈt was converted to a temple dedicated to Shiva in the early 7th century. It consists of a small sanctuary adjoining a square columned mandapa and verandah. Inside, figural panels depict SÈivite and Vaishnava figures.

9.1.1 महात्मा रावण का भारतीय समाज पर किये उपकार

9.1.1.1 विवाह प्रथा : ब्राह्मणों के किसी भी ग्रन्थ : वेद, पुराण, महाभारत, रामायण में शादी का कहीं कोई जिक्र नहीं है. किसी भी आर्य ब्राह्मण, देव अथवा उनके भगवानों में सें कभी किसी ने शादी नहीं की. राम सीता को शर्त में जीत कर लाया. कृष्ण अपनी मामी राधा को उधाल कर लाया था. आर्यों में स्त्री या तो शर्त में जीती जाती थी अथवा हरण की जाती थी या फिर भगाई जाती थी. या फिर अधिकाधिक माँ बाप किसी को थोड़े समय अथवा पक्के तौर पर उधार दे देते थे. एक पुरुष एक स्त्री का नियम महात्मा रावण ने शुरू किया. आर्यों का मुक्त व्यभिचार उन्होंने बन्द किया. भारतीय नारी को इज्जत बख्शी. नारी की इसी इज्जत सें दुखी होकर ब्राह्मणों ने फतवा दिया कि जो नारी पतिव्रता होगी उसे अपने पति के साथ सती होना पड़ेगा.

9.1.1.2 यज्ञों की जगह हवन : 16 ब्राह्मण ऋत्विकों की जगह एक व्यक्ति सें यज्ञ करवाने अथवा स्वयं करने का आदेश जारी किया. उनसें पहले केवल ब्राह्मण ही किसी के यहां यज्ञ सम्पन्न कर सकता था. ब्राह्मण अपने घर में स्वयं यज्ञ कर सकता था लेकिन किसी अन्य को यज्ञ स्वयं करने का अधिकार नहीं था. यज्ञ बहुत मंहगे होते थे अतः मनु ने आदेश दिया कि आम आदमी यज्ञ न करवाये. महात्मा रावण ने न केवल हरेक आदमी को अपने घर में सस्ते सुलभ हवन करने की इजाजत दी बल्कि उन्होंने घर पर शांतिमय हवन करने की विधि भी बनाई. यही उनकी हत्या करने का प्रमुख कारण था. सीता हरण सें उनकी हत्या का कोई सम्बंध नहीं था क्योंकि जब उनकी हत्या की साजिश रची गई उस समय तो सीता का जन्म भी नहीं हुआ था. उसके हरण का तो प्रश्न ही नहीं था.

9.1.1.3 गो–हत्या पर पाबंदी : महाराज रावण ने धर्म के नाम पर हर प्रकार की हत्या पर सख्ती सें पाबंदी लगाई. चाहे कोई यज्ञ करे, श्राद्ध करे या कोई अन्य त्योहार मनाये उसमें किसी भी प्रकार के पशु : गाय, घोड़ा, बैल, बकरा मेढा आदि के मारे जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया. अवहेलना करने वालों को सख्त सजायें दी. पवन, अग्नि, अरुण वरुण जैसे देवों ने थोड़ी चूं चपड़ की तो सम्राट रावण ने उन्हें बन्दी बना कर जेल में डाल दिया. एक बार ब्राह्मणों के देवताओं के राजा इन्द्र को वहम हो गया कि वह "बहादुर राजा" है. उसे यह वहम इसलिए हुआ क्योंकि ब्राह्मण ऋषि रोज उसकी चापलूसी में उसे वेद मन्त्र सुनाया करते थे. उसे लगा वह सचमुच बहादुर है, राजा है. अतः पशु हत्या की यह पाबंदी उस पर लागू नहीं होती. उसने ऐसा यज्ञ करना शुरू किया. सम्राट रावण को यह बात पता लगी. उन्होंने अपने वीर सपुत्र मेघनाद को भेजा. उनके सामने आते ही इन्द्र की हवा सरक गई. उन्होंने इन्द्र को बन्दी बना कर अपने सम्राट के सामने वैसे ही ला पटका जैसे ब्राह्मण यज्ञ में काटने के लिए गायें लाकर पटकते थे. सभासदों की प्रार्थना पर महाराज रावण ने वीर मेघनाद को **"इन्द्रजीत"** की उपाधि सें सम्मानित किया.

इन्द्र को निरीह पशु काटने मारने के लिए मुकद्दमा चला और लंका की न्यायलय ने उसे कैद की सजा सुनाई. जब ब्रह्मा को इन्द्र की कैद का पता लगा तो वह भागा भागा महाराज रावण के दरबार में आया. उसने इन्द्र को रिहा करने की अपील की. लम्बी वार्ता के बाद अंततः ब्रह्मा को यह आश्वासन और वचन देना पड़ा कि कोई भी देव गंधर्व आदि कुल का आदमी न तो यज्ञों में पशुओं को मारेगा और न ही उन पर धोखे सें वार करेगा. उन्होंने इन्द्र को तो छोड़ दिया लेकिन बाकी सारे देव उन्हीं की कैद में सड़ते रहे.

लेकिन वह देव ही क्या जो गद्दारी न करे, बेईमानी न करे!! सभी जानते हैं कि देवों ने साजिश करके महात्मा रावण का धोखे सें कत्ल कर दिया.

गोमाता सदा महात्मा रावण की इस उपकार के लिए आभारी रहेगी !!

9.1.1.4 नरमेध समाप्त किये : ब्राह्मणग्रन्थ (वेद सें लेकर पुराण तक) इस बात के साक्षी हैं कि ब्राह्मण और उनके देव यज्ञों में आदमियों को भी काट कर आग में भून कर खा जाते थे. महात्मा रावण ने इस प्रथा को बिना रहम दिखाये समाप्त किया. जो लोग नर मेध यज्ञ करते पाये गये उन्हें उसी यज्ञ की आग में झोंक दिया गया. उनको वैसें ही काट कर यज्ञ की आग में झोंका गया जिस तरह सें उन ऋत्विकों ने बलि-मानव को काटा था. बस उनको आग में झोंकने के लिए वेद मन्त्र गाने की आवश्यकता नहीं पड़ी.

9.1.1.5 वर्ण व्यवस्था का नाश : ब्राह्मणों को महात्मा रावण सें जो दूसरा मुख्य दुख था वह था कि उन्होंने ब्राह्मणों द्वारा बनाये गये वर्ण व्यवस्था के सिस्टम को ध्वस्त कर दिया था. उन्होंने पूरे विश्व समुदाय को एक बना दिया था. आज के भारतीय संविधान की तरह उन्होंने सभी मनुष्यों पर एक ही कानून लागू किया. कोई भी व्यक्ति अपनी योग्यता अनुसार कोई भी काम करने को आजाद था. एक भंगी भी पुरोहिताई कर सकता था. और एक ब्राह्मण को पेट भरने के लिए सफाई कार्य करना पड़ सकता था. गांधी की तरह उसे "अगले जन्म" भंगी के घर पैदा होने का इन्तजार नहीं करना पड़ता था. बलि–यज्ञ समाप्ति और जाति प्रथा का नाश सीधे तौर पर ब्राह्मणवाद पर चोट थी. माँस, मदिरा और मैथुन वाले यज्ञ बंद हो गये तो देव भी भूखों मरने लगे. तब उन्होंने अपनी धूर्त चालें चली और महात्मा रावण की हत्या कर दी.

9.1.1.6 यक्ष की जगह रक्ष संस्कृति की नींव रखी : ब्राह्मण ऋषियों और उनके देवों का काम माँस खाना, दारू पीना और स्त्रियों सें ऐयाशी करना था. उनकी संस्कृति यक्ष संस्कृति कहलाती थी. उनका

नारा था "वयम भक्षाम" हम भक्षण करेंगे, हम भोग करेंगे. इसे भक्ष संस्कृति कहना ज्यादा सही होगा. महात्मा रावण ने इन ऐयाशों की आवारगी पर रोक लगाई तथा उसकी जगह "रक्ष संस्कृति" की स्थाप्ना की जिसका नारा था "वयम रक्षाम" अर्थात हम रक्षा करेंगे : निरीह पशुओं की, अबलाओं की, कमजोरों की, सदाचार की. इस संस्कृति को अपनाने वाले को "रक्षक" कहा जाता था मगर ब्राह्मणों ने महाराज रावण की हत्या करने के बाद उनके अनुयाइयों को राक्षस का नाम दे दिया जबकि राक्षसों वाले काम ये ब्राह्मण ऋषि और देव करते थे.

9.1.1.7 **प्रथम महिला सेनापति शरूपनखा :** रामायण में दो प्रकार की महिलाओं का चरित्र चित्रण है. एक ओर आर्य महिलाएं कौशल्या कैकेयी सीता आदि तथा दूसरी ओर अनार्य महिलाएं शरूपनखा, मन्दोदरी

9.1.2 महात्मा रावण बौद्ध थे – एक तथ्य

लंकावतार सूत्र में महात्मा रावण को बौद्ध बताया गया है. इस सूत्र में वर्णन है कि उन्होंने भगवन बुद्ध सें अनेक विषयों पर विचार विमर्श किया था तथा उनका मार्ग दर्शन लिया था. उन्होंने भगवन बुद्ध सें विज्ञानवाद पर पूरे एक सौ प्रश्न पूछे थे. भगवन बुद्ध को विज्ञानमातृक भी कहा जाता है अर्थात विज्ञानवाद की सृजना करने वाले. महात्मा रावण ने विज्ञानवाद पर जो मुक्ष्य सवाल पूछे वे इस प्रकार सें हैं.

थाईलैंड में अभी हुई खुदाई में भिक्षुओं के मिट्टी के प्याले मिले हैं. इन प्यालों पर तमिल–ब्रह्मी लिपि में "tu Ra von" "त्रावॅन" शब्द उकेरे गये हैं जिसका अर्थ है "भिक्षु". (द हिन्दू 17.07.2006) अतः जैसे "बुद्ध" का वास्तविक नाम सिद्धार्थ था लेकिन आज पूरा विश्व उनको बुद्ध के नाम सें ही जानता है वैसे ही महात्मा रावण का वास्तविक नाम उउउउ था मगर बौद्ध भिक्षु बन जाने के कारण उनका नाम "रावण" ही प्रसिद्ध हो गया.

9.1.3 **क्या उनकी लंका सिन्धु साम्राज्य है?** (तबाह की इन्द्र ने. कहानी गढी राम की)

9.2 **असुर आंदोलन**

9.2.1 **शंबर**

9.2.2 **जालन्धर** दैत्यराज का यूटोपिया नष्ट किया विष्णु ने

9.2.3 **प्रहलाद**

9.2.4 **भैरव**

9.2.5

9.3 **क्षत्रियों का विद्रोह यानि शूद्रों की उत्पत्ति**

9.4 **बौद्ध व जैनों का नर संहार**

9.5 **आंतरिक संघर्ष**

9.6

02 . 2006 प्रथम समाज सुधारक : महात्मा रावण

महात्मा रावण के भारतीय समाज पर उपकार :

1. हिंसक यज्ञ की जगह होम करने का प्रचलन किया.
2. सोलह ब्राह्मणों की बजाए एक पुरोहित अथवा स्वयं होम करने का प्रचलन किया.
3. विवाह प्रथा का प्रचलन : आर्य समाज में माँ, बहन बेटी आदि का कोई रिश्ता नहीं था. वे पशुओं की तरह सरेआम किसी सें भी यौन सम्बंध बना लेते थे. महात्मा रावण ने इस पशु व्यभिचार को बन्द किया. साथ में उन्होंने माँ, बहन, बेटी, पोती सें यौन सम्बंध बनाने पर भी रोक लगाई. यज्ञ विशेष तौर पर आर्य समाज के उन्मुक्त व्यभिचार के अड्डे थे. इस तथ्य को इस पुस्तक में यथासंभव बताया जा चुका है. यज्ञों को विशेष तौर पर अनुशासित किया गया.
   उनके हरम में हनुमान ने अनेकों स्त्रियां देखी मगर उनके शयन कक्ष में उनके साथ मात्र महारानी मंदोदरी सो रहीं थीं. उनकी जो भी संताने थी सभी उन दो की संतान थीं. दशरथ की तरह अलग अलग रानियों सें न थी तथा न ही कुन्ती की तरह अलग अलग पुरुषों सें थीं.
4. देवताओं तथा ऋषियों के अनाचार सें समाज को मुक्ति

5. वयम् रक्षाम् समाज की स्थापना
6. अंतर्जातीय विवाह शुरू किए

अध्याय 10
दिमागी गुलामी के सिद्धांत

क्षेत्र = खेत कूरूक्षेत्र = वह खेत जो कौरवों पाण्डवों के पूर्वज कुरू ने जोता था. 1.1

10.1 दिमागी गुलामी की परकाश्ठा : गीता

आज के समय में गीता ब्राह्मण-धर्म की सबसें प्रसिद्ध पुस्तक मानी जाती है. आज के समय में लोग वेद, उपनिषद आदि को भूल चुके हैं. वस्तुतः उन्हें रद्दी की टोकरी में डाल चुके हैं. हिन्दुओं की 99 प्रतिशत आबादी चारों वेदों का नाम भी नहीं जानती. मात्र कुछेक विद्यार्थी तथा कुछेक ब्राह्मण पुरोहित हैं जो चारों वेदों का नाम जानते हैं. और शायद ही कोई होगा जिसने चारों वेद पढ़े होंगे. 108 उपनिषदों की तो किसी ने शक्ल भी न देखी होगी. 18 पुराणों के पुलिंदे भी किसी ने खंगालने की जहमत नहीं की होगी. ले दे कर मात्र बचती है गीता. और गीता ही वह पुस्तक है जो अब तक ब्राह्मण-धर्म को बचाये हुए है. अगर गीता न होती तो ब्राह्मणों की रोजी रोटी का साधन कभी का समाप्त हो लिया होता तथा ब्राह्मण-धर्म अपनी मौत कभी का मर लिया होता.

अतः प्रश्न उठना स्वभाविक है कि ऐसा क्या है गीता में जो इसे इतना मान दिया जा रहा है. इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर है कि गीता ब्राह्मण-धर्म का आईना है. ब्राह्मण-धर्म वास्तव में धर्म न होकर राजनीति, व्यापार और जालसाजी का ऐसा संगठन है जिसका एक मात्र लक्ष्य पैसा कमाना और सत्ता पर काबिज रहना है. इस लक्ष्य के लिए इस धर्म के ठेकेदार अर्थात ब्राह्मण कुछ भी करने को तैयार रहते हैं. इनके लिए धर्म वही है जो इनको धन और सत्ता दिला सके. गीता इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इनका मुख्य हथियार है.

जैसे एक ही सुपर मार्किट में बाल उगाने सें लेकर बाल उड़ाने तक के सभी प्रसाधन होते हैं वैसे ही गीता में सभी कुछ है. चाहे साधु बनो या चोर बनो सारे रास्ते गीता में मौजूद हैं. विश्वविद्यालय के कुलपति सें लेकर अंगूठाछाप मजदूर तक सभी को गीता में अपने जैसा बने रहने का साधन मिल जाता है. गांधी को अहिंसा रूपी कायरता और सरदार भगत सिंह को बम फोड़ने की बहादुरी गीता सें मिल जाती हैं. कुल मिला कर जैसे सुपर मार्किट में अलग अलग खानों में अलग अलग किस्म की वस्तुएं रखी होती हैं और ग्राहक अपनी मन मर्जी सें कोई भी वस्तु ले सकता है वैसे ही गीता है. इसके भिन्न भिन्न अध्यायों में भिन्न भिन्न प्रकार के संदेश भरे पड़े हैं. वैसे व्यक्ति को इसके भिन्न भिन्न अध्यायों में जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती क्योंकि हरेक को एक ही अध्याय में अपनी जरूरत का सामान मिल जाता है. जैसी भक्त की आवश्यकता हो वैसा श्लोक छांट ले. कई जगह तो लगातार दो श्लोक एक दूसरे के विपरीत हैं. एक श्लोक में आत्मा एक शरीर सें दूसरे में जाने वाली वस्तु है तो दो श्लोकों के बाद यही आत्मा अचल व स्थिर है. एक श्लोक में ईश्वर न तो संसार को बनाने वाला, न चलाने वाला है दूसरे श्लोक में उसकी इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता. एक श्लोक में वेद बेकार वस्तु है तो अन्य श्लोक में वे परम पद दायक हैं. एक श्लोक में ज्ञान सें मुक्ति मिलती है तो दूसरे में ज्ञान सें कुछ होने वाला नहीं है. जिसकी जैसी इच्छा हो वही श्लोक अपना ले.

गीता के इन्हीं गुणों के कारण भदन्त आनन्द कोसलायन ने गीता को भानुमति का पिटारा कहा है. पिटारा खोला जो इच्छा हुई, निकाल लिया. जैसे सुपर मार्किट वाले एक ही ग्राहक को वजन घटाने और वजन बढ़ाने की दवा दे सकते हैं वैसे ही ब्राह्मण गीता में सें आत्मा और अनात्मा, ज्ञान और अज्ञान सभी कुछ दे सकते हैं. आचार्य चतुरसेन ने बिल्कुल सही कहा है कि जिसने भी गीता लिखी उसने चाहे कुछ और दिया या न दिया हो, ब्राह्मणों को सारी उम्र की रोटी जरूर दे दी है. ब्राह्मणों की रोजी रोटी के लिए गीता में तीन तरह के शोशे गढे गए हैं जिनके चक्कर में फंस कर प्राणी सारी उम्र इन ब्राह्मणों के चक्कर काटता रहता है. यह तीन शोशे हैं :

1. **अवतारवाद का सिद्धांत :** ईश्वर धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेता है. अतः जब भी धर्म का नाश होता है भगवान उसे बचाने के लिए धरती पर अवतार ले लेता है.
2. **आत्मा का सिद्धांत :** प्रत्येक जीवित प्राणी में आत्मा होती है. उस आत्मा को परमात्मा सें मिलाना अर्थात मोक्ष प्राप्त करना हर प्राणी का परम धर्म है. मोक्ष के रास्ते ब्राह्मणों के पास हैं.
3. **कर्म का सिद्धांत :** आदमी को काम करना चाहिए, फल की उम्मीद नहीं करनी चाहिए.

गीता के उरोक्त सिद्धांतों के बारे में जो प्रचार किया जाता है उस संदर्भ में पंचतन्त्र में एकदम सटीक एक कथा है कि एक बार एक भोला भाला आदमी अपनी भेड़ लेकर कहीं जा रहा था. रास्ते में उसे तीन ठग

मिले. भेड़ पर उनकी नीयत खराब हो गई. उन्होंने उससें भेड़ हथियाने की साजिश रची. साजिश के अनुसार तीनों अलग अलग स्थानों पर खड़े हो गए. पहले एक ठग उसके पास आया. हाल चाल पूछने के बाद बोला, ''यह कुत्ता कहां लिए जा रहे हो ?'' आदमी हैरानी सें बोला यह तो भेड़ है. पहला ठग मुस्कराया और आगे बढ़ गया. आदमी ने भेड़ की ओर ध्यान सें देखा. उसे लगा कि उसके पास भेड़ ही है. वह आगे चल पड़ा. कुछ देर के बाद दूसरा ठग उसे मिला. उस आदमी को देखते ही बोला, '' यह गंदा सा कुत्ता कहां लेकर जा रहे हो ?'' वह आदमी बेचारा परेशान होकर धीरे सें बोला यह तो भेड़ है. वह ठग उसकी तरफ देखकर जोर सें मुस्करा दिया. तभी वहां तीसरा ठग आ गया. आते ही बोला, ''यह कुत्ता बीमार है क्या ?'' उस व्यक्ति ने भेड़ को गौर सें देखा. उसे यह भेड़ जैसी ही दिखी मगर तीन अलग अलग लोगों सें उसे कुत्ता सुनकर उसे लगा कि वे तीनों झूठे नहीं हो सकते. उसने भेड़ को वहीं छोड़ा और आगे बढ़ गया. रात को उन तीनों ठगों ने मजे सें उस भेड़ की दावत उड़ाई.

ऐसा ही कुछ भारतीय समाज के साथ हो रहा है. कश्मीर सें कन्या कुमारी तक पंजाब सें आसाम तक ऐसे ठग भरे पड़े हैं. सुबह सें शाम तक टीवी रेड़ियो फिल्में अखबार, हर जगह पर यह ठग चिल्ला रहे हैं : आत्मा है, अवतार हुए हैं, जैसे तुम हो यह तुम्हारे कर्मो का फल है. जब तीन ठगों के कहने सें आदमी भेड़ को कुत्ता समझ लेता है यहां तो तीन करोड़ हैं. सभी एक सुर में चिल्ला रहे हैं. अभी कुछ दिन पहले एक ही दिन पूरे भारत के मंदिरों में मूर्तियों ने दूध पीया. इनका तन्त्र इतना सशक्त है कि पूरे भारत में एक साथ एक ही दिन मूर्तियों को दूध पिलाने का प्रपंच रच दिया गया. पूरी भारत सरकार का प्रचार तन्त्र चाहे तो भी वह इस तरह का प्रपंच नहीं रच सकता जो इन ब्राह्मणवादियों ने कर दिखाया.

ऐसा ही गीता का प्रचार है.

10.1.1 अवतार का सिद्धांत

26.05.05 आज 12.06.2006

अवतार का सिद्धांत गीता के अध्याय 4, श्लोक 7 एवं 8 में मिलता है. यह श्लोक इस प्रकार सें हैः

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भर्वतिभारत !
अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानं स्जाम्यहम् !! (7)
परित्राणाय साधूनां विनाशाय दुष्कृताम् !
धर्मसंस्थापनार्थय संभावमि युगे युगे !! (8)

इन श्लोकों का अर्थ इस प्रकार सें हैः

जब जब भी धर्म की हानि अथवा कमी होती है, हे भारत, अधर्म बढ़ता है तब मैं स्वयं अपनी सृजना अर्थात रचना करता हूँ. साधुओं की सुरक्षा के लिए तथा दुश्टों के विनाश के लिए तथा धर्म की संस्थापना करने के लिए मैं युग युग में संभव होता हूँ अर्थात अवतार या जन्म लेता हूँ.

इस सिद्धांत के अनुसार "अवतार" घटित होने सें सम्बंधित तीन बातें प्रमुख हैं :

1. ईश्वर स्वयं की सृजना करता है अर्थात स्वयं को पैदा करता है.
2. धर्म की हानि और अधर्म की बढोतरी को समाप्त करके धर्म की स्थापना करता है.
3. साधुओं की सुरक्षा करता है तथा दुश्टों का नाश करता है.

सुननें में यह सिद्धांत बहुत कर्णप्रिय है. पूरे विश्व में कोई नहीं चाहेगा कि भगवान ऐसा न करे. हर कोई मानता है कि भगवान होता इसीलिए ही है कि वह धर्म को बचाए, भले लोगों को बचाए. शैतानों और पापियों को हटाए.

प्रश्न उठना स्वभाविक ही है कि क्या सच में अवतार संभव होता है? और जैसा यह सिद्धांत है क्या वास्तव में ब्राह्मण-धर्म में ऐसा हुआ भी है ?. क्या उनके जितने भी अवतार हुए हैं उन्होंने वास्तव में धर्म की स्थापना की है? क्या उन्होंने वास्तव में साधु लोगों की रक्षा की है और दुश्टों को मारा है? इस अध्याय में आगे इन्हीं प्रश्नों की विवेचना की गई है.

अवतार का अर्थः उपरोक्त श्लोक के अनुसार ब्राह्मणों का भगवान स्वयं अपनी इच्छा सें देह धारण करता है. वह किसी की जीवित प्राणी की शक्ल में अपनी रचना कर सकता है. अब तक वह सूअर, मछली, कछूए, अर्धनर के रूप में तो आ चुका है. शेषकभी भी गधे घोड़े कुत्ते बिल्ली सांप आदि की शक्ल में भी आ सकता है. कई बार अजीवित वस्तुओं के रूप में भी आया है जैसा झण्डा शोर आदि.

अन्य धर्मों में तो भगवान सर्वशक्तिमान, निराकार और असीमित है. अन्य धर्मों के संस्थापकों अथवा गुरुओं ने स्वयं को भगवान का बेटा बताया अथवा उसका दूत बताया. केवल ब्राह्मणवाद के अवतारों ने स्वयं को भगवान

बताया.केवल ब्राह्मणों का भगवान ही सीमित आकार का तथा घटिया मानव भावनाओं के बस में रहने वाला है. उनके तीन भगवान हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश. तीनों एक नम्बर के आवारा और काम वासना में लिप्त रहने वाले.

अवतार के बारे में उनकी एक बात सांझी है कि अवतार कब लेना है क्यों लेना है अवतार लेकर कौन कौन से कारनामे अंजाम देने हैं यह सब अवतार लेने सें पहले ही तय कर लिया जाता है. राम ने महात्मा रावण को कत्ल करने के लिए ही अवतार लिया था. वह चाहे सीता का हरण करते या न करते राम ने उनका कत्ल करना ही था. जैसे भेड़िये ने बकरी के बच्चे को खाना ही था चाहे वह पानी गंदा करे या चाहे उससें जुबान लड़ाये! कृष्ण ने राम के रूप में ही सभी देव पत्नियों और ऋषियों को बता दिया था कि अगले अवतार में वह उन सब की काम वासना शांत कर देगा. कंस चाहे पाप करता या न करता कृष्ण ने तो उनकी काम वासना मिटाने के लिये अवतार लेना पहले ही तय कर लिया था.

अवतार की सम्भवता : उपरोक्त श्लोक के आधार पर निम्नलिखित चार शर्तें पूरी होने पर ही ''अवतार'' होने की सम्भावना बनती है :

1. ईश्वर का अस्तित्व होना चाहिए.
2. ईश्वर सर्वशक्तिमान होना चाहिए और भला होना चाहिए.
3. धर्म की ग्लानि होनी चाहिए.
4. साधुओं का दमन होना चाहिए.

1. जहां तक ईश्वर के अस्तित्व की बात है तो बुद्ध धर्म और जैन धर्म किसी भी साकार भगवान के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करते. उनके अनुसार ईश्वर अगर कोई है तो वह ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि वह किसी प्राणी के वीर्य सें मादा की कोख सें पैदा हो! अतः उनके लिए अवतारवाद एक झूठ, पाखंड के अतिरिक्त कुछ नहीं है. ईश्वर का अस्तित्व मात्र पुरोहितों के लिए ही लाभकारी रहा है. ब्राह्मण पुरोहितों के अतिरिक्त किसी आम आदमी को ईश्वर के होने सें कभी कोई लाभ हुआ हो, ऐसा कोई उदाहरण नहीं है. ब्राह्मणों के लिए ''भगवान'' का अस्तित्व कमाई का मुख्य साधन है. भगवन बुद्ध और जैन तीर्थंकर को कमाई करने का लालच न था. अतः उन्होंने उसके अस्तित्व को नकार दिया.

अन्य सभी धर्म एक ही ''भगवान'' को मानते हैं जो कि निराकार है. सिख धर्म में भी ''एकमकार" अर्थात एक निराकार भगवान को मान्यता दी गई है. समस्त सन्तों ने भी निराकार ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया है. सभी धर्म ईश्वर को एक प्रकाश पुन्ज के रूप में मान्यता देते हैं जिसका कि कोई निश्चित आकार नहीं होता. लेकिन ब्राह्मणों ने तो कमाई करने के लिए अनगिनत भगवान पैदा कर रखे हैंः हत्यारे, बलात्कारी, जुआरी, नपुंसक, पशु नरपशु सभी उनके भगवान हैं जिसको जैसा चाहिए ले जाए!

जहां तक भगवान के भला तथा सर्वशक्तिमान होने की बात है तो यह दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं. अगर भगवान भला और सर्वशक्तिमान दोनों है तो वह दुश्ट पैदा ही क्यों करता है या पैदा होने ही क्यों देता है जिससें कि उसे अवतार लेने का कश्ट उठाना पड़े. यह भी सच्चाई है कि दुश्ट तो पैदा होते ही रहते हैं. अतः या तो भगवान सर्वशक्तिमान नहीं है या फिर वह भला नहीं है. अगर वह भला नहीं है तो वह शैतान है और कुदरती तौर पर शैतान भगवान नहीं हो सकता! अगर वह सर्वशक्तिमान नहीं है तो हम जैसा एक साधारण प्राणी है. और हम सब जानते हैं कि साधारण प्राणी भगवान नहीं होता है. अतः अगर वह ''भगवान'' नहीं है तो अपनी इच्छा सें अवतार नहीं ले सकता. अतः कुल मिला कर अवतार का सिद्धांत एक झूठा, कल्पित और पाखंडपूर्ण सिद्धांत है जिसका सच्चाई सें कोई सरोकार नहीं है. किसी भी स्थिति में अवतार होने की सम्भवना नहीं है.

जहां तक ब्राह्मण–धर्म के तथाकथित भगवान के अवतारों की बात है तो इस सिद्धांत को झूठ और पाखंड सिद्ध करने के लिए एक ही तथ्य काफी है कि उनका **कोई भी ''भगवान'' तथा कोई भी ''अवतार'' भला नहीं था**. सभी ने एक सें बढ़ कर एक अनैतिक धन्धे किये हैं. उनके कारनामे पढ़ कर फिल्मी तथा असली गुंडे अथवा डॉन के कारनामे टुच्चे से लगते हैं. उदाहरण के तौर पर आज के समय में ओसामा बिन लादेन को सबसें बड़ा आतंकवादी घोषित किया हुआ है. लादेन का कसूर यह बताया जाता है कि उन्होंने अमरीका के दो व्यापारिक टॉवर ध्वस्त करने की साजिश रची थी. लेकिन ब्राह्मणों के भगवानों अथवा उनके अवतारों ने जो कारनामे अंजाम दिये हैं उसकी तुलना में लादेन का काम तो ''एटम बम के सामने गुलेल की कंकरी" के समान है.

राम के दूत हनुमान ने पूरी लंका को जला डाला जिसमें बच्चे बूढ़े स्त्रियां, बीमार, अपाहिज सभी जल कर मर गए थे. अगर सीता को महात्मा रावण लेकर गये थे तो लंका में रहने वाली बेचारी आम जनता का क्या दोश था. दूध पीते बच्चों का क्या दोश था ? जो उन्हें भी जिन्दा जला कर कत्ल कर दिया गया.

कृष्ण और अर्जुन ने खाण्डव वन में आग लगा दी. उस जंगल में रहने वाले नाग कबीले के लोग जला कर मार दिए गए. ब्राह्मण–ग्रन्थों में बड़े गर्व सें वर्णन किया गया है कि जो बच्चे, बूढ़े, जवान व स्त्रियां जान बचाकर जंगल सें बाहर भागे उन को पकड़ पकड़ कर वापिस आग में फैंक दिया गया. बच्चे बूढ़ों स्त्रियों ने रहम की भीख मांगी, रोये, गिड़गिड़ाये मगर कृष्ण और अर्जुन की रक्त पिपासा पर उनकी सिसकियां बेअसर रही. जब तक पूरे खाण्डव वन के समस्त नर नारी बच्चे जल नहीं मरे इनकी दरिंदगी शांत न हुई.

इन ब्राह्मणों का एक और अवतार ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ परशुराम था. उसका बाप जमदग्नि एक ऋषि था. उसका किसी अर्जुन नामक आदमी सें झगड़ा था जो कि क्षत्रिय था. उनके झगड़े में परशुराम का बाप मारा गया. बदले में ब्राह्मणों के भगवान के अवतार ने पूरी धरती पर जितने क्षत्रिय थे उन सबको कत्ल कर दिया. जो धरती पर आ चुके थे उन्हें ही नहीं मारा बल्कि जो बच्चे क्षत्राणियों की कोखों में पल रहे थे, उनको भी मार दिया. उसने अपने परशु (फरसा) सें गर्भवती स्त्रियों के पेट फाड़ दिये. गर्भ सें बच्चे निकाल कर उन्हें काट दिया. ब्राह्मणों के उस ''भगवान के अवतार'' ने एक बार नहीं बल्कि 21 बार ऐसा किया. काश ! बिन लादेन मियां ब्राह्मणवादी होते! तो आज वे भी इनके अगर भगवान नहीं तो छोटे मोटे देवता तो जरूर बना दिए जाते.
अतः ब्राह्मणों के किसी भी भगवान ने कभी भी ''अवतार'' लेकर भला काम नहीं किया.

ब्राह्मणों का भगवान यानि आत्महत्या का मार्ग

वैसे तो भगवान का अस्तित्व लगभग सभी धर्म वाले मानते हैं लेकिन ब्राह्मणवाद में भगवानों की लाईन लगी हुई है. तरह तरह के भगवान इसमें मौजूद हैं लेकिन यह भी तथ्य है कि अनेकों ब्राह्मणवादी भगवान को न पाकर आत्महत्या करने पर मजबूर हुए हैं. श्री एस एन शास्त्री ने अपनी पुस्तक "ईश्वर चक्र धर्म चक्र प्रवर्तन सूत्र और चुनाव चक्र" में ऐसे कुछ भगवानों की सूचि दी है.

- रामतीर्थ ने विदेशों में वेदान्त का प्रचार किया. "अहं ब्रह्मास्मि अर्थात मैं ब्रह्मा हूँ" का प्रचार किया लेकिन अंत में ब्रह्म न पाकर उसने अलखनंदा में डूब कर आत्महत्या कर ली
- कुमारिल भट्ट ब्राह्मण था. साम की नीति अपनाते हुए उसने बौद्ध धर्म को अपनाने का दिखावा किया. जब लोग उसे बौद्ध समझने लग गये तो उसने बौद्ध धर्म विरोधी आचरण करना शुरू कर दिया. भगवान की खोज करने लग गया. अन्त में भगवान न पाकर तथा बुद्ध धर्म के विरुद्ध झूठा प्रचार करने की ग्लानि में स्वयं को आग लगा कर आत्महत्या कर ली.
- संकराचारय ने भी कुमारिल भट्ट जैसा आचरण किया. संकराचारय उससें भी दो कदम आगे निकल गया. एक तो उसने राजा सुन्धवा की सेना लेकर बौद्ध भिक्षुओं का कत्लेआम किया तथा उसने स्वयं को ब्रह्म अर्थात भगवान घोषित कर दिया. लेकिन अंत में जब उसका भंडा फोड़ हुआ तो उसने भी आत्महत्या कर ली.
- चैतन्य ने स्वयं को भगवान सें भी ऊपर की चीज बताया. अपने आप को महाप्रभु कहलवाया लेकिन भगवान न पाकर वह भी समुद्र में डूब मरा.
- ज्ञानेश्वर के सामने भैंस रंभाई. उसने लोगों सें कहा कि भैंस के मूंह सें वेद की आवाज निकल रही है. उसने भैंस के रंभाने और वेद मन्त्रों के पाठ में एकसमानता को सिद्ध किया. लेकिन अंत में वेदों के द्वारा भगवान की प्राप्ति न होने पर उसने भी आत्महत्या कर ली.
- मरहटा शिवा के गुरू रामदास ने भी भगवान को न पाकर आत्महत्या कर ली.
- ब्राह्मणों के तथाकथित भगवान ने पांडवों के हाथों उनके सभी भाई बन्धु मरवा दिये. अंत में पांडवों ने भी हिमालय की बर्फ में दब कर आत्महत्या कर ली.
- औरों का तो क्या कहना स्वयं विशणु का एक चौथाई अवतार कहे जाने वाले लक्ष्मण ने राम के कहने पर सरयू में डूब कर आत्महत्या कर ली थी और विशणु का एक आधा अवतार कहे जाने वाला राम भी अंत में जीवन भर दुख उठा कर सरयू में डूब मरा.

जहां तक धर्म का सम्बंध है, अब तक भगवान मात्र ब्राह्मणों का ही धर्म बचाने आया है. स्वयं तुलसी भी कहता है कि "विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतारा" अर्थात ब्राह्मण और गाय के भले के लिए ही अवतार होते हैं. शेषदुनिया गई भाड़ में! किसी भी अन्य धर्म में भगवान उसके पुरोहितों को बचाने अवतार बन कर नहीं आया. तो क्या भगवान का दायरा सिर्फ ब्राह्मणों तक ही सीमित है? जैसे आगे दी गई सूचि सें स्पश्ट है अवतारों ने नैतिकता की बजाए मात्र ब्राह्मणों की रक्षा की है. धर्म के नाम पर जो कुकर्म ब्राह्मण करते थे, उनका भगवान उन कुकर्मों को ही बचाने आया है.
दूसरों का तो कहना ही क्या, भगवान कभी जो उसके अपने धर्म के आम आदमी हैं उनको बचाने भी नहीं आया. औरंगजेब पर जबरन धर्म परिवर्तन करवाने का आरोप है. तब भगवान नहीं आया. पंजाब में एक दशक तक हजारों बेगुनाहों को बसों सें उतार कर मारा गया, तब भी ब्राह्मणों का भगवान नहीं आया. और तो और जब लुटेरों ने ब्राह्मणों के मंदिर लूटे और उनकी बहन बेटियां अगवा कर ले गये तब भी वह अवतार नहीं हुआ. गुजरात में हजारों बेगुनाह मारे गए, हिन्दु भी मुस्लिम भी, तब भगवान अवतार बनके क्यों नहीं आया? इन्दिरा गांधी के कत्ल के बाद हजारों बेगुनाह जिन्दा जलाये गए. तब क्यों नहीं उसने आकर मोदी, अडवानी, भगत राजनीतिज्ञ नरपिशाचों को सज़ा दी?

लेकिन ब्राह्मणों का भगवान तो स्वयं ऐसे काम करता रहा है. इन्द्र ने 99 घर जलाए, हनुमान ने लंका जलाई, कृष्ण ने खांडव वन जलाया. बेगुनाहों को जिन्दा जलाना तो इनका सनातन धर्म है इसीके लिए ही तो उनका भगवान 'संभवामि युगे युगे' होता है.
धर्म को लेकर गीता में जो बयान बाजी की गई है उसके अनुसार धर्म का अर्थ नैतिकता नहीं है. कृष्ण ने गीता का भड़काऊ भाशण तब दिया जब कौरव और पांडव जूए में हारी सम्पत्ति को लेकर लड़ने मरने को तैयार हो गए थे. जूआ खेलना और उसमें प्रयुक्त सम्पत्ति को लेकर लड़ना मरना, मात्र ब्राह्मणवाद में ही धर्म कहे गए हैं. पूरे विश्व में किसी भी अन्य धर्म में इन जैसे कुकर्मों को धर्म नहीं कहा गया है.
अगर मान लें कि गीता कृष्ण के मुख सें ही फूटी है तो वह एक जगह तो (4.7/8) तो कहता है कि जब भी धर्म की हानि होती है वह धर्म को बचाने के लिए अवतार ले लेता है. लेकिन आगे चल कर वह अर्जुन सें फिर कहता है कि वह सब धर्मों को छोड़ कर उसकी शरण में आ जाए. सो अगर भक्तों सें धर्म ही छुड़वा देना है तो अवतार लेने की आचश्यकता ही क्या रह जाती है. लगता है गीता लिखते समय ग्रन्थकार ने सोम कुछ ज्यादा ही चढ़ा ली थी. अतः एक जगह तो भगवान धर्म बचाने आ गया, दूसरी जगह धर्म छुड़वाने यानि नष्ट करवाने आ गया. श्लोक 1.40 में हर कुनबे का अपना कुलधर्म होता है. 1.43 के अनुसार वर्णसंकर संतान का जाति ही धर्म होता है. 2.39 के अनुसार योग अथवा कसरत भी धर्म है. सो कौन सा धर्म बचाने ब्राह्मणों का भगवान अवतार लेता है यह गोरख धन्धा समझ सें परे की बात है. इसी गोरख धन्धे को पंजाबी में भंभल भूसा कहा जाता है.
हितोपदेश की एक कथा है कि एक स्त्री व्यभिचारिणी (राधा) थी. जब उसके पति को इस बात का पता लगा तो उसने स्त्री को मार पीट कर बांध दिया ताकि वह घर सें बाहर न जा सके. तभी उसकी दूसरी साथिन उसे बुलाने आई कि उसका जार उसे बुला रहा है. वह स्त्री बोली कि वह ऐसा कश्टदायक काम नहीं करेगी. दूसरी स्त्री बोली,'' यह कुलटाओं का धर्म नहीं है कि कश्ट के डर सें वे अपने जारों को छोड़ दें.'' निश्चित रूप में ऐसे ही धर्म को बचाने के लिए ब्राह्मणों के भगवान अवतार लेते हैं.
ब्राह्मणवाद के अवतारों पर सटीक टिप्पणी, अनजाने में ही सही, तुलसी ने राम चरित में की है. जब राम ने छुप कर बालि की हत्या की तो तुलसी ने लिखा.

धरम हेत अवतार गोसाईं,
मारेहु मोहि व्याध की न्याईं

अर्थात गोसाईं तुलसी का कहना है कि राम ने धर्म की रक्षा के लिए अवतार लिया है. इसीलिए उसने बालि को वैसे ही कत्ल किया है जैसे शिकारी छिप कर पशु पक्षियों को मारता है.

जहां तक साधुओं को कश्ट होने का प्रश्न है तो सबसें पहले तो यही प्रश्न उठता है कि साधु कौन होता है? हम सब इस बात सें सहमत होंगे कि साधु होने के लिए शुद्ध आचरण सबसें प्रमुख कसौटी है. जिस व्यक्ति का आचरण शुद्ध नहीं है , वह चाहे किसी कुल, किसी जाति में पैदा हुआ हो वह साधु कहलाने के योग्य नहीं है. मात्र ब्राह्मण कुल में पैदा होना ही किसी को साधु नहीं बना देता. राम ने तो तप करते महान ऋषि शम्बूक की हत्या कर दी थी! एक निर्मल साधु की हत्या करके राम ने अवतारवाद के झूठ होने की पुश्टि की है. हनुमान ने जब लंका में आग लगाई तो अनेकों साधु उसमें जिन्दा जल कर मर गए! हनुमान को शिव का अवतार बताया जाता हैं! सो अवतारों ने कभी किसी साधु की रक्षा नहीं की.
आधुनिक काल में बर्बर हमलावरों ने तक्षशिला और नालंदा में शिक्षा ग्रहण करने वाले हजारों भिक्षुओं को मार दिया, सन्त रैदास को ब्राह्मणों ने लाठियों सें पीट कर मार डाला, सन्त कबीर को अनगिनत कश्ट दिए गए. साधु सन्तों को कश्ट देने की उदाहरणों सें इतिहास भरा पड़ा है लेकिन तब एक बार भी अवतार नहीं हुआ! मात्र ब्राह्मण पुराहितों को बचाने ही अवतार क्यों आए? जहां तक साधुओं की रक्षा करने का सवाल है किसी भी अवतार ने कभी किसी असली साधु की रक्षा तो दूर सहायता भी नहीं की.
अतः अवतारवाद का सिद्धांत मात्र ढकोसला है. ब्राह्मणों की कमाई का एक जरिया मात्र है.

03.06.2005 अवतारवाद के झूठ

अवतारी त्रिदेव : लगभग सारे अवतार तीन देवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने लिये हैं. लेकिन त्रिदेव कैसे पैदा हुआ इसकी कथा भी कम धार्मिक नहीं है. एक बार नारद को इन तीनों की बीवियों ने पूछा कि दुनिया में सबसें पतिव्रता नारी कौन है. नारद ने कहा अत्रि की पत्नि अनुसुइया सबसें बड़ी पतिव्रता है. यह सुन कर तीनों ने पूछा कि वे तीनों सबसें बड़ी पतिव्रता क्यों नहीं हैं. तब नारद ने उन तीनों के व्यभिचार के किस्से बयान किये. सुन कर उनकी बोलती बंद हो गई. तब उन्होंने यह ठाना कि अनुसुइया को अपने बराबर बना देंगी.
अतः उन्होंने उस भोली भाली स्त्री के विरुद्ध एक भयंकर षडयन्त्र रचा. उन्होंने अपने पतियों सें कहा कि वे तुरंत जाकर अनुसुइया सें संभोग (बलात्कार अथवा व्यभिचार) करें. तीनों देवों को तो जैसे मूंह मांगी मुराद मिल गई. वे ब्राह्मण का वेश बना कर अनुसुइया के पास गए. उसने उन तीनों को ब्राह्मण समझ उनके लिए खाना बनाया. वे बोले खाना तब खाएंगे अगर वह नंगी हो कर उनके सामने आये. वह जानते थे कि ब्राह्मण की बात मानने सें

कोई भी नारी मना नहीं कर सकती. वह नंगी होकर खाना परोसने लगी कि तभी अत्रि आ गया. अत्रि अगर कुछ देर लेट हो जाता तो अनुसुइया का भी वही हाल होता जो सरस्वती, वृंदा अथवा मोहिनी का हुआ था.
अत्रि को आया देख कर तीनों नवजात बच्चे बन गये. अनुसुइया ने उन तीनों को एक ही पालने में सुला दिया. वहीं पड़े पड़े उन तीनों के धड़, हाथ पैर आपस में जुड़ गये. अतः उन तीनों का एक नया बालक बन गया जिसके तीन सिर और एक धड़ था. यह त्रिदेव के पैदा होने की धार्मिक कथा है. (बाबा साहिब 8.174)
क्या सबक मिलता है हमें ऐसी कथा सें. यही कि ब्राह्मणों के भगवानों की बीवियां भी चरित्रहीन थीं, व्यभिचारी थीं. वे न केवल शरीर सें चरित्रहीन थीं बल्कि मन आत्मा सें भी चरित्रहीन थीं. उन्होंने अपने पतियों सें यह कहा कि वे किसी गैर की पतिव्रता स्त्री का सतीत्व भंग करें.
एक पल के लिए कल्पना करें कि यह घटना आपकी आँखों के सामने हो रही है. तीनों देव बैठे हैं और वे तीनों चरित्रहीना अपने पतियों को अनुसुइया सें यौन सम्बंध बनाने के लिए कह रही हैं. उन्होंने अपने पतियों को अलग अलग नहीं कहा बल्कि छओं ने एक जगह बैठ कर ही आमने सामने बात की है. ऐसी बातें आजकल वेश्याओं के कोठे पर ही होती हैं या फिर अनैतिक चरित्र वाले लोग ही ऐसी बेहयाई की बातें कर सकते हैं.
इस षडयंत्र के सिवाय तीनों अवतारी आपस में अगर कुत्तों की तरह नहीं तो सांडों की तरह अवश्य लड़ते रहते थे. स्कंद पुराण की कथा के अनुसार एक बार ब्रह्मा और विष्णु में इस बात पर लड़ाई हो गई कि कौन पहले जन्मा है. वे मरने मारने को तैयार हो गए. तभी शिव बोला सबसें पहले तो मैं पैदा हुआ हूँ. ब्रह्मा गाय को ले आया जिसने झूठी गवाही दे दी. गुस्सें में आकर शिव ने ब्रह्मा का सिर काट डाला और विष्णु को प्रथम जन्मा बता दिया. ब्रह्मा भक्तों ने बदले में विष्णु को ब्रह्मा की नाक सें निकला सूअर बना दिया.
रामायण के अनुसार जब राम सीता को जीत कर आ रहा था तो परशुराम ने राम को रोक लिया और कहा कि उसने शिव का धनुष तो तोड़ दिया अब विष्णु का धनुष तोड़ कर अपनी बहादुरी साबित करे. इस बात पर शिव और विष्णु आपस में भिड़ गये. देवों ने दोनों को अलग किया. अंत में विष्णु को बड़ा मान लिया गया. (पहेली 10)
बाबा साहिब के अनुसार ब्राह्मणधर्म में अनेकों देवों भगवानों का होना और उनका आपस में टकराना यह दर्शाता है कि यह धर्म अनेक कबीलों सम्प्रदायों का जमघट है जिनमें हरेक का अपना अपना देवता है. इसी कारण सें हिन्दू की परिभाषा नहीं है और यह बताना लगभग असंभव है कि "हिन्दू" कौन है.
त्रिदेवों का आपसी रिश्ता : अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़ा जाए तो एक अजीब सी बात सामने आती हैं कि देवों में आपस में बड़ी अजीब सी रिश्तेदारी है. आज के समय में हम ऐसे रिश्ते बनाने की कल्पना भी अनैतिक समझते हैं. पार्वती दक्ष की बेटी और ब्रह्मा की पोती है और शिव की बीवी है. अतः शिव ब्रह्मा का पोता-जंवाई है. दुर्गा कृष्ण की बहन है तथा शिव की बीवी है. कृष्ण विष्णु का अवतार है. अतः शिव कृष्ण यानि विष्णु का जीजा है. काली .... की बेटी है और शिव की बीवी है. यहां तक तो रिश्ता कुछ ठीक है.
अब एक कथा है देवी भागवत पुराण सें (पहेली 11). कथा है कि श्री नामक देवी ने हथेलियां रगड़ कर पहले ब्रह्मा को पैदा किया. पैदा करते ही उससें बोली कि वह उससें विवाह (यौन सम्बंध) करे. ब्रह्मा बोला कि वह तो उसकी माँ है उससे विवाह करना पाप है. देवी ने उसे जला कर राख बना दिया. फिर विष्णु को पैदा किया. उसके साथ भी वही हुआ. अंत में देवी ने शिव पैदा किया. शिव के सामने भी वही प्रस्ताव रखा गया. शिव बोला अपने भाईयों के बिना शादी कैसे करूं. देवी ने उन दोनों को दुबारा पैदा (जिंदा) कर दिया तथा साथ में दो लड़कियां भी पैदा कर दीं. तीनों भाईयों की शादी तीनों स्त्रियों सें हो गई.
यहां स्थिति बड़ी विचित्र हो गई है. एक तरफ तो त्रिदेव आपस में मांजाए भाई हैं दूसरी तरफ एक शिव का दादा ससुर तो दूसरा साला है. साथ में वे देवी के पुत्र हैं उन तीनों में सें एक ने तो अपनी माँ सें तथा दो ने माँ द्वारा पैदा दो बेटियों सें विवाह (यौन सम्बंध) बनाया. इस तरह उन में सें एक तो ससुर हुआ बाकी दो उसके जंवाई हुए. एक ही माँ के जाए पुत्र आपस में ससुर जंवाई आज के समय में हो नहीं सकते.
एक और बात बड़ी अजीब सी है कि वैदिक काल में त्रिदेव ही राक्षसों और अन्य दुश्मनों सें टक्कर लेते थे लेकिन जब सें देवियां पैदा हुईं यह त्रिदेव खुडेलाईन लगा दिया गया. हो सकता है वे बुढया गये हों. हाथ पांवों की ताकत जवाब दे गई हो. पुराणों में देवियां घढ़ दी गईं. तब सें वे ही दुश्मनों सें लड़ रही हैं. त्रिदेव चूड़ियां पहन कर घर के अंदर बैठे हैं.

एक और अचरज वाली बात यह है कि केवल शिव की बीवियां ही लड़ने मरने को गईं. उसकी दादी सास सरस्वती या सालेहज (साले की बीवी) लक्ष्मी कभी किसी सें लड़ने नहीं गई. बाबा साहिब ने भी इस बात पर हैरानी प्रकट की है. (पहेली 11) लेकिन इस बात का उत्तर किसी के पास नहीं है. इसका बस इतना ही उत्तर हो सकता है कि चतुर दुकानदारों की तरह ब्राह्मण नित्य नये ब्राण्ड के देव देवियां लेकर आते रहे हैं. जैसे ही एक ब्राण्ड का देव कमाई करना बन्द करता है उसे उठा कर कचरे/स्टोर में डाल दिया जाता है तथा उसकी जगह नया ब्राण्ड रख दिया जाता है.

एक बात और भी है कि कई देवियां इस त्रिदेव ने अपनी शक्ति सें "सांझे" में पैदा की हैं. बाबा साहिब पूछते हैं कि ऐसे कायर देवों के पास शक्ति कहां सें आई कि वे शक्ति की देवी को ही पैदा कर दें.. अगर उनमें

शक्ति थी तो वे स्वयं क्यों नहीं लड़े! अगर उनमें स्वयं में लड़ने की शक्ति नहीं थी तो देवियों को कहां सें दे दी. बाबा साहिब इसे देवों का अपमान मानते हैं (पहेली 12)

अवतार मात्र भारत में, और भारत में भी उत्तर प्रदेश तक ही सीमित रहे हैं. क्या उत्तर प्रदेश के बाहर भगवान की धरती नहीं है. या यू पी सें बाहर धर्म की ग्लानि नहीं होती?

दशरथ के चारों बेटे विष्णु के अवतार बताए जाते हैं. रामायण के अनुसार राम विष्णु का आधा भाग था, लक्ष्मण एक चौथाई भाग था तथा भरत व शत्रुध्न शेषबचे एक चौथाई का आधा आधा भाग थे. इस तरह पूरे विष्णु के यह चारों चार भाग थे. लेकिन विष्णु के आधे भाग राम को परशुराम सें टक्कर लेनी पड़ी थी. परशुराम पूरे विष्णु का पूरा अवतार था. तो एक ही भगवान के दो गुणा अवतार पाँच प्राणियों में पैदा हो गए. और सबसें हैरानी की बात तो यह है कि एक ही भगवान के दो अवतार आपस में लड़ मरे. और फिर पूरे विष्णु वाला (परशु) आधे विष्णु वाले अवतार (राम) सें हार गया!! बड़ी अनहोनी बात है कि एक विष्णु अपने सें दोगुना में पैदा हो गया. फिर एक पूरा विष्णु, दूसरे आधे विष्णु सें भिड़ गया और हार भी गया. बड़ा अजीब भगवान है ब्राह्मणों का. उसे पता ही नहीं है कि वह अपने आप सें ही लड़ रहा है!! फिर सबसें पहले विष्णु का एक चौथाई (लक्ष्मण) आत्महत्या कर लेता है, फिर आधा (राम) सरयू में डूब मरता है. भरत और शत्रुघ्न कब मरे पता नहीं. परशु अभी तक नहीं मरा, ऐसा दावा किया जाता है. सो विष्णु ऐसे हिस्सों में मर कर वापिस आया!! यह गोरख धन्धा सभी की समझ सें बाहर है.

लक्ष्मण एक चौथई विष्णु है और साथ में पूरा शेशनाग है. एक ही शरीर में भिन्न भिन्न डेढ भगवान? सारी उम्र तो विष्णु शेशनाग पर पसरा रहता है. अब वह आधा पूरे शेशनाग के साथ लक्ष्मण के शरीर में पैदा हो गया. ये डेढ भगवान लक्ष्मण के शरीर में कहां और कैसे रहे, अनबूझ पहेली है.

ब्राह्मणों का भगवान स्त्री रूप में, वह भी एक वेश्या (मोहिनी) के रूप में अवतार लेता है. वह बालिका बन कर पैदा नहीं होता बल्कि ''पूरी जवान'' ही पैदा हो जाता है. फिर उसका रूप देख कर दैत्य, दानव, राक्षस कोई भी विचलित नहीं हुआ. मात्र ब्राह्मणों का वह भगवान जिसने कामदेव को जीत लिया बताते हैं, उस मोहिनी के पीछे भाग लिया. यह तो शुक्र हुआ कि भागते भागते शिव का वीर्य स्खलित हो गया वर्ना विष्णु तो शिव के कई बच्चों की माँ बन गया होता!! कितनी जोरदार धार्मिक कथा बन जाती अगर एक भगवान ने दूसरे भगवान के बच्चे पैदा कर दिये होते!! लानत है ऐसे भगवानों के!! और लानत है उनके जो ऐसों को भगवान बताते हैं.!!

19.06.2005 (अडतालीस साल) इस अवतार लेने का झूठ तो इस बात सें ही प्रकट हो जाता है कि जहां उपरोक्त श्लोक (4.7) में तो कृष्ण कहता है कि धर्म की रक्षा करने के लिए मैं अर्थात भगवान अवतार लेता हूँ वहीं श्लोक में वह कहता है कि वह तथा अर्जुन दोनों क्रमशः नारायण और नर के अवतार हैं. इस तरह गीता रचियता स्वयं अपनी बात का खण्डन कर देता है कि भगवान ही ब्राह्मण–धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेता है. वैसे दोनों को ब्राह्मणवाद के नर नारायण का अवतार बता कर गीता रचियता ने सत्य ही बोला है क्योंकि कृष्ण ने तो जूए की सम्पत्ति के लिए कौरवों और पांडवों में युद्ध करवा कर तथा राधा व गोपियों के साथ हवस का खेल खेलकर ब्राह्मण–धर्म की पुर्नस्थापना कर दी. वैसे ही अर्जुन ने धोखाधड़ी सें अपने सगे संबधियों को मार कर अपने अवतार होने का प्रमाण दे दिया था.

गीता (2.1) में कृष्ण को मधु–सूदन अर्थात मधु को मारने वाला कहा गया है. जबकि भागवत आदि पुराणों में मधु की हत्या ब्राह्मणों की ''माता'' ने की थी. वास्तव में ब्राह्मण–ग्रन्थ हत्याओं के किस्सों सें ही भरे पड़े हैं. किसने किस को मारा, कोई ध्यान रख ही नहीं सकता. कसाई भी इतने जानवर नहीं मार पाता होगा जितने प्राणी ब्राह्मणों का प्रत्येक देवी देवता मार देता था.

तब भगवान क्यों नहीं आया जब • • • •

1. 1018 ईस्वी में महमूद गजनवी ने मथुरा तथा वृंदावन के मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा. वह मंदिरों में सें 30 मन सोना तथा हीरे लूट कर ले गया. (पंजाब केसरी 26.11.2000 में प्रकाशित सत महाजन का लेख ''चार शाही लुटेरों की कहानी'') ब्राह्मणों का भगवान कहे जाने वाला कृष्ण अपनी कर्मस्थली अथवा ऐयाशगाह को बचाने भी न आया.
2. उग्रवाद के समय पंजाब तथा कश्मीर में 53000 निर्दोश लोग मौत के घाट उतारे गए. यह कत्लेआम 10 साल सें अधिक चलता रहा. लेकिन भगवान का अवतार न हुआ. क्या मात्र जुआरियों के धन के लिए अवतार लेना ''धर्मस्य ग्लानि" है?
3. सम्राट अशोक के राज्य की समाप्ति कर जब ब्राह्मणों ने सत्ता हथियाई, विदेशियों ने भारत पर पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया. तब सें लेकर 1947 तक हम भारतीय विदेशियों की गुलामी करते रहे. हर प्रकार के हमलावरों ने न केवल हमारा धन माल लूटा, मंदिर तोड़े बल्कि हर कोई हमलावर हमारी बहन बेटियों को भी अगवा करके ले गया. बड़ी विडम्बना है कि कृष्ण को जुआरियों द्वारा जूए में हारे धन के लिए किए गए युद्ध में तो धर्म की ग्लानि नजर आई मगर जब जीती जागती मासूम लड़कियों को लुटेरे हांक ले गए, तो उसे धर्म की हानि

नहीं सूझी. जलियांवाले बाग में जब हजारों निरपराध लोग कत्ल किए गए तब भी उसे धर्म की ग्लानि नजर न आई. नील की खातिर अंग्रेजों ने भारतीयों पर जो अत्याचार किए उसे सुन कर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. मगर ब्राह्मणों के किसी भगवान को उन्हें बचाने की फुर्सत न थी. और तो और अवतार का शोशा इजाद करने वाले ब्राह्मणों पर गुलामों के भी गुलाम भी राज कर गए तथा उनकी बहन बेटियों को अगवा करके ले गये मगर उनका भगवान तब भी न आया. अकबर ने ब्राह्मणों और क्षत्रियों की बेटियों सें अपने हरम भर लिए, तब भी उनका भगवान न आया.

4. भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर के दरवाजे तोड़ कर लुटेरे 8.5 किलो चांदी तथा सोना लूट ले गये. (द हिन्दू 7.11.2001) माना जा सकता है कि यह तो छोटी मोटी घटना थी मगर सोमनाथ का मंदिर तो 17 बार लूटा गया. तब भी भगवान न अवतरित हुआ. मोहिनी के पीछे भागने के लिए तो उनका भगवान साक्षात ही आ गया था. ऐसा नहीं है कि पुराने समय में लोग इन ब्राह्मणों की नीयत पर शक नहीं करते थे. पहले भी लोग इन की नीयत पर शक करते थे. इसलिए इन्होंने अपने ग्रन्थों में यह बात घुसेड़ी ''धर्मस्य तत्वं निहितं गुह्यम" अर्थात धर्म के तत्व बेहद सीक्रेट हैं. हर किसी को समझाए नहीं जा सकते. अतः जब भी किसी ने शंका जाहिर की, उसके सामने ब्राह्मण यह श्लोक दोहरा देते थे. इसलिए ब्राह्मणों और उनके भगवानों की नजर में मोहिनी के पीछे भागने में तो ''धर्म" है मगर मासूमों की इज्जत बचाने में कोई धर्म नहीं है.

5. पिछले दिनों में रघुनाथ मन्दिर जम्मू तथा अक्षरधाम मन्दिर गुजरात में आतंकी हमले हुए जिसमें पचासों श्रद्धालू मारे गए. कोई भगवान बचाने न आया. जो पुलिस वाले बचाने आए उन में सें भी कई शहीद हुए. पता नहीं अर्जुन के जूए में हारे धन में ऐसा क्या था कि मात्र उसी में ब्राह्मणों के भगवान को धर्म दिखाई दिया. 04.11. 2005

6. ईटीवी राजस्थान अक्तूबर 2005 के समाचार अनुसार राजस्थान के एक प्रसिद्ध मन्दिर में एक नाबालिग लड़की सें चार लोगों द्वारा बलात्कार किया गया. लेकिन मन्दिर के अंदर भी भगवान उस अबला को बचाने न आया.

ब्राह्मण—धर्म के अवतार

सबसें महत्वपूर्ण प्रश्न यही है, जैसा कि गीता में कहा गया है, क्या ब्राह्मण-धर्म के अवतार वास्तव में ऐसे ही थे? अर्थात जो भी अवतार हुए क्या उनका आचरण गीता में बताए गए सिद्धांत के अनुरूप ही रहा है ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए यह जानना जरूरी है कि ब्राह्मण—धर्म ने कुल कितने अवतार पैदा किये हैं और उनका उद्देश्य क्या था और आचरण कैसा रहा है.

ब्राह्मण—धर्म के भिन्न भिन्न ग्रन्थों ने अवतारों की भिन्न भिन्न सूचियां दी हैं जो कि इस प्रकार सें हैं.

क्र. सं.	हरिवंश पुराण	नारायणी आख्यान	वाराह पुराण	वायु पुराण	भागवत पुराण
1.	वाराह (सूअर)	हंस	कूर्म (कछुआ)	नरसिंह	सनत्कुमार
2.	नरसिंह	कूर्म (कछुआ)	मछली	वामन (बौना)	वाराह (सूअर)
3.	वामन (बौना)	मछली	वाराह (सूअर)	वाराह (सूअर)	नरनारायण
4.	परशुराम	वाराह (सूअर)	नरसिंह	कूर्म (कछुआ)	कपिल
5.	राम	नरसिंह	वामन (बौना)	संग्राम (लड़ाई)	दतात्रेय
6.	कृष्ण	वामन (बौना)	परशुराम	आदिवक	यज्ञ
7.		परशुराम	राम	त्रिपुरारि	ऋशभ (सांड)
8.		राम	कृष्ण	अंधकार	पृथि
9.		कृष्ण	बुद्ध	ध्वज (झंडा)	मछली
10.		कल्कि	कल्कि	वर्त	कूर्म (कछुआ)
11.				हलाहल (जहर)	धन्वंतरि
12.				कोलाहल (शोर)	मोहिनी
13.					नरसिंह
14.					वामन (बौना)
15.					परशुराम
16.					वेदव्यास
17.					नरदेव
18.					राम
19.					कृष्ण

20.					बुद्ध
21.					कल्कि

इन सूचियों को प्रथम दृश्टि सें देखने पर ही इनकी सत्यता का अंदाजा हो जाता है. हर ग्रन्थकार अपनी अपनी हांक रहा है. जैसे स्पर्धा के चलते एक दुकानदार दूसरे सें ज्यादा वैरायटी का सामान अपनी दुकान पर रखता है कि कहीं ग्राहक वापिस न चला जाए, वैसी ही इन पुराणकारों में होड़ लगी हुई लगती है. हर कोई अपने पुराण में दूसरे सें बढ़ कर अवतार बना रहा है. 21 तक की वैरायटी तो भागवत में बन चुकी. देखें अभी और कितने बनने बाकी हैं. कहा जाता हे कि मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ होता है. लेकिन ब्राह्मणों पर पता नहीं क्या भूत सवार हुआ कि उन्होंने अपने भगवान को कछुआ, मछली, सांड और यहां तक कि नित्य गंदगी में मूँह मारने वाला सूअर तक बना दिया. लड़ाई, झण्डा एवं शोर बना दिया. ऐसा रूप धारण करके इनके भगवानों ने ऐसा क्या किया है कि जो भगवान मानव रूप में नहीं कर सकता था? न केवल इन सूचियों में अंतर है बल्कि कौन किसका अवतार है इस बारे में भी ग्रन्थकारों ने अपनी अपनी हांकी है. जिस ग्रन्थकार को जो पसन्द आ गया उसी का नाम छाप दिया. न केवल इनकी सूचियों में अंतर है बल्कि उनके उद्देश्यों में भी अंतर है. ऐसा लगता है कि ग्रन्थकार के सोम अथवा भांग कुछ ज्यादा चढ़ गई और वह लोर में उसे जैसे ख्याल आते रहे वह वैसा लिखता रहा.
हरिवंश के अनुसार कुल में कुल 6 अवतार हुये हैं. वाराह पुराण तथा नारायणी आख्यान के अनुसार 10–10 अवतार हुए हैं. वायु पुराण के अनुसार 12 तो भागवत के अनुसार 21 अवतार हुए हैं. गीता 2 ही अवतारों की बात करती है. गीता ईश्वर के अतिरिक्त मनुष्य के अवतार की भी बात करती है. भगवान तो, मान लेते हैं कि धर्म बचाने आता है लेकिन मनुष्यों की तो धरती पर भरमार है. फिर भगवान को अपने साथ आदम के अवतार की क्या आवश्यकता है! कृष्ण को अपने साथ अर्जुन को लाने की क्या आवश्यकता थी. पृथ्वी पर उसे बहुतेरे जुआरी मिल जाते जो माल के लिए, बिना गीता ज्ञान सुने ही लड़ने मरने को तैयार हो जाते! लड़ाई के लिए तैयार करने के लिए कृष्ण को 18 अध्याय लम्बी बकवाद् न करनी पड़ती.

- वायु पुराण के अनुसार राम कृष्ण परशु आदि के अवतार हुए ही नहीं हैं.
- भागवत में अवतरित सनतकुमार कपिल आदि को अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ अवतार नहीं मानते.
- भागवत के अनुसार वेश्या मोहिनी भी भगवान का अवतार है. हो सकता है कल को राधा भी अवतार बना दी जाए.

चाहे सभी ग्रन्थ अवतारों की अपनी अपनी सूचियां देते हैं मगर एक बात पर सभी सहमत हैं कि कोई भी अवतार वैध तरीके सें पैदा नहीं हुआ है. कोई तो नाजायज बाप की औलाद है तो कोई बिना माँ के ही जन्मा हुआ है.

क्या बुद्ध कभी ब्राह्मणों के अवतार हो सकते हैं?

उपरोक्त सूचियों में कुल 30 अवतारों के नाम हैं. जिनमें सें एक नाम ''बुद्ध'' भी है. ''बुद्ध'' का नाम अपने पतित अवतारों के साथ जोड़ना उनकी सोची समझी एवं धूर्त चाल का नतीजा है. भगवन बुद्ध पहले ऐसे पुरुष थे जिन्होंने ब्राह्मणवाद के विरूद्ध सफलता पूर्वक आवाज उठाई थी और जिन्होंने भारत में सें ब्राह्मणों द्वारा धर्म के नाम पर किए जा रहे अनाचार को उखाड़ फैंका था. लेकिन ब्राह्मणों ने अपनी साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाते हुए, भारत भूमि सें बौद्धों को समाप्त कर दिया. जहां एक ओर अशोक के पौत्र वृहदर्थ को मारने के बाद ब्राह्मणों ने राजसता पर कब्जा करके प्रत्येक भिक्षु के सिर पर सौ दीनारों का ईनाम घेशित कर दिया, वहीं अपनी ''साम'' की नीति अपनाते हुए भगवन बुद्ध को अवतार घोषित कर ''अपना ही आदमी'' बना दिया.
लेकिन नकली काँच के टुकड़ों में हीरा कब तक छुपा रह सकता है. आज कोई भी ब्राह्मण कथाकार जब अपने अवतारों की कथा सुनाता है तो भगवन बुद्ध का नाम नहीं लेता क्योंकि वह जानता है कि जिस दिन उसने भगवन बुद्ध का नाम लिया, उनकी शिक्षाएं बताईं तो ब्राह्मणवाद का बंटाधार हो जाएगा. असली हीरे की चमक देखते ही लोग इन नकली काँच के टुकड़ों को कूड़े में फैंक देंगे. वैसे भी बुद्ध ने ब्राह्मणों के अवतारों जैसा कोई ''कारनामा'' नहीं किया. न उन्होंने अपनी मामी संग रास रचाया, न गर्भवती पत्नि को जंगली जानवरों के सामने फेंका, न मोहिनी के पीछे भाग कर सोने चांदी की खाने बनाई. अतः उनकी ऐसी कोई ''कथा'' है ही नहीं जो इन के अवतारों के साथ सुनाई जा सके.
''बुद्ध'' और ब्राह्मण–धर्म के अवतारों में कहीं कोई तुलना भी नहीं हो सकती. सिद्धार्थ ने घायल हंस को बचाया तो राम ने निरीह पशु मार मार कर जंगल में दहशत फैला दी. सिद्धार्थ ने अपने परिवार को कश्टों सें बचाने के लिए देश निकाला स्वीकार कर लिया वहीं राम अपने भाई भरत के पीछे सें उसकी गद्दी हड़पने की साजिश रची. सिद्धार्थ ''बुद्ध'' बन कर जब अपने पुराने घर आते हैं और यशोधरा उन्हें मिलती है तो बुद्ध उन्हें ''बहन'' कह कर बुलाते हैं. दूसरी ओर कृष्ण और ब्रह्मा ऐसे अवतार हैं जिन्होंने गैरों की तो क्या अपनी माँ, बहन, बेटियों को भी

अपनी हवस का शिकार बनाया. सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए ''मार'' अर्थात काम वासना को मन सें हटाते हैं जबकि ब्राह्मण–धर्म के भगवानों का सारा जीवन ही काम वासना के चक्कर में बीता है. हम में सें कोई भी ''बुद्ध" बन सकता है. उसके लिए दस पारमिताएं ग्रहण करनी पड़ती हैं. ब्राह्मणों के भगवानों के कारनामे कोई भी साधारण प्राणी करने की सोच भी नहीं सकता. हम में सें कितने लोग कृष्ण की तरह अपनी सगी मामी सें भोग कर सकते हैं! कितने लोग राम की तरह पूरी दिनों की गर्भवती पत्नि को जंगली जानवरों के आगे डाल सकते हैं! कितने लोग परशु की तरह गर्भवती स्त्रियों के पेट चीर कर उन में पल रहे बच्चे काट सकते हैं और कितने लोग विष्णु की तरह अपने विरोधी की पत्नि सें बलात्कार कर सकते हैं अथवा ब्रह्मा की तरह अपनी बेटी सें ही बलात्कार कर सकते है!! सूचि अंतहीन है.

इसके विपरीत ''बुद्ध'' बनने के लिए 10 पारमिताएं यानि अवस्थाएं हैं जो हर बोधिसत्व (बुद्ध बनने का प्रयास करने वाले व्यक्ति) को ग्रहण करनी पड़ती हैं. यह दस पारमिताएं इस प्रकार सें हैंः

1. मुदिता : जैसे सुनार मैल हटा कर सोने चांदी को शुद्ध करता है वैसे ही बोधिसत्व अपने पहले चरण में अपने मन सें मैल हटाते हैं. उनका मन बादलों सें मुक्त चंद्रमा की तरह संसार को आलोकित करता है.

2. विमला : दूसरे चरण में बोधिसत्व काम वासना सें मुक्त हो जाते हैं. उनका मन सब के प्रति करूणा भाव सें भरा होता है.

3. प्रभा : तीसरे चरण में बोधिसत्व अपनी प्रज्ञा को दर्पण की तरह साफ कर लेते हैं. आम भाषा में प्रज्ञा का अर्थ है भले बुरे, सत्य असत्य का ज्ञान होना. इस ज्ञान को बहुजन के हित में प्रयोग करते हैं.

4. अर्चिश्मती : चौथे चरण में बोधिसत्व अपना घ्यान पंचशील तथा अश्टांगिक मार्ग पर लगाते हैं. पंचशील अर्थात पांच प्रकार के शील इस तरह सें हैं

1. किसी भी जीव की हिंसा न करना.
2. दूसरों की वस्तु पर नीयत न डिगाना.
3. व्यभिचार न करना.
4. असत्य न कहना.
5. नशीली चीजों का सेवन न करना.

अष्टांगिक अर्थात आठ अंगों वाला मार्ग इस प्रकार सें हैः

1 सम्यक दृश्टि : मन सें अविद्या का नाश करना, पाखण्ड पूर्ण जीवन का त्याग करना. किसी भी काम अथवा चीज को करने सें पहले उसका भला बुरा जांचना. अपने मन, वचन तथा कर्म को सब के प्रति बिना भेद भाव वाला बनाना.

2 सम्यक संकल्पः यह ठान लेना कि सब अच्छा ही अच्छा करना है. किसी का बुरा नहीं करना. मन, वचन तथा कर्म सें सही करने का संकल्प लेना. बुरी चीजों को त्यागने का संकल्प करना.

3 सम्यक वाणी : सत्य बोलना, चुगली न करना, अफवाह न फैलाना, गाली न निकालना. मूर्खतापूर्ण और तर्कहीन बातें न करना. डींगें न मारना.

4 सम्यक कर्मांत : अपना कोई भी छोटा बड़ा काम करते समय यह ध्यान रखना कि इस काम सें किसी और का नुकसान अहित न हो.

5 सम्यक आजीविका : अपनी जीविका कमानें के लिए भले काम करें. दूसरों को हानि पंहुचा कर धन न कमाएं.

6 सम्यक व्यायाम : अच्छाई अथवा भलाई के मार्ग पर चलना और लगातार चलना. जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए लगातार कसरत करने की आवश्यकता होती है वैसे ही जीवन को नैतिक बनाये रखने के लिए भी लगातार अच्छे काम (सम्यक व्यायाम) करने की आवश्यकता होती है.

7 सम्यक स्मृति : इस बात के प्रति सचेत रहना और इस बात को हमेशा याद रखना कि मन, वचन तथा कर्म सें किसी का बुरा नहीं करना है.

8 सम्यक समाधिः सत्य के मार्ग पर चलना बहुत कठिन होता है. मन को लोभ, द्वेश, आलस्य, संदेह की भावनाएं घेरे रहती हैं. इन भावनाओं को दूर करने के लिए समाधि की आवश्यकता होती है. सम्यक समाधि सें मन एकाग्र होता है तथा व्यक्ति को सही रास्ते सें भटकने नहीं देता.

5. सुर्दुजयाः इस चरण में बोधिसत्व सापेक्ष और निरपेक्ष के सम्बन्ध को अच्छी तरह सें जान लेते हैं. साधारण भाषा में सापेक्ष का अर्थ है कि कौन सा काम कब, कहां करना उचित है और कब, कहां अनुचित है. निरपेक्ष का अर्थ है वह काम जो बिना बाहरी प्रभाव सें उचित अथवा अनुचित है. चोरी कभी भी की जाए, पाप है. अतः चोरी निरपेक्ष पाप है.

6. अभिमुखी : इस चरण में बोधिसत्व चीजों के विकास उनके बारह निदानों को पूरी तरह जान लेते हैं.

7. दूरगमा : इस चरण में बोधिसत्व देश, काल के बन्धनों सें परे हो जाते हैं. किसी सें कोई निजि सम्बन्ध नहीं रह जाता है. उनके लिए सारा संसार एक हो जाता है. वह लोगों को धर्म इस प्रकार सें समझाते है कि सब की समझ में आ जाए.
8. अचल : इस चरण में बोधिसत्व को अच्छे काम करने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता बल्कि उनसे सही काम अपने आप होने लग जाते हैं. उनसें गलत काम होता ही नहीं है.
9. साधुमतिः इस चरण में बोधिसत्व सब प्रकार के कार्यों और उनकी पद्धतियों में पारंगत हो जाते हैं. सब दिशाओं को जीत लेते हैं. समय की सीमा को लांघ जाते हैं.
10. धर्म मेधाः उपरोक्त सभी पारमिताओं को ग्रहण कर लेने के बाद बोधिसत्व 'धर्म–मेधा' बन जाते हैं. तब उनको किसी गुरू अथवा सहारे की आवश्यकता शेषनहीं रह जाती.

इन पारमिताओं सें बोधिसत्व को ''बुद्धत्व'' प्राप्त होता है. लेकिन ब्राह्मणों का भगवान बनने के लिए नैतिकता की कहीं कोई कसौटी नहीं है. सबसें बड़ी बात ब्राह्मण–धर्म के किसी भी भगवान ने नैतिकता का आचरण कभी किया ही नहीं. सबके सब मारने, काटने, लूटने तथा बलात्कार व्यभिचार में डूबे रहे. इन पारमिताओं की कसौटी पर अगर ब्राह्मण अवतारों को परखा जाए तो हरेक अवतार निम्न सें निम्नतर स्तर का पाया जाएगा. बुद्ध के सामने सब के सब अवतार वैसे ही हैं जैसे हंस के सामने गन्दी नाली के कीड़े! बुद्ध और ब्राह्मण अवतारों का कहीं कोई मेल ही नहीं है.

ब्राह्मणों के अवतारों के आचरण की समीक्षा करने सें पहले उन भगवानों का चरित्र जानना भी आवश्यक है जो अवतार लेते हैं अथवा जिन का अवतार होता है. उपरोक्त सूचि के अनुसार सारे अवतार ब्रह्मा, विष्णु और शिव के हुए हैं.

ब्रह्मा : ब्रह्मा के चरित्र का वर्णन अध्याय 5 में पहले ही किया जा चुका है. अगर ब्राह्मणों की बात सत्य मान ली जाए कि ब्रह्मा उनका आदि पुरुष है तथा सभी आर्य लोग उसी के वंशज हैं तो निश्चित रूप में वे सब ''खताना ऊत'' की पैदावार हैं क्योंकि :

1. ब्रह्मा ने अपनी बेटी सरस्वती सें बलात्कार करके नारद को पैदा किया. उसके जैसा चुगलखोर न कभी हुआ न कभी पैदा होगा. आज के समय किसी को नारद कहना उसे गाली देना जैसा है.
2. अन्य बेटी पोतियों सें संभोग करके मनु को पैदा किया जिसकी मनुस्मृति के जातिवाद के जहर को हम भारतीय आज तक झेल रहे हैं.
3. ब्रह्मा ने अपनी बेटी पोतियां ही नहीं भोगी बल्कि दुल्हन बनी पार्वती पर भी नीयत खराब कर ली थी. यह तो शुक्र है कि पार्वती की रक्षा करने शिव अपना त्रिशूल लिए वहीं मौजूद था वर्ना सरस्वती की तरह पार्वती सें भी वह कितने मनु या नारद पैदा करता, आज ब्राह्मण ग्रन्थ इन कथाओं सें भरे मिलते. यहां ध्यान देने वाली बात है कि ब्रह्मा रिश्ते में शिव का दादा–ससुर लगता था. लेकिन जो आदमी अपनी बेटी और पोती को भोग सकता है वह पौत्र–जंवाई की वधु पर नीयत खराब कर ले तो कौन सी बड़ी अनहोनी बात हो गई.

सीधी सी बात है कि अगर ब्रह्मा भगवान होकर ऐसे कारनामे करता है तो वह अवतार लेकर वह कौन से धर्म की रक्षा करेगा, किस प्रकार के ''साधुओं'' की मदद करेगा, इसकी हर कोई सहज कल्पना कर सकता है.

विष्णुः विष्णु के चरित्र का वर्णन अध्याय 5 में पहले ही किया जा चुका है. सब सें अधिक अवतार इसी के नाम हैं. इसकी अपनी कहानी बहुत कम है. इसने अधिकतर करतूतें अवतार लेकर ही की हैं. अपने जीवन में इसने दो ऐसी करतूतें की हैं जो हर बड़ा गुण्डा अपना काम साधने के लिए प्रयोग में लाता है. मानव इतिहास में अपना काम साधने के लिए ''स्त्री'' का प्रयोग सबसें पहले विष्णु ने शुरू किया था. इस अभूतपूर्व देन के लिए गुण्डे सदा विष्णु के ऋणी रहेंगे.

1. सभी यह कथा जानते हैं कि देवों और असुरों ने मिल कर समुद्र मंथन किया. उसमें सें अनेकों वस्तुएं निकलीं. असुरों के हिस्से में अमृत निकला. नैतिकता का तकाजा था कि उन्हें अमृत दे दिया जाता. लेकिन नैतिकता और देवों का तो दूर दूर का भी शिता न था. शराफत सें मान जाना तो देवों का काम ही न था. विष्णु के दिमाग में धोखे का कीड़ा कुलबुलाया. अमृत हासिल करने के लिए उसने सुन्दर वेश्या का भेश बनाया और अमृत का घड़ा उठा कर भाग लिया. असुर बेचारे अभी कुछ समझ ही न पाये थे कि काम को मारने का दावा करने वाला शिव कामांध होकर वेश्या बने विष्णु के पीछे भाग लिया. विष्णु को भूतों के राजा शिव सें अपनी इज्जत बचानी मुश्किल हो गई. इसी छीना झपटी में अमृत भी छलक गया. साथ में ही शिव का वीर्य पतन हो गया वर्ना किस्सा कुछ और ही बन जाता.
2. पहली बार तो विष्णु स्वयं स्त्री बन कर आ गया लेकिन अगली बार उसने वह महापाप किया जिसकी मिसाल किसी अन्य धर्म में नहीं मिलती. भारत भूमि पर असुर सम्राट जालंधर का राज्य था. सती वृन्दा उनकी

पत्नि थी. पाँच सतियों में एक नाम उनका भी गिना जाता है. महारानी वृन्दा अपने पति की अंतरंग मित्र, सलाहकार और शक्ति थीं. उनके राज्य में सब ओर अमन शांति थी. पराये सामान अथवा पराई स्त्री की ओर कोई आँख उठा कर भी न देख सकता था. देवों और ब्राह्मणों की ऐयाशी बन्द हो गई थी. तब उन्होंने एक ऐसी साजिश रची जिसके बारे में किसी ने पहले कल्पना भी न की थी. विष्णु ने वृन्दा सें बलात्कार करने की कुत्सित योजना बताई जिसे सुन कर सभी देव और ब्राह्मण अत्यंत खुश हुए.

अपनी कुत्सित योजना को पूरी करने के लिए विष्णु ने जैसे वेश्या मोहिनी का वेश धारण किया था वैसे ही उसने सम्राट जालंधर जैसा वेश बनाया और उसने वृन्दा की इज्जत लूट ली. वृन्दा इस आघात को सहन नहीं कर पाई और उहोंने आत्महत्या कर ली. मरने सें पहले उन्होंने विष्णु को श्राप दिया कि उसका मूंह काला हो जाए. इसी कारण राम कृष्ण आदि अवतार अपना उसका मूँह काला लेकर पैदा हुए. यहां तक कि आज तक अनेक मन्दिरों में विष्णु भी काले मूँह वाला है. **बलात्कारियों और चोरों का मूँह काला करने की परिपाटी तभी सें हमारे समाज का अंग बन गई है.**

वृन्दा की जहां अस्थियां डाली गईं वहां तुलसी का पौधा उग आया. आज हिन्दु लोग उस तुलसी के पते तोड़ कर उसी बलात्कारी विष्णु के चरणें में चढाते हैं!! एक पल के लिए सोचें कि जो हृदय विदारक घटना वृन्दा के साथ हुई अगर हमारी बहन बेटी के साथ ऐसी हुई होती तो!! तो क्या हम उसके बलात्कारी के चरणों में हम हमारी बहन बेटी की समाधि पर उगे फूल चढ़ाते!! हर बार जब भी कोई तुलसी की पत्तियां तोड़ कर बलात्कारी विष्णु के चरणों में चढ़ाता है तो वृन्दा की आत्मा को लगता होगा कि जैसे फिर सें किसी ने उसके फटे वस्त्र उतार कर उसे विष्णु के आगे फैंक दिया है!! विष्णु ने तो उसके शरीर सें ही बलात्कार किया था, हम तो हर रोज उसकी आत्मा को ही विष्णु के आगे बलात्कार के लिए भेंट कर देते हैं. उसकी आत्मा हर रोज़ बलात्कार सें चीत्कार करती होगी! काश हम उनकी चीत्कार सुन पाते!!

इस तरह विष्णु को आदि–गुण्डा भी कहा जा सकता है क्योंकि उसने ही यह पाठ पढ़ाया है कि अपना काम निकालने के लिए 'स्त्री' का उपभोग कैसे किया जाए. उसके कृत्यों के अनुसार या तो मोहिनी के रूप में स्त्री भेंट कर दो अथवा वृन्दा के रूप में भेंट ले लो. दोनों ही हालातों में सफलता मिलेगी! हम आम लोगों में अभी तक बुद्ध और तीर्थंकर की शिक्षाओं का असर बाकी है इसलिए हम ऐसे कुत्सित काम नहीं करते वर्ना विष्णु की बात मान लेते तो आज कोई भी स्त्री सलामत न रहती. हर स्त्री को मोहिनी अथवा वृन्दा में सें एक तो बना ही दिया जाता!!

अभी कुछ समय पहले ही तहलका काण्ड हुआ था जिसमें एक बहादुर पत्रकार ने उन केन्द्रीय मंत्रियों और उच्च अधिकारियों का पर्दा फाश किया था जिन्होंने सेना के लिए खरीदे गए सामान में रिश्वत खाई थी. उन पत्रकार पर आरोप लगा कि इस काम को करने के लिए उन्होंने वेश्याओं की मदद ली. लगभग सभी अखबारों ने इस बात पर उनकी निन्दा की. कितनी हैरानी की बात है कि वे ही अखबार रोजाना उस विष्णु की स्तुति में कुछ न कुछ छापते रहते हैं जिसने आदि काल में ही स्वयं वेश्या बन कर अपना काम साधा था.

महेश : शिव के चरित्र का वर्णन भी अध्याय 5 में पहले ही किया जा चुका है. त्रिमूर्ति में महेश कहे जाने वाला शिव, शंकर आदि नामों सें भी जाना जाता है. अभी कुछ समय पहले तक शिव मात्र शूद्रों का देवता माना जाता था. तुलसी ने अपनी पुस्त्क रामचरित तक में शिव की निन्दा की है. स्वयं राम के मुख सें कहलवाया है 'सिव पूजक मम द्रोही'. अगर शिव को ऐतिहासिक प्राणी मानें तो वह ब्रह्मा–विष्णु विरोधी गुट का नायक था. अगर इस सिद्धांत को मान लिया जाए कि आर्य बाहर सें आये थे तो शिव यहां भारत में उस समय रहने वाले मूल निवासियों का राजा, देवता अथवा नायक था. पुराणों व अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित कथाओं के अनुसार लगभग सभी असुर कहे जाने वाले राजा शिव को अपना नायक अथवा देव मानते थे. शिव और आर्य देवों में कई बार खूनी संघर्ष भी हुआ.

ऐसा लगता है कि अन्त में ब्राह्मण देवों ने अपनी साम दाम की नीति का सहारा लिया. दण्ड अथवा लड़ाई में वे सफल न हो पाये थे. अतः उन्होंने साम अथवा समझौते वाला दांव चला. हरि वंश पुराण के अनुसार ब्रह्मा के तीन बेटे–दक्ष मारीचि और धर्म तथा एक बेटी सरस्वती थी. उस सरस्वती सें ब्रह्मा ने तो नारद पैदा किया ही, दक्ष ने भी अपनी बहन के 50 कन्याएं पैदा कर दीं. उन्हीं में सें एक सती नामक कन्या उन्होंने शिव को भेंट कर दी. (शादी का रिवाज आर्यो में था ही नहीं). इस प्रकार ब्रह्मा शिव का दादा ससुर लगा. सती की कथा सभी जानते हैं कि उसके बाप ने जब यज्ञ किया तो शिव को नहीं बुलाया और न ही उसे यज्ञ में चढ़े माल में सें हिस्सा दिया. नतीजा यह रहा कि शिव ने अपने आदमी भेजे और अपने ससुर का यज्ञ नष्ट करवा दिया. यज्ञ में आए अधिकतर देवों व मनुष्यों तथा दक्ष को मार दिया गया. उसके आदमियों ने यज्ञ वेदी में पेशाब तक कर दिया. यज्ञ वेदी में मूत्र करना इस बात का संकेत है कि शिव तथा उसके आदमी यज्ञ को कोई पवित्र अथवा धार्मिक क्रिया नहीं मानते थे. शिव को अपने पक्ष में बनाए रखने के लिए सती के आत्महत्या कर लेने पर दक्ष की दूसरी बेटी उमा शिव को सौंप दी गई.

शिव के ''धार्मिक कृत्य'' अध्याय 5 में दिए जा चुके हैं. ब्राह्मणों ने शिव का ब्राह्मिकरण करते हुए उसके नाम भी कुछ कारनामे जोड़ दिए हैं:

1. राजस्थानी भाषा में एक लोकगीत है जिसे कि ''हरजस'' कहा जाता है. यह गीत अक्सर स्त्रियां उस समय गाती हैं जब घर में किसी के निधन पर रातिजगा (रात भर जाग कर भजन करना) किया जाता है. इस हरजस के अनुसार जब शिव 12 वर्ष की तपस्या करके घर लौटा तो 9 वर्ष के गणेश ने उसे घर के अंदर नहीं जाने दिया. फलतः शिव ने उसकी गर्दन काट डाली.

इस कथा का सीधा सा अर्थ है शिव गणेश का बाप नहीं था. अगर वह उसका बाप होता तो उसकी गर्दन नहीं काटता. भगवान तो वह हो ही नहीं सकता क्योंकि जब उसे यही पता नहीं चला उसके तपस्या में लीन रहते उसकी पत्नि ने पुत्र पैदा कर लिया है तो उसे शेष त्रिलोक की खबर कहां सें रहेगी! फिर भगवान इतना निर्दयी तो नहीं हो सकता कि एक 9 साल के बच्चें की गर्दन ही काट डाले!!

2. दूसरी कथा मोहिनी बने विष्णु के पीछे कामांध होकर भागने की है. सभ्य समाज की तो बात ही क्या है वेश्यालयों में भी शायद पुरुष इस तरह सें स्त्रियों के पीछे नहीं भागते होंगे जिस तरह शिव कामांध होकर मोहिनी के पीछे भाग लिया था. ऐसा ''भगवान'' अवतार लेकर क्या गुल खिलाएगा, हर कोई सहज कल्पना कर सकता है. शायद उसकी इसी कामेच्छा को पूरी करने के लिए, जब उसने हनुमान के रूप में अवतार लिया था तो राम ने उसे 16 कमसिन कन्याएं भेंट की जिनके गुप्त अंगों पर अभी रोंएं उगना शुरू हुए थे! (बा.रा. उत्तर कांड)

3. तीसरी कथा शिव के गुप्त अंग अर्थात शिव लिंग की पूजा सें सम्बंधित है. कथा है कि एक बार तीनों ''भगवान'' यह दावा करने लगे कि वही सबसें बड़ा है. अतः भृगु को इस बात का फैसला करने के लिए जॅज नियुक्त किया गया. वह जब ब्रह्मा के पास गया तो उसने भृगु की सेवा नहीं की. सो भृगु बोला तूने ब्राह्मण की पूजा नहीं की है अतः आज के बाद तेरी भी कोई पूजा नहीं करेगा. तब वह शिव के निवास पर गया. शिव पार्वती के साथ मैथुन में लीन था. उसने भी भृगु की सुध नहीं ली. सो भृगु बोला तू हमेशा लिंग के कामों में लीन रहता है अतः तू लिंग बन जा. अतः शिव योनि सहित लिंग बन गया. विष्णु ने उसकी सेवा कर दी सो उसने उसे भगवान घोषित कर दिया.

इस कथा में कहीं कोई सच्चाई नहीं है. अगर सजा अथवा श्राप के कारण ही अगर शिव को ''लिंग–योनि" बनना पड़ा तो आज हर मंदिर में उसी लिंग की पूजा क्यों होती है? ऐसा मात्र ब्राह्मण धर्म में ही होता है कि किसी को श्राप देकर आदमी सें कुछ और बना दिया जाए और फिर उसके शापित तथा असली दोनों रूपों को पूजा जाए. ''लिंग–योनि" बनने के बाद शिव का जीवन समाप्त क्यों नहीं हो गया? असली शिव मोहिनियों के पीछे भागने के कारनामे करता रहा, ब्राह्मण उसका लिंग पुजवाते रहे!

लिंग पुराण का कथाकार एक और ही कथा बताता है. उसके अनुसार एक बार ब्रह्मा और विष्णु में इस बात को लेकर लड़ाई हो गई कि वही सबसें बड़ा है. वे दोनों लड़ रहे थे कि उन दोनों के बीच वहां एक लिंग आ गया जो कि आकार में बहुत बड़ा था. तय हुआ कि जो उस लिंग का छोर ढूंढ लेगा वही बड़ा कहलायेगा. ब्रह्मा लिंग का ऊपरी छोर ढूंढने निकल पड़ा और विष्णु नीचे वाला छोर ढूंढने निकल पड़ा. दोनों कई साल इसी काम में लगे रहे मगर वे उस लिंग का छोर नहीं ढूंढ पाये. अंत में उन्हे पता चल गया कि यह तो शिव का लिंग था. अतः उन्होंने शिव के उस वृहदाकार लिंग की पूजा की और उन्होंने यह मान लिया कि शिव उन दोनों सें भी बड़ा है.

ऐसा लगता है कि यह कथा मजमा लगा कर सैक्स की दवा बेचने वाले किसी विद्वान डाक्टर द्वारा लिखी गई है क्यों कि वे लोग ही ऐसी ''विद्वता पूर्ण'' बातें करते हैं.

वास्तव में सच्चाई यह है कि ब्राह्मण यज्ञों में जी भर कर ऐय्याशी करते थे. बुद्ध और तीर्थंकर की शिक्षाएं अपना कर लोग यज्ञों को छोड़ चुके थे. ब्राह्मणों की ऐय्याशी बन्द हो चुकी थी. सम्राट अशोक के पौत्र वृहदर्थ की हत्या करके ब्राह्मण सत्ता पर काबिज हुए. उन्होंने यज्ञ फिर सें चालू किये मगर लोगों ने साथ न दिया. तब जैसे चतुर व्यापारी समय के अनुरूप नई नई वस्तुएं लेकर आता है, वैसे ही ब्राह्मणों ने एक बिलकुल ही नई चीज खोज निकाली. उन्होंने अपने भगवान को ही ''लिंग–योनि'' बना डाला. आज भी ब्राह्मण लोगों सें अपने इस लिंग को पुजवाते आ रहे हैं!

जो व्यक्ति चौबीसों घंटे काम वासना में लीन रहता हो उसे भगवान बताना ही पाप है, अधर्म है. विश्व में अनेकों धर्म हैं लेकिन किसी भी अन्य धर्म में "लिंग" भगवान नहीं है. और न ही अन्य किसी धर्म में चौबीसों घंटे काम वासना में लीन रहने वाला भगवान अवतार लेता है!

अन्य कथा उसके द्वारा अग्नि नामक देव के मूंह में अपना वीर्य डालने की घटना है. (स मु 2/50)

कितनी अजीब और शर्म की बात है कि हम लोग ऐसी करतूतें करने वालों को भगवान मानते हैं. अगर यह सब काम भगवान के हैं तो शैतान की तो कोई आवश्यकता ही नहीं है! जब ऐसे भगवान अवतार लेंगे तो वह ऐसे ही गुल खिलायेंगे, इस बात का प्रमाण अवतारों द्वारा किए गये कारनामे हैं. राजस्थानी भाषा में सत्य कहा गया है कि आकड़ा कै तो आकड़ा ही लागींगा. अर्थात आक के तो आक ही लगेंगे, आम नहीं. यह भी सत्य कहा गया है जैसी माटी तैसी पाटी अर्थात जैसी मिट्टी होगी वैसे ही बर्तन बनेंगे!

ब्राह्मणों के इन भगवानों के कारनामे इस प्रकार सें रहे हैं:

1. **वाराह यानि सूअर** : ब्राह्मणों का भगवान सूअर भी है, आश्चर्य नहीं!! तैतरीय संहिता (7.1.5.1)(स.मु. 4.97) के अनुसार पहले जल ही जल था. ब्रह्मा ने सूअर का अवतार लिया और पानी में घुस गया. पानी में सें उसे धरती मिली जिसे उठा कर वह बाहर ले आया. लेकिन वाराह पुराण वाले को यह कथा कुछ हज़म नहीं हुई. अतः उसने नई कहानी गढ़ी कि एक बार हिरण्याक्ष पृथ्वी को उठा कर पाताल में भाग गया. विष्णु ने अवतार लिया, सूअर बन कर पाताल में गया और धरती को उठा लाया. एक अन्य कथा के अनुसार एक बार ब्रह्मा को छींक आई तो उसकी नाक सें विष्णु सूअर बन कर निकल पड़ा. (दसवीं पहेली पृ.83)

सर्वप्रथम तो जिस जिस ने भी यह कथाएं गढ़ी हैं वह महामूर्ख रहा होगा. उसने सूअर को पानी कीचड़ में लोटते देखा होगा. उसे लगा होगा कि सूअर पानी के भीतर भी रह सकता होगा. सो उसने ब्रह्मा को सूअर बना कर जल में घुसेड़ दिया. दूसरे ब्रह्मण ने सूअर को अपनी थुथनी सें मिट्टी खोदते देखा होगा तो उसने सोचा कि सूअर ऐसे धरती खोदते हुए पाताल तक जा सकता है. सो उसने अपने विष्णु को सूअर बना कर पाताल में भेज दिया. कथाकार के दिमागी दिवालियेपन की झलक इस बात सें भी मिलती है कि उसे इतना तक पता नहीं कि पाताल भी पृथ्वी का ही हिस्सा है. अतः पृथ्वी को उठा कर कोई भी पाताल में नहीं ले जा सकता. वैसे ही जैसे घर को उठाकर कोई छत पर नहीं ले जा सकता.

खैर इस कथा में कौन से धर्म की ग्लानि हुई थी, कौन से साधु को कश्ट हुआ था, ऐसा कहीं उल्लेख नहीं है. सो गीता का कथन झूठा है कि ईश्वर किसी धर्म को बचाने के लिए अवतार लेता है. वास्तव में यह कथाएं इस बात का सबूत हैं कि ब्राह्मणों के भगवान पशुओं की तरह अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ते थे. इसलिए उनके गुट वालों ने ऐसी कहानियां गढ़नी पड़ी कि उनका भगवान दूसरों सें महान है. एक ने कहा कि उनका भगवान सूअर बन कर जल में सें धरती निकाल कर लाया तो दूसरे ने कथा गढ़ दी कि उनका भगवान सूअर बन कर धरती खोदता हुआ पाताल तक जा पहुंचा. तीसरे ने अपने ब्रह्मा को ऊँचा दिखाने के लिए यह कथा गढ़ दी कि विष्णु तो उनके भगवान की नाक सें निकली मैल सें बना सूअर मात्र है.

2. **हंस**

3. **मत्स्य अर्थात मछली** : लगता है कुछ काम ऐसे भी होते हैं जो भगवान अथवा उसका अवतार मनुष्य रूप में नहीं कर सकता. इसलिए ब्राह्मण–धर्म के भगवानों को जानवरों के रूप में जन्म लेना पड़ता है. एक कथा के अनुसार मनु पानी पी रहा था कि उसकी अंजलि (ओक) में मछली आ गई. देखते ही देखते वह मछली 1 लाख योजन लम्बी हो गई. एक योजन लगभग 8 मील अथवा 11 किलोमीटर के बराबर होती है. यानि वह मछली धरती सें चाँद की दूरी सें भी लगभग 4 गुणा लम्बी हो गई. पृथ्वी का कोई समुद्र इतना बड़ा नहीं है कि उस मछली को अपने में समा सके. तब कहां पर रही वह मछली ?

पदम पुराण के अनुसार यह कथा झूठी है. उसके अनुसार मकर नामक दैत्य वेद उठा कर भाग गया. तब विष्णु ने मछली बन अवतार लिया और मकर को मार कर वेद वापिस ले आया. इस कथा में और कुछ हो न हो इतना सत्य अवश्य है कि इस कथा की रचना तब हुई जब वेद किताब के रूप में छप गए थे. अतः यह कथा बहुत अधिक पुरानी नहीं है.

गीता की कसौटी पर इसे परखें तो इस में धर्म का कोई प्रश्न नहीं है, साधुओं तथा दुश्टों का भी कोई रोल नहीं है. अगर मकर एक किताब उठा ले गया था तो दूसरी छाप लेनी थी. आज पूरे भारत में 10 घर ऐसे नहीं होंगे जहां चारों वेद मौजूद हो और उनका पाठ किया जाता हो. बावजूद इसके लोग धार्मिक हैं. अतः वेद सें धर्म का कोई सम्बंध नहीं है. लोगों के लिए वेदों की कीमत कबाड़ की पुस्तकों सें अधिक नहीं है. मकर भी लगता है कबाड़ी था. वह भी उठा कर भागा तो कबाड़ की पुस्तकें. कबाड़ कौन रखता है घर में!!

4. **कूर्म (कछुआ)** : शतपथ ब्राह्मण (7.5.1.15) के अनुसार ब्रह्मा ने प्रजा पैदा करने के लिए कछुए का अवतार लिया. लेकिन भागवत पुराण इसे झूठ मानता है. उसके अनुसार जब देव और दैत्य समुद्र मन्थन कर रहे थे तो उनकी मथनी बना मंदर पर्वत नीचे धसने लगा तब विष्णु ने कछुए का अवतार लिया और पर्वत को ऊपर की ओर धकेल दिया. (भागवत 8.7)

सबसें पहले तो इस अवतार का झूठापन इस बात सें ही स्पश्ट हो जाता है कि किसी को यही पता नहीं है कि अवतार लिया किसने था. जिसको जो बहाना मिल गया, चिपका दिया. या फिर हो सकता है जैसे पहले दिलीप कुमार की देवदास बनी. बाद में शाहरूख खान की बनी. ऐसे ही अलग अलग कथाकारों ने अपने अपने हीरो को कछुआ बना दिया हो. और सच्चाई यही है कि अवतार किसी ने नहीं लिया.

वैसे भी इस अवतार को गीता के सिद्धांत पर परखें तो गीता का सिद्धांत एक बार फिर बकवास सिद्ध होता है. ब्राह्मणों के भगवान तो प्रजा पैदा करने आते हैं. ब्रह्मा ने अपनी बेटी सें बलात्कार करके हर प्रकार के जीव तो

पैदा कर दिए थे. कछुआ बन कर उसने कौन सी नई किस्म की जनता पैदा करनी थी, यह कथाकार ने नहीं लिखा. अपनी बेटी की इज्जत सें खेल कर कौन से धर्म की रक्षा की गई ?

5. **नरसिंह** : उपरोक्त अवतार तो ब्राह्मणों का भगवान पूरा पशु था लेकिन नरसिंह ऐसा अवतार था जो आधा पशु आधा पुरुष था. अर्थात नरपशु था. नरसिंह ने हरिण्यकश्पु की हत्या की थी. उनकी हत्या करने के दो कारण थे. पहला यह कि उनके पास असीमित धन था. सोने के पहाड़ बन जाएं इतना सोना उनके पास था. इसीलिए उनका नाम पड़ा था 'हरिण्यकश्पु' अर्थात सोने के पर्वत वाला. इसी धन पर देवों की नजर थी. ऋग्वेद आदि में ऐसे श्लोक भरे पड़े हैं जो इस बात का द्योतक हैं कि ब्राह्मणों के भगवान लूट मार का ही धन्धा करते थे. देवों का राजा इन्द्र तो विशेष रूप में इसी काम में लगा रहता था. दूसरा कारण यह था कि उन्होंने तीर्थंकर सें दीक्षा ले कर वैदिक धर्म छोड़ दिया था. अहिंसा की दीक्षा लेकर उन्होंने यज्ञों में माँस, मदिरा तथा मैथुन पर पाबंदी लगा दी थी. यज्ञ बिना माँस, मदिरा तथा मैथुन के होने लगे तो ब्रह्माणों और देवताओं को सहन नहीं हुआ. उनकी रोजी रोटी व ऐयाशी के साधन बन्द हो गये थे. अतः उन्होंने साजिश रची. अपने चिर परिचित साम दाम दंड भेद के हथियार का प्रयोग किया. वही साधन जिसे अपना कर राम ने प्रथम क्रांतिकारी समाज सुधारक महात्मा रावण की हत्या की थी. जैसे राम ने विभीशण को गद्दी का लालच दिया. वैसे ही देवों ने प्रह्लाद को गद्दी का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया.

31.05.2005 प्रह्लाद ने अपने पिता सें गद्दारी की. एक दिन शाम को जब दोनों वक्त मिलते हैं हरिण्यकश्पु पूजा घर में थे तो विष्णु शेर की खाल ओढ़ कर आया. उसने हाथों में बघनखे पहन रखे थे. प्रह्लाद उसे भीतर ले आया. उसने पूजा करते हरिण्यकश्पु पर खम्भे के पीछे छिप कर हमला कर दिया. इससें पहले कि हरिण्यकश्पु संभल पाते वह नरपशु उन्हें घसीटता हुआ बाहर दहलीज/चौखट पर ले आया. प्रजा में दहशत फैलाने के लिए उसने शाम के धुंधकले में सब के सामने उनका पेट चीर दिया. आंतें बाहर निकाल दीं. बहुत दिनों सें उसे यज्ञ में माँस नहीं मिला था. आज उस नरपशु ने जी भर कर नर माँस खाया. लोगों में दहशत फैल गई. पूरे राज्य में भय का वातावरण छा गया.

प्रह्लाद को राजा घोषित कर दिया गया. ब्राह्मणों की पुनः चल निकली. फिर सें माँस, मदिरा तथा मैथुन वाले यज्ञों का प्रचलन शुरू हो गया. शीघ्र ही प्रह्लाद को अपनी गलती का अहसास हो गया. उसने भी अपने पिता की तरह माँस, मदिरा तथा मैथुन वाले यज्ञों का विरोध करना शुरू कर दिया. नतीजा वही हुआ जो होना था. देवों और ब्राह्मणों ने प्रह्लाद के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया. युद्ध में देवों ने प्रह्लाद के पुत्र विरोचन को बन्दी बना लिया. लेकिन प्रजा देवों और ब्राह्मणों सें तंग आ चुकी थी. प्रजा ने विद्रोह कर दिया और विरोचन को आजाद करवा लिया.

विरोचन कार्तिक महीने की अमावस्या को देवों की कैद सें छूटे. **देवों में इन्द्र और असुरों में विरोचन श्रेष्ठ थे.** उस दिन लोगों ने खुशी सें घी के दीप जलाये. विरोचन राजा बन गए. लोगों को देवों और ब्राह्मणों के चंगुल सें मुक्ति मिल गई थी. फिर हर वर्ष यह पर्व मनाया जाने लगा. दीवाली अर्थात दीपावली तब सें ही कार्तिक महीने की अमावस्या को मनाई जाने लगी.

लेकिन सोहलवीं सदी में जब तुलसी ने रामचरित लिखी तो ब्राह्मणों ने कार्तिक में मनाये जाने वाली दीपावली का सम्बंध राम के बनवास वापसी सें जोड़ दिया. जबकि सच्चाई यही है कि राम अयोध्या सें **चैत्र मास में गया** था तथा 14 साल पूरे होते ही वह **चैत्र मास में ही वापिस** अयोध्या लौट आया था. कार्तिक महीने में मनाई जाने वाली दीपावली सें राम का कहीं कोई लेना देना नहीं है.

यहां एक बात और भी अपना ध्यान आकर्शित करती है कि प्रह्लाद तथा विभीशण में कई बातों की समानता थी. उदाहरणतः दोनों ही राक्षस कुल सें सम्बंधित थे. दोनों ने अपने तत्कालीन राजा सें गद्दारी की थी. दोनों अपने पिता अथवा भाई को मरवा कर गद्दी पर काबिज हुए. दोनों ने ब्राह्मण धर्मियों सें मदद ली अथवा उनके उकसाने पर गद्दारी करने को तैयार हुए.

इन दोनों में सें विभीशण तो चुपचाप कठपुतली बन कर राज करता रहा. लेकिन प्रह्लाद व उसके पुत्र विरोचन ने देवों के विरूद्ध बगावत की तथा उनसें युद्ध भी किया. फिर क्या कारण है कि ब्राह्मणों और देवताओं के विरूद्ध युद्ध करने वाले दैत्यराज प्रह्लाद के नाम पर तो लोग अपने बच्चों के नाम रख लेते हैं लेकिन विभीशण सें लोग आज भी नफरत करते हैं. उसका नाम लेना भी अपशकुन समझते हैं. जबकि अगर देखा जाए तो उसने तो ब्राह्मणों के भगवान की पत्नि को अगवा करने वाले महात्मा रावण को शहीद करवाया था. प्रह्लाद ने तो अपने पिता को मरवा कर गद्दी हथियाइ थी और बाद में उसी प्रह्लाद ने देवों और ब्राह्मणों सें युद्ध भी कर लिया था.

तब ऐसी क्या बात है कि लोग प्रह्लाद तथा विरोचन को आदर सें मानते हैं परन्तु विभीशण को बुरा मानते हैं ? इसी प्रश्न के उत्तर में ब्राह्मणवाद की सच्चाई छिपी है.

वास्तव में भारतीय समाज ने कभी भी ब्राह्मण धर्म को स्वीकार नहीं किया है. उन्होंने हमेशा श्रमण धर्म को अपनाया है. भगवन बुद्ध और तीर्थंकर की शिक्षाओं को अपनाया है. ब्राह्मणों और उनके देवों के कार्यों को कभी नहीं अपनाया गया. ब्राह्मण सें लोग इतनी नफरत करते हैं कि शुभ काम पर जाते समय ब्राह्मण के दर्शन होना

अपशकुन माना जाता है. चाहे लोग राम कृष्ण या दूसरे देवताओं का कितना भी नाम रटें उनके मन में कहीं न कहीं उनके द्वारा किये गए कुकर्म खटकते ही रहते हैं. कोई अन्य विकल्प न होने के कारण लोग इन ब्राह्मणों और उनके कुकर्मी देवताओं का भार ढोने को मजबूर हैं. पिछले हजार साल सें भारत पर इन ब्राह्मणों का वर्चस्व रहा है. भारतीय लोग धर्म के नाम पर इन लोगों द्वारा परोसा गया अधर्म हजम करने को मजबूर रहे हैं. लेकिन विरोचन के समय में लोगों के पास ऐसी मजबूरी न थी. लोगों के पास श्रमण धर्म था. देवताओं की करतूतों को उन्होंने अपनी आँखों सें देखा था. अनेकों लोग इनके भुगत भोगी भी थे.

इसीलिए देवों की कैद सें जब विरोचन के छूटे तो लागों ने घी के दीप जलाये. देवों के विरूद्ध युद्ध करने वाले प्रह्लाद को लोग सम्मानित मानते हैं. देवों की गुलामी करने वाले विभीशण को लोग आज भी गद्दार मानते हैं.

अग्नि पुराण में भी हरिण्यकश्पिु की कथा है परन्तु वहां प्रह्लाद का उल्लेख ही नहीं है. अग्नि पुराण में प्रह्लाद का उल्लेख न होना यह दर्शाता है कि भागवत पुराण में प्रह्लाद द्वारा गद्दारी करने का किस्सा बाद में जोड़ा गया है. यह भी तथ्य है कि भागवत में अधिकतर किस्से मनगढ़ंत हैं तथा बाद में जोड़े गए हैं. लेकिन प्रह्लाद ने देवों सें युद्ध किया था, यह एक अकाट्य सत्य है. देवों के विरूद्ध युद्ध करना यह दर्शाता है कि प्रह्लाद ने या तो अपने पिता सें गद्दारी की ही नहीं. और अगर उन सें भूल हो भी गई थी तो बाद में उसका पाश्चाताप कर लिया. देवों सें युद्ध करके उन्होंने अपने श्रमण धर्म का झण्डा बुलन्द किया.

लिंग पुराण (1.95) में एक अन्य किस्सा है कि शिव ने नरसिंह को मार दिया तथा उसकी खाल उतार कर अपने शरीर पर लपेट ली. यह वही खाल है जो शिव अपने शरीर पर ओढ़े रखता है अथवा बैठे हुए अपने नीचे बिछाए रहता है.

अगर नरसिंह सचमुच अवतार था तो शिव ने उसकी खाल क्यों उतार ली?

जहां तक भागवत में वर्णित कथा की सत्यता की बात है तो यह कथा अपने आप में झूठ है. कथा है कि हरिण्यकश्पिु ने तप किया तो ब्रह्मा ने उन्हें अमर होने का वर दिया. और शर्त रखी कि कोई उनको न दिन में मार सकेगा न रात में, न घर के भीतर न बाहर मार सकेगा, न धरती पर मार सकेगा न आकाश में. न पशु मार सकेगा न मनुष्य.

इसलिए विष्णु नरपशु बन कर शाम के समय आया और उसने चौखट अथवा दहलीज पर हरिण्यकश्पिु की हत्या कर दी. वास्तव मे देखा जाए तो उस समय वह नरपशु आधा मनुष्य था आधा पशु था. अगर सही कहा जाए तो शरीर सें तो वह मनुष्य था मगर दिलो दिमाग सें दरिंदा था. अतः वह मनुष्य भी था और पशु भी था. दोनों ही हालात में हरिण्यकश्पिु को न मारने योग्य.

जब उनकी हत्या की गई तब शाम का समय था. ब्राह्मण ग्रन्थों में तर्क दिया गया है कि उस समय न रात थी न दिन था. पूछा जा सकता है कि क्या कोई ऐसा समय भी हो सकता है जो दिन और रात के बाहर होता हो? पश्चिमी काल गणना के अनुसार दोपहर 12 बजे के बाद शाम का समय शुरू हो जाता है तथा रात के 12 बजे के बाद अगली सुबह का समय शुरू हो जाता है. भारतीय काल गणना के अनुसार सूर्य निकलने सें लेकर सूर्य डूबने तक दिन का समय होता है तथा सूर्य डूबने सें लेकर सूर्य निकलने तक रात का समय होता है. दिन और रात के 24 के घण्टों को तीन तीन घण्टों के 8 पहरों में भी बांटा गया है. अतः जब विष्णु ने यह नृशंश हत्या की उस समय अगर सूर्य दिख रहा था तो दिन था अगर सूर्य डूब चुका था तो रात थी. अतः ब्रह्मा के वरदान के अनुसार उनकी हत्या नहीं हो सकती थी.

जहां तक घर के अंदर या बाहर की बात है तो उन की दहलीज पर हत्या की गई. तब उनका आधा शरीर अंदर तथा आधा बाहर था. अतः वे घर के अंदर भी थे तथा घर सें बाहर भी, हर हालत में अवध्य. और घर चौखट तक ही नहीं होता है उसके आगे जो दालान होता है वह भी घर का हिस्सा होता है. हरिण्यकश्पिु सम्राट थे. अतः महल में रहते थे. हर महल के चारों ओर एक चारदीवारी अर्थात परकोटा होता है. उनका घर उस परकोटे तक था जबकि उस नरपिशाच ने उन्हें महल की चौखट पर मारा.

जहां तक ''न धरती न आकाश'' का प्रश्न है, उस नरपिशाच ने हरिण्यकश्पिु की हत्या अपने घुटनों पर लिटा कर की थी. तो क्या घुटनों पर लेटा व्यक्ति धरती पर नहीं होता? क्या जब हम बस अथवा रेलगाड़ी सें सफर कर रहे होते हैं तो क्या हम धरती पर नहीं होते? क्या छत पर बैठा व्यक्ति धरती सें जुड़ा नहीं होता. जो भी व्यक्ति जब तक धरती सें जुड़ा रहता है वह धरती पर ही रहता है. जब उसका धरती सें जुड़ाव नहीं रहता तो वह आसमान में होता है. उदाहरण के तौर पर हवाई जहाज में बैठा व्यक्ति तब तक धरती पर होता है जब तक विमान धरती पर खड़ा होता है या दौड़ रहा होता है. जैसे ही जहाज जमीन छोड़ कर हवा में उठता है, ऐसा कहा जा सकता है कि जहाज व उसमें सवार व्यक्ति आसमान में हैं. अतः जब हरिण्यकश्पिु की हत्या की गई वे धरती पर ही थे. अपने घर की छत अभी भी उनके सिर के ऊपर ही थी.

अतः इन परस्थितियों में सम्राट हरिण्यकश्पिु की हत्या दिन दिहाड़े, घर के अंदर, धरती पर एक नरपिशाच द्वारा की गई. ब्रह्मा द्वारा वर दिए जाने की कथा निरी बकवास है. जो आदमी अपनी बेटी पोती पर नीयत बिगाड़ सकता है, वह भगवान हो ही नहीं सकता. इतना नीच आदमी किसी को वर अथवा आर्शीवाद तो क्या, किसी को

बद्दुआ देने के काबिल भी नहीं होता है. ब्रह्मा जैसा नीच प्राणी, सन्त सरीखे सम्राट को कुछ दे ही नहीं सकता. यह तो बिल्कुल ऐसा है जैसे कोई कहे कि बिन बाती के दीये ने सूर्य को रोशनी दे दी !!

एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है कि सम्राट हरिण्यकश्पु का दोश क्या था कि उनकी हत्या की गई.

20.09.05 उनका कसूर मात्र इतना था कि उन्होंने ब्राह्माणों के धार्मिक कर्मकांड मानना छोड़ दिया था. उन्होंने यज्ञों में पशु बलि पर पाबन्दी लगा दी थी. किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ में ऐसा कहीं वर्णन नहीं है कि उन्होंने आम जनता को परेशान किया हो अथवा उनके राज्य में जनता दुखी रहती हो. दुख था तो मात्र ब्राह्मणों को क्योंकि सम्राट हरिण्यकश्पु उनका धर्म न मान कर वे श्रमण धर्म को मानते थे. अतः वे अपने राज्य में धर्म के नाम पर निरीह दुधारू पशुओं का कत्लेआम नहीं होने देते थे.

ब्राह्मणों को यज्ञों में मिलने वाले माँस, मदिरा तथा महिला पर रोक लग गई थी. अतः देवों को भी उनका हिस्सा पहुंचना बन्द हो गया था. दोनों पक्ष माँस, मदिरा तथा महिला के लिए छटपटाने लगे. तब उन्होंने सम्राट हरिण्यकश्पु की हत्या करने की साजिश रची. शाम के धुंधकले में जब लोग दीया बाती अथवा सन्ध्या करने लगते हैं उस समय इन लोगों ने उनकी नृशंस हत्या कर दी. दोनों वक्त मिले जब लोग भगवान का नाम लेने, धूप बत्ती करने में व्यस्त होते हैं, ब्राह्मणों और उनके देवता ने ऐसी भयंकर हत्या की कि जिस की विश्व इतिहास में कहीं कोई मिसाल नहीं मिलती! हाँ, ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसी उदाहरणें अवश्य मिलती हैं. ऐसी बेरहम हत्याएं ब्राह्मणों के ही भगवान कहे जाने वाले परशु ने जरूर की थीं जब उसने क्षत्राणियों के गर्भ में पल रहे बच्चे निकाल कर अपने परशु सें काट दिए थे!

बड़ी अजीब सी बात है कि ब्राह्मणों के अवतार ही ऐसी बेरहम हत्याएं क्यों करते थे? कृष्ण ने खांडव वन में रहने वाले नाग कबीले के समस्त स्त्री, पुरुष और बच्चों को जला कर मार डाला! परशु ने तो गर्भ में पल रहे बच्चे तक निकाल कर कुल्हाड़ी सें काट डाले! हनुमान ने पूरी लंका नगरी जला डाली जिसमें रहने वाले बच्चे, बूढ़े, स्त्रियां तथा बीमार जल कर मर गए! राम ने परशु राम को मारने के लिए तीर चढ़ाया लेकिन जब उसे पता चला कि सामने वाला भी उसके जैसा अवतार है तो उसने वह तीर दूसरे नगर पर चला दिया जहां रहने वाले सैंकडों नर नारी व बच्चे मारे गए.

6. परशुराम : इस प्राणी /दरिंदे के नाम जो कारनामे दर्ज हैं उन्हें आज भी पढ़ कर ही आत्मा थर्रा उठती है. जिन बेचारों के साथ यह बीती होगी उनका क्या हाल हुआ होगा, असोचनीय है. परशुराम का असली नाम तो लेकिन क्यों कि उसने बचपन में अपनी माँ का सिर कुल्हाड़ी सें काट दिया था तथा वह हमेशा हाथ में कुल्हाड़ी फरसा अर्थात परशु लेकर घूमता रहता था, अतः उसका नाम परशु राम पड़ गया.

परशुराम के बाप का नाम जमदग्नि तथा माँ का नाम रेणुका था. जमदग्नि को ऋचीक नामक ऋषि ने सत्यवती सें पैदा किया था. शायद परशु पहला ब्राह्मण था जिसने मनुष्य अथवा क्षत्रिय के विरूद्ध हथियार उठाया था. अन्यथा उससें पहले तो ब्राह्मण मात्र यज्ञ में निरीह पशु काटने के लिए ही हथियार उठाते थे. सबसें पहले परशुराम ने अपने बाप जमदग्नि के कहने पर अपनी माँ की हत्या की. उसकी माँ का दोश मात्र इतना था कि उसने जल में खेलते हुए दो यक्षों को देख लिया था. घर आकर उसने अपने पति को बात बताई. बस इसी सें नाराज होकर उसने अपनी पत्नि का सिर काटने का आदेश दे दिया. शेषभाईयों ने तो मना कर दिया परन्तु परशुराम ने, कहते ही, कुल्हाड़ी मार कर अपनी माँ के दो टुकड़े कर दिये. उसे एक पल के लिए भी विचार नहीं आया कि वह उसकी जन्मदायी माँ है. जितनी बेरहमी सें उसने अपनी माँ का सिर काटा, उतनी बेरहमी सें तो कसाई भी पशु नहीं काटते होते होंगे. जब परशु ने यह कत्ल किया तो उस समय वह बाल्यावस्था में था. (आप्टे) बाल्यावस्था अर्थात आठ दस बरस का था जब उसने पहला कत्ल किया.

एक बार जमदग्नि का क्षत्रिय वंश के अर्जुन सें झगड़ा हो गया. अर्जुन जमदग्नि के आश्रम में सें उसकी गाय चुरा ले गया. जमदग्नि ने अपना ऋषिपन दिखाया अर्थात अर्जुन को मार डाला. बदले में अर्जुन के बेटों ने जमदग्नि को मार दिया. तब परशुराम ने निर्णय किया कि वह धरती पर सें क्षत्रियों का नामो निशान मिटा देगा. अतः उसने अर्जुन के गांव पर धावा बोल दिया. अगर ब्राह्मण ग्रन्थों को सत्य मानें तो परशु ने अर्जुन की 100 अक्षौणी सेना अपनी कुल्हाड़ी सें काट डाली. एक अक्षौणी सेना की रचना ऐसे होती है:

(1) हाथी	:	21,870
(2) रथ	:	21,870
(3) घोड़े	:	87,480 (65,610 घुड़सवार सैनिकों के लिए तथा 21,870 रथों में जुते हुए.)
(4) हाथी सवार	:	65,610 प्रत्येक हाथी पर सवार 3 मनुष्य (1 चालक, 1 योद्धा तथा 1 सहायक) अतः 21780 हाथियों पर सवार कुल मनुष्य = 65610
(5) रथ सवार	:	65,610 प्रत्येक रथ पर सवार 3 मनुष्य (1 चालक, 1 योद्धा तथा 1 सहायक) अतः 21780 रथों पर सवार कुल मनुष्य = 65610
(6) घुड़सवार	:	65,610 प्रत्येक घोड़े पर एक सवार

(7) पैदल सैनिक 1,09,350 (अतः एक अक्षौणी में कुल मनुष्य (4)+(5)+(6)+(7) = 3,06,180)

अतः 100 अक्षौणी सेना में हुए : 21,87,000 हाथी, 87,48,000 घोड़े अर्थात कुल 1,09,35,000 (एक करोड़ नौ लाख पैंतीस हजार जानवर) तथा 3,06,18,000 (तीन करोड़ छः लाख अठारह हजार) मानव.
इस तरह सें कुल मिला कर 4 करोड़ सें अधिक जीवित प्राणियों की हत्या कर दी ब्राह्मणों के एक अवतार ने!!

ब्राह्मणों के भगवान परशु ने कुल 4 करोड़ 15 लाख 53 हजार प्राणी कत्ल किये. परशु को इतने प्राणी मारने में कितना समय लगा होगा ? अगर समय की गिनती की जाए और यह मान लिया जाए कि उसने एक मिनट में एक प्राणी की हत्या की तथा यह कत्लेआम बिना रूके चलता रहा तो परशु को इतने प्राणी काटने में 79 साल का समय लगा. अर्थात वह कातिल 79 साल तक बिना रुके इसी काम में लगा रहा. ऐसा था ब्राह्मणों का भगवान!!
जमदग्नि झगड़ालू तथा गुस्सैल था. उसने अर्जुन की हत्या की परन्तु फिर भी जन्म सें ब्राह्मण होने के कारण वह ऋषि कहलाया. उसका बेटा परशुराम क्रूर, बेरहम, बेदर्द हत्यारा था. वह अपने बाप सें भी हजार हाथ बढ़ कर था. इसलिए जहां उसका बाप तो मात्र ऋषि बन पाया, उसे ब्राह्मणों के भगवान का अवतार बना दिया गया. हैरानी और दुख होता है कि ऐसे वहशी दरिंदे को भी भगवान का अवतार माना जाता है.!!
उस दरिन्दे अवतार की खून की प्यास यहीं समाप्त नहीं हुई. इतने प्राणियों को मार कर वह क्षत्रियों का नाश करने निकल पड़ा. उसने इस पृथ्वी पर जितने क्षत्रिय मिले, बच्चे, बूढ़े, जवान, अपाहिज रोगी जो भी क्षत्रिय मिला, उसने उनकी हत्या कर डाली. उसके बाद उसने वह किया जिस दृश्य की कल्पना मात्र सें रोंगटे खड़े हो जाते हैं. उसे जितनी गर्भवती क्षत्रिय स्त्रियां मिली, उसने उनके पेट चीर डाले. और गर्भ में पल रहे बच्चों को निकाल कर अपनी कुल्हाड़ी सें काट डाला!!! कसाई में भी इतनी दया, रहम की भावना तो होती ही है कि वह गर्भवती भेड़ बकरी को नहीं मारता. लेकिन ब्राह्मणों का भगवान तो कसाई सें भी गया गुजरा निकला. उसने न केवल गर्भवती माँओं की हत्या की बल्कि गर्भ में सें निकले बच्चे भी कुल्हाड़ी सें काट डाले!!
पूरी पृथ्वी पर एक भी जीवित क्षत्रिय उसने नहीं छोड़ा. ऐसा उसने एक बार नहीं बल्कि 21 बार किया. 21 बार उसने गर्भ में पल रहे बच्चों की हत्या की. अगर परशुराम जैसे हत्यारे भगवान का अवतार हैं तो ऐसे भगवान का तो न होना ही अच्छा है. ओसामा मियां तो परशुराम के आगे वैसे ही हैं जैसे लकड़बग्घे के सामने चींटी.

परशुराम अगर अवतार है तो गीता में जो कुछ कहा गया है वह निरी बकवास है कि भगवान धर्म की रक्षा करने के लिए अवतार धारण करता है. गर्भ में पल रहे बच्चों की हत्या करने में कौन से धर्म की रक्षा हुई?
पूरे विश्व में ऐसी वीभत्स हरकत कहीं और नहीं मिलती.

परशु द्वारा विधवा बनाई गई क्षत्राणियों को सड़कों पर जाकर खड़ा होना पड़ा, वहां सें गुजरने वाले हर ब्राह्मण सें याचना करनी पड़ी कि वह उसके साथ संभोग कर ले ताकि उसके पुत्र पैदा हो सके और वह मोक्ष की हकदार बन सके. तब ब्राह्मणों ने लाचार क्षत्राणियों सें व्यभिचार/ब्लातकार किया जिसके लिए उन्हें भरपूर दक्षिणा भी मिली. ऐसा मात्र ब्राह्मण–धर्म में ही हुआ है कि किसी को ब्लातकार करने के लिए दक्षिणा दी गई हो!! यह पाप का धंधा कई दशकों तक चला क्यों कि परशु ने एक बार नहीं बल्कि 21 बार क्षत्रियों का समूल नाश किया था.

वास्तव में परशु की कहानी पुश्यमित्र शुंग की कहानी है जिसने ब्राह्मण ऋषि पतंजलि के उकसाने पर जातिय अपमान का बदला लेने के लिए ब्राह्मण पुश्यमित्र ने सम्राट वृहदर्थ की हत्या की. (समु 5.142) अतः ब्राह्मण जाति के अपमान का बदला लेने के एवज में पुश्यमित्र शुंग सरीखे हत्यारे, जिसने सम्राट वृहदर्थ का कत्ल किया, को अवतार घोषित कर दिया. पुश्यमित्र को "परशु" तथा उसके कत्लेआम को क्षत्रियों का कत्लेआम बना दिया गया. सत्ता हथियाने के बाद ब्राह्मणों ने बौद्धों को कत्लेआम किया. उस समय तक अधिकतर क्षत्रिय शूद्र घोषित नहीं किये गए थे. जैसे बौद्ध मौर्यों का अकसर 'क्षत्रिय' भी बताया जाता है वैसे ही उस समय अन्य बौद्ध भी 'क्षत्रिय' थे. अतः जब पुश्यमित्र ने बौद्धों का कत्ल किया तो उसे भगवान का अवतार बना दिया गया ताकि लोग उस कत्लेआम को भगवान का भाणा समझ लें.

7. **राम :** राम का जीवन चरित्र अध्याय 5 ''ध्वज वाहक" में दिया गया है. अगर उसके जैसा भाई-घाती, पत्नि हत्यारा, नामर्द भी भगवान का अवतार है तो ऐसे भगवान मात्र ब्राह्मणवाद में ही पैदा हो सकते हैं. गद्दी की खातिर धोखे सें बालि की हत्या, गर्भवती सीता का जंगल में फिकवाना, पूजा करते इन्द्रजीत मेघनाद की हत्या, लक्ष्मण जैसे भाई को आत्महत्या करने पर मजबूर करने, महात्मा शंबूक की निर्मम हत्या करने वाला राम कभी भगवान हो ही नहीं सकता. और तो और अंत में अपने जीवन सें तंग आकर राम ने सरयू में डूब कर आत्महत्या कर ली. क्या सारी उम्र कुंठाओं में जीकर अंत में आत्महत्या करने वाला कभी भगवान हो सकता है?

8. **कृष्ण :** कृष्ण का जीवन चरित्र अध्याय 5 ''ध्वज वाहक" में दिया गया है. उसके जैसा व्यभिचारी न कभी हुआ और न कभी होने वाला है. भूतो न भविश्यति्. दो जुआरी परिवारों में जूए में जीती सम्पत्ति को लेकर युध की नौबत आ गई. अर्जुन में कुछ मानवता बाकी थी. उसने जूए की सम्पत्ति की खातिर अपनों को मारना उचित नहीं

समझा. कृष्ण ने ऐसी पट्टी पढ़ाई, जिसे गीता कहा जाता है, कि टला टलाया युध करवा दिया. अगर महाभारत को सत्य मानें तो कृष्ण ने भारत भूमि वीरों सें खाली करवा दी. परशु ने क्षत्रिय मारे तो क्षत्राणियां सड़कों पर आ गईं, कृष्ण ने महाभारत करवा कर गोपियों को सड़कों पर ला खड़ा किया. धन्य हैं ब्राह्मणों के भगवान!!
किसी देश को युध की आग में झोंकने वाला कभी भी भगवान नहीं हो सकता! एक जुआरी परिवार के हाथों कृष्ण ने दूसरे जुआरी परिवार को मरवा कर कृष्ण ने कौन से धर्म की रक्षा की ? या फिर अपनी सगी मामी राधा सें नित्य संभोग करके कौन से धर्म स्थापित किया गया ? हाँ, उसने ब्राह्मण–धर्म अर्थात गोधर्म अवश्य शिखर पर पहुंचा दिया. कृष्ण लीलाएं पढ़ कर ऐसा अवश्य लगता है कि गोकुल मथुरा वृंदावन में शायद ही कोई स्त्री बची होगी जिस के साथ कृष्ण और उसके दल ने व्यभिचार का खेल न खेला होगा. बस यही धर्म स्थापित किया था कृष्ण ने. या फिर जो थोड़ी बहुत मानवता जुआरी अर्जुन के मन में बची थी उसका सर्वनाश किया था उसने गीता का ज्ञान देकर!!
और अगर वह भगवान का ही अवतार था तो जरासंध सें डर कर मथुरा छोड़कर क्यों भागा ?(सभा पर्व 14.67) भगवान तो सर्वशक्तिमान होता है उसे किसी सें डर कर भागने की क्या जरूरत?

9. वामन : यह तथ्य सभी जानते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में देव, दानव, असुर, राक्षस, यक्ष, आदि अनेक संस्कृतियों के लोग रहते थे. देव अथवा देवता कहे जाने वाले लोग सबसें अधिक ऐय्याश होते थे. यज्ञ करना और उसमें माँस, मदिरा तथा मैथुन का खुला प्रयोग करना, उनकी जीवनश्शैली थी. लूटमार करना उनकी दिनचर्या थी. यक्ष भी लगभग वैसे ही थे मगर वे संख्या में कम थे. असुर वे लोग थे जो शराब नहीं पीते थे. दैत्य लोग जैन अथवा बौद्ध धर्मी होते थे. दानव सरल स्वभाव के होते थे तथा दान देना उनकी दिनचर्या होती थी. जो लोग रक्ष संस्कृति को मानते थे वे रक्षक कहलाते थे जिन्हें बाद में "राक्षस" बनादिया गया. अधिकतर ब्राह्मणों की देवों सें सांठ गांठ थी. वैसे अनेक ब्राह्मण भी महात्मा रावण द्वारा स्थापित ''रक्ष संस्कृति'' को अपना कर रक्षक (राक्षस) बन गए थे.

ब्रह्मपुराण (अध्याय 73) के अनुसार बलि नामक एक महान राजा थे. उन्होंने ऐय्याश देवों को हरा कर धरती को स्वर्ग समान बना दिया था. तीनों लोकों में महाराज बलि के बराबर गुरूभक्ति, सच्चाई, बहादुरी, ताकत, त्याग और क्षमा वाला आदमी नहीं था. उनके राज्य में तीनों लोकों में कहीं कोई वैर, रोग अथवा मानसिक चिंता नहीं थी. गुंडे बदमाश, अकाल, अधर्म आदि शब्द सपने में भी सुनाई नहीं देते थे.

उपरोक्त वर्णन ब्राह्मणों के सबसें पुराने कहे जाने वाले पुराण में दर्ज है. आम लोगों ने तो सदैव माँस, मदिरा तथा मैथुन का खुला प्रयोग करने वाले देवों का विरोध किया था. ऐयाशी करते करते समय के साथ देवों की शक्ति क्षीण हो गई थी. अतः वे महाराज बलि सें सीधे युद्ध में हार गए. समस्त भूमण्डल पर मानवों का राज हो गया. ऐसे में यज्ञों के स्थान पर हवन होने शुरू हो गए. देवों का माल पानी बन्द हो गया.

जैसे नशेड़ी को एक दिन भी नशा न मिले तो वह हाय तौबा मचाने लगता है, वैसी ही हाय तौबा देवों और ब्राह्मणों ने मचानी शुरू कर दी. देव व ब्राह्मण भी विष्णु के आगे जाकर रोये. भगवान सिंह सही कहते हैं कि ब्राह्मणों का आधा साहित्य देवों की "बचाओ, बचाओ" सें भरा पड़ा है तथा बाकी आधा प्रजापति या भगवानों की कारस्तानियों सें भर पड़ा है. दुनियां की समस्त बुराइयां देवों ने अपनी रक्षा करने या असुरों को हराने के लिए पैदा की हैं.

इमानदारी व सत्य की लड़ाई में तो देव हार चुके थे मगर चालाकी और धोखाधड़ी में कोई उनका सानी न था. अतः ब्राह्मणों ने विष्णु के साथ मिल कर छल कपट सें महाराज बलि को हराने की कुयोजना बनाई. वे जानते थे कि दानव दान देने में दरिया दिल होते हैं. अतः उन्होंने दानवों की दान देने की प्रवृति का लाभ उठाने का षडयंत्र रचा. विष्णु वामन यानि बौना बन गया और वे सब दानव राज बलि के दरबार मे पहुंचे. उन सें दान मांगने का नाटक करते हुए उनको घेर लिया.

कथा के अनुसार वामन ने महात्मा बलि सें तीन कदम चलने जितनी धरती मांगी. एक कदम सें उसने धरती तो दूसरे सें आकाश माप लिया तथा तीसरे कदम पर महाराज बलि को पाताल में धकेल दिया. इस तरह विष्णु ने सोची समझी योजना के अंतर्गत महादानी बलि की हत्या कर दी. अगर आज के समय में विष्णु ऐसी योजना बना कर हत्या करता तो उसे ''कोल्ड ब्लड प्लांनड मर्डर" अर्थात ठंडे दिमाग सें सोची समझी हत्या का दोशी पाया जाता और उसे फांसी पर लटका दिया जाता. लेकिन यह तो ब्राह्मणवाद ही है जहां ऐसे हत्यारे और ब्लात्कारी भगवान बना कर पूजे जाते हैं.

पूछा जा सकता है कि महादानी महाराज बलि का दोष क्या था. उनके राज्य में कहीं कोई अनाचार नहीं होता था. **स्वयं ब्राह्मणों के ग्रन्थ इस बात की गवाही देते हैं कि उनके राज्य में सपने में भी अधर्म नहीं होता था. फिर विष्णु ने उन्हें धोखे सें कत्ल क्यों किया.** इस वामन अवतार ने तो एक सन्त की कुनियोजित हत्या करके हजारों ऐय्याशों की रक्षा की थी. कौन से धर्म की स्थापना की विष्णु ने एक सन्त सरीखे महाराजा को धोखे सें

कत्ल करके? क्या व्यभिचारी और ऐय्याश देव और ब्राह्मण साधु कहलाने के योग्य थे जिनकी खातिर उसने धोखे सें हत्या जैसा जुर्म किया.

10. **संग्राम (लड़ाई)**
11. **आदिवक**
12. **त्रिपुरारि**
13. **अंधकार**
14. **घ्वज (झंडा)**
15. **वर्त**
16. **हलाहल (जहर)**
17. **कोलाहल (शोर)**
18. **सनत्कुमार** : ब्रह्मा का पुत्र.
19. **नरनारायण : "अध्यात्मक वेश्याएं" उर्वशी सें कॉपी करो. पृ 62 आज 14.08.2006 को**
20. **कपिल**
21. **दतात्रेय**
22. **यज्ञ**
23. **ऋशभ (सांड)**
24. **पृथि**
25. **धन्वंतरि**
26. **मोहिनी** : मोहिनी को भी अवतार घोषित किया गया है जो कि एक वेश्या थी. उसने स्वयं मानती है कि वह व्यभिचारिणी तथा कुलटा स्त्री है. (भगवत 10.67.9)
27. **वेदव्यास**
28. **नरदेव**
29. **कल्कि** : वैसे तो ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं कि कलियुग के अंतिम चरण में कल्कि पैदा होगा जो बौद्धों और मलेच्छों (मुस्लमानों व अन्य धर्म के लोगों) को मार कर इस धरती पर पुनः वैदिक धर्म की स्थापना करेगा लेकिन कल्कि पुराण को सत्य मान लें तो उसने जन्म लेने सें पहले ही दो लोगों – एक दूध पिलाती माँ और उसके पांच साल के अबोध बच्चे का कत्ल कर दिया है. वह अब तक कुंभकर्ण के बेटे निकुंभ की बेटी कुथोदरी ओर उसके दूध पीते बेटे विकंज की हत्या कर चुका है. दूध पिलाती माँ की हत्या करना क्रूरतम अपराध माना जाता है जिसके लिये अदालतें मौत की सजा देती हैं. और साथ में दूध पीते बच्चे की हत्या करना तो दरिंदगी की चरम सीमा है. मानव इतिहास में शायद कभी ऐसा हुआ ही नहीं है कि कोई इतना निर्दयी भी हुआ हो कि उसने दूध पिलाती माँ और दूध पीते बच्चे की हत्या कर दी हो.

लेकिन ऐसा वहशियाना कत्ल कल्कि ने किया है. कितने शर्म की बात है कि ऐसे दरिंदे को भगवान बताया जाता है. पता नहीं जब वह सचमुच पैदा होकर मलेच्छों और बौद्धों की हत्याएं करेगा तो कितनी दरिंदगी अभी और दिखाएगा.

30. उपरोक्त सूचि के अतिरिक्त बलराम को भी अवतार बताया जाता है. बलराम हर समय शराब के नशे में धुत रहता था. कादम्बरी नामक शराब उसे खास प्रिय थी. तथा हर समय गोपियों के झुण्ड में घुसा रहता था. ऐसा लगता है कि जहां कृष्ण व बलराम रहते थे वहां की स्त्रियां वासना की पिटारियां ही थीं. उनका आचरण वेश्याओं के जैसा था. बलराम ने शराब पी कर पराई औरतों सें ऐयाशी करके कौन से धर्म की रक्षा की, सभी अनुमान लगा सकते हैं. (भागवत 10.67.9)
31. हयग्रीव यानि घोड़े की सी गर्दन वाला अर्धपशु भी उनका अवतार है. देवी भागवत के अनुसार हयग्रीव नामका एक असुर था. उसने तपस्या की और ब्राह्मा सें वर मांगा कि उसें केवल हयग्रीव ही मार सके. तब विष्णु ने घोड़े की गर्दन वाले अर्धपशु के रूप में अवतार लेकर हयग्रीव को मार डाला. (भा. सं. कोश 1002) 19.06.08

अवतारों को बनाने का वास्तविक उद्देश्य

यह तो निश्चित है कि अवतार नाम की घटना सम्भव ही नहीं है. और कभी कोई अवतार हुआ भी नहीं. अवतार एक कोरी कल्पना है जिसे सोची समझी चाल के अंतर्गत मूर्त रूप दिया गया. ब्राह्मणों द्वारा अवतारवाद का शोशा इन कारणों सें बनाया गया.

1. भगवन बुद्ध ने ब्राह्मणवाद के खोखलेपन को लोगों के सामने उजागर कर दिया था. उनके सभी कर्मकांडों की पोल जगजाहिर कर दी थी. सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म घर घर पहुंचा दिया. ब्राह्मणवाद मृतप्राय हो गया. तब

ब्राह्मणों ने सम्राट अशोक के पौत्र वृहदर्थ की हत्या कर दी तथा बौद्धों तथा भिक्षुओं का कत्लेआम किया. तब उन्होंने नरसिंह की कथा रची. लोगों पर अपना भय बनाये रखने के लिए ब्राह्मणों ने वृहदर्थ के हत्यारे को भगवान का रूप बता दिया. उनका यह प्रपंच सफल रहा.

2. अवतारवाद के प्रपंच की सफलता सें उत्साहित होकर उनमें अवतार बनाने की होड़ लग गई. जहां भी उनका काम अटकता दिखाई देता, वे एक अवतार और गढ़ देते. करते करते 21 अवतार गढ दिए गए. ब्राह्मणों के हाथ जादू की छड़ी लग गई. वे जो भी कुकर्म करना चाहते, वैसा ही अवतार गढ़ लेते. जूआ खेलने के लिए अर्जुन को नर का अवतार बना दिया, दूसरों की बहन बेटियों को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए कृष्ण का अवतार गढ़ लिया. किसी की नृशंश हत्या करने के लिए परशु का अवतार गढ़ लिया. धोखे सें मारने के लिए राम का अवतार गढ़ लिया. बलात्कार करने के लिए विष्णु साक्षात पहले ही मौजूद था. यह सूचि अंतहीन है. ब्राह्मणों ने अपना धंधा जारी रखने के लिए अपने भगवान के अवतार को वेश्या तक बना दिया.

3. ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर धंधा किया है. जैसे एक सुपर मार्किट में हर तरह के साबुन लोशन आदि मिल जाते हैं, ऐसी ही धर्म की सुपर मार्किट ब्राह्मणों ने खोल रखी है. जिस वैरायटी का भगवान चाहिए, यहां मिल जाएगा. जैसे बहु राश्ट्रीय कंपनियां ग्राहकों को लुभाने के लिए अपने उत्पादों के नित्य नये मॉडल बाजार में उतारते हैं वैसा ही इन ब्राह्मणों ने अपने धर्म की सुपर मार्किट में अवतार के नित्य नये मॉडल उतारे हैं ताकि उन का धन्धा न केवल जारी रहे बल्कि फलता फूलता भी रहे. उनके लिए नए नए अवतार गढना वैसा ही था जैसा कार, स्कूटर या घड़ियों वाली कम्पनियां नित्य नए मॉडल बाजार में उतारते हैं.

4. जैसे बहु राश्ट्रीय कंपनियों का आपस में गला-काट स्पर्धा होती है लेकिन वे सभी कंपनियां ग्राहकों सें कमाई करने में व्यस्त रहती हैं, ऐसा ही हाल इन ब्राह्मणवादियों का है. इनके ''गौड़ में ही जोड़'' नहीं है बल्कि नीचे सें ऊपर तक जोड़ ही जोड़ हैं. ब्राह्मणवाद की तीन मुख्य धाराएं हैं जो उनके तीन मुख्य देवों : ब्रह्मा विष्णु महेश पर आधारित हैं. इनके आपसी खूनी संघर्ष की कहानियां ब्राह्मण-ग्रन्थों में भरी पड़ी हैं. इन कथाओं में प्रत्येक वर्ग ने अन्य देवों के किये कुकर्मो को जग जाहिर किया. इन कथाओं को यथासंभव उपरोक्त अवतारों के साथ वर्णित किया गया है. इनके आपसी संघर्ष में ब्रह्मावादी उसी समय हार गये जब यह तथ्य उजागर किया गया कि ब्रह्मा ने कामांध होकर अपनी बेटी और पोतियों को अपनी हवस का शिकार बनाया था. शैवों और वैश्णवों में चला संघर्ष बातों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि सड़कों पर भी खूनी संघर्ष हुआ. अंत में वैश्ण्व मत वाले ब्राह्मण शिव को मुर्दो और शूद्रों का देव घोषित करने में सफल रहे. आज स्थिति यह है कि मात्र विष्णु के अवतार ही ब्राह्मण धर्म के बाजार में प्रचलित रह गए हैं. अतः अवतार की शोशेबाजी सें न केवल आम जनता को बेवकूफ बनाया गया बल्कि विरोधी पक्ष को भी मात देने का कार्य किया गया.

5. अवतार का शोशा गढने का एकमात्र कारण था कि ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को बना कर रखा जाए. अतः जितने भी अवतार गढे गए उन्होंने चाहे कुछ और किया हो या न किया हो ब्राह्माणों के चरण धोकर अवश्य पीए हैं. कृष्ण ने सुदामा के पैर धोकर पीए तो राम ने वशिष्ठ के. परशु राम तो था ही बाह्मण. ब्राह्मणों ने अवतारों सें पूजित होकर अपनी सत्ता कायम रखी. ब्राह्मणों ने अपने भगवानों की डुप्लीकेट कॉपियों अर्थात अवतारों सें ही अपनी सेवा करने की कथाएं नहीं गढी बल्कि ओरिजिनल अथवा साक्षात भगवानों सें भी अपनी सेवा की कहानियां बनाई. यहां तक कथा बनाई कि जब थोक में अवतार लेने वाले ओरिजिनल अथवा साक्षात विष्णु के भृगु नामक ब्राह्मण ने लात मारी तो विष्णु उस ब्राह्मण के पैर पकड़ कर बोला,''हे! ब्राह्मण आपको चोट तो नहीं आई.'' अतः ब्राह्मणों ने भगवान और उसके अवतार इसलिए गढे ताकि वे स्वयं को अपने भगवान सें भी बड़ा घोषित कर सकें.

6. ब्राह्माणों ने कोई भी अवतार वैश्य या शूद्र कुल में पैदा हुआ नहीं बनाया. सभी अवतार ब्राह्माण अथवा क्षत्रिय कुल में पैदा किए गए. यहां तक कि उन्हें गंदगी खाने वाला सूअर तक बना दिया गया परन्तु उन्हें शूद्र और वैश्य नहीं बनाया गया. इसका एकमात्र कारण था कि समाज के इन दो मुख्य धाराओं को ब्राह्माण अपने जूते तले दबा कर रखना चाहते थे. ये अवतार क्यों कि ब्राह्माणों और क्षत्रियों में ही पैदा हुए, इसलिए वैश्य और शूद्र समाज इन दो वर्णो को ही सर्वोच्च मानता रहा. क्षत्रियों का समूल नाश ब्राह्माण परशु ने कर दिया था. अतः कुल मिला कर ब्राह्माण ही धर्म की सत्ता पर काबिज बने रहे. अतः अवतार गढने की उनकी स्कीम आशा सें बढ़ कर कारगर सिद्ध हुई.

7. ब्राह्मण-धर्म को केवल बौद्ध धर्म ने सफलता पूर्वक चुनौती दी थी. धर्म के नाम पर जो कुकर्म ब्राह्मण कर रहे थे, बौद्ध धर्म के कारण उन्हें वे सब बन्द करने पड़े. लेकिन जैसे ही अशोक सम्राट के पौत्र वृद्रहथ की हत्या करके ब्राह्मण सत्ता पर काबिज हुए, उन्होंने बौद्धों को असुर और दैत्य कहना शुरू कर दिया. तब ब्राह्मणों ने अपने सभी अवतारों की रचना बौद्धों को मारने लूटने के लिए की. सभी अवतारों ने मात्र बौद्धों का दमन किया.

8. इन अवतारों के साथ साथ इन ब्राह्मणों ने काली, भैरवी, भैरव, ... आदि देवी देवताओं की कल्पना भी कर डाली जो मॉस और शराब का भक्षण करते थे. अतः लोगों ने इन देवी देवताओं पर मॉस और शराब का प्रसाद चढ़ाया. और इस मॉस और शराब पर इन ब्राह्मणों ने मस्ती की. साथ में उन्होंनं शिव को लिंग बना दिया. अतः अवतार के शोशे सें ब्राह्मणों का मॉस, शराब और शबाब का धन्धा बेरोक टोक चलने लगा.

9. ब्राह्मणों ने लगभग सभी अवतार इस ढंग सें गढे कि उनका गोधर्म भी बेरोकटोक चलता रहे. उन्होंने लगभग सभी अवतार अवैध सम्बंधों सें पैदा हुए बनाए. उदाहरणतः राम ऋश्यश्रृंग नामक ब्राह्मण ऋषि द्वारा कौशल्या के पैदा किया गया, हनुमान को उसकी माँ अंजनि ने पवन सें वयभिचार करके पैदा किया. वेद व्यास भी एक ब्राह्मण ऋषि द्वारा किए गए बलात्कार की उपज है. इस तरह हरामी अथवा अवैध अवतार गढ कर ब्राह्मणों ने आम लोगों को यह संदेश दिया कि व्यभिचार करना भी धर्म का ही अंग है तथा ब्राह्मणों सें किये गए व्यभिचार सें तो भगवान पैदा होते हैं. अतः हरामी अवतारों की आड़ में उन्होंने अपनी हवस मिटाने का रास्ता खोज निकाला.

10. ब्राह्मणों ने लगभग सभी अवतारों की ऐसी कथाएं गढी कि इन अवतारों ने ब्राह्मणों को दोनों हाथों सें धन दिया. फलतः लोगों ने भी ब्राह्मणों को खूब धन दिया. उनके मंदिर, उनके यज्ञ तथा उनके अन्य कर्मकांड धन कमाने का साधन बन गए. ब्राह्मणों के सबसें कामांध अवतार कृष्ण ने न केवल ब्राह्मणों को राधिकाएं सप्लाई करवाईं बल्कि उन्हें प्रचुर मात्रा में धन भी दिलवाया. इसीलिए जब अहमदाबाद के नटवर लाला शाम लाल मंदिर के प्रधान गोसाईं महाराज के यहां छापा पड़ा तो उसके पास सें 74 लाख की नकदी और सोना मिला. यह सन 1976 की बात है. आज के हिसाब सें यह रकम लगभग 20–25 करोड़ रूपए बैठती है. इतना ही नहीं उसके पास सें गोधर्म की अनेकों वस्तुएं भी मिली. जैसा उनका भगवान वैसा उसका चेला. (समु 4.98)

11. अवतारवाद के सिद्धांत ने भारत भूमि को विदेशियों की गुलाम अवश्य बना दिया. जब भी लुटेरों ने हिन्दुओं पर हमला किया, उनके धन माल को लूटा, उनकी बहन बेटियों को अगवा किया, यहां के लोग भगवान के अवतार लेने की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे. उन्हें ब्राह्मणों ने विश्वास दिलाया हुआ था कि जब जब भी धर्म की ग्लानि होगी, भगवान उन्हें बचाने आएगा. (समु 6.162) यहां तक कि जब सोमनाथ का मंदिर लूटा जा रहा था तो हिन्दू दूर खड़े आकाश की ओर देख रहे थे कि अभी भगवान आएगा और गजनवी को मार भगायेगा. वहां हिन्दुओं की इतनी भीड़ जमा थी कि अगर वे हमलावरों के ऊपर गिर ही पड़ते तो भी हमलावर पिस कर मर जाते! मगर उनको तो ब्राह्मणों की गीता पर विश्वास था कि धर्म को बचाने भगवान आएगा.

12. अवतार घढ़ने का सबसें मुख्य कारण था गोधर्म. जब भगवान भी हरामी हो सकते हैं तो आदमी का तो क्या है.

अंत में लिखना है ''क्या गीता वास्तव में कृष्ण द्वारा अर्जुन को कही गई थी.'' असल में यह सिकन्दर द्वारा अपने सैनिकों को दिया गया भाशण था.

10.1.2 आत्मा का सिद्धांत

गीता में आत्मा के बारे में कही गई बातें इस प्रकार सें हैं:

1. जो असत् है वह स्थाई नहीं है. जो सत् है वह अविनाशी है. ऐसा तत्वदर्शियों ने प्रकृति के अध्ययन सें निश्कर्श निकाला है. (2.16)

2. जो सारे शरीर में व्याप्त है तू उसे अविनाशी मान. उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता. (2.17)

3. उस अविनाशी, अप्रमेय (जिसका आकार मापा न जा सके) द्वारा धारण किया शरीर का नाश अवश्य होगा. इसलिए हे, अर्जुन तू युद्ध कर. (2.18)

4. जो इसको मरने वाला मानता है अथवा जो इसको मारने वाला मानता है वह दोनों नहीं जानते कि यह न मरता है और न मारा जाता है. (2.19)

5. यह न कभी जन्म लेता है और न कभी मरता है. इसने न कभी जन्म लिया है और न कभी जन्म लेगा. यह अजन्मा, अपरिवर्तनीय, स्थायी और पुरातन है. शरीर को **मारने** पर भी यह नहीं मारा जाता. (2.20)

6. जो इसे अविनाशी, अजन्मा, अपरिवर्तनीय, स्थायी जानता है वह भला कैसे किसी को मार अथवा मरवा सकता है. (2.21)

7. जिस प्रकार नर फटे पुराने वस्त्र त्याग कर नए वस्त्र ग्रहण करता है, उसी प्रकार देही जीर्ण (वृद्ध और व्यर्थ) हुए शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करता है. (2.22)

8. इसे कोई शस्त्र छेद नहीं सकता, न आग जला सकती है, न पानी गीला कर सकता है और न ही हवा इस को सुखा सकती है. (2.23)

9. इसे न तोड़ा जा सकता है, न जलाया जा सकता है, न घोला जा सकता है, न सुखाया जा सकता है. यह नित्य, **सर्वगत,** अविकारी, **अचल** तथा सदा एक सा रहने वाला है. (2.24)

10. यह अव्यक्त, अकल्पनीय और अविकारी कहलाता है. अतः इसे अच्छी तरह समझ कर तुझे इसकी चिन्ता नहीं करना चाहिए. (2.25)

11. यदि तू इसे सदा जन्म लेने वाला तथा हर बार मरने वाला मानता है तो भी तुझे इसकी चिन्ता नहीं करना चाहिए. (2.26) और लड़ाई करनी चाहिए.

12. जिसने जन्म लिया वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका जन्म अवश्य होगा. अतः अपने अटल कार्य करने पर तू शोक न कर. (2.27)

13. सारे प्राणी शुरू में अप्रकट होते हैं. बीच में प्रकट होते हैं. निधन होने पर फिर अप्रकट हो जाते हैं. अतः इसमें दुःख की कोई बात नहीं है. (2.28)

14. कोई इसके बारे में हैरानी सें देखता है, कोई हैरानी सें बताता है, कोई हैरानी सें सुनता है परन्तु **कोई कभी भी कुछ नहीं समझ पाया.** (2.29)

15. सब की देह में जो देही है उस का कोई वध नहीं कर सकता. अतः तुझे किसी भी जीव के लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए. (2.30)

उपरोक्त शलोकों का अर्थ वैसा ही किया गया है जैसा कि इस्कॉन के ए सी पी ने ''गीता..यथारूप'' में किया है. उसने अपनी पुस्तक में प्रत्येक संस्कृत शब्द का हिन्दी में अर्थ भी दिया है तथा साथ में पूरे श्लोक का भावार्थ भी दिया है. लेकिन जैसा कि अक्सर ब्राह्मण ''लेखक'' करते आए हैं उसने भी कई स्थानों पर भावार्थ तोड़ मरोड़ कर किए हैं. उदाहरण के लिए श्लोक 2.29 में शब्दों का अर्थ देते हुए उसने ''कोई'' शब्द का प्रयोग एक बार किया है (जैसा कि ऊपर दिया गया है) लेकिन भावार्थ में उसने ''कोई कोई'' कर दिया. इससें पूरी बात का अर्थ ही बदल गया. जहां उसने शब्दार्थ भी गलत किए हैं वहां हमने आप्टे कृत संस्कृत शब्दकोश का सहारा लिया है.

सर्वप्रथम तो उपरोक्त श्लोकों में ध्यान देने योग्य बात है कि इनमें कहीं भी ''आत्मा'' नाम का शब्द नहीं आया है. सत् असत् सें शुरू करके गीताकार देहि पर ही अटक जाता है. शेषगीता में भी आत्मा नाम का शब्द नहीं आया है. आत्म शब्द अगर कहीं आया है तो "Self" अर्थात ''स्वयं'' ''निज'' के लिए आया है. अतः यथार्थ में गीता का आत्मा सें कोई लेना देना नहीं है. लेकिन ब्राह्मणवादियों ने इस देहि को ही आत्मा बना दिया है.

गीता में दिये गए आत्मा के इन सिद्धांत को दो कसौटियों पर परखा जा सकता है:

1. संदर्भ की कसौटी पर

2. सत्यता की कसौटी पर

1. **संदर्भ की कसौटी परः** गौतम बुद्ध का कथन है कि कोई भी बात तब तक सत्य नहीं मानी जा सकती जब तक कि उसे सत्य सिद्ध न किया जाए. किसी भी बात अथवा सिद्धांत की सत्यता परखने के लिए यह जानना जरूरी होता है कि वह बात अथवा सिद्धांत को कब, कहां और क्यों प्रतिपादित किया गया. समय और स्थान के अनुसार सिद्धांत की एप्लीकेशन में अंतर आता है.

उदाहरणतः ''सदा सत्य बोलना चाहिए, झूठ कभी नहीं'' एक सर्वमान्य सिद्धांत है. कोई भी धर्म सदा सत्य की जगह, सदा झूठ बोलने की शिक्षा नहीं दे सकता. लेकिन यह सिद्धांत भी हर जगह पर अपनाया नहीं जा सकता. समय और स्थान के अनुरूप यह सिद्धांत भी सत्य अथवा झूठा हो सकता है. अगर कोई सैनिक अधिकारी दुश्मनों के कब्जे में आ जाए तो वह वहां सभी कुछ सत्य नहीं बता सकता कि कौन सा हथियार कहां रखा है अथवा सेना की रणनीति क्या है आदि.

ऐसे ही माना जाता है कि सुबह की सैर और कसरत लाभदायक होती है लेकिन यह सिद्धांत भी सभी के लिए सत्य नहीं है. जो आदमी बुखार सें पीड़ित हो अगर वह सैर को जाएगा तो और ज्यादा बीमार हो जाएगा. सुबह के समय गहरी धुन्ध में घूमने सें दमा और अधिक बढ़ जाता है. ऐसे ही किसी मरियल व्यक्ति को ''पहलवान'' कह कर संबोधन करने का अर्थ यह नहीं हो जाता कि वह व्यक्ति वास्तव में ही पहलवान है.

इसी तरह आत्मा और इसका सिद्धांत सत्य है अथवा नहीं इनको कसौटी पर परखने सें पहले यह जानना जरूरी है कि गीता में आत्मा का सिद्धांत कब, क्यों, कहां दिया गया.

एक पल के लिए अगर महाभारत की कथा को सत्य मान लिया जाए तो गीता उन बातों का संग्रह है जो कृष्ण ने अर्जुन सें तब कहीं जब उसने धन के लिए अपने गुरू, दादा, मामा नाना भाई भतीजों को मारने सें इन्कार कर दिया था. अर्जुन ने अपने सगे सम्बंधियों के खून सें सने धन को प्राप्त करने की जगह भीख माँग कर जीना अधिक उचित समझा था. कृष्ण के बार बार उकसाये जाने पर उसने यहां तक कह दिया था कि **हम सब** मिल कर महापाप करने जा रहे हैं. पता नहीं क्यों कृष्ण इस पूरे खानदान को नष्ट करने पर तुला हुआ था. उसने अर्जुन को लड़ने मरने को उकसाया. स्वर्ग तथा राजभोग का लालच भी दिया. इसी कड़ी में उसने आत्मा का पैंतरा भी अपनाया. उसने अर्जुन सें कहा कि असली चीज तो देहि (आत्मा) है, शरीर तो तुच्छ है. वह जिसे भी

मारेगा केवल शरीर मारेगा. आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है, न घिसती है और न ही आग पानी हवा सें प्रभावित होती है. शरीर ने तो वैसे भी मर ही जाना है इसलिए तू ही मार दे.

यहां सें आगे लिखना है हस्ताक्षर कुलदीप 17.10.2005

गीता का तथाकथित ज्ञान एक गुरू द्वारा शिश्य को दिया गया ज्ञान नहीं है बल्कि यह तो अर्जुन को लड़ाई करने के लिए उकसाये जाने की बातें मात्र हैं. कृष्ण ने उपरोक्त 15 श्लोकों में जो कुछ कहा उसका ध्येय अर्जुन को ज्ञान देना नहीं था बल्कि येन केण प्राकरेण उसे लड़ाई की आग में झोंकना मात्र था. उपरोक्त समस्त श्लोकों का सार मात्र इतना ही है कि लड़ाई में किसी को मार देने सें मात्र उसका शरीर मरता है. आत्मा पर हथियार का असर नहीं होता. अतः जब लड़ाई का अवसर आ जाए तो मरने और मारने सें बिल्कुल भी नहीं झिझकना चाहिए.

कृष्ण ने न कभी इस घटना सें पहले और न कभी इस घटना के बाद अर्जुन सें ''आत्मा'' के बारे मे बातें कीं. मात्र लड़ाई करवाने की नीयत सें उसने गीता के 700 श्लोक बोले. लड़ाई करवाने की लालसा के कारण जो अनाप शनाप उसके मन में आया उसने कह डाला. इसीलिए ब्राह्मणवाद के महान समर्थक राधाकृष्णन् को भी यह कहना पड़ा कि गीता बड़ी असंगत सी पुस्तक है.

उपरोक्त 15 श्लोकों में भी उसने ऐसी ही असंगत बातें की हैं. श्लोक 2.24 में वह आत्मा को ''सर्वगत'' और ''अचल'' दोनों एक साथ बता देता है. कोई भी वस्तु ''सर्वगत'' अर्थात हर जगह जाने वाली और ''अचल'' अर्थात अपनी जगह सें न हिलने वाली, एक साथ कभी नहीं हो सकती!! जो अचल है वह कहीं जा नहीं सकती और जो हर जगह जाने वाली है वह अचल नहीं हो सकती. लगता है अर्जुन द्वारा लड़ने सें इंकार करने पर कृष्ण के दिमाग पर गहरा आघात लगा. तभी वह ऐसी बहकी बहकी बातें करने लग गया. इसी कड़ी में अपने मन की बात साफ करते हुए वह बोला (2.26) हे अर्जुन, अगर तू आत्मा को शरीर की तरह ही जन्म लेने वाला और मरने वाला मानता है तो भी तू सामने खड़े तेरे सम्बंधियों को मार दे क्योंकि जिस ने जन्म लिया उसने मरना तो है ही. इसलिए उन्हें तू ही मार दे.

अतः संदर्भ के लिहाज सें कृष्ण का एकमात्र उद्देश्य अर्जुन के हाथों उसके गुरू, दादा व अन्य रिश्तेदारों को मरवाना था. इसीलिए जब आत्मा के विषय में किये गए अनर्गल भाशण का अर्जुन पर कोई असर न हुआ तो वह तुरंत बोला हे अर्जुन क्षत्रिय के लिए लड़ने मरने के अवसर बहुत कम आते हैं. अतः जब भी लड़ने मरने के अवसर मिले उन्हें खोना नहीं चाहिए क्योंकि उस समय स्वर्ग के दरवाजे खुल जाते हैं. अतः अगर लड़ाई में मर गया तो स्वर्ग जाएगा और अगर जीत गया तो यहां ऐश करेगा.

''आत्मा'' पर की गई अनर्गल वार्ता असफल होते देखकर कृष्ण ने उसे यहां तक कह दिया कि अगर वह नहीं लड़ेगा तो लोग उसे कायर कहेंगे और कायर कहलवाने सें तो मरना ही अच्छा है. और अगर उसने बिना सोचे समझे लड़ाई में अपने गुरू, दादा आदि को मार भी दिया तो भी उसे पाप नहीं लगेगा. (2.34–38)

उपरोक्त सारे श्लोक कहने का कृष्ण का एक ही मकसद था कि किसी तरह सें भी अर्जुन अपने रिश्तेदारों को मारने के लिए तैयार हो जाए. वह बार बार अर्जुन को समझा रहा था कि शरीर को तो कभी न कभी मरना ही है आत्मा कभी नहीं मरेगी. उस पर किसी हथियार का असर नहीं होगा अतः अगर वह अपने रिश्तेदारों को मार भी देगा तो भी उनकी आत्मा तो मरेंगी नहीं शरीर ने तो देर सवेर वैसे भी मर जाना है अतः तू ही मार दे. फिर आत्मा तो बुढ़े शरीरों को त्यागना ही है अगर तेरे मारने सें त्यागेगी तो उसे उन्हें जल्दी सें नया शरीर मिल जाएगा.

कृष्ण ने सोची समझी चाल के तहत यह कहा कि आत्मा बूढ़े हो चुके शरीरों को त्याग कर नये नवेले शरीर धारण कर लेती है और अगर वह अपने बुजुर्ग रिश्तेदारों को मारेगा तो उसे पाप नहीं लगेगा. कृष्ण द्वारा ऐसा कहने का मकसद था कि अर्जुन को ऐसा लगे कि अगर वह अपने बुजुर्ग रिश्तेदारों को मारेगा तो वह पाप करने की बजाए पुण्य का काम करेगा क्योंकि ऐसा करने पर उसके बुजुर्गों की आत्माओं को नए नवेले शरीर मिल जाएंगे. अर्जुन द्वारा हथियार पटकने का एकमात्र कारण यही था कि वह अपने बुजुर्ग हो चुके गुरू, दादा, मामा, नाना आदि को नहीं मारना चाहता था. अर्जुन अपने उस दादा की हत्या नहीं करना चाहता था जिसकी गोद में बैठ कर वह इतना बड़ा हुआ था. नही वह अपने गुरू द्रोण को मारना चाहता था जिसने उसे सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाने के लिए वीर एकलव्य का अंगूठा काट लिया था. अर्जुन कृत्घन नहीं बनना चाहता था. लेकिन उसकी एक न चली.

गीता में एक भले आदमी के हाथों उसके सगे सम्बंधियों को मरवाने की साजिश के मन्त्र हैं. जैसे सम्राट अशोक को सही राह दिखाने वाले बौद्ध भिक्षु मिल गये थे अगर ऐसा ही कोई अर्जुन को मिल गया होता तो लाखों नर नारियों की जान बच गई होती. गीता का भड़काऊ भाशण देकर कृष्ण ने वर्शों बाद सही राह पर आए अर्जुन को पुनः पाप के मार्ग पर धकेल दिया.

सत्यता की कसौटी पर : जिन हालातों में अथवा जिस संदर्भ में कृष्ण ने अर्जुन सें गीता में वर्णित बातें कहीं उससें तो यही जाहिर अथवा स्पश्ट होता है कि कृष्ण का एक मात्र उद्देश्य अर्जुन को युद्ध की आग में झोंकना था. उसका अर्जुन को ज्ञान देने जैसा कतई इरादा न था. कृष्ण बस इतना चाहता था कि अर्जुन लड़ने मरने को तैयार हो जाए आत्मा को चाहे माने या न माने कृष्ण को कोई अंतर नहीं पड़ता था. इतना ही

नहीं बल्कि जो कुछ उसने ''आत्मा'' के बारे में कहा, उसमें भी कहीं कोई सच्चाई नहीं है. इस तरह सें कृष्ण ने न केवल अनुचित समय पर बातें कहीं बल्कि झूठ बातें भी कहीं.

गीता के उपरोक्त श्लोकों में आत्मा के विषय में निम्नलिखित सिद्धांत दिये गए हैं:

1. आत्मा जो कि सारे शरीर में व्याप्त है उसे कोई नहीं मार सकता.
2. आत्मा अविनाशी है. यह न जन्म लेता है न मरता है. (तो यह आत्मा शरीर में घुसती किधर सें है और निकलती किधर सें है. अगर 9 द्वारों सें आना जाना है तो कभी भी निकल जानी चाहिए तथा कभी भी वापिस आ जानी चाहिए.)
3. शरीर के मारे जाने पर भी आत्मा नहीं मारी जाती.
4. जैसे मनुष्य फटे पुराने कपड़े उतार कर नए कपड़े पहन लेता है वैसे ही आत्मा जीर्ण शरीर त्याग कर नवीन शरीर धारण कर लेता है. (इस श्लोक में कोरी बकवास की गई है. अगर जैसे मनुष्य जीर्ण होने पर कपड़े बदलता है वैसे ही आत्मा जीर्ण होने पर शरीर का त्याग करती है तब तो कोई भी जवान मरना ही नहीं चाहिए था. कोख सें जन्म लेते ही बच्चा बिल्कुल नवीन शरीर वाला होता है मगर फिर भी अनेकों बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हैं. उनका शरीर जीर्ण तो क्या पुराना भी नहीं हुआ होता है. और ऐसे भी असंख्य उदाहरण हैं जहां लकवा मारा व्यक्ति कई बरसों तक बिस्तर पर पड़ा रहता है मगर उसके शरीर सें आत्मा नहीं निकलती. हर गली मौहल्ले में ऐसे अनेकों वृद्ध मिल जाएंगे जो उठने बैठने सें भी लाचार होते हैं उन्हें आंखों सें दिखता नहीं कानों सें सुनता नहीं मगर बरसों तक उनकी आत्मा शरीर सें नहीं निकलती. और वीर लाल बहादुर शास्त्री जैसे भी होते हैं कि रात को स्वस्थ सोते हैं मगर सुबह मृत पाए जाते हैं.)
5. आत्मा पर किसी अस्त्र, आग, पानी, हवा का कोई असर नहीं होता.
6. (आज 14अक्तूबर 2005 है. 49 साल पहले बाबा साहिब ने नागपुर में धम्मचक्र चलाया था) यह **सर्वगत**, अविकारी और **अचल** है.
7. हर कोई आत्मा के बारे में सुन कर हैरान होता है लेकिन कोई भी इस के बारे में समझ नहीं पाया है.
8. जो आत्मा को अविनाशीी, स्थाई और पुरातन मानता है अगर वह किसी को मार दे अथवा मरवा दे तो भी उसने न किसी को मारा है और न ही किसी को मरवाया है क्योंकि आत्मा तो मर नहीं सकती.
9. अगर कोई आत्मा को शरीर की तरह बार बार जन्म लेने वाला और बार बार मरने वाला मानता है तो भी उसे इसके बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि जो जन्मा है उसने मरना तो है ही. अतः लड़ाई में किसी को मार देने सें कोई अन्तर नहीं पड़ता है.
10. अगर कोई ऐसा माने कि आत्मा जन्म लेने वाला तथा मरने वाला है तो भी उसे लड़ने मरने सें नहीं झिझकना चाहिए क्यों कि अगर आत्मा लड़ाई में नहीं मरी तो भी वैसे भी तो उसे मर ही जाना है.

1.

महाभारत, कृष्ण अर्जुन आदि सत्य हों या न हों लेकिन यह शत प्रति शत सत्य है कि सदियों सें ब्राह्मण गीता के इसी पाखण्ड की आड़ में दोनों हाथों सें सुरा, सम्पत्ति और स्त्री का भोग करते आ रहे हैं. ब्राह्मणों के सारे कर्मकांडों की जड़ आत्मा ही है. ब्राह्मणवाद सें ''आत्मा'' का पाखण्ड निकल जाए तो शेषकुछ बचेगा ही नहीं. उनकी रोजी रोटी ही समाप्त हो जाएगी. अस्तु.

इन श्लोकों पर टिप्पणी करने सें पहले यह बताना भी उचित है कि इन श्लोकों का अर्जुन पर कोई असर न हुआ. उसने अपनों को मारने के लिए हथियार न उठाए. इसलिए अगले कुछ श्लोकों में कृष्ण ने उसे नपुंसक क्षत्रिय होने का ताना भी दिया. युद्ध करने पर धरती का राज्य अथवा स्वर्ग मिलने का लोभ भी दिया. अतः कृष्ण द्वारा आत्मा पर भाशण देने का असली उद्देश्य मात्र इतना ही था कि अर्जुन किसी भी तरह सें युद्ध करने और अपनों को मारने के लिए तैयार हो जाए. कृष्ण का अर्जुन को ज्ञान देने का कतई कोई उद्देश्य न था.

इसके में निम्न बातें कही गईं हैं.

1.

गरूड़ पुराण कहता है कि मरने के बाद आत्मा 10 दिन तक घर में ही रहती है.(समु 1.28) लेकिन कृष्ण कहता है कि जैसे आदमी कपड़े बदलता है, आत्मा भी वैसे ही एक शरीर सें निकल कर दूसरे शरीर में घुस जाती है. ( )

यजुर्वेद (अ.39 मंत्र 5,6) के अनुसार आत्मा एक शरीर सें निकल कर इधर उधर घूम कर दूसरे शरीर में प्रवेश करता है. इस श्लोक पर दयानंद ने अपनी व्याख्या इस प्रकार सें दी हैः एक शरीर सें निकल कर आत्मा को पहले दिन में सूर्य, दूसरे दिन में अग्नि, तीसरे दिन में वायु, चौथे दिन में महीना, पांचवे दिन में चन्द्रमा, छठे दिन में वसन्त आदि ऋतु, सातवें दिन में मनुष्य आदि प्राणी, आठवें दिन में सूत्रात्मा वायु, नौवें दिन में प्राण, दसवें दिन में उदान, ग्यारहवें दिन में बिजली तथा बाहरवें दिन में सब दिव्य गुण प्राप्त होते हैं. तब आत्मा अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय में जाकर शरीर धारण करके जन्म लेती है. (यजु. भाश्य)
वृहदारण्यक उपनिषद (अ.4 ब्रा.4) के अनुसार जैसे घास का जलायुका (एक प्रकार का कीड़ा) एक तिनके सें दूसरे तिनके पर जाने के लिए पहले तिनके के अंतिम छोर पर पहुंच कर दूसरे तिनके पर अगले पांव जमाने के बाद पिछले तिनके को छोड़ता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को तभी छोड़ती है जब वह दूसरे नये शरीर का आश्रय ग्रहण कर लेती है.
इन दोनों में सें कौन झूठा है, कौन सच्चा, कोई नहीं जान सकता! क्योंकि न तो किसी ने आत्मा को 12 दिन घूमते देखा है और न ही किसी ने उसे जलायुका की तरह एक तिनके सें दूसरे तिनके पर पैर जमाते देखा है. हर ब्राह्मण अपनी अपनी हांक रहा है या अपने भगवानों सें हंकवा रहा है.

10.1.3 कर्म का सिद्धांत

गीता के बारे में जो सर्वाधिक प्रचारित बात है वह है इस में सें निकाला गया कर्म का सिद्धांत. गीता रचियता ने ऐसा कोई कर्म का सिद्धांत देने की कोशिश नहीं की थी जैसा कि ब्राह्मणवादी लोग उसमें सें अर्थ निकालते हैं. वास्तव में, अगर महाभारत को सच माना जाए तो अर्जुन ने जूए की सम्पत्ति की खातिर अपने गुरू, भाई बन्धुओं व अन्य रिश्तेदारों को मारने सें इन्कार कर दिया था तब कृष्ण ने उसे बरगलाने की कोशिश में यह बात कही थी कि उसे अपना काम (क्षत्रिय होने के कारण लोगों सें लड़ाई) करना चाहिए, फल चाहे कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए.

कर्म के सिद्धांत की जो व्याख्या तिलक जैसे लोग करते हैं वह बिलकुल वैसे ही है जैसे एक प्रसिद्ध ब्राह्मण कवि के बारे में कथा बताई जाती है. कथा है कि एक राजकुमारी को शास्त्रार्थ करने का शौक था. उसने शास्त्रार्थ में अनेकों बार ब्राह्मणों को हरा दिया था. हारे हुए ब्राह्मणों ने उससें बदला लेने के लिए एक मूर्ख ब्राह्मण कवि को पकड़ा. उससें कहा गया कि अगर वह बोले नहीं तो उसे भरपेट लड्डू खाने के लिए दिये जाएंगे तथा राजकुमारी सें शादी भी करवा दी जाएगी. ब्राह्मण कवि राजी हो गया. राजकुमारी सें कहा गया कि पंडित का मौन व्रत है अतः वह बोलेगा नहीं बल्कि इशारों सें बात बताएगा. शास्त्रार्थ शुरू करते हुए राजकुमारी ने एक अंगुलि उठाई कि परमात्मा एक है. पंडित ने सोचा कि वह उसकी एक आँख फोड़ना चाहती है. उसने बदले में दो अंगुलियां उठाईं कि वह उसकी दोनों आँखें फोड़ देगा. पंडितों ने इसकी व्याख्या दी कि चाहे भगवान एक है लेकिन संसार में अच्छाई और बुराई दो शक्तियां हैं. राजकुमारी ने तीन अंगुलियां उठाईं कि ऐसे तो तीन तत्व हैं– सत्व, रजस एवं तमस. मूर्ख पंडित ने फिर सें तीन की बजाए चार अंगुलियां उठादीं कि अगर वह तीन मारेगी तो वह चार मारेगा. पंडितों ने व्याख्या दी कि चाहे तत्व तीन हैं लेकिन महाभूत चार हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु. राजकुमारी ने पाँचों अंगुलियां दिखाई कि इन चार महाभूतों के अतिरिक्त चेतना भी आवश्यक है. मूर्ख पंडित ने सोचा कि वह उसके थप्पड़ मारना चाहती है. अतः उसने घूंसा तान दिया. पंडितों ने व्याख्या दी कि चाहे ये पाँच तत्व हैं लेकिन जब तक यह इक्कठे न हों प्राणी का निर्माण नहीं होता. इस व्याख्या के आगे राजकुमारी ने अपनी हार स्वीकार कर ली.

कुछ ऐसी ही व्याख्या गीता के सिद्धांतों विशेषतः कर्म के सिद्धांत की की जा रही है. **गीता में निश्काम भाव सें काम करने की बात कहीं नहीं कही गई है.** बल्कि कृष्ण ने तो स्पश्ट कहा कि हे अर्जुन तू लडाई कर. अगर जीत गया तो हस्तिनापुर का राज मिलेगा और अगर मारा गया तो स्वर्ग मिलेगा. (2.37) निश्काम भाव अथवा बिना फल की इच्छा के काम करने की बात पूरी गीता में कहीं नहीं मिलती. हां, बिना सोचे समझे अथवा बिना फल की परवाह करने की शिक्षा अवश्य मिलती है. यह व्याख्या तो घूंसे को "पाँच तत्वों का संगम" बताने वाली बात के समान है.

गीता सें निकाले गए कर्म के सिद्धांत की विवेचना के लिए इन तथ्यों को भी जानना आवश्यक है कि कृष्ण ने यह बात कब, कहां और किस संदर्भ में कही.

इस सच्चाई को सभी जानते हैं कि महाभारत की कथा के अनुसार पांडव हद दर्जे के जुआरी थे. एक बार कौरवों के साथ खेले गए जूए में धर्मराज कहा जाने वाला युद्धिश्ठर अपना सब कुछ हार गया. वह न केवल अपने हिस्से का राज्य हारा बल्कि अपने भाईयों और छोटे भाई की पत्नि द्रोपदी तक को भी जूए में हार गया. कुंती शायद कहीं दूसरे गांव गई होगी या फिर बुढापे में उसकी ज्यादा कीमत न रही होगी वर्ना धर्मराज उसे भी दांव पर लगाने का धर्म अवश्य कमा लेता. राज्य हार जाने के कारण पांडवों को बनवास जाना पड़ा. बनवास की शर्त

पूरी होने पर उसने आकर राज्य में अपना हिस्सा मांगा. उसकी यह मांग अनुचित थी. अतः पूरे कुनबे में किसी ने भी युद्धिश्ठर की मांग का समर्थन न किया. (गीता 1.34) यहां तक कि पांडवों के दादा, मामा, ससुर, पौत्रों, सालों तक ने भी युद्धिश्ठर का विरोध किया. और तो और पांडवों का मामा भी उनके साथ न लगा बल्कि वह भी कर्ण का सारथी बन कर कौरवों की ओर सें लड़ा. मात्र कृष्ण ने इन जुआरिओं का पक्ष लिया.

जब अर्जुन युद्ध के मैदान में आया और उसने अपने कुकृत्य के विरोध में अपने गुरू, मित्रों भाईयों व रिश्तेदारों को हथियार लिए खड़ा देखा. उसने सोचा कि जिस गुरू के चरणों में बैठ कर उसने विद्या अर्जित की है, जिन दोस्तों के साथ खेला कूदा है, जिन रिश्तेदारों के साथ मिल बैठ कर जिंदगी के सुख दुख बांटे हैं, क्या उन्हें कुछ रूपयों की खातिर मार देना उचित होगा!! (गीता प्रथम अध्याय). ऐसी स्थिति में एक सच्चे और सीधे सादे इन्सान का अन्तःकरण जो निर्णय लेता वही निर्णय अर्जुन ने लिया. उसने जूए में हारे धन की खातिर अपने किसी यार दोस्त भाई बन्धु गुरू चाचा ताया दादा आदि का खून बहाना उचित नहीं समझा. अर्जुन को लगा कि अगर वह धन, सम्पत्ति अथवा राज्य के लिए अपनों ही को मारेगा तो उसे पाप लगेगा तथा उसे और उसके परिवार वालों को नरक में जाना पड़ेगा. (1.38 सें 47) अतः उसने अपनों के खून सें सने धन को प्राप्त करने सें इन्कार कर दिया. (2.5) अर्जुन ने यहां तक कहा कि ''सचमुच यह हम सबने (पांडव और कृष्ण ने) एक बड़ा पाप करने की योजना की है.'' (1.44) (गीता रहस्य 616) अतः वह धनुश पटक कर रथ में पीछे बैठ गया.

महाभारत के पाँडव पक्ष वाले पात्रों में सें अर्जुन सबसें कम दुश्ट तथा कमीना पात्र है. उसके मन में थोड़ी बहुत मानवीयता उपजी थी जिसे भी कृष्ण ने गीता के उपदेश तले रौंद डाला. परिणामस्वरूप उस कृष्ण ने एक जुआरी परिवार के हाथों दूसरे लाखों जुआरिओं को मरवा दिया. **उनकी लड़ाई में धर्म का कहीं कोई मसला ही नहीं था. वे मात्र और मात्र जूए में हारे धन को लेकर लड़े थे.**

वास्तव में अर्जुन द्वारा ऐसे हथियार रखने सें कृष्ण को अपना बना बनाया खेल बिगड़ता नजर आया. उसे आशंका हुई कि अगर कौरव पांडव फिर सें एक हो गये तो उसकी तो चौधराहट ही समाप्त हो जाएगी. उसे बरसों का बना बनाया पलान एक पल में चौपट होता नजर आया. ऐसा लगता है अर्जुन की समझदारी व भलमानसत की बातों ने कृष्ण के दिमाग को जोरदार झटका दिया. जिस कारण वह पागलों की तरह अनाप शनाप बकने लगा. इसीलिए गीता में परस्पर विरोधी बातें भरी पड़ी हैं. इन्हीं अनाप शनाप बातों के कारण ही ब्राह्मणवाद के एक प्रमुख लेखक और भारत के भूतपूर्व राश्ट्रपति डा. राधाकृष्णन को भी कहना पड़ा कि गीता बड़ी असंगत सी पुस्तक है. कृष्ण के दिमाग पर हर हालत में कौरवों तथा पांडवों के बीच लड़ाई करवाने का भूत सवार था. इसलिए उस ने अर्जुन को युद्ध करने के अनगिनित बहाने सुझाए, अनेकों पैंतरे अपनाए. उन्हीं बहानों में से एक बहाना ''अपना काम करो'' का भी था जिसे ब्राह्मणवादी लेखकों ने आज के समय में कर्म का सिद्धांत बना दिया है.

उसने अर्जुन को कई प्रकार के प्रलोभन दिये लेकिन अर्जुन फिर भी धन के लिए अपनों को खून बहाने को राजी न हुआ था. कृष्ण ने अर्जुन सें कहा :

1. कि तू समझदारों के जैसी बातें न कर बल्कि युद्ध कर. (2.11)
2. कि अगर तू लड़ाई में अपने स्वजनों को मारेगा तो मात्र उनके शरीर मरेंगे. उनकी आत्मायें नहीं मरेंगी. वे नया शरीर धारण कर लेंगी. अतः तू उन्हें मारने (उनकी हत्या करने) का गम न कर. (2.18 सें 22)
3. कि अगर तू आत्मा को अमर नहीं मानता तो भी तू अपने स्वजनों को मार दे क्योंकि जो जन्मा है उसे एक न एक दिन तो मरना ही है. अतः तू ही मार दे.(2.26 सें 28)
4. कि मैं भगवान हूँ. इसलिए मेरी बात मान ले और युद्ध कर ले.
5. कि ''मैं'' भगवान हूँ और तेरे स्वजनों की मौत तो पहले ही तय कर चुका हूँ. तूने तो उन्हें मारने का दिखावा मात्र ही करना है. अतः तू उन्हें मार दे. अगर तू नहीं मारेगा तो उन्हें मैं मार दूंगा. (11.32–33)
6. कि तू क्षत्रिय है. अतः लड़ाई करना तेरा धर्म है. अतः तू लड़ाई करके अपने स्वजनों को मार दे. उन्हें नहीं मारेगा तो अधर्म होगा और तुझे पाप लगेगा. (2.31 सें 32)
7. कि तू वीर है, योद्धा है. इसलिए युद्ध के मैदान में आकर बिना मरने अथवा मारने के लौटने सें तेरी बेइज्जती होगी, अपयश होगा. ऐसी बेइज्जती सें तो अपनों को मारना ही अच्छा है. (2.33 सें 34)
8. कि अगर तू लड़ाई में जीत गया तो यहां राज करेगा, ऐश्वर्या (ऐयाशी) भोगेगा और अगर मारा गया तो स्वर्ग में अप्सराओं (वेश्याओं) के साथ ऐयाशी करेगा. (2.37)
9. कि तू मेरा स्मरण करता हुआ युद्ध कर. ऐसा करने पर तू मुझे (भगवान) को पा लेगा. (8.7)
10. कि निराश होकर निर्ममता पूर्वक युद्ध कर. 3.30
11. कि जब जब धर्म (जूए) की ग्लानि होती है, मैं अवतार लेता हूँ. (4.8) अतः मेरे कहने सें युद्ध कर.
12. कि तू वेदों के तुच्छ ज्ञान को छोड़ दे. वेदों का ज्ञान इतना ही लाभकारी है जितना चारों ओर पानी ही पानी होने पर कूंआ लाभकारी होता है. (2.42 सें 46) तिलक 635

ब्राह्मणवादी लेखकों ने गीता के श्लोक 2.47 में सें कर्म के सिद्धांत निकाला है. कृष्ण ने जैसे अन्य पैंतरे अर्जुन पर आजमाए, उसी तरह यह बात भी एक पैंतरे के तौर पर अर्जुन पर अपनाई थी. लेकिन ब्राह्मणवादी लेखकों ने ''घूंसे'' को ''पाँच तत्व'' बना दिया है. औरों की तो छोड़ो स्वयं अर्जुन ने भी इस पैंतरे वाले श्लोक को एक कान सें सुन कर दूसरे सें बाहर निकाल दिया. कृष्ण अपनी हांकता रहा. अर्जुन को उसकी बात कतई ध्यान देने योग्य लगी ही नहीं. उसके तथाकथित कर्म के सिद्धांत को दरकिनार करते हुए वह बोला मुझे यह बताओ कि स्थितप्रज्ञ क्या होता है? (2.54)

अर्जुन ने इस प्रश्न का प्रयोग बिल्कुल इस तरह सें किया जिस तरह हम अकसर ढीठ सेल्समैन सें पीछा छुड़ाने के लिए करते हैं. हमारे साथ ऐसा कई बार होता है कि कोई सेल्समैन अपनी वस्तु बेचने के लिए कई तरह के बहाने बनाता है. जबकि हमें उस चीज की आवश्यकता नही होती. तब हम उससें पीछा छुड़ाने के लिए ऐसा कोई प्रश्न करते हैं जिससें उसे लगे कि हमें उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह हमारा पीछा छोड़े. अर्जुन ने भी पीछा छुड़ाने के लिए ऐसा ही प्रश्न पूछा.
गीता सें निकाले गए इस कर्म के सिद्धांत को तीन कसौटियों पर परखा जा सकता है:—

1. **हालात की कसौटी पर**
2. **सत्यता की कसौटी पर**
3. **गीता की कसौटी पर**

1. **हालात की कसौटी पर :** सभी जानते हैं कि पाँडवों और कौरवों में भयंकर जूआ खेला गया था. इस जूए में पाँडव अपना सब कुछ हार गये थे — धन दौलत जमीन जायदाद यहां तक कि अपनी पत्नि द्रौपदी तक को जूए में हार गए. कौरवों ने द्रोपदी तो उसी समय लौटा दी थी लेकिन जूए में जीती सम्पत्ति लौटाने सें इंकार कर दिया था. जूए में हारी सम्पत्ति वापिस मांगने का पाँडवों का कोई हक नहीं बनता था और न ही कौरवों द्वारा लौटाने का कोई औचित्य था. लेकिन कृष्ण की शह पर पाँडव बार बार जूए में हारी सम्पत्ति वापिस मांगते रहे. उनकी इस अनुचित मांग का सभी रिश्तेदारों भाई बन्धुओं ने विरोध किया परन्तु पाँडवों ने जिद्द नहीं छोड़ी. अंततः नौबत लड़ाई की आ गई. इस लड़ाई में सभी रिश्तेदार भाई बन्धु हथियार लेकर पाँडवों के विरोद्ध में डट गए. कृष्ण ने पाँडवों की तरफ सें अनेकों लोगों की मिन्नतें की कि वे पाँडवों का साथ दें मगर किसी ने भी पाँडवों की अनुचित मांग का समर्थन नहीं किया.

अतः जब अर्जुन युद्ध के मैदान में आया तो उसने देखा कि उनकी अनुचित मांग के विरोध में उसके सारे यार मित्र, गुरू, दादा, मामा, ससुर, साले व अन्य रिश्तेदार सामने हथियार लिए खड़े हैं. अपने समस्त रिश्तेदारों को अपने विरोध में खड़ा देखकर अर्जुन को अपनी गलती का आभास हुआ. उसे महसूस हुआ कि युद्ध में अधिकतर जवान पुरुष मारे जाएंगे. और क्योंकि ब्राह्मण—धर्म में 10 पुत्र पैदा करना अनिवार्य हैं अतः उसके कुल की बहू बेटियों को गैर मर्दों सें पुत्र पैदा करने पड़ेंगे जिससें वर्ण संकर सन्ताने पैदा होगी और इस तरह कुल—धर्म का नाश हो जाएगा. जो पाप वह करने जा रहा था उसकी भयावह कल्पना करके उसका मन आत्मग्लानि सें भर गया. उसकी अन्तरात्मा चीत्कार कर उठी. अतः उसने कृष्ण को अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुना दी. वह बोलाः

''अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् !
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः !! (1.44)

ओह! कितनी अफसोस की बात है कि हम सब (एक्सप्लेन इट) ने यह महापाप करने का निश्चय किया है. क्योंकि राज्यसुख भोगने के लालच में हम अपनों की ही हत्या करने को तत्पर हो गए हैं.

कृष्ण बोला ऐसी (अपनों को मारने में) कायरता मत दिखलाओ. तब अर्जुन ने अत्यंत मार्मिक शब्द कहे. वह बोला कि अपने दादा व गुरू जैसे बुजुर्गों को मार कर राज्यसुख भोगने सें तो अच्छा है कि आदमी भीख माँग कर गुजारा कर ले! अपनों की हत्या करके जो भोग की वस्तुएं हम जीतेंगे वे सब अपनों के ही खून सें सनी होंगी. ऐसे रक्त रंजित भोगों को कौन सभ्य पुरुष भोग सकता है. मात्र एक गांव का राज्य तो क्या सारी धरती का राज्य भी अपनों की हत्याओं के गम को दूर नहीं करने में समर्थ नहीं है!! (2.4 सें 2.9) इतना कह कर अर्जुन ने अपना धनुश पटक दिया और चुप होकर एक ओर बैठ गया.

अर्जुन ने जो कुछ आभास किया और जो कुछ वह बोला, दुनिया के किसी भी सभ्य परिवार वाले व्यक्ति को यही बोलना चाहिए था. आम भाषा में जिसे "आँख की शर्म'' कहा जाता है, अर्जुन को उसी का आभास हुआ था. पारिवारिक जीवन में अनेकों बार ऐसे प्रसंग आते हैं जब कोई रिश्तेदार किसी अनुचित बात पर अड़ जाता है. ऐसी स्थिति में उसे सद्बुद्धि देने के लिए हम उसके जान पहचान वाले किसी बुर्जुग को उसके पास लेकर जाते हैं ताकि वह उसकी शर्म मान कर अपनी अनुचित मांग छोड़ दे. अर्जुन के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ. उसने भी जब अपनी अनुचित मांग के विरोध में अपने सामने अपने बड़े बुजुर्गों को डटे देखा तो उसे भी उसी सद्बुद्धि का

बोध हुआ. उसे अपनी गलती का एहसास हो गया. वह आत्मग्लानि में डूब गया. उसके हाथ पैर फूल गए. अपने विरोध में अपनों को ही सामने खड़ा देखकर हर किसी सभ्य सरल व्यक्ति सें जिस व्यवहार की आशा की जाती है, बिल्कुल वैसा ही व्यवहार अर्जुन ने किया. जो व्यक्ति अपने बड़ों का आदर करता है उनके प्रति वह यही बात कहेगा. सभ्य समाज में सभी लोग ऐसा ही करते हैं. इसी कारण सें ही सभ्य समाज अपना अस्तित्व बनाए हुए है. मानवों में ही नहीं पशुओं तक में भी अपनों सें बड़ों का आदर करने, उनकी बात मानने की प्रवृति होती है. अतः अर्जुन ने अपने बुजुर्गों को मार कर धन प्राप्त करने की अपनी अनुचित मांग छोड़ने का निश्चय कृष्ण को बता दिया. (2.4 सें 2.9)

कृष्ण ने बरसों सें युद्ध का जो ताना बाना बुना था वह सब उसे एक पल में तहस नहस होता नजर आया. उसने अर्जुन को युद्ध के लिए उकसाना शुरू कर दिया. उसे हर तरह सें डराया धमकाया. हर तरह के लालच दिये. इन्हीं धमकियों में एक धमकी अकर्मणा न होने की भी थी. **कृष्ण बोला 'हे अर्जुन तेरा कर्म करने पर अधिकार है और फल पर बिल्कुल नहीं. तथा तू अकर्मणा न रह तथा तू अपने आप को फल का कारण न समझ.**

जिन हालातों में अर्जुन ने अपने मित्रों सम्बन्धियों को मारने सें इन्कार किया था, उन हालातों में कृष्ण द्वारा यह कहा जाना कि वह अपना कर्म करे और कर्म करने सें न टले तथा परिणाम का कारण अपने आप को न समझे तो इस बात का सीधा सा अर्थ है :

1. कि किसी भी व्यक्ति को अपने रिश्तों की लिहाज शर्म में नहीं पड़ना चाहिए. धन अथवा राज्यसुख प्राप्त करने के लिए जो भी रास्ते में रूकावट बने उसे कत्ल कर देना चाहिए चाहे वह उसका पिता दादा गुरू आदि कुछ भी लगता हो! वस्तव में यही है गीता में कर्म का सिद्धांत!!
2. कि कोई भी कर्ता अपने आप को उस कर्म के फल अथवा परिणाम का कारण (अर्थात करने वाला) न समझे. कृष्ण के कहे अनुसार अगर अर्जुन अपने दादा, गुरू, बच्चों आदि का कत्ल करता है तो वह अपने आप को उनके कत्ल का कारण (अथवा कत्ल करने वाला) न समझे. जब कर्ता किसी काम के फल का कारण ही नहीं है तो उस परिणाम अथवा फल को प्राप्त करने वाला भी नहीं है. अतः कृष्ण के अनुसार अर्जुन अगर धन के लिए अपनों को मारता है तो वह उनके कत्ल का कारण नहीं है. जब वह कारण नहीं है तो वह कातिल भी नहीं है. और जब कातिल ही नहीं तो कत्ल का दोशी भी नहीं है.
3. अपनी इस बात को पक्का करने के लिए वह आगे कहता है कि कौरवों को वह पहले ही मार चुका है. अर्जुन अगर उन्हें मारेगा तो दिखावा मात्र करेगा.
4. विश्व में गीता एक मात्र किताब है जो धन के नाम पर अपने सगे सम्बन्धियों को, अपने गुरूओं को कत्ल करना धर्म बताती है. दुनिया में कहीं भी किसी भी सभ्यता अथवा धर्म में ऐसी किताब नहीं है जो धन की खातिर अपनों को मारने का आदेश देती हो. मात्र और मात्र ब्राह्मणों की गीता ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो ऐसा पाप करने को धर्म बताती है.

इस श्लोक में कृष्ण अर्जुन सें स्पश्ट कह रहा है कि वह अपने आप को फल का कारण अर्थात अपनों की हत्या का दोशी न समझे. अतः उसे बिना सोचे समझे इस महापाप को कर डालना चाहिए. उसका मात्र अपनों को मारने का अधिकार है. उनकी हत्या करने पर जो परिणाम होगा, उसका कारण वह नहीं है. और इन हत्याओं का वह कारण (दोशी) भी नहीं होगा. इसलिए कृष्ण उसे उकसाता है कि हे अर्जुन तू अपनों को मार डाल!!

कहा जाता है कि लकड़बग्घे सबसें निर्दयी हत्यारे अथवा शिकारी होते हैं परन्तु वे भी अपनों को नहीं मारते. कृष्ण ने तो उसे लकड़बग्घों सें भी बदतर कर्म करने की सलाह दे डाली. एक इन्सान सें उसी के बुजुर्ग, गुरू, भाई बन्धु मरवा दिए. अर्जुन ने इस महापाप सें बचने के बहुतेरे प्रयत्न किये मगर कृष्ण ने उसे अपने वाक् जाल सें निकलने न दिया. अंततः असहाय होकर उसने कृष्ण ने कहने सें वह पाप कर डाला जिसकी विश्व में कहीं और मिसाल नहीं मिलती. कृष्ण के उकसावे में आकर अर्जुन ने अपने उस दादा को मार दिया जिसके सामने वह कभी ऊँची आवाज में भी न बोला था, अपने उस गुरू को मार दिया जिसने उसे श्रेष्ठ धनुर्धर घोषित करने के लिए तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर एकलव्य का अंगूठा काटने का जघन्य पाप किया था.

अतः जिन हालातों में कृष्ण ने यह बात कही उसका सीधा सरल अर्थ है कि आदमी को सम्पत्ति की लड़ाई में किसी छोटे, बड़े, अपने, पराए का कोई लिहाज नहीं करना चाहिए. अगर वे सीधे ढंग सें मानें तो ठीक वर्ना लड़ने की नौबत आ जाए तो उसमें भी पीछे नहीं हटना चाहिए. और अगर गीता के इस संदेश को इसके तुरंत बाद में हुई महाभारत की लड़ाई के साथ देखा जाए तो कृष्ण का सीधा सा संदेश है कि धन के लिए अपनों को अगर धोखे बेईमानी सें भी मारना पड़े तो भी आदमी को झिझकना नहीं चाहिए. बस यही गीता का कर्म का संदेश है!!

सत्यता की कसौटी पर : सत्यता की कसौटी पर तो गीता का कर्म का सिद्धांत उतना ही कारगर है जितना माँस के लिए गिद्ध को रक्षक बनाना. गीता के कर्म के सिद्धांत की कोई कैसे भी व्याख्या कर ले, यह सिद्धांत है ही असत्य. किसी किस्म की लीपापोती इसकी असत्यता पर पर्दा नहीं डाल सकती.

शब्दद् अर्थ : गीता के श्लोक 2.47 का शब्द दर शब्द अर्थ है कि कर्म करने में निश्चय ही तेरा अधिकार है परन्तु फल में कभी नहीं. तुम कभी भी अकर्मणे (कर्म न करने वाले) न होवो और न ही कभी अपने आपको फल का कारण समझो.

अगर यह बात स्वीकार कर ली जाये कि आदमी का काम करने पर ही अधिकार है उसका फल प्राप्त करने पर बिल्कुल नहीं तो इसके दो अर्थ निकलते हैं.

पहला तो यह कि हमें आम जिंदगी में बस काम करना चाहिए उसके बदले में कुछ नहीं मांगना चाहिए. अर्थात मजदूर को सारा दिन काम करने के बाद दिहाड़ी नहीं मांगनी चाहिए. बाबूओं को सारा महीना नौकरी करके तनखाह नहीं मांगनी चाहिए क्योंकि उनका काम पर अधिकार है फल पर नहीं और न ही उन्हें स्वयं को महीने भर की गई नौकरी का कारण समझना चाहिए. ऐसे ही बाह्मणों को अपनी पंडिताई करने के बाद दक्षिणा नहीं मांगनी चाहिए. अगर ब्राह्मण ही ऐसा करने लग जाएं तो दुनिया में कोई ब्राह्मण ही न रहे!! विद्यार्थी जब साल भर मेहनत करके परीक्षा दें तो उन्हें परिणाम की आशा नहीं करनी चाहिए.

दूसरा यह कि जितने भी कत्ल चोरी आदि के अपराध होते हैं वहां भी कातिलों चोरों को अपराध करने को तो अधिकारी माना जाना चाहिए परन्तु उसके फल अर्थात सजा का अधिकारी उन्हें नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि उन्हें फल (अपराध) का कारण नहीं समझा जाना चाहिए.

जहां तक बात है अकर्मणे रहने की तो जिस स्थिति में कृष्ण ने यह बात अर्जुन सें कही थी उससे इस बात का यही अर्थ निकलता है कि जब धन के लिए झगड़ा हो जाए तो आदमी को पीछे नहीं हटना चाहिए. धन के लिये अपनो को न मारना "अकर्मण्यता" है. गीता के अनुसार आदमी को ऐसा अकर्मणा नहीं होना चाहिए.

हमारे विचार में **ऐसा नीच कर्मणा होने सें तो अकर्मणा होना कहीं अधिक श्रेयकर है.**
गीता के इस सिद्धांत पर दुनिया का कोई इन्सान नहीं चलता और न ही कोई चल सकता है. यहां तक कि नित्य गीता का प्रचार प्रसार करने वाली गीता प्रेस का मालिक भी इस सिद्धांत पर अमल नहीं करता. अगर वह स्वयं को अपनी प्रेस में छपी किताबों का कारण न माने तो उसे उसके लिये लोगों सें कीमत मांगने का भी अधिकार नहीं है. औरों की तो छोड़ो जो तथाकथित महाराज नित्य टीवी अथवा स्टेजों पर गीता की कथा करते हैं वे भी कथा करने का मोल पहले ही तय कर लेते हैं. वे स्वयं गीता के इस सिद्धांत को झूठा साबित कर देते हैं.

पूछा जा सकता है कि क्या कृष्ण ने जमुना के तट पर बांसुरी बिना फल की इच्छा के बजाई थी. अगर उसकी बांसुरी सुन कर राधा और गोपियां अपने पतियों को छोड़ कर नहीं आती तो क्या वह फिर कभी बांसुरी बजाता! क्या दशरथ ने बिना फल की इच्छा के ही अश्वमेध यज्ञ में किया जाने वाला कामुक नाटक किया था!

इतना ही नहीं मानव शरीर में कुछ क्रियाएं अपने आप होती हैं जैसे पसीना निकलना, सांस चलना, दिल धड़कना आदि. यह क्रियाएं भी बिना मकसद के नहीं होती. फेफड़े सांस अन्दर बाहर करने का कर्म करते हैं इसका फल है अथवा इसका कारण है कि आदमी जीवित रहता है. अगर फेफड़ों को आदमी को जिन्दा रखने का कारण न माना जाए तब तो आदमी के मर जाने पर भी फेफड़ों को अपना कर्म जारी रखना चाहिए. अतः गीता न केवल मानव निर्मित नियमों के विरुद्ध है बल्कि भगवान के बनाये नियमों के भी विपरीत है.

10 गीता की कसौटी परः अगर कृष्ण द्वारा दिये गये कर्म के सिद्धांत की विवेचना स्वयं उसके द्वारा दिये गये अर्थ के आधार पर करें तब भी यह बात सिद्ध होती है कि ब्राह्मणों ने अपने निजि स्वार्थ के लिए घूंसे को पंच तत्व बना रखा है. कृष्ण के अनुसार कर्म का अर्थ है : शास्त्र विहित यज्ञ, दान व होम आदि करने के लिए द्रव्यों का त्याग कर्म है. अतः कृष्ण के अनुसार जैसा शास्त्रों में लिखा है उस विधि सें यज्ञ करने, दान देने व होम आदि करने के लिए धन सम्पत्ति देना ही कर्म है. कृष्ण और गीता का अच्छे काम करने और बुरे काम न करने के सिद्धांत सें कोई लेना देना नहीं है. वैसे भी अर्जुन ने जूए में हारे धन के लिये अपने रिश्तेदारों को कत्ल करने सें मना करके बुरे काम सें बचने की कोशिश की थी. लेकिन कृष्ण ने गीता का ज्ञान देकर उसके हाथों उसका पूरा कुनबा कत्ल करवा दिया.

कृष्ण के अनुसार शास्त्र विधि सें हर प्रकार के यज्ञ अर्थात गोमेध, नरमेध, अश्वमेध करने के लिये ब्राह्मण (क्योंकि केवल ब्राह्मण ही दान लेने का अधिकारी है) को गाय बच्चे और घोड़े दान दिये जाने चाहिए ताकि शास्त्र विधि सें उनकी बलि दी जा सके. ब्राह्मण को होम करने के लिये घी लकड़ियां आदि भी दान की जानी चाहिए. अन्य कर्मकांडों के लिए भी द्रव्य अर्थात धन सम्पत्ति सोना चांदी जमीन आदि का दान दिया जाना चाहिए. यही मनुष्य का कर्म है और ऐसा करने मात्र का वह अधिकारी है. ब्राह्मण को यह सब दान देने पर भी वह इसके फल का अधिकारी नहीं है.

गीता की असलीयत

1. आज के समय में अगर निश्पक्ष नजर सें देखा जाए तो गीता किसी माफिया डॉन द्वारा अपने गुर्गे को दिया गया आदेश जैसा लगता है. अर्जुन ने धन के लिए अपने दादा तथा गुरू की हत्या का पाप करने सें मना कर दिया तो कृष्ण उससे बोला 'नपुंसक मत बन. अपनों की लिहाज करना उसके धर्म (धन्धे) को शोभा नहीं देती. ' (2.3) हिन्दी फिल्मों का डॉन अपने गुर्गों को ऐसी बातें बोल कर ही हिम्मत बंधाता है. अगर ऐसे ही धर्म की रक्षा करने के लिये ही ब्राह्मणों का भगवान अवतार लेता है तो इससें तो अवतार न होना ही अच्छा है.

2. कृष्ण अर्जुन सें कहता है कि मनुष्य का शरीर बचपन सें जवानी, जवानी सें बुढापे, बुढापे सें मृत्यु की ओर चलता जाता है. इसलिए उसे ''शरीर'' का मोह नहीं करना चाहिए. अतः उसे अपने विरोधियों को मार देने में कोई हिचक नहीं करनी चाहिए. (2.13) अगर गीता की इस बात को मानें तब तो किसी भी कातिल को सजा होनी ही नहीं चाहिए. जज को किसी के भी शरीर सें मोह नहीं करना चाहिए. जो जन्मा है उसे मरना तो है ही अतः अगर कातिल ने मार दिया तो उसने तो ''भगवान'' के काम का बोझ ही हलका किया है. वर्ना कृष्ण को (अगर उसके भगवान होने के दावे को सच्च मान लें तो) एक आदमी और मारना पड़ता. कातिलों को तो सीधा स्वर्ग में स्थान मिलना चाहिए!

3. पूरी गीता में ''आत्मा'' शब्द कहीं आया ही नहीं है जिसका अर्थ उस आत्मा सें है जो अमर है और जो कपड़ों की तरह शरीर बदल लेती है. ब्राह्मणों ने अपनी रोजी रोटी के लिए प्रपंच रच डाला है.

4. कृष्ण कहता है कि देही (जिसे कि ब्राह्मण आत्मा का नाम देते हैं) सारे शरीर में व्याप्त होती है. लेकिन ब्राह्मणों का दूसरा ग्रन्थ श्वेताश्वतर उपनिषद (5.9) कहता है कि आत्मा का आकार बाल की नोक के दस हजावें भाग के बराबर होता है. मुण्डक उपनिषद कहता है कि जिन्हें पूर्ण ज्ञान हो वही आत्मा के बारे में जान सकता है. इस उपनिषद के रचियता को ज्ञान कुछ ज्यादा ही हो गया लगता है. वह कहता है आत्मा पाँच तरह की वायु में तैरता रहता है.(3.1.9) इन पाँच हवाओं में सें एक अपान वायु भी है जिसे प्राणी गुदा सें बाहर निकालते हैं. (ए सी प्र द्वारा लिखी–गीता यथारूप पृ. 99) लगता उसने अफारे सें मरते किसी पशु को देख लिया होगा. अफारा आने पर पशु मूँह और गुदा दोनों सें हवा निकालता हुआ मर जाता है. ऋषि के समझ नहीं आया होगा कि आत्मा किधर सें निकली. अतः उसने ज्ञान बघार दिया कि आत्मा कहीं सें भी तैर कर निकल सकती है.

5. गीता का यह सिद्धांत कि आत्मा अजर, अमर अजन्मा है, वास्तव में कठोपनिशद् (1.2.18) सें नकल किया गया है. भानुमति ने कुनबा जोड़ा, कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा. लेकिन कृष्ण इससें दो कदम आगे बढ़ गया. वह बोला जो व्यक्ति यह जानता है कि आत्मा अमर है वह किसी को मार ही नहीं सकता. (2.21) अतः अगर कातिल यह जानता है कि आत्मा अमर है तो वह किसी को मार ही नहीं सकता. अतः उस पर तो कत्ल का मुकदमा चलना ही नहीं चाहिए.

6. गीता (2.22) कहती है कि जैसे मनुष्य फटे पुराने वस्त्र त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने जीर्ण हुए शरीर त्याग कर नए धारण कर लेती है. अगर ऐसा है तो नवजात बच्चे क्यों मर जाते हैं. तब आत्मा बिल्कुल नए शरीर क्यों त्याग देती है. बिजली का करंट लगने सें छोटा बच्चा, जवान आदि सभी मर जाते हैं. उस समय उनका शरीर कहीं सें भी जीर्ण नहीं होता. लेकिन कोमा में मनुष्य बीसियों साल पड़ा रहता है. तब उसका शरीर सड़े हुए पिंजर जैसा हो जाता है लेकिन तब भी आत्मा उसके शरीर को नहीं त्यागती! अतः गीता का यह सिद्धांत कोरी बकवास है जो एक जुआरी को दूसरे जुआरी सें मरवाने के लिए की गई थी.

7. कृष्ण ने आत्मा जैसा कोई सिद्धांत नहीं दिया था. उसने तो अर्जुन को लड़वाने के लिए यह पैंतरा चला था. उसने अध्याय 2 में 22 सें 25 तक श्लोकों में अर्जुन को समझाया कि असली चीज तो आत्मा है किसी को मार देने पर शरीर मर जाता है, आत्मा नहीं मरती, वह तो दूसरा नया शरीर बदल लेती है. इसलिए उसे बेफिक्र होकर अपने बुर्जुगों को मार देना चाहिए. जब अर्जुन पर उसकी इन बातों का असर न हुआ तो कृष्ण ने अपने ''आत्मा अमर है'' के पैंतरे पर स्वयं मिट्टी डाली और बोला, अगर तू मानता है कि आत्मा सदा जन्म लेती हैं, मरती है तो भी तू लड़ाई कर क्यों कि जो (आत्मा) जन्मा है उसे तो मरना ही है. तू क्षत्रिय है इसलिए हे पहलवान, तू लोगों को मार दे.

अपनी बात मनवाने के लिए उसने उसको महाबाहु (पहलवान) कह कर कटाक्ष भी किया. (ए सी प्र –गीता यथारूप पृ. 112) अतः कृष्ण ने गीता में जो कुछ कहा उसका असली और एकमात्र उद्देश्य अर्जुन के हाथों उसके परिवार को मरवाना था. कृष्ण ने कोई सिद्धांत नहीं दिया. ब्राह्मणों ने अपना धन्धा चलाने के लिए घूंसे को पंचतत्व का योग बना दिया. कृष्ण चाहता था जैसे परशुराम ने अबोध बालकों का कत्लेआम किया, गर्भ में पल रहे बच्चों तक को उसने मार दिया वैसा ही कुछ अर्जुन भी करे. दुर्भाग्य सें कृष्ण अपने कुत्सित इरादों में कामयाब हो गया! काश, अर्जुन को बुद्ध मिल गए होते! लाखों नारियां विधवा होने सें बच जाती! हजारों माओं के जवान बेटों को चील कौवे न खाते!! लड़ाई में विधवा हुई क्षत्राणियों और गोपियों को सड़कों पर जाकर खड़ा न होना पड़ता, वहां सें गुजरने वाले हर ब्राह्मण सें याचना न करनी पड़ती कि वह उसके साथ संभोग कर ले ताकि उसके पुत्र पैदा हो सके और वह मोक्ष की हकदार बन सके.

8. आत्मा के सिद्धांत के समर्थन पर हजारों हजार ग्रन्थ लिखे गए हैं. लेकिन आज तक कोई यह नहीं बता पाया कि आत्मा क्या होती है, शरीर में आती कैसे है जाती कैसे है आदि. ब्राह्मणों को इसी बात में फायदा है कि लोग इसी गोरख धंधे में पड़े रहें. कृष्ण ने सात सौ श्लोकों की गीता कर डाली मगर एक श्लोक में भी "आत्मा क्या है", यह नहीं बताया. वास्तव में उसे भी पता न था. उसने तो बस अर्जुन को लड़वाने के लिए यह बात कह दी थी. अध्याय 2.29 में वह स्वयं मान लेता है कि आत्मा के बारे में कोई नहीं जानता.

9. जब अर्जुन ने कृष्ण की आत्मा सम्बन्धी बातें दरनिकार कर दीं तो कृष्ण ने उसे एक और लालच दिया कि जो क्षत्रिय लड़ाई में मारे जाते हैं वह स्वर्ग में जाते हैं. अतः लड़ते हुए मरने पर उसके सारे रिश्तेदार स्वर्ग में जाएंगे. (2.31,32) इस्कान का संस्थापक ए सी अपनी पुस्तक ''गीता यथारूप'' में इसकी व्याख्या करते हुए कहता है कि जैसे यज्ञ में मारा गया पशु स्वर्ग में जाता है वैसे ही लड़ाई में मरने वाला क्षत्रिय स्वर्ग में जाता है. (पृ.118) अपनी व्याख्या के सबूत के तौर पर उसने संहिता (वेद) सें संस्कृत का एक श्लोक भी दिया है.

10. अपनी बात का असर न होते देख कृष्ण ने फिर पैंतरा बदला. वह बोला अगर क्षत्रिय होकर भी वह नहीं लड़ा तो लोग उसे कायर होने का ताना देंगे. उसकी बेइज्जती करेंगे. बेइज्जत होकर जीने सें अच्छा है कि वह मर जाए. अपने रिश्तेदारों को मार देगा तो यहां का राज्य मिलेगा अगर वे तुझे मार देंगे तो तुझे स्वर्ग मिलेगा. इसलिए तू लड़ने मात्र के लिए लड़ाई कर. अपनों को मारने में तुझे कोई पाप नहीं लगेगा. (2.31 सें 38)

11. **सबसें महत्वपूर्ण बात यह कि क्या गीता के सिद्धांत मात्र अर्जुन के लिए ही थे? क्या वे सभी पर लागू नहीं होते? अगर वे सब पर लागू होते हैं तब तो किसी को भी झगड़ा होने पर अपने बड़े बुजुर्गों का लिहाज नहीं करना चाहिए. जैसे कृष्ण के कहने पर अर्जुन ने सम्पत्ति में हिस्सा देने पर अपने गुरू दादा तक को मार दिया वैसे ही सम्पत्ति में हिस्सा न मिलने पर गीता मानने वालों को चाहिए कि वे अपने बुजर्गों को मार दें. सरकार को भी चाहिए कि इस तरह के कत्लों को "गीता के कर्म" समझे और कातिलों को कृष्ण की तरह पूजे!!**

कितनी शर्म की बात है ऐसी दुर्भावना वाली बातें करने वाले को भगवान कहा जाता है. ऐसी भयंकर पापपूर्ण बातों को धर्म बताया जाता है. कृष्ण अगर गीता का उपदेश आज दे तो निश्चित रूप सें उस पर अदालत में हत्या के लिए उकसाने (abetment to murder) का मुकद्दमा चल सकता है जिसकी सजा हत्या जुर्म के बराबर होती है!

गीता रचे जाने की वास्तविकता : गीता के उपरोक्त वर्णित सिद्धांतों पर चर्चा करने सें पहले गीता की वास्तविकता सें परिचित होना भी आवश्यक है. अगर गीता को महाभारत का अंग माना जाए और यह भी सत्य मान लिया जाए कि जब अर्जुन ने जूए के धन की खातिर अपने भाई बन्धुओं गुरू व रिश्तेदारों को मारने सें इन्कार कर दिया था, तब कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था जिसे सुन कर महाभारत का रूका रूकाया युद्ध पुनः भड़क उठा था. इस युद्ध में इतने लोग मारे गए कि भारत भूमि पुरुषों सें खाली हो गई. अगर यह सत्य है तो निश्चित रूप में यह कहा जा सकता है कि गीता का उपदेश एक व्यभिचारी धूर्त द्वारा जूए में अपनी पत्नि तक को हारे जुआरियों को दिया गया भड़काऊ भाशण था जिसे सुनकर एक पक्ष के जुआरियों ने दूसरे पक्ष के जुआरियों का समूल नाश कर दिया.

वास्तव में जब सिकन्दर दुनिया जीतता हुआ भारत आया तो यहां का मौसम और जलवायु उसके सैनिकों को रास न आया. भारतीय योद्धाओं ने भी उन्हें डट कर टक्कर दी. अतः उन्होंने हथियार फैंक दिए और वापिस अपने देश जाने की योजना बनाई. जब सिकन्दर को उनकी योजना का आभास हुआ तब उसने अपने सैनिकों में जोश जगााने के लिए जो भाशण दिया उसकी ही प्रतिलिपि है गीता. गीता का सारा वार्तालाप वास्तव में युद्ध सें मूँह मोड़ कर भागे सैनिकों को सिकन्दर द्वारा दिया गया भाशण है जिसे सुनकर उसके सिपाही पुनः युद्ध में कूद पड़े थे और पौरस को हरा दिया था. युनानियों में हर घटना को लिखने की आदत थी. सिकन्दर का यह ऐतिहासिक भाशण भी लिखा गया.

सन 400 ईस्वी में राजा ने गीता लिखवाई और महाभारत में घुसेड़ दी. कभी किसी ब्राह्मण कथाकार के हाथ यह भाशण लग गया और उसने उठा कर इसे महाभारत में चिपका दिया. वैसे यह भी तथ्य ही है कि महाभारत नामक ग्रन्थ कभी "जय" नाम सें जाना जाता था और इसमें मात्र 000 श्लोक थे. जो भी कथाकार आया इसमें अपनी रामकहानी घुसेड़ता गया. फलस्वरूप आज इसमें एक लाख सें अधिक श्लोक हैं. 000 सें एक लाख तक की संख्या तक पहुंचाने में सात सौ श्लोकों (गीता) का योगदान सिकन्दर का भी है.

गीता में अन्तर्विरोध

ऐसा लगता है कि गीता घढ़ने में भी कइयों का योगदान है. या फिर जिसने भी गीता घढ़ी उसने डट कर सोम पी रखी थी. उसे ध्यान ही नहीं रहा कि पीछे वह क्या बकवास कर चुका है. कई बार तो उसने कुछेक श्लोको के बाद ही अपनी बात पलट दी. उदाहरणतः

1. श्लोक 2.22 में आत्मा एक शरीर सें दूसरे में जान वाली वस्तु है लेकिन दो श्लोकों के बाद ही आत्मा स्थिर और अचल बता दी गई है.
2. श्लोक 4.37 में ज्ञान सबसें बड़ी चीज है जिससें सभी पाप नष्ट हो जाते हैं. लेकिन श्लोक 18.66 में केवल पूजा सें ही पाप नष्ट होने की बात कही गई है.
3. श्लोक 2.45 में वेदों के तीनों गुणों सें बचकर रहने का आदेश दिया गया है तो श्लोक 8.11 में वेदों को परम पद बताया गया है. जबकि श्लोक में वेदों को बेकार की वस्तु बताया गया है. उनकी उपयोगिता इतनी बताई गई है जितनी बाढ़ के समय में कूंए की.
4. श्लोक 5.14 में भगवान न तो संसार को बनाता है न चलाता है लेकिन श्लोक 18.61 में वही भगवान सारी दुनिया को चलाने वाला बताया गया है जिसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता.

10.2 वेदों में छुपा ज्ञान

15वीं शताब्दी में सायण एवं महीधर ने चारों वेदों पर भाष्य लिखे.

वेद किसने बनाये : वेद किसने बनाये इस प्रश्न पर ब्राह्मण ग्रन्थ और उनके तथाकथित विद्वान आपस में सहमत नहीं हैं. बाबा साहिब (खण्ड 8.30) ने ब्राह्मणों द्वारा दिये गये ग्यारह किस्म के सिद्धांत संकलित किये हैं जो इस प्रकार सें हैं.

1. रहस्यमयी पुरुष यज्ञ सें वेद पैदा हुये : पता नहीं उस आग सें किताबें कैसे पैदा हो गई जिसमें रहस्यमयी आदमी की बलि दी गई थी
2. स्कंभ पर आधारित हैं. आप्टे के अनुसार स्कंभ का अर्थ है बाधा, रोकना. बाधा सें वेद कैसे पैदा हो गये, ऐसी थ्यूरी देने वाले जानें!!
3. विलगित बालों और मुख सें निकले : माना जा सकता है कि मूंह सें तो किसी ने बोल दिये होंगे लेकिन बालों सें कैसे निकले! वेद कोई जूएं हैं!
4. इन्द्र ने पैदा किये. : वेद कोई गाजर मूली हैं कि किसी ने उत्पन कर दिये.
5. काल सें जन्में :
6. अग्नि, वायु और सूर्य सें पैदा हुए.
7. प्रजापति और जल सें पैदा हुए.
8. ब्रह्मा की सांस हैं.
9. ब्रह्मा की दाढ़ी के बाल हैं.
10. भगवान ने मानस सागर सें खोद कर निकाले.
11. वाच का विस्तार है.

भडों द्वारा रचित वेद : चार्वाक ने वेदों के बारे में कुछ ज्यादा ही सही कहा है. उनका कहना है,"त्रयो वेदस्य कर्तारो भडधूर्तनिशाचर" (आप्टे : भड) अर्थात तीनों वेद **भड,** धूर्त और रात को घूमने वालों अर्थात चोर लुटेरों ने बनाए हैं. यहां कुछ लोग भड का अर्थ भाण्ड करते हैं. शायद यह ठीक नहीं है क्योंकि वास्तव में **भड** मिश्र में रहने वाली एक जाति के लोग थे. इस संदर्भ में अगर भड शब्द को देखा जाये तो चार्वाक द्वारा वेदों के बारे में कहे गये शब्द कि वेद भड लोगों द्वारा रचे गये हैं वाकई चौंकाने वाले हैं. लगता है चार्वाक को वेदों की असलीयत का ज्ञान था और "असलीयत" बयान करने पर ही उनकी हत्या कर दी गई. **"वेद विदेशियों द्वारा बनाये गये है भारतियों द्वारा नहीं"** इस तथ्य के पक्ष में अनेकों सबूत मौजूद हैं :

- बहुत से दलित व अन्य लेखकों का यह भी मत है कि आर्य विदेशी हैं तथा राम की कहानी मिश्री फेरो रामेसस की कहानी ही है. विष्णु आदि उन्हीं के देवता हैं क्योंकि विष्णु की प्राचीन मूर्तियों में उसने जो ताज पहना हुआ है वैसे ताज मिश्र के देवी देवता ही पहनते थे.
- भारतीय समाज के लोग सदा सें ही सहिश्णु रहे हैं. अतः जैसी बातें वेदों में लिखीं गईं हैं, ऐसी बातें भारतीय लोग भगवान सें प्रार्थना के रूप में कह ही नहीं सकते!! हर भारतीय यह प्रार्थना तो कर लेगा कि भगवान उसे धन दे लेकिन ऐसी प्रार्थना कोई नहीं करना चाहेगा कि भगवान दूसरों का धन लूट कर उन्हें दे दे जैसा कि वेदों में प्रार्थनाएं की गई हैं. न ही भारतीय समाज के लोग कभी इस बात को मानने वाले रहे हैं कि बाप बेटी और बहन भाई में ऐसे यौन सम्बंध हों जैसा कि भडों के वेदों में वर्णित हैं.
- सिन्धु साम्राज्य के लोग गाय बैल का बहुत आदर करते थे. उनकी मुहरों पर ऐसे हृश्ट पुश्ट जीवों की तस्वीरें बनी हुई हैं. केवल देव और ब्राह्मण ही गोमाँस खाते थे. यहां के मूल निवासी गोमाँस भक्षण का विरोध करते थे. सिन्धु साम्राज्य में कहीं कोई अवशेश या सबूत नहीं मिला है जो यह दर्शाता हो कि भारतीय लोग माँस विशेषकर गोमाँस खाते थे. स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थ यह कहते हैं कि राजा इक्ष्वाकु को गोमाँस खाने के

कारण लोगों का कोप सहना पड़ा था. महात्मा रावण के नेतृत्व में तो लोगों ने गोमाँस भक्षी विदेशियों के छक्के छुड़ा दिये थे.

- देवों की भाषा संस्कृत भी यहां के लोगों के लिए अजनबी थी जो कभी भी आम बोल चाल की भाषा नहीं रही. जैसे आज सरकारी कामकाज अंग्रेजी भाषा में किया जा रहा है. हर कोने में अंग्रेजी स्कूल खुल गये हैं तो भी अंग्रेजी आम बोलचाल की भाषा नहीं है वैसा ही कुछ संस्कृत भाषा के साथ हुआ था. व्याकरण के हिसाब सें संस्कृत भाषा हिंदी भाषा सें दूर और लैटिन रोमन भाषा के ज्यादा नजदीक है.
- आज भी मिश्र में अल भड (Al bhed) नामक जाति के लोग पाये जाते हैं. यह लोग अपने आचार व्यवहार में आर्यों सें बहुत अधिक मिलते हैं. उदाहरणतः इनके बाल आर्यों की तरह भूरे होते हैं. यह आर्यों की तरह खुले सैक्स में विश्वास करते हैं. आर्यों की तरह घुमन्तु हैं. आग जला कर आर्यों की तरह नाचते गाते खाते हैं. वहां के स्थानीय निवासी इन्हें बुरा (निशाचर) मानते हैं. प्राचीन आर्यों की तरह बच्चे माँ के ही गोत्र के माने जाते हैं बाप चाहे कोई भी हो. आर्यों की तरह बेहद अंधविश्वासी हैं. इनकी स्त्रियां माथे पर बिंदिया लगाती हैं और पैरों में बिछुअे पहनती हैं. जैसे आर्य कूट छान कर सोम नामक शराब बनाते थे यह लोग भी अपनी शराब ऐसे ही कूट छान कर बनाते हैं. आर्यों की तरह पितरों का ज्ञाद्ध करते हैं. आर्यों की तरह इनमें भी "पाणिग्रहण" की प्रथा मौजूद है.

अतः चार्वाक ने यह बिल्कुल सही कहा है कि वेद विदेशी "भड" लोगों द्वारा घढ़े गये हैं जो धूर्त और रात को लूट मार करने वाले हैं. यह भी तथ्य है कि उस समय में यह लोग लूट मार करते हुए भारत में घुसे थे. ऋग्वेद ऐसी लूटमार की घटनाओं सें भरा पड़ा है.

वेदों में क्या है?

वेद कब और कैसे बने यह जानने सें यह जानना अधिक महत्वपूर्ण है कि वेदों में क्या है. मजमे लगा कर सामान बेचने वाले गंवार सें लेकर आलीशान आश्रमों में विराजमान संकराचारय तक यहां तक दावा करते हैं कि वेदों में हवाई जहाज, रॉकेट, ऐटम बम, कमप्यूटर, बिजली और यहां तक क्लोन द्वारा बच्चे पैदा करने की विधि भी लिखी हुई है.

वेदों में जो कुछ है वह आवश्यकता अनुसार पुस्तक में दिया जा चुका है. अन्य जिन विद्वानों ने वेदों सें मगज मारी की है वे कुछ इस प्रकार सें कहते हैं : (पहेली 6 खण्ड 8)

- जैमिनि (आर्यों के छः दर्शनों में सें एक मीमाँसा का प्रवर्तक) के अनुसार हम कचरे (वेदों) को अनिवार्य और दोष रहित नहीं मान सकते.
- प्रो. म्यूर के अनुसार वेदों में वे गीत हैं जो ऋषियों ने तरह तरह की बलियां (आदमियों या पशुओं) देकर देवों को सुनाये हैं.
- चार्वाक के अनुसार वेद में तीन दोष हैं : झूठ, दोगली बातें और एक बात को बार बार दोहराना. वेद ब्राह्मणों की कमाई के साधन है.
- वेद काल के दस बड़े विद्वानों एक कौत्स हुए हैं. उनके अनुसार वेदों में कुछ भी गहरा नहीं है. वेदमंत्र अर्थहीन है तथा एक ही बात को बार बार दोहराया गया है. (पुनर्पाठ 18)
- कपिल मुनि जिनके नाम कपिलवस्तु नगर बसाया गया, ने भी वेद तथा यज्ञों को बेकार की वस्तु बताया. (पुनर्पाठ 18)
-
- बृहस्पति के अनुसार वेदों का मानवता और बुद्धि सें कोई सम्बंध नहीं है. ये धूर्त लोगों की कमाई का धन्धा है. अगर वेदों के बताये यज्ञ में मारा गया पशु सीधे स्वर्ग जाता है तो ब्राह्मण अपने माँ बाप की बलि ऐसे यज्ञों में क्यो नहीं दे देते!! यदि श्राद्ध सें दूसरे लोक में रहने वाले पितरों को भोजन मिल जाता है तो दूसरे गांव में जाने वाला वेदज्ञ अपने साथ खाना क्यों लेकर चलता है. उसे श्राद्ध के माध्यम सें खाना क्यों नहीं मिल जाता.
- तीनों वेद के बनाने वाले जोकर, बेवकूफ और दुरात्मा हैं. वेदों में अश्वमेध यज्ञ का ऐसे पुरोहितों ने किया है जो रात को विचरने वाले माँस भक्षी हैं.
- मीमाँसा सूत्र (32) कहता है वेदों में ऐसी बकवास बातें हैं कि एक बूढ़ा द्वार पर खड़ा है. समर्पण को तैयार ब्राह्मण कहती है, "हे राजन बता प्रतिपदा (अमावस सें अगला दिन) के दिन संभोग का क्या अर्थ है. " अथवा वेदों में यह कथन है कि गायों ने अपनी बलि पर उत्सव मनाया.
- बाबा साहिब अम्बेडकर के अनुसार
  - वेदों में बेवकूफी के सिवाय कुछ नहीं है.
  - वेदों में नैतिकता जैसी कोई बात नहीं है. मात्र अनर्गल बातें हैं.

- वेदों में देव और उनकी पत्नियों सें आकर शराब पीने की प्रार्थनायें हैं.
- वेदों में अश्लीलता है : यजुर्वेद का अश्वमेध यज्ञ (देखें अघ्याय राम जन्म वृतांत) यम-यमी के संवाद, इन्द्र-इन्द्राणी के संवाद (देखें अध्याय 4:गोधर्म) इसके सबूत हैं.
- अथर्व वेद तो झाड़फूंक के मन्त्रों सें ही भरा पड़ा है जिसमें ऐसे मन्त्र हैं : सौत को ठीक करने के, किसी स्त्री को कामुक बनाने के, जूए में जीत के, भूत उतारने के.
-

\- भगवान सिंह व्यंग से कहते हैं कि वेदों से हरेक ज्ञान का आरंभ हुआ है, अन्य बातें छोड़ भी दें तो पोर्नोग्राफी (नग्नता, अश्लीलता) की समझ वेदविदों को पूरी थी. (उपनिषदों की कहानियां 12)

मनु (4.123–124) के अनुसार सामवेद की ध्वनि अपवित्र है. अतः जहां सामवेद की ध्वनि आ रही हो वहां ऋग्वेद तथा यर्जुवेद न पढ़े.

मुण्डकोपनिषद1.2.10 के अनुसार 'वैदिक यज्ञ करना ही सर्वश्रेष्ठ है' ऐसा कहने वाले वेदज्ञ मूढ अर्थात मूर्ख लोग हैं (तिलक 633) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व वेद आदि घटिया विद्याएं हैं. (खण्ड 8.72)

वास्तविकता सत्तगुरु कबीर ने कही हैः

अंध सो दरपण वेद पुराणा, करछी कहां महारस जाना
जस खर चंदन लादेउ भारा, परिमल बास न जाने गंवारा
कहे कबीर खोजे असमाना, सो न मिला जाय अभिमाना.

अर्थात वेदों और पुराणों की इतनी ही उपयोगिता है जितनी अन्धे के लिये दर्पण की होती है. जैसे कड़छी पकवान में डूबे रहने पर भी उसके स्वाद को नहीं जानती वैसे ही वेद पुराण इस संसार में होते हुए भी उसके नैतिक नियमों को नहीं जानते. गधे पर चाहे चन्दन लाद दो या खुशबूदार चावल लाद दो उसे उनकी सुगन्ध सें कोई लेना देना नहीं होता वैसा ही कुछ वेद पुराणों के साथ है. उन्हे सुगन्ध (नैतिकता, सदाचार) सें कोई लेना देना नहीं है. उनमें तो कर्मकांड करने की विधियों का बोझ ही भरा पड़ा है.

पंडित भूला पढ़ गुण वेदा, आप अपनो न जाने भेदा
संध्या तरपण और षटकर्मा, इ बहुरूप करे ऐसा धर्मा.

अर्थात वेद पढ़ कर ब्राह्मण मानवता के गुण भूल गया है. उसे अपने आप का भी पता नहीं है अर्थात वह जानता ही नहीं है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए. उसका ज्ञान और कर्म मात्र कर्मकांडों तक सीमित हो गया है. वह बहरूपिया ऐसे कर्मकांडों को धर्म बताता है. षटकर्मा = ब्राह्मणों के छः काम : वेद पढ़ना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, दान लेना और करवाना .

सद्गुरु कबीर आगे कहते हैं :

पंडित वाद बदै सो झूठा,
राम कहे जो जगत गति पावै, खांड कहे मुख मीठा,
आग कहे पांव जो दाझै, जल कहै प्यास भाजै!
भोजन कहे भूख जो भाजै, तो दुनिया तर जाजै!!

गीता : बाढ़ आने पर जितना कूंए का महत्व है उतना ही महत्व वेदों का है.

बुद्ध बोले : वेद पथ विहीन जंगल हैं, बिना पानी के तालाब हैं......

वेद भी आपस में लड़ते भिड़ते हैं. मनु का आदेश : जहां साम वेद के पाठ करने की आवाज आती हो वहां ऋग्वेद और यजुर्वेद न पढ़े जाएं. (मनु 4.123)

वेदों में दी गईं ज्ञान की कुछेक निम्न प्रकार सें हैंः

1. जिस प्रकार मासिक धर्म के बाद स्त्री काम सें पीड़ित पुरुष के पास जाती है वैसे ही उषा चलती है. सरस्वती कुछ लोगों के सामने वैसे ही कपड़े उतार कर नंगी हो जाती है जैसे मासिक धर्म के बाद स्त्री काम सें पीड़ित पुरुष के सामने नंगी हो जाती है. (ऋग 1.24.7)
2. मैं मेरी माँ के पति की स्तुति करता हूँ जो कि उसकी बहन का यार है, वह सुने (ऋग. 6.55.76)
3. बकरी सें संभोग करने सें गुदा मार्ग सें निकलने वाली वायु ठीक हो जाती है. मेढे सें संभोग करने सें आवाज शुद्ध हो जाती है. (यजु 21.60)
4. हे बूटियो, मैं तुम्हें इसलिए उखाड़ रहा हूँ ताकि तुम मेरा लिंग वैसे ही सीधा तान दो जैसे तुमने नपुंसक वरुण का लिंग ताना था. (अथर्व 4.4.1) हे अग्नि, हे सरस्वती आदि देवो इस आदमी का लिंग धनुष की डोरी की तरह सीधा कर दो. उसे घोड़े, मेढे के लिंग की तरह सीधा कर दो. (अथर्व 4.4.6)
5. उत्तर में देव कहते हैं हम तुम्हारा लिंग धनुष की डोरी की तरह तान रहा हूँ ताकि तुम स्त्रियों पर हावी रहो. (अथर्व 6.10.3)
6. इस कन्या को मर्द चाहिए और मुझे एक स्त्री. इसलिए मैं एक लम्पट घोड़े की तरह इससें संभोग करने आया हूँ. (अथर्व 2.30.3)

7. हे कन्या अब तुम बच्ची नहीं रही हो, तुम्हारे स्तन इतने बड़े हो गए हैं कि पुरुष उनको मसलें. तेरी माँ ने अपने स्तन पुरुषों सें नहीं मसलवाये इसलिए वे ढीले होकर लटक गये हैं. अब मेरी बात मानो और लम्बी लेट जाओ. (अथर्व 20.133.1)
8. हे देव जो स्त्री अपनी टांगे फैला देती है उसमें हम अपना लिंग घुसा देते हैं. (अथर्व 14.2.38)
9. एक बाप ने अपनी बेटी को गर्भवती कर दिया. (अथर्व 9.10.12)
10. मैं वरुण को अपने मूत्र सें तृप्त करता हूँ. वृष्ण को अपने अण्डकोश सें तृप्त करता हूँ. (यजु 25.7)

(उपरोक्त वेद मंत्र भदन्त कोशल्यायन ने अपनी पुस्तक "दर्शन" में दिये हैं. उनके द्वारा दी गई श्लोक संख्या हमारे पास उपलब्ध ऋग्वेद सें मेल नहीं खाते हैं)

10.3 उपनिषदों में भरी धूर्तता

ब्राह्मण साहित्य में अगर कहीं थोड़ी बहुत दर्शन या ज्ञान की बात सुनाई पड़ती है तो वे उपनिषद हैं. आरम्भ में उपनिषद क्षत्रियों ने लिखे थे और उनकी ही सम्पत्ति होते थे. उपनिषद वास्तव में ब्राह्मण क्षत्रिय संघर्ष की ही कड़ी है. ब्राह्मण अपने वेदों को महान बताते थे तो जवाब में क्षत्रियों ने अपने उपनिषदों की रचना कर डाली. शुरु में क्षत्रिय अपना उपनिषदिक ज्ञान ब्राह्मणों को नहीं देते थे. उपनिषदों के रचियता वेदों के मन्त्रों को कुत्ते की भौं भौं और ब्राह्मण ऋषियों को भौंकने वाले कुत्तों के समान बताते थे. एक समय ऐसा था जब उपनिषदियों और वेदज्ञों में भयंकर संघर्ष चला. दोनों अपनी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में लगे हुए थे.

आरम्भिक उपनिषदों ने वेदों, वैदिक ऋषियों और वैदिक कर्मकांडों जैसे यज्ञ, बलि आदि का पूर्णतया खण्डन किया. संकराचारय भी मानता था कि केवल वही लोग यज्ञ करा सकते हैं जिन्होंने वेद पढ़े हैं. जिन्होंने उपनिषदों का आत्मज्ञान प्राप्त किया है उनके लिए यज्ञ वर्जित हैं. (खण्ड 8.76) मुण्डक उपनिषद का कथन है कि चारों वेद घटिया विद्याएं हैं. वेद कहते थे बलि देना जरूरी है उपनिषद कहते थे बलि देना आवश्यक नहीं है. (खण्ड 8.76)

लेकिन जैसा कि बाबा साहिब ने भी कहा है और हम सब जानते हैं कि ब्राह्मण धन के लिए कुछ भी कर सकता है, उन्होंने अपना धन्धा चालू रखने के लिए साम की नीति अपनाते हुए उपनिषदों को भी अपना बना लिया. बुद्ध काल सें बहुत बाद तक उपनिषद वेदों सें भिन्न थे. उन्होंने सचमुच वेदों का अन्त कर दिया था. लोग वेदों को और उनमें वर्णित बलि वाले यज्ञों को लगभग छोड़ चुके थे. लेकिन पहली सदी में जब सम्राट वृहदर्थ का कत्ल करके ब्राह्मण सत्ता पर काबिज हुए उन्होंने उपनिषदों को भी हड़प लिया. उपनिषदों के अन्दर भी वेद समर्थक बातें भर दी गईं. उपनिषदों में भी बलि देना, यज्ञ करना उचित और अनिवार्य ठहरा दिया गया.

आज के समय में ब्राह्मणों के कुल 108 उपनिषद हैं. उपनिषदों की शुरुआत उन क्षत्रिय ऋषियों ने की थी जो वेदों की अनर्गल बातों के विरुद्ध थे मगर समय के साथ वैदिक ब्राह्मणों ने न केवल वेद के समर्थन में उपनिषद लिखे बल्कि वेद विरोधी उपनिषदों की रचना भी कर डाली. रही सही कसर संकराचारय ने पूरी कर दी. जहां पहले उपनिषद वेदांत अर्थात वेदों का अंत करने वाले माने जाते थे उसने वेदांत का अर्थ वेदों का अंतिम भाग बना दिया.

बाबा साहिब के अनुसार ब्राह्मणों को अपने धार्मिक साहित्य में कभी अटल विश्वास नहीं रहा. उनका एक ही मकसद था और है कि जैसे भी हो हर हालात में पैसा बनाया जाए. उपनिषद वेद का अंत करने वाला हो या उसका अंतिम भाग उन्हें कोई अंतर नहीं पड़ता.

आम भारतीय यह नहीं जानता कि उपनिषदों में वास्तव में क्या भरा है. परन्तु ब्राह्मणवादियों ने जोर शोर सें प्रचार करके लोगों के दिमाग में यह बात बैठा रखी है कि उनमें ऐसे गूढ़ ज्ञान की बातें भरी हुई हैं जो आम आदमी की समझ सें परे की बाते हैं. असल में उपनिषदों में निम्न बातें हैं:

1. **ब्रह्म ज्ञान :** उपनिषदों के बारे में सबसें अधिक जो प्रचार किया गया है वह यह है कि उनमें ब्रह्मज्ञान की बातें बताई गई हैं. ब्रह्म ज्ञान अर्थात वह ज्ञान जो सबसें बड़ा है, सबसें महान है. जिस ज्ञान की प्राप्ति के बाद अन्य किसी वस्तु अथवा किसी ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं रहती. ब्रह्मज्ञान ऐसा चुंबक था कि उसकी प्राप्ति के लिए राजा भी अपनी बेटी तक सौंपने को तैयार हो जाता था.

   सबसें पहला प्रश्न तो यही उठता है कि क्या कभी ऐसा हो सकता है कि आदमी को और अधिक ज्ञान की लालसा अथवा आवश्यकता ही न रहे. जिस दिन आदमी की और अधिक ज्ञान प्राप्ति की लालसा अथवा आवश्यकता समाप्त हो जाएगी उसी दिन सें आदमी का विकास रुक जायेगा और जैसे रुका हुआ पानी सड़ जाता है वैसे ही आदमी भी सड़ कर नष्ट हो जायेगा. इसीलिए मनुष्य जन्म सें लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है. उसके ज्ञान प्राप्ति की लालसा का कभी अंत नहीं होता. **केवल पागल हो जाने पर ही व्यक्ति और अधिक ज्ञान पाने की लालसा सें दूर हो पाता है.** अतः जो ब्रह्मज्ञानी होता है वह पागल होता है या केवल पागल हो जाने पर ही आदमी ब्रह्मज्ञानी हो सकता है.

वैसे उपनिषदों के अधिकतर श्लोकों को पढ़ कर तो कुछ ऐसा ही आभास होता है कि यह ग्रन्थ किसी अर्ध पागल व्यक्ति द्वारा की गई बड़बड़ाहट है. जैसे पागल अनाप शनाप बकता रहता है ऐसा ही कुछ अनाप शनाप इन ग्रन्थों में भरा पड़ा है. उदाहरण के तौर पर किसी ऋषि ने अफारे सें मरते हुए किसी पशु को देख लिया तो उसने आत्मा के बारे में ज्ञान बघार दिया कि आत्मा मरते समय अपान वायु (गुदा सें निकलने वाली हवा) सें निकल जाती है. किसी ने किसी कीड़े को टहनियों पर चलते हुए देख लिया तो उसने कह दिया कि जैसे कीड़ा एक टहनी सें दूसरी टहनी पर जाते समय जैसे अपने अगले पांव दूसरी टहनी पर मजबूती सें जमा लेने के बाद ही पहली टहनी सें अपने पांव हटाता है वैसे ही आत्मा एक शरीर सें दूसरे में जाते समय नये शरीर में स्थान बना लेने के बाद ही पहले शरीर को छोड़ती है. उपनिषदों में कुत्ते, बैल, घोड़े मुर्गे आदि द्वारा भी ब्रह्मज्ञान देने की घटनाएं दर्ज हैं.

हाँ, एक बात पक्की है कि इस ब्रह्म–ज्ञान के नाम पर ऋषियों ने लोगों को खूब ठगा है और अब उनके उतराधिकारी ब्राह्मण पण्डे लोगों को उल्लू बना रहे हैं.

छांदोग्य उपनिषद (4.1) उपनिषदों की कहानियों सें चैक करो 18.06.2006 चैक किया 27.10.2006 वहां उपनिषद का नाम नहीं में वर्णन है कि जानश्रुति नामक राजा उस समय के ब्राह्मण ऋषि रैक्व सें ब्रह्म ज्ञान लेने गया. रैक्व ने ब्रह्मज्ञान देन सें पहले दक्षिणा मांगी. राजा ने धन, हाथी घोड़े दासियां देनी चाहीं लेकिन ब्राह्मण ऋषि तो ब्रह्म–ज्ञानी था. उस के लिए यह सब चीजें अप्रयाप्त थीं. काफी मोल भाव करने पर अन्त में ब्राह्मण ऋषि राजा की कमसिन कन्या के बदले में ब्रह्म–ज्ञान देने को तैयार हुआ.

ब्राह्मण ऋषि रैक्व दाद खाज खुजली का मरीज था. सारे शरीर पर कोढ़ सा फूटा हुआ था. कुत्ते उस अजीब से प्राणी को देख कर उसके पीछे पड़ जाते होंगे इसलिये वह हमेशा छकड़े/बैलगाड़ी के नीचे छिप कर पड़ा रहता था. उस राजा ने अपनी फूल सी बेटी उस कोढ़ी के हवाले कर दी.

सबसें पहले तो यह कथा यह दर्शाती है कि ब्रह्म–ज्ञान का नैतिकता सें कहीं कोई सम्बंध नहीं है. अगर ब्रह्मज्ञानी नैतिक होते तो वह ब्राह्मण ऋषि राजा की कमसिन कन्या पर अपनी नीयत नहीं डुलाता. दूसरे यह कि इन ब्राह्मणों ने हमें दिमागी तौर पर इतना पंगु बना दिया है कि राजा तक अपनी कमसिन बेटी को बलात्कार के लिये एक कोढ़ी ब्राह्मण को पेश करने तक सें नहीं झिझकता.

पूछा जा सकता है कि रैक्व ने ऐसा क्या ब्रह्मज्ञान दिया कि उसके बदले में राजा ने अपनी बेटी भी उस ब्राह्मण ऋषि को बलात्कार के लिये सौंप दी. इसी उपनिषद के अनुसार उस ब्राह्मज्ञान को जानने के लिये इन्द्र पूरे सौ साल प्रजापति के चक्कर काटता रहा. लगता है इन्द्र के पास प्रजापति को फीस देने के लिये कोई कमसिन बेटी नहीं थी. खैर जो ब्रह्मज्ञान दिया गया वह इस प्रकार सें था, "वायु सबसें महान है. आग बुझ कर वायु में मिल जाती है. सूर्य और चांद भी वायु में अस्त हो जाते हैं. पानी भी सूख कर हवा में मिल जाता है."

हमारा ख्याल है कि कोई भिखमंगा भी इससें ज्यादा अक्ल की बात बता सकता है.

इस संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन ने बिल्कुल सही कहा है कि ब्रह्मज्ञान का प्रचार ब्राह्मण ऋषियों की रोजी रोटी (ऐयाशी और लूट) का ऐसा साधन है जो यज्ञों सें मिलने वाली दक्षिणा सें भी ज्यादा कारगर और मजबूत था. (दर्शन दिग्दर्शन 476) असल में बुद्ध महावीर और चार्वाक द्वारा यज्ञ विरोधी प्रचार करने के कारण ब्राह्मणिक यज्ञ बंद हो गये थे. इससें उन्हें मिलने वाली सुरा, सम्पत्ति और स्त्री का अभाव हो गया था. तब ब्राह्मण ऋषियों ने अपनी आय का पक्का साधन बनाने के लिये ब्रह्मज्ञान का स्थाई मार्ग ढूंढ लिया जिसके चक्र सें भारतवासी आज तक नहीं निकल पाये हैं. आज भारतवासी जन्म सें लेकर आदमी के मर जाने के बाद तक भी ब्राह्मणों द्वारा फैलाये गये आत्मा के मायाजाल सें नहीं निकल पाता है.

19.06.2006 49 साल

ब्रह्मज्ञान का असली अर्थ कौषीतकी उपनिषद में दिया गया है. उसके अनुसार **जो आदमी ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेता है उसे कोई पाप नहीं लगता. उसके मन में चाहे महापाप भरा हो लेकिन उसके चेहरे पर इसकी झलक भी नहीं आती. इन्द्र अपनी उदाहरण देते हुए बताता है मैंने विश्वकर्मा के पुत्र त्रिशिर को मार दिया, ध्यान लगा कर बैठे सन्यासियों को मार कर उनके टुकड़े टुकड़े करके भेड़ियों के आगे डाल दिया. प्रहलाद, कालकश और पुलोमी के लोगों को मारा परन्तु मुझे कोई पाप नहीं लगा. (3.1) (समु 7.206)**

कठोपनिषद (1.2.14) के अनुसार ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने पर आदमी धर्म, अधर्म अच्छे, बुरे सें परे हो जाता है. ईशोपनिषद का कहना है कि ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने पर आदमी जो काम करे उसे उसका फल नहीं मिलता. छांदोग्य (8.4.1) तो ऐसे आदमी को कुछ भी करने की छूट देता है.

अतः जिस आदमी ने उपनिषदों का ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया वह कोई भी गंदे सें गंदा काम करे यानि चोरी करे डाका डाले हत्या करे बलात्कार करे उसे उसका फल अर्थात पाप नहीं लगेगा. दूसरा यह कि ब्रह्मज्ञानी वह है जिसके मन में चाहे कितना भी मैल भरा हो लेकिन वह अपने चेहरे सें इसकी भनक भी नहीं लगने देता.

2. **ब्रह्म–आनन्द बनाम संभोगानन्द :** ब्राह्मणवाद में काम वासना धर्म का अभिन्न अंग है. वृहदारण्यक उपनिषद (4.3.21) का कहना है कि जैसे पुरुष स्त्री मिलन के समय सभी कुछ भूल जाते हैं वैसे ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त

होने पर आदमी सब कुछ भूल जाता है. अतः उपनिषद सैक्स को ब्रह्मज्ञान की संज्ञा देते हैं. मैथुन की एक एक क्रिया को यज्ञ की एक एक क्रिया सें मिला गया. (इसका वर्णन अध्याय 5 "यज्ञ" में किया जा चुका है.) तभी कृष्ण ने मुक्त व्यभिचार के द्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने का रास्ता चुना. लगभग समस्त ऋषि इसी रास्ते पर चले. खजुराहो, जगन्नाथ आदि मंदिरों में "ब्रह्म-आनन्द" में लीन नंगी मूर्तियां में लगाई गईं ताकि भक्तों को भी ब्रह्म-आनन्द का कुछ तो प्रसाद मिले. रजनीश ने भी संभोग को समाधि की चरम सीमा माना. और तो और जब सीता महात्मा रावण के पास थी तो मर्यादा पुरुषोतम कहे जाने वाला राम इस कदर काम वासना सें पीड़ित होकर इस तरह बिलबिलाया कि उसका भी ब्रह्मज्ञानी होने का पता चल गया.

बेशक जीवित प्राणियों में नर और मादा का मेल एक नैसर्गिक सम्बंध है. सैक्स अथवा काम जीवन का अत्यावश्क अंग है परन्तु सिवाय ब्राह्मणवाद के किसी भी धर्म ने सैक्स को धर्म का अंग नहीं बनाया. और न ही किसी अन्य धर्म के देवताओं ने व्यभिचार का ऐसा खुला खेल खेला. पशु मात्र सन्तान पैदा करने के लिये सम्बंध बनाते हैं. उनमें कोई निश्चित जोड़ा नहीं बनाता लेकिन मनुष्यों में मात्र सन्तान पैदा करने के लिये नर मादा का सम्बंध नहीं बनता. बहुत से लोगों के लिये विशेषतः ब्राह्मणवादियों के लिये सैक्स ब्रह्मआनंद प्राप्ति का मार्ग है. इसके सभी देवता ऋषि मुनि पंडित इसी काम में लगे हुये हैं. प्राचीन काल में सभी ऋषि और देवता पशुओं की तरह बेरोकटोक बेपर्दा सैक्स करते थे.

इसके साथ यह भी एक तथ्य है कि मानव समाज में नर मादा का ही नहीं बल्कि माँ बेटे, बहन भाई, बाप बेटी का रिश्ता भी होता है. इसलिये समाज ने सैक्स अथवा काम वासना के बारे में निश्चित नियम बनाये हैं ताकि समाज में अनाचार न फैले. लेकिन ब्राह्मणों का गूढ़ ज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान कहता है कि किसी भी स्त्री को नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि मैथुन ही ब्रह्मआनन्द है और मैथुन की क्रिया करने का ज्ञान ब्रह्मज्ञान है. तभी तो संकराचारय विधि बताता है कि बिना बच्चे पैदा किये किस तरह सें ब्रह्मआनन्द लिया जाये. और जो स्त्री ब्रह्मआन्नद देने सें इन्कार करे उसे किस तरह सें बांझ बना जाये अथवा उसके साथ किस प्रकार सें बलात्कार किया जाये. वैसे भी ब्राह्मण ऋषियों और उनकी रखैलों को अपने बच्चों की परवाह होती ही नहीं थी. विश्वामित्र और मेनका ने शकुन्तला को पैदा करके यूं ही फैंक दिया था. सीता के तो मां—बाप का भी पता नहीं कि किस ने ब्रह्मआनन्द लेकर उसे खेत में पटक दिया. पाराशर के बलात्कार (ब्रह्मआनन्द) सें पैदा हुए व्यास को भी सत्यवती यूं ही जंगल में पटक आई थी. कुन्ती ने भी सूर्य सें ब्रह्मआनन्द करके कर्ण को यूं ही फैंक दिया था.

ब्राह्मणवाद के यह ग्रन्थ घटिया और बेहयाईपूर्ण ही नहीं बल्कि समाज में धर्म के नाम पर व्यभिचार फैलाने वाले भी हैं. ऐसे गन्थों और उनके ब्रह्म के कारण ही ब्राह्मणवाद धर्म न होकर गोधर्म बन गया है. उनके सृश्टिकर्ता ब्रह्मा सें लेकर शंकरा तक सभी इसी ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मआनन्द सें लबालब हैं. इसी कारण कृष्ण के साथ घर बसाने वाली रुक्मणी को कोई पूछता ही नहीं लेकिन माँ समान होते हुए भी उसके साथ व्यभिचार करने वाली राधा हर मंदिर में पूजी जाती है. इसी ब्रह्मज्ञान के कारण हर मंदिर में शिव के लिंग और पार्वती की योनि की पूजा होती है. ब्राह्मणों ने अपनी सैक्स पूर्ति के लिये ऐसे ग्रन्थों की रचना की है.

3. **दोगली बातें : वेदों का विरोध और समर्थन एक साथ :** उपनिषदों के रचियता शुरू में वेदों, ऋत्विकों और यज्ञों के कट्टर विरोधी थे. जब ऋत्विक यज्ञ करने के लिये मन्त्र बोलते थे तो उनकी नकल में उपनिषदों के रचियता कहते थे कि ऋत्विक कुत्तों की तरह भौंक रहे हैं 'ओम आओ शराब पीयें, ओम आओ माँस खाएं." (छांदोग्य 1.12.4) (राधाकृष्णन 1.120)

आरम्भ में तो उपनिषदों ने वेदों का विरोध किया. तभी उपनिषदों को वेदान्त अर्थात वेदों का अन्त करने वाला कहा जाता है. उपनिषदों ने सचमुच वेदों की धज्जियां उड़ा दी थीं. इससें ब्राह्मणों की रोजी रोटी (ऐयाशी और लूट) बन्द होने जैसे हालात बन गये थे. लेकिन शीघ्र ही उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया कि वे लोग तो अपने ही भाईयों के पेट पर लात मारने जा रहे थे. सो उन्होंने तुरंत अपनी भूल सुधारी और जहां जहां वेदों की निन्दा की गई थी वहीं पर यज्ञों की महिमा भी बखान दी गई. रही सही कसर संकराचारय और दयानन्द जैसे धूर्तों ने निकाल दी. उन जैसे लोगों ने मन माने ढंग सें इन ग्रन्थों पर टीकायें लिखीं जैसा जी किया वैसे अर्थ किये. प्रचार तन्त्र पर इन लोगों का कब्जा तो है ही सो उनकी फूहड़ता व धूर्तता को "विद्वता" बना दिया गया. दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश पढ़ कर देख लें, शंकर का भाष्य पढ़ कर देख लें, इस्कॉन के ए सी पी की गीता भागवत के किये अनुवाद पढ़ कर देख लें. इनकी किताबों सें ऐसा लगता है जैसे किसी अनपढ़ फूहड़ अथवा किसी धूर्त ने बड़ बड़ की हो. उदाहरण के लिये संकर ब्रह्मचार्य की महिमा सुना रहा है और साथ में बता रहा है कि किस विधि सें स्त्री सें बलात्कार या मैथुन किया जाये कि बच्चे पैदा न हों!! क्या यह ब्रह्मचर्य है? भागवत पर टिप्पणी करता हुआ एसीपी कहता है कि प्राचीन काल में ब्राह्मण यज्ञ में बूढ़ी गाय बैल इसलिये काट लेते थे ताकि

उनको नया शरीर मिल जाये! तो क्या एसीपी ने अपने माँ बाप के साथ भी ऐसा ही किया था. या उसने अपने बेटे अथवा चेलों सें भी यही कहा है कि जब वह बूढ़ा हो जाये तो उसे भी यज्ञ में बलि चढ़ा दें ताकि उसे भी नया स्वस्थ शरीर मिल जाये. जैसे ये "विद्वान" हैं वैसे ही इनके उपनिषद हैं. उदाहरणतः

- मुण्डक उपनिषद के अनुसार छः चीजें : ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद की शिक्षा, कल्प (वैदिक कर्मकांड : मन्त्र उच्चारण यज्ञ करना बलि देना आदि) व्याकरण, निरूक्त, छंद और ज्योतिष निकृष्ट अथवा घटिया हैं . (1.1.5)
- यज्ञों को झूठ-मूठ मुक्ति दायक बताया जाता है इसलिये इसमें बैठने वाले 18 लोग (सोलह ऋत्विक, यजमान और उसकी पत्नि) टूटी हुई नौका में बैठते हैं जो अंततः उन्हें डुबो देगी. जो लोग इन यज्ञों में विश्वास करते हैं वे कभी भी जन्म या मृत्यु सें छुटकारा नहीं पा सकते. (1.2) (समु 7.206)
- वैदिक कर्मकांड करने में भला होने की सोचने वाले मूर्ख अन्धे और कच्ची अक्ल के हैं. (7.8)(समु 7.206)

  लेकिन अगले ही श्लोकों (1.1.8, 1.2.3) में कहा गया है कि उस व्यक्ति की सात पीढ़ियां नष्ट हो जाती हैं :
  - जो अग्निहोत्र के बाद अमावस्या व पूर्णमासी और चतुर्मासी यज्ञ नहीं करता.
  - जो फसल कटने के बाद अतिथि यज्ञ नहीं करता. (आज चाहे लोग ब्राह्मण के दर्शन करना भी अशुभ मानते हैं लेकिन किसी समय वह सबसें बड़ा अतिथि होता था. घर आये ब्राह्मण को **सब कुछ** अर्पण करना पड़ता था)
  - जो आहूति और हवन सामग्री नहीं देता.
  - और जो देवों के लिये पूजा पाठ और अनुश्ठान (बलि देने का) नहीं करता.
- उस परमात्मा ने वेदों के साथ साथ उपनिषद भी बनाये. (वृहद.2.4.10)

4. **यज्ञ बनाम मैथुन :** उपनिषदों का ब्रह्मज्ञान कहता है कि यज्ञ और मैथुन एक समान हैं. संकराचारय ने छांदोग्य उपनिषद पर अपने भाष्य में यज्ञ और मैथुन को एक ही चीज बताया है जिसका वर्णन अध्याय पाँच में किया जा चुका है. यही उपनिषदों का ब्रह्मज्ञान था जिसे पूरी हिफाजत सें लोगों सें छिपा कर रखा गया था. छांदोग्य उपनिषद (2.13.2) में आदेश है कि किसी भी स्त्री को छोड़ना नहीं चाहिए. संकर ने लीपापोती करते हुए कहा कि जो स्त्री मैथुन हेतु बिस्तर पर आये उसे नहीं छोड़ना चाहिए.

सर्वप्रथम तो किसी भी गैर स्त्री सें यौन संबंध बनाना ही अनैतिकता है. अतः जो ग्रन्थ ऐसा अनैतिक काम करने की शिक्षा देते हैं वे धार्मिक तो कदापि हो ही नहीं सकते. दूसरे संकर भूल गया कि उपरोक्त श्लोक में कहीं भी "बिस्तर पर आने" का उल्लेख नहीं आया है. वह यह भी भूल गया कि उसके पूर्वज उपरोक्त श्लोक का पालन अक्षरशः करते थे. क्या कोई वेदांती बता सकता है कि सरस्वती ने कब अपने बाप ब्रह्मा के बिस्तर पर जाने की इच्छा की थी जो उसने अपनी बेटी सें नारद पैदा किया. अथवा महामाता वृन्दा कब बलात्कारी विष्णु के बिस्तर पर गई थी. अथवा विष्णु कब मोहिनी बन कर शिव के बिस्तर पर गया था. अथवा अहिल्या कब ऐयाश इन्द्र के बिस्तर पर गई थी.

5. **नारी : केवल भोग की वस्तु :** उपनिषदों के गूढ़ज्ञान अर्थात ब्रह्मज्ञान के अनुसार नारी केवल ब्रह्मआनन्द लेने की वस्तु है. अतः संकराचारय का कहना है कि अगर स्त्री वासना पूर्ति सें इन्कार करे तो पुरुष पहले उसे प्यार सें मनाये फिर उपहार दे. तब भी न माने तो उसे थप्पड़ मारे घूंसे मारे या लाठी सें पीटे और उसे धमकी दे कि वह उसे बदनाम कर देगा. (वृहद. 6.4.7) अगर तब भी स्त्री न माने तो उसके साथ जबरदस्ती करे. उसने एक मन्त्र भी बताया है कि पुरुष बलात्कार करते हुए साथ में यह मन्त्र भी पढ़े तो स्त्री बांझ हो जाएगी.

अतः उपनिशदिक ब्रह्मज्ञान के अनुसार स्त्री को किसी भी तरह सें बचने का कोई रास्ता नहीं है. प्यार सें माने तो ठीक है वर्ना बलात्कार की शिकार होगी ही.

यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि उपनिषद पति और उसकी पत्नि के सम्बंधों की बात नहीं कर रहा है. वह तो **किसी भी स्त्री के लिये हर पुरुष** को यह ज्ञान दे रहा है. अर्थात उपनिषदिक ज्ञान के अनुसार कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री के साथ ऐसा कर सकता है. यह कतई जरूरी नहीं कि स्त्री उसकी पत्नि हो और वह उसका पति हो. संकराचारय ने लीपापोती करते हुए पुरुष की जगह पति और स्त्री की जगह पत्नि शब्दों का प्रयोग किया है मगर उपनिषद में कहीं भी पति पत्नि शब्द नहीं आया है.

अतः वास्तव में उपनिषदों में ब्राह्मण ऋषियों व देवों ने दूसरों की बहन, बेटियों, पत्नियों के साथ ब्रह्मआनन्द मनाने का ब्राह्मण–धार्मिक ढंग बताया गया है. ब्राह्मण ऋषियों और देवों ने जिस ढंग सें परस्त्री गमन किया है वह इस बात का सबूत है कि उपनिषदों में वर्णित स्त्री का अर्थ है कोई भी स्त्री!!

6. **अपराधिक तन्त्र मन्त्र :** उपनिषद ब्रह्मआनन्द के अतिरिक्त अन्य ब्रह्मज्ञान के भण्डार भी हैं उदाहरणतः

- विद्वान पुत्र पैदा करना हो तो स्त्री पुरुष चावल में बैल अथवा सांड का माँस घी मिला कर खायें.
- पत्नि के यार को मारना हो तो कच्ची मिट्टी के बर्तन में विपरीत रीति सें हवन करे. साथ में यह मन्त्र पढ़े : मम समिद्ध असी (यार का नाम) स्वाहा कह कर आहूति दे. पत्नि का यार जरूर मर जायेगा.
- सपने में स्त्री दिखे तो काम बन जाएगा, काले दांतों वाला दिखे तो मौत होगी. (छांदोग्य 5.2.8)
- जहां धरती और सागर मिलते हैं उनके बीच में छुरे की धार जितना खाली स्थान है वहां से होकर अश्वमेध यज्ञ करने वाले स्वर्ग को जाते हैं. (छांदोग्य 8.13.1)
- वृहद. उपनिषद (2.1.9) के अनुसार दिल के चारों ओर 72000 नाड़ियां हैं. इनकी आगे 72 करोड़ 72 लाख 6 हजार 201 उपनाड़ियां हैं. छांदोग्य वाले को दिल के चारों सुनहरे, सफेद नीले पीले और लाल रंग की नाड़ियां भी दिखाई दी हैं. (2.1.19) वाह ब्रह्मज्ञान!!
- चोरी के आरोपी के हाथ में गर्म लाल लोहे का टुकड़ा रखो अगर हाथ जल जाये तो वह दोषी है. अतः उसे मार दिया जाना चाहिये. (6.16.1) उपनिषद रचने वाले के हाथ में रखते तो क्या वह बच जाता!!
- ब्राह्मज्ञानी क्योंकि पाप लगने के बोझ सें दूर हो जाता है अतः साधारण मनुष्य को निर्देश दिया गया है कि उसके मन में जब भी संशय हो तो वह ब्रह्मज्ञानियों सें उपाय पूछे और उनके बताये मार्ग पर चले. आम आदमी तो राजा की तरह अपनी बेटी ऋषियों को देकर ब्रह्मज्ञानी बन नहीं सकता अतः उसे जब भी कोई समस्या आये तो इन ठगों के पीछे दौड़ता रहे.

7. **उपनिषदिक सत्यमेव जयते :** ब्राह्मणिक विद्वान गला फाड़ कर चिल्लाते हैं कि उनके उपनिषद में लिखा हैः "सत्यमेव जयते सत्यं जयति नानतृं' अर्थात केवल सच्चाई की जीत होती है सदा सच्चाई की जीत होती है झूठ नहीं जीतता. उन्होंने अपने इस नारे को भारत के राष्ट्रीय चिन्ह (सम्राट अशोक के चार शेर) के नीचे भी टिकवा लिया है.

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या ब्राह्मणधर्म में भी "सत्यमेव जयते" की जीत होती है? इस कथन को तीन कसौटियों पर परखा जा सकता है :

पहला यह कि क्या यह कथन अपने आप में सत्य है कि सत्य की हमेशा जीत होती है.

दूसरा यह कि जिन्होंने (ब्राह्मणधर्मियों) यह नारा दिया है उनके लिए इस "सत्य" का क्या अर्थ है.

तीसरे यह कि क्या जिन्होंने यह नारा दिया है क्या उन्होंने कभी सत्य के द्वारा जीत प्राप्त की है!

1. सबसें पहले तो यही सवाल उठता है कि क्या सदा ऐसा ही हुआ है कि सिर्फ सच्चाई की ही जीत हुई है और झूठ कभी नहीं जीता. हमारे विचार में अगर ऐसा ही हुआ होता तो आज यह धरती सुखपूर्वक रहने की सबसें बढ़िया जगह होती. अगर सत्य की ही जीत हुई होती तो निरपराध को कभी सजा नहीं होती और दोषी कभी बच नहीं पाता. सभी पुरोहित आज जेलों में होते.

असल में सही कहावत है जो जीता वही सिकन्दर. वास्तव में यही "सत्य" है. जो जीतता है वही सत्य होता है. जब हिटलर जीत गया तो वही सत्य था. हार गया तो वह झूठ हो गया. जब सद्दाम हुसैन ईराक के राष्ट्रपति थे उनकी मूर्तियां हर गली चौराहे पर लगी हुई थी. वही वहां के सत्य थे. आज अमरीका दुनिया का सबसें ताकतवर देश है. आज वह जो कहता है वही सत्य है. इराक के पास चूहे मारने की पिस्तौल भी नहीं मिली लेकिन अमरीका उस पर कब्जा किये बैठा है क्योंकि अमरीका का कहना है कि इराक ने दुनिया समाप्त करने के हथियार बना रखे हैं. भारत में कांगेसी सरकार ने धूर्त गांधी को आज उपभगवान बना रखा है. आज गांधी सत्य है. देश का नाश करने वाला गांधी आज राष्ट्रपिता कहलाता है. कल को जब कांगेस की सरकार नहीं रहेगी तो गांधी भी मर जाएगा.

गांधी सें लेकर वाजपेयी तक सभी ने गरीबों के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी. गरीब वहीं के वहीं हैं लीडरों के खाते विदेशी बैंकों में खुल गये है. अगर सत्य ही जीतता तो गरीबी कभी की समाप्त हो चुकी होती. अतः यह कहना ही सबसें बड़ा झूठ है कि सत्यमेव जयते होता है!!

अगर सत्य की ही जीत होती तो भारत सें बौद्ध धर्म कभी विलुप्त नहीं होता. धूर्त ब्राह्मणों का भारत पर कभी कब्जा नहीं होता! सत्य की विजय सदा नहीं होती. बहुत बार सत्य बौद्ध धर्म की तरह हार भी जाता है.

2. **ब्राह्मणों के बारे में 3.9.06 शेष कल करनाल सें आकर!!** ब्राह्मणों के "सत्यमेव जयते" के सिद्धांत की सत्यता जानने के लिए यह जानना जरूरी है कि ब्राह्मणों ने "सत्य" किसको कहा है. उनकी सत्य की परिभाषा

जानने के लिए उनके धर्म ग्रन्थों को परखना पड़ेगा. माननीय सुरेन्द्र अज्ञात (कालाम सुत्त) के अनुसार उनके धर्म ग्रन्थ "सत्य" की परिभाषा इस प्रकार सें देते हैं:

अ) **तद्यत्सत्यंत्रयी सा विद्या** : जो सत्य है, वही चारों वेद हैं. वेदों में केवल सत्य है. अर्थात वेद ब्राह्मणों का सत्य हैं. (शतपथ 9.5.1.18)

आ) **तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्** : वेद ईश्वर द्वारा रचे गये हैं. अतः उन्हें प्रमाण माना जाना चाहिए. उनकी हर बात सत्य मानी जानी चाहिए. (वैशेषिक दर्शन 1.1.3)

इ) **मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्** : जैसे आयुर्वेद में बताई गई एक रोग की दवा और परहेज अगर सही हो जाएं तो पूरे आयुर्वेद को सत्य मान लिया जाता है वैसे ही वेद में अगर एक बात सत्य है तो पूरे वेद को सत्य माना जाना चाहिए. (न्याय दर्शन 2.1.67)

ई) **स एव पूर्वेषामपि गुरूः कालेनानवच्छेदात्** : वेद सत्य का उपदेश देते हैं. इसलिए परमात्मा सब का गुरू है और वेद उस गुरू के वचन हैं. (योगदर्शन 1.1.26)

उ) **शास्त्रयोनित्वात्** : ईश्वर सब कुछ जानता है. अतः उसके द्वारा दिये गये ज्ञान में, वेदों में सब कुछ है तथा सत्य है. (वेदान्तदर्शन 1.1.3)

ऊ) **नैषा तर्केण मतिरापनेया** : ब्रह्मज्ञान (सर्वोच्च सत्य) तर्क द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता. (कठोपनिषद 1.2.9)

उपरोक्त बातों सें स्पष्ट है कि ब्राह्मणों के लिए वेद ही सत्य हैं. जो कुछ भी वेदों में लिखा है सभी कुछ उनके लिए सत्य है. अतः जब ब्राह्मण और उनके ग्रन्थ – वेद, पुराण, उपनिषद, गीता, रामयण आदि सत्य की बात करते हैं तो वे वेदों को सत्य मानने की बात करते हैं. वेदों और अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में क्या है, इस पुस्तक में पहले ही वर्णित किया जा चुका है.

अतः यह जो "सत्यमेव.........नानतं" का नारा है इसका अर्थ है : वेदों की हमेशा जीत होती है वेदों के सिवाय किसी अन्य की कभी जीत नहीं होती. इस नारे का सत्यता या सच्चाई (TRUTH) सें कहीं कोई लेना देना नहीं है. जैसा कि ब्राह्मणों की आदत है वे अपनी हर बात को "घूंसे को पंचतत्व" की शक्ल में पेश करते हैं वैसे ही उन्होंने अपने इस नारे को पेश किया हुआ है. प्रचार के साधन उनके अपने हैं इसलिए ऐसी बातों को तोड़मरोड़ कर पेश करने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती.

3. **सबसें महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या ब्राह्मणों, उनके देवों, भगवानों, ऋषियों** आदि किसी ने भी सत्य का सहारा लेकर जीत हासिल की है. इतिहास और मिथिहास गवाह है कि उन्होंने कभी भी सत्य का सहारा नहीं लिया. उन्होंने हमेशा छल कपट ठगी ठौरी का सहारा लेकर ही विजय प्राप्त की है. अध्याय 5 "ब्राह्मणवाद के ध्वजवाहक" में लगभग हरेक देवी, देव, भगवान, ऋषि आदि का जीवन चरित्र वर्णित किया जा चुका है. हमें तो ब्राह्मणों के महानुभावों में सें ऐसा कोई नहीं मिला जिसने सत्य का दामन थामा हो!! सभी के सभी राजा को मार कर "राजा अमर रहे" का नारा लगाने वाले मिले हैं. सत्य का गला घोंट कर सत्यमेव जयते का नारा लगाने वाले हैं ब्राह्मणवादी!!

ब्राह्मणों का सत्यमेव जयते क्या है उसे समझने के लिए एक छोटा सा उदाहरण यहां काफी होगा. तुलसी के रामचरित में "सदाचार" का अर्थ इस प्रकार सें दिया गया है :

शुभ आचरण कतहुं नहीं होई, देव विप्र गुरू मान न होई!

अर्थात किसी भी काम को शुभ आचरण नहीं कहा जा सकता अगर उसमें ब्राह्मणिक देवों, ब्राह्मण और गुरू का मान नहीं होता. इसका अर्थ यह हुआ कि जिस काम में ब्राह्मण की पूछ नहीं है वह अच्छा काम नहीं है. हम चाहे हजारों अनाथों गरीबों की सहायता करते रहें लेकिन अगर ब्राह्मण को नमस्ते नहीं की तो यह हमारा आचरण "अशुभ" ही कहा जाएगा. बस यही उनके सत्य (ब्राह्मण) की जय है तथा नानतृं (अब्राह्मणों) की हार है. उनके तो भगवान भी ब्राह्मणों को बचाने के लिए अवतार लेते हैं.

26.10.2006 बीस साल : बापू का निधन हुआ.

8. **मानव, दानव और देवः** भगवान सिंह अपनी पुस्तक "उपनिष्दों की कहानियां" में मानव, दानव और देवों के कार्य बताते हुए लिखते हैं कि प्रजापति की तीन सन्तानें थीं : सबसें बड़े असुर, मध्य में देव और सबसें छोटे मनुष्य. असुर स्वभाव सें सरल और भले थे. देव उदण्ड थे तो मनुष्य अशिष्ट थे. यह तीनों अपनी शिक्षा पूरी करके चलने लगे तो प्रजापति ने उनको अंतिम संदेश दिया. वह बोला "द". देव बोले हम समझ गए आपने "दमन" करने को कहा है. आपने हमें पैदा ही इसलिए किया है कि हम अच्छे बुरे सभी का दमन करें. मनुष्य बोले द का अर्थ है दान करो सो हम दान किया करेंगे अंत में असुर बोले आप ने हमें दया करने का आदेश दिया है. हम लोगों में दया का प्रसार करेंगे.

कथा सच हो या झूठ, लेकिन इस कथा की बातों में सच्चाई है. देव हमेशा ही अनैतिक उत्पात करते आए हैं. ब्राह्मणों ने दया का प्रचार प्रसार करने वाले बौद्धों और जैनियों को हमेशा असुर, दैत्य, दानव बताया है. और सबसें महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसी कथाओं की आड़ में ब्राह्मणों ने सभी मानवों के दिमाग में यह बात भरी

है कि मनुष्य का जन्म ही दान देने के लिए हुआ है. दान क्योंकि सिर्फ ब्राह्मण ले सकता है सो ऐसी कथाएं घढ़ कर उनकी पौबारह हो गई.

9.

10.4 चार युग अर्थात एक और झूठ

ब्राह्मणों ने समस्त काल को चार युगों में बांटा है. यह चार युग हैं : सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग. काल गणना के अनुसार यह चारों युग इसी क्रम सें हुए हैं. पहले सत्य, फिर त्रेता, फिर द्वापर और अंत में कलियुग. कलियुग अभी चल रहा है जिस काल में हम सभी रह रहे हैं. हम सें पहले सत्य, त्रेता और द्वापर युग गुजर चुके हैं.

ब्राह्मणिक काल–गणना में कुछेक विशेष शब्दों का प्रयोग किया गया है. युगों के झमेले को समझने के लिए इन शब्दों का अर्थ जानना जरूरी है.

1. **युग** : वेदांग ज्योतिश में युग शब्द पांच साल की अवधि के लिये प्रयोग किया गया है. (समु 5.70)
2. **कृतयुग** : सबसें पहला युग इसे सत्ययुग भी कहा जाता है. यह 4800 साल का होता था जिसे बाद में बढ़ा कर 17 लाख 28 हजार साल का बना दिया गया. (मनु 1.71)
3. **त्रेतायुग** : कृत या सत्ययुग के बाद आने वाला युग. इसकी अवधि 3600 साल होती थी जिसे बाद में बढ़ा कर 12 लाख 96 हजार साल कर दी गई. (मनु 1.71)
4. **द्वापर** : त्रेता के बाद आने वाला युग इसकी अवधि 2400 साल होती थी जिसे बाद में बढ़ा कर 8 लाख 64 हजार साल कर दी गई. (मनु 1.71)
5. **कलियुग** :अंतिम युग तथा द्वापर के बाद आने वाला युग. इसकी अवधि 1200 साल होती थी जिसे बाद में बढ़ा कर 4 लाख 32 हजार साल कर दी गई. (मनु 1.71)
6. **चतुर्युगी** : सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग चारों का सम्मिलत काल अर्थात कुल 12 हजार साल का समय. प्राचीन ब्राह्मणिक काल गणना के अनुसार हर चतुर्युगी के बाद प्रलय हो जाती है. अंतिम युग कलियुग का होता है. अतः प्रलय के बाद फिर सें सत्ययुग शुरू हो जाता है. **अब तक 28 चतुर्युगी बीत चुकी बताई जाती हैं. 29वीं के 21 लाख वर्ष बीत चुके बताये जाते हैं. लेकिन समस्त ब्राह्मण ग्रन्थों की वंशावलियां पांच हजार साल सें ज्यादा की नहीं हैं.**
7. **मन्वतर** : 71 चतुर्युगियों का समय अर्थात आठ लाख बावन हजार साल का समय.
8. **ब्रह्मा दिवस** : 14 मन्वतरों का समय अर्थात 1 करोड़ 19 लाख 80 हजार साल का समय.
9. **कल्प** : 43 करोड़ 20 लाख साल का समय.

सत्ययुग : प्रथम युग को सत्ययुग, सत्तयुग या कृतयुग कहा जाता है. ब्राह्मण और उनके ग्रन्थ सत्ययुग की तारीफ करते नहीं थकते. ब्राह्मणों द्वारा सत्ययुग के बारे में प्रचार किया जाता है कि :

- सत्ययुग में "धर्म" के चारों पाये मौजूद थे. शत प्रति शत धर्म मौजूद था.
- सब ओर शांति अमन चैन था.
- कोई असमय नहीं मरता था.
- चोरी डाका नहीं होता था. लोग घरों के ताले नहीं लगाते थे.
- हर ओर नैतिकता का बोलबाला था.
- मनुष्य की आयु 400 साल की होती थी. (मनु 1.83)
- ब्रह्मा उस काल का प्रमुख देव होता था.
- उस समय तप की प्रधानता थी. (मनु 1.86)

प्रश्न उठना स्वभाविक है कि क्या सचमुच सत्ययुग में ऐसी नैतिकता होती थी और समय के साथ समाज का पतन हो गया.

इस तथ्य की पुष्टि के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ ही सर्वाधिक उपयोगी सबूत हैं. स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थ इस बात का प्रमाण हैं कि **सत्ययुग में ऐसा कुछ भी नहीं था. सत्ययुग में ऐसे ऐसे कुकर्म होते थे जिनकी हम आज कल्पना भी नहीं कर सकते.** ब्राह्मण सत्ययुग के गुण इसलिये गाते हैं क्योंकि उस समय जो कुछ होता था वह सब ब्राह्मणों के लाभ के लिए ही होता था. जैसे कि –

- भीष्म के मुख सें सत्ययुग के बारे में कहा गया है कि सत्ययुग में नारी समागम पर कोई रोक नहीं थी. (शांति पर्व 207) (राज.114) कोई भी पुरुष किसी भी नारी सें कहीं भी, कभी भी समागम अथवा बलात्कार कर सकता था. विशेषकर ब्राह्मण ऋषियों को हर प्रकार की खुली छूट थी. ब्रह्मा, दक्ष, दीर्घतमा, पराशर इसके उदाहरण हैं. सत्ययुग में जब परशु ने सभी नर क्षत्रिय कत्ल कर दिये थे तो क्षत्राणियां ब्राह्मणों की मिन्नतें करती थीं कि वे उनसें समागम करके पुत्र पैदा कर दें ताकि उन्हें मोक्ष मिल सके. इसी कारण सें ब्राह्मणों के लिये सत्ययुग सबसें महान युग था.
- यजुर्वेद (30.18) के अनुसार कृत, त्रेता, द्वापर और कलि जूए के पांसों के नाम हैं. सत्ययुग में जूआ खेलते समय दोशदर्शी अर्थात जूए के इंचार्ज को स्पर्श करने का आदेश दिया गया है. कृत नामक पासे पर चार बिन्दु बने होते थे. अतः जिसका कृत पासा पड़ जाता था वह विरोधी को चारों खाने चित कर देता था. सारे माल पर उसका कब्जा हो जाता था. जो यह कहा गया है कि कृत में धर्म के चार पाये होते थे उसका यही अर्थ है कि जूए के पांसे के चार बिन्दु होते थे. आर्यों में जूआ खेलना भी धर्म था. अतः जिस पासे सें उनको पूरा माल मिलता था वह उनके लिये पूरा धर्म था. त्रेता नामक पासे पर तीन बिन्दु बने होते थे जिसका त्रेता पासा पड़ता था उसे तीन चौथाई माल मिलता था. अतः उस समय धर्म के तीन पाये बताये गये हैं. एक भाग माल विरोधी के हिस्से जाता था. ऐसे ही द्वापर और कलि में क्रमशः आधा और एक चौथाई माल मिलता था. अतः ब्राह्मणों के लिये तब धर्म आधा और एक चौथाई बाकी रह गया था.
- सत्ययुग का प्रमुख भगवान ब्रह्मा है. (कूर्म 28) उस बेटी-चोद ने जो कुकर्म किये उसकी दुनिया के इतिहास में कहीं कोई मिसाल नहीं मिलती. जिस काल में "भगवान" ऐसा कुकर्मी होगा वह काल कैसा होगा हर कोई अनुमान लगा सकता है. और जो उस काल को महान बताते हैं वे कैसे होगे इसका भी अनुमान लगाया जा सकता है.

ऋग्वेद ब्राह्मणों का सबसें प्राचीन ग्रन्थ है. इसकी रचना सत्ययुग में हुई बताई जाती है. अतः यह भी माना जा सकता है कि इसमें जैसा लिखा गया है वैसा सत्ययुग में होता था. वेदों में क्या है इसका वर्णन इसी पुस्तक में किया गया है. संक्षेप में सत्ययुग में ब्राह्मणवादियों में भाई बहन का रिश्ता पवित्र नहीं माना जाता था. उनमें शारीरिक सम्बंध भी बन जाते थे. इन्द्र लूटमार करने में लगा रहता था. सोये हुए लोगों को ही नहीं बल्कि राह चलते लोगों को भी चोर लुटेरे लूट लेते थे और उन्हें जान सें भी मार देते थे. उदाहरण के लिये ऋग्वेद में कहा गया है कि जैसे सुनसान जगह में चोर लोगों को मार देता है वैसे ही इन्द्र ने हजारों सेनाओं को मारा (ऋ.व. 4.28.3)

- जूए की लत लगभग पूरे समाज में व्याप्त थी. जूए के पासों के नाम पर ही युगों के नाम रखे गये है. जैसे ताकतवर पुरुष को दारा सिंह तथा सुन्दर स्त्री को हेमा मालिनी कह दिया जाता है वैसे ही युगों के नाम पासों पर पड़े हैं.
- सत्ययुग में यज्ञ में गाय घोड़ा ही नहीं बल्कि मानव बच्चे तक भी काट कर भून कर खा लिये जाते थे. ( ) इन्द्र बोला इन्द्राणी के कहने पर लोग मेरे लिए 15/20 सांड या बैल पकाते हैं और मेरे दोनों कांधों पर लोग शराब लाद देते हैं. (ऋव 10.86.14) **सतयुग में नरमेध यज्ञ होते थे लेकिन कलियुग में ऐसे यज्ञ बन्द हो गये हैं.** (वनपर्व 146) (राज 52)
- औरों की तो छोड़ें, सत्ययुग में देवों के भगवान इन्द्र के बाप की भी हत्या हुई थी. (ऋग्4.18.12) किसी ने उसे पैरों से पकड़ा और धरती पर दे मारा. बदले में इन्द्र ने अनगिनित लोगों की हत्या कर दी. वेद ऐसे किस्सों सें भरा पड़ा है.
- अकाल पड़ने पर लोगों के पास खाने को कुछ नहीं मिला तो उन्होंने कुत्तों की आंतों को पका कर खाया. वेद के ऋचाकार की पत्नि का उसके सामने ही बलात्कार हुआ जिसे उसने असहाय होकर देखा. उसने शिकायत की कि कोई देव उसकी मदद को नहीं आया. (4.18.13)
- सत्ययुग में ब्रह्मा सबसें बड़ा भगवान था. उसने सम्राट हरिण्यकशिपु को वरदान दिया था कि उन्हें कोई नहीं मारेगा. न आदमी न पशु. न रात में न दिन में, न भीतर न बाहर. लेकिन फिर भी विष्णु ने उनकी हत्या कर दी. आज के धोखेबाज लीडरों की तरह ब्रह्मा का वायदा झूठ व फरेब के अतिरिक्त कुछ नहीं था. अतः सत्ययुग को सच्चाई का युग बताना सिवाय धोखेबाजी के कुछ नहीं है. सम्राट हरिण्यकशिपु का दोश मात्र इतना था कि उन्होंने महात्मा रावण की तरह हिंसामयी बलि वाले यज्ञ बन्द करवा दिये थे. अपने राज्य में बलात्कारी विष्णु की पूजा बंद कर दी थी.
- मनु का वंशज था नहुश. उसका मन इन्द्राणी पर आ गया. अतः उसने अपनी पालकी ढोने के लिये ऋषियों को कहार बना लिया. सो अगर सत्ययुग सचमुच भलाई का युग था तो राजा ने अपनी पालकी सन्तों सें क्यों उठवाई. अथवा सत्ययुग में ऋषि इसी लायक होते थे कि राजा की पालकी मे जोत दिये जाते थे.

- सत्ययुग की एक घटना और है कि नहुश के पुत्र ययाति ने अपनी पत्नि के साथ दो हजार दासियां भी दहेज में लीं. राम को दहेज में 50 हजार लड़कियां तथा साथ में 100 करोड़ सोने की मुहरें मिलीं. (सीता 4.5) आज दहेज के नाम पर इतना हो हल्ला मचता है सत्ययुग में तो दूसरों की बहन बेटियां तक दहेज मे में ली दी जाती थीं. कथा है कि ययाति जब बूढ़ा हो गया तो उसने अपने बेटे सें जवानी उधार ले ली. वेश्याओं के साथ खूब आनंद किया. परन्तु सत्ययुग के अन्य ऋषियों भगवानों की तरह उसका भी मन भोग विलास सें नहीं भरा.
- सत्ययुग में एक दिन हुंड ने नहुश को पकड़ लिया और अपनी पत्नि को सौंप दिया कि उसे काट कर पका लिया जाये लेकिन रसोइये ने उसे भगा दिया. पत्नि खाना बनाती तो नहुश को भी पका देती. सत्ययुग में नर माँस खाना आम बात थी.
- राम का पूर्वज सत्यव्रत था. उस समय सत्ययुग चल रहा था. सत्ययुग में ब्राह्मण किसी की भी बहन बेटी पर नीयत डुला सकता था लेकिन उसने सत्ययुग के नियम के विपरीत ब्राह्मण की बीवी पर नीयत खराब कर ली और उसकी बीवी को उठा कर ले आया. अतः राजा होते हुए भी उसे देश निकाला दे दिया गया. वह विश्वामित्र के आश्रम के पास आकर रहने लगा. जब विश्वामित्र आश्रम सें बाहर जाता तो वह आसपास के एरिया सें गाय घोड़े हिरण आदि को मार लेता और उनका माँस पेड़ पर टांग देता. आश्रम वाले उसे उतार कर खा लेते थे. एक दिन उसने जो गाय मारी वह वशिष्ठ की थी. अतः वशिष्ठ ने गुस्सें में आकर उसके सिर पर तीन सींग (गूमड़) बना दिये. तभी सें उसका नाम त्रिशंकु पड़ गया. यह कथा दर्शाती है कि सत्ययुग में गाय खाना धर्म माना जाता था. केवल ऋषि की गाय खाना अपराध (अधर्म नहीं) था. विष्णु पुराण के अनुसार उसने देवों को हिस्सा दिये बिना गाय मांस खाया था. इसलिए वह त्रिशंकु बना. (आर्य नीति 26)
- ऋग्वेद सत्ययुग का ग्रन्थ है. उसमें (1.24.12) में एक अबोध बालक शुनःशेप की कथा दी गई है कि उसके ब्राह्मण ऋषि बाप ने उसे धन के लिए न केवल बेचा बल्कि उसे यज्ञ वेदी पर काटने के लिए भी तैयार हो गया. इस कथा का विस्तार सें विवेचन अध्याय "यज्ञ" में किया गया है. वैसे यह कथा दर्शाती है कि सत्ययुग में ऐसे ब्राह्मण ऋषि भी होते थे जो धन के लिए अपने बेटे को भी बेच देते थे. और ऐसे बाप भी होते थे जो धन के लिए अपने बेटे को यज्ञ में बलि देने के लिए काटने को भी तैयार हो जाते थे. ऐसे काम क्योंकि ब्राह्मण करते थे अतः वे दावा करते है कि सत्ययुग अच्छा था.
- उपरोक्त बलि राजा हरीशचन्द्र देना चाहता था. वह क्योंकि सूर्यवंशी था अतः कुल परम्परा के अनुसार बेऔलाद था. उसने देवों सें पुत्र मांगा. उन्होंने पुत्र पैदा करना तो स्वीकार किया लेकिन शर्त रखी कि वह उस पुत्र की बलि देकर देवों को उसका माँस भेंट करेगा. पुत्र होने पर राजा टालमटोल करने लगा. देवों ने नर्म गोश्त की चाह में राजा का जीना दूभर कर दिया. अंत में राजा ने ऐसा प्राणी ढूंढा जो उसके बेटे की जगह अपने बेटे की बलि देने को तैयार हो जाए. ब्राह्मण ऋषि के इलावा ऐसा काम और कौन कर सकता था. यह घटना दर्शाती है कि ऐसे घिनौने काम करने वाले को सत्यवादी कहा जाता था. धन के लिए अपने बेटे को बेचने काटने वाले को ऋषि कहा जाता था. बच्चों का गोश्त खाने वाले को देव कहा जाता था. ऐसा था ब्राह्मणों का सत्ययुग!!
- हम में सें अधिकतर लोग आजकल सब्जियां अधिक खाते हैं अतः हम कहावत कहते हैं गाजर मूली की तरह काटना. सत्ययुग कहे जाने वाले समय में लोग गाय बहुत खाते थे अतः तब वे कहते थे गाय की तरह काटना. जिस जगह पर गायें काटी जाती थीं उस जगह को गोघातसूना और जिस खड़ग सें गायें काटी जाती थीं उसे गोभिकर्तन कहा जाता था. कुत्ते गोघातसूना के बाहर गोश्त के लालच में घूमते रहते थे. (ऋग 10.89.14) ब्राह्मण सत्ययुग को अच्छा कहते हैं क्योंकि उस समय उनको भरपेट स्वादिश्ट गाय का माँस मिलता था. (समु 6.154)
- सत्ययुग में ब्राह्मणों को केवल गाय ही नहीं बल्कि मानव माँस भी खाने को मिलता था. यजुर्वेद (31.9–14) में ब्राह्मणवादी देवताओं और ऋषियों द्वारा नर माँस खाने का विवरण दिया गया है कि उस आदमी का पानी छिड़क प्रोक्षण (यज्ञ में पशु काटने सें पहले उस पर मन्त्र पढ़ कर पानी के छींटे मारना) किया गया. देवों और ऋषियों के लिए उसको काटा गया अर्थात बलि दी गई. फिर उसके टुकड़े टुकड़े करके आपस में बांटा गया. (समु 6.154) जैसे गोमेध यज्ञ में गाय का कलेजा भाले की नोक में गाड़ कर सेंका जाता था वैसे ही आदमी का कलेजा भी सेंका गया और खाया गया क्यों कि ब्राह्मणवादी देवताओं और ऋषियों के लिए वह आदमी भी यज्ञ पशु के समान ही था. ऐसा था सत्ययुग!!
- ऋग्वेद के दसवें मण्डल कें पुरुषसूक्त में भी नर बलि की घटना बयान की गई है.
- मनु स्मृति में बताया गया है कि ऋषि अजीगर्त अपने बेटे का माँस खाने को तैयार हो गया था. ऋषि वामदेव ने तो कुत्ते का माँस तक खा लिया था. ऋषि भारद्वाज अपने बेटों सहित बहुत सी गायें खा गया. (मनु 10.105–107)

- चोरी डाका कत्ल आम बात थी. अकेले स्थानों में चोर राही को मार डालते थे और उसका धन छीन लेते थे. (ऋग 4.28.3)
- चोर लुटेरे सुनसान जगहों पर ही नहीं लूटते थे बल्कि सोये हुए आदमी के सामान अथवा धन पर भी हर कोई अपनी नीयत डुला लेता था और अपने कब्जे में कर लेता था.(ऋग 1.53.1)

इस तरह सत्ययुग में ब्राह्मणिक बाप का अपनी बेटी पोतियों सें यौन सम्बंध, धोखें सें मारना, पर-स्त्री गमन, जूआ, चोरी, व्यभिचार, अपहरण, कामुकता, वेश्यायें, नरमाँस गोमाँस भक्षण, ब्राह्मण ऋषियों की गुंडागर्दी, आपसी मार काट, स्त्रियों की दल्लागिरी आदि सब कुछ होता था. **स्वयं उनके ग्रन्थ यह बात कहते हैं कि व्यभिचार और गोमाँस कलियुग में नहीं होंगे. अतः आज का कलियुग ब्राह्मणों के सतयुग सें कहीं ज्यादा नैतिक और अहिंसक है.** अब केवल ब्राह्मणों को पर-स्त्री और गोमाँस सुलभ नहीं हैं. अतः उनके लिए अब का समय बुरा है. तब उनकी चांदी थी वे कुछ भी करते धर्म माना जाता था. आज सुबह उठ कर उनका दर्शन हो जाना ही अशुभ माना जाता है.

त्रेता : इस युग में जो कुछ होता था वह इस प्रकार सें हैः

- कोई भी द्विज विशेषतः ब्राह्मण किसी भी नारी का हाथ पकड़ कर ले जा सकता था. (शांति पर्व 207) (राज.114)
- यजुर्वेद (30.18) के अनुसार त्रेता जूए के पांसे का नाम हैं. त्रेता में जूआ-प्रबंधक को छूने का आदेश है. त्रेता पासा पड़ने पर तीन चौथाई माल पांसा फैंकने वाले को तथा एक चौथाई विरोधी को मिलता था (समु 5.130)
- त्रेता का प्रमुख भगवान सूर्य है. (कूर्म 28)
- त्रेता में ज्ञान प्रधान है. (मनु 1.86)
- मनुष्य की आयु 300 साल की होती थी. (मनु 1.83)

त्रेता की कुछ मुख्य घटनायें:

- राम का पूर्वज सगर था. जब वह गर्भ में था तो उसकी माँ को उसकी सौत ने जहर दे दिया. सगर को सात साल तक गर्भ में ही छिप कर रहना पड़ा. जब वह पैदा हुआ तो जहर अर्थात गर के साथ पैदा हुआ अतः उसका नाम सगर रखा गया. राम की सत्यता का पता तो इस बात सें ही चल जाता है कि उसका पूर्वज सात साल तक अपनी माँ के गर्भ में ही रह लिया था.
- उसने अनेकों बार अश्वमेध यज्ञ किये. अर्थात अनेकों बार अपनी रानियां ब्राह्मण ऋत्विकों के हवाले कीं. "रघुकुल रीत सदा चली आई, हरेक ने ब्राह्मणों को सौंपी अपनी लुगाई." एक बार इन्द्र ने उसके अश्वमेध का घोड़ा चुरा कर कपिल ऋषि के आश्रम में बांध दिया. सगर के साठ हजार बेटे थे. वे ढूंढते हुए कपिल के आश्रम में पहुंचे. घोड़ा वहां पाकर उन्होंने ऋषि को चोर कह दिया. कोई ब्राह्मण को चोर कह दे इतनी हिम्मत! उस ब्राह्मण ऋषि ने उन सब को आग लगा दी. ऐसे दयालु होते थे ब्राह्मण ऋषि!!
- विश्वामित्र और वेश्या मेनका के व्यभिचार सें जन्मी थी शकुन्तला जिसे वे खेत में लावारिस फैंक कर चले गये. कण्व ऋषि ने उसे पाल लिया. जब वह बड़ी हुई तो माँ की तरह आवारा निकली. पहली मुलाकात में कुछ पलों के बाद ही अन्जान दुश्यंत सें यौन सम्बंध बना लिये. दुश्यंत की दूसरी बीवी ने जनमेजय को जन्म दिया. पता नहीं यह कौन सा जनमेजय था. एक जनमेजय तो अर्जुन के बेटे परीक्षत का बेटा था.
- त्रेता में एक ब्राह्मण ऋषि दुर्वासा हुआ था. उसमें सहनशीलता का लेशमात्र भी नहीं था. हर पल गुस्से में फुफकारता रहता था. अगर कोई उसे नमस्ते करना भूल जाता था तो वह उसे श्राप दे देता था. गुरू नानक देव ने कहा है कि काम क्रोध लोभ मोह अहंकार (वासना गुस्सा लालच मोह और दंभ) को काबू में करने पर ही कोई सन्त बन पाता है. दुर्वासा जैसा बदतमीज तो ऋषि ही बन सकता था. सो वह बन गया.
- सीता को पैदा करके कोई खेतों में लावारिस फैंक गया. जनक खेत में हल चला रहा था कि उसे पड़ी मिल गई. छः साल की होते ही उसने उसे दांव पर लगा दिया : धनुश उठाओं और लड़की ले जाओ. उधर सुन्धवा नामक राजा ने जनक सें मांग की कि वह सीता को उसे सौंप दे. दोनों में लड़ाई हुई जिसमें सुन्धवा हार गया. जब कोई धनुश नहीं उठा पाया तो राजाओं सीता को उठा कर ले जाने का निर्णय किया. उन्होंने मिथला को घेर लिया परन्तु सीता को न ले जा पाये. राम ने सीता को जीत लिया लेकिन उसने सीता की वह गत की कि पत्थर भी रो पड़ें. ऐसा ही कुछ होता था ब्राह्मणों के धर्म के तीन पायों वाले युग में!!
- त्रेता में ही हनुमान की माँ ने गैर मर्द सें व्यभिचार द्वारा हनुमान पैदा किया.

- इसी युग में विभीशण जैसा गद्दार पैदा हुआ. जिसके नाम पर आज तक किसी माँ ने अपने बेटे का नाम नहीं रखा.
- इसी युग में राम का गुरू वशिष्ठ भगवन वाल्मिकी के आश्रम में गया और उनकी दो साल की गाय मार कर मधुपर्क बना कर खा गया. सीता ने गंगा सें मन्नत मानी कि अगर वह सही सलामत वापिस आ गई तो उस में शराब और माँस मिले ओदन (चावल) के हजारों घड़े चढ़ाएगी. (अयोध्या कांड 52.89)
- इसी युग में दशरथ ने 300 पशु यज्ञ में काट कर ब्राह्मण ऋषियों को खिलाये थे. अपनी तीनों रानियां ब्राह्मण ऋत्विकों को भेंट कर दी थीं. इसी युग में राम ने हिरण मार कर उसका माँस अपनी कुटिया में चारों तरफ बिखेरा था. इसी युग में राम सुनहरे हिरण की खाल उतारने के लिये उसके पीछे भाग लिया था. इसी युग में भरत जब राम को मिलने के लिए गया तो रास्ते में भारद्वाज ने उसके हर आदमी को डट कर मीट शराब पेश किया था तथा सात सात वेश्यायें भेंट की थीं जिनका साथ पाकर उन्होंने राम का ख्याल ही छोड़ दिया था. भरत डरा धमका कर उन्हें आगे अपने साथ लेकर गया.
- इसी युग में जब राम ने सीता को दांव में जीता तो जनक ने उसे दहेज में 100 करोड़ सोने की मुहरें 10 लाख घोड़े और 50 हजार दासी लड़कियां दीं. (सीता 4.5) खैर यह आंकड़े बढ़ा चढ़ा कर बताये गये हैं. स्वयं हल जोतने वाले जनक की इतनी औकात हो ही नहीं सकती कि वह राम को सवा लाख कविंटल सोना दे सके. न ही वह इतना बड़ा किसान था कि उसके पास हजारों दास दासियां हों. फिर भी अगर उसने एक भी लड़की राम को सप्लाई की तो भी वह दल्ला था. किसी की भी बेटी किसी अन्य को बतौर तोहफा देना दल्लागिरी है.

अतः त्रेता युग में (जब तीन चौथाई धर्म शेषथा) वह सब कुछ धर्म के नाम पर होता था जिसे आज हम पाप या अपराध कहते हैं. इस युग में भी लोगों को जहर देना, ऋषियों द्वारा हजारों की संख्या में हत्यायें करना, क्रोध करना, लावारिस, नाजायज बच्चे पैदा करना, लड़कियों को दांव पर लगाना, स्त्रियों की दल्लागिरी,, देवों द्वारा हनुमान जैसों की मांओं सें उन्मुक्त व्यभिचार, बाप व भाई द्वारा भरत जैसों के साथ छल कपट करना आदि सभी कुछ होता था.

द्वापर :

ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार इस युग में निम्न कुछ होता थाः
- इस युग में तो मैथुन ही धर्म था. "द्वापरे मैथुनो धर्मः प्रजानामभवत्नृप" (शांति पर्व 207) (राज.114)
- यजुर्वेद (30.18) के अनुसार द्वापर जूए के पांसे का नाम हैं. द्वापर में मुख्य जूआ-प्रबंधक को छूने का आदेश है. द्वापर पासा पड़ने पर आधा माल पांसा फैंकने वाले को तथा आधा माल विरोधी को मिलता था (समु 5.130)
- द्वापर का प्रमुख भगवान विष्णु है. (कूर्म 28)
- द्वापर में यज्ञ प्रधान है. (मनु 1.86)
- मनुष्य की आयु 200 साल की होती थी. (मनु 1.83)

द्वापर की मुख्य घटनायें :
- इस युग की सबसें बड़ी घटना कृष्ण जन्म है. उसने जो गुल खिलाये उन्हें सुन कर हर किसी का सिर शर्म सें झुक जाता है. यह तो ब्राह्मणवाद की ही हिम्मत है कि ऐसे प्राणी को भगवान बना रखा है. माँ समान मामी राधा सें नित्य संभोग, अपनी बहन सुभद्रा को अर्जुन के हाथों उठवाना, गीता का भड़काऊ भाशण देकर महाभारत का रुका रुकाया युद्ध फिर सें चालू करवाना आदि इस युग के "अवतार" की मुख्य घटनायें हैं.
- इस युग का मुख्य भगवान विष्णु है. उस के बारे में सभी जानते हैं कि वह पहला आदमी था जिसने अपना काम साधने के लिये स्त्री का प्रयोग किया था – पतिव्रता वृंदा सें बलात्कार करके महाराज जालंधर की हत्या की तो मोहिनी बन कर असुरों सें अमृत छीना.
- इस युग में जूआ सबसें मुख्य काम था जो देखों जूआ खेलने में लगा रहता था. युधिश्ठर तो इतना ढीठ जुआरी था कि वह कहता था कि उसके लिये जूआ खेलना धर्म था. उसका कहना था कि अगर कोई जूआ खेलने के लिए बुलाये तो उसे इंकार करना अधर्म है. उसने जूए में जो कुछ किया सारी दुनिया जानती है. फिर भी ब्राह्मण उसे धर्म–पुत्र कहते हैं.
- राजा नल जूए में सब कुछ हार गया था. उसने जूआ खेला, यज्ञ में पशु काटे फिर भी ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं कि उसने कोई काम धर्म के विरुद्ध नहीं किया. लेकिन एक दिन बिना मूते संध्या करने बैठ गया. बस

अनर्थ हो गया, अधर्म हो गया, धर्म की हानि हो गई. इस पाप के कारण उसका सब कुछ चौपट हो गया. वह जूए में सब कुछ हार गया. अतः जुआरियों को चाहिए कि वे मूत कर संध्या करें वर्ना सब कुछ हार जायेंगे.

- इसी युग में द्रोण जैसे शैतान भी पैदा हुआ था जिसने महावीर एकलव्य को अंगूठा काट लिया था ताकि अर्जुन को कोई भी हरा न सके.
- रंतिदेवा नामक राजा को महादानी कहा गया है क्यों कि वह हर रोज दो हजार गायें काट कर ब्राह्मणों को खिलाता था. एक दिन तो उसने इक्कीस हजार गायें काट कर ब्राह्मणों को खिलाईं. उसके द्वारा काटी गईं गायों के खून सें चर्मवती नदी बह निकली. इस नदी को आजकल चम्बल नदी कहा जाता है. (शांतिपर्व 29)
- भीमसेन के लिये भी टोकरे भर भर कर माँस लाया जाता था ताकि उसका पेट भर सके. (शल्यपर्व 30)
- पशुओं की तरह मनुष्यों की भी यज्ञ में बलि दी जाती थी. (सभा.22) पशु माँस की तरह नर माँस की भी खाया जाता था. नरबलि के यज्ञों में जो मनुष्य मारे और काटे जाते थे उनके अवशेश खाने (यज्ञशेश) सें पाप दूर होते हैं ऐसा गीता का कहना है. (गीता 3.13)
- भीष्म ने कहा, ”हे परंतप, इस दुनिया में माँस रस सें बढ़ कर कोई अच्छा पदार्थ नहीं है. माँस सें अच्छा भक्ष्य कोई नहीं है. (अनुशासन 6)
- महाभारत के लगभग सभी पात्र हराम के जने हैं. कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने असली मां–बाप सें पैदा हुआ हो.

अतः द्वापर में जूए में औरतों को जीतना हारना, शराबखोरी, मां बेटी सें दुराचार, नियोग, गो हत्या, वेश्यावृति, स्त्रियों की दल्लागिरी, पशु संभोग, पशुबलि आदि सब कुछ होता था. एक पुरुष के ही कई पत्नियां नहीं होती थीं बल्कि एक स्त्री के भी कई पति होते थे. एक सें अधिक पति अथवा पत्नियां होने के बावजूद भी वे लोग यहां वहां मूंह मारते फिरते थे. नैतिकता अथवा मर्यादा नाम की चीज उनके पास थी ही नहीं!! बड़े और प्रभावशाली लोग कुछ भी करते उसे धर्म कहा जाता था. जो कुछ युधिश्ठर अथवा कृष्ण ने द्वापर में किया अगर वही कुछ आज के समय में किया होता तो उन्हें अगर फांसी नहीं हुई होती तो जीवन भर तो जेल में रहना पड़ता.

कलियुग :

- काल गणना के अनुसार **कलियुग 13 फरवरी 3102 ईसा पूर्व को आरंभ हुआ था.** (आप्टे : कलिः)
- यजुर्वेद (30.18) के अनुसार कलि जूए के पांसे का नाम हैं. कलि में जुआरी को छूने का आदेश है. कलि पासा पड़ने पर एक चौथाई माल पांसा फैंकने वाले को तथा तीन चौथाई माल विरोधी को मिलता था (समु 5.130) इस तरह सें जिसका पासा कलि पड़ता था वह जूए में हार जाता था. जूआ खेलना क्योंकि आर्यों का धर्म था अतः कलि उनके लिये अशुभ था.
- कलियुग का प्रमुख भगवान शिव है. (कूर्म 28)
- कलियुग में दान प्रधान है. (मनु 1.86) दान लेने का पात्र मात्र ब्राह्मण है. अतः उनके लिए कलियुग भी कमाई का धन्धा है.
- मनुष्य की आयु 100 साल की होती है. (मनु 1.83)
- कलियुग में धर्म का तीन चौथाई हिस्सा गायब हो जाता है तथा केवल एक चौथाई ही बचा रहता है.
- भागवत (12.3) के अनुसार कलियुग की छः निशानियां गिनाई हैं:
  1. छल कपट झूठ निद्रा हिंसा शोक मोह भय दीनता का बोलबाला होगा.
  2. शरीर और भाग्य छोटे हो जाएंगे मगर भूख बढ़ जाएगी.,
  3. पुरुष कामी और निर्धन हो जाएंगे.
  4. स्त्रियां आजाद और निर्ल्लज हो घूमेंगी.
  5. राजा प्रजा का भक्षक बन जाएगा.
  6. परम आयु 20 सें 30 साल की हो जाएगी.

आईये कलियुग की उपरोक्त निशानियों की विवेचना करें.

1. **छल कपट झूठ निद्रा हिंसा शोक मोह भय दीनता का बोलबाला होगा** : हम सभी युगों का वर्णन ऊपर कर चुके हैं किसी भी युग में ब्राह्मणों और देवों का छल कपट कम नहीं रहा है. यज्ञ में की जाने वाली हिंसा जरूर कम हो गई है. वेश्यावृति आम नहीं रह गई है. स्त्रियों की दल्लागिरी समाप्त हो चुकी है. अब चाहे राम हो या कृष्ण कोई भी स्त्रियों की दल्लागिरी नहीं कर सकता.

2. **शरीर और भाग्य छोटे हो जाएंगे मगर भूख बढ़ जाएगी.** : सत्ययुग में तो ब्राह्मणों का भगवान भी बौना पैदा हुआ था. शेषअभी तक ऐसा कोई अवशेश नहीं मिला कि पुराने समय में मनुष्य आठ दस फुट लम्बा होता था. पहले भी मानव इतना ही बड़ा होता था. भूख तो भीम हनुमान जैसों की कम नहीं होती थी. आजकल तो फिर भी लोग खाने पीने का ध्यान रखने लगे हैं सत्ययुग में तो ब्राह्मण यज्ञों में सैंकड़ों पशु काट कर खा जाते थे.

3. **पुरुष कामी और निर्धन हो जाएंगे :** जितने कामी ऋषि और देव खासकर कृष्ण शिव जैसे अवतार होते थे उतना कामी तो कोई हो ही नहीं सकता. सत्ययुग में हर पुरुष विशेषकर ब्राह्मण ऋषि किसी की भी बहन बेटी सें यौन सम्बंध बना सकता था. देव पत्नियां भी पशुओं की तरह घूमती फिरती थीं. अब वह चीज देखने को भी नहीं मिलती. पहले विद्या केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित थी आज चंडाल तक भी विद्या का धन अर्जन कर रहे हैं. धन के आधार पर निर्धनता आंकी जाए तो ब्राह्मणों का कोई ग्रन्थ देख लें उसमें अकाल, भुखमरी और पैसे के लिये अपने बच्चे बीवी बेचने की कथाएं मिल जाएंगी.

4. **स्त्रियां आजाद और निर्ल्लज हो घूमेंगी** : जितनी निर्ल्लज राधा कुब्जा और गोपियां थीं आजकल शायद वेश्यां भी नहीं होतीं. महाभारत में कर्ण ने निर्ल्लज आर्य नारियों का जो चित्रण किया है वैसी नारियां आज के कलियुग में ढूंढने सें भी नहीं मिल पायेंगी. कितनी नारियां आज देवपत्नियों की तरह "राम" की वासना मिटाने आ पायेंगी. या कृष्ण की बांसुरी सुन कर अपने पतियों को छोड़ कर आ सकेंगी. या गंगा की तरह किसी भी गैर मर्द की जांघ पर जा बैठेंगी और काम याचना करेंगी. वास्तव में देखें तो अब कलियुग में आर्य स्त्रियों की निर्ल्लजता समाप्त हो गई है.

5. **राजा प्रजा का भक्षक बन जाएगा** : कोई भी ब्राह्मण ग्रन्थ देख लें उसमें जितने भी राजा हुए हैं सभी ने बस यज्ञ किये हैं और कुछ नहीं. किसी ने भी आम आदमी के लिए कभी कोई सड़क, कोई धर्मशाला नहीं बनाई कभी कोई हस्पताल नहीं खोला. अकाल भी पड़ा तो मात्र ब्राह्मणों को दान दिया या उन्हें अपनी शांताएं सौंपी. राम जैसों ने शूद्रों और वैश्यों को लूट कर ब्राह्मणों को दान दिया. आज कलियुग में राजा नाम की चीज ही समाप्त हो गई है. जो मन्त्री, मुख्यमंत्री सही काम नहीं करता अगली बार उसका बिस्तर गोल हो जाता है.

6. **परम आयु 20 सें 30 साल की हो जाएगी** : इससें क्या अंतर पड़ जाएगा. वैसे भी मनुष्य की परम आयु 20 सें 30 साल तक की ही होती है. दशरथ भी तो 60 साल का होकर रिटायर होना चाह रहा था. हां ययाति जैसे आर्यों की कमी भी नहीं थी जो बूढ़े होकर भी अपने पुत्रों की जवानी उधार ले लेते थे ताकि ऐयाशी कर सकें. आज कलियुग में इसे पाप समझा जाता है.

प्रसिद्ध ब्राह्मण लेखक व पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन ने निर्णयसिन्धु के कलिवर्ज्य अध्याय का हवाला देते हुए लिखा है कि **कलियुग में पाँच चीजों की मनाही है :**

1. **यज्ञ की आग को लगातार जला कर न रखा जाए.**
2. **गाय को न काटा जाए. न यज्ञ में बलि देने के लिए और न ही खाने यानि मधुपर्क के लिए.**
3. **श्राद्ध या पितृपूजा में माँस न खाया जाए.**
4. **नियोग न किया जाए.**
5. **सन्यास न लिया जाए.**

आईये इन तथ्यों का विवेचन करते हैं :

1. **यज्ञ की आग** : प्राचीन काल में आग जलाना बेहद मुश्किल काम होता था. जो आदमी अरनी को घिस कर आग जला देता था उसे देवता ही मान लिया जाता था. ब्राह्मणिक आर्यों में अंगिरा के पास अरनी थी. वह जब चाहे आग जला देता था. बस उसे महान रिषी बना दिया गया. ऐसे लोगों की चापलूसी सें बचने के लिए यज्ञ की आग लगातार जला कर रखी जाती थी. अभी सन साठ के दशक तक औरतें चूल्हे में आग नहीं बुझने देती थीं. किस्से कथाओं में ऐसी वधु को श्रेष्ठ माना जाता था जो चूल्हे में आग और परींडे में पानी न समाप्त होने दे.

   लगता है यज्ञ की आग को जलती न रखने का नियम तब बना जब आग जलाना कोई मुश्किल काम नहीं रह गया था. आज कल तो हर कोई जेब में माचिस लिये घूमता है जहां चाहो आग जला लो. अतः इस प्रतिबन्ध का कोई औचित्य नजर नहीं आता.

2. **गोमांस खाना** : बुद्धकाल तक ब्राह्मण गाय का मांस ऐसे खाते थे जैसे ढाबों पर दाल फराई खाई जाती है. बुद्ध धर्म के प्रसार सें गाय के प्राण बचे. बाबा साहिब के अनुसार बुद्धधर्म पर पलटवार करते हुए ब्राह्मणों ने गाय को न केवल खाना छोड़ा बल्कि उसे पवित्र भी घोषित कर दिया. जबकि बौद्धों ने गोमांस खाना नहीं छोड़ा. अंततः उन्हें अछूत बनना पड़ा. यह सब पहली सदी ईसापूर्व के आसपास हुआ. अतः यह नियम उसी समय की ब्राह्मणिक रणनीति का एक हिससा है.

3. **श्राद्ध में मांस** : जैसे मधुपर्क बिना मांस के नहीं हो सकता था वैसे ही श्राद्ध कर्म भी बिना मांस के नहीं हो सकते थे. जैसे अपनी शातिर रणनीति के अनुसार ब्राह्मणों ने गोमांस खाना छोड़ा वैसे ही उन्होंने श्राद्ध में भी मांस खाना छोड़ दिया. यह नियम भी उसी रणनीति का हिस्सा है.
4. **नियोग** : ब्राह्मणधर्म में काम यानि सैक्स उनके चार मुख्य आधारों में सें एक है. इसके बिना उनका धर्म टिक ही नहीं सकता. जहां अपने समय में वे सरेआम व्यभिचार करते थे, बुद्ध धर्म के प्रसार के बाद उन्हें यह काम छोड़ना पड़ा. दयानन्द ने पिछली सदी में आकर फिर सें नियोग को चालू करने का प्रयत्न किया, उसके साथ बहुत से आर्यसमाजी जुड़े मगर किसी ने भी अपनी बहन बेटी का नियोग नहीं करवाया. यह अलग बात है कि नियोग की जगह उन्होंने मंदिरों में शिव का लिंग स्थापित कर लिया. उसकी आड़ में वे क्या करते हैं इसी पुस्तक में यथास्थान वर्णित किया गया है.
5. **सन्यास** : यह ब्राह्मणधर्म का सबसें बड़ा झूठ है. आज तक उनके धर्म में कोई भी सन्यासी नहीं हुआ. सन्यास का अर्थ है तीन डबल्यू यानि वैल्थ, वूमैन और वाईन का त्याग करना. हिन्दी भाषा में कहें तो पैसा, औरत और शराब का त्याग करना. **पूरे ब्राह्मणधर्म में एक भी ऐसा ऋषि या संकराचारया नहीं हुआ जिसने आलीशान आश्रम न बनाए हों, करोड़ों की सम्पति न बनाई हो, स्वयं व्यभिचार न किया हो या उसका समर्थन किया हो, दारूमीट का प्रयोग न किया हो.** अतः संकर द्वारा सन्यास सें प्रतिबंध हटाने की बात बेकार का ढकोसला है. बिल्कुल वैसे ही जैसे गांधीगिरी करते हुए राजनेता गरीबी हटाने की बात करते हैं.

युगों की सच्चाई : ऊपर अध्यायों में हम ब्राह्मणधर्म में "धर्म" का अर्थ बता चुके हैं. उनकी मान्यता है कि सत्ययुग में धर्म के चार पाये होंगे जो क्रमशः कम होते हुए कलियुग में एक ही रह जाएगा. सत्ययुग के कौन सें चार पाए थे जो घट कर कलियुग में मात्र एक रह गया, इसका एक उदाहरण महाभारत के शांतिपर्व (206) में दिया गया है. उसके अनुसार चार युगों में यौन सम्बंधों के चार रूप होते थे : **संकल्प, संस्पर्श, मैथुन और द्वंद.** डांगे महोदय ने अपनी पुस्तक 'आदिम साम्यवाद' में इनकी व्याख्या की है. चार युगों में यौन सम्बंध इस प्रकार सें थे :

संकल्प : ऐसे यौन सम्बंध **सत्तयुग** में प्रचलित थे. इन यौन सम्बंधों में कोई बन्धन नहीं होता था. कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री सें यौन सम्बंध बना सकता था. कोई सामाजिक, धार्मिक या कानूनी रोक नहीं थी. इसी नियम के तहत ब्रह्मा ने अपनी बेटी भोगी. ऋग्वेद की ऋचाएं बनाने वाले ब्राह्मण ऋषि दीर्घतमा ने राह चलती औरतें भोगीं. ब्राह्मणों को कोई रोक टोक नहीं थी इसलिए उस समय उनके धर्म के चारों पाये थे.

संस्पर्श : यह **त्रेता युग** की अवस्था थी. इसमें निकट सम्बंधियों सें यौन सम्बंध बनाने पर एतराज होने लगा था तथा कुछ सामाजिक पाबंदी भी लग गई थी. निकट सम्बंधियों (जैसे ब्रह्मा का अपनी बेटी सें बलात्कार की घटना) को अब बुरा समझा जाने लगा था. अतः ब्राह्मणधर्म का एक पाया कम हो गया था. लेकिन गैर स्त्रियां अब भी ब्राह्मणों की हवस का शिकार बन जातीं थीं. ब्राह्मण वेश में महाराजा रावण द्वारा सीता के अंगों की तारीफ इस बात का प्रमाण है. उनके द्वारा स्थापित "एक स्त्री एक पुरुष" के विवाह सम्बंधों को पूरे समाज में लागू कर दिया गया था मगर जहां आर्यधर्मी बहुसंख्या में थे वहां अब भी तीन पायों वाला धर्म पलता था.

मैथुन : यह **द्वापर युग** की अवस्था थी. इस युग में आम स्त्री पुरुष में विवाह सम्बंध होने लग गए थे तथा उनमें आम तौर पर वफादारी होती थी मगर ब्राह्मण धर्म में अभी भी खुले सैक्स की प्रवृति मौजूद थी. इस युग की पैदावार कृष्ण ने जिस प्रकार खुले यौन सम्बंध बनाए उसकी उदाहरण अन्यत्र कहीं और नहीं मिलती. महाराजा रावण द्वारा लागू किए गए विवाह प्रणाली लगभग पूरे समाज में मान्य हो चुकी थी. इसलिए अब ब्राह्मणों को खुले सैक्स का नजारा नहीं मिलता था. अतः उनके धर्म का एक पाया और कम हो गया था.

ऊपर चारों युगों की निशानियां बताई जा चुकी हैं. अतः यह कहना सरासर झूठ है कि कलियुग में अन्य युगों सें भिन्न कुछ ज्यादा बुरा होता था. अगर कलियुग में कुछ कम हुआ है तो बस इतना कि ब्राह्मणों द्वारा खुलमखुला की जाने वाली दादागिरी कम हो गई है. सत्ययुग में अगर वह किसी की बहन बेटी सें बलात्कार करते थे या गाय मार कर खाते थे तो उसे धर्म कार्य कहा जाता था. मगर आज इस पाप को पाप ही कहा जाता है.

आज का समय अगर कलियुग का है तो इस कलियुग ने मानव समाज को अनेकों अनमोल तोहफे दिये है. जिनमें सें सबसें महान हैं महामानव बुद्ध और दूसरे हैं महावीर स्वामी. भारतीय समाज में जो भी सच्चाई,

सदाचार, नैतिकता, इमानदारी का अंश दिखाई देता है वह इन महापुरुषों की देन है. उन्हीं के बताये सद्मार्ग को आगे बढ़ाया सन्तों ने. अगर ये महापुरुष न होते तो.......

तो आज भी भारत सत्ययुग, त्रेता और द्वापर के ब्राह्मणिक भगवानों के व्यभिचार का अड्डा बना हुआ होता. गायें कहीं देखने को भी नहीं मिलती. ब्राह्मण उन्हें कभी का यज्ञों में काट कर चट कर गये होते. दीर्घतमा के वंशज ब्राह्मण ऋषि किसी की भी मां बहन बेटी को कहीं भी पकड़ कर बलात्कार कर रहे होते. पता नहीं कितनी ही कुंआरी सत्यवतियां उनकी हवस का शिकार हो रही होतीं. सीता शकुंतला जैसी नाजायज औलादें सड़क के किनारे पड़ी होतीं. हर तरफ यज्ञों में शराब पी जा रही होती और यज्ञ की आग में माँस भूना जा रहा होता जिसकी गंध सूंघ कर दशरथ जैसे लोग अपने पाप दूर कर रहे होते!

दयानंद को फिर सें आर्य समाज बनाने की जरूरत नहीं पड़ी होती. उसके बगैर कहे ही औरतें दस दस पुत्र पैदा करने के लिये ब्राह्मणों के दरवाजों पर लाइन लगा कर खड़ी होतीं ताकि वह उनसें नियोग करके पुत्र पैदा कर दें!! कृष्ण जैसे भगवान अपनी मां समान मामियों सें व्यभिचार की खुली बांसुरी बजा रहे होते. राम जैसे भगवान पूरे दिनों की गर्भवती सीताओं को मारने के लिये जंगल में पटक रहे होते!

मौज होती तो सिर्फ और सिर्फ ब्राह्मणों की. वे दोनों हाथों सें ही नहीं बल्कि हर अंग सें लूट रहे होते. मनु के इस आदेश को कि सारी धरती ब्राह्मणों की ही है, वे सत्य साबित कर चुके होते. तभी तो वे कलियुग को बुरा बताते हैं. धर्म का एक पाया बताते हैं. परन्तु वे नहीं जानते कि उनके पाप का अंतिम पाया भी जल्द समाप्त होने वाला है.

आज बाबा साहिब अम्बेडकर जैसे अछूत की कलम के एक झटके सें उनकी सदियों पुरानी मनु स्मृति पाताल में दफन हो चुकी है. वेदों को कोई रद्दी के भाव भी खरीदना नहीं चाहता. **आज एक अछूत की मूर्तियां दुनिया के किसी भी आदमी की मूर्तियों सें ज्यादा बिक रही हैं. आदमी ही नहीं ब्राह्मणों के भगवानों सें भी ज्यादा संख्या में बाबा साहिब की मूर्तियां बिक रही हैं. बस यही दुख उन्हें खाये जा रहा है. उनका कलियुग तो अब शुरू हुआ है.**

कृत त्रेता द्वापर कलि जूए के पासे: यजुर्वेद (30.18) के अनुसार कृत, त्रेता, द्वापर और कलि जूए के पांसों के नाम हैं. (समु 5.130)

युगों के काल में भी गड़बड़ : जयचन्द्र के अनुसार वैवस्त मनु सें लेकर सगर तक 640 साल सत्ययुग काल था. सगर सें लेकर राम तक 400 साल का त्रेतायुग था. राम सें लेकर कृष्ण तक 460 साल का द्वापर युग था. कृष्ण के बाद सें आज तक कलियुग चल रहा है.

10.5 गायत्री मन्त्र

यहां ऐड करना है गायत्री मंत्र अश्वमेध यज्ञ के गीतों सें निकला है (राजवाडे)

गायत्री मन्त्र अथवा अन्य ब्राह्मणिक ग्रन्थों पर जब भी कोई विवाद होता है तो मान्यवर लाहोरी राम बाली, संस्थापक भीम पत्रिका जालंधर की पुस्तक "हिन्दुइज्मः धर्म या कलंक" में वर्णित एक घटना प्रासंगिक हो उठती है. कुछ लोग सुबह सुबह कहीं जा रहे थे कि एक तीतर ने टर्र टर्र कर दी. एक बोला देखो तीतर कह रहा है सुभान तेरी कुदरत. दूसरा बोला नहीं यह कह रहा है सीता राम दसरथ. तीसरा बोला नहीं यह कह रहा है सिरी खरोड़े ढक कर रख. कुछ ऐसा ही गायत्री मन्त्र के साथ हो रहा है. एक ने टर्र टर्र कर दी. बाकी उसका अर्थ बेअर्थ करने बैठ गये.

गायत्री मन्त्र की रचना क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र ने की थी. (Vol. 7.148) भारद्वाज स्मृति (6.146) के अनुसार इस मन्त्र का नाम गायत्री इस लिए पड़ा क्यों कि यह उसे गाने वालों की रक्षा करता है. मनु स्मृति का कहना है कि भू भव स्व का हजार बार जाप कर लेने सें सारे पाप दूर हो जाते हैं. जो तीन वर्ष तक जाप कर ले वह हवा की तरह कहीं भी आ जा सकता है. वह मर कर ब्रह्मा ही बन जाता है. गायत्री सें बढ़ कर कोई मन्त्र नहीं है. (2.76–83)

लेकिन सतगुरु कबीर बोले :

गायत्री युग चार पढ़ाई, पूछो जाय मुक्ति किन पाई!
और के छूए लेत हो सींचा, तुम सें कहो कौन नीचा!!

अर्थात चारों युगों सें ब्राह्मण गायत्री पढ़ते और पढ़ाते आ रहे हैं लेकिन किसी ने भी मुक्ति नहीं पाई. हम जैसे दलित के छूने मात्र सें तो तुम अपवित्र हो जाते हो और तब स्नान करके "पवित्र" होते हो जबकि दावा करते

हो कि गायत्री का जाप करने सें सब पाप दूर हो जाते हैं. अगर गायत्री का जाप तुम्हारे पाप दूर करता है तो हम सें छूने मात्र सें तुम अपवित्र कैसे हो जाते हो. अतः ऐसी घटिया बात करने वालों सें नीच कोई नहीं है.

प्रश्न उठना स्वभाविक है कि यह गायत्री मन्त्र क्या बला है कि उसके जाप मात्र सें पाप दूर हो जाते हैं और आदमी ब्रह्मा ही बन जाता है!! गायत्री मन्त्र इस प्रकार सें हैः

भूर्भवः स्वः. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो न प्रचोदयात्.

ऋग्वेद में इसके आगे ओम नामक शब्द नहीं है. यह ओम किस ने इसके आगे जोड़ा, क्यों जोड़ा कब जोड़ा, किसी को कोई पता नहीं. इतना ही नहीं ऋग्वेद जिसे कि सबसें प्राचीन ग्रन्थ कहा जाता है उसमें भूर्भवः स्व शब्द भी नहीं हैं. यह शब्द भी किसने कब जोड़ दिये पता नहीं. ऋवेद में मात्र "तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो न प्रचोदयात" मन्त्र है. सो तीतर की टर्र टर्र का अनुवाद ही अपनी मर्जी सें नहीं हुआ बल्कि यहां तो टर्र टर्र ही बदल दी गई है.

यह भी सत्य है कि गायत्री मन्त्र स्वयं में लंगड़ा है. शुद्ध गायत्री छन्द में तीन पाद व प्रत्येक में आठ वर्ण होते हैं जबकि इस मन्त्र में प्रथम पाद में केवल सात वर्ण हैं. यहां तक कि स्वयं वेदों में इसे निचृद (लंगड़ा) गायत्री छन्द कहा गया है. (यर्जु 31.36, 22.7 ऋग 3.62.10 साम 1462) (समु 3.67) जो स्वयं अपूर्ण हो वह दूसरों को कहां सें पूर्ण कर पाएगा.

वैसे इन शब्दों का अर्थ इस प्रकार सें हैः

भूः : पृथ्वी
भुवः आप्टे के अनुसार यह रहस्यमय शब्द है. वैसे इसका अर्थ दिया है अंतरिक्ष.
स्वः स्वयं, निजि
तत्सः वहां का
सवितुः जनक, पैदा करने वाला
वरेण्यं : वांछनीय, इच्छा योग्य
भर्गो : भगवान
देवस्य : देवों
धी : बुद्धि
महि : ??
धि : संभालना
यो यो : ??
न : ??
प्रचोदयात्. : आगे हांकना.

आप्टे कृत संस्कृत हिन्दी शब्दकोश में महि, यो यो और न का कोई अर्थ नहीं दिया गया है.

अगर इस मन्त्र के हिन्दी अनुवाद को देखें तो यह कुछ इस प्रकार सें बनता है : धरती आकाश तथा स्वयं को पैदा करने वाला भगवान देवों का वांछनीय है जो बुद्धि को आगे हांकता है.

ऋग्वेद (3.62.10) में इस का अर्थ इस प्रकार सें किया गया हैः हम सविता देव के उस श्रेष्ठ तेज का ध्यान करते हैं जिसने हमारी बुद्धि को प्रेरित किया. (सरिता समूह द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद)

दामोदर सातवलेकर चतुर्वेदी ने इसका अर्थ किया है : सत चित आनंद स्वरूप जगत उत्पादक ईश्वर के उस श्रेष्ठ तेज का हम सब ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धि को विशेष प्रेरणा करता है. (समु 3.67)

अतः सरल भाषा में इस मन्त्र का अर्थ इतना ही है कि हम अच्छे भगवान के तेज को प्राप्त करें और वह हमारी बुद्धि को आगे बढ़ाये.

दयानंद इसका अर्थ अपने हिसाब सें करता है. वह कहता हैः हे मनुष्यो, जैसे हम कर्मकांड की विद्या और ज्ञान कांड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़के जो हमारी धारणावती बुद्धि को प्रेरणा करे, उस कामना के योग्य समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के उस इन्द्रियों सें संग्रह न ग्रहण करने योग्य परोक्ष सब दुखों के नाशक तेज स्वरूप का ध्यान करें वैसे ही तुम लोग भी इसका ध्यान करो.

दयानंद के इस लम्बे चौड़े अर्थ सें यह पता नहीं चलता कि यह बात किस ने मनुष्यों सें कही है. इसे पढ़ कर ऐसा लगता है कि परमात्मा कह रहा है कि जैसे वह तेज स्वरूप का ध्यान करता है वैसे ही मनुष्यों को भी करना चाहिए. दामोदर महोदय ने तो कुल 25 शब्दों में अर्थ कर दिया. दयानंद ने 37 शब्द अपनी ओर सें जोड़ कर 62 शब्दों में अर्थ का अनर्थ कर दिया. अब कोई इसे तीतर की टर्र टर्र की तरह कुछ और ही बना दे तो उसकी धूर्तता या पागलपन.

चाहे शब्द 25 हों या 62 इस तरह भू भव स्व कह देने सें पाप कैसे छूट जाएंगे सबकी समझ सें तो परे है. भगवन बुद्ध ने पाप सें मुक्ति का एक ही रास्ता बताया है : पाप की सजा और प्रायश्चित. पाप कोई मामूली सा अपराध नहीं है. यह अपराध की चरम सीमा है जिससें सामने वाले के तन और मन दोनों बिंध जाते हैं. सड़क पर उलटी दिशा में चलना या बिना हेलमेट पहने गाड़ी चलाना अपराध है. इससें सामने वाले को कोई हानि नहीं है.

किसी धनवान व्यक्ति के यहां बड़ी चोरी भी एक अपराध है लेकिन अगर कोई किसी गरीब आदमी की जमा पूंजी छीन ले और वह पैसों के अभाव में बिना दवाई के वह मर जाए तो यह पाप है. किसी कुलटा सें अनैतिक संबंध अपराध हो सकता है लेकिन अपने दोस्त की पत्नि सें ऐसे सम्बंध पाप हैं. ऐसे में दयानंद कहे अथवा मनु कहे कि गायत्री का जाप करो पाप दूर हो जाएंगे तो यह लोग सचमुच धूर्त हैं पागल नहीं हैं.

भगवन बुद्ध की वाणी को आगे बढ़ाते हुए सतगुरु कबीर बोले :

पंडित वाद बदै सो झूठा,
राम कहे जो जगत गति पावै, खांड कहे मुख मीठा,
आग कहे पांव जो दाझै, जल कहै प्यास भाजै!
भोजन कहे भूख जो भाजै, तो दुनिया तर जाजै!!

अर्थात ब्राह्मण झूठ का प्रचार कर रहे हैं. राम के कहने सें ही अगर मुक्ति मिल जाए तो पूरा संसार ही मोक्ष प्राप्त कर लेता. जैसे खांड कहने सें मुख मीठा नहीं होता, आग कहने सें पैर नहीं जल जाते, पानी कहने से प्यास नहीं बुझ जाती और भोजन कहने सें भूख नहीं मिट जाती वैसे ही जप करने सें मुक्ति नहीं मिल सकती.

भगवन बुद्ध का उपरोक्त कथन जो कि सन्त कबीर ने दोहराया है उन लोगों के मूँह पर करारा तमाचा है जो लोगों को जाप के नाम पर गुमराह कर रहे हैं. **अगर गायत्री का जाप करने सें पाप उतर जाते हैं तो आर्य समाजी और ब्राह्मण क्यों अपने केस लेकर अदालत में जाते हैं. क्या कोई भी ब्राह्मण या आर्य समाजी अपने प्रतिद्वंदी अभियुक्त को इस बात पर माफ़ कर देगा कि उसने गायत्री का हजार बार जाप कर लिया है!!**

यह भी तथ्य है कि अक्सर सत्य को दबा दिया जाता है. सदियों तक सत्य को दबाए रखा जाता है. हम सब जानते हैं कि नीम की दातुन के बराबर कोई दंत मंजन नहीं है लेकिन ढिशुम ढिशुम का विज्ञापन देख कर हम नीम की दातुन छोड़ बैठे हैं. पिछले पचास सालों सें हम अधिक उपज के लालच में रसायनिक खादों सें अनाज उपजाते आ रहे हैं. अब रासायनिक खाद के अवगुण देख कर पुनः देसी खाद पर लौट रहे हैं.

आज ऐसा ही कुछ ब्राह्मणवाद ने कर रखा है. हम व्यर्थ के कर्मकांडों और झूठे प्रपंचों में फंसे हुए हैं. वैसे भी गायत्री कोई "आचरण" नहीं है अर्थात इस मन्त्र में कोई काम करने की बात नही की गई है. बिना अच्छाा आचरण किये कभी भी भलाई नहीं मिलती. आज हम सत्य माने बैठे हैं कि भूर्भव करने, तीर्थ नहाने या ब्राह्मण को दान देने सें पाप दूर हो जाते हैं अथवा पुण्य मिलते हैं. लेकिन समय दूर नहीं है जब लोग इन खोखले आडम्बरों सें बाहर निकलेंगे. ब्राह्मणवाद का नाश होगा. समझदारी का झण्डा पुनः लहरायेगा.

10.6 श्राद्ध

श्राद्ध खाना एक ऐसा कार्य है जो ब्राह्मण को दुनिया का सबसें निकृश्ट सबसें घटिया प्राणी सिद्ध करता है. यह कार्य उसे गिद्धों की श्रेणी में ला खड़ा करता है. जैसे गिद्ध केवल मुरदार खाता है वैसे ही ब्राह्मण श्राद्ध के नाम पर मुरदार खाता है. पता नहीं क्यों ये लोग इतनी नीचता पर उतर आते हैं कि मरे हुओं को भी नहीं छोड़ते. किसी के मर जाने पर सब लोग वहां दुख प्रकट करने जाते हैं लेकिन ब्राह्मण वहां खाने के लिए जाता है. यही कारण है कि हम लोग शुभ काम के लिये घर सें बाहर निकलते समय ऐसे मुरदार खाने वाले ब्राह्मण को देख लेना अशुभ मानते हैं.

हमारे विचार में दुनिया में कहीं भी ऐसा नहीं होता कि मरने के नाम पर कोई पुरोहित माल पूऐ उड़ाता हो. ऐसा मात्र और मात्र ब्राह्मणवाद में ही होता है. थू!!

ऐसा नहीं है कि श्राद्ध खाना केवल परम्परा है बल्कि यह तो उनके धार्मिक कहे जाने वाले ग्रन्थों में मान्यता प्राप्त कर्मकांड है. उनके ग्रन्थों में पूरा विवरण है कि कौन से ब्राह्मण को क्या खिलाना है कौन सी वस्तु दान में देनी है कौन सी जाति की स्त्री भेंट भी करनी है.

वैसे इसे हमारे दिमाग का दिवालियापन कहें या ब्राह्मणों की धूर्तता कि हम यह मान बैठे हैं कि जो कुछ हम अपने पूर्वजों अर्थात पितरों को देना चाहते हैं वह श्राद्धों के समय ब्राह्मण को देने सें उन तक पहुंच जाती है. अगर यह सत्य है तो साल के साढे ग्यारह महीने हम अपने पितरों को भूखा रखते हैं और श्राद्धों के कुल सोलह दिन उन्हें खाना कपड़ा देते हैं. श्राद्धों में भी केवल उसी दिन खाना कपड़ा देते हैं जिस दिन हमारे पितर की मृत्यु हुई होती है. अतः कुल मिला कर हम 364 दिन उन्हें भूखा रखते हैं और एक दिन माल पूऐ खिलाते हैं.

कैसी विडम्बना है कि ब्राह्मण बच्चा पैदा होने सें पहले उसके नाम पर "खाना" शुरू करता है और उसके मर जाने के बरसों बाद भी उसके नाम का श्राद्ध खाता रहता है. ब्राह्मण जोक सें भी ज्यादा खून चूसक, गिद्ध सें भी ज्यादा लालची और लकड़बग्घे सें भी ज्यादा शातिर होता है. जैसे मकड़ी के जाल में एक बार फंस कर कोई कीट बाहर नहीं निकल सकता ऐसा ही ब्राह्मण का जाल है. कुल मिला कर ब्राह्मण सब शिकारियों का महायोग है.

ब्राह्मणों द्वारा बनाये श्राद्ध के नियम :

पितर पांच प्रकार के बताये गए हैं.

6. जन्म देने वाले माता पिता
7. यज्ञोपवीत देने वाला गुरू
8. विशेष विद्या देने वाला आचार्य
9. प्रजा के लिये खाने पीने की वस्तुएं जुटाने वाला कर्मचारी
10. संकट में रक्षा करने वाला सैनिक

वैसे तो श्राद्ध पितरों के नाम पर किया जाता है लेकिन वास्तव में श्राद्ध केवल अपने माता पिता और दादा दादी के लिये ही किया जाता है.

10.7 पुराण और महाभारत : गप्पों के पहाड़

ब्राह्मण ग्रन्थों खासकर पुराणों में ऐसी बाते भरी पड़ी हैं कि पढ़ कर लगता है कि यह बातें किसी दिमागी तौर पर दिवालिये हुए व्यक्ति द्वारा लिखी गईं हैं. अथवा ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गई हैं जो नशे में धुत हो और उसें कुछ का कुछ ही दिखाई दे रहा हो. भागवत के बारे में तो दयानंद ने जो कुछ अपनी किताब "सत्यार्थ प्रकाश" में कहा वही दोहरा देते हैं. वह कहता है, **"वाह रे भागवत बनाने वाले, तुझ को ऐसी झूठी बातें करते हुए शरम नहीं आई. निपट अन्धा बन गया.** भला इन महाझूठ बातों को वे अंध पोप (अक्ल के अंधे ब्राह्मण) और बाहर भीतर की फूटी आँख वाले उनके चेले सुनते और मानते हैं, यह बड़ी अचरज की बात है. **इन भागवत आदि पुराणों को बनाने वाले क्यों नहीं गर्भ में ही मर गये. या जन्मते ही क्यों नहीं मर गये!! (सम्मुलास 11)** इसके आगे हमें कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है.

उदाहरणतः

- भागवत में एक असुर की कथा है जो लम्बे समय तक देवों सें लड़ता हुआ थक गया तो उसने धरती को चादर की तरह लपेटा और अपने सिर के नीचे तकिये की तरह लगा कर सो गया. आज पहली कक्षा में पढ़ने वाला बच्चा भी जानता है कि धरती संतरे के आकार की है और संतरे को चादर की तरह लपेटा नहीं जा सकता. अतः जो यह कहे कि गोल धरती को किसी ने चादर की तरह लपेट लिया तो यह उसकी बेवकूफी की चरम सीमा है.
- हम सभी जानते हैं कि सूर्य धरती सें सैंकड़ों गुणा बड़ा है और वहां का तापमान इतना अधिक होता है ग्रेफाइट भी पिघल कर गैस बन जाता है. उसे खाने वाला बन्दर या आदमी धरती सें लाखों गुणा बड़ा होना चाहिये. दूसरे हाड माँस का बना कोई भी जीव सूर्य को खाना तो दूर उसके पास भी नहीं जा सकता. ऐसे में अगर कोई कथा कहे कि हनुमान सूर्य को मूंह में दबा कर धरती पर आ पड़ा तो यह उसके दिमागी दिवालियेपन का सबूत ही है.
- जब सें मानव जीवन पनपा है केवल और केवल मादा ही बच्चे को जन्म देती आई है लेकिन पुराणों में कथाएं हैं कि विष्णु की नाभि सें ब्रह्मा पैदा हो गया. ब्रह्मा की छींक सें विष्णु पैदा हो गया और पार्वती ने मैल सें गणेश पैदा कर लिया. ग्रन्थकारों के दिमागी पागलपन की कोई तो हद ही नहीं रही.
- अगस्त्य ऋषि का मूड बन गया तो वह सारे समुद्रों का पानी पी गया. आज हम सभी जानते हैं कि धरती का दो तिहाई भाग पानी है तथा केवल एक तिहाई भाग ठोस है. अतः धरती पर इतना बड़ा प्राणी कोई टिक ही नहीं सकता जो धरती के ठोस भाग सें दोगुना पानी अपने पेट में डाल सकता हो.
- राम ने तीर मार कर सारे समुद्र सुखा दिये. अगर राम इतना ही बहादुर था तो बाली के सामने आते हुए उसकी हवा क्यों निकल गई और उसने छुप का बालि की हत्या क्यों की. सीता को लेने खुद लंका क्यों नहीं गयाण दो बार दूत क्यों भेजे.
- एक दिन अत्री ने समुद्र में पेशाब कर दिया इतना अधिक पेशाब किया कि समुद्र का पानी ही खारा हो गया.
- राहू केतु नाम की कोई वस्तु नहीं हैं फिर भी यह हनुमान की तरह वे सूर्य और चन्द्रमा को खाते हैं जिससें ग्रहण लग जाते हैं.
- राजा प्रियवत रथ लेकर घूमने निकला जहां जहां उसके पहिये घूमे वहां समुद्र बन गये. (भागवत 5.1.31)
- सभी जानते हैं कि सात महासागर हैं. अब सें 50–60 साल पहले तक समुद्र यात्रा पाप मानी जाती थी. गांधी को भी समुद्र लांघ कर विदेश जाने के कारण प्रायश्चित के तौर पर ब्राह्मणों को दान देना पड़ा था. भागवत पुराणकार कहता है कि भारत सें क्रमशः यह समुद्र इस प्रकार सें हैं पहला खारे जल का, दूसरा गन्ने के रस का, तीसरा शराब का, चौथा घी का, पांचवां दूध का, छठा लस्सी का तथा सातवां मीठे पानी का है. पुराणकार भांग कुछ ज्यादा ही चढ़ा गया लगता है. जिस जिस चीज के लिए उसकी इच्छा हुई

उसी चीज का उसने समुद्र होने की कल्पना कर डाली. वर्ना किसी और को तो चाहे न दिखे हों गांधी को तो ऐसे समुद्र अवश्य दिखने चाहिये थे.

- ऐसे ही कल्कि पुराण में कुथोदरी की कथा है जो इतनी बड़ी थी कि लेटे हुए उसका सिर हिमालय पर तो पैर विंध्याचल पर थे. वह अपने बच्चे को दूध पिला रही थी. बच्चे के मूंह सें दूध की बूंदे बाहर गिर रही थी उससें दूध की नदियां बह रही थीं. उसकी सांस के साथ अनेक सैनिक उसके पेट में चले गये जो बाद में उसके कान नाक व योनि मार्ग सें रथों समेत बाहर निकल आये. अंत में कल्कि ने उस दूध पिलाती माँ को मार दिया.
- महाभारत द्वापर के अंतकाल की घटना है. अश्विनी कुमारों ने पांडू की पत्नि माद्री सें नियोग करके नकुल सहदेव को पैदा किया. अश्विनी कुमार सत्ययुग की पैदावार हैं जिनका जिक्र ऋग्वेद में भी आया है. अगर युगों की न्यूनतम अवधि भी मानें तो सत्ययुग के 4800 साल त्रेता के 3600 साल और द्वापर के 2400 साल की अवधि का था. अतः अश्विनी कुमार जब छः सात हजार साल की उम्र तक न केवल जिन्दा रहे बल्कि इतनी उम्र के हो जाने पर भी उन्होंने माद्री के बच्चे पैदा किये!! अगर ब्राह्मणों की गणना सत्य मान लें तो अश्विनी कुमारों ने लगभग 35 लाख साल के हो जाने के बाद यह कारनामें किये.
- अश्विनी कुमारों का बाप सूर्य था. वह तो उनसें भी बड़ा था. फिर भी उसने माद्री की सौत कुन्ती के कर्ण पैदा कर दिया. कमाल की बात है तीनों में कोई भी नहीं मरा और न ही बूढ़ा हुआ. ब्राह्मणों के नियोगी लाखों साल तक नहीं मरते थे. फिर पता नहीं सारे के सारे ही कैसे मर गये आजकल कोई भी दिखाई नहीं देता!!
- महाभारत की कथा अपने आप में एक काल्पनिक कहानी सें ज्यादा कुछ नहीं है. पूरे भारत में कहीं भी कोई स्थान या वस्तु नहीं है जो यह सिद्ध करती हो कि महाभारत का "युद्ध" हुआ था. और न ही कहीं इस बात का सबूत मिलता है कि कृष्ण अथवा कौरव पांडव कभी पैदा भी हुए थे. सभी जानते हैं कि महाभारत का पोथा शुरू में जय नाम की कहानी थी जिसमें कुल 2400 पद थे. इसमें बात इतनी सी बात थी कि दो परिवारों ने जूआ खेला और अपना सर्वनाश कर लिया. अतः लोगों को जूआ नहीं खेलना चाहिए. लेकिन समय बीतने के साथ इसमें हर कोई अपनी कहानी घुसेड़ता गया. (आदि 1.300) यहां तक कि गीता प्रेस वाले ने भी अपनी ओर सें इसमें बढ़ोतरी कर दी है. अब कहानी का असली मकसद तो समाप्त हो गया है. बस बाकी रह गया है कृष्ण को अवतार सिद्ध करना.

  महाभारत को झूठ साबित करने के लिये निम्न सबूत मौजूद हैः

  1. महाभारत का युद्ध द्वापर के अंत में हुआ बताते हैं यानि कलियुग शुरू होने सें पहले की यह घटना है. आप्टे के अनुसार 13 फरवरी 3102 ईसा पूर्व यानि लगभग 5100 साल पहले कलियुग शुरू हुआ. लगभग 5000 ईसा पूर्व में सिन्धु घाटी सभ्यता पनपी. **आज पूरे भारत में सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेश मिल रहे हैं. लेकिन महाभारत का एक कंकर भी नहीं मिल रहा है.** कहने को तो मथुरा वृंदावन में अनेको पेड़ मिल जाएंगे जहां कृष्ण ने गोपियों के कपड़े टांगे थे. हो सकता है एकाध पेड़ पर उनकी घाघरा चोली भी टंगी मिल जाए लेकिन परीक्षण करने पर उनमें सें कोई भी वस्तु सौ पचास साल सें पुरानी नहीं मिलेगी. अतः महाभारत की कथा कल्पना सें अधिक कुछ भी नहीं है.
  2. महाभारत की कथा के अनुसार 18 दिन "युद्ध" चला जिसमें 18 अक्षौहिणी सेना मारी गई. 18 अक्षौहिणी सेना का अर्थ है **55 लाख 11 हजार मनुष्य,** 23 लाख 62 हजार घोड़े तथा 3 लाख 94 हजार हाथी. इस के अतिरिक्त 3 लाख 94 हजार रथ भी नष्ट किये गये. आजकल कुरुक्षेत्र हरियाणा प्रांत में है. भारतीय जनगणना के आंकड़ों के अनुसार सन् **1951 में पूरे हरियाणा प्रांत की आबादी 56 लाख थी.** अतः महाभारत में पूरे हरियाणा की जनसंख्या को मार दिया गया. ऐसा संभव ही नहीं है. उस समय पूरे भारत की आबादी भी 55 लाख नहीं होगी.
  3. आज भारत सरकार के कर्मचारियों की संख्या कुल 42 लाख है. (रैडिफ.कॉम 26जुलाइ'06) इसमें रेलवे, डाक विभाग, टैलिफोन, सेना तथा आयकर विभाग आदि के कर्मचारी शामिल हैं. एक पल के लिये सोचें (हमारी कामना है ऐसा कभी न हो) कि यह सभी कर्मचारी न रहें तो!! तो पूरा भारत ठप्प हो जायेगा. लेकिन महाभारत में तो इन कर्मचारियों सें भी सवाइ संख्या में लोगो को मार दिये जाने का जिक्र है!! गप्प मारने में कौन सा टैक्स लगता है!!
  4. 1992 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार पूरे भारत में खच्चरों और घोड़ों की कुल संख्या 8 लाख 62 हजार है. द्वापर में अकेले कुरुक्षेत्र कस्बे में 20 लाख घोड़े मार दिये गये!! इससें बड़ी गप्प और क्या होगी.
  5. ऐसे ही इस "युद्ध" में 3 लाख 94 हजार हाथी मारे गये. अफ्रीका को हाथियों का घर कहा जाता है. वहां के सबसें बड़े जंगल में कभी 4300 हाथी होते थे. पूरे अफ्रीका में एक लाख होंगे. विश्व भर में

दो लाख होंगे. लेकिन अकेले कुरुक्षेत्र में चार लाख के करीब हाथी "मार" दिये गये. गप्प मारने में कौन सा टैक्स लगता है.

6. ऐसे ही इस "युद्ध" में चार लाख के करीब रथ नष्ट किये गये. सन् 1950 तक भारत में बैलगाड़ी और टांगा ही यातायात का प्रमुख साधन थे. 1950 में जब भारत की आबादी 36 करोड़ थी तब भी पूरे भारत में चार लाख बैलगाड़ियां और टांगे नहीं थे. अकेले कुरुक्षेत्र में चार लाख रथों का नष्ट होना, भांग खाकर गप्प हांकने के समान है.
7. सबसें मुख्य बात यह भी है कि इस तथाकथित युद्ध में पांच पांडव और एक कृष्ण कुल छः प्राणी एक तरफ थे और बाकी सभी लोग दूसरी तरफ थे. कृष्ण ने तो किसी को अपने हाथ सें मारा नहीं. अतः कुल पांच पांडवों ने यह 82 लाख प्राणी मारे. यानि प्रतिदिन साढे चार लाख प्राणी मारे. प्रति पांडव ने 90 हजार प्राणी रोज मारे. महाभारत के अनुसार दिन ढलते ही सब लड़ाई बंद कर देते थे. अतः प्रतिदिन 12 घण्टे सें ज्यादा देर तक लड़ाई नहीं होती थीं. 12 घण्टे में 90 हजार आदमी, हाथी और घोड़े मारना यानि 7500 प्राणी प्रति घण्टे यानि एक सैकिंड में 2 प्राणी मार देना. एक सैकिंड में दो आदमी अथवा हाथी तो क्या अगर चींटियां भी एक एक करके मारनी हों तो उन्हें भी नहीं मारा जा सकता.
8. सबसें मुख्य बात यह कि आज पूरे भारत की सेना में जवानों की संख्या 11 लाख है जो कश्मीर सें लेकर कन्याकुमारी और कच्छ सें लेकर अरूणाचल तक की हजारों मील लम्बी सीमाओं की रक्षा करते हैं. अतः यह कहना कि मात्र कौरवों पांडवों और उनके रिश्तेदारों के 55 लाख सेनिक युद्ध करने के लिए कुरुक्षेत्र में आ गये थे, अपने आप में बकवास करने के समान है.
9. कहते हैं कि महाभारत के "युद्ध" में 18 अक्षौहिणी सेना मारी गई. एक अक्षौहिणी में निम्न प्राणी और वस्तुएं होती हैं.

(1) हाथी : 21,870
(2) रथ : 21,870
(3) घोड़े : 87,480 (65,610 घुड़सवार सैनिकों के लिए तथा 43,740 रथों में जुते हुए.)
(4) हाथी सवार : 65,610 प्रत्येक हाथी पर सवार 3 मनुष्य (1 चालक, 1 योद्धा तथा 1 सहायक)
अतः 21780 हाथियों पर सवार कुल मनुष्य = 65610
(5) रथ सवार : 65,610 प्रत्येक रथ पर सवार 3 मनुष्य (1 चालक, 1 योद्धा तथा 1 सहायक)
अतः 21780 रथों पर सवार कुल मनुष्य = 65610
(6) घुड़सवार : 65,610 प्रत्येक घोड़े पर एक सवार
(7) पैदल सैनिक 1,09,350 (अतः एक अक्षौणी में कुल मनुष्य (4)+(5)+(6)+(7) = 3,06,180 तथा जानवर हुए 21870+87480 यानि 1,09,350 तथा रथ हुए 21870)

इस आधार पर 18 अक्षौहिणी में हुए :

मनुष्य = 3,06,180 x 18 = 55,11,240
घोड़े = 1,31,220 x 18 = 23,61,960
हाथी = 21,870 x 18 = 3,93,660
रथ = 21,870 x 18 = 3,93,660

पूरी महाभारत में कहीं भी ऐसा जिक्र नहीं है कि कभी सेना में जगह की तंगी महसूस की गई हो. सेनिकों के लिए तम्बू भी लगाये गये थे. पशुओं के लिए चारा पानी आदि भी स्टोर किया गया था. अतः माना जा सकता है कि सेनिक और जानवर सभी खुले स्थान में रहे. महाभारत में इस बात का भी जिक्र नहीं हैं कि एक तरफ के सैनिक दूसरी तरफ की सेना के अंदर तक घुस कर लड़े हों. अतः माना जा सकता दो सौ गज सें कम चैड़ाई में ही सेनिक लड़े होंगे. अतः 55 लाख सेनिकों के लड़ने के लिये कम सें कम 60 किलो मीटर लम्बा मैदान चाहिए. आज के समय भी कुरुक्षेत्र में 60 किलोमीटर का मैदान नहीं है. 27 लाख घोड़े हाथी और रथ खड़े करने के लिये 80 किलोमीटर लम्बा मैदान चाहिये था. अतः पूरी सेना के लिये 140 किलोमीटर लम्बा मैदान चाहिए था. 5000 साल पहले इस धरती पर बिना जंगलों के इतना बड़ा मैदान होना ही संभव नहीं है.

असल बात तो इतनी सी है कि पुराने समय में आर्यों को लिखना नहीं आता था. उनमें सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी जुबानी बातें आगे चलती रहती थीं. कौरवों और पांडवों में जूए की सम्पत्ति को लेकर झगड़ा हो गया. इस झगड़े में कौरव मारे गये. यह झगड़ा कुरू के खेत में हुआ था जिसे संस्कृत में

कुरूक्षेत्र कहते हैं. लेकिन जैसे ब्राह्मणों की आदत रही है वे हमेशा ही घूंसे को पंचतत्व बनाते और बताते आये हैं उन्होंने कुरू के खेत को कुरूक्षेत्र बना दिया. आपसी झगड़े को विश्व युद्ध सें भी भयानक युद्ध बना दिया. कहानी कहने वाले इसे अगर दो परिवारों का झगड़ा बताते तो उन्हें बात बताने में मजा नहीं आता और शायद कोई सुनता भी नहीं. सो हर कोई इस कथा को बढ़ा चढ़ा कर पेश करने लगा. अतः जब तक यह कथा लिखित रूप में आई तब तक "मरने" वालों की संख्या लाखों में पहुंच गई. खास करके जब कृष्ण इस कथा में जोड़ा गया तो उस "भगवान" के हाथों दस बीस आदमियों को मरवाना मजे की बात नहीं थी. यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे कोई आजकल मंत्री बन जाये और उसके साथ केवल एक ही सुरक्षा कर्मी हो. मंत्री बनने का मजा तो तभी है जब बलैक कमांडो की पूरी भरी गाड़ी आगे आगे सायरन बजाती चले. बस ऐसा ही कुछ महाभारत के साथ हुआ. इसके न केवल श्लोक 2400 सें बढ़ कर एक लाख हुए बल्कि इसकी कहानियों में टविस्ट का मसाला भी आता गया.

10. महाभारत के तथाकथित विश्व युद्ध को गप्प साबित करने के लिये एक तथ्य और है. वह तथ्य यह है कि इस सौ डेड सौ किलोमीटर के मैदान में हो रहे युद्ध को संजय नामक आदमी न केवल देख रहा था बल्कि वह हरेक की आवाज भी सुन रहा था. कौन किस के साथ क्या कर रहा है, कौन किसे क्या कह रहा है वह सब देख और सुन रहा था. जैसे आजकल रेड़ियो पर क्रिकेट मैच की कमेंटरी आती है संजय नामक वह आदमी 150 किलोमीटर दूर बैठ कर इस विश्व युद्ध की रनिंग कमेंटरी अन्धे धृतराश्ट्र को सुनाये जा रहा था. उसे न केवल हो रही घटनायें दिख रही थीं बल्कि कोई मन में क्या सोच रहा है उसे वह भी दिखाई और सुनाई दे रहा था.
11. विश्व में दो बार महा युद्ध हो चुके हैं जिसमें दुनिया के लगभग सभी देश या तो सीधे लड़े अथवा अपनी फौजें साथी देश को सौंप दीं. कई कई सालों तक लगातार युद्ध हुए मगर इन दोनों विश्व युद्धों में भी कुल मिला कर उतने प्राणी नहीं मरे जितने पांडवों ने कुल 18 दिनों में मार दिये!! गप्प मारने में कुछ तो शर्म आनी चाहिए थी. और बेशर्मी की बात देखो इस गप्प का प्रचार भी किया जा रहा है.
12. महाभारत का झूठ इससें भी साबित होता है कि इसके अधिकतर पात्र अमानवीय ढंग सें "उपजे" हैं. कोई डोंगे सें उपजा है तो कोई सरकण्डों सें. कौरव तो सारे के सारे मॉंस के टुकड़े सें घी के बर्तनों में उपजे हैं. कईयों को घोड़ी सें पैदा हुए बच्चों ने पैदा किया है. कईयों को उन लोगों ने पैदा किया है जो दो युग पहले ही मर खप लिये थे. और तो और कहानी लिखने वाला और पांडवों का औरस (असली) बाप उस लड़की सें पैदा हुआ था जो मछली के पेट सें जन्मी थी. कहानी कलमबद्ध करने वाला भी मैल सें उपजा था. कहानी की हिरोइन भी यज्ञ के कुण्ड सें उपजी थी. **आज चाहे कोई "विद्वान" कितना भी महाभारत को सत्य सिद्ध करने की दलीलें दे मगर वह उस ढंग सें एक भी बच्चा पैदा करके नहीं दिखा सकता जैसे महाभारत के हीरो हिरोइन विलेन लेखक आदि उपजे हैं.**
13. रामायण त्रेता काल की घटना बताई जाती है. हनुमान उसका मुख्य पात्र है. हनुमान को पवन ने अंजनि सें व्यभिचार करके पैदा किया. महाभारत द्वापर काल के अंत की घटना बताई जाती है. भीम इसके मुख्य पात्रों में सें है. उसका बाप भी पवन है. एक ही आदमी दो युगों तक बच्चे पैदा करने के लिये जिन्दा रहा? ऐसा सम्भव ही नहीं है.
14. और तो और महाभारत के पात्रों कृष्ण, पाण्डू, दुशासन, अर्जुन युधिश्ठर कर्ण आदि का किसी भी प्राचीन वैदिक ग्रन्थ में जिक्र भी नहीं है. (गोमॉंस 62) भगवन बुद्ध ने आज सें लगभग ढाई हजार साल पहले भारत भूमि को आलोकित किया था लेकिन उनकी वाणी में कहीं भी महाभारत के किसी पात्र का जिक्र नहीं है. यहां तक कि सम्राट अशोक के शिलालेखों में भी किसी का जिक्र नहीं है. यह सभी पात्र सम्राट वृहदर्थ की हत्या करने के बाद पहली सदी में घढ़े गये.
15. महाभारत की सारी कहानी सत्यवती सें शुरू होती है. सत्यवती एक मछुआरे की बेटी थी जिससें भीष्म का बाप शादी करना चाहता था. **लेकिन अजीब बात है कि शूद्र होते हुए भी सत्यवती का बाप एक क्षत्रिय और वह भी उसके प्रदेश का राजा, सें अपनी बेटी का रिश्ता करने सें मना कर देता है. ऐसा करना संभव ही नहीं था. लेकिन अगर कथाकार ऐसी कहानी नहीं बनाता तो महाभारत की कहानी ही नहीं बनती. भीष्म प्रतिज्ञा नहीं करता और राजा बन जाता. कौरवों पांडवों के पास जूआ खेलने के लिए कुछ बचता ही नही!**

-

10.8 जातिवाद

ब्राह्मणोंने सबसें बड़ा धोखा जो लोगों के साथ किया है वह यह हैं कि उन्होंने पूरे भारतीय समाज को जातियों उपजातियों में बांट दिया है. इसमें सबसें घातक बात यह हैं कि हर भारतीय अपने आप को एक जाति विशेष सें सम्बधित ही मानता है. कोई भी जातिवादी भारतीय अपने आप को सबसें पहले अपनी जाति का मानता है फिर अपने आप को आदमी मानता है. हर कोई इसी काम में लगा हुआ है कि उसकी जाति सामने वाले की जाति सें ऊँची है. न केवल सामने वाले सें बल्कि अपने ही लागों में भी उसकी जाति/कुल /गोत्र दूसरों सें ऊँचा है.
हम जब अपने बच्चों की शादी करते हैं तो मात्र यही देखते हैं कि हमारी जाति में कौन लड़का लड़की योग्य हैं. राष्ट्रीय मुद्दों पर भी हम जाति के आधार पर विरोध या समर्थन करते हैं. वोट देते वक्त भी हम "अपने" ही आदमी को वोट देते हैं. हम कभी सोचते ही नहीं कि हमारे दिमाग की पंगु हालत किसने की है. हम बजाए दोषी को पकड़ने के इसी बात में लगे हुए हैं कि हमारी जाति दूसरों सें ऊँची है. सबसें बड़े दुख की बात तो यह है कि जिनकी जाति नीची बताई गई है वह भी अपने आप को दूसरी जाति वालों सें नीचा और हेय मानने लगे हैं.
कितने शर्म की बात है कि आज तक **एक भी सन्त** ब्राह्मणों में पैदा नहीं हुआ लेकिन समस्त मंदिरों पर उनका कब्जा है. सभी सन्त दलित या वैश्य समाज सें हैं लेकिन इन जातियों में सें एक भी आदमी किसी मंदिर का पुजारी बनने का अधिकारी नहीं है, पुजारी होना या बनना तो बहुत दूर की बात है. जातिवाद ने उनके दिमाग को इस कदर पंगु कर दिया है यह बात उनके दिमाग में आती ही नहीं है कि वे भी मंदिर के पुजारी बनने के अधिकारी हैं. हम सभी जानते हैं कि कृष्ण यादव था लेकिन कोई यादव यह सोचता भी नहीं कि कृष्ण के मंदिरों में कृष्ण के यादव कुल वाले ही पुजारी क्यों नहीं हैं.
जातिवाद का लाभ केवल और केवल बाह्मण वर्ग ही क्यों उठा रहा है, यह बात कोई भी गैर ब्राह्मण सोच ही नहीं पा रहा है. क्यों ? क्योंकि सदियों सें जातिवाद का जहर पीकर हम लोग अपने आप को अपनी जाति सामाजिक पोजीशन के समान ही समझने लग गये हैं अर्थात दलित राष्ट्रपति बनकर भी दलित ही रहता है. दलित राष्ट्रपति को कभी वह सम्मान नहीं दिया जाता जिसका वह अधिकारी होता है अथवा जो एक ब्राह्मण राष्ट्रपति को दिया जाता है. उदाहरणतः भारत में दो बहुत पढ़े लिखे राष्ट्रपति हुए हैं एक माननीय के आर नारायणन (दलित) और दूसरे राधा कृष्णनन. (ब्राह्मण) राधा कृष्णनन के नाम पर हर 5 सितम्बर को अध्यापक दिवस मनाया जाता है क्योंकि वह ब्राह्मण थे माननीय नारायणन अपने विश्वद्यिालय में प्रथम रहे भारत की सबसें महान यूनिवर्सिटी जे एन यू के वाइस चांसलर भी रहे लेकिन उनका नाम भी नहीं लिया जाता. राधा कृष्णनन ने जितनी भी पुस्तकें लिखीं सभी में पक्षपात की बू आती है. हर पुस्तक ब्राह्मवाद के "झूठ" को "सत्य" साबित करने के उद्देश्य सें लिखी गई है. भगवन बुद्ध ने ब्राह्मणवाद की धज्जियां उड़ा दी. जिस समय भगवन बुद्ध ने मानवता का संदेश दिया, "हिन्दू" शब्द कोई जानता भी नहीं था लेकिन ब्राह्मण राधा कृष्णनन की घृष्टता (शायद धूर्तता अधिक उपयुक्त शब्द है) देखो वह उन्हें हिन्दू बताता है. फिर भी ऐसे आदमी के नाम पर अध्यापक दिवस घोषित किया जाता है. कारण एक ही है जातिवाद का जहर!!
भारत में पहला बालिका स्कूल माननीय सावित्री बाई फूले ने शुरू किया. पूजनीय ज्योतिबा ने भारत में पहला स्कूल खोला. उनके नाम पर कोई अवार्ड नहीं है लेकिन महानीच द्रोण (ब्राह्मण) जिसने वीर एकलव्य का अंगूठा काटा उसके नाम पर सर्वोत्तम अध्यापक का इनाम दिया जाता है. सदा अंग्रेजों के तलवे चाटने वाला मंगल पांडे आज हर पाठ्य पुस्तक का हिस्सा है लेकिन देश पर जान लुटाने वाले मदन लाला ढींगरा उधम सिंह कमोअ जैसे वीरों का नाम किसी सरकारी स्कूल की पुस्तक में नहीं है. क्योंकि ये लोग पांडे की तरह ब्राह्मण नहीं हैं.
आम आदमी ही नहीं गैर दलित धार्मिक गुरू भी इस जहर सें बच नहीं पाये. गुरू गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ स्थापित किया. इस पंथ में अधिकतर दलित गुरू के प्यारे बने. इसलिए उन्होंने कहा रंगरेटे गुरू के बेटे अर्थात चमड़ा रंगने वाले गुरू के बेटे हैं. निश्चित रूप में सदियों सें कुचले जा रहे लोगों के लिए यह एक महान सम्मान था लेकिन विडम्बना देखो उनकी खालसा फौज उन ब्राह्मणों को बचाने में ही लगी रही जो सदियों सें इन गुरू के बेटों का ही शोषण करते आ रहे थे.

अध्याय 11
सत्य दमन

11.1 ऋषि आश्रम : यानि ऐयाशी के अड्डे

जितनी दासियां और हथियार ब्राह्मण ऋषियों के आश्रमों पर होते थे उतने हथियार और स्त्रियां तो अंडरवर्ल्ड के सरदार भी अपने अड्डों पर नहीं रख पाते होंगे.

11.2 ब्राह्मणों की रक्त शुद्धता : नहीं

अक्सर यह दावा किया जाता है कि द्विज शुद्ध रक्त के हैं अर्थात ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा वैश्यों का अपनी जाति के इलावा अन्य लोगों से खून का रिश्ता नहीं रहा है. आम तौर पर यह कहा और समझा जाता है कि शूद्रों का खून शुद्ध नहीं है. उनकी स्त्रियों का अन्य जाति के लोगों से सम्बंध रहा है. लेकिन वास्तविकता में सभी जातियों की स्त्रियों के दूसरी जाति के लोगों से सम्बंध रहे हैं. भारत का कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि उसके खानदान अथवा जाति का रक्त एकदम शुद्ध है. इसके कारण हैः

- मनु का आदेश है "जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारत् द्विज उच्चयते" अर्थात जन्म से तो सभी शूद्र पैदा होते हैं. केवल संस्कार ही उन्हें द्विज (दूसरी बार जन्मा) बनाता है. मनु स्मृति अध्याय 2 के अनुसार जो माता पिता अपने बालक को द्विज बनाना चाहते हों वे उसका मुण्डन पहले या तीसरे साल में करवा लें. उसके बाद उसका उपनयन संस्कार करवा लें. उपनयन संस्कार का साधारण भाषा में अर्थ है जनेऊ धारण करना.

  इसके नियम थे :

  1. जो माता पिता चाहें कि उनका बालक ब्राह्मण बने तो गर्भ से आठवें वर्ष में उपनयन संस्कार करवा लें. अगर जल्दी हो तो पांचवें साल में करवा सकते हैं.
  2. जो माता पिता चाहें कि उनका बालक क्षत्रिय बने तो गर्भ से ग्याहरवें वर्ष में उपनयन संस्कार करवा लें.
  3. जो माता पिता चाहें कि उनका बालक वैश्य बने तो गर्भ से बाहरवे वर्ष में उपनयन संस्कार करवा लें.
  4. जिनका उपनयन नहीं होता वे अद्विज यानि शूद्र रह जाते हैं. वे चाहे किसी भी वर्ण के क्यों न हों. अतः सम्भव है कि शूद्रों ने भी अपने बालकों को द्विज बनाया हो.
  5. जो व्यक्ति जिस वर्ण में दीक्षा दिलाना चाहे वह इन तीनों में किसी भी वर्ण में प्रवेश ले सकता है. पुनः शिक्षा दीक्षा के बाद आचार्य अन्तिम रूप से उसके वर्ण का निश्चय करता है. (121—123)

- उपरोक्त पैरा 4 में जो बात कही गई है वैसा ही कुछ महाभारत के लेखक ने कर्ण के मुख से कहलवाया है. उसके अनुसार गंधार से लेकर केरल तक शूद्रों से अन्य स्त्रियों द्वारा उत्पन्न अधम ब्राह्मण वहां रहते हैं. (कर्ण 44,45) अतः **महाभारत के अनुसार पूरे भारत में शूद्र मर्दों द्वारा पैदा किये गये ब्राह्मण रह रहे हैं** लेकिन क्योंकि वे शूद्र पिता की औलाद हैं इसलिये अधम ब्राह्मण हैं. शायद यही कारण है कि सभी ब्राह्मण अपने कुल को दूसरे ब्राह्मण कुल से उच्चतर बताता है.
- कर्ण यह भी कहता है कि कुछ प्रदेशों में मनुष्य पहले ब्राह्मण बनता है फिर क्षत्रिय वैश्य शूद्र और अंत में नापित (अछूत) बन जाता है तथ फिर पुनः ब्राह्मण बन जाता है. (कर्ण.44) (राज 53) अतः जिस समय आदमी जिस वर्ण में होता था उसके बच्चे वही वर्ण अपनाते थे. राजवाड़े के अनुसार पूर्व काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आपस में वर्ण बदलते थे. (पृ. 19)
- हरिवंश (32) के अनुसार एक ही भार्गव वंश में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का जन्म हुआ. (समु 1.4)
- राजवाड़े के अनुसार वशिष्ठ और ऋष्यश्रृंग दोनों ही कश्यप व द्रोण की तरह अशुद्ध योनि थे परन्तु उन्हें बड़े होकर बाप का वर्ण मिला. ये सभी ब्राह्मण ऋषि वेश्याओं के समागम से पैदा हुए. वेश्या की रक्त शुद्धता पर टिप्पणी करना बेमानी होगा.
- ब्राह्मण कहे जाने वाले व्यास में ब्राह्मण पराशर के साथ साथ निषाद सत्यवती का रक्त भी था.
- वशिष्ठ का पुत्र सुकाली है. वह शूद्रों का पितर है. पुलस्त्य का पुत्र आज्यपा है जो क्षत्रियों का पितर है. (मनु 3.198)
- अलबरूनी के समय तक यानि 1100 ई स्वी तक वैश्य और शूद्रों में विशेष अंतर नहीं था. उनमें रोटी बेटी का रिश्ता था. (पृ.) शायद यही कारण है कि आज बनियों और दलितों के बहुत से गोत्र मिलते हैं.
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र पढ़ कर ऐसा लगता है कि पहली सदी के आसपास पूरा आर्यवर्त वेश्यावृति से ओतप्रोत था. उनके गर्भ से जन्में बच्चे राजा तक बने. अप्सराएं भी वेश्यायें ही होती थीं. उनके गर्भ से अनेकों ब्राह्मण ऋषि पैदा हुए हैं. वेश्या के गर्भ से पैदा बच्चे का बाप कौन है कोई नहीं बता सकता. ऐसे बच्चे बाद में ब्राह्मण बने और ब्राह्मण कुल को आगे बढ़ाया.
- पराशर ब्राह्मण भृगु का पोता था. (दृग स्पर्श 64) सभी जानते हैं कि पराशर ने केवट कन्या सत्यवती से व्यास को पैदा किया था. अतः ब्राह्मणों की रगों में केवट अथवा निषादों का खून भी दौड़ रहा है.
- सत्यकाम जाबालि वेश्या का पुत्र था जो बड़ा होकर ब्राह्मण बना. उसकी रगों में किस वर्ण का खून दौड़ रहा था उसकी माँ भी नहीं बता पाई. वह ऋषि बना. अतः पता नहीं उसने कितनी ब्राह्मण कन्याओं को वीर्यदान दिया होगा.

- कौटिल्य का अर्थशास्त्र पढ़ कर लगता है कि उस समय पूरे आर्य समाज की स्त्रियां वेश्यावृति करने को मजबूर थीं. अतः कोई भी भारतीय शुद्ध रक्त की बात कर ही नहीं सकता.

11.3 ब्राह्मणों की शांति प्रियता यानि रक्त पिपासा

ब्राह्मण अपने धर्म को अहिंसावादी प्रचारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते. वे अपने धर्म को विश्व का सबसें बड़ा शांति प्रिय धर्म बताते नहीं थकते. लेकिन उनकी शांति प्रियता बिल्कुल वैसी ही है जैसे ड्रैकूला (पिशाच) को लोगों का खून पीकर शांति मिलती है. ब्राह्मण ग्रन्थ उनके देवों भगवानों हीरो हिरोइनों द्वारा किये गए काले कारनामों सें भरे पड़े हैं जहां उन्होंने शांति के नाम पर मासूमों और निर्दोषों का खून बहाया. चाहे यह कारनामे और उन्हें करने वाले सभी पात्र काल्पनिक हैं लेकिन ऐसे किस्से यह जरूर दर्शाते हैं कि उन्हें रचने वाले ब्राह्मणों की मानसिकता कैसी है.

- यही कारण है कि उनका कोई भी देवता देवी भगवान हीरो हिरोइन बिना हथियारों के नहीं है. कईयों के तो आठ आठ हाथ बनाये गये हैं और सभी हाथों में हथियार हैं
- उनके जितने भी देवता देवी भगवान हीरो हिरोइन हुए हैं उन्होंने विरोधियों के साथ धोखा छल कपट किया और उन्हे मौत के घट उतार दिया. ऐसा शायद कभी हुआ ही नहीं कि उनके किसी देवता देवी भगवान हीरो हिरोइन ने आमने सामने की लड़ाई में विरोधी को हराया हो.
- उनके तमाम देवता देवी भगवान हीरो हिरोइन ने मात्र और मात्र ब्राह्मणों के हित के लिये हत्यायें कीं. उन्होंने कभी किसी को इसलिये नहीं मारा कि उसने आम जनता को तंग किया था. ब्राह्मणों के भगवान तो विप्र और उनकी गाय को बचाने ही आते थे.
- उनका कोई देवता देवी भगवान हीरो हिरोइन ऐसा नहीं है जिसने भोले भाले पशुओं का शिकार न किया हो.
- उनके ऋषियों के आश्रम हथियारों के अड्डे होते थे. जैसे आजकल आतंकवादियों के ट्रेनिंग कैम्प होते हैं वैसे ही इन ऋषि अड्डों पर ब्राह्मण विरोधियों को कत्ल करने की ट्रेनिंग दी जाती थी. इन ऋषि अड्डों पर हथियारों की ट्रेनिंग लेकर कोई भी आम आदमी के भले के लिये नहीं लड़ा. सब आतेकवादियों की तरह मात्र अपने आकाओं के लिये लड़े मरे. अगर ऋषि संत होते थे तो वे हथियार क्यों रखते थे? संत तो कबीर और रैदास भी हुए हैं उन्होंने तो कभी कोई हथियार नहीं रखा जबकि गुरू रैदास की तो ब्राह्मणों ने पीट पीट कर हत्या कर दी थी.
- ब्राह्मणों और उनके देवता देवी भगवान हीरो हिरोइनों का कोई भी यज्ञ बिना माँस के नहीं होता था. हर यज्ञ में सैंकड़ों हजारों निरीह प्राणी काटे जाते थे. इस बारे में विस्तार सें चर्चा अध्याय "यज्ञ" में की जा चुकी है.
- ब्राह्मण न केवल शांति प्रिय होने का दावा करते हैं बल्कि सहिष्णु (मिलजुल कर रहने वाले) होने का दावा भी करते हैं जबकि सच्चाई यह है कि उन्होंने अपने विरोधियों का बेरहमी सें दलन किया है. उदाहरणतः

14. जैनों ने अहिंसा का प्रचार किया जिससें ब्राह्मणों के हिंसामयी यज्ञ बंद हो गये लेकिन जैसे ही जैन धर्म कमजोर पड़ा उन्होंने पूरे वहशीपन सें बदला लिया. ब्राह्मणवादी रामानुज के कहने पर राजा विष्णुवर्धन ने हजारों जैनों को जीवित तेल की घाणी में पिसवा दिया. महेंद्र वर्मन ने जैन मंदिर तुड़वा कर वहां शिव मंदिर बनवाये. तंजौर के मंदिरों में आज भी ऐसे चित्र मौजूद हैं जहां जैनों को सूली पर चढ़ाया गया. (समु 1.6)

15. ब्राह्मण राजा शशांक ने बुद्ध विहार नष्ट किये. बोधि वृक्ष उखाड़ा और बोद्धों को कत्लेआम किया. (समु 1.6)

16. सिद्धांतों और नैतिकता के संघर्ष में बुद्ध धर्म के सामने ब्राह्मणवाद टिक नहीं सका. अतः मौर्य काल में भारत सें उसका सफाया हो गया था लेकिन ब्राह्मणों ने अपनी साम दाम दण्ड की नीति अपनाते हुए महाराज वृहदर्थ का धोखे सें क्त्ल कर दिया और सत्ता पर कब्जा कर लिया. ब्राह्मण पुष्यमित्र राजा बन गया और फिर उसने बौद्धों के खून सें वहशियाना होली खेली. बोधि वृक्ष जला दिया गया. भारत में बसने वाले सभी भिक्षु कत्ल कर दिये गये. गृहस्थ बौद्धों को या तो ब्राह्मणवाद अपनाना पड़ा या फिर वे भी उस दरिंदे की तलवार का शिकार हुए. लोग घर बार छोड़ कर जंगलों में जाकर छिप गये. आज के आदिवासी उन्हीं बौद्धों की सन्तान हैं. उसने हर बौद्ध भिक्षु के सिर के बदले में 100 दीनार इनाम दिये.

17. जिन लोगों ने उस समय ब्राह्मणवादियों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया उन्हें ब्राह्मणों ने अछूत करार देकर सेवा करने के लिये रख लिया. **आज भी भारत में इन अछूतों की संख्या अमरीका इंगलैंड की जनसंख्या सें भी अधिक है. आज भी इन लोगों को मंदिरों में घुसने नहीं दिया जाता. उनके दूल्हे को घोड़ी पर नहीं बैठने दिया जाता. उन में सें कोई यह सोच भी नहीं सकता कि वह खाने पीने की चीजों**

की दुकान खोल ले. ऐसे मिल जुल कर रहने वाले हैं ब्राह्मण !! पिछले 2000 साल सें दलित इन ब्राह्मणों द्वारा पीसे जा रहे हैं.

18. ऋग्वेद व अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ ऐसी प्रार्थनाओं सें भरे पड़े हैं जहां उन्होंने उन लोगों को मार देने की बात कही है जो ब्राह्मणवादी नहीं हैं अथवा जो यज्ञ नहीं करते, जो दारू नहीं पीते, अथवा जो उनके भगवानों को अपना भगवान नहीं मानते अथवा जो दूसरे धर्म को मानते हैं. (ऋग 10.22.8) यह सिर्फ प्रार्थनाएं ही नहीं हैं बल्कि वास्तविकतायें हैं. इनके भगवानों ने लाखों लोगों को मारा है जो इनके धर्म के नहीं थे. हनुमान द्वारा लंका जला कर तथा कृष्ण द्वारा खांडव वन जला कर गैर–ब्राह्मण धर्मियों को जिंदा जला दिया गया.
19. संकराचारय अपने साथ राजा सुन्धवा की सेना लेकर चलता था. जो भी उससें बहस करने का साहस करता था सेनिक उसे वहीं कत्ल कर देती थे. स्कंदगुप्त की तरह सुन्धवा ने भी ऐलान करवा दिया था कि रामेश्वर सें हिमालय तक सभी बौद्धों को मार डालो. और जो उन्हें मारने में हिचके उसे भी मार डालो!! (समु 1.6) भारत सें बुद्ध धर्म संकराचारय के तर्क सें नहीं मिटा बल्कि सुन्धवा की सेना के दमन सें मिटा है.
20. औरों की तो छोड़ो, ब्राह्मणों ने तो अपने जातिभाई दयानन्द को जहर देकर मार डाला क्योंकि उसने राम और अन्य अवतारों को ढोंग बताया था. भागवत को झूठा कहा था. उसने गैर ब्राह्मणों को शुद्ध करके ब्राह्मण बनाने की गुस्ताखी की थी. **दयानंद ने तो सिख जैन बौद्ध मुस्लमान इसाई सभी धर्मों की बुराई की थी मगर कोई भी सिख जैन बौद्ध मुस्लमान इसाई उसे मारने पर उतारू नहीं हुआ. उसे मारा तो केवल सहिष्णु होने का दावा करने वाले ब्राह्मणों ने.** खैर जहां उन्होंने लाखों दूसरे मारे एक ब्राह्मण भी मार दिया तो क्या अंतर पड़ गया!! रोजी रोटी दक्षिणा पर आंच नहीं आनी चाहिए बस!!
21. सीधा धर्म के लिये न सही फिर भी गांधी को मारने वाला भी सनातनी "सहिष्णु" ब्राह्मण ही था.
22. ब्राह्मण परशु राम तो इतना अधिक "सहिष्णु" था कि उसने क्षत्राणियों के पेट फाड़ कर उनमें पल रहे बच्चे तक काट डाले!!
23. गीता का कहना है कि जो कृष्ण को भगवान नहीं मानते वे पापी और मूर्ख हैं. (7.15) ऐसे लोगों को उनका भगवान नीच योनियों में फैंकता है. (16.19) सहिष्णु भगवान!!!
24. जैसे चोर दंडनीय (मौत की सजा) है वैसे ही बौद्ध दंडनीय (मारने योग्य) है. (अयोध्या कांड 109.34)

-

11.4

अध्याय 12

ब्राह्मण पूजक महान घोषित किये गये चाहे.......

पांडवः पांडव विशेष कर युधिष्ठर ब्राह्मणों का पूजक था. सो महाकुकर्मी होते हुए भी ब्राह्मणों ने उसे धर्मराज घोषित कर दिया. वर्ना एक ही स्त्री को पाँच भाईयों की भोग्या बना डालने वाले पांडवों जैसे कुलकलंकी झूठे और अन्यायी मिलने दुर्लभ हैं. दुर्योधन ने ब्राह्मणों की जातिवाद के विरूद्ध आवाज उठाई अतः वह दुष्ट घोषित कर दिया गया. अगर पाँडवों द्वारा राज्य में हिस्सा मांगने की मांग जायज होती तो परिवार में सें कोई तो उनके साथ लगता. उनका दादा भीष्म, मामा मद्र नरेश शल्य तक ने कौरवों का साथ दिया. अगर कृष्ण कपट षडयंत्र का मार्ग न अपनाता तो पाँडव यह लड़ाई कभी नहीं जीत पाते.
वैसे जिस हस्तिनापुर के लिए वे लड़े मरे वह इतनीक बड़ी थी कि **गंगा** ? की एक बाढ़ में बह गई और आज तक उसका नामो निशान तक नहीं मिला. (इंडियाःअर्ली हिस्ट्री 17)

12.1 गांधी : दोगला

20.09.05 गांधी के गोधर्म चरित्र पर अध्याय 5 में लिखा जा चुका है. उसके जैसा धूर्त कभी कभार ही पैदा होता है.

उसने लोगों सें भाषण दिया कि लक्ष्य सें साधन अधिक महत्वपूर्ण होते हैं. Means justify the ends. अर्थात यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप क्या प्राप्त करना चाहते हैं बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना चाहते हैं. उसने सारी उम्र लोगों को इसी बात का भाषण दिया कि गलत ढंग सें सही लक्ष्य की प्राप्ति नहीं करनी चाहिए. लेकिन साथ में विष्णु का गुणगान भी किया. विष्णु मानव इतिहास में पहला व्यक्ति था जिसने अपना काम साधने के लिए "स्त्री" का प्रयोग किया. मोहिनी बन कर अमृत हथिआया तथा वृंदा सें बलात्कार करके सम्राट जालंधर की हत्या की.

अतः गांधी बातें तो नैतिकता की करता रहा लेकिन असलीयत में गुण्डों को पूजता रहा. राम ने अपना काम निकालने के लिये विभीषण को गद्दी का लालच दिया. उसने महात्मा रावण सें गद्दारी की. लोग आज भी उसे गद्दार ही मानते हैं. उसके नाम सें भी नफरत करते हैं. गांधी ने नारा तो दिया Means justify the ends लेकिन सारी उम्र पूजा उनकी की जो अपना काम साधने के लिये नीच सें नीच साधन अपनाते रहे. वह स्वयं भी अपने बताये मार्ग पर नहीं चला. जब सरदार भगत सिंह जैसे देशभक्तों ने अंग्रेजों की ईंट का जवाब पत्थर सें दिया तो गांधी बोला मैं हिंसा सें आजादी प्राप्त करने के खिलाफ हूँ. इसलिए भगत सिंह जैसे हिंसावादी लोग फांसी पर चढ़ने ही चाहिए. लेकिन उसी गांधी ने स्वयं गांव गांव घूम कर भारतीय नौजवानों को विश्व युद्ध के समय अंग्रेजी सेना के लिए भर्ती किया.

गांधी राम की तरह था. राम रहा तो वन में लेकिन दासियां साथ ले गया. वैसे ही गांधी था. रेलगाड़ी के थर्ड क्लास डिब्बे में सफर करता था मगर पूरे डिब्बे में अकेला होता था. उसके साथ होते या होती थीं उसके निजि सहायक सहायिकायें. पूरे डिब्बे में उसके लिए खादी के गद्दे बिछाये जाते थे. ऐसा कभी नहीं हुआ कि गांधी ने कभी थर्ड क्लास के डिब्बे में लटक कर सफर किया हो और न ही कभी ऐसा हुआ कि उसने अपने थर्ड क्लास के डिब्बे में किसी आम आदमी को घुसने दिया हो. ऐसा दोगला था गांधी.

प्रचार किया जाता है कि गांधी ने भारत को आजाद करा दिया लेकिन सच्चाई यह हैं कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सें अंग्रेजी सेना में काम कर रहे भारतीय बगावत पर उतारू हो रहे थे क्योंकि उन्हें अंग्रेजों के लिए भारत सें बाहर जाकर भी अपने प्राण गंवाने पड़े थे लेकिन बदले में उन्हें वह सम्मान और मुआवजा नहीं मिला जो एक सैनिक को मिलना चाहिए था. अतः भारत को अपने कब्जे में रखने के लिए अंग्रेजों को मात्र अंग्रेज सैनिकों पर ही विश्वास रह गया था और भारत जैसे विशाल देश के लिए केवल गोरों की सेना बनाना उनके लिए संभव नहीं था. अब उनके पास मंगल पांडे जैसे स्वामी भक्तों की कमी हो चली थी.

गांधी के बारे में प्रचार किया जाता है कि देश को आजाद कराने के लिए उसने साईमन कमीशन का विरोध किया था लेकिन असलियत यह है कि गांधी की लाख मिन्नतों के बावजूद उसकी कांग्रेस पार्टी का कोई आदमी इस कमीशन में शामिल नहीं किया गया था. लाजपत राय भी इसलिए मारा गया क्योंकि उसके पीछे इतनी भीड़ इक्कठी हो गई थी कि उसे पीछे हटने की जगह ही नहीं मिली. (धरती है बलिदान की 90)

23 मार्च को भारत के तीन सपूतों भगत सिंह राजगुरू और सुखदेव को फांसी पर लटकाया गया और दो दिन बाद ही गांधी ने इरविन के साथ समझोता करके कराची अधिवेशन में जश्न मनाया. प्रो. बसंत सिंह के अनुसार गांधी ने सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव की फांसी की सजा को जल्द पूर्ण करवा दिया.

गांधी का ब्रह्मचर्य : गांधी अपने देवों की तरह था. गैर पत्नियों सें सैक्स के तजुरबे करता था. गांधी न केवल औरतों के साथ वास करता था बल्कि नंगे होकर अपनी मालिश करवाता था. अपनी पत्नि को तो माँ कहता था. अन्य लड़कियों को नंगी करके अपने साथ सुलाता था.

अतः बाबा साहिब अम्बेडकर ने सही कहा है कि अगर "महात्मा" ऐसे आदमी को कहा जा सकता है जिसके बगल में छुरी और मूंह में राम हो तो गांधी सचमुच महात्मा है.

12.2 शिवाजी : लुटेरा

12.3 अकबर : जंवाई

1562 में जयपुर के राजपूत राजा बिहारी लाल ने अकबर को अपनी बेटी दे दी. उसी के अन्य वंशज मानसिंह और भगवान दास अकबर के लिए शिकार फांसते थे. मारवाड़, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर के राजपूत राजाओं ने भी अकबर को अपनी बहन बेटियां भेंट कीं. ऐसे थे बहादुर वीर राजपूत! केवल मरे हुओं को मारने वाले!! निरीह शूद्रों पर जुल्म ढाने वाले!!!

क्षत्रिय कब बहादुरी सें लड़े? किस के विरूद्ध लड़े? भारत के इतिहास में एक भी उदाहरण नहीं है! ब्राह्मणों ने मात्र दक्षिणा लेने के लिए क्षत्रियों और राजपूतों के दरबार में उनकी स्तुति गाई. बस और कुछ नहीं! अगर यह बहादुरी या अणख सें लड़ने वाले होते तो तो अपनी बहन बेटियां विदेशी विधर्मी और अपवित्र मलेच्छ राजा अकबर को क्यों देते? अकबर को अपनी बेटियां भेंट करते हुए वे गीता में कृष्ण का दिया उपदेश भी भूल गए कि स्वधर्म सबसें अच्छा होता है. औरंगजेब सच्चा राजा था. अतः उसने किसी सें किसी की भी बेटी नहीं ली वर्ना उसके राज्य में भी ऐसे "बहादुर" राजपूतों की कमी न थी!!

ले देकर एक राणा प्रताप बचता है जिसने अकबर सें रिश्तेदारी नहीं बनाई. वह भी सारी उम्र उससें डर अरावली की कंदराओं में छिपा रहा. एक बार हल्दी घाटी के मैदान में उसका सामना अकबर की सेनाओं सें हो गया. नतीजा यह हुआ कि वह डर कर मैदान सें भाग लिया. अकबर की सेनिक उसके पीछे दौड़े. तब उसने अपना घोड़ा चेतक इतनी तेजी सें भगाया और तब तक भगाया जब तक कि घोड़ा थक कर मर नहीं गया.

ऐसे बहादुर होते थे राजपूत!!

12.4 पेशवा : अंग्रेजों के पिठू

मराठों के पेशवा अंग्रेजों के पिठू थे. ब्राह्मण पेशवाओं में आर्यों की यह प्रथा प्रचलित थी कि वे घर आये मेहमान को रात को अपनी बीवी सौंप देते थे. (राज.110) पता नहीं कितनी बार अंग्रेज उनके रात को मेहमान बन कर रुके होंगे. जब ऐसे लोगों को सिंहासन मिलता हो तो वे कुछ भी कर सकते थे. उनके पूर्वज ब्राह्मण ऋषि गौतम ने भी घर आए अतिथि शंबर को अपनी पत्नि रात को सौंप दी थी. (शांति पर्व 168) सनातन धर्म! सनातन रीत!

अध्याय 13

अगर उन्होंने आज ऐसा किया होता तो..........................

ब्राह्मण ऋषियों और उनके देवों भगवानों ने अत्याधिक कुकर्म किये हैं. अगर उन्होंने यह काम आज किये होते तो उनका अंजाम कुछ इस प्रकार सें होताः

नाम	अपराध	धारा	सजा
ब्रह्मा	1. अपनी बेटी और पोतियों सें बलत्कार 2. अपनी बच्चियों सें कुकर्म	376	7 साल की कैद की सजा साल कैद की सजा
विष्णु	महारानी वृंदा सें बलात्कार, आत्महत्या के लिए मजबूर करना	376 302	7 साल की कैद की सजा उम्र कैद या फांसी
राम	बालि की कुनियोजित हत्या	302	सजा ए मौत अथवा उम्र कैद
राम	सन्त शम्बूक ही हत्या	304	सजा ए मौत. क्योंकि तब वह बालि हत्या में कम सें कम उम्र कैद काट रहा होता.
राम	सीता को मरने के लिए जंगल में फिकवाना		इरादा कत्ल के लिए साल की सजा
लक्ष्मण	सीता को मारने के लिये राम का साथ देना	20, 32	जो सजा राम को वही लक्ष्मण को
लक्ष्मण	शरूपनखा के कान और नाक काटना		
विभांडक	मृगी सें अप्राकृतिक संभोग		
ऋष्यश्रृंग	कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी सें व्यभिचार		

युधिष्ठर	जूआ खेलना		
	द्रोपदी को जूए के दांव पर लगाना		
	भाईयों को जूए के दांव पर लगाना		
कृष्ण	मामी राधा सें व्यभिचार		
	बहन सें अवैध यौन सम्बंध		
	राधा के पति को नपुंसक करना		
	अर्जुन को गीता में अपने विरोधियों को मारने के लिये उकसाना		
	कुब्जा सें व्यभिचार		
	विवाहित गोपियों सें व्यभिचार		
वामन	साजिश करके धोखे सें महात्मा बलि की हत्या	302	फांसी अथवा मौत की सजा या सारी उम्र जेल में चक्की पीसने की सजा

अध्याय 14

तो समाधान क्या है!

समाधान है फिर सें अपने भगवन बुद्ध की शरण में जाना. वह बुद्ध जिन्होंने 2500 साल पहले कहा था पूजा पाठ करना, कर्म कांड करना धर्म नहीं हैं. धर्म का अर्थ है नैतिक आचरण. वह व्यवहार करना जो तुम चाहते हो कि दूसरे तुमसें करें बस यही धर्म है. आत्मा परमात्मा धर्म नहीं है. किसी दुखी की आत्मा शांत करना धर्म है. यज्ञ में घी, लकड़ी जलाना, मन्त्र जाप करना और पशुओं की बलि देना धर्म नहीं है. धर्म है ऐसा घी, लकड़ी जरूरतमंदों को देने में, मन्त्रों की बजाए आपस में शुभ वचन बोलने में धर्म है. यज्ञ में हिंसा धर्म नहीं है जीवन में अहिंसा ही धर्म है.

1. ब्राह्मणों के चंगुल सें इस धर्म को मुक्त किया जाये. कोई भी हिन्दू खुली प्रतियोग्यता सें पुजारी बन सकता है यह नियम हो.
2. सब भारतीयों का केवल एक शब्द का नाम हो. जाति का दुमछल्ला लिखना अपराध हो.
3. जितने भी धर्म ग्रन्थ है जिनमें जातिवाद को धर्म बताया गया है उन्हें जला दिया जाये.
4. जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं जिनमें पशु बलि को धर्म बताया गया है उन्हें जला दिया जाये.
5. जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं जिनमें व्यभिचार को धर्म बताया गया है उन्हें जला दिया जाये.
6. जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं जिनमें अत्याचारियों को भगवान और उनके कुकृत्यों को धर्म बताया गया है उन्हें जला दिया जाये.
7. समस्त ऐसे भगवान जिन्होंने अनाचार अथवा कदाचार किया है उनकी मूर्तियां तोड़ कर सड़कों पर बिछा दी जायें.
8. नैतिकता के पुजारी सन्तों (कबीर, रैदास, बुल्लेशाह आदि) को राष्ट्र पुरुष घोषित किया जाये. समस्त भारतीय कानून उनकी वाणी के आधार पर बनाये जायें. समस्त भारतीय कानूनों को अंग्रेजी व ब्राह्मणिक प्रभाव सें मुक्त किया जाये.

1. मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश में विश्वास नहीं रखूंगा और न ही उनमें सें किसी की पूजा करूंगा.
2. मैं राम अथवा कृष्ण में विश्वास नहीं रखूंगा जिसको भगवान का अवतार बताया जाता है. और न ही उनमें सें किसी की पूजा करूंगा.
3. मैं गौरी गणपति अथवा किसी भी हिन्दू देवी देवता में आस्था नहीं रखूंगा और न ही उनमें सें किसी की पूजा करूंगा.
4. मैं भगवान के अवतार लेने की बात पर विश्वास नहीं करता हूँ.
5. मैंने कभी भी इस पर विश्वास नहीं किया और न ही कभी करूंगा कि भगवन बुद्ध कभी विष्णु के अवतार हो सकते हैं. मेरा मानना है कि ऐसी बातें कहने वाले धूर्त अथवा पागल हैं.
6. मैं कभी श्राद्ध नहीं करूंगा और न ही कभी पिण्डदान करूंगा.
7. मैं कभी ऐसा काम नहीं करूंगा जो भगवन बुद्ध की शिक्षाओं अथवा उनके आदर्शों के विपरीत हैं.
8. मैं कभी कोई संस्कार ब्राह्मण सें नही करवाउंगा.
9. मैं सब को एक समान मानूंगा.
10. मैं सब में समानता स्थापित करने की कोशिश करूंगा.
11. मैं अपनी दिनचर्या भगवन बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग के अनुरूप बनाऊंगा.
12. मैं अपनी भगवन बुद्ध द्वारा स्थापित पारमिताओं का अनुसरण करूंगा.
13. मैं सब जीवों के प्रति करुणा और प्यार की भावना रखूंगा तथा उनकी रक्षा करूंगा.
14. मैं चोरी नहीं करूंगा.
15. मैं झूठ नहीं बोलूंगा.

16. मैं व्यभिचार नहीं करूंगा.
17. मैं कोई नशा नहीं करूंगा.
18. मैं अष्टांगिक मार्ग, दयाभाव और करूणा को अपनी दिनचर्या बनाऊंगा तथा अपना सारा जीवन उनके अनुरूप ही व्यतीत करूंगा.
19. मैं ब्राह्मणवाद का त्याग करता हूँ जो कि मानवता के लिये खतरा है क्यों कि यह असमानता पर आधारित है तथा मानव की प्रगति में बाधा है. मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ.
20. मैं दृढ़ता सें विश्वास करता हूँ कि मात्र बुद्धधर्म ही सच्चा धर्म है.
21. मैं मानता हूँ कि भगवन बुद्ध की शरण में आने सें मेरा नया जन्म हुआ है.
22. मैं पवित्रता सें सौगंध खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब सें भगवन बुद्ध द्वारा बताये नियमों और सिद्धातों के अनूरूप अपना जीवन व्यतीती करूंगा.

Dr.B.R.Ambedkar prescribed 22 vows to his followers during the historic religious conversion to Buddhism on 15 October 1956 at DeeksÈ Bhoomi, Nagpur in India. The conversion to Buddhism by 800,000 people was historic because it was the largest religious conversion, the world Ès ever witnessed. He prescribed these oaths so tÈt there may be complete severance of bond with Hinduism. These 22 vows struck a blow at the roots of Hindu beliefs and practices. These vows could serve as a bulwark to protect Buddhism from confusion and contradictions. These vows could liberate converts from superstitions, wasteful and meaningless rituals, which Ève led to pauperisation of masses and enrichment of upper castes of Hindus.

The famous 22 vows are:

1. I sÈll Ève no faith in Brahma, Vishnu and Mahesh nor sÈll I worship them.
2. I sÈll Ève no faith in Rama and Krishna who are believed to be incarnation of God nor sÈll I worship them.
3. I sÈll Ève no faith in "Gauri", Ganapati and other gods and goddesses of Hindus nor sÈll I worship them.
4. I do not believe in the incarnation of God.
5. I do not and sÈll not believe tÈt Lord BuddÈ was the incarnation of Vishnu. I believe this to be sheer madness and false propaganda.
6. I sÈll not perform "ShraddÈ" nor sÈll I give "pind-dan".
7. I sÈll not act in a manner violating the principles and teachings of the BuddÈ.
8. I sÈll not allow any ceremonies to be performed by Brahmins.
9. I sÈll believe in the equality of man.
10. I sÈll endeavour to establish equality.
11. I sÈll follow the "**noble eightfold path**" of the BuddÈ.
12. I sÈll follow the "**paramitas**" prescribed by the BuddÈ.
13. I sÈll Ève compassion and loving kindness for all living beings and protect them.
14. I sÈll not steal.
15. I sÈll not tell lies.
16. I sÈll not commit carnal sins.
17. I sÈll not take intoxicants like liquor, drugs etc.
18. I sÈll endeavour to follow the noble eightfold path and practise compassion and loving kindness in every day life.
19. I renounce Hinduism which is Èrmful for humanity and impedes the advancement and development of humanity because it is based on inequality, and adopt Buddhism as my religion.
20. I firmly believe the DÈmma of the BuddÈ is the only true religion.
21. I believe tÈt I am Èving a re-birth.
22. I solemnly declare and affirm tÈt I sÈll hereafter lead my life according to the principles and teachings of the BuddÈ and his DÈmma.

आज 15 अगस्त 2006 है आज यह पुस्तक 200 पेज तक पहुंच गई है. आज अप्सरा सें नोट करने का कार्य सम्पन्न हुआ. कुलदीप 15.08.2006 समय 18.24

11. रैदास कबीर ने संतोश, शील का उपदेश दिया. वे बोले :

साधु भूखा भाव का, धन का भुखा नाहिं !
धन का भूखा जो फिरै सो तो साधु नाहिं!!

कोई भी ब्राह्मण ग्रन्थ, देवी, देवता, ऋषि शील संतोश की शिक्षा नहीं देता. इस बात के प्रमाण इसी पुस्तक में अनेकों स्थानों पर दिए गए हैं.

12. कबीर रैदास कहते हैं : एक जोत सें सब जग उत्पना, कौन बामण कौन सुदा!! इसके विपरीत ब्राह्मणवादी ऋग्वेद, मनु स्मृति कहते है कि ब्राह्मण मुख सें तो शूद्र पैर सें जन्में हैं. इस कारण बामण बड़े तो शूद्र छोटे हैं.

13. कबीर रैदास बुद्ध के वंशज थे श्रमण संस्कृति के महान सपूत थे वे! हर प्रकार के झूठ पाखण्ड का पर्दाफाश करने वाले. इसके विपरीत रामानन्द जैसे ब्राह्मण मात्र धोखाधड़ी फरेब सें धन कमाने वाले!! इसी कारण सन्त पीपा को कहना पड़ा :

जो कलि में कबीर ना होते, तो वेद अर कलियुग मिल भगती करि रसातल देते'

काजी कथै कतेब कुराणा, पंडित सवारथी वेद पुराणा
वो अच्छर तो लखा ना जाइ, मात्रा लगे ना काना!!

अर्थात काजी कहता है कि परमात्मा कुराण में हैं, स्वार्थी ब्राह्मण कहता है कि वेद पुराणों में है लेकिन परमात्मा जिस स्थान पर रहता है उस स्थान को न तो देखा जा सकता है और उस स्थान के नाम के साथ कोई मात्रा भी नहीं लगती. अर्थात परमात्मा मन हरेक के मन में बसता है.

1.2.4 **शब्दावली** : असुर, राक्षस, दैत्य, देव, किन्नर, गंधर्व, यक्ष, दानव, अप्सरा, इन्द्र,गणिका, नियोग, गोधर्म, साम–दाम, यज्ञ, मेध, गौमेध, अश्वमेध, नरमेध, हवि, यज्ञशेश, आश्रम, अवतार, चार आश्रम, चार युग, चार लक्ष्य, श्राद्ध, उपनिषद, गायत्री

असुर : असुर का अर्थ है प्राणवान, बलवान, सामर्थ्यवान. वह व्यक्ति जो सुरा नहीं पीता. ऋग्वेद (8.96.9) में असुर शब्द देवताओं के लिए भी प्रयोग हुआ है. मय और तारक नामक असुरों ने मिश्र के महल और पिरामिड बनाये थे. असुर राजा सरगन ने 2650 ईसा पूर्व यानि 4650 साल पहले अपने पूरे राज्य में सड़कें बनवाई थीं. (वैदिक संस्कृति 57) भगवन वाल्मिकी ने असुर की परिभाषा देते हुए कहा है वे लोग असुर हैं जो शराब नहीं पीते. देव शराब पीकर खुश होते हैं, हल्ला करते हैं तथा तगड़े होते हैं. (कांड सर्ग 45)

ब्रह्मज्ञान : कौशीतकी उपनिषद (3.1) के अनुसार जो आदमी ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेता है उसे मातृहत्या, पितृहत्या, भ्रूणहत्या का पाप नहीं लगता. उसे कोई पाप नहीं सताता. **उसके मन में चाहे पाप हो लेकिन उसके चेहरे पर नहीं झलकता.** (समु 206) माना जाता है कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं क्योंकि जो उनके मन में होता है वही उनके चेहरे पर भी झलकता है. अतः अगर कोई आदमी यह हुनर/चालाकी सीख ले कि उसका चेहरा उसके मन के पाप न दिखलाए तो वह ब्रह्मज्ञानी बन जाता है. ठीक ही है जैसा ब्रह्मा वैसे ब्राह्मण, वैसा ही उनका ज्ञान!!

पाणिग्रहण : अथर्व वेद (5.17.8) स्त्री के ब्राह्मण सें अतिरिक्त जो दस पति हैं जब ब्राह्मण उसका हाथ पकड़ ले (पाणिग्रहण कर ले) तो वही उसका "पति" होता है. स्त्री का ब्राह्मण ही असली पति है क्षत्रिय वैश्य नहीं! आज चाहे पाणिग्रहण को शादी के समानार्थ बना दिया गया है लेकिन प्राचीन काल में ब्राह्मण की जब "इच्छा" होती थी, किसी भी स्त्री का हाथ पकड़ लेता था. विवाह के लिए नहीं मात्र वासना पूर्ति के लिए!! उद्दालक, पराशर जैसों के उदाहरणों सें ग्रन्थ भरे पड़े हैं. औरों का तो क्या कहना यहां तक कि भगवान कहे जाने वाले राम की पत्नि सीता ने भी महात्मा रावण को आदर सहित फल मेवे भेंट किए जब उन्होंने ब्राह्मण वेश में उसके स्तनों जांघों की अश्लीलता पूर्ण तारीफ की! सहज कल्पना की जा सकती है कि अगर वह ब्राह्मण वेश में सीता का हाथ पकड़ लेते तो क्या होता!!

इन्हीं पाणिग्रहण मन्त्रों के आधार पर अभी तक नम्बूदरी ब्राह्मण मालाबार और कालीकट में अन्य जातियों की महिलाओं सें पहली सुहागरात व धार्मिक वेश्यावृति का अधिकार मानते आ रहे थे.

व्रात्या : व्रात्या वे लोग थे जिन्होंने आर्य समाज के "खाओ पीओ और ऐश करो" और चार वर्णों वाले नियमों का विरोध किया अतः जिन्हें समाज सें बाहर कर दिया गया. उदाहरणतः जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य उपनयन संस्कार क्रमशः अधिकतम सोलह, बाईस तथा चौबीस साल की उम्र तक नहीं कराते थे वह यज्ञोपवीत व्रत सें गिर जाने के कारण **व्रात्या** (जाति सें बाहर) कर दिये जाते थे. उनके साथ किसी भी यज्ञोपवीत धारी द्वारा रोटी बेटी का रिश्ता नहीं बनाया जा सकता. (मनु 2.39)

महाभारत : आरम्भ में व्यास नामक लेखक ने 8800 श्लोकों की एक कहानी लिखी. इस कहानी को ''जय" नाम दिया गया. इसमें कुल इतनी बड़ी कहानी थी कि कौरव पाँडव जूआरी थे. जूए में अपनी धन सम्पत्ति बीवी तक हार गए. अंत में लड़ाई हुई और पूरा खानदान जूए के कारण समाप्त हो गया. फिर वैशम्पायन ने अपनी कहानी इसमें और घुसेड़ दी. श्लोक हो गए 24000. कुछ भारी भी हो गई. सो नाम रख दिया गया ''भारतः" उसके बाद तो जिसका जी किया वह इसमें अपने किस्से जोड़ता गया. कृष्ण गीता सब कुछ जोड़ दिया गया. किताब बहुत अधिक भारी हो गई सो नाम रख दिया गया महा भारतः

देव : ब्राह्मणों ने ठगी के अनेकों काम किए. उनमें एक काम "देव" समुदाय के लोगों को ''देवता" बनाना भी शामिल है. जैसे आज के समय में सरदार अथवा गोरखा समुदाय के लोग लड़ाके और वीर माने जाते हैं वैसे ही पुराने समय में देव समुदाय के लोग ताकतवर माने जाते थे. वे आम आदमी की तरह ही आदमी होते थे. जैसे आम धारणा है कि जाट बनिये सें ज्यादा तगड़ा होता है वैसे ही उस समय में आर्य यह धारणा रखते थे कि देव उनसें तगड़े हैं.

पंजाब हरियाणा राजस्थान की लगती सीमाओं पर एक समुदाय के लोग रहते हैं. अभी कुछ साल पहले तक उनमें तगड़े स्वस्थ बच्चे पैदा करने के लिए एक ''गोधा'' परम्परा प्रचलित थी. इस परम्परा के तहत वे अपने इलाके में एक हट्टे कट्टे युवक को चुन लेते थे. उसे गोधा अर्थात सांड कहा जाता था. वह उनके समुदाय के किसी भी परिवार की वधु के साथ मैथुन कर सकता था. बल्कि वे लोग चाहते भी थे कि गोधा उनके घर में आए और उनके जो पुत्र पैदा हो वह उसके जैसा तगड़ा पैदा हो. यह परम्परा बहुत ज्यादा पुरानी नहीं है. आज भी वे लोग जिन्दा हैं जो गोधा रह चुके हैं तथा वे लोग भी जिन्दा हैं जो गोधा द्वारा उत्पन हैं.

ऐसे ही प्राचीन काल में देव होते थे. आर्य लोग उनसें पुत्र पैदा करवाने में गौरव महसूस करते थे. गोधा परम्परा और देव परम्परा में अन्तर यह रह गया कि जहां गोधा परम्परा में अन्त तक पवित्रता बनी रही, देवों ने इसे व्यभिचार का रूप दे दिया. इन देवों ने ब्राह्मणों के साथ मिल कर वासना का वह नंगा नाच रचा कि किसी की बहन बेटी सुरक्षित नहीं रही. यहां तक कि केसरी की पत्नि और हनुमान की माँ अँजनि भी स्वयं को देव पवन की वासना का शिकार होने सें बचा नहीं पाई. आर्यों की हर लडकी पर देवों का अधिकार मान लिया गया. आर्यों की हर लड़की शादी सें पहले तक तीन देवों की हवस वासना का शिकार हो चुकी होती थी. अक्सर वह "पुत्र सहित" पति को शादी में दी जाती थी.

गंधर्व : गंधर्व आर्यों में सबसें ऐयाश लोगों समुदाय था. इनमें रिश्तों की नैतिकता नाम मात्र भी नहीं होती थी. स्त्री पुरुष कभी भी किसी के साथ सम्बंध बना लेते थे. बच्चे पैदा हो जाएं तो फैंक का आगे बढ़ जाते थे. (आदि 8) (राज.45)

ऋत्विक : यज्ञ करने वाला ब्राह्मण. ऋत्विक केवल ब्राह्मण ही हो सकता था. (मनु 2.118)

अप्सरा : आप्टे के अनुसार अप्सरा का अर्थ है 'स्वर्वेश्या' अर्थात स्वर्ग की वेश्या. यह इन्द्र के दरबार की रक्कासा होती थीं.

द्रुपद : द्रोपदी का सगा भाई तथा द्रोण का दोस्त था. राजा बन गया तो द्रोण को भूल गया. द्रोण ने सहायता मांगी द्रुपद ने नहीं की. दोनों में लड़ाई हुई. द्रुपद हार गया. अतः उसने यज्ञ किया जहां धृश्टधुमन पैदा हुआ. धृश्टधुमन ने महाभारत की लड़ाई में द्रोण का सिर काट दिया. आर्य गुण्डों की तरह लड़ते थे.
वास्तव में आर्यों के समाज में स्वयंवर में जीती गई औरत की हैसीयत ही इतनी होती थी द्रोपदी सब भाईयों की भोग्या बनी तो सीता को जंगल में फैंक दिया गया.

अग : वेण के पिता अग ने अपनी बहन सुनीता को पत्नि बना कर घर में रखा. (समु 1/50)
व्यास जब जनमेजय की सभा में गया तो तो उसे मधुपर्क के लिए गाय दी गई लेकिन उसने गाय को मारा नहीं. महाभारत में गाय अवध्य मानी जानी लगी थी. (आदि.60) (राज. 142) लेकिन बुद्ध काल तक गाय खाना आम बात थी. अतः महाभारत बुद्ध के बाद की रचना है.

उदाहरण के तौर पर किसी भी ब्राह्मण ग्रन्थ में ऐसी किसी घटना का वर्णन नहीं है जहां किसी ब्राह्मणधर्मी विधवा का दोबारा घर बसाया गया हो लेकिन अनार्यों में ऐसी बातें आम थीं. तारा मन्दोदरी की उदाहरणें हमारे सामने हैं. अतः आज जो हम विधवा का दोबारा घर बसाते हैं यह ब्राह्मणधर्म की रीत नहीं है. यह हमारे उन पूर्वजों की रीत है जिन्हें ब्राह्मण नीच राक्षस और पता नहीं क्या कुछ कहते हैं. इस प्रकार हिन्दू वे लोग बन गए जो आचरण तो रक्ष संस्कृति वाला करते हैं मगर कर्मकांड ब्राह्मणधर्म वाले करते हैं.